

प्रकाशकीय निवेदन

आज हमें हिन्दी पाठकों के सम्मुख संयुत्त-निकाय के हिन्दी अनुवाद को लेकर उपस्थित होने में बड़ी प्रसन्नता हो रही है। अगले वर्ष के लिए 'विसुद्धिमग्ग' का अनुवाद तैयार है। उसके पश्चात् 'अंगुत्तर निकाय' में हाथ लगाया जायेगा। इनके अतिरिक्त हम और भी वितने ही प्रसिद्ध वौद्ध-प्रन्थों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करना चाहते हैं। हमारे काम में जिस प्रकार से कितने ही सज्जनों ने आर्थिक सहायता और उत्साह प्रदान किया है, उससे हम बहुत उत्साहित हुए हैं।

थार्थिक कठिनाइयों एवं अनेक अन्य अङ्चनों के कारण इस प्रन्थ के प्रकाशित होने में जो अनपेक्षित विलम्ब हुआ है, उसके लिए हमें स्वयं दु.ख है। भविष्य में इतना विलम्ब न होगा—ऐसा प्रयत्न किया जायेगा। हम अपने सभी दाताओं एवं सहायकों के कृतज्ञ है, जिन्होंने कि सहायता देकर हमें इस महत्वपूर्ण कार्य को सम्पादित करने में सफळ बनाया है।

विनम्र

₹-8-48

भिक्षु एम० संघरत्न मन्त्री, महावोधि-सभा सारनाथ, बनारस



प्राक्कथन

संयुत्त निकाय सुत्त-पिटक का तृतीय ग्रन्थ है। यह आकार में दीघ निकाय और मिन्सम निकाय से बड़ा है। इसमें पाँच बड़े-बड़े वर्ग हैं— सगाथा वर्ग, निटान वर्ग, खन्ध वर्ग, सळायतन वर्ग और महावर्ग। इन वर्गों का विभाजन नियमानुसार हुआ है। संयुत्त निकाय में ५४ संयुत्त हैं, जिनमें देवता, देवपुत्र, कोसल, मार, ब्रह्म, ब्राह्मण, सक्क, अभिसमय, धातु, अनमतग्ग, लाभसक्कार, राहुल, लक्खण, खन्ध, राध, दिहि, सळायतन,वेदना,मातुगाम, असंखत, मगा, बोज्झइ, सतिपद्दान, इन्द्रिय, सम्मप्पधान, बल, इद्धिपाद, अनुरुद्ध, झान, आनापान, सोतापत्ति और सच्च—यह ३२ सयुत्त वर्गों में विभक्त है, जिनकी कुल सख्या १७३ है। शोप सयुत्त वर्गों में विभक्त नहीं हैं। सयुत्त निकाय में सो भाणवार और ७७६२ सुत्त हैं।

सयुत्त निकाय का हिन्दी अनुवाद पूज्य भदन्त जगदीश काश्यप जी ने आज से उन्नीस वर्ष पूर्व किया था, किन्तु अनेक वाधाओं के कारण यह अभीतक प्रकाशित न हो सका था। इस दीर्घ काल के बीच अनुवाद की पाण्डुलिपि के बहुत से पन्ने—कुछ पूरे संयुत्त तक खो गये थे। इसकी पाण्डुलिपि अनेक प्रेसों को दी गई और वापस ली गई थी।

गत वर्ष पूज्य काश्यप जी ने संयुत्त निकाय का भार मुझे सौंप दिया। मै प्रारम्भ से अन्त तक इसकी पाण्डुलिपि को दुहरा गया और अपेक्षित सुधार कर ढाला। मुझे ध्यान सयुत्त, अनुरुद्ध संयुत्त आदि कई सयुत्तों का स्वतन्त्र अनुवाद करना पढ़ा. क्योंकि अनुवाद के वे भाग पाण्डुलिपि में न थे।

मैंने देखा कि पूज्य काश्यप जी ने न तो मुत्तों की संख्या दी थी और न मुत्तों का नाम ही लिखा था। मैने हन दोनों वातों को आवश्यक समक्षा और प्रारम्भ से अन्त तक मुत्तों का नाम तथा मुत्त-संख्या को लिख दिया। मैंने प्रत्येक मुत्त के प्रारम्भ में अपनी ओर से विषयानुसार शीर्षक लिख दिये हैं, जिनसे पाठक को इस प्रन्थ को पढ़ने में विशेष अभिक्षि होगी।

अन्य में आये हुए स्थानों, निद्यों, विहारों आदि का परिचय पादिष्पणियों में यथासम्भव कम दिया गया है, इसके छिए अलग से 'बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय' लिख दिया गया है। इसके साथ ही एक नकशा भी दे दिया गया है। आशा है, इनसे पाटकों को विशेष लाभ होगा।

पूरे प्रन्थ के छप जाने के पश्चात् इसके दीर्घकाय को देखकर विचार किया गया कि इसकी जिटढबन्दी दो भागों में कराई जाय। अत पहले भाग में सगाथा वर्ग, निदान वर्ग और स्कन्ध वर्ग तथा दूसरे भाग में सलायतन वर्ग और महावर्ग विभक्त करके जिल्दबन्दी करा दी गई है। प्रत्येक भाग के साथ विपय-सूची, उपमा-सूची, नाम-अनुक्रमणी और शब्द-अनुक्रमणी दे दी गई है।

सुत्त-पिटक के पाँचों निकायों में से दीव, मिव्हाम और संयुत्त के प्रकाशित हो जाने के प्रश्नात् अंगुत्तर निकाय तथा खुदक निकाय अवशेष रहते हैं। खुदक निकाय के भी खुदक पाठ, धम्मपट, उदान, सुत्त निपात, थेरी गाथा और जातक के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। इतिवुत्तक, बुद्धवंस श्रीर को प्रकाशित करने का कार्यक्रम बनाया यथा है। आहा है इस्त वर्षों के सीतर पूरा शत-पिरक और मियमा-विरक के कुछ मंथ हिन्दी में अनुवित होकर मकाशित हो कार्येते। भारतीय महावीचि समा वे इस प्रस्त को मकाशित करके हुद्ध-शासन एवं हिन्दी-जगत का बहत बड़ा उपकार दिया है। इस सहत्वपूर्ण कार्य के किए सभा के प्रधान सन्त्री शी देवनिय विक्रितिह

चरिपापिरक के भी अनुवाद मैंने कर दिये हैं और ये प्रम्थ श्रेस में हैं। अंशुक्तर निकाय का गैरा क्रिमी जनवार भी प्रायः समाप्त-सा ही है। संयुक्त निकाय के पश्चात क्रमशा विद्वविक्रमण और अंगुक्तर निकाय

तमा भवन्त संबालकी का प्रयास स्तर्य है । जावमण्डक यम्त्राख्य काशी के स्वकारताणक भी भोमक्रमा बचर की तत्परता से ही यह सन्य क्लंक्य से बाद और शीम महित हो सका है।

सारकार बकारक

28-5-4**3**

मिस धर्मर्शित

महाबोधि समा

आमुख

तंयुत्त निकाय सुत्त-पिटक का तीसरा प्रन्य है। दीघ निकाय में उन सूत्रों का संग्रह हे जो आकार में बहे हैं। उसी तरह, प्रायः मझोले आकार के सूत्रों का समह मजिल्लम निकाय में है। संयुत्त निकाय में छोटे-वहे सभी प्रकार के सूत्रों का 'संयुत्त' संग्रह हैं। इस निकाय के सूत्रों की कुल सख्या ७०६२ है। पिटक के इन प्रन्थों के लंग्रह में सूत्रों के छोटे-वहे आकार की एिए रक्खी गई है, यह सचमुच जैंचने वाली बात नहीं लगती है। प्रायः इन प्रन्थों में एक अत्यन्त दार्शनिक सूत्र के बाद ही दूसरा सूत्र जाति-वाद के खण्डन का आता है और उसके बाद ही हिंसामय यज्ञ के खण्डन का, और वाद में और कुछ दूसरा। स्पष्टतः विपयों के इस अव्यवस्थित सिलसिले में साधारण विद्यार्थी कव-सा जाता है। ठीक-ठीक यह कहना कठिन माल्यम होता है कि सूत्रों का यह क्रम किस प्रकार हुआ। चाहे जो भी हो, यहाँ संयुत्त निकाय को देखते इसके व्यवस्थित विपयों के अनुकृत वर्गीकरण से इसका अपना महत्व स्पष्ट हो जाता है।

सयुत्त निकाय के पहले वर्गे—सगाधा वर्ग को पड़कर महाभारत में स्थान-स्थान पर भाये प्रश्लोत्तर की दोली से सुन्दर गाथाओं में गम्भीर से गम्भीर विषयों के विवेचन को देखकर इस निकाय के दार्शनिक तथा साहिरियक दोनों पहलुओं का आमास मिलता है। साथ-साथ तत्कालीन राजनीति और समाज के भी स्पष्ट चित्र उपस्थित होते हैं।

दूसरा वरौ-निदान वर्ग वौद्ध सिद्धान्त 'प्रतीरय समुखाद' पर भगवान् बुद्ध के अत्यन्त महत्व-पूर्ण सूत्रों का सबह है।

तीसरा और चीया वर्ग स्कन्धवाद और भायतनवाद का विवेचन कर भगवान् बुद्ध के अनारम सिद्धान्त की स्थापना करते है। पाँचवाँ—महावर्ग 'मार्ग', 'बोध्यंग', 'स्मृति-प्रस्थान', 'इन्द्रिय' आदि महत्वपूर्ण विपयों पर प्रकाश ढाळता है।

सन् १९६५ में पेनाग (मलाया) के विख्यात चीनी महाविहार 'चांग ह्या तास्ता' में रह मैंने, 'मिलिन्द प्रश्न' के अनुवाद करने के याद ही सयुत्त निकाय का अनुवाद प्रारम्भ किया था। दूसरे वर्ष छंका जा सलगल अरण्य के योगाश्रम में इस प्रन्य का अनुवाद पूर्ण किया। तब से न जाने कितनी बार इसके छपने की च्यवस्था भी हुई, पाण्डुलिपि प्रेस में भी दे दी गई और फिर वापस चली माई। मैंने तो ऐसा समझ लिया था कि कदाचित् इस प्रन्थ के भाग्य में प्रकाशन लिखा ही नहीं है, और इस ओर से उदासीन-सा हो गया था। अब पूरे उन्नीस वर्षों के बाद यह प्रन्य प्रकाशित हो सका है। भाई त्रिपिटकाचार्य भिक्षु धर्मरक्षित जी ने सारी पाण्डुलिपि को दुहरा कर शुद्ध कर दिया है। संयुत्त निकाय आज इतना अच्छा प्रकाशित न हो सकता, यदि भिक्षु धर्मरक्षित जी इतनी तत्परता से इसके प्रूफ देखने और इसकी अन्य व्यवस्था करने की हुपा न करते।

में महाबोधि समा सारनाथ तथा उसके मन्त्री श्री भिक्षु संघरत जी को भी अनेक धन्यवाद हेता हूँ जिन्होंने पुस्सक के प्रकाशन में इतना उत्साह दिखाया।

नष नालन्दा महाविहार नालन्दा २ १. {२४९७ खु० स० १९५४ ई० स०

मिक्ष जगदीश काइयप





भूमिका

बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय

बुद्धकाल में भारतवर्ष तीन मण्डलों, पाँच प्रदेशों और सोलह महाजनपदों में विभक्त था। महामण्डल, मध्यमण्डल, कीर अन्तर्मण्डल—ये तीन मण्डल थे। जो क्रमशः ९००, ६००, ३०० योजन विस्तृत थे। सम्पूर्ण भारतवर्ष (= जम्बृद्धीप) का क्षेत्रफल १०,००० योजन था। मध्यम देश, उत्तरापथ, अपरान्तक, दक्षिणापथ और प्राच्य—ये पाँच प्रदेश थे। हम यहाँ इनका संक्षेप में वर्णन करेंगे, जिससे बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय प्राप्त हो सके।

§ १ मध्यम देश

भगवान् बुद्ध ने मध्यम देश में ही विचरण करके बुद्धधर्म का उपदेश किया था। तथागत पद-चारिका करते हुए पिश्चम में मधुरा' और कुरु के धुल्लकोद्वित नगर से आगे नहीं बढ़े थे। पूरव में कजगला निगम के मुखेल वन और पूर्व-दक्षिण की सल्लवती नदी के तीर को नहीं पार किया था। दक्षिण में सुसुमारगिरि आदि विनध्याचल के आसपास वाले निगमों तक ही गये थे। उत्तर में हिमालय की तलहरी के सापुग निगम और उसीरध्वज पर्वत से ऊपर जाते हुए नहीं दिखाई दिये थे। विनय पिरक में मध्यम देश की सीमा इस प्रकार बतलाई गई है—"पूर्व दिशा में कजगला निगम । पूर्व दक्षिण दिशा में सल्लवती नदी । दक्षिण विशा में सेतकण्णिक निगम । पिश्चम दिशा में थूण नामक ब्राह्मणों का प्रामः। उत्तर दिशा में उसीरध्वज पर्वत । १०००

मध्यम देश ३०० योजन लम्बा और २५० योजन चौड़ा था। इसका परिमण्डल ९०० योजन था। यह जम्बूदीप (= भारतवर्ष) का एक बृहद् भाग था। तस्कालीन सोछह जनपदों में से ये १४ जनपद इसी में थे—काशी, कोशल, अग, मगध, वजी, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पञ्चाल, मत्स्य, श्रूरसेन, अञ्चक और अवन्ति। शेष दो जनपद गन्धार और कम्बोज उत्तरापथ में पहते थे।

§ काशी

काशी बनपद की राजधानी वाराणसी (वनारस) थी। बुद्धकाल से पूर्व समय-समय पर

१ अगुत्तर निकाय ५ २. १०। इस सूत्र मे मथुरा नगर के पॉच दोप दिखाये गये हैं।

२ मिन्हम निकाय २ ३ ३२। दिल्ली के आसपास कोई तत्कालीन प्रसिद्ध नगर।

३ मिन्सिम निकाय ३ ५ १७। कक्नोल, संथाल प्राना, विहार।

४. वर्तमान सिल्ह नदी, हजारी बाग और बीरभूमि ।

५ चुनार, जिला मिर्जापुर।

६ अगुत्तर निकाय ४ ४ ५ ४।

७. हरिद्वार के पास कोई पर्वत ।

८ हजारीवाग जिले में कोई स्थान।

९ आधुनिक थानेश्वर।

१०. विनय पिटक ५, ३ २ ।

सुर्देशन, सुद्दान प्रश्नवह युरावर्ता साठिनी बीर रम्यनगर हास्के नाम ये। इस नगर का विस्तार ११ योजन था। भगवान पुद से पूर्व कासी शासिका क्षेत्र में साविकाको जनपद या। कस्ती बीर कोसक के राजामी में माप युद हुन्य करते थे दिवसे कासी का राज्य विषयी होता था। दस समय सम्पूर्व कप्तार में मारा युद हुन्य करते थे दिवसे कासी का राज्य विषयी होता था। दस समय सम्पूर्व कप्तार में मारा अवस्थान करते से साव स्वयं युद्ध मारा में माप कोसाक नरेंस बीर हो या। विषयी से माप समय सर्व के स्वीत या। वनमें भी माप सारा में हिस हो युद हुआ करते थे। शम्ब में कासी कीसक तरेंस मरीनवित् के व्यक्तिकार से विकास स्वार भी स्वयं कासी कीसक स्वयं कासी कीसक स्वयं कासी स्वार्व के स्वीत हो विकास स्वयं स्वयं कासी स्वार्व के स्वयं कासी विकास स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं विकास स्वयं स्ययं स्वयं स

वाराणसी के पास मानिपतन सुगनाय (सार्वाम) में अधनाय हुद्द ने धर्मचक्र मनर्तत करके

इसके महत्व का बड़ा दिया। ऋषिपतन खयत्राय बीज धर्म का यक महातीर्व है।

सारागायी रिक्ट ज्यवसाय विश्वा साहि का यहुत वड़ा केन्द्र वा । इसका क्वावसायिक सन्दर्भ आवस्ती ठसरिका शत्रपुर आदि नगरों स था । काशी का चन्दन चीर काशी के री-विरी वस्त्र बहुत प्रसिद्ध थे !

§ कोशस

कासस की राजकानियाँ आवस्ती और साकेत कार थे। कवीच्या सुरपू नदी के कियार स्थित १५ कन्या था किन्दु सुबकाल में इसकी मधिकि या थी कहा वाला है कि आवस्ती नासक स्पिकें नास पर द्वां आवस्ती नगर का नाम पदा था किन्दु पर्यक्षसूद्यी के अनुसार 'सब कुछ होन के कारण (कस स + मरिन) इसका नाम आवस्ती पदा था।

सावस्ती नगर वहा समुद्धिताकी एवं सुन्दर था। इस बयर को बावादी साठ करोड़ थी। सगवाद पुद्ध मे पार्ट २५ वर्णनास दिया था और निविकांत वर्षोय वाही पर किया था। अमामिनिक वहाँ का बहुत बढ़ा सड था और स्थारमाठा विशाबा वहीं सन्दावान् वपासिका थी। पराचारा इसा रीठानी नन्द, बंदरा रेवड और कोसक नहेश की वहिन सुसना इसी बगर के सन्तित प्यक्ति थे।

प्राचीत कोशक शाम की आगों में विमन्त था। खरपू नदी दीवों भागों के मध्य स्थित भी।

क्तरी मारा को उत्तर-क्रीहाक और वृक्षिणी माग को वृक्षिण क्रोहाण करा काता था !

कोसक जनपर में ननक प्रसिद्ध निगम और माम थे। कोसक का प्रसिद्ध स्थायार्थ पोरक्सारि कहा नगर में रहना था जिस प्रसेननिग ने बसे प्रतान किया था। कोसक जनपर के सासः नगरिनन्त और बेनागदर सामी में जाकर संगयाद उस ने बहुत में कार्गों को दीखित दिवा था। बादरी के स्थान प्रसिद्ध अप्यापक था जो दिखनायन में सावर गोहायरी नदी के कियारे संश्या साक्षम बनाया था।

हम करार का लाने हैं कि कांशक और सगय में बारावासी के किए प्राप: शुन्न हुना कराता में किछ बाद में दानों में सन्ध्य हो गाई थीं। शन्धि के वधान कांग्रक लीता करोमितन के वपनी छुनी वितार वा विवाद समय गरंग वजात-छन्न से कर विवा था। कोंग्रक की कर्या पीमा वर स्थित करिले बानु के गावन प्रमेन निन् के कर्यान थे कार वे कोश्यक नोग्र ससेवनिन् से वर्ष ईपने रक्ते थे।

हरहरएक मनकराय शास्त्रवायु और वक्तायवन-भे कीवान जनवर के प्रसिद्ध प्राप्त से अहीं वर भगवान समय-समय पर समें थं और जनवार विशे से ।

्रे अष्ट

अप्र व्यवद् थी राज्यानी काण नगरी थी जो काण और गंगा के संगम पर बसी थी। काण जिकिया में ६ वीजन दूर थी। और व्यवद् वर्गमान आसम्बुद कार वृद्धि विकों के साथ उपर में कामी वर्षा नक देवा कुमा था। कभी वह समय व्यवद के असमीय का और राज्याता समुद्ध के किसने नक रिम्पृत का। कम की अर्थाय राज्यानों के विद्युद सम्मानि आसम्बुद के विकट कामा नगर और चम्पापुर--हन दो गाँवों में विद्यमान है। महापरिनिर्वाण मुक्त के अनुसार चम्पा युद्ध काल में भारत के छः वहें नगरों में से थी। चम्पा से सुवर्ण-भूमि (छोअर यर्मा) के लिये च्यापारी नदी और समुद्र-मार्ग से जाते थे। अंग जनपद में ८०,००० गाँव थे। आपण अंग का एक प्रसिद्ध च्यापारिक नगर था। महागोविन्द सुक्त से प्रगट है कि अंग भारत के सात वहें राजनीतिक भागों में से एक था। भगवान् युद्ध से पूर्व अंग एक शक्तिशाली राज्य था। जातक से ज्ञात होता है कि किसी समय मगध भी अंग नरेश के अधीन था। बुद्ध काल में अंग ने अपने राजनीतिक महत्व को खो दिया और एक युद्ध के पश्चात् अंग मगध नरेश सेनिय विदित्रसार के अधीन हो गया। चम्पा की रानी गगगरा द्वारा गगगरा-पुष्करिणी खोदवाई गई थी। भगवान् बुद्ध भिक्षुसंघ के साथ वहाँ गये थे और उसके किनारे वास किया था। अंग जनपद का एक दूसरा नगर अश्वपुर था, जहाँ के बहुत से कुलपुत्र भगवान् के पास आकर भिक्षु हो गये थे।

§ मगध

मगध जनपद वर्तमान गया और पटना जिलां के अन्तर्गत फैला हुआ था। इसकी राजधानी तिरिव्यं अथवा राजगृह थी, जो पहावियों से धिरी हुई थी। इन पहावियों के नाम थे—ऋषिगिलि, वेपुल्ल, वेभार, पाण्टव और गृद्धकृट। इस नगर से होकर तपोदा नदी वहती थी। मेनानी निगम भी मगध का ही एक रमणीय वन-प्रदेश था। एकनाला, नालकग्राम, खाणुमत, और अन्धकविन्द इस जनपद के प्रसिद्ध नगर थे। बजी और मगध जनपदों के बीच गगा नदी सीमा थी। उस पर दोनों राज्यों का समान अधिकार था। अग और मगध में समय-समय पर युद्ध हुआ करता था। एक वार वाराणसी के राजा ने मगध और अंग दोनों को अपने अधीन कर लिया था। बुद्धकाल में अंग मगध के अधीन था। मगध और कोशल में भी प्राय. युद्ध हुआ करता था। पीछे अजतवान्तु ने लिच्छवियों की सहायता से कोशल पर विजय पाई थी। मगध का जीवक कौमारश्रूत्य भारत-प्रसिद्ध वेद्य था। उसकी शिक्षा तक्षशिला में हुई थी। राजगृह में वेलुवन कलन्दक निवाप प्रसिद्ध बुद्ध विहार था। राजगृह में ही प्रथम सगीति हुई थी। राजगृह के पास ही नालन्दा एक छोटा ग्राम था। मगध का एक सुप्रसिद्ध किला था, जिसकी मरम्मत वर्षकार ने करायी थी। बाद में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र नगर हुआ था। अशोक-काल में टसकी दैनिक आय ४००,००० कार्पापण थी।

§ वज्जी

वज्जी जनपद की राजधानी वैशाली थी, जो इस समय बिहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर जिले के बसाद गाँव में मानी जाती है। वज्जी जनपद में लिक्छिवियों का गणतन्त्र शासन था। यहाँ से खोदाई में प्राप्त छेखों से वंशाली नगर प्रमाणित हो चुका है। इस नगर की जनसंख्या की वृद्धि से नगर-प्राकार को तीन वार विशाल करने के ही कारण इसका वैशाली नाम पदा था। वैशाली समृद्धिशाली नगरी थी। उसमें ७७०७ प्रासाद, ७७०७ कृटागार (कोठे), ७७०७ उद्यान-गृह (आराम) और ७७०७ पुट्रिटिणियाँ थीं। वहाँ ७७०७ राजा, ७७०७ युवराज, ७७०७ सेनापित और इतने ही मण्डागारिक थे। नगर के बीच में एक सस्थागार (ससद-भवन) था। नगर में उदयन, गौतमक, समाचक, बहुपुत्रक, और सारंदद चैस्य थे। भगवान खुद ने वैशाली के लिच्छिवियों की उपमा तावर्तिस लोक के देवों से की थी। वैशाली की प्रसिद्ध गणिका अम्यपाली ने खुद्ध को मोजन दान दिया था। विमला, सिंहा, वासिष्टी, अम्यपाली और रोहिणी वैशाली की प्रसिद्ध मिक्षुणियाँ थीं। बद्धमान स्थिवर, अजनवनिय, वर्जापुत्त, सुयाम, पियञ्जह वसभ, विल्लय और सत्यकामी यहाँ के प्रसिद्ध भिक्षु थे। सिंह सेनापित, महानाम, दुर्मुख, सुनक्कत और उम गृहपित वैशाली के प्रसिद्ध गृहस्थ थे। वैशाली के पास महावन में कृटागारशाला नामक विहार था। वहीं पर सर्वप्रथम महाप्रजापित गौतमी के साथ अनेक शाक्य महिलायें मिक्षुणी हुई

थी:) वैशासी में ही बूसरी संगीति हुई थी। वैशासी गनतम को तुत-गरिनिर्धाण के तीन वर्ष बाद ही, कूर बासकर मगद-नरेन कवातगत्र ने हदम किया था।

ु म€ळ

सक्य पनसन्त्र जनवन् या । यह वो आयों में विभक्त वा । क्रवीनारा और वाना इसकी वो राज याजियों थीं । जन्तिया प्रधास व्यवेककण विव्दाय नवस्वक सोगनगर और आसाम हात्के गरिय वार पे १ देवरिया प्रधास व्यवेककण विव्दाय नवस्वक सोगनगर और आसाम हात्के गरिय वार पे १ देवरिया विके का क्रवीनगर वे हि क्रवीनगर थे और क्रविकागर-सर्टियोंच पाना । क्रवीनगर पाना । क्रवीनगर पाना । क्रवीनगर के विकाश क्रवीन वा । यह पाना क्रवाय का प्रधास वा प्रधास वा प्रधास क्रवीन क्रवाय क्रवी हा वा । यह पाना क्रवीन गरा । क्रवाय क्रवीन क्रवाय क्रवीन क्रवाय क्रवीन क्रवाय क्रवीन क्रवाय क्रवीन क्रवाय क्रवीन हा । यह पाना क्रवीन क्रवाय क्र

ड बेरि

चेदि समयद सञ्जा के पास कुर समयद के विकट या। यह वर्गसाम तुम्बेक्सण्य को किये हुए विरुष्ट पर । इसकी राजवानी सोरियवडी मार या। इसके ब्रावे अञ्चाच स्वार सहसाठि और विञ्चा थे। वेद्यम सातक से सात होता है कि काशी और विषे के बीच बहुत सुदेरे रहते थे। अञ्चल मार से चेदि राह १ कोजब वह सा। सहसाठि में महाचुम्ब ने उपवेश विचा था। यह मीज्यम अग्न एक सहा होग्र मा। आञ्चास्ताव स्वतुक्त में विदे राह के आधीनकंश ख्यादाव में रहते हुए सर्प्य मास किया सा। शहसाविक भी चेदि समयद ना एक मिराइ प्राप्त मा सहां माराव जुड़ रावे थे।

🖁 यत्स

बास करपढ़ धारत के सीकड़ वह काववाँ में से एक या। इसकी राजधानी काशानी भी। इस ममय कराके नामकीय प्रवाहावाद के १ सीक परिवाम प्रमुगा वहीं के किसरे कोसम बामक प्राम में रिस्ता हैं। मुंतुमासीक का भी राज्य वारत काववा में ही परवा था। कैशानती पुत्रकार्यन पत्री नागरे में। बरिजों के नेता वावती के लेशानती की वावता की थी। बीहातकी में योधियाता इन्द्रकाराम की पावारिकाराम तीन प्रशिद्ध विदार से जिलों कमाता वहाँ वे प्रशिद्ध संद घोषिया इन्द्रकाराम कीर सववाद से। मगवाब सुद्ध के इब विदारों में विवास किया था बीर मिश्च संब को उपरेश दिवा वा थाई पर सेव में कुट भी पेदा हुई थी को सीछे सामक हो गई थी। सुद्धकान में राज्य कर्यका वहाँ राज्य कराता था उसकी आगरेश स्वामावती और वासुकदक्ता शीव राजियों भी जिनमें स्वामावती परम पुद्ध-मन क्वासिता की।

§ TC

प्राचीन साक्षिप में दो क्षय अनवहीं का वर्धय निकता है-वत्तर पुद्ध और दक्षिण पुरु ।

प्रत्येद में पणित कर सम्भवत उत्तर कुर हो हैं। पालि साहित्य में प्रणित हुक जनपद ८००० योजन विस्तृत था। कुर जनपट के राजाओं को काँरव्य करा जाता था। कम्मासदम्म कुरु जनपद का एक प्रसिद्ध नगर था, जहाँ बुद्ध ने महास्तिपद्वान और महानिदान जैसे महत्वपूर्ण एव गम्भीर सूत्रों का उपदेश किया था। इस जनपट का मूसरा प्रमुख नगर श्रुष्ठकोद्दिन था। राष्ट्रपाल स्वविर इसी नगर से प्रमुजित हुए प्रसिद्ध भिक्षु थे।

कुर जनपट के उत्तर सरस्वती तथा दक्षिण द्ययवती नदियाँ बहती थीं। वर्तमान मोनपत, अभिन, कर्नाल और पानीपत के जिले कुर जनपद में ही पणते हैं। महासुतसीम जातक के अनुसार कुर जनपद ३०० योजन विम्नृत था। इसकी राजधानी इन्द्रपहन (इन्द्रप्रस्य) नगर था, जो सात योजन में फैला हुआ था।

§ पञ्चाल

पद्माल जनपर सागीर थी नहीं से दो भागों में विभक्त था—उत्तर पद्माल कोर दक्षिण पद्माल । उत्तर पद्माल की राजधानी अहिच्छत्र नगर था, जहाँ हुमुँ ख नामक राजा राज्य करता था। वर्तमान समय में बरेली जिले का रामनगर ही अहिच्छत्र माना जाता है। दक्षिण पञ्चाल की राजधानी काम्पिल्य नगर था, जो फरवरगवाद जिले के कम्पिल के स्थान पर स्थित था। समय-समय पर राजाओं की इन्छा के अनुसार वाम्पिल्य नगर में भी उत्तर पञ्चाल की राजधानी रहा करती थी। पञ्चाल-नरेश की भिगनी का पुत्र विशाख शावस्ती जाकर भगवान् के पास दीक्षित हुआ और छ अभिज्ञाओं को प्राप्त किया था। पञ्चाल जनपद में वर्तमान बदाऊँ, फरवन्वाबाद, और उत्तर प्रदेश के समीपवर्ती जिले पदते हैं।

§ मत्स्य

मत्स्य जनपद वर्तमान जयपुर राज्य में पइता था। इसके अन्तर्गत पूरा अलवर राज्य और भरतपुर का कुछ भाग भी पहता है। मन्स्य जनपद की राजधानी विराट नगर था। नादिका के गिजिकावसथ में विहार करते हुए भगवान् बुद्ध ने मत्स्य जनपद का वर्णन किया था। यह इन्द्रप्रस्थ के दक्षिण-पश्चिम और सुरमेन के दक्षिण स्थित था।

§ शूरसेन

श्रसेन जनपट की राजधानी मधुरा नगरी (मधुरा) थी, जो कीशास्वी की भाँति यमुना के किनारे वसी थी। यहाँ पर भगवान् बुद्ध गये थे और मधुरा के विहार में वास किया था। मधुरा प्रदेश में महाकात्यायन ने घूम-घूम कर बुद्ध धर्म का प्रचार किया था। उस समय श्र्रसेन का राजा अवन्तिपुत्र था। वर्तमान मथुरा से ५ मील दक्षिण पश्चिम स्थित महोली नामक स्थान प्राचीन मधुरा नगरी मानी जाती है। दक्षिण भारत में भी प्राचीन काल में मथुरा नामक एक नगर था, जिसे दक्षिण मथुरा कहा जाता था। वह पाण्ड्य राज्य की राजधानी था। उसके नष्टावशेष इस समय मदास प्रान्त में बैगी नटी के किनारे विद्यमान है।

§ अदवक

अर्वक जनपढ की राजधानी पोतन नगर था। अर्वक-नरेश महाकारवायन द्वारा प्रव्रजित हो गया था। जातक से ज्ञात होता है कि दन्तपुर नरेश कार्लिंग और अर्वक नरेश में पहले सवर्ष हुआ करता था, किन्तु पीछे दोनों का मैत्री सम्बन्ध हो गया था। पोतन कभी काशी राज्य में भी गिना जाता था। यह अर्वक गोदावरी के किनारे तक विस्तृत था। बावरी गोदावरी के किनारे अर्वक जनपद में ही जाधम बना कर रहता था। पर्तनात पैठन किना ही अश्वक शमपन माना जाता है। वहाँ सः प्रारक्क वरेश का एक पिकालेका भी पाछ हो अशा है। सहागोषित्य सुक्त के अनुसार पढ़ सहागोषित्य हाश निर्मित हुआ था।

🕯 भयन्ति

भवित्य जवपन् को राजधानां कजीवी नगरी भी जो अच्छुतगामी हारा नवानी गई भी । अवस्ति जवपन् में नर्नमान माठ्य निमार और माज्यमारत के निकटवर्षी प्रदेश पहते थे । अवस्ति जनपद हो मानों में वित्यक था। उन्हों माग की राज्याणी तजीनी में भी भीर दक्षिणी माग की राज्यानी माहिष्मती में , अद्दार्शिक्त शुक्त के अञ्चलर अपनित्य की राज्यानी साहिष्मती भी कहीं का राजा कैश्वमू मा। इन्हामर कीर सुद्धमें बहुत नवस्त्र जवपन् के महिक्क नगर थे।

जवारित करपद श्रीक्षणे का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। जमयकुमार इसियासी इसियन छोजकुटि इत्या सीर महाकालायन जवारित करपद की महाविम्हियाँ थीं। महाकालायन उन्नेशी-मरेस वया मधील के द्वारित पुत्र थे। यणकायोत को महाकालावन ने ही बीद बनाय था। मिश्च इसियन क्वारित के बुलाम के दाने वालं थे।

कीसाम्बी और जनसिंह के राजवाशों में पैवादिक सम्बन्ध था। वरवायरीत तथा तक्षण में कई बार बुद हुए। अन्त में वरवायरीत ने अपनी पुत्री वासवद्या का विवाद उदयन से कर दिया वा और दोवों भिन्न दो गाये थे। उद्वान ने मध्य के साथ भी वैवादिक सम्बन्ध स्थापित कर किया था विवाद कीसाम्बी दोनों और से सुरक्षित भी।

भवन्ति की राजवानी उरजैंगी से मसीक का एक शिकाकेक सिक लुका है।

हुँ भगर, प्राप्त और कस्बे

अपूर गया---मगवान् उक्केका सं संवा गर्वे थे और गया छ अपर-गक्त कहाँ उन्हें नागराज्ञ सुक्केंब वे मिमन्तित किया था।

सम्बन्ध्य पावपुर के पूर्व सम्बद्धन्य गामक पुत्र गासक प्राम भा र

भागभावित्य — साव के शम्यकवित्य प्राप्त में सावान् रहे से कहाँ सहस्पति जाता ने उत्तका इकीन करके स्त्रति की भी ।

अधोष्पा—वहाँ भगवाद गवे ने बीर वास्न किया था। वाक्षि साहित्य के जनुसार वह संगा नदी के किनारे स्थित था। फिर भी वर्तभाग अधोच्या नगर दी भागा बाता है। दुरूबास में यह बहुत स्रोत नगर था।

अन्बपुर---वह एक नगर वा जो तेकवाह नहीं के किनारे बसा शां।

आस्त्री—मानवी में समास्त्रम बामक प्रसिद्ध चैत्व वा वहाँ बुद ने वास विधा था। वर्त मान समय में उत्तर महेस के उत्तान क्षित्र के नवक (वा नैवक) को साहबी माना बाता है।

अनुपिया— वह सरक बनपद का एक अशुक्ष किशम (करवा) वा । वहीं पर सिवार्ष क्षमा में ममन्तित होने के नाए एक शशाह विवास किया था और वहीं कतुरहा महिन किरिक पंतु देवदक बानन्व और बपाकि ममन्तित हुए थे। त्यासक्क भी वहीं मजकित हुए थे। वर्तमान समय में देवदिया किसे में बात के बात मोशन नहीं के कियारे का लैंबहर ही कतुपिया नगर आवा बाता है जिसे साक-कक 'वीद्दार' कहते हैं।

कास्मापुर--राजा चीते के तमकों में इतिवादर अवस्ता सिंहदुर उत्तर पंजाक और दरादार नगरों को बमाबर था। इतिवादर ही बीके इतितमापुर हो गमा था और इस समाच हाटके मध्यक्षेत्र और निळे की मयान तहसील में विश्वमान हैं। सिंहपुर हुएनसाग के समय में तक्षिशिला से ११७ मील पूरव स्थित था। अन्य नगरों का कुछ पता नहीं।

अस्लफ्ष्य चैशाली के लिस्डिवियों, मिथिला के विदेहों, क्षिणवस्तु के शाक्यों, रामग्राम के कोलियों, सुंसुमार्रागिर के भगों और पिष्यलिवन के मीर्यों की भाँति अस्लकष्प के बुलियों का भी अपना स्वतन्त्र राज्य था, किन्तु बहुत शक्तिशाली न था। यह १० योजन विस्तृत था। इसका सम्बन्ध वेडदीप के राजवश से था। श्री बील का कथत है कि वेडदीप का द्रोण ब्राह्मण शाहाबाद जिले में मसार से वैशाली जानेवाले मार्ग में रहता था। अत. अस्लकष्प वेडदीप से बहुत दूर न रहा होगा। अस्लक्ष्य के बुलियों को बुद्धधानु का एक अश मिला था, जिसपर उन्होंने स्तूप बनवाया था।

सिद्य-अङ्ग जनपद के भिष्य नगर में महोपासिका विशाखा का जन्म हुआ था। वेल्रवग्राम-यह वैशाली में था।

मण्डग्राम-यह वजी जनपद में स्थित था।

धर्मपाल ग्राम-यह काशी जनपट का एक ग्राम था।

एकशाला-यह कोशक जनपद में एक ब्राह्मण बाम था।

एकनाला— यह मगध के दक्षिणागिरि प्रदेश में एक ब्राह्मण ब्राम था, जहाँ भगवान् ने वास किया था।

एरकच्छ-यह दसण्ण राज्य का एक नगर था।

ऋषिपतन—यह ऋषिपतन मृगदाय वर्तमान सारनाथ है, जहाँ भगवान् ने धर्मचक प्रवर्तन किया था।

गया—गया मे भगवान् बुद्ध ने सूचिलोम यक्ष के प्रइनों का उत्तर दिया था। प्राचीन गया वर्तमान साहवगज माना जाता है। यहाँ से ६ मील दक्षिण बुद्धगया स्थित है। गयातीर्थ बुद्धकाल में स्नानतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध था और यहाँ बहुत से नटिल रहा करते थे।

हस्तिग्राम—यह वज्जी जनपद का एक ग्राम था। भगवान् बुद्ध वैशाली से कुशीनगर जाते हुए हस्तिग्राम से होकर गुजरे थे। वर्तमान समय में यह बिहार प्रान्त के हथुवा से ८ मील पश्चिम िषावपुर कोठी के पास अवस्थित है। आजकल उसके नष्टावशेष को हाथीखाल कहा जातां है। हस्तिग्राम का उगात गृहपति सघसेवकों में सबसे बढकर था, जिसे बुद्ध ने अग्र की उपाधि दी थी।

• हिलिद्वचसन—यह कोलिय जनपद का एक ग्राम था। यहाँ भगवान् बुद्ध गये थे। कोलिय जनपद की राजधानी रामग्राम थी और यह जनपद शाक्य जनपट के पूर्व तथा मल्ल जनपट के पश्चिम दोनों के मध्य स्थित था।

हिमवन्त प्रदेश—कोशल, शाक्य, कोलिय, मल्ल और वजी जनपदों के उत्तर में फैली पहाड़ी ही हिमवन्त प्रदेश कहलाती है। इसमें नेपाल के साथ हिमालय प्रदेश के सभी दक्षिणी प्रदेश सम्मिलित है।

इच्छानङ्गळ-कोशल जनपद में यह एक बाह्मण धाम या। मगवान् ने इच्छानगढ वनसण्ड मे वास किया था।

जन्तुग्राम—चालिका प्रदेश के चालिका पर्वत के पास जन्तुग्राम था। भगवान् के चालिका पर्वत पर विहार करते समय मेचिय स्थविर जन्तुग्राम में भिक्षाटन करने गये थे और उसके वाद किमिकाला नदी के तीर जाकर विहार किया था।

कलवालगामक यह मगध में एक माम था। यहाँ पर मौद्रल्यायन स्थिविर को अर्हात्व की प्राप्ति हुई थीं।

कार्यगाल—यह प्राप्तम देश की पूर्वी सीमा पर स्थित एक प्राप्त था। यहाँ के मैलुकन और सुकंत्रस्य में तकारात के विदार किया था। विकिन्त प्रकृत के अनुसार यह एक साक्रण प्राप्त था और इसी प्राप्त में नागासक का कथा हुआ। या। वर्तमान समय में विदार प्राप्त के संवाक परगण में कंकमोक सामक काल को ही कार्याय सामा कता है।

कोटिप्रास-पद वजी जनपद में पुरु प्रास था। भगवाद पाटकि-मास से यहाँ आवे थे, वहाँ से प्राप्तिक गारे से बीट स्वतिका से विभागी।

कुचिद्वया----पष्ट कोकिय जनपद में युक्त शाम था । कुम्बिन के कुम्बियानवर्ग में समवान ने विहार किया वा और सप्यकासा को स्वस्ति-पर्वक एक कामे का शासीबॉड विधा जा ।

कपिरस्यस्य — यह सात्रव कवपद की राजवाणी थी। सिद्धार्थ यांत्रस का कम्म कपिकसस्य के ही सात्रव राजवत्त में हुवा था। सात्रय वधपद में चातुमा सामगाम बसुम्म सम्बद्ध स्थापत स्यापत स्थापत स्थाप

केटापुत्र-पह कोशन कवपह के कारायंत्र पूक्त कोश-शा स्वतन्त्र शास्त्र था। पहाँ के काकाम प्रक्र शास्त्र सीर्थ और किस्त्रवी राजाओं को मांति गणतन्त्र प्रवासी से बासन करते है।

स्रोप्राधारी-यह खेमनरेश के राज्य की राज्याची की ।

सिद्धिश्वा—सिनिका विदेह की राजधानी थी। हुदकाक में जह बजी कराय के अस्तांत थी। वजी जयपद की वैशादी और विदेशों की सिधिका—बह प्रसिद्ध नगरियों थी। प्राचीनकाल में सिधिका स्वारी सात पोजब पिस्तुत की और विदेशों की सिधिका नार से प्राचीन वार प्रसिद्ध में दे को जन की सुरी भी। विदेश राज्य में १५ साम १६ स्वार प्रसिद्ध में ६ को जन की सुरी भी। विदेश राज्य में १५ साम १६ स्वार प्रस्तुत की राज्य की स्वार प्रस्तुत की से १व कर्मिका है। सिधिका एक स्वाराधिक केल्ल था। आवस्त्वी कीर बारावसी से प्रसार की का से आव की से । वर्गमान विद्युत (शिर श्रीक) में विदेश साम कात है। सिधिका के मार्थान अवसीय विद्युत प्राप्त के श्रुवक्ता प्रस्तुत की स्वार में नेवाक की सीमा पर बनकपुर नामक करने से प्राप्त की स्वाराध पर बनकपुर नामक करने से प्राप्त की स्वार में नेवाक की सीमा पर बनकपुर नामक करने

सम्बद्धास-वह सगव में एक शास वा ।

प्रकारमा—पह प्राप्त में राजपुर से 3 क्षेत्रन की हूर्त पर स्थित था। वहाँ के पाजारिक-धान-वह में समझ्या ने विद्यार किया था। वर्षेप्रान समय में यह परवा कि के शाजपुर से क प्रीक्त कथर परिवार में स्वरियत है। इसके विशास लग्डहर वर्षेशंव है। यह करी और सावधी शावादर्श हैली में प्रवास मीत-विधानित्र ता।

मासकः—मह राज्यह के बास स्थाव में इक प्राप्त था। इसी प्राप्त में शारिपुत्र का करन हुआ था और वहीं बणका परिविधीय भी। वर्तमान समय में राज्यह के पास का वासक मान भी प्राचीन मातक माना बाता है।

सादिका-चर वजी बवपत्र का युक्त साम था। पारकिसाम से गाँगा पार कर कोरियास और सादिका में मगबाय गढ़े के और कहाँ से बैद्धाकी ।

पिष्यस्मितन सह सीवों की राजपानी थी। यहाँ के शीवों न भगवाय सुद्ध की चिता से मास भंगार (कोपका) पर न्यूप वश्ववाया था। वर्तमान समय से इसके वद्यापोप जिला गीरवपुर के इसुनी रदेशन से 32 लीक वक्षिन स्पत्तीरों नासक स्थान में मास हुन है।

रामधाम-काकिय प्रकरह के हो मसिस कार ये समझाम और इंबरट । सगवाह के हरि विष्यंत्र के बाद समझाम के कोकियों से जमको करिव पर रुप्त बनावा वा । स्री ए सी एक कारछायछ ने वर्तमान रामपुर-देवरिया को रामग्राम प्रमाणित किया है जो कि मरवा ताल के किनारे बस्ती जिले में स्थित है, किन्तु महावंश (३१, २५) के वर्णन से ज्ञात है कि रामग्राम अचिरवती (राप्ती) नदी के किनारे था और बाद के समय वहाँ का चैत्य टूट गया था। सम्भवतः गारखपुर के पास का रामगाँव तथा रामगढ़ ही रामग्राम है।

सामगाम-यह शाक्य जनपद का एक ग्राम था। यहीं पर भगवान् ने सामगाम सुत्त का उपदेश दिया था।

सापुग-यह कोळिय जनपद का एक निगम था।

शोभावती-यह शोभ-नरेश की राजधानी थी।

सेतदय-यह कोशल जनपद में एक नगर था। इसके पास ही उक्टा थी और वहाँ से सेतस्य तक एक सहक जाती थी।

संकर्स—भगवान् ने श्रावस्तों में यमक प्रातिहार्य कर, तुपित-भवन में वर्पावास करके महा-प्रवारणा के दिन संकस्स नगर में स्वर्ग से भूमि पर पटार्पण किया था। संकरस वर्तमान समय में संकिसा-वसन्तपुर के नाम से कालिन्दी नदी के उत्तरी तट पर विद्यमान है। यह एटा जिले के फतेहगढ़ से २३ मीळ पश्चिम और कनौज से ४५ मीळ उत्तर-पश्चिम स्थित है।

सालिन्दिय-यह राजगृह के पूरव एक ब्राह्मण ब्राम था।

सुंसुमागिरि नगर—यह भर्ग राज्य की राजधानी था । बुद्धकाल में उद्यन का पुत्र बोधि-राजकुमार यहाँ राज्य करता था। जो बुद्ध का परम श्रद्धालु भक्त था। किन्तु, भर्ग राज्य पूर्णरूपेण प्रजातन्त्र राज्य था, क्योंकि गणतन्त्र राज्यों में इसकी भी गणना की जाती थी। भर्ग आजकल के मिर्जापुर जिले का गंगा से दक्षिणी भाग और कुछ आस-पास का प्रदेश है, इसकी सीमा गंगा-टोंस-कर्मनाशा निद्यों एवं विन्ध्याचल पर्वत का कुछ भाग रही होगी। सुंसुमारगिरि नगर मिर्जापुर जिले का वर्तमान चुनार कस्वा माना जाता है।

सेनापित प्राम-यह उहवेला के पास एक ग्राम था।

थूण-यह एक ब्राह्मण माम था और मध्यम देश की पश्चिमी सीमा पर स्थित था। आधुनिक थानेश्वर ही थूण माना जाता है।

उक्काचेल-पह बजी जनपद में गंगा नदी के किनारे स्थित एक ग्राम था। उक्काचेल बिहार प्रान्त के वर्तमान सोनपुर या हाजीपुर के आसपास कहीं रहा होगा।

उपतिस्सग्राम-यह राजगृह के निकट एक ग्राम था।

उग्रनगर—उग्रनगर का सेठ उग्र शावस्ती में न्यापार के कार्य से काया था। इस नगर के सम्बन्ध में अन्य कोई जानकारी प्राप्त नहीं है।

उसीरध्वज-यह मध्यमदेश की उत्तरी सीमा पर स्थित एक पर्वत था, जी सम्मवतः कनख्छ के उत्तर पहला था।

घेरञ्जा नगर—भगवान् श्रावस्ती से बेरङजा गये थे। यह नगर कसीज से संकस्स, सोरेटय होते हुए मथुरा जाने के मार्ग में पद्मता था। वेरक्षा सोरेटय और मथुरा के मध्य कहीं स्थित था।

वेत्रवती-यह नगर वेत्रवती नदी के किनारे बसा था। वर्तमान वेतवा नदी ही वेत्रवती मानी जाही है।

वेणुवग्राम—यह कौशाम्बी के पास एक छोटा ग्राम था। वर्तमान समय में इलाहाबाद से ३० मील पित्रचम कोसम से थोड़ी दूर उत्तर-पूर्व स्थित वेनपुरवा को ही वेणुवग्राम माना जाता है।

§ नदी और जखादाय

पुरस्थान में मध्यम देश में जो यही जनाधाप भीर प्रकारियों थीं जमका संविक्त परिषय इस

प्रकार बाबना चाहिए:---

सचिरवती इसे वर्तमान समय में शसी कहते हैं। यह मास्त की पाँच महामदियों में एक

थीं । इसी के किमारे कोशस की राजधानी सावस्ती कसी थी ।

स्तोमा—इसी भरी के कियारे सिद्धार्थ कुमार ने प्रभव्या प्रकृष की थी। जी करियम ने गोर्प्य पुर बिके की शामी नहीं को अमोमा जाना है और भी करकायक से बस्ती बिके की कृदवा नहीं की किया इस पंथियों के केलक की प्रदि में नेवरिया जिके की प्रकृष नहीं ही शवीमा नहीं है। (वैकी क्रांतिगर का हरिदास, पक्षम प्रकृष्य पृक्ष ५८)।

वाहुका- बुद्वाछ में यह एक पवित्र शरी साथी बाती थी। वर्तमान समय में इसे बुमेछ

बास से प्रकारते हैं। यह राजी की सकाशक क्यी है।

दाहुमती—वर्तमान समय में इसे सामती कहते हैं को शेपाक से दावी हुई विदार मान्य में भारत है। इसी के किमारे कारमांह नगर चना है।

सम्पा-चार मगब सीर संग सनपहाँ की सीमा पर बहती मी ।

छडान्त---पद्र विज्ञाकम में विवत यह धरोबर था।

विशासिक प्राप्त की प्रसिद्ध नहीं है। इसी के किनारे हरिक्कार अपाय और धारानकी स्थित हैं। समारा प्रकारियी-ऑग कावक से कावा कार के पास थी। इसे राजी गमारा में कोड़

वाचा चा ।

वावा ना।

हिराध्ययंत्री—कुसीनारा और सब्बी का शाब्दक उपवचन दिरण्यवंदी नदी के किनारे स्थित
थे। देवरिया विके का सोजरर नाका हो दिरण्यवंदी नदी है , यह कुक्कुका स्थान के पास स्रवृक्षा नदी सें
किकती है। इसी को दिरका की वारों और कुसस्वी नारर भी कहते हैं। को कुसीनारा कर स्थान से हैं।

्व ? इस्ता का हरणा कर बारा कार कुल्लाहा गारा आ करण व आ क्यानार का करणाहरू । कीस्त्रिकी—जब गाँग की तुक सहावक नदी है । नर्जसाव स्त्रस्य में इसे इसी मदी कहते हैं । कहुन्दा—जब नडी पाता और हुसीमारा के बीच दिनत थी । वर्षसान वापी नदी डी कस्त्रता

मानी जाती है। (देखी कुसीनगर का इतिहास यह है)।

कडमदह---इस नरी के किनारे महाकात्वायन में कुछ दिनों तक विदार किया था ।

किमिकोस्ता—बह नही चाक्तिका में जी। शैक्तिक स्ववित नै जन्द्रमास में मिक्सारक कर इस नहीं के किमारे विद्वार किया था।

मैंगास पुण्कतिणी — इसी के किमारे केंद्रे हुन् सवागत को शहूक के परिनिर्धाण का समाश्चार मिका था।

मही--वह भारत की पाँच बड़ी नहियाँ में स एक थी। बड़ी गण्डक को ही मही बहते हैं।

रयदार-यह हिमालय में वृक्त सरीवर था।

रोहिनी-यह प्राप्य और क्रेमिय क्षमप्त का सीमा पर यहती थी। वर्तमान समय में भी इस रीहिनी ही यहन हैं। यह मारलपुर के पास राष्ट्री में गिरती है।

हाप्पिती-चड नदी राजगृह के पास बहती थी। वर्तमान प्रश्नान नदी हैं। सन्मवतः सप्पिती नदी हैं।

सुराजु-इस नरी के किनार आयुष्याम् अनुदत्त् में विश्वार किना था ।

निर्दामा—पह वरी बददेश मदेश में वहती थी। इसी के कियारे तुव्याया रिवर है। इस समय दसे निवासना वर्षी वहते हैं। विकासना भीर ओहन अदियों निवरत हो वस्तु वर्षी कारी है। निवासना वर्षी कारीवार विके से निवेशिया नायक कार्य के बना में विकासनी है। सुन्दरिका-यह कोशल जनपद की एक नदी थीं।

स्तुमागधा-यह राजगृह के पास एक पुन्करिणी थी।

सरभू—इस समय इसे सरयू कहते हैं। यह भारत की पाँच वड़ी निदयों में से एक थी। यह हिमालय से निकल कर बिहार प्रान्त मे गगा से मिलती हैं। इसी के किनारे अयोध्या नगरी बसी हैं।

सरस्वती—गंगा की भाँति यह एक पवित्र नदी है, जो शिवालिक पर्वंत से निकल कर अम्माला के-आदि-बद्दी में भैदान में उत्तरती हैं।

चेत्रचर्ती—इभी नदी के किनारे चेत्रवती नगर था। इस समय इसे चेतवा नदी कहते हैं और इसी के किनारे भेलसा (प्राचीन चिदिशा) नगर बसा हुआ है।

होतरणी—इसे यम की नदी कहते है। इसमें नारकीय प्राणी दु ख भोगते हैं। (देखो, संयुत्त निकाय, पृष्ट २२)।

यमुता—यह भारत की पाँच वहीं निद्यों में ने एक थी। वर्तमान समय में भी हमें यमुना ही कहते हैं।

पर्वत और गुहा

चित्रकृट—इसका वर्णन अपदान में मिलता है। यह हिमालय से काफी दूर था। वर्तमान समय में चुन्देकलण्ड के काम्पतनाथ गिरि को हो चित्रकृट माना जाता है। चित्रकृट स्टेशन से ४ मील दूर स्थित है।

चोरपपात-यह राजगृह के पास एक पर्वत था।

शन्धमादन-यह हिमालय पर्वत के कैलाश का एक भाग है।

गयाजीर्य—यह पर्वत गया मे था। यहीं से सिद्धार्थ गीतम उरुवेला में गये थे और यहीं पर युद्ध ने जटिलों को उपदेश दिया था।

गृद्धक्ट-यह राजगृह का एक पर्वत था। इसका शिखर गृद्ध की भाँति था, इसीिल ये इसे गृद्धक्ट कहा जाता था। यहाँ पर भगवान् ने बहुत दिनों तक विहार किया और उपदेश दिया था।

हिमवन्त-हिमालय को ही हिमवन्त कहते हैं।

इन्द्रशास्त्र गुहा-ाजगृह के पास अम्बसण्ड नामक ब्राह्मण ब्राम से थोड़ी दूर पर वैदिक पर्वत में इन्द्रशास गुहा थी।

इन्द्रकृट-यह भी राजगृह के पास था।

ऋषिगिछि-राजगृह का एक पर्वत ।

कुररघर—यह अवन्ति जनपद में था। महाकारयायन ने कुररघर पर्वंत पर विहार किया था। कालिशिला—यह राजगृह में थी।

पाचीनवंश-यह राजगृह के वैपुत्य पर्वत का पीराणिक नाम है।

पिफ्फलि गुहा-यह राजगृह में थी।

सत्तपण्णी गुहा-प्रथम सगीति रानगृह की सत्तपण्णी गुहा में ही हुई थी।

सिनेच-यह चारों महाद्वीपों के मध्य स्थित सर्वोच्च पर्वत है। मेरु और सुमेरु भी इसे ही कहते हैं।

इवेत पर्वत-यह हिमालय में स्थित है। कैलाश को ही इवेत पर्वत कहते हैं। (देखो, सयुत्त निकाय, पृष्ठ ६६)।

सुंसुमारगिरि पह भर्ग प्रदेश में था । खुनार के आसपास की पहाहियाँ ही सुंसु-मार गिरि हैं । सप्पतोपिकक प्रधार—शबप्र वे । वेपुरस्य—शबप्र वे । वेसार—शबप्र वे ।

ँ वादिका और वम

साह्यदन—साम के वने बाग को व्यक्तवन कहते हैं। तीन मान्नवन मसिन् हैं। पुरु राजपूर में बीवक का मान्नवन वा। बुसरा व्यक्तपा बड़ी के किवारे पावा और कुसीवारा के बीच, और ठीसरा कामच्या में क्षेत्रेय मानुष्य का मान्नवन था।

शासकाश्चित्तर-यह वैद्याची में था।

कारपारक युन—बह बजी बवपह में था। अम्बारक वच के मध्यिक अस्पार में बहुत से मिलाओं के विदार करते समय बिच गृहपति में उनके पास आकर समी-बचों की बी।

सामाधिय-साम्बद्धल-वह सरकराह में बद्धिया में था।

शक्तमध्य - यह साथत में था । अञ्चलक सुगदाय में समजान के बिहार किया था ।

श्रमध्यम्-वर् बावस्ती के पास वा ।

ह्य-जानक्षर धन-संपद्य-धर कोचल कावपद में ह्य-जार्थगढ़ माह्य प्राप्त के पास था। जेतवन-पद जावस्ती के पास था। क्तंमान महेट ही केतवन है। कोदाई से सिकार्यक नारि माह हो तके हैं।

कानियसप्र--वह मनिय शस्य मैं था।

कप्पासिय वत-सब्ध-चीस अववर्धीचें वे इसी वव-सब्द में हब का इसीन किया वा।

क्रम्प्रकृतिकार- वह राजगृह में था। यिकहरियों को जसव दान देने के बारस ही क्रम्प्रकृतिकार करा बाता था।

स्रदिसम्-कडियन में ही निनित्तार ने ब्रह्ममें को प्रदेश किया था।

द्धुंत्यती यन-पडी पर सिदार्च गीठम का बच्च हुआ या । वर्षमान् इमिमनदेहं ही प्राचीन इसिजी है। यह गौरकपुर मिके के गीठनवा स्टेशन से १ मॉक पविमा नेपाक राज्य में स्थित है।

सङ्गादन-पद कपिकवस्तु से केतर हिमाक्य के कियारे-विकार वैद्याकी तक सीत वहाँ सं समझक तक विस्तृत महाकम का।

महक्ति स्वादाय-वह राजपृह में था।

भीर निधाय-वह राजपह की समागवा प्रकारिकों के कियार निवस कर ।

ज्ञासम्बद्धाः वास्त्री सम्बद्धाः में हरिश्रमास के वास या ।

पाचारिकाधवन-यह भावन्या में था।

मेसकबायन-मर्ग प्रदेश के शुंधुमारगिरि में शंशकबावव क्राश्च था।

सिसपायन—वह नोवक कवाद में सैतक कार के पास उत्तर दिला में वा । कीक्षाओं और बाहबी में भी सिसपायन के । सीसम के वन को ही सिसपायन कहते हैं ।

द्गीतवन-वह राजपृक्ष में था।

उपधेत्तन शास्त्रजन—यह सरकराड में हित्त्ववश्वी नहीं वंतर कुसीवारा के पास उचर कोर था।

चेखुधन—यह शबगृह में का।

🖁 बैत्य और विद्वार

इंद्रकांक में को प्रसिद्ध चैत्व और विदार थे, वनमें से वैद्याकों में वाश्रक चैत्य श्रद्धाप्रक चैता,

सारम्दद चैत्य, उदयन चैत्य, गौतमक चैत्य और वहुपुत्रक चैत्य थे। कृटागार काला, वालुकाराम और महावन विहार वैशाली में ही थे। राजगृह में काश्यपकाराम, नियोघाराम और परिवालकाराम थे। पाटलिपुत्र में अशोकाराम, गिञ्जकावसथ और कुक्कुटाराम थे। कौशाम्बी में वदिकाराम, घोपिताराम और कुक्कुटाराम थे। साकेत में कालकाराम था। उज्जैनी में दिक्खनागिरि विहार था। भौर श्रावस्ती में पूर्वाराम, सळलागार और जेतवन महाविहार थे।

§ २. उत्तरापथ

उत्तरापथ की पूर्वी सीमा पर थूण ब्राह्मण ग्राम था और यह उत्तर में हिमालय तक फैला हुआ था। उत्तरापथ दो महा जनपदों में विभक्त था—गन्धार और कम्बोज। पूरा पंजाब और पश्चिमोत्तर सीमाबान्त उत्तरापथ में ही पदता था।

§ गन्धार

गन्धार जनपद की राजधानी तक्षिशिला नगर था। कश्मीर और सक्षिशिला के प्रदेश इसके अन्तर्गत थे। वर्तमान पेशावर और रावलिपछी के जिले गन्धार जनपट में पढ़ते थे। तीसरी सगीति के पश्चात् गन्धार जनपद में बौद्धधर्म के प्रचारार्थ भिश्च भेजे गये थे। तक्षिशिला नगर वाराणसी से २००० योजन दूर था। यह एक प्रधान न्यापारिक केन्द्र था। यहाँ दूर-दूर प्रदेशों से न्यापारी आते थे। बुद्धकाल में पुनकुसाति तक्षशिला का राजा था। वह मैत्री भाव के लिए मगध नरेश को पत्र और उपदार भेजा करता था।

§ कम्बोज

कम्बोज जनपद का विस्तृत वर्णन उपलब्ध नहीं है। यह पश्चिमोत्तर भेरित में पहता था। छुदर के लेख से केवल नन्दिपुर नगर का ही कम्बोज जनपद में नाम मिला है। हुएनसाग के वर्णन और अशोक-शिलालेख के आधार पर माना जाता है कि वर्तमान राजौरी पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त का हजारा जिला कम्बोज जनपद था। कम्बोज घोड़ों का उत्पत्ति-स्थान माना जाता था। अशोक-काल में कम्बोज में योनक महारक्षित स्थविर ने वर्म-प्रचार किया था।

१ नगर और ग्राम

गन्धार-कम्बोल जनपद में कुछ प्रसिद्ध नगर और प्राप्त थे। उनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

अरिट्रपुर-पह शिवि जनपद की राजधानी थी। पजाब का वर्तमान शोरकोट प्रदेश ही शिवि जनपद माना गया है। इस जनपद में चित्तीक के पास जेतुनर नामक एक और भी नगर था।

कर्भीर—करमीर राज्य गन्धार जनपद के अन्तर्गत था। अशोक-काल में यहाँ बुद्धधर्म का प्रचार हुआ था।

तक्षशिला-यह गन्धार जनपद की राजधानी थी। यह प्राचीन भारत का प्रधान शिक्षा-केन्द्र या। जीवक, यन्धुल मल्ल प्रसेनजित, महालि आदि की शिक्षा तक्षशिला में ही हुई थी। वर्तमान समय में पंजाब के रावलपिण्डी जिले में तक्षशिला के नष्टावशेष विद्यमान हैं।

साराल—यह मद्र देश की राजधानी था। वर्तमान समय में इसे स्यालकोट कहते हैं और यह पजाब में पहता है। कुशावती के राजकुमार कुश का विवाह मद्रराजकुमारी प्रभावती से हुआ था। प्राचीन काल में मद्र की खियाँ अत्यधिक सुन्दरी मानी जाती थीं और प्राय लोग मद्र-कम्याओं से ही विवाह करना चाहते थे।

🖁 ३ अपरान्तक

अपरान्तक प्रदेश में वर्तमान सिन्ध परिचानी राजपुताला गुजरात और नर्मदा के वेशिय के इप्र भाग पहते हैं। सिन्ध गुजरात और वक्रमी शीन राज्य अपरान्तक के अन्तर्गत थे। अपरान्तक की राज पानी सुत्पारक वयर में थी। वाणिजनाम, धवीच सहाराह नासिक स्ट्रत और काट राष्ट्र अपरान्तक प्रवेश में ही पहते थे।

§ मगर बीर प्राम

मरफ्ठछु—यह समुद्र के किशारे स्थित एक कन्द्रस्माह था। व्यापारी महीं से बीका द्वारा विदेशों के किये प्रस्थान करते थे। अंका, पत्रन देश सादि में बाने के किये यहाँ नीका मिलती भी। सुदर्भ मूमि (कोभर दर्भा) को भी न्यापारी वहाँ से बाया करते थे। कादिवाबाद प्रदेश का वर्तमान भवीच ही माचीन सन्दर्भ है।

महाराष्ट्र--वर्तमान सराक्ष प्रदेश ही महाराष्ट्र है। यह अवर गोदावरी और कृष्णा विदेशों के

बीच पैजा हमा है। वहाँ पर बसे प्रचारार्व महाचमेरकित स्वविद गये थे।

होत्रीर — सीवीर राज्य की शक्त्याणी रोजक नगरी थी। वर्तमाय समय में गुबरात मदेस के तरेर को बी सोबीर माण जाता है।

सुद्धारक---वह भी एक कन्द्रशाह था। वर्षमान स्रोपारा ही शुप्पारक है। यह अन्वहं से

६० सीड उत्तर और वसीव से ७ मीड उत्तर-परिचम थापा किन्ने में स्वित है।

शुरहु— यह एक राह्न वा किससे होकर सात्रोषिका वही वहसी थी। वर्षसाथ कविवाबाद और गुकराद का सन्य नाग ही हाई (ज्युराह) माना काटा है।

काकरङ्क- इसे ही काळालू श्री कहते हैं। सध्य और शक्षिय शुक्तात काळाड़ माना काला है।

६ ४ दक्षिणापथ

इक्षिणायम को उच्चरी सीमा सहकिष्णक निगम था। आचार्ष हुन्योप के सहाहुद्धार गांगा से इक्षिण और सोहादरी से उच्चर का सारा विस्तृत अहेला इक्षिणायन या इक्षिण स्वयप्त कहा जाता था। देखा का प्रकृत है कि हुद्धाकक में योगायती से इक्षिण के मदेशों का क्या आरत्यशिकों को जात स्था । यस्परि संग्रा को बावने थे किन्तु वहाँ सहाह आपों से ही लाला-बाचा होता था। सोहाबरी से इक्षिण प्रदेशों का परे-परिक्य लागेक्सक से सिक्सा है।

सरबंद और स्वशित महास्मापन भी विक्रिकापन में गिन्ने आहे से । महाप्रोजिम्म हुए के अञ्चलार अवस्ति की राजधानी मादिकारी भी को विक्रिकापन में वन्ती भी। इस्तेजिये कवस्ति को 'जबस्ति पृक्षि आपन करा जाता था। अवन्त्र पतन गोदान्ती के किमारे वा और वह भी विक्रिकासन के अन्तर्गत या। महाकोशक नामक जनपन थी वृद्धिकापन में वा विक्रका वर्षेण प्रधान-स्वाप्त १ है। इसे दक्षिण कोशक भी कहा बाता था। वर्षेणान विक्रकायुर रामधुर और सम्मद्धुर के बिन्ने तथा गामान के कुछ माग दक्षिण-वेशक के अन्तर्गत है।

§ नगर और ग्राम

असरावती—इस नगर में व्यंक्षक में वोशिखल कराव हुए ये । वह जातुविक समय में बार्लीकोड वारी के वास असरावती वास से विकास है । इसके व्यंक्षित समुद्र बहुत मसिक् हैं ।

मोज-रीहिशास्य भीवपुत्र कृषि मौजराष्ट्र के स्वर्त बाके से । अमरावसी किसे के प्रक्रिक्ट्र के

इक्तिम-पूर्व व मीक की बूरी वर स्थित सम्मक को भीव माना काता है।

टमिल रहु—द्राविड राष्ट्र को ही दमिलरट्ठ कहते हैं। इस राष्ट्र का कावेरी पटन वन्टरगाह वड़ा प्रसिद्ध नगर था, जो मालावार के आसपास समुद्र के किनारे स्थित था।

किल्ल-किलग राष्ट्र इतिहास-प्रसिद्ध किलग ही है। इसकी राजवानी दन्तपुर नगरी थी। चनवासी—रक्षित स्थविर वनवासी में धर्म-प्रचारार्थ भेजे गये थे। उत्तरी कनारा ही वनवासी कहा जाता था। यह तुगभद्दा और बढ़ीटा के मध्य स्थित था। आधुनिक मैसूर के उत्तरी भाग को वनवासी जानना चाहिए।

§ ५. प्राच्य

मध्यमदेश के पूरव प्राच्य देश था। इसकी पिश्वमी सीमा पर कजगल निगम, अग और मगध जनपद थे। प्राच्य प्रदेश में वग जनपद पढ़ता था। वंगहार जनपद भी इसका ही नाम था। प्रसिद्ध ताम्रलिप्ति वन्दरगाह प्राच्य प्रदेश में ही था, जहाँ से सुवर्ण भूमि, जावा, लंका आदि के लिए व्यापारी प्रस्थान करते थे। अशोक ने बोधिषृक्ष को इसी वन्दरगाह से लका भेजा था। वर्तमान समय में मिदनापुर जिले का तामलुक ही प्राचीन ताम्रलिप्ति है। यहाँ एक बहुत बढ़ा बोद्ध विश्वविद्यालय भी था। लका में प्रथम भारतीय उपनिवेश स्थापित करने वाला राजा विजय वग राष्ट्र के राजा सिहवाहु का पुत्र था। सम्भवत उपसेन वगन्तपुत्र स्थविर वंगराष्ट्र के ही रहने वाले थे। वग राष्ट्र का वर्धमानपुर भी प्रसिद्ध नगर था। शिलालेखों में वर्धमानभुक्ति के नाम से इसका उल्लेख है। आधुनिक बर्दवान ही वर्धमानपुर माना जाता है।

संक्षेप में बुद्धकालीन भारत का यही भौगोलिक परिचय है।

सारनाथ, बनारस

भिश्र धर्मरश्चित



सुत्त (=सूत्र)-सूची

पहला खण्ड

सगाथा वर्ग

पहला परिच्छेद

१. देवता संयुत्त

	पहला भाग	ः नल वर्गे	
नाम	f	वेपय	Âb
३. ओघतरण सुत्त		तृष्णा की बाद से पार जाना	9
२, निमोक्ख सुत्त		मोक्ष	₹
३. उपनेच्य सुत्त		सासारिक भोग का त्याग	₹
४, अच्चेन्ति सुत्त		सासारिक भोग का त्याग	=
५. कतिछिन्द सुत्त		पाँच को काटे	9
६ जागर सुत्त		पाँच से शुद्धि	\$
७ अप्रटिविदित सुत्त		सर्वज्ञ बुद्ध	8
८ सुसम्मुह सुत्त		सर्वज्ञ बुद्ध	8
९ नमानकाम सुत्त		मृत्यु के राज्य से पार	8
१० अरब्ज सुत्त		चेहरा खिला रहता है	4
	दूसरा भाग	. नन्दन वर्ग	
९, नन्दन सुत्त		नम्द्न वन	Ę
२. नन्दति सुत्त		चिन्ता रहित	Ę
३ निय पुत्तसम सुत्त		अपने ऐसा कोई प्यारा नहीं	Ü
४. खत्तिय सुत्त		वुद्ध श्रेष्ठ हैं	b
५. सन्तिकाय सुत्त		शान्ति से भानन्द	9
६ निद्यातन्दी सुत्त		निद्रा भौर तन्द्रा का त्याग	c
७ कुम्म सुत्त		कछुआ के समान रक्षा	C
८ हिरि सुत्त		पाप से छजाना	G
९ ऊटि सुत्त		झोपड़ी का भी त्याग	S
१० समिद्धि सुत्त		काल अज्ञात है, काम-भोगों का त्याग	8
	तीसरा भाग	ः शक्ति वर्ग	
१, सत्ति सुत्त		सकाय-इष्टि का प्रहाण	93

ı)

			(R)
•	फुसची सुच			निर्देश को योग मही क्यता
۹.	बरा सुच	ŧ		महा भीन सुकता सकता है 🕈
•	समाविकारण सुत्त			मन की शेकना
ч.	भरइम्स सुक			भाईत्य
٩.	पञ्चात सुच			प्रचीत
	सरा सुर्च			माग्र क्य का निराध
ć	सङ्ख्ल सुच			तृष्मा का त्याग
	चतुचरङ सुन्त			बागा ऐसे दोगी
1	प्रविज्ञह सुच			हुत्व से सुव्धि

चीचा भाग

पॉंचवी आग

फर्टी भाग

१ सहिम शुच

्र. संबद्धरी सूच

नसन्ति ध्रच

६ सहास्य

समय सच

८ कक्रिक श्रुप

९, पम्बचनीत सूच

१ वाहित स्व

२. कि वर्ष सच

४ एकम्क सुक

C. WOUTH BY

• बनहोप सुच

• इदंदि ग्रच

५. संबंधित श्रेष

१ वडीकार पुच

ा चरा सच

्र मिच सुच

४ वर्श्व सुक

५ बदेवे सुव

९, जबस्या मुक

५. भनोमनाम धत

३ जब धुर्च

जुएकपरहच्चीतुः सु

५, जाम्रावयण्यी सूत्र

६ साबु सुच

व्यका निराध का स्थाप

9 6 10 19 14

11

11

11 14 ..

येसे होगी से मिक

इंज्सी का स्वास

क्रम विकासी

प्रसाद का स्वाग

कर्म प्राप्त से स्वर्ग

त्रक वर्ग का सार

भिन्न सम्मेकन

काम देवा अच्छा है

तथागत हराह्यों से वरे हैं

असता वर्ग कोच में बाद सभी है

े क्या देनेवाका क्या पाता है !

किनके प्रथम सवा करते हैं ?

सरा को

महासद्भी का श्रा है

प्रक्य जारामा नहीं का सकता

इक्षानों से ही मुक्ति, सम्ब से नहीं

मध समयो मिय है

राह की करेगी ?

बंब्सी के इपक

यक वाद वाका

सर्थ-पर्थ

सैरागम

1

मित्र

माचार

रैश होना (३)

सतस्यपकायिक वर्ग सराहरों का साथ

ş 15 11

22 14 9.9 भराबाण के पैर में पीका देवताओं का आगमद २० 36 . 88

18

ı ŧ 21

٩t

44

ŧ٩ 11

11

Ħ

10

1 .

¥4

14

ŧ٩

10

	,	- /	
६. जनेति सुत्त		पेरा होना (२)	\$4
७. जनेति सुत्त		पंदा होना (३)	₹%
८. उप्पथ सुत्त		चेराह	રૂં જ્
९. दुतिया मुत्त		माधी	३९
१०, कवि सुत्त		कविता	RS
	सातवाँ भाग	' अङ वर्ग	
१. नाम सुत्त		नाम	80
२. चित्त सुत्त		चित्त	<i>ે</i> ૦
३ तण्हा सुत्त		नृ ग्णा	४०
४ सयोजन सुत्त		यन्धन ,	83
॰ बन्धन सुत्त		फाँस	33
^६ अग्भाहत सुत्त		सताया जाना	83
ं उद्दित सुत्त		लॉंबा गया	કા
८ पिहित सुत्त		छिपा देंका	४२
९ इच्छा सुत्त		इच्छा	8 =
१०. लोक मुत्त		हो क	धर
	भाटचॉ भाग	• झत्वा वर्ग	
१, झत्वा सुत्त		नाश	४३
२ स्थ सुत्त		रथ	કર
३ वित्त सुत्त		धन	8ફ
४ बुद्धि सुत्त		बृष्टि	8.8
७ भीत सुत्त		दरना	88
६ न जीरति सुत्त		पुराना न होना	8.8
० इस्सर सुत्त		ऐ इचर्य	84
८ काम सुत्त		अपने को न टे	४६
९ पाथेच्य सुत्त		राष्ट्-खर्च	३६
१० पज्जोत सुत्त		प्रचोत क्लेश से रहित	४६
११ अरण सुत्त		भक्त स राहत	४७
	दूसरा	परिच्छेद	
	२. दे	वपुत्त संयुत्त	
	पहला भाग	ः प्रथम वर्ग	
१ कस्सप सुत्त		मिक्षु-अनुशासन (१)	88
2 2701 23		सिक्ष-अनुशासन (>)	4.5

भिक्षु-अनुशासन (२)

किसके नाश से सुख ?

चार प्रद्योत

36

86

४९

२ कस्सप सुत्त

४ मागध सुत्त

३ माघ सुत्त

३ कोसल संयुष

पद्का माध ः प्रथम वर्ग

१ बहर सुन	चार की छोध न समग्रे	4.0
३ पुरिम सुक्त	वीन महितकर कार्र	54
६, शत्रस्य सुन्त	सम्द-धर्म परामा भारी बोला	- 11

४. पिय मुत्त		घवना प्यास कोन !	Ę0,
 अत्तरियात मुत्त 		धपनी रमावाली	ওত
६, सप्पक स्त		निलीभी घोट्ट ही है	Ų o
७. अध्यकरण सुत्त		पचारी में सद बोलने वा फल हु पह	5 1
८. मल्टिया सुन		अपने सं प्यारा कोई नहीं	51
९. यज्ञ सुन		पाँच प्रकार ने यहा, पीटा और हिमा-रहित य	ভ্য
		ती विसर	છ >
१० यन्धन सुन		रह याग	دی
	दूसरा गाग	• हितीय वर्ग	
१. नटिल मुत		उपरी रूप-रग से जानना कटिन	<i>૭</i> ૪
२, पद्मराज सुन		जो जिसे बिय है, वही उसे अच्छा है	319
३ टोणपाक सुत्त		मान्ना से भोजन करे	৩ হ্
४, पटम मगास मुत्त		रुठाई की टो वाने, प्रसेनजित की हार	७६
भ. दुतिय सगाम मुत्त		भजातगत्र की धार, छुटेस खुटा जाता है	৩৩
६ धीतु सुत्त		नियाँ भी पुरुषा से श्रेष्ट होती है	96
७, अपमाद मुत्त		अप्रमाद के गुण	9%
८, हुतिय अप्पमाट मुत्त		भप्रमाद के गुण	७९
९ अपुत्तरु सुत्त		कज़मी न वरे	1.0
१०, दुतिय अपुत्तक सुत्त		कज्मी त्याग कर पुण्य करे	63
	तीसरा माग	ः तृतीय वर्ग	
१ पुगाल मुत्त		चार प्रकार के व्यक्ति	८३
अय्यका सुत्त		मृत्यु नियत है, पुण्य करे	82
३ लोक सुत्त		तीन अहितकर धर्म	८५
४ इस्मत्य सुत्त		दान किसे दे ? किसे देने में महाफल ?	44
५, पव्यतूपम सुत्त		सृत्यु घेरे आ रही है, धर्माचरण करे	८७
	चौथा	परिच्छेद	
	8.	मार संयुत्त	
	पहला भाग	· प्रथम वर्ग	
१ तपोकम्म सुत्त		कडीर तपश्चरण वेकार	८९
२ नाग सुत्त		हायी के रूप में मार का आना	९०

३ सुम सुत्त

४ पास सुत्त

॰ पास सुत्त

सयमी मार के वश में नहीं जाते

बहुजन के हित-सुख के लिये विचरण

बुद्ध मार के जाल से मुक्त

९०

90

99

	(₹)	
६ सप्य सु ध		पृकासतास स विविधित म हो	48
 सोप्पिष्ठच 		থিকুত্ব স্তুৰ	48
< भागम्य प्रच		श्रमासक विन्तित नहीं	41
९ नामु सुच		शायु की अस्पता	98
१ आसु सुच		भाषु का क्षय	49
	दूशरा माग	ः द्विसीय वर्ग	
। पासाम धुक		पुर्दो में चलकता नहीं	94
२ सीइ मुच		बुद्ध समाओं में गरवते हैं	94
३. सब्धिक सुन्त		पत्थर से पैर करवा तीत्र वेदमा	44
४ पविकप शुच		बुद्ध बनुरोष-विरोध से मुक्त	9.5
५ मानस सुच		इच्छाओं का नाश	50
६ पत्त सुत्त		मार का वैक वनकर नावा	9.0
 भावतव सुत्त 		थायतनी में ही भय	96
८ पिण्ड श्रुत		हुद्द को निक्षा न सिकी	94
९ कस्तक श्रुष		मार का कुरक के कप में भाषा	44
१ स्वयुक्त		सांसारिक कार्मी की विजय	2
	तीसरा माग	ः दतीय वर्गे	
३ सम्बद्धेक सुन्त		सार का पहकाना	1.1
९ समिबि सुच		समृद्धि को बरावा	1 3
१ गोबिक सुच		गोविक की भारमहत्त्वा	1 3
२ सत्तवस्थानि झुत्त		भार द्वारा सात साक पीका किया बाद्या	2 T
५ भारदृष्ट्वित सुन		मार कम्पाची की परावय	1 4
	पाँच	वाँ परिच्छेद	
	ષ f	मेश्रुणी संयु च	
1 व्यवस्थित प्रच		कास मोग शौर बैसे हैं	7 4
२. स्रोमा सुच		एती-माण क्या करेगा ?	1 4
६, किसा गोदमी सुच		अञ्चानान्यकार का शास	1.5
क विक्रमा सुच		कास-तृष्मा का वास	1 5
५, उध्यक्षण्या शुक्र		उत्प∌नजाँ क्ष्री क् त्रिज्ञता	11
६ बाका सुव		सम्पान्त्रहण के शोब	11
 वपनाका मुच 		कोक सुक्रम-धवज्र रहा है	111
< सीशुपचाका शुक्त ९ सेका सुच		दुब् धासन में द्वि के ते क्यारिक की क्यो	117
९ सक्त सुख १ वक्रिस धुख		हेतु सं करपणि और निरोध	114
1 4144.00		जारम् क्र व्याध	113

छठाँ परिच्छेद

६. ब्रह्म संयुत्त

	पहला माग	ः प्रथम वर्ग	
१. आयाचन सुत्त		ब्रह्मा द्वारा बुद्ध को धर्मोपटेश के लिये उत्साहित करना	338
२, गारव सुत्त		बुद्ध हारा धर्म का सत्कार किया जाना	990
३ ब्रह्मदेव सुत्त		आहुति ब्रह्मा को नहीं मिलती	५ ५ ६
४. वकवहा सुत्त		वक ब्रह्मा का मान-मर्टन	336
५, अपरादिष्टि सुत्त		व्रह्मा की बुरी दृष्टि का नाश	999
६. पमाद सुत्त		ब्रह्मा को सविग्न करना	353
७. कोकालिक सुत्त		कोकालिक के सम्बन्ध मे	922
८- तिस्सक सुत्त		तिस्सक के सम्बन्व में	122
९ तुदुमह्म सुत्त		कोकालिक को समझाना	325
१०, कोकालिक सुत्त		कोकालिक द्वारा अग्रश्रावकों की निन्दा	923
	दूसरा भाग	: हितीय वर्ग	
१ सनकुमार सुत्त		वुद्ध सर्वश्रेष्ट	3 2 13
२ देवदत्त सुत्त		सकार से खोटे पुरुप का विनाश	१२५
३ अन्धकविन्द सुत्त		सघ-वास का महात्म्य	924
८ अरुणवती सुत्त		भिभ् का ऋदि-प्रदर्शन	१२६
५, परिनिब्बान सुत्त		महापरिनिर्वाण	926
		\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	

सातवाँ परिच्छेद

७. ब्राह्मण संयुत्त

पहला भाग	ः अहेत् वर्ग	
	क्रोध का नाश करे	१२९
	गाछियों का दान	930
	सह लेना उत्तम है	939
	निर्दोपी को दोप नहीं लगता	939
	अहिंसक कौन ?	१३२
	जटा को सुरुष्ठाने वाला	932
		१३३
	ब्राह्मण कीन १	388
	दक्षिणा के योग्य पुरुष	१३४
	वेळों की खोज में	१३६
	पहला भाग	क्रोध का नाश करें गालियों का दान सह लेना उत्तम हैं निर्दोषी को दोप नहीं लगता अहिंसक कौन ? जटा को सुलक्षाने वाला कीन शुद्ध होता है ? झाह्मण कीन ? दक्षिणा के योग्य पुरुष

	दूसरा भाग	ः उपासकवर्ग	
१ कसि सूच	-	पुद्ध की चोत्ती	114
२ उदय शुक्त		बार-बार निश्चादम	133
३ देवदित शुच		पुद्ध की दम्भता दाव का पांच	11
४ महासाछ सुच		पुत्रों द्वारा निष्क्रसित्त पिता	191
५ मानत्वद् सुच		कभिमान भ करे	185
६ परवर्षिक सुन्त		द्यापदा भ करे	188
 वयक्तम सुन्तः 		र्शनक कर शुका है	188
४ कहरत युच		विजीन पर्नामें पास	144
९ माद्वपोसक सुन्त		माता-पिता के पोपम में पुरूष	184
निक्पक सुत्त		निशुक्त सिमु वहीं	184
११ संपारन प्रक		स्मान से खुदि नहीं	114
१९ ग्रोमङ्गमक पुच		सम्त की पहकान	195
	সাত	र्गे परिच्छेद	
	6 1	क्रीश संयुच	
९ निस्ताना सुच		वंगीय का रह संकरन	194
२ जरित मुच		राग कोचे	114
🐛 अविमण्यता सुच		अभिमात्र का त्याग	184
४ जानम्ब सुच		कामराग से मुक्ति का अपाय	15
५ सुवाधित मुच		भुगाचित के सक्षय	141
६ मास्त्रिच सुत्त		धारियुत्र की श्रुति	141
० पदारमा मुच		मणारणा-कर्म	148
८ शोसहस्य शुच		ন্তৰ-শ্বনি	148
९ कोण्डाम सुव		भज्ञाकीण्डज्ञ के गुज	158
१ मोनास्याम शुक्त		सहामीप्रक्षाचन 🕏 गुष	d at at
११ गमारा सुच		দ্রৰ-শুনি	144
1२ वडीम मुक्त		र्थगील के अवाग	9 44
	नय	ाँ परिच्छेद	
	9	वन संयुत्त	
1 विवेक्त गुण		विवेक में सरामा	140
• वपहान गुन		बडो सोना छोचो	340
३ कम्मपतीत मृत		वहिक्ता की उपहेश	144
* RITTE DW		D	

निमुणीं का स्वरातम्द विद्वार समाद व करना

144

में कारी की अभिन्यता

६ अपुरुष्ट् गुल

(९)

		देर तक गाँवो में रहना अच्छा नहीं	9 ६ ०
v .	नागदत्त सुत्त	_	
۵	कुलघरणी सुत्त	सह छेना उत्तम है	3 ६ ०
	विजिपुत्त सुत्त	भिञ्ज-जीवन के सुख की स्मृति	३६३
_	सज्झाय सुत्त	स्वाध्याय	9 6 9
	अयोनिस सुत्त	उचित विचार करना	१६१
	मज्झन्तिक सुत्त	जगल में मंगल	१६२
	पाकतिन्द्रिय सुत्त	दुराचार के दुर्गुण	3 & 5
	पदुमपुष्फ सुत्त	विना दिये पुष्प सुँघना भी चोरी है	3 & 5
		दसवाँ परिच्छेद	
		१०. यक्ष संयुत्त	

9	इन्दक सुत्त	पैदाइश	368
	सक्क सुत्त	उपदेश देना चन्धन नहीं	383
	स्चिलोम सुत्त	स्चिलोम यक्ष के प्रक्त	१६४
	मणिभइ सुत्त	स्मृतिमान् का सदा कल्याण होता है	१६५
	सानु सुत्त	उपोसय करने वाले को यक्ष नही पीढित करते	१६६
	वियङ्कर सुत्त	पिशाच-योनि से मुक्ति के उपाय	380
	पुनव्बसु सुत्त	धर्म सबसे प्रिय	980
6	सुदत्त सुत्त	अनायपिण्डिक द्वारा बुद्ध का प्रथम दर्शन	386
S	सुक्का सुत्त	शुका के उपदेश की प्रशसा	१६९
30	सुक्का सुत्त	शुका को भोजन-दान की प्रशंसा	985
33	चीरा सुत्त	चीरा को चीवर-दान की प्रशसा	300
33	. भारतक सुत्त	आलवक-दमन	990

ग्यारहवाँ परिच्छेद

११. शक्र संयुत्त

		///	शक्र सञ्चरा	
		पहला भाग	ः प्रथमं वर्ग	
3	सुवीर सुत्त		उत्साह और वीर्य की प्रशसा	१७२
₹.	सुसीम सुत्त		परिश्रम की प्रशसा	१७३
R	धजग्ग सुत्त		देवासुर-संग्राम, त्रिरत्न का महात्म्य	१७३
9	वेपचित्ति सुत्त		क्षमा और सौजन्य की महिमा	308
પ્	सुभासित जय सुत्त		सुभापित	१७६
ξ	कुळावक सुत्त		धर्म से शक की विजय	300
હ	न दुव्मि सुत्त		घोखा देना महापाप है	300
C	विरोचन असुरिन्द सुत्त		सफल होने तक परिश्रम करना	306
ዓ	आरण्जकइसि सुत्त		शील की सुगन्ध	308
90	समुद्दकद्सि सुत्त		जैसी करनी बैसी भरनी	१७९

(10)
---	----	---

	दूसरा भाग	ः दितीय थग	
१ पदम वत मुल			
१ दुतिप वत मुल		इन्त्र के सात नाम और उसके मत	141
३ वितिय वस स्त		इन्द्र के मास और बत	148
४ ६किर मु च		बुद्ध मन्द्र बरिल्ल बरिल्ल बर्दी	143
५ शासगरपद्ग स्च		रमणीय स्थान	168
६ पत्रमान सून		मांबिक दान का अहारम्य	163
🤋 बस्दना मुत्त		शुक्र प्रत्युक्त कर कंग	148
८ परम महत्रमस्मता गुल		श्रीशकाण् भिद्यु और शूहरवीं को नमस्वार	1<5
🔩 दुनिय सद्दनसस्यना सुन		मर्वधेष्ठ चुद्द का वसरकार	164
 शनिष शष्टनसम्मना गुरा 		विशु-संब को वयररार	145
	र्शायरा भाग	क्तीय वग	
१ झन्धान्यूच		क्रोचका मद्रकरन स सुरा	140
 दुरद्गित्रय शुन्तः 		कोच व करने का गुण	144
३ मात्रा सुल		मध्य(। सावा	166
 मरचव गुल 		भरताय धार शमा	766
भ, ब्रह्मेयम शुग		साध का स्थाप	145
	दूर	सा खण्ड	
	9		
	14	नेदान वर्ग	
	पह	क्षा परिच्छद	

*2	मभिगमय गंपुश	
ण्डमा माग	। पु र ्यम	
५ देवना सुन	प्रणीस्त्रमञ्जूना र	141
+ विश्व श्रेम	क्षतीन्त-प्रश्नुन्तान् कर क्यरण्यः क्रिया कार्यं चार शासन्तर्वः विवस्ती सुद्धं का समी सरसनुन्तान् कर क्षात्रः	
 वर्षात्रम् सुन 		
 विशंभी मूच 		
न किसी शुन	शिक्षी वृद्ध को सर्गान्यसमुख्य का आन	344
र केमार सुच	की पत् पुर को सरी-पन्युक्त पा प्राप	131
कर सुम्पन	म'न दुरा की बर्गानसमुख्या का प्राप्त	39.9
र प्रत्यम शिल	सन्त्र सर्गानार काम	344
नूसरा सना	s भारतस्या	
६ सन्दर्भ शुक	प्रात्मिति के सम्प्रात भीत संस्था प्रामृति	

	(११)		
ः फ रगुन सुत्त	चार आह	हार और उनकी उत्पत्तियाँ	19
३ पठम समणवाह्मण सुत्त	_	तामके अधिकारी श्रमण-त्राह्मण	20
४. दुतिय समणवाहाण सुत्त	_	के जानकार श्रमण-घाह्यण	२०
५. कच्चानगोत्त सुत्त		दृष्टि की न्यास्या	>oc
६, धम्मकथिक सुत्त	~	शक के गुण	503
७ अचेक सुत्त		समुत्पाद, अचेल काज्यप की प्रवज्या	
८. तिम्बरुक सुत्त		त के कारण	508
९ वालपण्डित सुत्त		र पण्डित में अन्तर	208
१०, पञ्चम सुत्त		समुत्पाद की व्याख्या	२०५
तीसरा		खावल वर्ग	
१ पदम दसवल सुत्त	बुद्ध मह	र्शेत्तम कहलाने के अधिकारी	२०७
२ दुतिय दसवल सुत्त		की सफलता के लिये उद्योग	200
३ उपनिसा सुत्त	अ।श्रव-	क्षय, प्रतीत्यसमुत्पाद	206
४ अस्त्रतिस्थिय पुत्त		र्तात्वसमुत्पन्न है	२०९
७ भूमिज सुत्त	सुख-दुः	व सहेतुक है	533
६ उपवान सुत्त	दु ख स	मुत्पन्न है .	292
७ पच्चय सुत्त	कार्य-का	रण का सिद्धान्त	२१३
८, भिक्खु सुत्त	कार्य-का	रण का सिद्धान्त	293
९ पटम समणवाह्मण सुत्त	परमार्थ	ज्ञाता श्रमण-त्राह्मण	5 है द
५० दुतिय समणद्राह्मण सुत्त	संस्कार	-पारगत श्रमण-ब्राह्मण	5 8 6
चौथा भाग	*	कलार श्रनिय वर्ग	
१ भूतमिद सुत्त	यथार्थ :	हान	ခုရှပ
२ कछार सुच	प्रती त्यस्	तसुत्पाद, सारिपुत्र का सिंहासन	384
३ पठम नाणवत्थु सुत्त	ज्ञान के		236
४ दुतिय जाणवत्थु सुत्त	ज्ञान के		२१९
५ पठम अविज्ञा परचया सुत्त		ही दु लो का मृल है	>38
६ दुतिय अविज्ञा परवया सुत्त ७. न तुम्ह सुत्त		ही दु खो का मल है	220
८ पठम चेतना सुत्त		भपना नहीं 	223
९ दुतिय चेतना सुत्त	चतना चेच्याः	और संकटप के अभाव में मुक्ति	२०१
१० ततिय चेतना सुत्त	चेतना चेतना	और सकटप के सभाव में मुक्ति और संकटप के सभाव में मुक्ति	२२२
पॉचवॉ भाग	4(6-4)		२२२
	*	गृहपति वर्ग	
१ पडम पद्धवरभय सुत्त २, द्रुतिय पद्धवेरभय सुत्त	पाँच वेर-भय की शान्ति पाँच वेर-भय की शान्ति		
३, हुक्ख सुत्त	दु स और उसका स्य		
४. लोक सुत्त	लोक की उत्पत्ति भी	र ल्य	552
५, घातिका सुत्त	कार्य-कारण का सिद्ध	र न्त	३२ २ २ ५
६. अञ्जतर सुत्त	मध्यम-मार्गं का उन	देश	₹3 €
			-

 भ्रानुस्साणि स्थ 	मध्यम मार्ग का बपरेश	ररर
र राज्यस सुन	काडिक मार्गी का स्थान	224
्र परम भरिपमांबर मुन	भार्यभावक को प्रशीतपसम् पाष्ट्र में सन्दर्द नहीं	220
र्वातिय वरियमायक सुन	शायभावक का प्रतित्यममुत्पादमें सन्दह नहीं	११७
छर्ग भाग	। युस् धग	
१ परिविमना सुन	मर्चेशः हु स अय क किय प्रतीत्वममुत्पाद का अनन	994
» उपा रत गुन	मैसारिक भारपंत्री में बुहाई देवन में बुक्त का नाहा	445
३ परम सङ्गाजन सुन	आस्वाद्-वरंग ल नुष्णा का मात्रा	44
४ दुनिष ग्रामात्रम सुग	अन्याद-त्याग से नृप्त्या का नावा	*1.
५, परम भरादशा सुन	नृष्णा सहायुष्ण दे	22.
६ दुनिय सहारत्य सुन	नृष्मा सहार्थ है	131
सन्द्र सूच	मुच्या सदम हुस के समान दे	221
८ मासका गुन	मांचारिक मारबाय-पूर्यंत्र से विज्ञान की उत्पति	221
ू दिन्यम्ब गुन	गांगारिक भाग्यार-पूर्णन से विज्ञान की उप्पत्ति	211
s বিহাৰ যুল	व्यनीत्रममुत्राम् श्री गम्भीरता	222
शानपो	भाग ः मदा पग	
५ पदम मागुत्रस गुन	चित्र संस्पृत जगा है	122
६ युनिक कासुत्रका सुध	प्रमुख्यान के बैरानक में शुन्दि	122
३ पुनर्शत सुन	वार मकार के आहार	121
 व्यविद्यासमुद्रः 	पार मकार के अनुगर	224
भ, सगर सुन	भार्व भशेतिक सारी प्राचीत बुक्-प्राची है	354
६ गामाम गुण	भाग्यासिक समा	**
• नवदमाद सूच	महामाण की जलाति का निवस	125
4. कुलाशी सूच	शव का विश्वच ही निर्वाण	24
ৰ প্ৰবৰ্ষণ গ্ৰহ	मरमरण का इस्ता	***
३ मृत्सासम्ब	भर्म श्यामाय प्रत्य के बहुबान् विवर्णन का ज्ञाम	443
मारपी भाग	१ धमच प्राचन प्रा	
4 aces in	कामार्थालम् स्राप्त-साम्रक	**
e-s and the	पश्मार्थक्षामा समाम साहार	
11 4444 444	नश्चार्णसम्बद्धाः अस्तानः अस्तानः	***
	t state dailed	
	वयानेगाव के विशे पुत्र की क्षेत्र	414
	वयानीहरू के द्वित हिन्द्रार के बर	444
	समार्थिका है हिला साम सहस्र	344
	andra & for my new	144
	MALLER & Can A term with	

(१३)

७ आतप्प सुत्त	यथार्थज्ञान के लिये उद्योग करना	२४८
८ विरिय सुच	यथार्थज्ञान के लिये वीर्य करना	२४९
९, सातच सुत्त	यथार्थज्ञान के लिये परिश्रम करना	२४९
o, सित सुत्त	यथार्थज्ञान के लिये स्मृति करना	२४९
१ सम्पज्ञभ सुत्त	ययार्थज्ञान के लिये संप्रज्ञ होना	२४९
२ अप्पमाद सुत्त	यथार्थज्ञान के लिये अप्रमादी होना	२४९
दसवाँ भाग	ः अभिसमय वर्ग	
१. नखसिख सुत्त	स्रोतापन्न के दु ख अत्यल्प हैं	२५०
२. पोक्खरणी सुत्त	स्रोतापन्न के दु ख अत्यल्प हैं	२७०
३ सम्भेज्जउदक सुत्त	महानदियों के सगम से तुलना	ولاو
४ सम्भेज्जउदक सुत्त	महानदियों के सगम से तुलना	२५१
७. पठवी सुत्त	पृथ्वी से तुलना	२५ १
६ पठवी सुत्त	पृथ्वी से तुलना	२५१
७ समुद्द सुत्त	समुद्र से तुलना	न्य १
८. समुद्द सुत्त	समुद्र से तुलना	3,43
९ पव्यत सुत्त	पर्वत की उपमा	219
१० पव्वत सुत्त	पर्वत की उपमा	ခၾခ
११ पञ्चत सुत्त	पर्वत की उपमा	ર્ષ્ફ
	दूसरा परिच्छेद	
	१३ धातु संयुत्त	
पहला भाग	ः नानात्व वर्ग	
१ घातु सुत्त	धातु की विभिन्नता	२५३
२ सम्फस्स सुत्त	स्पर्श की विभिन्नता	२५३
३ नो चेत सुत्त	धातु विभिन्नता से स्पर्श विभिन्नता	२५३
४ पठम वेदना सुत्त	वेचना की विभिन्नता	२५४
५ दुतिय वेटना युत्त	वेदना की विभिन्नता	२५४
६ धातु सुत्त	धातु की विभिन्नता	રહા
७ सञ्जा सुत्त	संज्ञा की विभिन्नता	રૂપ્ય
८, नो चेतं सुत्त	धातु की विभिन्नता से सज्ञा की विभिन्नता	عاديات
९ पठम फस्स सुत्त	विभिन्न प्रकार के लाभ के कारण	२५६
१० हुतिय फस्स सुत्त	घातु की विभिन्नता से ही सज्ज्ञा की विभिन्नता	21.8
दूसरा भाग	ः	
९ सत्तिम सुत्त	सात धातुर्ये	200
 सनिदान सुत्त 	कारण से ही कार्य	200
३ गिक्षकावसथ सुत्त	धातु के कारण ही यज्ञा, दृष्टि तथा वितर्क की उत्पत्ति	ې يې د
३ द्दीनाधिमुत्ति सुत्त	धातुओं के अनुसार ही मेलजोल का होना	ÞĘo

	धान के क	समान भी	वाकों से अक	बोक का दोना	34
बद्रम सुच			मे डबीड का		241
६ सगाया सुच			अञ्चाक ना वेक्कोक का ।		242
• बस्तद प्रच					242
-१ पञ्च सुचन्ता	थातु क	ત્ર્યુસાર 🗈	मेक्बोरू का	# int	***
दीसरा भाग			कर्म	पिष वर्ग	
१ असमाहित सुच		वसमार्थ	त का वसम	हिंदीं से मेक होना	242
१ दूस्सीछ सुच		हुम्सीक	का हु:शकीं	से मेस होना	111
३, वज्रसिक्कापद सुच		औ अरो	का साथ कर	ते तथा मध्ये वर्ष्णे क	798
 अत्तरम्मपम मुक्त 		सात क	प्रैपय काळी है	र मेकबीक का होता	288
• इसरस्मपं सुत्त		व्स का	विष कार्जी में	मेकबोक का होता	248
६ नहस्रिक सुच		अप्रौति	र्धे में मेलकोर	≠ का होना	288
• तमद्व सुच			में मेक्बोल		*48
चीषा माग		1	•	ामुर्थ वर्ग	
1 ব্য দ্বব		चार प	तुर् वे		१६५
२ पुरुष शुक्त				आस्वाद भीर हुप्परियाम	114
१, जबरि श्रुत				में विचरण करना	25%
४ नी चेत्रं सुक				व से इति सुचिद्ध	244
५. दुक्द धुत			ों के म यार्थश		255
६ अधिनन्दम सुच				से ही दुःचा से मुक्ति	250
• उप्पाद सुत्त			वेराव से ही।		250
८ पदम समनप्राद्धन सुच		चार १	रातुर्वे		240
९ दुविष समयबाह्य सुच		चार १	वातुर्वे		250
 वर्तिप मस्त्रमाह्मय मुत्त 		चार	वानुर्वे		254
	तीर	तरा परि	छेद		
	१४	अन्मतुरम्	संयुच		
पहला मार	τ	1		प्रथम थग	
s वित्रवद्व सुक	र्ममार	के मारम्भ	का पता भटी	यास-कड्यी की बयमा	* 5.5
 पहची सुल 	मंगार	के वार्म्म	कापतानहीं	पूर्णी की क्यमा	255
३, बगसु सुच	र्थमार	के भारत्यः	वा पंता नहीं	जींस की उपमा	***
४ भीर ग्रुस	र्मगार	के मारस्थ	वाचतामही	पूच की जनगा	7.
 परवस गुन 	म क्य	की वीर्घेता		_	**
६ साग्य सुन		की दीर्घता			701
• सावद गुन	व्यक्ति ।	दुषका अ	गण्य दे		2+1
८ मीगा ग्रान	र्वाते १	हुए गम्प आ	प्रवर्ष हैं		4=1
न. प्रव गुल	नगर	के मारक्य	का बसा महीं		4+4

१०, पुगाल सुत्त	संसार के प्रारम्भ का पता नहीं	२७२
दूसरा माग	: द्वितीय वर्ग	
१, दुगात सुत्त	दु खी के प्रति सहानुभृति करना	२७३
२, सुखित सुत्त	सुखी के प्रति सहानुभूति करना	२७३
३. तिसति सुत्त	आदि का पता नहीं, समुद्रों के जल मे ख़न ही अधिक	२७३
४. माता सुन्त	माता न हुए सत्व असम्भव	२७४
५-९. पिता सुत्त	पिता न हुए सत्व असम्भव	२७४
१०. बेपुल्लपन्यत सुत्त	वेपुल्लपर्वंत की प्राचीनता, सभी संस्कार भनित्य हैं	२७४
	चौथा परिच्छेद	
	१५ काञ्यप संयुत्त	
१. मन्तुह सुत्त	प्राप्त चीवर आदि से सन्तुष्ट रहना	२७६
. अनोत्तापी सुत्त	आतापी और बोत्तापी को ही ज्ञान-प्राप्ति	२७६
३ चन्दोपम सुत्त	चाँद की तरह कुले में जाना	२७७
४. इल्ल्प्स सुत्त	कुलों में जाने योग्य भिक्षु	२७८
५, जिण्ण सुत्त	भारण्यक होने के लाभ	२७८
६. पटम भोवाद सुत्त	धर्मोपदेश सुनने के लिये अयोग्य भिक्षु	२७९
७ दुतिय ओवाद सुत्त	धर्मापदेश सुनने के लिये अयोग्य भिक्ष	२८०
८. ततिय भोवाद सुत्त	धर्मोपदेश सुनने के लिये अयोग्य भिक्ष	२८०
९. झानाभिङ्या सुत्त	ध्यान-अभिज्ञा में काश्यप बुद्ध-तुल्य	269
१०. उपस्तय सुत्त	थुल्छतिस्सा भिक्षुणी का संघ से बद्दिप्कार	२८२
११ चीवर सुत्त	भानन्द 'कुमार' जैसे, थुल्छनन्दा का सघ से बहिष्कार	२८३
१२ परम्मरण् सुत्त	अन्याकृत, चार आर्थ-सत्य	२८५
१३. सद्धम्मपतिरूपक सुत्त	नकली धर्म से सद्धर्म का लोप	२८५
	पाँचवाँ परिच्छेद	
	१६. लामसत्कार संयुत्त	
पहला भाग	ः प्रथम वर्ग	
१ दारुण सुत्त	लाभसस्कार दारुण है	२८७
॰ वालिस सु त्त	लामसस्कार दारुण है, वशी की उपमा	२८७
३ फुम्म सुत्त	लाभादि भयानक हैं, कञ्जुका और न्याधा की उपमा	266
४ दीवलोमी सुत्त	लम्बे घालवाले भेंदे की उपमा	266
॰ एलक सुत्त	लामसकार से भानिदत होना अहितकर है	266
६ असनि सुत्त	बिजली की उपमा और लाभसरकार	२८९
७ दिहू सुत्त ८, सिगाछ सुत्त	विपैका तीर रोगी श्रमारू की उपमा	२८९
ं, विवाद दुव	रामा व्याख का उपमा	२८९

•ू बेरम्ब सुच	धृत्रिवर्षे से संयम रक्षता बेरस्य बायुकी कपमा	244
१ सगावा सुच	सामसल्बार वृश्यम 🖁	₹ ९ ♦
दूसरा माग	। क्रितीय वर्गे	
१ पटम पाची मुक्त	काशसन्त्रार भी मर्थकरता	252
२ दुविष पादी सुच	काससरकार की भवेकरता	251
६ ३० सिडी सुत	धामसकार की मर्चकरता	251
तीसरा भाग	। इतीय वर्ग	
१ सातुगाम धुच	कामसन्त्रार राज्य है	२९२
२ कस्पामी सुत्त	कामसत्कार शासन है	242
३ प्रच सुच	कामसत्कार में व फैंसवा शुद्ध के बाइसे बावक	252
१ एकबीता सुच	कामसत्कार में न चैंसना हुद की बादमें आविक्रमें	252
५, पडम समजनाञ्चल धुन	क्रामसत्कार के पथार्व होय-आन से मुक्ति	248
९ द्वतिय सममनाद्यम सुन	क्षामसङ्ख्यार के वधार्य दीय-शान से मुक्ति	१९३
 वित्र समनजाहान मुख 	स्रमसन्त्रर हे पथार्व शोप-शाय से मुक्ति	१९३
८ स्विधुत	झामसत्का भाक को सेव देता है	95%
९ रस्त्र श्रुत	कामसकार की रस्ती चाक को केंद्र रेची हैं	२९३
९ मिक्चुसुत्त	क्रामसंकार अर्हेत् के किए मी विप्नकारक	448
चौद्या भाग	ः चतुर्धं वर्ष	
९ मिनिहसुत्त	सामसन्तर के कारण संच में फूट	754
१ मूक श्रुच	पुण्य के सुक का करना	२९५
३ वस्स सुच	कुशक वर्ष का करना	२९५
र सुरक्षणस्य सुच	भु रक धर्म का करना	**4
4. पक्रम्त सुच	ब्बद्ध के बब के किए झामसत्कार का उत्पन्न होगा	*44
६ रय द्वाच	देवदश्च का कांगसत्ताह अमकी हानि के क्रिय	₹5€
 माचा सुच 	कामसकार शक्य है	294
८-१३, पिता सुच	कामसस्यर शक्य है	794
	छठाँ परि ष ्णेव	
	१७ सहुरु संयु च	
प	इसा भाग ः प्रथम धर्गे	
। चन्तु सुत	इन्द्रियों में अभित्य दुन्य अभारत के सबन से विसुन्ति	₹ 9#
२ कप शुच	क्षप से व्यक्तिय द्वाका अवात्स के समून व्यक्तियक्ति	250
३. विक्रमण सुन	मित्रस्य संभागित्व बुल्पा, जनातम के समन से सनिद	216
 सन्दरम मुख 	सरपा का सम्ब	244
५. बेर्ना सुन	चेत्रा का सम्बन	854
६ भक्त्यासुच	मीका का शतन	394

(23)

¥

• `	_		
७. संज्ञेतना सुत्त	यं चेतमा	का मनन	२९८
टं. तण्हा सुत्त	तृष्णा क	(मनन	२९८
९ धातु सुत्त	घातु का		596
१०. सम्ब सुत्त	स्कन्ध क	X Y	२९८
10. And 80	V		
दूर	तरा भाग	·	
१ चक्ख़ सुत्त		अनित्य-दु ख-आनात्म की भावना	२९९
२-६०, रूप सुत्त		भनित्य-दु ख-अनात्म की भावना	२९९
११. अनुसय सुत्त		सम्यक् मनन से मानानुशय का नाश	२९९
१२, अपगत सुत्त		ममन्व के त्याग से मुक्ति	300
		* ^ >	
	सातव	ाँ परि च्छेद	
	१८.	लक्षण संयुत्त	
,	ग्रह्या भाग	प्रथम वर्ग	
१ अद्विपेसि सुत्त		अस्थि-कंकाल, गोहत्या का दुष्परिणाम	३०१
॰ गोघातक सुत्त		मासपेशी, गौहत्या का दुष्परिणाम	३०२
३ पिण्डसाकुणी सुत्त		पिण्ढ और चिहिमार	३०२
४ निच्छवोरविभ सुत्त		'खाल उतरा और मेदो का कसाई	३०२
५. असिस्करिक सुत्त		तळवार और सूअर का कसाई	३०२
६ सत्तिमागवी सुत्त		वर्छी-जैसा लोम और बहेलिया	३०२
७ उसुकारणिक सुत्त		वाण-जैसा लोम और अन्यायी हाकिम	३०२
८ स्चि सारथी सुत		सुई-जैसा लोम भीर सारथी	३०३
९ स्वक सुत्त		सुई-जैसा छोम और स्चक	३०३
१० गामकूटक सुत्त		दुष्ट गाँच का पञ्च	३०३
	दूसरा भाग	हितीय वर्ग	
१ क्पनिमुग्ग सुत्त		परस्त्री-गमन करनेवाका कृषे में गिरा	३०४
२ गूथखाडी सुत्त		गृह साने वाला दुष्ट वाह्मण	३०४
३ निच्छवित्यी सुत्त		खाल उतारी हुई छिनाक स्त्री	३०४
४ मगिलस्थी सुन्त		रमङ फेंकने वाली मगुढी स्त्री	३०४
५ ओकिस्नि पुत्त		सूखी—सौत पर अगार फॅकनेवाडी	३०४
६ सीसछित्र सुत		सिर कटा हुआ डाकू	३०५
७ भिक्ख सुत्त		मिश्च	३०५
८ भिक्खुनी सुस		भिद्धुणी	३०५

शिक्ष्यमाणा

श्रामणेर

श्रामणेरी

९ सिक्समाना सुत्त

१० सामणेर सुत्त

११ सामणेरी सुस

३०५

३०५

३०५

आठवाँ परिच्छेद

१९ औपम्य संयुत्त

१ पूर धुत्र	समी अकुसक अविधासूकक ई	2.4
२ नवसिव सुच	प्रसाद व कामा	
३ इक सच	मैची-भाषमा	2.5
४ बोस्टा धुन	मैप्री-भावना	2 0
५ सर्वि सुर्च	मैची भाषवा	2.0
६ मनुमाइ सुच	भप्रमाद के श्राथ विहरमा	3 0
 भागी सुर 	शस्मीर बसों में सन क्यामा सक्तिय क्यन	3.4
८ वर्षिगर मुच	कवरी के बने तकत पर सोबा	1 6
९ वास द्वाच	काक च-रहित भोजन करना	1.5
१ विकार सुच	र्धेवस के साथ सिक्षाध्य करवा	3.5
11 पदम सिगाक सुच	भगमाइ के साम विदरमा	3,1
३२ बुतिय सिगाक सुच	कृषस् क्षीमा	3,1
	मर्वो परिच्छेद	
	२० मिशु संयुच	
। चोक्टि सुच	आर्थ भीव-साव	211
र वपतिस्स श्रुच	सारिपुत्र को सोक वही	233
रे. घर सुच	सम्बादको की परस्पर स्तुति कारहव-बीव	298
४ नवं सुच	विविक्ता से विवास की प्राप्ति नहीं	313
भ. सुद्रात सुच	इब प्रा रा शुकात की प्रशंसा	111
६ महिन सुच	शरीर से नहीं काम से वका	232
 विसाच ध्रुच 	धर्म का उपदेश कर	112
८ मन्द्रश्चन	मन्त् को उपवेश	337
९ विस्स सुन	गहीं वियद्ना उत्तम	3,94
१ भेरनाम सुच	लकेका रहने माका कीन ?	215
११ कप्पित्र सुच	भावुच्यान् कप्पित्र के गुर्कों की प्रशंका	2.1

दो अदिसाव मिल्ल

1९ सहाव श्रुष

तीसरा खण्ड

खन्ध वर्ग

पहला परिच्छेद

२१. स्कन्ध संयुत्त

	मूल पण्णासक	
पहला भाग	नकुलपिता वर्ग	
१. नकुलपिता सुत्त	चित्त का आतुर न होना	३२१
२ देवदह सुत्त	गुरु की शिक्षा, छन्द-राग का दमन	३ २२
३ परम हालिहिकानि सुत्त	मागन्दिय-प्रश्न की व्याख्या	३२४
४ दुतिय हालिदिकानि सुत्त	शक-प्रश्न की न्याख्या	३२६
५ समाधि सुत्त	समाधि का अभ्यास	३२६
६ पटिसल्छान सुत्त	प्यान का अभ्यास	३२७
७ परम उपादान परितस्सना सुत्त	उपादान और परितस्सना	३२७
८ दुतिय उपादान परितस्सना सुत्त	उपादान और परितस्सना	३३८
९, पठम अतीतानागत सुत्त	भूत भौर भविष्यत्	३२८
१० दुतिय अतीतानागत सुत्त	भूत और भविष्यत्	3,25
१९ ततिय अतीवानागत सुत्त	भूत और भविष्यत्	३१९
दूसरा भाग	अनित्य वर्ग	
१ अनिच्च सुत्त	अनित्यता	३३०
२ दुक्ल सुत्त	हु ख	930
३ अनत सुत्त	अनात्म	330
४ पठम यदिनच्च सु त्त	अनित्यता के गुण	330
५ दुतिय यदनिच्च सुत्त	दु ख के गुण	इइद
६. ततिय यदनिच्च सुत्त	भनात्म के गुण	3३१
७ पठम हेतु सुत्त	हेतु भी अनित्य है	₹₹3
८ दुतिय हेतु सुत्त	हेतु भी दु ख है	३३१
९ ततिय हेतु सुत्त	हेतु भी अनात्म है	६३१
१० आनन्द सुत्त	निरोध किसका ?	३३२
तीसरा भाग	- भार वर्ग	
१ भार सुत्त	भार को उतार फेंकना	३३३
२. परिष्या सुत्त	परिज्ञेय और परिज्ञा की व्याएया	६३३
३ अभिनान सुत्त	रूप को समझे विना दुख का क्षय नहीं	388
४. छन्दराग सुन्त	छन्दराग का त्याग	११४

	('- /	
५, वस्म बस्माद् सुच	रहपादि का आस्त्राद	121
६ दुविप अस्साद सुच	भारताद की खोज	३३५
 वरिय अस्साद सुच 	मास्ताद से दी जासकि	114
८ सभिनन्दन सुच	श्रमिमन्द्रम से दुःख की बत्पचि	इद्देष
९, उप्पार् भूच	इस की उत्पत्ति दुःश्व का बत्पाद है	424
१ धरम्ब शुच	हुआ का सूच	111
११ पर्नगु सुच	भवर्म गुरका	156
चौथा माग	ः न तुम्हाक धर्गे	
१ पटम व शुम्हाक सुच	की अपना नहीं उसका त्याग	220
१ बुविप न तुम्हाक मुख	को भारता वहीं उसका स्वाग	220
रे. पटम मिन स् सुच	बहुशय के बहुसार समझा दागा	110
 श्रुतिव मिन्तु सुव 	सनुदान के जनुसार मापना	224
५, पटम भागन्य सुच	किनका अत्याद क्यूच और विपरिवास 🏌	114
। बुतिय आगन्द सुच	क्षित्रका बल्ताव क्वय और विपरिभाम ?	885
 पदम अञ्चलम सुक्त 	विरक्त दोकर विदरमा	1119
८ हुविष अनुषस्म सुच	व्यक्तिय समझवा	1.7
९ वविष अनुषस्म सुच	हुन्य समझग	1,1
९ वतुत्व अनुवस्म सुच	चदाचा समझना	2.0
पाँचयाँ भाग	बारसद्भीप धर्म	
a, भत्तशीय <u>स</u> ुत्त	अपना धाधार आप वनवा	3,81
२ पडिपदा सुच	सत्कार की क्षरंचि और निरोध का आर्थ	1,81
३, पदम धनिष्यता श्रुष	व्यविस्पता	184
🕏 द्वतिह अनिष्यता सुच	अविकासा	288
५, समनुपस्तवा सुच	नायमा मानने से 🖞 व्यक्ति भी वनिया	288
९ चन्य द्वांच	पाँच स्कम्ब	545
• पद्भ सोज सुच	ঘৰাৰী প্ৰায়ৰ	111
4 दुविय सीम सुच	ममय और मास्रभ कीथ !	588
९. दुतिय वन्त्रिक्सम द्वच	धासम्बक्षास्य क्षेत्र १	588
१ दुविय गम्बिक्सब सुच	क्षम का श्रमार्थ जनम	824
*	रूसरा परि च् येव	
1	मिन्सम पण्णासक	
पह्या मान	^३ ए एस प र्ग	
१ इएव सुच	अनासक्त विश्वक है	211
१, बीज सु ^ख	र्गोंच मकार के वीख	211
्र बसन सुच	शासमों ना श्रम कैसे १	140
 इपादान परिवक्त सुक 	वयादाय स्कर्मी की व्याक्या	244

५ - सत्तद्वान सुरा	मात स्थामों में छुदाल ही उत्तम पुरुष हैं	३४९
६ बुद्ध सुन्त	युद्ध और प्रज्ञाविसुक्त भिक्षु में भेद	રૂ પ્રવ
७ पद्धविगाय सुत्त	सनिध्य, दुःख, मनात्म का उपवेश	243
८ महािल सुत्त	सत्वीं की शुद्धि का हेतु, पूर्णकाश्यप का अहेतु-वाद	રૂપર
९, आदित सुत्त	रूपादि जल रहा है	३५३
१०, निरुत्तिपथ सुत	सीन निरुक्तिपथ सदा एक-सा रहते हैं	३५३
10, 146,444 84		
दूसरा भाग	. अर्हेत् वर्गे	
१.⁻उपादिय सुत्त	उपादान के स्याग से मुक्ति	३५४
२. मज्ञमान सुत्त	मार से सुकि कैसे ?	३५४
३, अभिनन्दन सुत्त	अभिनन्दन करते हुए मार के वन्धन में	રૂપ્રપ
४. अनिद्य सुत्त	छ न्द का त्याग	३५७
५. दुक्ख सुत्त	छन्द का स्याग	३५५
६. अनत सुत्त	छन्द का स्या ग	રૂપ્રપ
७. अनत्तनेय्य सुत्त	छन्द का स्याग	a १५५
८. राजनीयसण्डित सुत्त	छन्द का त्याग	રૂપ્ર પ્
९, राध सुत्त	अहंकार का नाश कैसे ?	इपद
१७. सुराघ सुत्त	अहंकार से चित्त की विमुक्ति कैसे ?	३५६
तीसरा भाग	• खज्जनीय वर्ग	
	•	_
१. अस्साद सुत्त	शास्त्राद् का यथार्थ ज्ञान	इं५७
२. पठम समुदय सुत्त	उत्पत्ति का ज्ञान	३५७
३. दुतिय समुदय सुत्त ४ पठम अरहन्त सुत्त	उत्पत्तिका ज्ञान अर्हत् सर्वेश्रेष्ट	३५७
५. दुतिय अरहन्त सुत्त		३५७
६ पटम सीह सुत्त	सहत् सर्वश्रेष्ठ	३५८
७. दुतिय सीह सुत्त	बुद्ध का उपदेश सुन देवता भी भयभीत हो जाते हैं देवना कर की से समाज करने के	३५८
८. पिण्होल सुत्त	देवता दूर ही से प्रणाम् करते हैं छोमी की सुर्दाठी से तु ळना	३५९
९ पारिलेख्य सुत्त	भाश्रवीं का क्षय कैसे १	३ ६१
१०. पुण्णमा सुत्त	पञ्चस्कन्मं की न्याख्या	३६३
	पञ्चरकृष्या का ज्यार्थ्या	३६५
चौथा भाग	ः स्थविर वर्ग	
१. आनन्द सुत्त	उपादान से भहंभाव	३६७
२. तिस्स सुत्त	राग-रहित को शोक नहीं	३ ३७
३. यमक सुत्त	सृत्यु के वाद अर्हत् क्या होता है ?	3 1 9
४. अनुराध सुत्त	दु स्न का निरोध	३७२
५. वक्किछ सुत्त	जो धर्म देखता है, वह बुद्ध को देखता है, घरकळि द्वारा	
	आत्म-हत्या	३ ७३
६. अस्सिजि सुच	चेदनाओं के प्रति आसक्ति नहीं रहती	१७५
७ सेमक सुत्त	दएय-स्मय के मनन से मुक्ति	200

	(२२)	
८ वस सुच	इद का सम्पन सार्ग	105
९ पढम राहुक सुच	पश्चरकम्भ के शांच से मईकार से शुक्ति	1,4
 दृतिय राष्ट्रक शुक्त 	किएके जान से मुक्ति !	14
पाँचवाँ माग	ः पुष्प द्यम	
१ नदी सुच -	व्यक्तिस्पता के जान से पुनर्जन्म नहीं	141
र प्रण पुत	तुद्ध संसार से अनुपक्षिष्ठ रहते हैं	141
६, केल सुच	शरीर में कोई सार नहीं	348
 गोमच धुच 	सभी सहकार व्यक्तिस 🖁	348
५ वक्षिक द्वर	सभी संकार भनित्य हैं	248
१ सामुरक धुन	मधी संस्कार अभित्य ै	244
 पढम यहर्ज पुत्र 	सविचा में पड़े माणियों के शुःख का अन्य नहीं	264
८ द्वतिय गर्डक प्रच	विरम्तर वारमचिन्तन करो	365
९ नाव श्रच	भावना से जासबीं का क्षप	364
। सन्त्रासुर	धनित्य-खँका की माचना	244
र्स	ोसरा परिच्छेद	
	चूळ पण्णासक	
पहला भाग	ः सस्त वग	
१ मन्द्रशुच	चार अन्त	145
२ दुवस सुव	चार आमेसन्य	269
१, सरकार सुत्त	संस्थान	88
 परिक्रमेव सुक्त 	परिञ्चेष धर्म	34
भू पढम सम ण सु च	ৰ্ঘীৰ জনাৰ্থৰ হঞ্চৰ	3.5
६ दुतित समय सुच	पाँच बपादाम स्कन्य	35
 श्रोतापम्य सुच 	कोतापत्र की परमञ्जान की प्राप्ति	3.5
८ बरहा भुष	म्पर्र	121
९ पडम कम्ब्राय सुच	छम्पुराध का त्याय	343
१ दुवित कन्युराय पुष	क्षन्त्रागं का स्वास	111
रूखरा माग	ः धर्मकथिक वर्ग	
। पदम मिक्तु शुक	संविद्या क्या है ?	257
२ दुविव शिक्तु सुच	विधा क्या है 🏋	244
३, परम कपित्र सुच	कोई वर्गजनिक बैसे होता ?	298
 हृतिय कविक ग्रुच 	कोई वर्मकथिक वैसे होता ?	338
५, बन्धव सुत्त	चमध्य	141
६ वस्म वरिमुचित शुक	कप के बचार्य भाग से पुनर्जनम नहीं	242
\star हृतिय परिमुचित शुच	क्य के बचार्य शाम सं पुनर्शनम नहीं	343
 सक्तीक्ष्म सच 	र्वाची अस	

		200
९, उपादान सुत	उपादान	३९४
५०, सीक सुन	शीरुवान् के मनन-योग्य धर्म	३९४
११. सुतवा सुत्त	श्रुतवान् के मनन-योग्य धर्म	३९५
१२. पटम कप्प सुत्त	अहंकार का त्याग	३९५
१३, दुतिय कप्प सुत्त	भहंकार के त्याग से मुक्ति	३ ९५
तीसरा भाग	ः अविद्या वर्ग	
१. पटम समुदयधम्म सुत्त	अविद्या क्या है ?	३९६
२. दुतिय समुदयधमम सुत्त	अविद्या क्या है ?	३९६
३. ततिय समुद्यधम्म सुत्त	विद्या क्या है ?	३९६
४. पटम अस्साद सुत्त	भविद्या क्या है ?	३९७
५. दुतिय अस्साद सुत्त	विद्या क्या है ?	३५७
६, परम समुद्य सुत्त	सविद्या	३९७
७ दुतिय समुदय सुत्त	विद्या	३९७
८. परम कोहित सुत्त	अविद्या क्या है ?	ह्द्
९ दुतिय कोद्वित सुत्त	विद्या	३९८
१० ततिय कोहित सुत्त	विद्या ओर अविद्या	३९८
चौथा भाग	ः कुक ्कुल वर्ग	
१. कुनकुछ सुन्त	रूप धधक रहा है	३९९
२. पठम अनिध सुत्त	भनित्य से इच्छा हृदाओ	399
३-४, दुतिय-ततिय-अनिच सुत्त	अनित्य से छन्दराग हटाओ	३९९
५-७. पठम-दुतिय-तितय दुक्ख सुत्त	दु ख से राग हटाभो	३ ९९
८-१० पठम-दुतिय-ततिय अनत्त सुत्त	अनात्म से राग इटाओ	800
१९. पठम कुलपुत्त सुत्त	वैराग्य-पूर्वक विहरना	४००
१२. दुतिय कुछपुत्त सुत्त	अनित्य बुद्धि से विहरना	४००
१३ दुक्स सुत्त	भनात्म-बुद्धि से विहरना	800
पॉचवॉ भाग	ः दृष्टि वर्ग	
१. अञ्सत्तिक सुत्त	अध्यात्मिक सुख-दु ख	४०१
२. एत मम सुत	'यह मेरा है' की समझ क्यों ?	803
३. एसो अत्ता सुत्त	'आत्मा लोक है' की मिथ्यादृष्टि क्यों १	४५२
४, नो च में सिया सुत्त	'न मैं होता' की मिथ्यादृष्टि क्यों ?	४०३
५ मिच्छा सुत्त	मिथ्या-दृष्टि क्यों उत्पन्न होती है १	808
६, सक्काय सुन्त	सकाय दृष्टि क्यों होती है ?	802
७ अन्तानु सुत्त	भारम-दृष्टि क्यों होती है ?	, ४०३
८ पठम अभिनिवेस सुत्त	सयोजन क्यों होते हैं १	¥०ई
९. दुतिय भभिनिवेस सुन	संयोजन क्यों होते हैं ?	४०३
१०, आनन्द् सु स	समी सस्कार अनित्य और हु,स हैं	४०३

वृसरा परिष्णेव

२२ सध संयुक्त

पह्छा भाग	ः प्रथम वर्गे	
) मार <u>स</u> च	मार क्या 🖁 🤋	**4
१ सच सुत	भासक कैसे होता है ?	804
३ सदलेखि सुच	संसार की कोरी	* 4
 परिष्णोदय सुच 	वरिक्रों व परिका कार परिकारा	8 €
५, पटम समज सुच	डपाइक-रक्त्रों के शता ही समय-प्राह्मण	* *
६ दुविय समज दुन	डपादान स्कन्मों के ताता ही अमन-माहान	
 शोदापम्य सुंच 	स्रोतापम्य निरुवय ही हान प्राप्त करगा	8 #
	क्यानाय-स्कानीके वधार्य ज्ञायसे नर्वत्यकी	गक्षिप • •
८ भरहा सुच ९ पटम कन्द्रसम् सुच	कृत के क्रम्युराम का त्यांग	
१ पदम कन्युराय द्वार १ दृतिब क्रम्युराय द्वार	क्य के कन्द्रांग का श्याय	***
1 Alde million Ro	_	
दूषच माग	ः द्वितीय वर्गे	
१ मार सुच	माद चवा दें १	* 5
२ सारमस्य सुच	सार बमें क्या है ?	4 4
६, पक्स वनिषय पुण	जनित्य रचा है ह	* 5
श्रृतिव अनियव सुक्त	व्यक्तित्व अर्मे क्या है ?	* 4
५-६ प्रध्म-दुविष दुश्य सुच	क्य दुःच दै	8 5
•—८ परम-दुविय धनच शुच	कप बनारम है	5.8
्र इपदम्म सुच	सम्बर्ग न्या है ?	वर
५ वश्यमसञ्ज	व्यव धर्म क्या है ?	8.3
१९ समुद्रयकसम् द्वाच	समुन्ध वर्ग क्या है ?	*1
१२, विरोजधम्म धुण	विशेष वर्ग पना दे !	8.8
त्रीखरा भाग	ः आयाजन वर्गे	
१ मार सुच	सार के प्रति श्रृष्ट्रा का त्याग	811
६, सारबस्म शुच	मारचर्म के प्रति कन्द्राय का स्थाय	*11
३-४ पदम-कृतिच अविच्य सुध	वनित्य और वनित्य घर्म	*11
५-६, परम-दृतिब हुन्छ सुच	शु:श्व और शु:श्र:यर्ग	*11
• पडम-बुविष अवत्त सुत्त	वभारम और भ गारम-गर्स	*11
९ । राजबस्म-वज्ञम सुक	श्रम जर्म और व्यय घरी	*11
11 समुद्रवसम्म सुष	समुद्रम यमें के प्रति ग्रन्द्रशंग का स्वाय	717
१६ तिरोधधम्य ग्रुष	विरोध धर्म के प्रति कम्पूराग का स्थाग	117
7		
षीया माग	ः दपनिसिच वर्ग	

मारघर्न से इच्छा इटाओ

212

२. सारधस्य मुत	पारधर्म में इच्छा इटाओ	धार
३-४. पटम-दुतिय अनिच्च सुत्त	ज्ञनित्य और श्रनिरय-धर्म	११३
u-६. परमन्दुतिय दुक्त सुन	हु.स और हु स धर्म	११३
	भगतम ओर अगाम-धर्म	४१३
4	क्षप, व्यय और समुख्य	કુકુ
१-११, संविधासम्बद्धाः छुण १२, निरोधासम्बद्धाः	निरोध-धर्म से इच्छा हटाओ	ខុវិន
१२, ।नराययम्म सुरा		
तीसरा	परिच्छेद	
२३. ह	प्टे संयुत्त	
पदला भाग	• स्रोतापत्ति वर्ग	
३. वास सुत्त	मिष्या-दृष्टि का मूल	४१५
२. एत मम सुत्त	मिध्या दृष्टि का मूल	និនិន
३. मो अत्त सुत्त	सिध्या-दृष्टि दा सूल	898
४. तो च में सिया सुत्त	मिच्या-दृष्टि का मूल	४३६
५, निव सुत्त	उच्छेदवाद	ខទុធ
६. करोतो सुत्त	अफ़ियवाद	830
७. हेतु मुत्त	देववाद	830
८. महादिष्ट सुत्त	अकृतता याद	388
९. मस्पतो छोको सुत्त	द्या ह्यतयाद	838
१०, भमस्सतो सुत्त	भशाश्वतवाट	836
११. अन्तवा मुत्त	अन्तवान्याद	836
१२. अनन्तवा सुत्त	अनन्त-वाद	838
१३. त जीवं त सरीरं सुत	'जो जीव है वही शरीर है' की सिष्यादृष्टि	836
१४ मञ्ज जीव मञ्जं सरीर सुत्त	जीव अन्य है ओर शरीर अन्य है	836
१५ होति तयागतो प्रम्मरणा सुत्त	मरने के बाद तथागत फिर होता है	836
१६ न होति तथागतो परम्मरणा सुत्त	मरने के बाद तथागत नहीं होता	836
१७ होति च न च होति तथागतो परम्मणा सुरा		836
१८ नेव होति न न होति सुत्त	तथागत न होता है, न नहीं होता	४१९
दूसरा भाग	. द्वितीय गमन	
९ वात सुत्त	मिष्यादृष्टि का मूल /	४२०
२–१८. सन्बे सुत्तन्ता पुन्धे भागता येव	•••	ध२•
१९, रूपी अत्ता होति सुत्त	'आत्मा रूपवान् होता है की मिध्याहरि	४३०
२० , अरूपी अत्ता होति सुत्त	'अरूपचान् आतमा है' की मिण्यादिष्ट	ध२०
२१. रूपी च अरूपी च अत्ता होति सुत्त	रूपवान् और अरूपवान् आत्मा	ं ४२०
२२. मेवरूपी नारूपी अत्ता होति सुत्त	न रूपवान्, न अरूपवान्	४२९
२६, एकन्त सुखी अत्ता होति सुत्त	थातमा एकान्त सुन्ती होता है	853
२४. एकम्त दुक्सी अत्ता होति सुत्त	भात्मा एकान्त दु खी होता है	853

(₹ ₹)	
३५ सुख-तुक्की मत्ता होति सुक्त	भारमा धु ब-तुःची होता है	111
३६ अनुस्कामधुक्ती मत्ता होति सुत्त	भारमा सुक-पुत्रक से रहित होता है	981
रीसरा माग	। तृतीय गमन	
	Qui vini	
१ बात सुच	मिष्याद्यप्ट का सूक्र	***
२-१५, सम्बे सुक्तन्ता पुरवे नागता येव		255
१६ भरोगो होति परम्मरणा पुच	'भारमा करोग होता है की मिष्वाहरि	255
चौषा माग	ः बतुर्थं समन	
1 कात सुच	सिध्याचित्रं का सूछ	***
१-१६ सम्बे प्रचन्ता पुत्र्वे भागता येव		293
चीर	ग परिच्छेद	
२४	ओक्न्त संयुच	
। बरह द्वर	चध्र व्यक्तिय है	***
९ कप सुच	क्रम जिल्हा है	268
३, विज्ञान सुच	चन्नु-विद्यान धनित्य है	***
१ ५ स्स द्वच	चद्य-विद्यान अविस्य है	25.5
५ वेड्डासुत	वेदमा व्यक्तित्व है	***
६ स≭्य मुत्त	कर संज्ञा अनिस्य है	884
 चेतना सुच 	चेतना अनित्य है	854
८ तन्हा सुच	मुख्य जनित्व है	**4
९. मातु शुष	पृष्णी घातु समित्व है	प्रदेश
१ चन्पे भुत्त	पञ्चस्त्रम्य जनित्य हैं	*44
पाँच	ार्यों प रिच्छेद	
74	उत्पाद संयुच	
१ अवस् सुव	च्यु-विरोध सं दुःस-विरोध	***
र क्य सुन	कप-निरोध से दुःस-निरोध	258
१ विस्त्राण सुन	चप्तु विद्यान	225
▼ %ास सु च	रपर्ध	**4
भ, बेरमा मुख	बे रना	**4
६ सञ्च्य सुच	र्मेश्चा चेतमा	240
 चेदनासुच 	4041	260

299 299

4 तन्द्रा भुन

६. बाद्र सुन १० अन्य सुन

छठाँ परिच्छेद

२६. क्लेश् संयुत्त

1. चम्यु सुत्त	चञ्ज का छन्दराग चित्त का उपक्लेश है	४२४
२, रूप सुत्त	म्भप	४२८
३, विन्त्राण सुत्त	<u> विज्ञान</u>	828
४ सम्प्रस्य मुत्त	∓पर्झा	85%
५, चेदना सुत्त	वेदना	85%
६. सन्मा सुत्त	मं ज़ा	85%
७. सचेतना सुत्त	चेतना	४२८
८. तण्हा सुत्त	मृष्णा	४२९
९ धातु सुत्त	भ्रातु	४३९
१०. सन्ध सुत्त	स्कन्ध	856

सातवाँ परिच्छेद

२७. सारिपुत्र संयुत्त

9	विवेक सुत्त	प्रथम ध्यान की अवस्था मे	४३०
2	अ चितक्क सुत्त	द्वितीय ध्यान की अवस्या मै	8ई ०
3	पीवि सुत्त	तृतीय ध्यान की अवस्था में	853
8	उपेक्सा सुत्त	चतुर्थं ध्यान की अवस्था में	853
U	आकास सुत्त	भाकाशानन्त्यायसन की अवस्था में	४३१
ξ	विष्णाण सुत्त	विज्ञानानन्त्यायतन की अवस्था मे	853
9	आकिञ्चन्य सुत्त	आकिच्चन्यायतन की अवस्था में	8ई ३
4	नेवसञ्ज सुत्त	नैवसज्ञानासज्ञायतन की अवस्था में	४६१
•	१ निरोध सुत्त	मज्ञावेदियतिनरोध की भवस्था में	४३२
3	 म्चिमुखी सुत्त 	मिक्षु धर्मपूर्वक आहार ग्रहण करते हैं	४३२

आठवाँ परिच्छेद

२८. नाग-संयुत्त

१ सुद्धिक सुत्त	चार नाग-योनियाँ	85ई
२ पणीतवर सुस	चार नाग-योनियाँ	४३३
३ पठम उपोसथ सुन्त	कुछ नाग उपोसथ रखते हैं	838
≀−६ टु तिय-तितय-चतुःथ उपोसथ सुत्त	कुछ नाग उपोसथ रखते हैं	8 है इ
पठम तस्स सुतं सुत्त	नाग योनि में उत्पन्न होने का कारण	~ 8 \$ 8
८–१० दुविष-ततिय-चतुरथ तस्स सुतं सुत्त	नाग-योनि में उत्पन्न होने का कारण	४३४
११ पटम दानुपकार सुत्त	नाग-योनि में उत्पन्न होने का कारण	858
१२-१४ दुतिय-तसिय-चतुत्य दानुपकार सुस	नाग-थ्रोनि में उत्पन्न होने का कारण	8ई४

नर्वों परिच्छेद

२९ सुपर्ण-संयुच

चार सुपर्च-धोनियाँ । सुद्रम् सुच

१ इरन्ति <u>श</u>त्त</mark> हर के बाते हैं

६. पश्म इयकारी शुक्त सपर्य-होनि में उत्पद्य शुने का कारण सपर्कं बोनि में उत्पन्न होंगे का कारण ३−६ द्वतिय-तविय-चतुत्व इयकारी शुक्त

पदम दानुपकार सुन्त

<- १ दुरिष-तविध-वतुत्व दानुषकार सुच

। सुदक् सुच

२ शुक्रदित सुक

६ पत्म दावा सुक्त

४-१९ दावा सुच

१ देखना सुक्त

१ सुवरित सुच

८ सीत सच

९ अव्य सूच

३ अध्य सुन

11 वात सुच

१३ वस्म सुख

१. रहम दानुप्रकार शुक्त

४-७ शृहुपकर सुच

१६ पडम श्रामुपकार सुरु

18-२३ त्राहुपकार सूच

दसवाँ परिच्छेद

३० गन्धवंकाय संयुत्त

बाब से शन्बर्व-बीति में बत्पचि दाव से धन्वर्ष-धोवि में उत्पत्ति

दाव से यम्बर्व-बोनि में दत्रक्ति

ग्यारहवाँ परिच्छेव

३१ बलाइक-संयुच

वकाहक देव भीव हैं १

वकाइक-वोनि में उत्पन्न होये का कारम

बान के नकाइक योजि में उत्पत्ति

दान स नकाइफ-वानि में उत्पत्ति

दान आदि देने से सूपर्य-दोनि में

दान कादि देंगे से सुपल-बोनि में

राज्यचंद्राय तंत्र कीय हैं ?

शम्बर्व बीवि में श्रत्यक्ष द्वीवे का कारण

बान से धन्त्रचं-धोनि में उत्पत्ति

सीत होने का कारण

गर्मी होने का कारण बारक होने का कारन

चायु होने का कारज

वर्षा होने का कारण **

थारहर्यों परिच्छेद

१२ बत्सगोत्र-संयुक्त

नजान में नाना प्रकार की शिष्पादिकों की उत्पत्ति

वज्ञाव से मिन्दा-इहिपी की बस्पित

अवर्शन से मिध्ना-शक्तिमें की उत्पत्ति

283 ***

* 1 4

*14

225

224

age

850

*1.0

214

484

214

288

282

श्रेष

888

889

22

२-५, अध्माथ सुत्त ६-१ अवस्मन शुक्त ११-१५, अवसिससव सुत्त

९ अञ्चाद सुत्त

ज्ञान न होने से मिष्या-एपियों की उत्पत्ति

१६-२० अननुयोध सुत्त

>१-२५ अप्पटिवेध सुत्त

२६-३० असटलक्षण सुत्त

११-२५ अनुपलक्षण सुत्त

११-४५ अपच्चुपलक्षण सुत्त

४१-४५ असमपेक्षण सुत्त

४६-५० अपच्चुपेक्षण सुत्त

५१ अपच्यक्षकम्म सुत्त

५२-५५ अपच्चुपेक्षण सुत्त

भली प्रकार न जानने में सिध्या-दृष्टियाँ की उत्पत्ति ध्वप्तिवेध न होने से सिध्या-दृष्टियाँ भली प्रकार विचार न करने से सिध्या-दृष्टियाँ अनुपळक्षण से सिध्या दृष्टियाँ अप्रस्थाप-प्रेक्षण से सिध्या-दृष्टियाँ अप्रस्थाप-प्रेक्षण से सिध्या-दृष्टियाँ अप्रस्थाप-प्रेक्षण से सिध्या-दृष्टियाँ अप्रस्था कर्म ने सिध्या-दृष्टियाँ अप्रस्थक्ष कर्म ने सिध्या-दृष्टियाँ

तेरहवाँ परिच्छेद

३३. ध्यान-संयुत्त

व्यायी चार है स्थिति कुशल ध्यायी श्रेष्ठ च्युत्थान कुशल ध्यायी उत्तम क्टब कुश्रल ध्यायी श्रेष्ट भालम्बन कुशल ध्यायी गोचर कुशल ध्यायी अभिनीहार-कुशल ध्यायी गौरव करनेवाला ध्यायी निरन्तर लगा रहनेवाला घ्यायी सप्रायकारी ध्यायी ध्यायी चार हैं स्थिति कुराङ कल्य-क्रशल गालम्यन कुराल गोचर-कुशल अभिनीहार-कुशल र्गारघ करने में कुशल निरन्तर लगा रहने घाला सप्रायकारी स्थिति-कुशल

१ समाधि समापत्ति सुत्त

२. हिति **सु**त्त

३. बुद्दान सुत्त

४ किट्डत सुत्त ५ आरम्मण सुत्त

६, गोचर सुत्त

७ अभिनीहार सुत्त

८ सङ्ख्य सुत्त

९, सातच्च सुत्त

१० सप्पाय सुत्त

११, हिति सुत्त

१२ बुद्धान सुत्त १३ कल्लित सुत्त

• । भारत्या सन

१४. भारममण सुत्त

१५ गोचर सुत्त

१६ अभिनीहार सुत्त'

१७ सक्कच्च सुप्त

१८. सातच्च सुच

१९ सप्पाय सुत्त

२०. ठिति सुत्त

२१--२७ पुब्वे भागत सुत्तन्ता येव

२८-३४ बुद्दान सुत्त

३५-४० कटिलत सुत्त

४१-४५ आर∓मण सुत्त

४६-४९ गोचर सुस

७०-५२ अभिनीहार सुत्त

५३-५४ सम्बन्ध्य सुप्त ५५ सा**तश** सुप्त

ध्यायी चार हैं

मंयुत्त-सूर्धी

	71
१ देवना शेवूक	1-10
६ देवपुर शंबुध	**-1(
६ कामत र्शनुम	10-66
र मन तेपूर्ण	<1-1+±
५ जिल्ला मंद्रम	1 4-111
६ सप्र संयुक्त	111-116
• अप्टच मेनुभ	114-14+
बहुत्त शेवुण	144-346
त्रव संयुग	141-161
१ वध शेंचुल	111-141
११ शब संयुष	148-145
१६ अधिनस्य संयुक्त	598-242
1২ বলুলবুপ	241-454
५४ अवस्ताम लेखन	259-144
१५ बार्यन संयुक्त	306-346
1६ साधमन्द्रार मंतुम	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *
১০ বাহুদ নবুদ	144-1 +
१८ कश्च शंतुज	३ 1-३ ५
१९, शास्त्रय मेंयुन	1 4-11
विश्व मंबुल	111-110
६६ व्याग्य संयुक्त	\$\$1-8 B
२० राज संयुक्त	A A 2.E
६६ र्घष्ट गंयुन	४१५-४२३
०४ औरकमा गंतुन	***-**
१५, उत्पाद मेंनुच	464-464
६६ कम्स संयुक्त	450-454
९० सारिश्वत्र मंतुस	*10-*1*
६४ भाग भीवृत्त	425-454
१९. सुपत्रे गेंबुश ६. गम्पर्थकाय संबुध	* tu-456
३१ वकाहरू मेंतुष	210-214
३२ वासनीत्र संयुक्त	454-44
३३ च्यान मेंबुश	888-888 883-885
•	

खण्ड-सूची

पृष्ट १. पहला राण्ड : सगाथा वर्ग १-१९० २. दूसरा खण्ड : निदान वर्ग १९१-३१८ ३. तोसरा खण्ड : खन्ध वर्ग ३१९-४४८



नमी तस्स भगवती अरहती सम्मा सम्बुद्धस्स

संयुत्त-निकाय

पहला भाग

नल वर्ग

§ १. ओवतरण सुत्त (१ १ १)

तृष्णा की वाढ़ से पार जाना

ऐसा मेंने सुना—एक समय भगवान् श्रावस्ती में अताथिपिष्टिक के जेतवन आराम में विहार कर रहे थे।

तब, कोई देवता रात बीतने पर अपनी चमक से सारे जेतवन को चमकाते हुये जहाँ भगवान् थे, वहाँ आया और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो गया।

एक ओर खढा हो वह देवता भगवान् से बोला — भगवान् । बाद (= ओघ) को भला, भापने कैसे पार किया।'

आबुस ! मैंने विना रुकते और बिना कोशिश करते वाद को पार किया ।

भगवान् । सो कैसे आपने विना रकते और विना कोशिश करते वाद को पार किया ?

आबुस । यदि कहीं रुकने लगता, तो इय जाता, यदि कोशिश करने लगता, तो वह जाता। आबुस । इसी तरह मैंने थिना रुकते और बिना कोशिश करते बाद को पार किया।

[देवता —]

भहों । चिरकाल के बाद देखता हूँ, ब्राह्मण को, जिसने निर्वाण पा लिया है, विना रकते और विना कोशिश करते, जिसने ससार की नृष्णा को पार कर लिया है ॥

१ वाढ चार हैं—काम की वाढ, भच की वाढ, मिथ्या-दृष्टि की वाढ और अविद्या की वाढ । पाँच काम गुणों (=रूप, अब्द, गन्ध, रस और स्पर्श) के प्रति तृष्णा का होना 'काम की वाढ' है। रूप और अरूप (देवताओ) के प्रति तृष्णा का होना भव की वाढ है। जो वासठ (देखो—टीघनिकाय, ब्रह्मजालसूत्र) मिथ्या धारणाएँ हैं, उन्हें 'दृष्टि की वाढ' कहते हैं। चार आर्य सत्यों के जान का न होना 'अविद्या की वाढ' है।

२ बौद्धर्म दो अन्तों का वर्जन कर मध्यम मार्ग के आचरण की जिक्षा देता है। कही इक रहने से कामभोग और बहुत कोशिश करने से आत्मपीडन वाले तपश्चरण का निर्देश किया गया है। बुद्धने इन दोनो अन्तों को त्याग मध्यम मार्ग से बुद्धत्व का लाभ किया।

३ विसत्तिकं — "रूपादि आल्म्यनों में आसक्त-विसक्त होने के कारण तृग्णा विसक्तिका कही जाती है।"—अहकथा।

दस देवता वे यह कहा । धारता (च्युद) ने स्त्रीकर किया । तव वह वेदता शास्त्रा की मीहिति को बाव सरावान को वसिवायन भार प्रवृक्षिण कर वहीं पर

वर्ष पर्व प्रदेश सार्था का प्राह्मीय का बाव प्राप्तान् का बावपान् वर्ग सार्थान् वर्ग स्वाप्तान् वर्ग प्रदेशका कस्तर्वात हो गया ।

\$२ निमोक्छ सुत्त (११^२)

मोम

भावसी में।

वह देवता भगवान् में बोकाः— भगवाम ! बीवों के निर्मोहा∞धमोक्ष∞विवेक' का नपा आप करने रि १

नाबुस ! बीवों के निर्मोहाळामोझळविवेच को में वानता हैं।

भगवान ! सो कैसे भाग बीवों के निर्मोध≔प्रमोध≔विवेठ को कानते हैं ?

्रा सा कस चाप बापा के गमाध्—असाध्यायक का चानव नुकासक कर्मकम्बन के नष्ट हो काने से

संज्ञा और विज्ञान के भी सिंह कामें से बंदनाओं का जो निषद तथा साम्य हो जाना है।

बहुनाओं क्या जा त्यस्तु तथा भाग्त हा जाना जानुस ! मैं पेसा जानता हैं.

बीबों का निसाब,

प्रमोद्ध और विवेक ॥

६३ टपनेय्य सुच (११३)

खाँखारिक भोग का स्थान

बह रैवता मगवान् के संस्थाय यह गांचा वोद्याः---

जिल्हारी कीय रही है उन यो**ड़ी** है।

हराया से जनमें का कोई उपाय नहीं। भून्य के इस अब को वैस्रदे हथे

मून्तु के इस नव का दसद हुन सन्त वेत्रेशके तुल्ली को करे॥

सुन देवैकके पुर्व्या को करे भिग्नपान्—]

किन्द्रगी चीत रही है उन्न बोड़ी है।

कुरायों से सबने का कोई उपाय नहीं। सुन्द के इस अब का हैएले इसे

शास्ति चाहनेशस्य सौमारिक माँग छोड़ है ह

^६ भ अस्पेन्ति सुच (११४)

सांसारिक माग का स्थान बह देवता भगवान् के सम्युग यह गाथा बोक्स-

बन्द गुजर रहा है राखें बीत रही हैं। जिल्ह्यों के जमाने एक पर शुक्र निरुद्ध रहे हैं।

र "तथी का सर्व निराण दी दें। निर्माण को पाकर तथा निमुक्त, प्रमुक्त, विक्रिक्त को दाते हैं। इन्निट्ट कर्में निर्मोध प्रमोध और विवन एक बी बॉल है।" —वाहन्या।

मृत्यु कं इस भय को देसते हुये। सन्व देनेवाले पुण्यां को करें॥

[गगवान्—]

११.६]

वक्त गुजर रहा ह, रातें बीत रही है , जिन्दगी के जमाने एक पर एक निकल रहें है। मृत्यु के इस भय को देगते हुये, जान्ति चाहनेवाला सामारिक भोग छोड़ दे।

§ ५. कतिछिन्द सुत्त (१. १. ५)

पाँच को कार्ट

• वह देवता भगवान् के मम्मुख यह गाथा घोला — कितने को काटे, कितने को छोड़े ? कितने अंत अधिक का अभ्यास करे ? कितने सगो को पार कर कोई भिक्ष , "वाद पार कर गया" कहा जाता है ?

[भगवान्—]

पाँच को काटे, पाँच को छोड़ है, पाँच ओर अधिक का अभ्यास करे, पाँच सगों को पार कर भिक्षु, "वाद पार कर गया" वहा जाता है॥

§ ६. जागर सुत्त (१. १. ६)

पॉच से शुद्धि

वह देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला —
जागे हुआं में किती मोये हैं ?
सोये हुआं में कितने जागे हैं ?
कितने से मैल लग जाता है ?

कितने से परिशुद्ध हो जाता है १ [भगवान्—]

जागे हुओं में पाँच सोये है, सोये हुओं में पाँच जागे है,

१ ''पाँच अवर-भागीय वन्धन (सयोजन) को काटे, पाँच उर्ध्व-भागीय बन्धन छोड़े, यहाँ काटने और छोड़ने का एक ही अर्थ है...।

[&]quot; अदा आदि पाँच इन्द्रियों का अभ्यास करे। पाँच सग ये हैं—राग, होप, मोह, मान, हिए।"—अहकया।

पाँच से मैक इन्न काता हैं पाँच से परिमुद्ध हो आता हैं¹ ब

§ ७ अप्पदिषिदित्त सुत्त (११७)

सर्वद युद्ध

बहु देवता सगवान् के सम्मुख् यह गाया बोकाः----

जिसने धर्मों को (ज्यार्थ मन्द) नहीं जाना यां जैसे तैसे के मत में पड़कर बहुक गये हैं। सोधे हुये वे नहीं कागते हैं,

उनके बागने का बाब समय का गया 🛎

[मगवान्--]

जिनने बारों को एत पूरा जान किया जा जैस तैसे के सत में पड़कर नहीं बहक गये। ये सम्बुद्ध हैं सब कुछ जानते हैं विपस ज्यान में भी जसरा आचरन मस रहता है।

> ६८ सुसम्मुद्ध सुच (१ १८) सम्बन्ध चट

बह देवता भगवान क सम्मुक्त वह गावा व साः---

थो बर्सों के किपन में बिस्कृक सुद हैं जैसे पैसे क सन में पदकर बहुक गये हैं। सोधे हुने वे नहीं जागत

वनके क्रामी का जब समय भा गया ॥

यनक कागनः [सगदान--]

की पत्ती के बिजय में सूद वहीं हैं जैस तिसे के मत में पचकर वहीं बद्दक वये ॥ वे सन्द्रज्ञ हैं सप बूछ जातते हैं विपान समाम में भी बनका सावाज सस सहसा है।

६९ नगानकाम सच (११९)

३ ९ नपानकाम सुर्पार १ ९ सृत्य कराज्य से पार

वह देवता भगवान् क सम्मुग्न वह गाभा बोन्सा-

कॉमग्राम चाहनेदामा भएषा रूमच नहीं कर सदता

भारत भारि योग शस्ति है जाग रहत याँच मीचरण गोवे रहाँ है हती तरह याँच मोचरां हे नीचे रही याज इन्हरून जानी रही है याच मीनवाँ (ज्वासप्यन्त, प्यानार रायानगृद्ध, भारतम कीहरून विवेदित्या) । में प्रत्या जाता है। योच हरिहरों (त्याना, वाँचे प्रता, स्पृति समापे) । योगान हो कमा है। — अहरूया।

विना समाधिस्थ हुए चार मार्गा का ज्ञान भी नहीं हो सकता, जंगल में अकेला प्रमाट के साथ विहार करते हुये, -मृत्यु के राज्य को पार नहीं कर सकता ॥

[मगवान्—]

मान को छोड़, अच्छी तरह समाधिस्थ, प्रसन्न चित्त वाला, मर्वथा विमुक्त हो, जगल में अकेला सावधान हो विहार करते हुये, मृत्यु के राज्य को पार कर जाता है ॥

§ १०. अरञ्ज सत्त (११.१०)

चेहरा खिला रहता है

"वह देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला —
जगल में विहार करने वाले, शान्त, ब्रह्मचारी,
तथा एक बार ही भोजन करनेवालों का चेहरा कैसे खिला रहता है ?

`[भगवान्—]

विते हुए का वे शोक नहीं करते, आनेवाले पर बड़े मनस्वे नहीं वॉघते, जो मौजूद है उसी से गुजारा करते है, इसी से उनका चेहरा खिला रहता है ॥ आने वाले पर बड़े मनस्वे वॉघ, बीते हुए का शोक करते रह, मूर्ख लोग फीके पढ़े रहते हैं, हरा नरकट जैसे कट जाने पर ॥

नल वर्ग समाप्त

१. मोनं-"चार आर्य-सत्य का जान, उसे जो घारण करे (=मुनाति) वह मोन ।"-अहकथा।

दूसरा भाग

नन्दन वर्ग

[§] १ नन्दन सुरा (१२१)

नन्दर्ग-घम

पुना मैंने सुना—युक समय मगवाय् आवस्ती में मनाधारियिक के खेतवन जाराम में विद्यार करते के ! वहाँ मगवाय् वे मिश्रुकी को नामरित्त किया— "मिश्रुको ! "सदस्य ! बद्यकर वन सिश्रुकों ने मगवाय् को उत्तर दिया !

भगवाम् बोक्षः----

मिश्रमी ! बहुत पहक त्रयत्रिका कोक का कोई देवता तत्व्वत-यन में अपसामी से हिक मिनकर दिप्प पाँच कारागुली का भीग विकास करते हुचे अस समय यह गावा बोका :—

> वे सुष्य नहीं काव सकते हैं जिनने शन्तन को नहीं देखा । विकास कोक के बदास्की देवताओं के न्याक्षस को ॥

मिश्चनां ! उसक ण्या कहते पर किसी कुसरे देवता नै उसकी बात में क्याकर वह गांचा कही-

सूर्य ! तुस नहीं जानने अंसा महरू क्षेम बताते हैं । सभी संस्कार क्षेत्रिक हैं व्यवह होगा कींट कम हो जाना वसका स्वयाब है ऐसा होकर के सुकार जाते हैं वसका क्षित्र कारण हो कारण ही सरस-यह हैं ।

§ २ नन्दविसुच (१२०)

धिम्ता-रहित

बह देवता मतवाम् के सम्मुल बह गांधा बीमा :---

पुष्रीचाना पुत्री से मानन्त्र करता है चैने ही गांचीचाना गीची से मानन्त्र करता है सांमारिक चन्तुमी में ही प्रमुख को बारास होता है क्रिय काहै वस्तु नहीं उसे मानन्त्र भी नहीं ॥

[भगपाम्--]

पुर्वोद्याना पुत्रों की चिन्ना में रहता है हैमें ही शीवींद्याना शीवोंकी चिन्ना में रहता है सांसारिक वस्तुओं से ही मनुष्य को चिन्ता होती है , जिसे कोई वस्तु नहीं उमें चिन्ता भी नहीं।

§ ३. नित्थ पुत्तसम सुत्त (१. २. ३)

अपने ऐसा फोई प्याग नहां

···वह देवता भगवान् के सम्सुग यह गाया बोला —

पुत्र के ऐसा कुछ प्यारा नहीं, गीवों के ऐसा कुछ धन नहीं, सूर्य के ऐसा कोई प्रकाश नहीं, समुद्र सबसे महान् जलराशि है।

[भगवान्—]

अपने के ऐसा कुछ प्यास नहीं, धान्य के ऐसा कुछ धन नहीं, प्रज्ञा के ऐसा कोई प्रकाश नहीं, रृष्टि सबसे महान् जलस्ति हैं॥

§ ४. खत्तिय सुत्त (१२४)

बुद्ध श्रेष्ट है

मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ट हैं, चौपायों में विलवर्ट, भाषिकों में कुमारी श्रेष्ट ह, और, पुद्रों में वह जो जेटा है।

[भगवान् —]

मम्बुद्ध मनुत्यां में श्रेष्ट हैं, अच्छी तरह सिराया गया जानवर चापायों में, सेवा करने वाली भायांओं में श्रेष्ट हें, और, पुत्रोंमें वह जो कहना साने ॥

§ ५. सन्तिकाय सुत्त (१०२ ५)

शान्ति से आनन्ड

दुपहरिया के समय, पक्षियों के (छिप कर) बैट रहने पर, सारा जगल झाँव-झाँव करता है, उससे मुझे बढ़ा डर छगता है॥

[भगवान्—]

हुपहरिया के समय, पक्षियों के बैठ रहने पर, सारा बंगक सौंब-सौंब करता है; उससे मुझे बढ़ा आनन्त्र माठा है ॥

१६ निशासन्दी ग्रुप्त (१२६)

निद्वा और तन्द्रा का स्थाग

विद्वा तन्त्र वैसाई समा बी मही समान सोबन के बाद नशा सा बा बाना, इतसे ससार के बीवा को सार्य-मार्ग का साक्षात्वार नहीं होता ॥

[मगवाम् —]

िम्हा तत्वा जैनाई केमा जी नहीं कराना भीजन कंबाद नद्दा सा या जाना; तत्साद-पूर्वक दुन्हें द्वा दंवे से कार्य-मार्ग क्रक को काला है स

§ ७ हम्म् सुस (१२७)

कल्लमा के समान रका

करना कदिन है सहना भी वहा कठिव है जो भूगों है उससे अमय-भाव का पाछना भी। यहाँ बाबायें बहुत है अहाँ मुर्ज कोग हार कटो हैं।

[भगवाम्—]

विश्वे दिनों तक क्षमण-मात्र को पास यदि जानो निका को बाद में बहुँ कर मन्त्रा; पद-पद में क्षिपक कावगा इच्छामा के कावी दहुँदेनस्त a काम क्षम क्षमी को अवनी गोपड़ी में में में मिशु अपने में ही मन के विश्वयों को समेद, कानक समी की कह व देते हुए सान हा गावा दिन्हीं की मी निन्हा नहीं करता है a

^६८ डिस्मित (१०८)

पाप स सजाता

संपार में बहुत कम येथे पुरूप हैं का बाद कमें बरने हा लागते हैं, वे तिम्मू से बैंगे ही बीट बरने हैं कैने निगावा हुआ दोदा बावुक माह

[भगवान्-]

श्रीहे में भी पाप करने में जो लजाते हैं, मदा स्मृतिमान् होकर विचरण करते हैं. ये दुग्यों का अन्त पाकर, विपम स्थान में भी तम आचरण करते हैं।

§ ९. कुटिमुत्त (१.२ ९)

जोपदी का भी त्याग

क्या आपको कोई गोपड़ी नहीं ? क्या आपको कोई ग्रांसला नहीं ? क्या आपको कोई यार-प्रस्ते (≈मंतान) नहीं ? , क्या बन्पन से उटे हुए हैं ?

[भगवान्--]

नहीं, मुझे कोई शोपड़ी नहीं, नहीं, मुझे कोई घोसला नहीं, नहीं, मुझे कोई वाल-प्रच्चे (=सतान) नहीं, हों, मैं यन्प्रन से छूटा हुआ हूं॥

[देवता—]

आपकी भोपदी में किसे कहता है ? आपका बोंसला में किसे कहता है ? आपकी सन्तान में किसे कहता है ? आपका बन्धन में किसे कहता है ?

[मगवान्—]

माता को मान कर तुम झोपडी कहने हो, भार्या को मान कर तुम घोमछा कहते हो, पुत्रा को मानकर तुम सन्तान कहते हो, तृष्णा को मानकर तुम बन्धन कहते हो।

[देवता-]

ठीक है, आपको कोई छोपड़ी नहीं, ठीक है, आपको कोई घासला नहीं, ठीक है, आपको कोई सन्तान नहीं, आप वन्धन से सचमुच मुक्त है॥

§ १०. समिद्धि सुत्त (१ २ १०)

काल अज्ञात है, काम मोगों का त्याग

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् राजगृह के तपोदाराम में विहार कर रहे थे। सर ध्युन्मान् समृ जि शत के मिनसारे बढकर वाल चीने क स्थिप वर्षों लघोवा (मार्म-पुण्ड) दे वर्षों गये | तरोप् में गाल को एक ही कोचर पहले हुए याहर छड़े वाल सुका रोपे थे ।

तर बोह श्वन स्त शतने पर अवशी चमक से सारे तरोहा को चमकते हुए कहीं आयुप्तान, समृद्धि में बहुँ अथा। सारुर, आजस में सदा हो यह गया घोसा :---

> तियु दिन भोग' रिचे बाप भिक्तरत करते हैं भेग करके भाग भिक्तरत नहीं करते हैं भिद्युती भाग करके भाग भिक्तरत करें बाह का ऐसे ही सह गवारों !!

[समृशि —]

कार को में वहीं उत्तत कार को कत्तन है इसका पता नहीं इमीमे विना भोग किए मिशा करता है, मेरा समय नहीं भी रहा है है

तंद उस देवक्रम पूर्वी पर उत्तर का अयुक्तम् समृद्धिको क्यां—मिनुनी ! आपने बड़ी एँग्री अवस्ता में प्रमाग के की है। अपन्नी ता कमी कुमाग्यस्था हो दे। आपने वेश को है। इस बहुता उस में क्याने समार कहामों का काइ तक बही किया है। मिनुनी ! क्या अभी सोक के एग माग्रम वहें। सामने की बात को साइका मुह्त में होनेवाड़ी के पीसे मत वहें।

गरी अच्या है सिसायने की कात को छोड़कर शुरूत में हान्यमधी के पीछ नहीं स्पूता हूँ। अगुम में ती बच्चे मुहत में हानेयरती बात को छाड़ समने की बच्च के पेट में लगा हूँ। भारवान ने ता बहा है—मांगरिक काम भाग मुद्दुत का कीत हैं। बन्द केट में पड़ने सा यहा तुरार बक्का पहता है वर्षी पताची होती है। बच्चे वर्ष पेट हैं। अर यह पार्म देगत हो देगने कछ एदेन पार्च होतिहा है। हिमा कियो होता है। बच्चे हुए पार्म को जबार संक्रमा है। यह पार्म वर्ग वह है से मेनास्प है (अमेरवर्षका) बिज्ञ लोग हुन पार्म का कपने ही कार अनुस्व करना है।

भिनुत्री ! प्रस्तान्त्र ने सामांगारिक काम नीम को सुरत की जीन की जान है है । उसक के सी पहने म कर्म का तुम्म उद्यान पहला है किमें यही परेस नी हात्यी है ? समसे कैम करे-वहें ऐव है ? वर्ष ऐमी ही लगा की कम है। हैं । वर्ष कमें क्या प्रस्तान शकत सामा है ! किस ऐसी पार्य की नमोड़ी अप उस अन्याक काम है ?

भणुन | में बची बड़ा हरना ही बड़ाज दुष्प हैं। इस चर्च विवय का में निरमर/देश मही क्या गढ़ा। यह प्रशास मंदि संगठ समुद्र राजपूर के मधाराना में विवर कर रह है। तो कर्द वार क्यार हम बण को हुई ; बैना मगदम कार्य बना हो सक्से।

ितार्डा 'इस नेगों के लिये समझन् में सिनमा अमान नहीं। यूगरे वह-नहें तकाची देवना के हैं घरे बहे बहुत है। लिहाड़ी | वहि अस ही समझन् के बाग का बह दूग बान की यूर्जे ती अस्त्रका मैं बर्च हान-मुन्दे के स्थित का सम्माहें।

"माहुन बहुत अक्षा" वह अनुस्मान शशु स ने शर हैंगा की बतर हिंगा दिए सहीं साम नुभवा में अंतिवहर वहाँ वह और बेंगाव !

र परनंदमण्य साधाने | --सावतः |

र प्रमुख्य के लिए में बहा है र -- शायक ।

एक ओर बैठ भाषुष्मान् समृद्धि भगवान् से घोछे: — भन्ते! में रात के भिनसारे उठकर गात घोने के छिये जहाँ तपोदा है वहाँ गया। तपोदा में गात घो एक ही चीवर पहने हुये घाहर खदें खडे गात सुसा रहा था। भन्ते! तम, कोई देवता रात बीतने पर अपनी चमक से सारे तपोदा को चमकाते हुये वहाँ में था वहाँ आया। आकर आकाश में खड़ा हो यह गाथा बोछा: —

सिश्च, विना भोग किये आप भिक्षाटन करते हैं, भोग करके आप मिक्षाटन नहीं करते। भिञ्जजी। भोग करके आप भिक्षाटन करें, काल को ऐसे ही मत गवार्वे॥

भन्ते ! उसके ऐसा कहने पर मैंने देवता को इस गाथा में उत्तर दिया .--

काल को में नहीं जानता, काल तो अज्ञ त है, इसका पता नहीं, इसीसे, थिना भोग किये भिक्षा करता हूँ, मेरा समय नहीं खो रहा है॥

भन्ते, तर उस देवता ने पृथ्वी पर उतर कर मुझे कहा—भिक्षुजी ! आपने दही छोटी अवस्था में प्रवच्या छे छी है। आपकी तो अभी कुम रावस्था ही है। आपके केंग अभी काले है। इस चढ़ती उन्न में आपने ससार के कामों का स्वाद तक नहीं छिया है। भिक्षुजी ! आप अभी छोक के ऐश-आराम करें। सामने की घत को छोदकर मुहत में होनेवार्छा के पीछे मत दोड़ें।

भन्ते ! उसके ऐना कहने पर मैने यह उत्तर दिया—नहीं आद्युस ! मैं सामने की घात को छोड़ कर मुद्दत में होनेवाली के पीछे नहीं दोड़ता. हूँ । आदुम ! मैं तो उलटे मुद्दत में होनेवाली वास को छोड़ सामने की वात के फेर में लगा हूँ । भगवान् ने तो कहा है—सासारिक काम-मोग मुद्दत की चीज है, उनके पीछे पढ़ने से बदा दु खू उठाना पढ़ता है, बद्दी परेतानी होती है, उनमें बढ़े-बढ़े ऐव हैं । और यह धर्म देखते ही देखते फ्ल देनेवाला है, बिना किसी देरी के, जो चाहे इस धर्म को अजमा सकता है, यह धर्म परम-पद तक ले ज नेवाला है, बिज लोग इस धर्म को अपने आप ही अनुभव करते हैं ।

भन्ते ! मेरे ऐसा कहने पर उस देवता ने कहा [ऊपर के जैसा] तो अलवत्ता मैं धर्म-देशना सुनने के लिए आ सकता हूँ। भन्ते ! यदि उस देवता ने सच कहा है तो वह अवस्य यहाँ कहीं पास में खड़ा होगा।

इस पर उस देवता ने अयुप्मान् समृद्धि को यह कहा, "हाँ भिक्षुजी, पूछें। मैं पहुँच गया हूँ।' तय भगवान् ने उस देवता को गाथा में कहा—

> सभी जीव कहे जानेवाछे संज्ञा भर के हैं, उनकी स्थिति कहे जाने भर में हैं, इस घात को थिना समझे, छोग मृत्यु के अधीन हो जाते हैं। जो कहे भर को समझता है,

१ अक्लेट्य-सिडिजनो-पाँच स्कन्धों के आधार पर किसी जीव की ख्याति होती है। इन स्कन्धों के परे कोई तात्विक आत्मा नहीं है।

मिलाओ 'मिलिन्द प्रभ्र' की रथ की-उपमा । जैसे चक्र, अरा, धुरा इत्यादि अवयवों के आधार पर 'रथ' ऐसी सज्ञा होती है, वैमे ही नाम, रूप, वेदना, सज्ञा और सस्कार इन पाँच स्कन्धों को लेकर कोई जीव जाना जाता है। —अनात्मवाद का आदेश किया गया है।

बह आरमा की मिण्या-एष्टि में नहीं पहला, इस (द्वीचाराय) सिद्ध को पेता कुछ रह नहीं बाता जिसमें उस पर कोई होप आरोपित किया बाय'।

पक्ष ! वदि ऐसे किसी (स्रीयाभव) को श्रानते हो तो कही ।

सन्ते ! सरावान् क इस संक्षेप में कई गर्ने का कार्य में विश्वार पूर्वक गर्ही समझता । यदि हुपां कर सरावान् इस संक्षेप से कहे गये का कार्य विस्तारपूर्वक बतार्वे तो में समझ सर्हें !

[सगयान्--]

किमी के बरावर हैं, किसी सार्केचा हैं, जबका नीचा हैं, जो ऐसा समार्में काता दें वह उसके करण क्षाव सकता है। जो तीनों प्रकार से करने चिका को निवर राजता है उस बरावर वा कैंचा होने का क्षाक नहीं काता है

उस बरावर था ऊँचा होने का उसाछ नहीं साता पत्त ! पदि पैस किमी को आनते हो तो कहो ।

सन्ते । समजान के संबंध से बढ़े गयं इतका भी वर्ष में विश्वारपूर्वक नहीं समझ्या । विश् इपा कर समजान इस संबंध से बढ़े गये का वर्ष विश्वार पुषक बतावें को में समझ सन्हैं।

[मगवान्—]

अभिने राग होप और माह को छोड़ दिवा है हो किर माला के गर्में में नहीं पढ़ता है नाम कर के मिंत होनैवाली सारी तृष्णा को कार हाला है उस करे गीठ बाके हु खन्मुक, तृष्ण -रिहत की खोजते हाने पा भी नहीं पते चेवता कोग वा महान्य हुस ओक में या परलीक में कर्म में सा बा माने काहों में ।

वस ! यदि पुने किसी को जानते हो शो कहो । सन्ते | मगवान् के संसेप से कहे गवे इसका विस्तारार्थ में वो अन्ता ई--

> पाप नहीं करें बचन से या अन से या कुछ भी धरीर से सारे संसार में स्मृतिमान् भार संघय हो कार्मों को छोड जन्में बरनेजारें कुर्मों को स क्याप ॥

> > नम्यून वर्ग समाप्त

रै पाँच रहर में ल पर कोड साध्या महा है। इन बात को कितने अच्छी तरह बान किया है। इन रहरूमों के मनितक अमास्य और कुरू स्वभाव का नामास्वार कर को उनके प्रति तर्वेषा तृत्या-रहित है। चुटा है।

र पिमा कोर कारण गई। वहंग क्रिमें उस श्रीचाशक महामा के पियन में कार मह बह उके कि यह राग में रक हैंग से किस वा मोद से मुद है।" — आहरूया।

१ मानं भक्तामा-निपाम केवर्गं में सामृ कुथि भी भाग से अमनी का नकती है।-- महक्या।

तीसरा भाग

शक्ति (= भारा) वर्ग

§ १. सत्ति सुत्त (१. ३. १)

मत्काय-दृष्टि का प्रहाण

श्रावस्ती में।

🕶 वह देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला 💳

भाला लेकर जैमें कोई चढ़ आया हो, जैमें शिर के ऊपर आग लग गई हो, काम-राग के प्रहाण के लिये, स्मृतिमान् होकर भिक्ष विचम्ण करें॥

[मगवान्]

भाला लेकर जैसे कोई चढ़ आया हो , जैसे शिर के उपर आग लग गई हो , सरकाय-दृष्टि के प्रहाण के लिये स्मृतिमान् होकर भिक्षु विचरण करे ॥

§ २. फुसती सुत्त (ं० ३ २)

निर्दोप को दोप नहीं लगता

नहीं छुनेवाले की नहीं छुता है, छुने वाले को छता है, इसलिए, छुनेवाले को छुता हैंल, निर्दोप पर डोप लगानेवाले को ॥

[भगवान् —]

जो निर्टोप पर दोप लगाता है, जो शुद्ध पुरुप निष्पाप है उस पर । तो सारा पाप उसी मूर्ख पर पलट जाता है, उलटी हवा में फॅकी गई जैसे पतली धृल ॥

स्र जिस (अर्हत्) को किसी कर्म के प्रति आसक्ति नहीं है, उससे उम कर्म का विपाक (=फल) भी नहीं लगता । आसक्ति के साथ कर्म करनेवाले ससारी जीव को उसका विपाक लगता है।

[&]quot;अर्भ को स्पर्ग न करनेवाले को विपाक भी स्पर्ग नहीं वरता, जो कर्म को स्पर्ग करता है उसे विपाक भी स्पर्ग करता है।" — अद्दक्षण ।

[§] ३ घटासुच (१३३)

ह्या कीन संस्कृत सकता है !

मीतर में जबस्क क्यों है बाहर भी बाद ही बाद हैं। सभी बीव करा में चेतरह बक्की पड़े हैं; इसलिए हे गीतम ! अल से पूछत हैं, कीव हम करा की सकका र कता है ?

भिगवान-- ो

शीक पर प्रणिक्ति हा प्रशासाम् मञ्जूष सिक भीर प्रशास प्रभासमा करते हुँ इ. तपरसी भीर सिकंप्रीक मिश्र सह हर करा को सुकका एकता है ॥ तिमके राग्रहें प चीर भविचा सिस्पुज हर जुनी हैं वा हरिक्श्य मार्ग्द हैं वाही बार प्रकार मार्ग्द हैं वाही बार और कर्म स्वामा भीर करा स्विक्शक मिन्दा हो करते हैं प्रतिक भीर क्यून्स्ता भी

६ ४ मनानियारण सच (१३४)

मन को रोकता

बहीं बहीं से सब को हरा केता है बहीं बहीं से कस दुन्क बहीं होता; को सभी बगह से सब को हरा केता हैं। बह सभी बगह दुन्क से सुंद्र करता है।

[•] बक्रमेप का दिक्सत हत्य विस्त के स्था हती प्रकोश्वर को पूरी तथा तमहाता है।

र 'काल पैकाने वाली तृष्या ही बडा कही गई है। वह कमादि वालम्पनी में उसर नीचे बार बार उत्तम होने और ग्राव काने के कमाप बीच हस्यादि की शह की तरह मार्गी करा देशी हो। हती से बरा बड़ी गमी है। वही यह राज्याध्यिरकार सर-परिस्कार स्थापमान सरमायन प्राप्तास्थावता बाह्यावता हस्यादि में उत्तम होने से मार्ग की बटा बीच बाह की करा कभी गई है।'

२ "समाविकार विकास की माचना करते।

र प्रतिष सका से काम मन किया गया है। कप-संज्ञा से कप-सव । इन दोनों के से किये वाने से

शरुप मर मी धार्किक कर केना चाहिये । — महक्रमा । ४ 'राठ देखा को पेटी मिध्या बारण हो गर्दे 1 कि बच्चे वा क्षेत्रे कीहिक या लोकोचर वर्मी विच्य का मिश्यरण करना चाहिर, उन्हें करण बाही करना चाहिर ! — अहक्रमा !

[भगवान्]

सभी जगह से उस मन को हटाना नहीं है, जो मन अपने वश में आ गया है, जहाँ जहाँ पाप है, चहाँ वहाँ से मन को हटाना हैं! ॥

§ ५. अरहन्त सुत्त (१. ३ ५)

अर्हत्व

जो भिक्ष कतकृत्य हो अर्हत हो गया है, श्रीणाश्रव, जो अपने अन्तिम देह को धारण कर रहा है, 'मैं कहता हूँ' ऐसा भी वह कहता है, 'मुझे कहते हैं' ऐसा भी वह कहता है'॥

[भगवान्—]

जो मिश्च कृतकृत्य हो अहंत हो गया हैं, श्लीणाश्रव, जो अपने अन्तिम देह को धारण कर रहा है, 'मैं कहता हूँ' ऐसा भी वह कहता है, 'मुझे कहते हैं' ऐसा भी वह कहता है।। (किन्तु) वह पण्डित छोगों की वोळचाळ के कारण ही, केवळ ज्यवहार-मान्न के ळिये ऐसा प्रयोग करता हैं!॥

[देवता-]

जो मिक्ष कृतकृत्य हो अर्हत् हो गया है, क्षीणाश्रव, जो अपने अन्तिम टेह को धारण कर रहा है, क्या वह अभिमान के कारण, 'मैं कहता हूँ' ऐसा और 'मुझे कहते हैं' ऐसा भी कहता है ?

१ "देवता की मिथ्या धारणा को हटाने के छिए भगवान ने वह गाया कही। कुछ चित्त निवारण करने योग्य भी हैं, और कुछ चित्त अम्यास करने योग्य भी। 'दान दूँगा, शील की रक्षा कलँगा' हत्यादि रूप से जो चित्त स्थत हो गया है, उसका निवारण नहीं किन्तु अम्यास करना चाहिए। जहाँ-जहाँ पापमय चित्त उत्पन्न होता है, वहाँ-वहाँ से उसे हटाना उचित है।"—अहकथा।

२ किसी अरण्य में निवास करने वाले एक देवता ने बुछ क्षीणाश्रव अर्हत् मिक्षुओं को आपस में 'मैं कहता हूं, मुझे कहते हैं, मेरा पात्र, मेरा चीवर' आदि कहते सुना। यह सुनकर उसे शका हुई कि जब पंच स्कन्ध से परे कोई 'अत्मा या जीव' नहीं है तो ये अर्हत् 'मैं, मेरा' का व्यवहार क्यों करते हैं!

र "लोके समञ्ज कुसलो विदित्वा वोहारमत्तेन सो वोहरेय्याति"

जनसाधारण के व्यावहारिक प्रयोग के अनुसार ही वह 'में, मेरा' कहता है। इससे यह नहीं सम-झना चाहिए कि उसकी दार्शनिक 'आत्म-दृष्टि' हो गई है। 'स्कन्ध' भोजन करते हैं, स्वन्ध बैठते हैं, स्कन्धों का पात्र है, स्कन्धों का चीवर है आदि कहने से व्यवहार नहीं चल सकता। कोई समझेगा भी नहीं। इसीलिए ऐसा न कह लौकिक व्यवहार के अनुसार ही प्रयोग करता है।

```
[भगवान--]
```

28]

दिनका साम प्राचीन को शया ह इन्हें कोई गाँठ नहीं उनके मारे मान और प्रश्चिमी नष्ट हा चन्नी है. बड परिवत तथा से उपर वह बाता है। 'में क्याता है' पूसा भी वह कहता है 'मसे कहते हैं' ऐसा भी वह कहता है (किना) यह सोगों की बोलबाड़ के कारण ही देशक व्यवहार मात्र हे किये वेथा प्रयोग बस्ता ह ह

§६ पक्रोत सच (१३६)

प्रचान

मेसार में कितन प्रचोठ हैं जिनसे काफ प्रकाशमान होता है ? प्रक्रमें के किये भगवान के वास आयं इस उस कैय अमें १

[मगवान--]

सोफ में चार मचात है पाँचको शहरों नहीं है दिन में सुरक्ष तपता है राव में चौद सोभवा ह धार दिन भीर रात दोनों समय व्यसक-जगह पर रोवानी देती है। किन्तु सम्बद्ध सभी प्रकाशों में स्पेड़ हैं यह अत्मा भनीकिक शारी है^र ह

§७ सरामुच (१३७)

नाम रूप का निरोध

मैंगार की धारा कहाँ पहेंच कर आंगे नहीं बक्ती है नहीं भैदर नहीं शक्स नाटना ? कहाँ काम और रूप शामी विरुक्त ही विरुद्ध हो जान है ?

[भगपानः—]

अहाँ बरू इच्यी अधि और वाबु प्रतिक्षित वहीं द्वीत वहीं बारा रुक आर्थ है

र ⁽त्र की भागा का है। मानः मीति भड़ा या पमक्षा भारि का जो भानाक है समी बुना है प्रातुमार में बारण उत्पन्न होन बन्धा मालोड बुनामा ही है। --भड़बसा।

यही भैंबर नहीं चफर काटना, यहीं नाम और रूप दोनों, बिल्कुल ही निरुद्ध हो जाते हैं॥

§ ८. महद्रन मुत्त (१.३८)

तृष्णा का त्याग

महाधन वाले, महाभोग वाले,
देश के अधिपति राजा भी
एक द्सरे की सम्पत्ति पर लोभ करते हे,
कामों से उनकी तृष्ति नहीं होती ॥
उनके भी लोक के प्रति उत्सुक यने रहने,
और संसार की धारा में यहते रहने पर,
भला ऐसे कौन होंगे जिनने अनुत्सुक हो,
ससार की तृष्णा को छोड़ दिया हो ?

[भगवान्-]

वर को छोड़, प्रमणित हो, पुत्र, पशु और प्रिय को छोड़, राग और हेप को भी छोड़, अविद्या को सर्वधा हटा कर, जो क्षीणाश्रव अर्हत् भिक्षु है, वही छोक में अनुरसुक हैं॥

- § ९. चतुचक सुत्त (१. ३. ९)

यात्रा ऐसे होगी

चार चकों वाला, नव टरवाजों वाला, क्षे अञ्चिपूर्ण, लोभ से भरा है। हे महावीर! (मार्ग) कीचड कीचड़ हो गया हैं, कैसे यात्रा होगी ?

[भगवान्-]

वैरमावक्ष और लोभ को छोड़, इच्छा, लोभ, और पापमय विचार को । तृष्णा को एकदम जड़ से खोद, ऐसे यात्रा होगी॥

^{ा &#}x27;'चार चकों वाला' से अर्थ है चार हरियापय (=खडा होना, वैठना, सोना और चलना) वाला।''—अडकथा।

क निद्ध = उपनाह । "पहलें क्रोध होता है, वही आगे वढकर वैरभाव (=उपनाह) हो जाता
 है ।"─अडकथा ।

§ १० एषिज्ञह्न सुच (ा ३ १०)

पुम्ब से मुक्ति

प्ति स्मा क समाव बांध वाले कृत वीर अप्ताहारी कोम-रहित सिंह के समान अकेट बतने वाले विच्याप बमर्स में अनेका-माव किसके मिट गर्व हैं क्या का पाने पास काकर बुक्ता हूँ— कुक से कुटमार केंद्र हो सकटा है ?

[भगवाम् —]

संसार में पाँच काम-गुज हैं कर्मों सन कहा शवा है; इनमें उत्तव होने चकी हकामों को हरा इसी प्रकार होना से कुरुकारों होए।

डाकि को समाप

चौथा भाग

सतुह्रपकायिक वर्ग

§ १. सन्भि सुत्त (१. ४ १)

ूसत्पुरुपी का साथ

ऐसा मैने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेतवन आराम में विहार करते थे।

तय, कुछ समुल्लपकायिक देवना रात वीतने पर अपनी चमक से सारे जेतवन को चमकाते हुये जहाँ भगवान् ये घहाँ आये ओर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खड़े हो गये।

एक और खड़े हो, उनमें मे एक देवता भगवान् को यह गाथा घोला.—

सत्पुरपों के ही साथ घंटे, मत्पुरपों के ही साथ मिले जुले, मत्पुरपों के अच्छे धर्म जानने से, कल्याण होता है, अहित नहीं ॥

तव, दूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला —

सत्पुर्त्यों के ही साथ बंडे, सत्पुरुपों के ही साथ मिले जुले, सन्तों के अच्छे धर्म जानने से ही, प्रज्ञा प्राप्त होती है, अन्यथा नहीं ॥

तत्र, दूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला —

सन्तों के अच्छे धर्म जानने से, शोक में पढ़ कर भी शोक नहीं करता ॥

तय, दूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला .—

सन्तों के अच्छे धर्म जानने से, यान्धवों में सबसे अधिक तेज वाला होता है॥

तय, दूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा वोला —

सन्तों के अच्छे धर्म जानने से, जीवों की अच्छी गति होती है॥

तय, दूसरा देवता भगवान् के सम्पुख यह गाथा बोला —

ं सन्तों के अच्छे धर्म जानने से, सत्व बद्दे सुख से रहते हैं॥

तब, तूसरे देवता ने भगवान् से यह कहा- भगवान् ! इनमें किसका कहना सबसे ठीक है ?

एक-एक बंग से सभी का कहना ठीक हैं। तो भी मेरी बाद से सुनो :---

सलुक्तों के साथ कैंडे सलुक्तों के ही साथ मिले कुछ सन्तों के भवते पर्न वामने मे सनी कुछ से ठट मता है h

सगवान् ने पह कहा। संतुष्ट हो वे देवता अगवान् का अभिवादन और प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तरवाद हो गए।

⁸२ पण्डती सुंच (१४२)

कंजुसी का स्थाग

एक समय भगवान आवस्त्री में अमाधाविष्यक के जेतवम आगम में निहार करते थे। तर्व कुन सतुद्धपुरकाविक वेचता एक बीचने पर अवश्री कमक से भारे जेतवस की बसकते हुएं जहाँ मगवान ये बहुाँ आहे और सगवान का अमिबाइन कर एक धीर जहें हो गहे।

पुत्र और पहें हो। बनमें से पुत्र इंबता मनवान को वह नावा बोसा :---

मास्त्रवं से बीर ममाद में मनुष्य दाव नहीं करता दें; पुष्य की भाकांका रकने वाके कारी पुष्य की दाव करवा वाकिए ह

तब बुसरा देवता भगवान के सम्भूक यह गाया बोक्या---

, व्वता अध्यान क सामुक्त वह गामा बक्का — कंत्रस विसक्ते वर से दाव नहीं देता हैं कंत्रस विसक्ते वर से वहार ही रहता हैं; मूख कीर जास —जिससे कंत्रस करता है वह उस मूर्व की जग्म जग्मान्तर में क्या रहता है व इसकिय कंत्रस्त करना कोड़ पाए हाम बाक्य एक्य-कर्म हान करे पराहों के केवस करना किया पुत्रव ही प्राफित कंत्रस करना कीड़

तम यूसरा देवता भगवान् व सम्मुख वह गाया शीका:---

परे हुआँ में ने नहीं प्रत्में भी द्वाइ पकतें सामियों की तरह मोड़ी सी पी पीड़ की स्वपस्त में नॉट कर (काते हैं)। बही स्वावक कर्म हैं ॥ भोड़ा रही वर भी कितन हान देते हैं पहुत रहते वर भी कितन हान देते हैं पहुत रहते वर भी कितन हान हों नहें, भीड़ा रहते वर भी कित हैं एक हिया साता है तव, दूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला —

कित से किटन दान कर देने वाले,
दुष्कर काम को भी कर डालने वाले का,
मूर्ख लोग अनुकरण नहीं करते;
मन्तों की घात आसान नहीं होती ॥
इसीलिये, सन्तो की और मूर्खों की,
अलग अलग गित होती है,
मूर्ख नरक में पडते है,
और सन्त स्वर्ग-गामी होते हैं॥

तव, दूसरे देवता ने भगवान् से पूछा, "भगवन् ! इनमें किसका कहना ठीक है ?" एक-एक ढंग से सभी का कहना ठीक है, तो भी मेरी ओर से सुनो —

वह वढा धर्म कमाता है जो बहुत तगी से रहते भी, स्त्री को पोसते हुये अपने थोड़े ही से कुछ दान करता हैं, हजारो दाता के सेंकडो और हजारें। का दान वैसे की कहप भर भी बराबरी नहीं कर सकता॥

तव, दूसरे देवता ने भगवान् को गाथा में कहा-

क्यों उनका वढा महार्घ टान, उसके टान की घरायरी नहीं कर सकता ? इजारों टाता के सैकड़ों और हजारों का टान, वैमें की कला भर भी बराबरी क्यों नहीं कर सकता ?

तव, भगवान् ने उस देवता को गाथा मे कहा -

मार, काट, दूसरोंको सता, तथा और अनुचित कर्म करनेवाले, जो दान करते हैं, उनका यह, रुला और मारपीट कर दिया दान, शांति से दिये गए दान की बराबरी नहीं कर सकता॥ इसीलिये, हजारों दाता के सैकडों और हजारों का दान भी, वैसे दान की कला भर बराबरी नहीं कर सकता॥

§ ३. साधु सुत्त (१.४.३)

दान देना उत्तम है

श्रावस्ती में।

तब, कुठ सतुरलपकायिक देवता रात बीतने पर । एक और खड़े हो, उनमें से एक देवता ने भगवान् के सम्मुख यह उदान के शब्द कहें —

> भगवन् । दान कर्म सचमुच में यदा उत्तम हैं। कजूसी से और प्रमाद से,

संपुष्पों को दान नहीं दिवा जाता; पुष्प की जार्काहा राजने वाले सानी पुरुष को पान करना चाहिए ॥

तन, एक दूसरे देवता नै भगवान् के सन्धुख यह उदान के शब्द बड़ी-

आतम् । बाय कर्म वदा उत्तम है योदे साथी दान देना बदा उत्तम है कितने थोदे रहने पर भी दान करते हैं। बहुत रहने पर भी कितने भारी नेते वहार में से निजय कर को वाल दिया जाता है बह दक्षा के दान के प्राच्य है व

त्र एक तूसरे देवता ने भगवान् के सम्मुख बदाव के वह शब्द करे-

भागम् । वाय-कर्म वहा क्या है
धीहें सं भी ग्राम देश बचा क्या में
धाहें सं भी ग्राम देश बचा क्या में
ध्या सं विधा गया वान भी बचा क्या है
धर्म से कमाने गते का ग्राम भी बचा क्या है
को धर्मानुहरू कमाकर नाम देश है
क्याह-पूर्वक परिधान करने करिया कर
वह बम की देशभी की कर्षित
दिस्स स्वामी की प्राप्त होता है।

तम एक तुमरे देवता ने भगवान् के सम्मुख बन्नान के यह शब्द कहै।---

स्पावन् । वान-कर्म वका कका है
कोई से जी काव केवा कका कका से
कात से विका गया काव भी कहा कका है
कर्म से कसाये गये का बात भी वका कका है
क्री. समाये गये का बात भी वका कका है
क्री. समाये कुम्मद दिवा गया का भी वका कका है
समाय कुम्मद दिवा गया का क्री मध्ये मध्ये को है
समाय कुम्मद दिवा गया का क्री मध्ये मध्ये को है
स्वार में को बुद्धिया के पात है
क्रमदों दिवे गये वान का बुद्ध से मध्येया की है
समाय क्री कर्म मं ब्रीस्ट गोरे गये का कर होता है।

तंत्र एक बुधरे वेचता में भाषान् के सस्प्रक कहान के यह सम्य कहे.— सरावन् । दाव कर्म बहा क्यार दे कीने से भी दान केवा कहा क्यार है सन्दा से दिया गांव दान भी वहा क्यार दे बमें से क्यार गांवे कर दाव भी कहा क्यार है सम्य-प्रकृत कर दिया गांव हुए भी वहा क्यार है, वीर, कीनों के प्रति संदार स्कार भी वहा क्यार है। की मानिकों के दिया कहा हैते हुए विस्ता है। निन्दा से दरता है, और पाप-कर्म नहीं करता, पाप के सामने जो दरपोक है वही प्रशसनीय है, यह सूर नहीं, सन्त स्रोग दरते है और पाप नहीं करते ॥

ता, एक दूसरे देवता ने भगवान् से पुत्र --

भगवन् । इनमें किसका कृतना ठीक हैं ?

एक-एक दग से सभी का कहना ठीक हैं, तो भी मेरी और में सुनो .—
श्रद्धा से दिये गये दान की यटी प्रदाई है,
दान में भी यद कर धर्म का जानना है,
पहले, यहुत पहले जमानों में, मन्त लीग,
प्रज्ञा से निर्वाण तक पा लेते थे॥

हे ४. नसन्ति सुत्त (१४४४)

काम नित्य नहीं

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाधिपिण्डिक के जेतवन आराम में विहार करते थे। तब कुछ सतुल्लपकायिक देवता । एक ओर खड़े हो, उनमें में एक ने भगवान् के सम्मुख यह गाथा कही—

> अनुप्यों में काम निष्य नहीं हैं. ससार में लभाने वाली चीज़ें हैं जिनमें वम जाते हैं जिनमें पद कर मनुष्य भूल जाते है, मृत्युके राज्य से छुट कर निर्वाण नहीं पाते ॥ इच्छा बदाने से पाप होते है. इच्छा बढ़ाने से दु स होते है, इच्छा को द्वा देने से पाप दव जाता है, पाप के दव जाने से दु स भी टव जाता है॥ ससार के सुन्दर पदार्थ ही काम नहीं हैं. राग-युक्त मन हो जाना ही पुरुष का काम है. ससार में सुन्दर पदार्थ वैसे ही पड़े रहते हैं, किन्त्र. पण्डित लोग उनमे इच्छा उत्पन्न नहीं करते ॥ क्रोध को छोद दे, मान को विल्कुल हटा दे, सारे यन्धना को काटकर गिरा दे. नाम-रूप के प्रति अनासक्त रहनेवाले. त्यागी को दु ख नहीं छगते।। काक्षाओं को छोड़ दिये, मनसूचे नही घाँधे, नाम और रूप के प्रति होनेवाली तृष्णा को काट दिये, उस गाँठ-कटे, निप्पाप और वितृष्ण की. खोजते रहने पर भी नहीं पाते.

१.अपुनरागमन=निर्वाण, जहाँ से फिर लौटना नहीं है।

पंत्रता धार सञ्चय क्रांक में वा परकांक में स्वर्ग में वा सभी कोची में ॥

भाषुप्मान् मोधराज्ञ ने व्या-

पदि मेंसे मुख पुरुष को नहीं देख पाय देखता भीर सनुष्य क्षांक वा परकोक में, परसार्य वानये बाके उस मरीचास का, को उन्हें बसम्बार कार्त है व कम्म है।

भगवान् ने कहा---

मोबराज । वे मिश्रु कम्ब हैं वो बैसे मुक्त पुरुष का बमस्कार करते हैं। पर्म को कन मंहन को मिछ वे मिछ सभी बन्बामों के ऊपर वठ बात हैं।

४५ उच्मानसम्बा**ध्य (**१४५)

तवागत इराइवॉ से परे 🕏

पुर समय भगवान् आपरती में भनाधिपिन्डक के जेतवन नाराम में विशार करते ने । वह कुछ बन्धाननीती देवता तत्र बीतने पर धवती काफ से धारे जेतवन की काम बहाँ सगवान् ने वहाँ आए। जावर बाकास में बड़े हो गये। आकास में नाहे हो एक देवता ने सगवान् की गावा में कहा-

> इन्ज ब्लार हो होते हुए सपने को को हुए वृद्धरा हो बजाता है इस बूर्ग देवा रूग कर को बुट मोश-स्थार है वह चोरी में होगा है अ को सब में को बहु शोले को बही को कह मह बोके विगा बारो हुने कहने वार्कों की परिता बारो हुने कहने वार्कों की

[मगबान्—]

्रा पर केवल कहते भर से पर केवल मुल मर की से भारत नहीं कर किया क्षा सकता है यो यह साग हराग कर्मर हैं। क्रियमें शामी पुरत्त मुल हो करते हैं क्षाम कार्यों वाले मार में करवन से स क्षेत्र शामी पुरुष कर्मा गहीं करते संभार कार्यों प्रदूष कर्मा गहीं करते संभार की गामी-विषेक्ष साम कर, प्रज्ञा पा पण्डित लोग मुक्त हो जाते है, इस बीहद भगसागर को पार कर लेते हैं ॥

तय, उन देवताओं ने पृथ्वी पर उतर भगवान के चरणों में शिर से प्रणाम् कर भगवान् को कहा —

भन्ते । हम लोगों से भारी भूल हो गई। मूर्य जसे, मूद जेसे, वेवक्रफ जैसे हो कर हम लोगों ने भगवान् को सिखाना चाहा।

भन्ते । भगवान् हमारे अवराध को धमा करें, भविष्य में गृंसी भुछ नहीं होगी ।

इसपर भगवान् ने मुस्करा दिया ।

तत्र, वे देवता बहुत ही चिद कर आकाश में उठ यह हो गये। एक देवता भगवान के सम्मुख यह गाथा बोला —

अपना अवराध आप न्यीकार करने वालों को, जो क्षमा नहीं कर देता है, भीतर ही भीतर कीप रपने वाला, महाहेपी, वह वेंर को ओर भी वॉध लेता है।। यह कोई भी अराई नहीं हो, यह मंगर में कोई भूल भी न करें, ओर यदि वेर भी जानत न हो जाय, नो भला, कान ज्ञानी वन सकता है? अराई किरमें नहीं है? भला, किससे भूल नहीं होती? कान पण्डत सहा स्मृतिमान रहता है?

[भगवान्—]

जो तथागत बुख हे,
सभी जीवो पर अनुकर्मा रखते है,
उनमे कोई बुराई नहीं रहती,
उनसे कोई भूछ भी नहीं होने पाती,
वे कभी भी गफलत नहीं करते,
वही पण्डित सदा स्मृतिमान् रहते ॥
अपना अपराध आप स्वीकार करने वालों को,
जो क्षमा नहीं कर देता है,
भीतर ही भीतर कोप रखने वाला, महाहेपी,
उस वैंर को और भी बाँध लेता है ॥
ऐसा कहने वाले के प्रति मैं वैर नहीं रखता,
तुम्हारे अपराध को मैं क्षमा कर देता हूँ॥

§ ६. सद्धा सुत्त (१. ४. ६)

प्रमाद का त्याग

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेतवन आराम में विहार कर रहे थे।

P

तक कुछ स्तुल्पकाथिक देवता रात के बीतने पर अपनी क्रमक से सारे जेतवन को जसकाते हुपे अहाँ भगवान् ये वहाँ आपं और मगवान् का अभिवादन कर एक मोर सहे हो गये। एक भार पाइ हा उनमें से एक देवता ने सगवान को गाथा में बड़ा ---

> विस प्ररूप को सन्। बद्धा बनी रहती ह भार को अभवा में कमी गडीं पहला उससे उसकी कीर्ति भार वदाह हाती है समा सरीर सुदने के पाद सीधे स्वर्ग को बाता है ॥

तव दूसरा देवता भगवान् के सम्भुदा यह गाथा बोकाः— मोध वर करें समिमान को छोद दे. सारे **बन्ध**माँ को खाँच जाये मास सीर रूप में वहीं फैसपे बास

उस रवागी के पास नृष्या नहीं भारती ॥ भगवान-1

> शमाद में एने रहत हैं मुर्च दुईदि कीग ज्ञानी प्रस्प नप्रमाद की कड़ धन के पंती रक्षा करता है। प्रसाद में तद हमी काम-राग का साथ तद हो प्रमाद रहित हो प्यान स्थाल बाला परम सूप्र पाता है ॥

> > ६७ सम्य सत्त (१ ४ ७)

सिश्च सम्मेष्टन

ण्मा सैवे सुना।

पुढ़ समय मगराण् पाँच भी सभी नहींग् मिल्लुओं के एक वहे मंथ के साथ शायन्य (कनपह) में कारिक्रयस्त के अहाकत में विकार करते थे। अगवान कीर मिलु-संघ के वर्शवार्व दल्ली काउ के बहुत देपता था इक्ट्रे हुन में ।

तर प्रदायास के बार देवताओं क सब में बह हुआ। 'यह मगवान पाँच सा सभी महीद मिशुमों के एक बड़े संघ कामाय शायन्य (जनपन्) में कपिछचस्तु के महायस में निहार करते हैं। भगवान और मिश्रु-संघ के पर्धनार्थ दशों कोण के वहुत वैवता था इक्ट्रे हुये हैं। तो इस सीग भी पाने पाने भगवान दिराजते हैं चरुकर भगवान के पास एक पूक्र गाधा कहें।

तव वे देवता जैसे कोई वसवान् पुरूप समही वीह को पसार दे कीर प्रसारी वीह की समेद क पेसे ही डा्यापास क्रोक में अन्तवान हो अगरानु के सामने प्रगट हुने। तब वे देपता सारवान की प्रचान कर एक और शह हो गवे।

पद बार गरे हो एक देवता अवदान द सम्माग यह गाथा श्रोका:---

बन-गरह में वही सभा खर्गा है र्यता श्रीम श्राक्त हबहे हुने हैं। इन वर्ग-मधा में इस लीग भी बाब है भगराधित जिल्लामध क मुर्नेवार्थ ॥

तव, द्सरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला.—
उन भिक्षुओं ने समाधि छगा छी,
अपने चित्त की पूरा एकाग्र कर दिया,
सारथी के जैसा छगाम को पम्ह,
वे ज्ञानी इन्द्रियों को वज में रखते हैं॥
तव, दूसरा देवता भगवान् के सममुख यह गाथा बोला —
(राग-द्देप-मोह) के भावरण,
तथा दद बन्धन को नष्ट कर, वे स्थिर चित्तवाछे,
गुद्ध और निर्मल (क्षुमार्ग पर) चलते हैं,
होजियार, सिखाये गये तरुण नाग जैसे॥
तय, दूसरा देवता भगवान् के सममुख यह गाथा बोला —
जो पुरुष बुद्ध की जरण में आ गये हैं,
वे दुर्गतिल में नहीं पड़ सकने,
मनुष्य जरीर छोडने के बाद,
देव-लोक में उत्पन्न होते हैं॥

§ ८. सकलिक सुत्त (१.४,८)

भगवान् के पैर में पीड़ा, देवताओं का आगमन

ऐसा सैने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह के मद्कुश्चि नामक मृगदाव में विहार करते थे।

उस समय भगवान् का पैर एक पत्थर के हकई से कुछ कट गया था। भगवान् को बड़ी चेटना हो रही थी—शरीर की चेटना दु खट, तीझ, कटोर, परेशान कर देनेवाली। भगवान् स्थिरचित्त से स्मृति-मान् और सप्रज्ञ हो उसे सह रहे थे।

तव भगवान् सघाटी को चौपेत कर विछवा, दाहिनी करवट सिंह-शय्या लगा, कुछ हटाते हुए। पैर पर पेर रख, स्मृतिमान् और सप्रज्ञ हो लेट गये।

तब सात सौ सतुल्लपकायिक देवता रात बीतने पर अपनी चमक से सारे मद्कुक्षि को चमकाते हुये जहाँ भगवान् थे वहाँ आये और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खड़े हो गये। एक ओर खड़ा हो, एक देवता ने भगवान् के पास उटान के यह शब्द कहें —

अरे । श्रमण गीतम नाग है, वे अपने नाग-वल से युक्त हो, शारीरिक वेदना, दु खट, तीव, कटोर को, स्थिरिच से स्मृतिमान् भोर सप्रज्ञ हो सह रहे हैं॥

तब, दूसरे देवता ने भगवान् के पास उटान के यह शब्द कहे -

अरे । श्रमण गौतम सिंह के समान है। अपने सिंह-वल से युक्त हो शारीरिक वेदना ' को स्मृतिमान् और सप्रज्ञ हो स्थिर चित्त से सह रहे हैं।

अपाय=दुर्गित चार ई—नरक, प्रेतलोक, असुरकाय, तिर्मग् योनि ।

^{&#}x27; भगवान् तेटते समय पैर की श्विष्टियों को एक दूसरे से थोटा-सा हटाकर रखते थे, उसे ही 'पाट पाट अद्याधाय' कहा गया है।

तब नृतरे नेवता ने भगवान् के पान बनान के यह सान्त कहे --भरे ! समग गीतम भावानीय हैं ! जपन जावामीय-पाठ से न्यिर-धिन्त से राह रह हैं !
तब नृतरे देखा में भगवान् के पास बहान के यह सान्त कहें :--भरे ! असम गीनाम चेत्रोष हैं ! अपने बेलोड़ कर में निवर-धिक्त से साह रहें हैं !
तथ नृतरे देवता में भगवान् के पास उदान के वह सान्त करें:--भरे ! असम गीना पढ़े भारी भार बाह्न हैं ! त्यार-धिक्त में मह रह हैं !
तब नृतरे देवता में भगवान् के पास उदान के यह सान्त करें:--सरे ! असम गीना पढ़े भारी भार बाह्न हैं ! त्यार-धिक्त में मह रह हैं !
तब नृतरे देवता में भगवान् के पास उदान के यह सान्त करें:----

करें ! समय गीवम कहे नाम्त हैं। न्विर-चित्त स सह रहे हैं। तब नृतरे देवता ने भगवान है पाम अदान के यह शम्द कही-

समाधि के सम्पास सं इस बिश्चन्त चित्र को देनों | न तो उटा है न दन है जीर न कोई नाधिश कर के पारहा गरा है किन्तु वहा हो जामाधिक है। को ऐसे को पुरुष जागा सिंह, धाडातीय वैकोई भारवाद दानत करें—मो चेवन करनी सर्जना से बहाना है।

> पञ्चाह वेद को बाह्यज भन्ने ही चारज कर सी बारों तक शक्ष ही नपस्वा करना रहे किन्तु उसम विश्व पूरा विमुख हो नहीं सकता बीन करूप बाके पार नहीं व्यासकते व तप्या संग्रेतित इत आदि के फेर में पड़े सां वर्ष करोर तपस्या करते हमें भी बनका विश्व परा विश्वक नहीं होता शीन #4व व से पार नहीं वा सकते व भाग्य-राहि रक्षने वाके प्रदय को भाष्य संयम नहीं हो सक्ता शसमाहित पुरुर को मुनि भाव नहीं था सकता जंगक में वर्षका प्रमादकृष्ट विद्वार करते हुथ कोई शुरुष के राज्य की पार नहीं कर सकता ह मान झेर बध्दी तरह समाहित हो सन्दर विश्व बाबा सभी तरह से विमुद्ध, माक्शन ४। बंगक में अन्नेस विदार करते हुये यह स्टाम के शाम के पार चका करता है ॥

§९ प्रत्रुमधीस स्च (१४९)

धर्म-प्रदूष से स्वत

ऐसा मैंबे भूता।

पुरु समय भगवान् सेहााळी में महानग की कुटागांस्थाका में विदार करते थे। तब प्रदारम की बेटी कोकमत्त राज बीठने पर काली नमक से सारे महासम की चमकाती पूर्व पर्दी मगवान् ये वहीं जातुं, जोर मगवान् कर समिवान्य कर एक बीर जाती हो गई।

एक मोर न्यदी यह देवता कोकत्रत्रा प्रशुक्त की देशी समझान् के सम्मुख यह गामा शोकी:--- चेशाली के घन में विहार करते हुये, मर्बश्रेष्ट भगपान् बुढ को, में कोकनदा प्रणाम् करती है, फोफनटा प्रद्य रन की वेटी॥ मेने पहले धर्म के विषय में स्ना ही था, जिसको सर्वज्ञ बुद्धने साक्षान किया ए, अाज में उसे साक्षात् जान रही है. मुनि सुगत (=3ह) से उपदेश किया गया ॥ जो कोई इस आर्य धर्म को, मुर्प निन्दा करते फिरते हे, वे घोर रोरव नरक में पडते है, चिर काल तक दु पाँ। का अनुभव करते ॥ ° और जो इस आर्थ धर्म मे धीरता और जान्ति के माथ आने है. वे मनुष्य-गरीर को छोड़ कर, देव-लोक में उत्पन्न होते है।

§ १०. चुछपज्जुनधीतु सुत्त (१.४ १०)

बुद्ध धर्म का सार

ऐसा मैने सुना।

एक समय भगवान् वैशाली में महावन की क्टागारजाला में विहार करते थे। तन, छोटी की कनटा प्रदासन की वेटी रात बीतने पर अपनी चमक से लाने महावन को चम-काती हुई जहाँ भगवान् ये वहाँ आई और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खड़ी हो गई। एक ओर खड़ी हो वह देवता छोटी-को कनदा प्रदासन की वेटी भगवान् के सम्मुख यह गाथा

बोली —

यह में आई हूं, जिजली की चमक जैसी कान्ति वाली, कोकनदा प्रयुग्न की वेटी, वुद्ध और धर्म को नमस्कार करती हुई, मेंने यह अर्थवती गाथा कही ॥ यद्यपि अनेक ढग से में कह सकती हुँ, ऐसे (महान्) धर्म के विषय में, (तथापि) सक्षेप में उसके सार को कहती हूँ, जहाँ तक मेरी बुद्धि की योग्यता है ॥ सारे ससार में कुछ भी पाप न करे, शरीर, वचन या मनसे कामों को छोड, स्मृतिमान् और सप्रज्ञ, अनर्थ करनेवाले दु ख को मत वदावे ॥

सतुब्छपकायिक वर्ग समाप्त ।

पाँचवाँ भाग

जलसा धग

६१ आदिच सुच (र ५१)

मोर में बाग खगी है

मेना सैबे सुवा ।

ण्ड समय मानान् आवस्ती में मनायपिणिडक के जेतनन व्यास में बिहार करते थे। तन कोई देवता रात बीतने पर अपनी चमक से मारे जतनन की चमकाते हुये जहाँ मगनार में वहाँ जाया गीर माताद का अमिनानन वर एक और लगा हो गया।

पक्त और प्राथा हो वह वैवला अगवान के सम्मूग वह गावा वीकाः—

बर में भाग कम बाले पर जो अपने मस्त्रपाब बाहर निकाल केता है बहु उपकी मलाई के किये होता है। करों को बहु करी बक्कर गए। को साला है

नहीं दो वह वहीं जककर राज हो जाता है व उसी प्रकार हम सारे कोऊ में भाग स्था गई है करा की बाग और सर बाने की ध्या

दान दैकर बाहर निजाक को दान दिया गया अच्छी तरह रक्षित रहता है ॥

दान है ने से मुख्य की साहि होती हैं सही दे से उसे ऐमा ही होता हैं; बोर जुस करें हैं, या राज्य हर रेसे हैं या अपर कम जाती है या नव डो जन्म है व भीर अमिर से तो माज ही पुर आता है

बह शरीर भी और साथ साथ सारी सम्पण्टि इसे बाव बंध कर पण्डिन पुरुप भोग भी करने हैं और बाव भी बने हैं ब

> अपने सामर्थ्य के जनुष्म देश्र और भीत वर विम्हा रहित ही अर्थों में न्यान पाना है ॥

हुर किंददं सुत्त (१ २)

क्या देन शासा क्या पाता है ?

चवा देने बाना ४स देता है ? चवा देने बागा बर्ज डेमा है ? वया हैने वाला सुख हेना है ? क्या हैने वाला ऑग्य हेना ह ? फीन सब गुढ़ हेने वाला होता है ? मैं पुछता है, हुपया बनावें॥

[भगवान् —]

अस देने घाला पल दना है, बस देने बाला घण देना ह बाहन देने पाला सुग्य देना है, प्रतीप देने बाला ऑग्य देना है, और, बह सब तुछ देने बाला है, सो आध्य (=गृह्) देना है,

> आर अमृत देने पारा नो वह होता ह, जो एक पार धर्म का उपदेश कर दे॥

§ ३. अन सुत्त (१. ५. ३)

अन्न सबको प्रिय है

एक अन्न ही हैं जिसे सभी चाहते हैं, देवता और मनुष्य लोग दोना, भला ऐसा कोन-सा प्राणी हैं, जिसे अब प्यत्स न लगता हो ?

जो उस अन्न का श्रद्धा-पूर्वक दान करते हैं, अत्यन्त प्रसन्न चित्त से, उन्हीं को वह अन्न प्राप्त होता है, इस लोक में और परलोक में भी॥

> इमलिये, कजुर्सा करना छोड , पाप हटाने वाला पुण्य-कर्म दान करे, परलोक मे पुण्य ही (केंबल) प्राणियों का अधार होता है ॥

§ ४. एकमूल सुत्त (१. ५, ४)

एक जड़वाला

एक जद वाला, दो मुँह वाला, तीन मल वाला, पाँच फेलाव वाला, वारह भाँवर वाला समुद्र, और पाताल, सभी को ऋषि पार कर गये[।] ॥

१. "अविद्या तृष्णा की जह है, तृष्णा अविद्या की । यहाँ (एक जड़ से) तृष्णा ही अभिप्रेत है। वह तृष्णा शास्त्रत और उच्छेद दृष्टि के भेद से दो प्रकार (= मुँह) की होती है। उसमें राग, द्वेष और

r

8ु५ अनोमनाम सुत्त (१५५)

मध-पूर्ण

धनौम नाम बासे स्क्म द्रष्टा हाल देने बासे कामों में धनापक; इन सर्वज परिवत का देखों सार्य-मार्ग पर बकने हुये महर्षि का ध

§ ६ अच्छरा सुच (१ ⊀ ६)

राद्य कीसे कटगी !

अप्तराभी के गन से बहुत पहल मका पिदाका के गण से संबित सुसावे में बाक देन बालमें बढ़ बन (नन्द्रन) है राह बैसे करेगी हैं

[सगवान्—]

बहु साथै बहु सीधा है बहु स्थान बर भव से चूटन बे कुछ सी आवाज न निकासन वाका स्थ है बिसमें कमें के चले करें हैं" श

> हो उसकी बचाव है स्वृति उस पर निर्वा व्यव्ह है वर्म को में सारची बनावा हूँ सन्दर्भ रहि आगे कार्य दोडन बाक्स (संवार) है ॥

बिसके पास इस प्रकार की सकारी है रिज्यों की के पास का किसी पुक्रा के पास कह उस पर करूर मित्रोल तक पहुँच बाता है है

मोह तीन सक होते हैं। "। याँच कामगुण "लाई दैनाव है। वह गुण्या कमी पूरी नहीं होती है इत अर्थ में समुद्र कही गा है। आप्तारम कार बाहर के बाद्य म कतन मैंतर कहे गये हैं "। मुण्या की सहसा का हद नहीं है इस्तिकी वालाक कहा गाँ है।—सहकमा।

१ तमस्त्रपत् । 'मोहनं पर्न पाषि ।

१ कर्च बाजा मधिस्मति--देश पुरुष्तर होगा केते सुक्ति होगी !

६ निवात को सध्य कर कहा गया है। सहस्या।

४ शारीरिक-विशिक्त वीर्य संस्थाल धानवाम के बुक-व्यक्तमा । ५ देशे मीतिक रच में उत्तर केंट्र हुए का गिरन से क्याने के लिये व्यक्ती का पटए बना दिवा राजा है, बेसे ही इस मार्ग के रच में काप्यास और बच्चा होनेवाओं बीच्याप करने से समा समझने

याताह काहा इसमा भारियो — अहक्या

§ ७, वनरोप सुत्त (१, ५. ७)

किनके पुण्य सदा वढ़ते हैं ?

किन पुरुषा के दिन और रात, मदा पुण्य बढ़ते रहते हैं ? धर्म पर दढ़ रहने बाले शील से सम्पन्न, कौन स्वर्ग जाने बाले हे ?

[भगवान्-]

बगीचे ओर उपवन लगाने वाले, तो लोग पुल वंधवाते हैं, पासाला बेठाने वाले, कूँचे खुटवाने वाले, राहगीरो को शरण देने वाले, उन पुरुषों के दिन और रात, मदा पुण्य बदते रहते हैं, धर्म पर दृढ़ रहने वाले, शील से सम्पन्न, वे ही स्वर्ग जाने वाले हैं॥

६८. इदं हि सुत्त (१, ५.८)

जेतवन्

ऋषियो से सेवित यह ग्रुभ-स्थान जंतदान, जहाँ धर्मराज (≈बुद्ध) वास करते है, सुझमें भारी श्रद्धा उत्पन्न कर देता है ॥

कर्म, विद्या, और धर्म, शील और उत्तम जीवन। इन्हीं से मनुष्य शुद्ध होते हैं, न तो गोन्न से और न धन से॥

> इसिलिये, जो पण्डित पुरुष है, अपने परमार्थ को दृष्टि में रख, ठीक तौर से धर्म कमाते हैं, इस प्रकार उनका चित्त शुद्ध हो जाता हैं॥ सारिपुत्र की तरह प्रज्ञा से, शील से और मन की शान्ति से, जो भी मिश्रु पार चला गया है, यही उसका परम-पद्ध है॥

§ ९. मच्छेर सुत्त (१. ५. ९)

कंजूसी के कुफल

जो ससार में कजृम कहे जाते हैं, मक्खीचूस, चिदकर गालियाँ देने वाले,

1 2 4. 9

इसरों को भी दान दर्ग देग का परुष अन्द्र बद्धका वर्ग वास इ जनके कर्ज कर फक्र कैसा काता है ? त्रसमा परस्रोक केया होता है ?

साय को श्राम के किये आए. इस स्रोग उस ईसे शमझे १

भिगवान-- ो

जो समार में श्रेजन कर वार्त ह सक्तीकम विश्वत शाकियाँ देने वास वसरा को भी वान वेने बेप वो उन्हें प्रदेश देश शके हैं के सरक में सिरकीन पोनि में या प्रसम्भेक से पैता हाते हैं: पति व समय्य-योति में भाते हैं तो किसी बरित कहा में करम केरी हैं कपडा खाना पेश आराम खेल-वमाधाः उन्द्र बनी लगी से ग्रिक्ते 🕏 मध्य किसी इसरे धर भरोसा करने हैं तब उस्से भी वे चीजें नहीं सिक्टी साँकों के बेकते भी वेश्वतं उत्तरा यह पढ़ होता है

विषता—]

इसने इसे पेशा बान किया अब हे गीतम । एक दूसरी बात पूछते है---को वर्षी प्रसुप्य-बोलि में सम्प्र केते हैं दिक्ये-सिक्से बाढे सब विक बाढे तुद्ध के प्रति अञ्चाद्ध और वर्म के प्रति मंभ के प्रति बका शीरव रूपने बाके। जनने क्यों का फक्र कैंगा होता है ? दशका परकीक दिला होता है ? भाग को पुत्रने के किने आए. इस क्रोग उसे कैंग समझे 7

परकोबः में जनकी बची बगति बाती है ॥

[मगवान्—]

को बहाँ सनव्य-बोनि में भारत होते हैं विसमे-मिकने वाले खुके विक बाके पुद के प्रति सदाला और वर्ध के प्रति मंत्र के प्रति बदा गीरव रहाने क्षाब वं व्यर्ग में घोधिन होते हैं

जहाँ वे जन्म छेते हैं ॥

यदि फिर मनुष्य-योनि में आते हैं,

तो किमी बदे धनास्य कुछ में जन्म पाते हें,

कपड़ा, खाना, ऐश-आराम, खेळ-तमाया,

जहां ख़ब मन भर मिलते हें,

मनचाहे भोगों को पा,

बश्चवर्ती देवों के ऐसा आनन्द करते हैं,

ऑसों के देखते तो यह फर्ड होता हे,
और, परलोक में बडी अच्छी गति होनी हैं॥

§ १०. घटीकार सुत्त (१. ५. १०)

युड़ धर्म से ही मुक्ति, अन्य से नहीं

[घटीकार देवता—]

अचिह लोक में उत्पन्न हुये, सात मिश्च विमुक्त हो गये, राग, हेंग (और मोह) नष्ट हो गये, इस भवसागर को पार कर गये॥

वे कौन थे जो कीचड़ को लॉघ गये, मृत्यु के उस बड़े दुम्तर राज्य की, जो मनुष्य के शरीर को छोड़ कर, सर्वोद्य म्थान को प्राप्त हुये ?

उपक, पलगण्ड और पक्कुसाति ये नीनी महिय और खण्डदेव, वाहुरिंग और पिक्निय, यही लोग मनुष्य-देह को छोड, सब्बींच स्थान को प्राप्त हुये॥

[भगवान्—]

उनके विषय में तुम विल्कुल ठीक कहते हो, जिन्होंने मार के जाल को काट डाला, वे किसके धर्म को जान कर, भव-वन्धन तोबने में समर्थ हुये ?

[देवता—]

भगवान् को छोड़ कहीं और नहीं, आपके धर्मको छोड़ कही और नहीं, जिन आपके धर्मको जान कर, वे भव-बन्धनको तोड सके ॥ जहाँ नाम और रूप डोनों, बिल्कुल ही निरुद्ध हो जाते है, आपके उम धर्मको यहाँ जान, वे भव-बन्धन को नोड सके ॥

चेहस्ति में एक प्रदान्ताव हम प्रकार हन पुरान, मित्री का मान हुआ या क्षेत्री स्विकारमाणी का

भन्तिम हारीर चारम करन शका का ध

जसना वंग समाप्त ।

छठाँ भाग

जरा वर्गे

§ १. जरा सुत्त (१. ६. १)

पुण्य चुराया नहीं जा सकता

कोन मी चीज़ है जो उदापा नक ठीक है ? म्थिरता पाने के लिये क्या ठीक है ? मनुष्यों का रत क्या है ? क्या चोरों से नहीं चुराया जा सकता ?

> शील पालना बुदापा तक ठीक है ? स्थिरता के लिये श्रद्धा ठीक है , प्रज्ञा मनुष्यां का रस ह, पुण्य चोरा से नहीं चुराया जा सकता॥

६ २. अजरसा सुत्त (१. ६. २)

प्रधा मनुष्यां का रत्न है

बुदापा नहीं आने से भी क्या ठीक है ? कीन सी अधिष्टित वस्तु टीक है ? मनुष्यों का रत्न क्या हे ? क्या चोरों से नहीं चुराया जा सकता ?

> शील बुदापा नहीं आने से भी ठीक हे, अधिष्टिन श्रद्धा यडी ठीक है, श्रज्ञा मनुष्यों का रत्न है, पुण्य चोरों से नहीं चुराया जा सकता ॥

§ ३. मित्त सुत्त (१, ६, ३)

मित्र

राहगीर का क्या मित्र है ? अपने घर में क्या मित्र हैं ? काम पड़ने पर क्या मित्र हैं ? परलोक में क्या मित्र हैं ?

हिथियार राहगीर का मित्र है, माता अपने घर का मित्र है, सहायक काम आ पड़ने पर, बार-बार मित्र होता है, अपने किये जो पुण्य-कर्म हैं, वे परलोक में मित्र होते हैं ॥

ह ४ वस्युमुच (१६ ८)

आधार मनुत्यों का जाधार क्या है ? यहाँ सबस बडा सत्य कीन है ? किरस मधी बीते हैं ?

पूर्णी पर जितने माणी बसते हैं ॥ पुत्र महार्थी का सामार ह

पुत्र सञ्जूष्या का काबार है भार्का शवसे बडी सामित हैं बृष्टि होते में सभी जीते हैं

प्रस्थी पर कितन प्राणी कमते हैं। हु ७ अनेति सुत्त (१६ ५)

पैदा होना (१)

सनुत्य को क्या पैता करता है ? उपान क्या है जो जावता रहना है ? कार सावागमन के कार में पहता है ?

क्रमका सबसे बंधा श्रम क्या है 🖰 👚

भूज्या अञ्चल को पैदा करती हैं बन्दक क्लि नीवतर शहरा है

माणी आवागमन के बक्षर में पहला है

कुल्य उसका सक्त वदा सम्बद्धः ६६ अज्ञेति स्त्यः (१६६)

गोधासुपार पैदाद्योगा(२)

सबुष्य को स्था पता करता है ? जनक स्था है जो दादता खता है ? सीन माबागमन संस्कार में पदता है ? जिसस खरकार नहीं होता है ?

> नुष्या अनुष्य की पैता करनी है बसका थिया दीवाना शतना है प्राची माचारासन क चलर में प्रवता है कुम्म मा बसका शुरुकता नहीं होगा ॥

३७ जनेति मुच (१६७) पंदा दाना (३)

सबुध्य का वया पैदा करता है ? इसका क्या है जा बादना राज्या है ? कीम भाषागंत्रम क चहर में पदमा है ? इसका भाषागंत्रम कर्या है ?

मुण्या मामुख्य का पेशा करती है। अमना विक्त नीत्रता श्रमा है प्राणी आवागमन के चकर में पड़ता हैं, कर्म ही उसका आश्रय हैं ॥

६८. उप्पथ सुत्त (१. ६. ८)

वेराह

किस राह को लोग वेराह कहते हैं ? रात-दिन क्षय होने वाला क्या हैं ? ब्रह्मचर्य का मल क्या है ? विना पानी का कौन स्नान है ?

> राग को लोग वेराह कहते है, आयु रात-दिन क्षय होने वाली हैं, स्त्री ब्रह्मचर्य का मल हैं, जिसमे सभी बाणी फॅस जाते हैं, तप और ब्रह्मचर्य यह बिना पानी का स्नान है ॥

§ ९. दुतिया सुत्त (१. ६. ९)

साथी

पुरुष का साथी क्या होता है ? कौन उस पर नियन्त्रण करता है ? किसमे अभिरत होकर मनुष्य, सब दु खो से मुक्त हो जाता है ?

> श्रद्धा पुरुष का साधी होता है, प्रज्ञा उस पर नियन्त्रण करती है, निर्वाण में अभिरत होकर मनुष्य, सब दु खों से मुक्त हो जाता है॥

§ १०. कवि सुत्त (१. ६. १०)

कविता

गीत क्ष कैसे होती है ? उसके ब्यक्षन क्या हें ? उसका आधार क्या हें ? ग्रीत का आश्रय क्या है ?

> छन्द से गीत होती हैं, अक्षर उसके व्यक्षन हैं, नाम के आधार पर गीत वनती हैं, कवि गीत का आश्रय हैं॥

> > जरा वर्ग समाप्त ।

सातवों भाग

अब वर्ग

६१ नाम सुत्त (१७१)

नाम

क्या है जो मधी को जपने सीवर रगता है ? किसस अधिक कुछ नहीं है ? किस एक यसें के सभी कुछ कस में करे आते हैं ?

> नाम सभी को अपने मीतर रागता के नामसे अधिक कुछ नहीं हैं नाम ही एक धर्म के मभी कुछ बस में करें जाते हैं अन

३२ विच सच (१७)

विश

किममें कोक निवन्तित होता है ? किस में वह सब को मास होता है ? किम एक वर्ग के मानी बता में बस करते हैं ?

> चित्त सं क्षेत्र निवन्तित होता है है चित्त सं ही सब की प्राप्त होता है चित्त ही एक धर्म क समी वस में चले धरी है ह

६३ तम्हा सच (१७३)

त्रणाः

किस एक वर्स क मभी बड़ा में चके आते हैं ? जुला ही पुक्र घर्स के सभी बड़ा में चक्र आते हैं।

§ ४. संयोजन सुत्त (१. ७. ४)

वन्धन

लोक किस वन्धन में वधा है ? इसका विचरना क्या है ? किसके प्रहाण होने से, 'निर्वाण' ऐसा कहा जाता है ?

"संसार में स्वाद लेना" यही लोक का वन्धन है, वितर्क इसका विचरना है, तृष्णा के प्रहाण होने से, 'निर्वाण' ऐसा कहा जाता है॥

§ ५. बन्धन सुत्त (१. ७. ५)

फॉस

लोक किस फाँस में फॅसा है ? इसका विचरना क्या है ? किसके प्रहाण होने से, सभी फाँस कट जाते हैं ? बाद लेना" यही लोक का बन्धन

"ससार में स्वाद लेना" यही लोक का वन्धन है, वितर्क इसका विचरना है, तृष्णा के प्रहाण होने से, सभी फॉम कट जाते हैं॥

§ ६. अन्भाहत सुत्त (१. ७, ६)

सताया जाना

लोक किससे सताया जा रहा है ? - किससे घिरा पढा है ? किस तीर से चुभा हुआ है ? किससे सटा धुँवा रहा है ?

मृत्यु से लोक सताया जा रहा है, जरा से घिरा पड़ा है, रुणा की तीर मे चुभा हुआ है, इच्छा से संदा बुँचा रहा है॥

§ ७. उद्धित सुत्त (१, ७, ७)

लॉघा गया लोक किससे लॉंघ लिया गया है ? किससे घिरा पदा है ? किससे लोक ढॅका छिपा है ? लोक किममें प्रतिष्ठित है ?

```
नुष्कृत स स्रोक काँच किया गया है
करा से बिश पका बं
मूल्य स कोक वैका किया ह
व ज में कोच प्रतिक्रित है ॥

६८ पिहित सुच ( १७ ८)

                        क्रिया-बेंग्डा
            किसमं कोठ छिपा-क्षम है ?
            किसमें काक प्रतिक्रित हैं ?
            किमसे कोच काँव किया शया है ?
            किसम विरा प्रवा है है
भूत्यु स काउ बैक्स-किया है
शासमें सोक प्रतिश्चित है
त्रफासे कोड काँच किया शवा ह
 कराने किरायण के ॥
            ६९ इच्छा स्च (१७९)
                            इक्स
            क्षोच किसमें बद्राता है ?
             किसकी एका कर छुट बारा। है ?
             किसके प्रदाण होगा श
             सभी अन्धव कार बता है है
 इच्छा में लोड बसता है
 इच्छर को इबा कर इस्त्र काता है
 इच्छा क प्रहास होने स
 मभी बन्बन कार देता है ॥
           ६१० सोकसुच( र ७ १०)
                             साक
             विमान दाने स कौफ पैदा दोगा है ?
             किसमें पाप शास है ?
             क्षेत्र किसकी केंद्रम् होता है ?
             क्रिसके कारण श्रुग्य शकता है ?
  कार क द्वाने से कोक पैगा होगा है
  व्यः में साथ रहता है
  का ही का केंगर दाता दें
  क क बारव पुरस्य होसता है
                      भक्त वय समाप्त ।
```

आठवॉ भाग

झत्वा वर्ग

६१. शत्वा सुत्त (१.८.१)

नाश

एक ओर खडा हो वह देवना नगवान ने यम्मुख यह गाया योला —

किसको नाश कर सुग्य से सोता है ?

किसकी नाम कर शीक नहीं करता १

किस एक धर्म का, बध करना गोतम बनाते है ?

क्रोध को नाश कर सुग्य से स्नोता है, क्रोप को नाश कर शोक नहीं करता, महाविप के मूल क्रोध के, जो पहले तो अन्छा लगता, है देवते! वध की पण्डित लोग प्रशसा करने है, उसी को नाशकर शोक नहीं करता॥

६२, स्थ सुत्त (१,८,२)

रथ

क्या देसकर रथ का आना सास्त्रम होता है? क्या देखकर कहीं अग्निका होना जाना जाता हैं? किसी राष्ट्रका चिह्न क्या है? कोई खी किससे पहचानी जाती है?

भ्वजाको देखकर रथका आना माल्ह्म होता है, धूमको देखकर कहीं अग्निका होना जाना जाता है, राजा किसी राष्ट्रका चिह्न होता हैं, कोई स्त्री अपने पतिसे पहचानी जाती हैं॥

§ रे. वित्त सुत्त (१.८.३)

धन

ममारमें पुरूपका सबसे श्रेष्ट वित्त क्या है ? किसके उपार्जन करने से सुख मिलता है ? रमों में सबसे स्वादिष्ट क्या है ? मनुष्यके कैसे जीवनको लोग श्रेष्ट कहते हैं ? मंसारमें पुरुषका सबस ओड़ बिक्त झड़ा है यमेंके उपासंग करभंग सुरूर मिलता डं रसीं में सब में स्थादिष्ट मध्य है प्रशाद्वेक जीवन का लोग ओड़ करते हैं।

६ ४ यृद्धि सुच (१८४)

प्रिष्ट

बगान शासों में श्रेष्ठ क्या है ? गिरने वार्थों में मन में क्यांत्र करा है ? क्या है युमने रहने वार्थों में ? बोकते रहने वार्था में उत्तम क्या है ? बीज उगाने वार्थों में मन स अपकी है गीने पुनने रहने वार्थों में पुन बोकते रहने वार्थों में पुन बोकते रहने वार्थों में उत्तम है! विद्या जगाने वार्थों में के ह निह्यांत्र कुमने रहने वार्थों में वर्गी है निह्यांत्र कुमने रहने वार्थों में वर्गी है

इक् बन्धभा में मर्बोत्तम है ॥

६ ध भीत सुत्त (१ ७)

हरना

मंत्रार में इतने कोय को हुने क्यों है ? भनेक प्रकार से मार्ग कहा गया है ; हे महाकाषी गायम ! मैं बाप में दुक्ता हूँ, कहाँ कहा रह परकोक से मंच नहीं करे ?

क्वन स्टि सन को श्रीक शरते स कमा स्टिर से पापाचरण नहीं करते हुने सह-पान स मटे कर में रहते हुने श्रीकाल ग्रेडु, कॉट-वृद्ध कर भोग करमेंबाका हिल्ला-मिलना इन चार पानी पर कहा रह पराक्षित में कड़ जा न करें म

§६ न बीरित सूत्त (१८६)

पुराना न होना न्या पुराना होता है क्या पुराना नहीं होता है ?

^{र भ} पुत्र का बहुत नोचना अत्यापिता को क्षरा नहीं काता है

-

क्या बेराह में छे जाने वाला कहा जाता है ? धर्म के काम में क्या बाधक होता है ? क्या रात दिन क्षत्र को प्राप्त हो रहा है ? ब्रह्मचर्य का मल क्या है ? क्या बिना पानी का नहाना है ? लोक में कितने छिट है, जहाँ चित्त स्थिर नहीं होता ? आपको पूलने के लिये आये, हम लोग इसे कैसे समझें ?

मनुष्यों का रूप पुराना होता है,
उसके नाम और गोत्र पुराने नहीं होते,
राग वेराह में जाने वाला कहा जाता है,
लोभ धर्म के काम में वाधक होता है,
आयु रात-दिन क्षय को प्राप्त हो रही है,
स्त्री ब्रह्मचर्य का मल है, यहीं लोग फॅम जाते हैं,
तप और ब्रह्मचर्य,
यही विना पानी का नहाना है,
लोक में छिड़ छ है,
जहाँ चिन्त स्थिर नहीं होता ॥

आलस्य और प्रमाद, उत्साह-हीनता, असयम, निद्रा और तन्द्रा यही छ छिद्र हैं, उनका सर्वथा वर्जन कर देना चाहिये॥

§ ७. इस्सर सुत्त (१.८.७)

ऐश्वर्य
ससार में ऐड़वर्य क्या है ?
कीन सा सामान सबसे उत्तम है ?
लोक में शास्त्र का मल क्या है ?
लोक में विनाश का कारण क्या है ?
किसको ले जाने से लोग रोकते हैं ?
के जाने वाले में कौन प्यारा है ?
फिर भी आते हुये किसका,
पण्डित लोग अभिनन्दन करते हैं ?
ससारमें वश ऐखर्य है,
स्त्री सभी सामानसे अच्छी है,
कोंघ लोकमें शास्त्रका मल है,
चोर लोकमें विनाशके कारण है;

सिञ्च के बानेवाक्षीम जारा है बार-बार बाते कुछ शिद्धका पण्डित कोण अक्षितन्त्रक करते हैं।

६८ काम सुच (१८८)

अपनेका न वे

परमार्थकी कामना रक्तनेवाका क्या नहीं है है मक्य किसका परिचार क्यों है

किय कम्बामको विकास ? भार क्रिय ब्रोको नहीं विकास ?

परमार्थकी कामना रक्तनेवास्त्र कपनेको नहीं ने वाले मनुष्य अपनेको परित्वाग न करे

कस्याणश्चनको निज्ञक वरे को नहीं निवास ॥

६९ पायेष्य सुस (१८०)

राष्ट्र-शर्म

च्या राह-नाचे बॉधवा है ? भोगोंका बास किममें है ? मञुज्यको च्या प्रसीद के जाता है ? संसारमें क्या प्रोडमा बचा करिन है ?

इसमें जीव किसमें वैचे हैं कैसे बार्कमें कीई पनी ?

सदा राह-मार्च बॉमटी है क ऐनवेमें सभी भीता बसते हैं इच्छा मनुष्पको बसीत के बसती है संसारमें इच्छा क्षोपता बहा करिन है इसने बीब इच्छासें कैंग्रे हैं

केने कार्की कोई पश्ची **॥**

हरै पजीत सुप (१८१)

न्त्रोक में मधोत क्या दे? न्योक में कीम वामने बासा दे ?

क्या नाश कर सुप्य में सोना है ?

प्या नाश कर खोक नहीं करना ?

किम एक धर्म का,

वध करना गातम को म्बीकार है ?

क्रोध को नाश कर खोक नहीं करता,

क्रोध को नाश कर खोक नहीं करता,

आगे अच्छा लगने वाले तथा बन्न को हराने वाले !
विष के मूल क्रोध का,

वध करना पण्डितों से प्रशस्ति है,

उसी को नाट कर खोक नहीं करता।

§ ४. मागध सुत्त (२.१.४)

चार प्रद्योत

एक ओर राइ। हो, मागध देवपुत्र भगवान् से यह गावा बोला—
लोक में किनने प्रद्योत हैं,
जिनमें लोक प्रकाशित होता है ?
आप को पूछने के लिये आए,
हम लोग उसे कैसे जाने ?
लोक में बार प्रद्योत है,
पाँचवा कोई भी नहीं,
दिन में सूरज तपता है, रात में चाँद शोभना है,
ओर आग तो दिन रात वहाँ वहाँ प्रकाश देती है,
सम्बद्ध तपनेवालों में देष्ठ है,

§ ५. दामिल सुत्त (२ १ ५) बाह्यण कतकत्व है

श्रावस्ती में।

तव दामिल देवपुत्र रात बीतने पर अपनी चमक से सारे जेतचन को चमका जहाँ भगवान् थे वहाँ आया और भगवान् का अभिवादन कर एक और खड़ा हो गया। एक और खड़ा हो दामिल देवपुत्र भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला—

> यहाँ अवक परिश्रम से ब्राह्मण को अभ्यास करना चाहिये, कामों का पूरा प्रहाण करने से फिर जन्म ग्रहण नहीं होता ॥ ब्राह्मण को कुछ करना नहीं रहता, है दामिल । भगवान ने कहा, ब्राह्मण को तो जो करना या कर लिया गया होता है, जब तक कि प्रतिष्ठा नहीं पा लेता ॥ नदियों में जन्तु सब अगों से तैरने का प्रयत्न करता है,

उनका तेज अङोकिक ही होता है ॥

१ वत्र नामक अधुर को हराने वाला, इन्द्र ।

दूसरा परिच्छेद

२ देवपुत्त-सयुत्त

पहला भाग

§१ कस्सद्भ सुच (२१४)

मिश्च मनुशासन (१)

पेमा मैंने सुना।

पत्र समय मानाब आवस्ती में कानाधिपित्रक के जेतवान कराम में विहार करते थे। तब देव-पुत्र काइयुप रात बीतन पर अवनी कमक में नारे जीतवान को बमकते हुए बहाँ मानाब से बही नाम कीर भागवान का करियादन कर एक और प्रदा हो गया। एक और बहा को काइयुप देवपुत भागवान में बीकम—"भगवान वे मिक्क को मकाहित किया है किया सिक्क में अनुसायकों नहीं।"

वो काइपद ! तुन्हीं बतानो बना तुमने समझा है ।

"मध्ये उपहेस और धनमाँ का सल्वंग

मुक्तीन में अक्टा वास

. तथा विच की सान्ति ना भन्तास करों है

कारपप देवपुष में यह कहा। भगवान् सहमत हुए। तब कार्यप देवपुष तुह को सहसत क्षाव सगवान्त का बन्दना भीर प्रतक्षिणा कर वहीं जन्तर्यात हो गया।

§२ कस्सप सुच (* १२)

भिश्च-मनुशासन (<)

ाससु-जबुशालयः

मक कार लगा ही ब्राह्मप नवपुत्र करावाम् के सम्प्राः वश्च शाया बळा---

यदि सिक्षु प्यानी विद्युक्त चित्तवाला अपनी निकी चाह (=श्वर्षेत्पव) की प्राप्त करना चाह छ। सेसार का उत्पन्न होना और नक्ष होना (श्वसाव) जानवर पवित्र सनवासा और जनासक हो उसका चहुनुत्र है ॥

§ ३ माय सुत्त (२ १ ३) किसके नारा से सुत्ता?

ध्यायम्त्री में । नव मार्ग्य पेपपुत्र तल बंतने यर नवशे च्याद स सार अंतवत का च्यादात हुये उर्ह्या माशावा में बर्हों माना भीर माशावा का अभिवादन कर एक आर नवा हो गया। युक्र और नवा हो मार्ग्य पंत्र पुत्र में मारावा की गावा में बरा--- ध्यान-प्राप्त, ज्ञानी, निरहद्वार, श्रेष्ट, सुनि, तम में भी जगह निकार लेते हैं।

हे पद्धालचण्ड ! भगवान् बोले— जिनने स्मृति का लाभ कर लिया, वे अच्छी तरह समाहित हो, निर्वाण की प्राप्ति के लिए, धर्म का साक्षात्कार कर लेते हैं।

§ ८. तायन सुत्त (२.१.८)

शिथिलता न करे

तव, तायन देवपुत्र, जो पहले जन्म में एक तीर्थद्वर था, रात बीतने पर अपनी चमक में सारे जेतवन को चमकाते हुये जहाँ भगवान् थे वहाँ आया ओर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खढा हो गया।

एक ओर खड़ा हो, तायन देवपुत्र भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला —

स्रोता को काट हो, पराक्रम करो, हे बाह्मण ! कामों को दूर करी, कामों को बिना छोड़े हुए अनि. पुकायता को नहीं प्राप्त होता ॥ यदि करना है तो करना चाहिये. उसमें इड पराक्रम करे. जो प्रव्रजित अपने उद्देश्य में शिथिल है, वह और भी अधिक मेल चढा लेता है ॥ एक दम नहीं करना बुरी तरह करने से अच्छा है, बुरी तरह करने से पीछे अनुताप होता है, करे तो अच्छी तरह ही करना अच्छा है, जिसके करने पर पछतावा नहीं होता ॥ अञ्छी तरह न पकदा गया कुश, जेसे हाथ को ही काट छेता है, वसे ही, शिथिलता से ग्रहण किया गया श्रमण-भाव, नरक को ही छे जानेवाला होता है ॥

जो कुछ शिथिल काम है, जो बत सिक्ट है, झूठा जो बहाचर्य है, यह अच्छा फल नहीं देता'॥

तायन देवपुत्र ने यह कहा । यह कह, भगवान् को प्रणाम् और प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तर्धान हो गया ।

तव, रात वीतने पर भगवान् ने मिश्रुको को आमिश्रत किया—भिश्रुको । इस रात को तायन वेवपुत्र, जो पहले जन्म में एक तीर्यहर था, मेरा अभिवादन कर एक ओर खदा हो गया। एक भोर खदा हो, तायन देवपुत्र मेरे सम्मुख यह गाथा वोला—

सोता को छाट दो ।

किन्द्र, बसीन क उपर आकर यमी कांत्रित नहीं करता, बह तो सब पार कर जुक ॥ दासकि | माइण की यही उपसा है श्रीणायव चतुर भार च्यामी की कम्म भीर सुखु के मन्द्र को पाकर बहु कीराही गहीं करता बहु तो पार कर जुका ॥

§ ६ कामद सुच (२१६)

सुम्बद्द सम्तोप

पुक्र भार सदा हो। कासद इवपुक्ष में भगवान् को पह कहा—

भगवन् ! यह बुच्कर है बड़ा ही बुच्कर है। बुच्चर होने पर भी खोग कर खेते हैं

है धामद ! भगवान् बोध--

धीहन शीकों के करवासी स्थितवा प्रवस्तित को अति सुधाद सम्बोप द्वोता है त

भगवन् ! यह सन्तोप बढ़ा बुक्स है।

हुसम होने पर भी कांग पा केत हैं

दे कामद ! भगवान् बोस्टे ---चित्र को शान्त करने में इत

विषय का शास्त्र करन म रत जिमका दिन और राध

भावना करने में कगा रहता है है भगवन् ! किस का गुंगा कगाना कहा करिन है ।

विच क्याता कटिन होने पर भी क्रोग क्या शते हैं

इ कासद ! भगपात्र वाले—

इन्द्रियों का शास्त्र करन में रत

में मृत्यु क धाल को कार कर इ.कामक ! वर्गियन मोग कम अन्ते हैं

इ कामन् ! पण्डित क्रोग चल बाते हैं ब मार्थम् ! सुगम इ जार्ग चंडिए हैं ।

हुर्गम १६ भवता चीहप

दे कामद ! ध्यर्ष लोग पक्षे जाते हैं भनार्ष लोग इस बोहद मार्ग में

जनाय जान इस बाइड जान म जिर के बस निर पड़ते हैं आयों के लिये तो मार्ग बरायर है

आर्थ कार विषय मार्ग में भी बहादर पेर चलते हैं ह

६ ७ पद्मास्त्रण्ड सुत्त (२ १ ७) वस्तिन्याम व धम का सासारकार

क्ष भार क्या हो सुन्धारम्बद्ध पृष्टुय भगरात् अ सन्तुत्व बह सामा बोला--

में भारी विपत्ति में आ पड़ा हूँ, सो मुझे आप अपनी शरण दें॥

तय, भगवान ने सूर्य देवपुत्र के लिए असुरेन्द्र राहु को गाथा में कहा-

अर्टन् बुद्ध की शरण में, सूर्य चला आया है, है राहु ! सूर्य को छोट टो, बुद्ध सभी के प्रति अनुकम्पा रखते हैं ॥ जो राले अन्धकार में प्रकाश देता है, चमकने वाला, मण्डल घाला, उस तेज वाला, आकाश में चलने वाला, उसे राहु ! मत निगलो, राहु ! मेरे पुत्र सूर्य को लोड दो ॥

त्र, असुरेन्द्र राहु सूर्य देवपुत्र को छोद, दरा हुआ-सा जहाँ वेपचित्ति असुरेन्द्र था वहाँ आया और सवेग से भरा, रोयें छडा किये एक ओर छड़ा हो गया।

एक और खटे असुरेन्द्र राष्ट्र को चेपिचित्ति असुरेन्द्र ने गाया मे कहा-

नयां इतना दरा-सा हो, राहु ने सूर्य को छोड दिया ? सवेग से भरा हुआ आकर, नुम इतने भयभीत क्यां खडे हो॥

मरे शिर के सात दुकड़े हो जायें, जन्म भर मुझे कभी सुख नहीं मिले, उन्ह से आजा पाकर में, यदि सूर्य को नहीं छोड़ हूँ॥

पहला भाग समाप्त।

िसुसी ! तायन देवपुत ने यह कहा । यह कह सुने प्रणास् और प्रवृक्षिण कर वहीं सम्प्रानं हो गया । सिमुत्रों ! तायन की गायाओं को सीसी जन्दें सम्बास करो । शिक्षुणी ! तायन की गायायें वहीं सभी जहावर्ष की पहली वार्ते हैं ।

§९ चन्दिम सुच (२ १ ९)

चस्त्र-प्रहण

श्रायम्सी में ।

दम समय खन्द्रमा पंच पुत्र थमुरन्द्र राहु से पक्च किया गया था। तब खन्द्रमा हैवपुत्र मगवान् को स्मर्थ करते हुवे दस समय यह गाथा योका—

> महाबीर बुद्धां आप का नमस्कार ह आप मजी प्रकार से बिसुक है; में जारी बिपक्ति में मा पता हूँ, मो मुझे बाप अदनी धरण में ॥

तव भगतान् न शम्द्रमा दवपुत्र क छिए अमुरेन्द्र राष्ट्र को धावा में बहा-

सहत दुद की शरण में धन्द्रमा करा भावा है राष्ट्र कोंद्र को छाद को दुद सबी के प्रति अनुकरण स्थत है।

नव असुरस्त्र राष्ट्र खान्द्रशा देवपुत को छात् वसा हुआ न्या वर्दी यंपिश्चिल असुरस्त्र था वर्दी जावा और संबग्ध असर रार्वे एका क्रिक एक और खड़ा हो गया।

एक भार गाहे हुव ममुरन्त्र राष्ट्र को वैपश्चित्ति अमुरन्त्र वे वाका में बहा-

च्या उनना दश-मा हो राहु ने चन्त्रमा का छाद दिवा १ मंदर हा घरा दुशा भारत तुम हत्तर भवमीत दयों गाहे दा १

मेर तिर क मान दुक्ते हो वाँव जन्म भर सुझे कभी सुन्द वहीं निर्म कुछ स स्थान पा कर में पहि चन्द्रमा का बही छाइ हैं" ॥

ь ^१० मुरिय मुरा (१ 1०)

सूर्य-प्रदण

उप समय स्पूर्व देवपूत्र भगुरस्य राष्ट्र स्थापन स्थित सवा मा । सव स्थ्य भगवाच को समस्य कार्य दुवे उस सक्य यह साथा शाया :----

> महार्थ १ कुट्र १ धन्त्रका नमाकार ४ भन्त गारी ग्रहन्त्र से विमुक्त हैं

तत्र, दीर्घयिष्ट देवपुत्र रात बीतने पर जहाँ भगवान् थे वहाँ आया और भगवान् का अभिवादन कर एक और खढा हो गया । एक ओर खड़ा हो, टीर्घयिष्ट देवपुत्र भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला—

> यि भिक्षु ध्यानी, विद्युक्त चिक्त वाला हो, और मन की भीतरी चाट (=अईत् फल) को प्राप्त करना चाई, तो ससार का उत्पन्न होना और नष्ट होना (स्वभाव) जान कर, पवित्र मन वाला और अनामक हो, उसका यह गुण है ॥

१ ४. नन्दन सुत्त (२,२ ४)

शीलवान् कौन ?

एक ओर खड़ा हो नन्द्न देवपुत्र भगवान् के सम्मुख यह गाथा घोला---

हे गौतम ! आप महाज्ञानी को मैं प्छता हूँ, भगवान् का ज्ञान-दर्शन खुला हे, कैसे को लोग शीलवान् कहते हैं ? कैसे को लोग प्रजावान् कहते हैं ? कैसा पुरुप हु खो के परे रहता है ? कैसे पुरुप की देवता भी पूजा करते हैं ?

जो शिलवान्, प्रज्ञावान्, भावितात्म, समाहित, ध्यानरत, स्मृतिमान्, श्लीणाश्रव, अन्तिम देहधारी सर्वशोक-प्रद्यीण हं॥ वैसे ही को लोग शीलवान् कहते हैं, वैमे ही को लोग प्रज्ञावान् कहते हैं, वैसा ही पुरुष हु खो के परे हो जाता है, वैसे ही पुरुष की देवता भी पूजा करते हैं॥

§ ४. चन्दन सुत्त (२.२.५)

कौन नहीं हवता ?

एक ओर खड़ा हो चन्द्रन देवपुत्र भगवान् के सन्मुख यह गाथा बोला— रात दिन तत्पर रह, कोन बाद को तर जाता हे ? अप्रतिष्ठित और अनालम्ब, गहरे (जल) में कौन द्वता नहीं है ?

जो सदा घोल-सम्पन्न, प्रज्ञावान्, एकाग्र-चित्त, उत्साहशील तथा सयमी हे, वह दुस्तर वाद को तर जाता है॥ जो काम सज्ञा से विरत,

छ यही गाथा २ १ २ में मी।

दूसरा भाग

श्रनाधविण्टिक-वर्ग

१ चन्दिमस सुच (२२ १)

ध्यामी पार जार्चेंगे

भावस्त्री में ।

वंत्र व्यन्तिमसः वैवपुत्र रात वीत्रने पर व्यक्तीं मगवाग ये वर्षी ज्यावा कीर मगवान् का अभि वादन कर एक जीर लका हो गया। एक और खदा हो चिन्त्रसः वैवपुत्र भगवान् के सस्मुल वर्ष गावा कीता—

> वे ही करवाण को मास होंगे अच्छा-पहित कदार में पहा के ममान ; जो भागों को मास पुकाम अद्यापाय कीर स्थातिमान हैं व ये ही पार कार्येंगे अध्यो के समाम जाक का बाद कर को भागों की मास अपना की मास

हर वेण्हुसुच(२० **४**)

भ्यामी सृत्यु के बद्दा नहीं जाते

पुर और प्रदा हो बंग्यु (= दिव्यु) (वपुत्र सगवा) हे सम्मुप्त यह गावा बीका---

ये समुच्य झुगी हं जो दुव की उपासना कर गीतम के झासन में दग अमसच हाकर शिक्षा अपूर्ण करते द ह

है केन्द्र ! भगवाय थाएँ---मेरी तिकाओं का बी ध्यानी पापन बरने हैं बधीबत बाम में प्रभान नहीं बस्त हुए से मुख्य के बस में जानेपाने नहीं होता प्र

६ ६ दीघरुद्धि सुरा (२ २ ३)

मिशु भागामन नेमा मेंने सुना।

वद गम्ब मगवान राज्यमूह व श्रान्थ्यम श्राम्यक्ता निवास में विद्वार करते थे ।

तय, दीर्घयिष्ट देवपुत्र रात बीतने पर जहाँ भगवान् थे वहाँ आया आर भगवान् का अभिवादन कर एक और खडा हो गया । एक ओर खड़ा हो, दीर्घयिट देवपुत्र भगवान् के सम्मुग्न यह गाया बोला—

> यदि भिक्षु ध्यानी, विमुक्त चित्त वाला हो, और मन की भीतरी चाह (=अईत् फल) को प्राप्त करना चाहे, तो ससार का उत्पन्न होना आर नष्ट होना (स्वभाव) जान कर, पवित्र मन वाला और अनासक हो, उसका यह गुण है ॥॥

६ ४. नन्दन सुत्त (२,२४)

शीलवान् कीन ?

एक ओर खड़ा हो नन्द्रन दंवपुत्र भगवान् दे सम्मुख यह गाथा पोला—

हे गोतम । आप महाज्ञानी को में प्रता हूँ, भगवान का ज्ञान-दर्शन पुला है, फैसे को लोग शीलवान कहते हैं ? कैसे को लोग प्रजावान कहते हैं ? कैसा पुरुष हु जो के परे रहता है ? कैसे पुरुष की देवता भी पूजा करते हैं ?

जो शीलवान्, प्रज्ञावान्, भावितात्म, ममाहिन, ध्यानरत, स्मृतिमान्, क्षीणाश्रव, अन्तिम देहधारी सर्वकोर-प्रहीण ह ॥ वैसे ही को छोग शीलवान् कहते हैं, वेसे ही को छोग प्रज्ञावान् कहते हैं, वेसा ही पुरुष हु खों के परे हो जाता ह, वैसे ही पुरुष की देलता भी पूजा करने हैं॥

१ ४. चन्दन सुत्त (२. २. ५)

कौन नहीं इवता ?

एक ओर खड़ा हो चन्दन देवपुत्र भगवान् कं मम्मुख यह गाथा बोला-

रात दिन तत्पर रह, कोन बाढ़ को तर जाता है ? अप्रतिष्ठित और अनालम्ब, गहरे (जल) में कोन हुबता नहीं हैं ?

जो सदा झील-सम्पन्न, प्रज्ञावान्, एकाग्र-चित्त, उत्साहशील तथा सयमी है, वह दुस्तर बाद को तर जाता है॥ जो काम सज्ञा से विरत,

[🕾] यही गाया २ १ २ में भी।

कम-धन्त्रन को पार कर गया मंसार में स्वाद वहीं ख्या तथा वधे रहन की जिल हुच्छा नहीं रही ; बढ़ी गहरे वस्त में पढ़ी हक्ता है।

§६ बासुदत्तसुत्त (२ ६)

कामुकता का प्रहाण

एक मीर खडा हो सुद्दस इंबपुत्र घगवान् क सम्मुख यह गाथा बीमा ∽

जैसे माखा चुम गया हो

या सिर क ऊपर बाग का गई हो वसे ही भाग-विकाप की इच्छा कं प्रहाल कं किये स्स्तिमान हो भिन्न विकास करे ॥

१७ सुब्बा स्प (२२७)

धित की मयबाहर कैसे हुर हा ?

एक भीर दावा हा स्मुश्चन वृद्धपुत्र भगवाम् क सस्मुक्त वद् गावा वोका---

यह क्या स्वाप्त प्रकार है जब सदा उद्देश से मरा रहता है साते बाढ़े कार्में का स्वाद कर, सार बाथ हुने वार्में के करने में ।। में यूजा हूँ, सार बतायें कि क्या कार् मुसा (कार्य) है जिसमा विकास ववारा नहीं है व

वीच्यद्व क सम्बाम इन्द्रिय-शंवर

तथा सारे मंसार ॥ बिरल होना छोड़ मैं किसी बुसरी तरह गामिनी ना बम्बान नहीं देगता हूँ ॥ समझ देवपुत्र नहीं जन्मपान हा गया ।

१८ कक्ष सुन (० ° ८)

मिश्च की भागन्य और विकास नहीं

देशा मैने सुना।

वृक् समय मगवाम् साकत क अञ्चनपन स्थापाय में विद्यार करते थे ।

तक ककुछ देवपुत्र वार्डी समयान ने वार्डी अध्या और समयान् वा अभिनादन कर एक और नदा हो कफुछ देवपुत्र में समयान् का यह कहा---

भिश्च जी जानन्द्र ता है ? भाषुत पदा पाकर ? विश्व जी तो पदा विमात कर रहे हैं ? भाषुत मन्त्र भरा पदा विराहा है ?

ſ

भिक्षु जी, सो पया आनन्द्र भी नहीं कर रहे है और न चिन्ता ? आयुम ! ऐसी ही यात है ।

[फकुभ-]

भिक्षु जी, न तो आप जिन्तिन है, न तो आपको कोई आनन्द है, अवेच्या घँटे आप का, क्या मन उदाय नहीं होता ?

[भगवान्-]

हें पक्ष । न तो में चिन्तित हूँ, न तो मुझे योई आनन्द हैं, अकेला पैठे मेरा मन, उदाय नहीं होता है ॥

[ककुध—]

भिक्षु जी, भाष को चिन्ता घरों नहीं ? आपको आनन्द भी उर्यों नहीं हैं ? अकेला बैठे आप का, मन उदास पर्यो नहीं होता ?

[भगवान्—]

चिन्तित पुरप को ही आनन्द होता है, आनन्दित पुरुप को ही चिन्ता होती है, भिक्ष को न चिन्ता है आर न आनन्द, आतुम ! इसे ऐसा ही समझी ॥

[本雲ध—]

चिरकाल पर देग्न रहा हूँ,
मुक्त हुए ब्राह्मण को,
जिस भिक्ष को न चिन्ता है और न भानन्द,
जो भवसागर को पार कर गये हैं॥

§९. उत्तर सुत्त (२२९)

सासारिक भोग को त्यागे

राजगृह में।

एक ओर खड़ा हो उत्तर देवपुत्र भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला— जीवन बीत रहा है, आयु थोडी है, बुदापा में बचने का कोई उपाय नहीं, मृत्यु में यह भय देखते हुये, सुख लाने वाले पुण्य कमें करे॥

[भगवान्—]

जीवन बीत रहा है, आयु थोडी है, बुदापा से यचने का कोई उपाय नहीं, स्पपु में वह मध देलते हुये सोमारिक मोग छोड़ दे निर्वाण की लोज में अठ

§ १० अनाथपिण्डिक सुच (२ २ १०)

जेमचर

एक और कहा हा समाध्यपिण्डक देवपुत्र मगवान् के सम्मुख वह गावा बीमा----

यही यह जेत्रधन है क्रियों से सकित वर्मराज (च्लुक्) वहाँ वसते हैं। मुद्रा में बढ़ी बढ़ा पैड़ा करता है ब करी विका और पर्य क्रील पाकन करना और बत्तम बीवन इसी में मनुष्य श्रद होते हैं म तो गोत से जीर न भाग से ॥ इसकिये परिवत प्रस्य भवनी सकाई का क्वाब करते हुये धप्ती तरह से धर्म कमाबे इस तरह यह बिहाद होता है ॥ खारिपुत्र की तरह महा से श्रीक संबीर विश्व की शान्ति से को मिछ पार चका क्रवा है बड़ी परमन्यत्र पाना है श्री

सनाधापित्रिकः देवपुत्र में यह कहा । यह कहा अगवाण् को अभिवादन और प्रदक्षिता कर के वर्षी स्पन्नवीत हो गना ।

सब उस राध के बीधने पर मगनान् ने भिक्काों को न्यसन्त्रित किया---

मिञ्जनी | अपन की राठ वह येषपुत्र की सम्युक्त करा हो वह गावा बोका---वहीं वह जीतकत हैं

वही परम-पद पाना है 🛭

वह कह मुझे जनिवादन और प्रदक्षिणा करके वहीं अन्तर्जाव हो राजा ।

इतवा करें बाते पर शाकुष्माण् वाताम्य ने भगवात् की कहा--- 'मल्ये ! वदी अलायपिण्डक वैचाप हो गया है ? अवावपिण्डक पुहपति मातुष्माण सारिष्ट्रम के प्रति वदा प्रवास वा ।

श्रीक कहा आतन्त्र । जो तर्ज से समझा वा सकता है उसे तुमवे समझ किया। जानन्त्र ! समाराधिपिकक ही पेत्रपुत हुना है।

अनाचपिण्डिक वर्ग समाप्त ।

[•] वही गावार्थे १ १ में ।

विद्योगमार्थः १५८ मे ।

तीमरा भाग

नानातीर्थ-वर्ग

६ १. सिव सुत्त (२. ३. १)

सत्पुरुपों की संगति

ऐसा मैने सुना।

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेतवन आराम में विहार करते थे। तय, शिव देवपुत्र एक ओर खड़ा हो भगवान् के सम्मुख यह गाथा घोला—

सत्पुरपों के ही साथ रहो,
सत्पुरपों के ही साथ मिली-जुली,
सन्तों के ऊँचे धर्म की जान,
भला ही होता है, बुरा नहीं ॥
''सन्तों के ऊँचे धर्म की जान,
ज्ञान का माक्षास्कार करता है, जो दूसरी तरह से नहीं होता ॥
सन्तों के ऊँचे धर्म की जान,
शोक के बीच में रह शोक नहीं करता ॥
सन्तों के ऊँचे धर्म की जान,
धान्धवों के बीच शोभता है ॥
सन्तों के ऊँचे धर्म को जान,
सत्व सुगति को प्राप्त होते हैं ॥
सन्तों के ऊँचे धर्म को जान,
सत्व सुगति को प्राप्त होते हैं ॥
सन्तों के ऊँचे धर्म को जान,
सत्व परम-सुख पाते हैं ॥

तब, भगवान् ने शिव देवपुत्र को गाथा में उत्तर दिया— सत्पुरुषों के ही साथ रहे, सत्पुरुषों के ही साथ मिले जुले, सन्तों के ऊँचे बर्म को जान, सभी हु खों से हुट जाता है ॥ &

§ २. खेम सुत्त (२ ३. २)

पाप-कर्म न करे

एक ओर खटा हो, क्षेम देवपुत्र भगवान् के सम्मुख यह गाधा बोला---मूर्ख दुर्वृद्धि लोग निचरण करते हैं,

[®] ये सभी गाथायं १ ४ १ में I

भवना सत्र भाव ही हो कर पाप कर्री किया करते हैं विकास करू कहा कर होता है । रस बाग का करना अच्छा नहीं बिसको करके अनुसाय करना पर्वे विसका भाँस क साथ रोते हप. कुछ भोगमा पहला है ¥ जभी बाग का बाला अध्या है क्रिसे करके सनवाप स करता पडे क्रियका भागम्य और सची सभी से (भध्वा) प्रक मिक्ता है। पहछे ही इस काम को कर जिसमें भएका हिल होना जाने गावीबाव की तरह विन्ता में व पक भीर प्रकृप पुरा पराक्रम करे ॥ र्वमे कोई गाडीवाव समासक पानी सहक को धीव बेंची शीची राह में मा त्ररा दढ बाने से किन्दा में पह बाता है ॥ बेसे ही धर्म को छोड अधर्म में पद आणे से सर्व सन्द के साथ में चिर दर जरा दर माने बाक बैसा बिन्दा में पर बाता है ॥

३ सेरिसुच (०३१)

वान का महारम्य

एक भीत सदा हो मोरी देवपुत्र भगतान् को वह गाया बोका-

शक्ष का भी मानी चाइने हैं क्षानों केवना और सनुष्म सम्मा येमा बीन साथी हैं जिसको अब नहीं माना हो है

[भगपान्—]

जो लक्ष अञ्चाप्यक स्वयं वरते हैं अपन्तर प्रमास विश्व से उन्हों को लक्ष त्रांश हैं इस मोंक से श्वांत स्वयंक्त हैं। ह सुस्तिन के सुस्ती छात्र पुरु बर गुल स्वतं करे उच्च दी वरतोंक से प्राविकों का आधार होता है ह भन्ते । आश्चर्य है, अव्भुत है ! भगवान् ने यह ठीव ही वहा है कि—

भन्ते ! यहन पहले में सेरी नाम का एक राजा था । में वानी, वानपति और वान की प्रशसा करनेवाला था । चारो फाटक पर भेरी और में दान विया जाता था—श्रमण, बाहाण, गरीब, राली, लाचार और भिग्यमंगों को ।

भन्ते । जब में जनान में जाता तो वे कर्ने लगर्ती—आप तो दान है रहे हैं, हम नहीं दे रही हैं । अच्छा होता कि हम लोग भी आप वे चलते हान करनी और गुण्य कमातीं ।

भन्ते। तब मेरे मन में यह हुआ—में दानी, टानपित और टान की प्रश्ना करने याला हैं। 'टान दुँगीं' ऐसा कहनेवाली सियो को में क्या कहें। भन्ते। तम, मेने पहले फाटम को उनके लिये छोट् दिया। यहाँ सियो की ओर से दान टिया जाने लगा, मेरा टान लीट आता था।

भन्ते ! तय, भेरे बहाल विधे क्षत्रियों ने मेरे पास आकर वहा—महाराज की ओर से दान दिया जाता है और क्रियों की ओर से भी टान दिया जाता है, किन्तु एम लोगों की ओर से नहीं। महा-राज के चलते हम लोग भी टान दें और पुण्य कमार्थे।

सन्ते । सो मैंने दूसरे फाटफ को उन क्षत्रियों के लिये छोट दिया । वहाँ क्षत्रियों की ओर से दान दिया जाने लगा, मेरा दान लीट आना था ।

भन्ते । तब मेरे मिपाहियां ने । सो मेने तीसरे फाटक को उन सिपाहियों के लिये छोड़ दिया । मेरा डान लीट आता था ।

भन्ते ! तय, बाह्मण और गृहपतियों में... । सो भैने चौथे फाटक को उन बाह्मण और गृहपतियों के लिये छोड़ दिया । भेरा दान काट आता था।

भन्ते ! तव, लोगों ने मेरे पास आकर यह कहा-अत्र तो महाराज की ओर से कोई भी दान नहीं दिवा जाता है।

भन्ते ! इस पर मैंने उन लोगां को कहा—लोगां ! बाहर के ब्रान्तों से जो आमदनी उटती है उसका आधा राजमहल में ले आओ और आधे को वहीं दान वर दो—ध्रमण, ब्राह्मण, गरीब, राही, लाचार और भिखमगों को ।

भन्ते । इस प्रवार बहुत दिना तक दान दे कर मेंने जो पुण्य कमाये है उसकी वहीं हट नहीं पाता—इतना पुण्य है, इतना उसका फल है, इतने काल तक स्वर्ग में रहना होगा।

भन्ते । आरचर्य ई, अद्भुत है । भगवान् ने ठीक ही कहा है-

जो अन्न श्रद्धा-पूर्वक दान करते हैं, अत्यन्त प्रसन्न चित्त से, उन्हीं को अन्न प्राप्त होते हैं, इस लोक में और परलोक में ॥ इसिलिये, कज्मी छोड़, इट कर खुग दान करे, पुण्य ही परलोक में प्राणियों का आधार होता है॥

§ ४. घटीकार सुत्त (२. ३. ४)

वुड़धर्म से ही मुक्ति, अन्य से नहीं

एक ओर खढा हो घटीकार देवपुत्र भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोळा—

वनिह को कर्ने उत्पन्न हुये (देवों १५१)

§ ५ जन्त सुभा (२ ३ ५)

मममाची को प्रणाम

पैसा मैंन सुवा।

पुर समय एक मिश्च बिमयल्त के पास कोशास देवांगाओं में विदार करते थे। वे बदत मैंन, चयक बक्तारी द्वरी बाद निकासने वाके मृह स्वृति काले धार्मप्राञ्च अस्पमादित पंत्रक विच पासे सर्वतर इतिवारों वाले थे।

तम अस्तु दंबपुत्र पूर्णिमा के रुपीसथ की नहीं व शिक्ष में वहाँ बादा। साकर उसने वन

सिक्ष को वाषाओं में कहा-

पहचे तुम्म से रहते वे भिक्षु गांतम हे आवकः। कोम-रहित मिस्राम्य करते वे कोम-रहित रहते की मगह। संसार की अनित्यात बान वनने बुन्धों का मन्त कर विचा त नव तो बवने की विगाव गाँव में बमीनदार के देगा। हैंस कर काने और वह रहते हैं दूसरी के कर की पीकों के कोमी। संघ के मित्र इसमें किए की स्वयंग्य करता हूँ। धूरे हुने वे मनाव सैसे सैसे सुरों केंद्रा हो वेसे। थी मन्त होनर रहते हैं उनके मित्र में ऐसा करता हूँ। श्रीर को कमान की महार करते हैं करते हो। स्वयंग्य हो मि

६६ रोबिवस्स सच (२ ३ ६)

खोक का अन्त वसकर नहीं पाया जा सकता विमा भन्त पाये मुक्ति भी नहीं

भावस्ति में।

काशुरा ! बहाँ व कोई जनमता है न बुका होता है स मरता है न सरीर कोक जर फिर उत्पन्न होता है। कोक के उत्तर भाग्य को एक पक्कर जाना वेका या पाना जागर में नहीं बताया ।

भारते । भारताचे हैं भारताच्ये हैं। भी भागवाम् ने शताच डीक बदा-- होक के उस करता की

चक्र-चळकर बामा हेका वा पाना जाका में नहीं बदाता ।

भागो । बहुत पहळे में पोहितस्त्य नाम का एक कवि शोजापुत्र वना कादिशात् भानाम में दिक्तम करवेशका था। धमने ! जस समय मेरी पेसी गति शक्ति थी जैसे कोई होतिशार सीरम्बार —सिकामा हुमा जिसका हान साक हो गया है नियुव्य भागासी—युक इस्के तीर को वन्नी नासामी से ताक की भागा तक फेंक है।

भारत कस समय मेरा देश ऐसा पहता था. वैसे पूरव के शसुद्र से केवर पश्चिम के ससुद्र सव ।

हारते । तब मरे बित में बह ब्बाव आया-में बढ-बढ़कर बोक के अस्त तब पहुँचूँगा ।

भन्ते । सो में इस प्रकार की गति से, इस प्रकार के देग भरते, खाना-पीना छोड़, पाग्याना-पेशाय छोट्, सोना और आराम करना छोट, सी वर्ष की आयु तक जीना रह बराबर , चलते रहकर भी छोक के अन्त को बिना पार्य बीच ही से सर गया।

भन्ते । आधर्य हं, अद्भुत हं । जो भगवान् ने इतना ठीक कहा— : लोक के उस अन्त की चल-चलकर जाना, देखा या पाया जाना में नहीं यताता ।

आयुम् ! से कहता हैं कि-थिना लोक का अन्त पाये हु यो का अन्त करना सम्भव नाि है। आयुम् ! आर यह भी कि-इमी ज्याम अर यज्ञा धारण करने वाले कलेवर (= वर्गर) में लोक, लोक को उत्पक्ति, लोक का निरोध और लोक के निरोध करने का सार्ग, सभी सीजृह हैं।

चन चनकर नहीं पहुँचा जा सकता, लोक का अन्त कभी भी, और धिना लोक का अन्त पाये, हु न से खुटकारा नहीं है ॥ इसलिये, उद्धिमान लोक को पहिचाने, लोक के अन्त को पानेवाला, प्रहाचये धारण करनेवाला, लोक के अन्त को ठीक से जाग, न लोक की आजा करता है और न परलोक की ॥

§ ७. नन्द सुत्त (२. ३. ७)

समय वीत रहा है

एक ओर खड़ा हो नम्द्र देवपुत्र भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला— समय बीत रहा है, रातें निकल रही हैं, ' (देखी १ ६ ४)

६ ८. निद्विसाल सुत्त (२.३८)

यात्रा कैसे होगी ?

एक ओर खदा हो निन्द्विद्याल देवपुत्र ने भगवान् को गाथा में कहा— चार चक्ने वाला, नव दरवाजों वाला, ''' (देखो १ ३ ९)

§ ९. सुसिष सुत्त (२३.९)

भायुष्मान् सारिपुत्र के गुण

श्रावस्तो में ।

तत्र, आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ आये और मगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ गये। एक ओर बैठे हुये आयुष्मान् आनन्द को भगवान् ने कहा—आनन्द ! तुम्हे सारिपुत्र सुहाता है न ?

भन्ते ! मूर्च, दुष्ट, मूढ़ और सनके आदमी को छोड़ कर भला ऐसा कौन होगा जिसे आयुष्मान् सारिपुत्र नहीं सुहायें ! भन्ते ! आयुष्मान् सारिपुत्र महाज्ञानी हैं, महाप्रज्ञ हैं, वदे पिढत हैं ! आयुष्मान् सारिपुत्र की प्रज्ञा अत्यन्त प्रसर्ज है । उनकी प्रज्ञा वदी तीज़ है । उनकी प्रज्ञा यदी तीक्ष्ण है । उनकी प्रज्ञा में पैटना आसान नहीं । भन्ते ! आयुष्मान् सारिपुत्र बढ़े अत्पेच्छ हैं, सतोषी हैं, विवेकी हैं, धनासक हैं उत्साही हैं बचा हैं बचन-कुमाल हैं बचाने वाले हैं पाप की तिन्ता करने वाले हैं। प्रत्ये ! मूर्च हुए, सूच और सकड़े भादनी को छोद वर प्रकार ऐसा दीन होगा जिसको भावुष्मान् सारियज नहीं सुदाये !

मानन्द ! ऐसी ही बात है। सका ऐसा कांन होगा किसको सारिपुत्र नहीं सुदाये !

भावन्त ! सारिप्रच महाजानी है नहाप्रज है ।

यत सुस्तिम देवपुत्र वाषुप्याग् सारिपुत्र क गुण कहै जाते के समय देवपुत्रों का वही मारी सन्दर्शी के माप वहाँ अगवान् वे वहाँ आया और अगवान् का वशिवाहन कर एक ओर कवा हा गवा ।

एक और अबा हो सुसिम नंबपुत्र में मगवान को कहा-

भगवार ! भुगत ! एसी ही बात है । मका ऐमा कीन होगा किमको आधुप्मान् सारिपुत नहीं सुदायें।

भन्ते ! बायुव्यान सारिपुत्र महाज्ञानी है महावज्ञ हैं ।

त्व चुस्तिम वेषपुत्र की मण्डकी ने मायुष्मान् स्वारिपुत्र के तुम कहे बाने क समय मंतुक मृत्तुवित कीर मीति-पुत्त को मसन कारित कारण की । कमे हुम कच्छी कारिताका अपनी तरह काम किया गया पीक कमी कपने में मध्ये कर रक्ता वैद्यूर्य मुखि मासता है तपता है और समक्ष्या है— संभी मीतिम केपन की मण्डकी ने मानक कारित चारण की।

हैंने कको मोने का धामुका इस मुक्किशर से वही कारीगरी के साथ गढ़ा गया। पीने ठमी कपदे में कपेट कर रक्ता आसता है तपता है और यसकता है—वैसे ही मुस्सिम वंचपुत्र की मण्डकी

वे प्रसद्ध कार्त्स बारम की।

कैसे शत के मिनसारे औपधि-सारका (क्कृत तारा) वैसे 🚮 सुस्थिम देवपुत्र की सन्दर्श में प्रस्क कारित जारत की ।

यसे प्रारम्भाव में बादक के हट आने और आकास शुरू वाने पर सूरव आवधा में कर सारी विध्यारी की दूर कर के मासता है तपता है और यसकता है—यस ही मुस्सिम देख्या की सण्डकी नै मसब कांग्रि वारण की।

तब सुसिम देवपुत्र ने बालुप्मान् सारिपुत्र के विपय में भगवान् के पास बहु गावा कहा— परिवृत और बढ़ा जागी कोच-विश्व सारिपुत्र

स्रायक सरत शाना मापि चितने तब के तेन का काम किया है ह

तर मरावान् ने अनुष्पाव् सारिपुत्र के निषय में सुसिम वैवपुत्र को शावर में यह कहा— परिवृत्त और वहा झारी औष-निष्य सारिपुत्र

अक्षेद्ध, भुरत दाना जवनी महतूरी की राष्ट्र देण रहा है ॥

§ १० नामा तिरियम ग्रुच (२ ३ १०)

नाना तीथों के मत वुद्ध अगुआ

पैसा मैने सुवा 1

एक समय सगवाद राजगृह के वेलुवन कक्कावक निवाप में विदार करते वे ।

त्तव कुत्र नृत्तरे सहनाले कावक वेषपुत्र-कासम नाहसी निक, आकोठक वेद्वतवरी और माणाय गामिय-रात शीवने पर अपनी त्याक से सारे वेतुवन को त्याश वहाँ मगवाब वे वहाँ वावे और सगवाब का श्रीसवाहन करक पुत्र और लाहे को गये।

पुत्र और पाना हो अस्मम दैवपुत्र पूरण करसाय के विषय में मगवान के शस्मुख वह गांधा कोका--- यदि कोई पुरुष मारे या कारं, या किसी को वर्बाट कर टे— नो कस्मप उसमें अपना कोई पाप, या पुण्य नहीं देखते॥ उनने विश्वम्त वात प्रताई ह, वे गुरु सम्मान के भाजन है॥

तव, सहली देवपुत्र सक्खिंछ-गोसाल के विषय में भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला-

कठिन तपश्चरण ओर पाप ज्ञुगुष्मा से स्यत, मान, कलह-स्थागी, ज्ञान्त, बुराइयो से विरत, मत्यवादी, उन जेमे कभी पाप नहीं कर सकते॥

त्र, निंक देवपुत्र निगण्ड नातपुत्र के विषय में भगवान् के सम्मुख यह गाथा घोला—

पाप में घृणा करने वाले, चतुर, भिक्ष, चारा याम में सुमगृत रहने वाले, देखे सुने को कहते हुये, उनमें भला क्या पाप हो सकता है?

तय, आकोटक देवपुत्र नाना तीयों के विषय में भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला-

पकुध कातियान, निगण्ठ, और भी जो ये हैं सक्खिल, पूरण, श्रामण्य पाने वाले ये गण के नायक हैं, ये भला मत्युरुपों से दूर कैसे हो सकते हैं?

तव, चेटस्वरी देवपुत्र ने आकोटक देवपुत्र को गाथा मे कहा-

हुँ ओ हुँ आ कर रोने वाला अटना मियार, सिंह के समान कभी नहीं हो सकता, नगा, झूठा, यह गण का गुरु, जिसकी चलन में सन्टेह किया जा सकता हे, सजनों के सरीखा एकटम नहीं है ॥

तव, पापी मार वेटम्बरी देवपुत्र में पैठ मगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला-

तप और दुष्कर किया करने में जो छने हैं, जो उनको विचार पूर्वक पाछन करते हैं, और जो सांसारिक रूप में आसक्त हैं, टेवलोक में मजे उडाने वाले, वे ही लोग परलोक बनाने का, अच्छा उपदेश देते हैं॥

तव, भगवान् ने 'यह पापी मार है' जान उसे गाथा में उत्तर दिया— राजगृह के पहाड़ों में, विशुस्त ध्रम क्या चाता है इयेता हिमाध्य में सेट है, बामाज में पड़ने पाठों में स्ट्रम, बामाजों में समुद्र केट है बाह्यों में पन्तमा, सेटो ही प्रतामी के साय सादे टोज में सब ही बाह्या के बाद सादे टोज में

वंबपुच बयुच समार

तीलग परिच्छेद

३. कोसल-संयुत्त

पहला भाग

प्रथम दर्भ

६१. दहर सुत्त (३.१.१)

चार को छोटा न समझे

ऐसा मेंने सुना।

एक समय मगवान् श्रायस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेनवन आराम से विहार करते थे। तन, कोन्नड-राज प्रसेनजित् जहाँ भगवान् थे वहाँ आगा और भगवान् के साथ समोदन कर भावभगत के शब्द समाप्त कर एक ओर नैंठ गया।

एक ओर येठ, कोशल-राज प्रस्नेनिजित् ने भगवान् को यट कहा—आप गोतम क्या अनुत्तर पूर्ण-बुद्धस्व पा लेने का दावा नहीं करते ?

महाराज ! यदि कोई किसी को सचमुच सम्यक् दहें तो वह मुझ ही को कह सकता है। महाराज ! मैने ही उस अनुसर पूर्ण-बुद्दिव का साक्षारकार किया है।

हे गौतम ! जो द्सरे श्रमण और त्राह्मण हें—सधवाले, गणी, गणाचार्य, विख्यात, यशस्वी, तीर्थक्कर, बहुत लोगों से सम्मानित जैसे, पूरण-करसप, मक्खलि-गोसाल, निगण्ड नातपुत्र, संजय चेलिट्ट पुत्र, पकुछ कचायन, अजित केसकम्बली—वे भी अश से प्ले जाने पर अनुत्तर सम्पक् सम्प्रकृत्व पाने का वावा नहीं करते हैं! आप गौतम तो आयु में भी छोटे हैं और नवे नरे प्रवित्त भी हुए है!

महाराज । चार ऐसे है जिनको 'छोटे हैं' समझ अवज्ञा या अपमान करना उचित नहीं । कीन से चार १ (१) क्षित्र को 'छोटा है' समझ अवज्ञा या अपसान करना उचित नहीं, (२) साँप को , (३) आग को , और (४) मिश्रु को । महाराज हन चार को—'छोटे हैं' समझ अवज्ञा या अण्यान करना उचित नहीं।

मगवान् ने यह कहा । यह कह कर मगवान् बुद्ध ने फिर भी कहा-

कॅचे कुल में उत्पन्न, बढ़े, बनस्वी क्षत्रिय को,
'छोटा है' जान कम न समझे, उसका कोई धपमान न करे,
राज्य पाद्धर क्षत्रिय नरेन्द्र-पद पर आरूढ़ होता है,
वह कुद्ध होकर राज-शिक्त से अपना बदला रे लेता है,
इसिछये, अपनी जान की रक्षा करते हुए बेसा करने से याज आबे॥
गाँव में, या जगल में, कहीं भी जो साँप को देखे,
'छोटा है' जान उसे कम न समझे, उसका अनादर न करे,

रंग किरंग के क्वे केंक्र सौंप क्रिकार है असाधवान शहने वाके को टैंग होते हैं। कमी पुरुष या की की इसक्रिये जवनी जान बचाते हुये बैसा करने से बाज जावे ध हरकों में शब बार करा उने बासी बाहे मार्ग पर चसने वाकी शांग की "हारा है" जान कम न समझे कोई उसका अवादर न करे जन्मवन पाकर वह बहुत यही हो जाती है शरकर समाध्यान रहते वासे का सन्ता नंती है की वा पुरुष की इम्हिये अपनी जाव बचाते हवे बैमा करने में बाव आबे ॥ बाबे प्रार्श पर बसने बाली भाग दिस बब को बस्प देती है बहाँ का काक व्यक्तीत होने पर हरियासी फिर मी ध्या बाली है ब किन विसे श्रीसमध्यक्ष सिक्ष क्षपने तेत स करा नेता है बह पत्र पश्च नायान या धन कुछ भी नहीं पाता ति-पालात विश्वेत शिर **कर ताल-कश-मा श्रो काता** ह ह इमसियं परिन्त गुरुप अपनी समाई का न्यास कर मीर भाग और बरान्यां स्त्रिय भार श्रीन्यम्बद भिन्न क यात्र टीक से पेश आहे ।

बह बहुने पर क्रोससमात्र प्राप्तेन क्षित् भागवान् स वोष्य—सम्य ! यहा डी क बहा ! मस्ये ! जैसे बक्ट का सीचा कर व हिंदे को बकार दे भड़क को नाह पिता है, कैंपियारें में वेस-प्रदीप दिचा है— सौंग बासे क्य द्वा में—बम हो भागवान् न स्वीक प्रकार ने प्रम की प्रकाशित कर दिवा है। सम्वे ! बहु से मानवान् को साथ जाता है, वर्ष नी क्षार मित्रु-संघ की। सम्वे ! जात वे क्रम्म भर के किये हुस बारामाय का मानवान् व्यासक व्यासक प्राप्त में

इ २ पुरिस सुच (३१२)

तीम बद्दिनचर धम

भापली में ।

नव क्षेत्राच्यात प्रत्येमञ्जित् वहीं संगवात ये बहा माना और संगवात् का अभिवादन कर एक और केंद्र गया ।

पद स्टेर बेर, बायापराज प्रतिशक्तिम् ने मगशन् का वह कहा—सम्म ! पुरूप के दिनाने यून क्षणान्य पर्म उपक होन हैं या उमके शहिन कृत्य सीह वह के लिए हाते हैं ?

सदारात्र 'पुरुष कै सीन ज्या करवा स यमें उत्तरक डोन है जो डमक महिन दुल्ब और क्षष्ट के किन् है। कान तीन है (१) सहागत 'पुरुष का सीन करवाय यमें उत्तर खोना है जा उसके कहिन । (१) अदागत है पुरुष को साह करवाय यमें ।। (३) सदागत है पुरुष को साह करवाय यमें ।। सदागत है पुरुष को साह करवाय यमें ।। सदागत है पुरुष को साह करवाय यमें ।। सदागत है पुरुष को सीह नुष्पा और कह के किन्दी ।

लोग श्रूप भीर माड पारितम बार पूरा का भागे ही भीतर उपसंदाका ना कर देंग है अमे करना ही बाम केट के यह को स

६३. राजस्थ मुत्त (३ % ३)

सन्त-धर्म पुगना नहीं होता

ध्रावस्ती मं।

एक और बैट गोंबर राज प्रानेनिजिन् न भगवान् का यह कहा—भन्ते ! क्या ऐसा कुछ है जो जनम रोकर न धुमना होता हो और न मस्ता हो ।

महाराज ! ऐसा हुए नहीं हैं जो न पुराना होता हो ओर न मरता हो । महाराज ! जो घड़े-बड़े केंचे क्षत्रिय-परिवार के !"—धनाइय, याँ माएटार, महामोगवारे, जिनके पास सोना-चाँदी अफरात है, वित्त, उपररण, उन बोर धान्य ने सम्बद्ध—ये भी जन्म रोकर जिना वृद्दे हुए और मरे नहीं रत्ते ।

महाराज ! जो चंद्रे केचे बाव्यण-पश्चिर के हैं में भी जन्म रोकर िना बृढ़े हुए आर सरे नहीं राने ।

मतारात ! जो अर्टन भिक्ष है—क्षीणाश्रय, जिनका बताचर्य-वास प्रा हो गया है, जिनने जो उठ परना या रह लिया है, जिनका भार उनर चुका है, जो परमार्थ की श्रास हो चुके है। जिनका भय-यन्यन कर गया है, परम ज्ञान श्रास कर जा विद्युक्त हो गये हे—उनका भी धरीर छट जाना है ओर विकार हो जाना है।

घड़े ठाट-बाट के राजा के रथ भी पुराने हो जाने हे , बह बारीर भी बुदापा की बास हो जाना ह, बन्नों का धर्म पुराना नहीं होता, सन्त लोग सापुरात से ऐसा कहा करने है ॥

§ ४. पिय सुत्त (३. १. ४)

अपना प्यारा कीन १

श्रावस्ती म।

एक और वेट, को शल-राज प्रस्ति जिल् में भगवान् को यह कहा—भन्ते। यह, अकेला वंट ध्यान करने केरे सन से ऐसा जितर्ज उटा—"किनको अपना प्यारा हे और किनको अपना प्यारा नहीं है।" भन्ते। तम से यह हुआ—"जो शरीर से दुराचार करते है, बचन से दुराचार करते है, सन से दुराचार करते है उनको अपना प्यारा नहीं है।" यदि वे ऐसा कहें भी—"सुझे अपना प्यारा है" तो भी, सचमुच में उनको अपना प्यारा नहीं है।

न्यो क्यों ? जो शत्रु शत्रु के प्रति कन्ता है, वहीं वे अपने प्रति आप करते हैं। इसिलिये, उनको अपना प्यारा नहीं है।

और, जो दारीर ये सटाचार करते हैं, वचन से सदाचार करते हें, मन से सदाचार करते हें, उनको अपना प्यारा हैं। यदि वे ऐया कहें भी—"मुझे अपना प्यारा नहीं हैं" तो भी सचमुच उनको अपना चढ़ा प्यारा हैं।

सो क्ये. १ जो मित्र मित्र के प्रति करता है, वहीं वे अपने प्रति आप करते हैं। इसिलिए उनको अपना वटा प्यारा है।

महाराज ! यथार्थ में ऐसी ही बात हे । जो शरीर से दुराचार करते हैं इसलिए, उनको अपन प्यारा नहीं हे । और, जो शरीर से सदाचार करते हैं इसलिए, उनको अपना बदा प्यारा है । जिसे अपना प्यारा है वह अपने को पाप में मत लगावे हु-इ.म. करनेवाओं को सुक्ष सुक्तम शहीं होता ह मबुष्य-सरीर को छोष खुग्ध के यहा में बा गये का मजा, क्या करता होता | अब्दा यह क्या सेक्द बाता है ! क्या बराने पीछे पीडे बाता है साथ प छोड़में वाली प्राया में ! पार भीर पुल्च होती थो मजुष्य पहाँ करता है । वहीं बसाउ करवा होता है और उसी को क्षेत्रर यह बाता है वहीं बसाउ करवा होता है आद उसी को क्षेत्रर यह बाता है वहीं कराज कर बच्चा परको क्या परको क्या उसी हो है । इसकिये क्याया कर बच्चा परको क्याता है हो । इसकिये क्याया कर बच्चा परको क्याता है हो ।

३५ अचरक्सित सुच (३१५)

मपनी रखयाछी

एक भीर पैठ कोशस्त्राज प्रस्तिश्चित् ने सगबान् को वह कहा------ तो । यह बनेका यह ध्यान करते सरे सब में ज्या वितर्ज उद्या "विवने अनुनी रखबाजी कर की है धीर विवने सपनी रणवाडी नहीं की है !"

सन्ते ! तब मेरे सब में बह हुव्या—को बारीर स दुराव्या करते हैं यवन से दुराव्या करते हैं सन से दुरावार करते हैं कमने मदली रखावासी महीं कर की है। असे ही बनकी रखा के लिये रायां रस भीर पैक्ट तैवाल हों किन्तु की मी बनकी रखावाओं वहीं हुई हैं।

सो क्यों ? बाहर को ही बनकी रक्षा बर्ड हैं आध्यानम की नहीं। इसकिये वचकी अपनी रख

बाकी महीं इहें है।

यो तारीर से सहायार अस्ते हैं। काने अपनी रचनाकी कर 🗐 है। भन्ने ही पैरक छनात न हों किन्तु को भी दचकी नवनी रचनाकी हो गई है।

सो क्यों ? साप्यारितक रक्षा बलकी हो गई है बाहर की नहीं हुई है । इपकिये जबकी अपनी

रक्षराची हो गई है।

सहाराज ! बयार्थ में पूनी हो बात है। यो स्तरित से दूराबार करते हैं इसक्रिये उनक्र अपनी रखबाजी नहीं हुई है और को धरीर से सदाबार करते हैं इसक्रिये उनक्र अपनी रखबाजी हो गई है।

पारित का संबम की है सबस का संबम दीक हैं सब का संबम कीक है सभी का संबम की है पूर्व संबम का का बात कर किया गया बहा बाता है ह

दि अप्पद्मस्य (३१६)

किटीमी चोर से हैं

भाषस्ती में।

पूर्व और केंद्र क्षेत्रकराज प्रस्मितिक्ष ने सम्मान् को कहा—सन्त वह क्षेत्रप्त केंद्र ध्यान करने सर्व मनमें पेना विचार कहा—"कृताव में बहुव बोहे ही धेने हैं जो बहे बड़े औम या मतवाके नहीं हो जाते हों सन्द नहीं हो बोद हों वह कैसी नहीं बच बादे हों जोगें में तृत्रायत्व वहीं धनने कम धारे हों बन्दिक सीसा में घरे हो बोद बहुव ह को बड़े-बड़े सीम या मतवाब हो बाने हैं मन्त हो बाते हैं को बोसी बब मादे हैं बीद कोंगों में दुरावाय करने कम बाते हैं। महाराज । यथार्थ में एंगी ही बात है। समार में बहुत थोडे ही ऐसे हैं । काम-भोग में आरक्त, कामों के लाभ में अन्धा बने, किसी हुन की परवाह नहीं करते, मृग जैसे फैलाये जाल की, नतीजा क जाता है, उसका फल दु खढ़ होता है।।

६ ७ अत्थकरण सुत्त (३.१७)

कचहरी में झूट बोलने का फल दुःखट

एक और बैठ, कोजलराज प्रसेनिजित् ने भगवान् को यह कहा—"भन्ते! कचहरी में इन्साफ करते, में क्रेंचे कुल के क्षत्रिय, ब्राह्मण, गृहपति,—यहे धनाढ्य, मालदार, महाभोग वाले, जिनके पास मोना-चाँही अफरात है, बित्त, उपकरण, पन और धान्य से सम्पन्न—सभी को सासारिक कामों के चलते जान-बूझ कर झठ बोलते देखता हूँ। भन्ते! तब, मेरे मन में यह विचार हुआ, "कचहरी करना मेरा वस रहे। अब मेरे अमास्य ही कचहरी लगावें।"

महाराज ! जो ऊँचे कुल के क्षत्रिय, बाह्मण, गृहपति जान-वृज्ञ कर झूठ बोलते हैं, उनका चिरकाल तक अहित और दु स होगा ।

> काम-भोग में आरक्त, कामों के लोभ में अन्या वने, किसी हट की परवाह नहीं करते, मछलियाँ जैसे पद गये जाल की, ननीजा कडुआ होता हे, उसका फल दु खद होता है॥

§ ८. मिछिका सुत्त (३.१.८)

अपनें से प्यारा कोई नहीं

थावस्ती मे ।

उस समय कोशलराज प्रसेनिजित् अपनी रानी मिल्लिका देवी के साथ महल के जपर बाले तक्ले पर गया हुआ था। तब, कोशलराजं प्रसेनिजित् ने मिल्लिका देवी को कहा—मिल्लिके। क्या तुम्हें अपने से भी वढ़ कर कोई दूसरा प्यारा है ?

नहीं महाराज ! मुझे अपने में भी वढ़ कर कोई दूसरा प्यारा नहीं है। क्या आप को महाराज, अपने से भी वढ़ कर कोई दूसरा प्यारा है ?

नहीं मिल्लिके ! मुझे भी अपने से बढ़ कर कोई दूसरा प्यारा नहीं है ।

तय, कोशर्डराज प्रसेनिजित् महल से उत्तर जहाँ भगवान् थे वहाँ गया, और भगवान् का अभिवादन करके एक और बैठ गया। एक और बैठ, कोशर्डराज प्रसेनिजित् ने भगवान् को यह कहा—

भन्ते । में अपनी रानी मिल्लिका देवी के साथ महरू के ऊपर वाले तल्ले पर गया हुआ था। • इम पर मेंने मिल्लिका देवी को कहा—नहीं मिल्लिके ! मुझे भी अपने से वढ़ कर कोई दूसरा प्यारा नहीं है।

इसे जान, भगवान् के मुँह से उस समय यह गाथा निकल पड़ी—
गभी दिशाओं में अपने मन को दौढ़ा,
कहीं भी अपने से प्यारा दूसरा कोई नहीं मिला,
वैसे ही, दूसरा को भी अपना बढ़ा प्यारा है,
इसलिये, अपनी भलाई चाइने बाला दूसरे को मत सतावे॥

§ ९ युष्टज सुस (३१९)

याँच प्रकार के यह चीका और हिंसा-रहित यह ही हितकर

भावम्सी म

उस नमय कोसकराक मुसंसितिष्ठ की जीर स एक महाबज हाने वास्त था। वाँच सी पैर राँच सी चढ़ द पाँच सी चक्रविचों योच सी यकरियों धार वाँच सी क्षेत्र सभी थाए के किए धूम में पँच वे। को दास नीकर और अलपूरे थे वे भी छाड़ी जोर सच से यमसाव चारर औंसू गिरात होड़ ईंपा दियों कर रहे थे।

तब कुड भिम्नु मुक्क में पहन और पान-पीक्षर के आयर्टी में पिण्डपात के मिप पैट। धावती में पिण्डाकरण से कार, भावत कर केमं पर पार्टी सगवान् ये वहाँ आपे आर सगवान् का मीमवादम कर एक घोर पैट गवे।

पुरू मोर बैंट उस भिक्षुमाँ में समावास का बहु कहा—सम्मे ! कोसकरात्र प्रस्नेतृतिस् की बीर से पुरू महापाकु हाने बाका है । व्यास निराठे रोठ एँगारियाँ कर रहे ई ।

इसे जान सरावात के हाँह स जस समय यह गायायें निकद पर्वी---

शहत-मंत्र पुरुष-मेथ सम्बद्ध पाश बाजपत्र निरगेल गोर पेणी ही बड़ी-बड़ी करामार्गे समी का अच्या कल गड़ी होता है है

भेड़ बक्ते और गीवें तरह-तरह के बही मारे बाते हैं झुमारें पर बात्क महीं कीग एसे पक् नहीं बताते हैं ब बित पक्र में ऐसी सुष्टें नहीं होते हैं सह बतुक्त बन करते हैं मेड़ बक्त की गीवें तरह-तरह के बहीं नहीं मारे बाते झुमारें पर बातक महीं कीग ऐसे ही यह बताते हैं इतिमान पुरुष ऐसा ही पक्र की इस पक्ष का महाप्रक हैं इस पक्र करनेवाले का करवाब होता है अहित नहीं बार पक्र महान होता है वेबता मनक होते हैं ब

६१० बाधनसत्त (३ १ १०)

रह बन्धन

कम समय कौसकाम प्रसेनकित् ने बहुत कीमी की गिरस्तार करका किया था। कितने रस्ती में भीर कितने सीवक में बीब विधे मने ने।

तव कुछ निम्नु शुवह में पहन भीर पात-सीवर के आवस्त्री में निकारन के किए पेंटे । आवस्त्री में निकारव स कोट, मोजब कर केने पर बहाँ मगवान ये वहाँ वाचे भीर मगवान का सन्तिवादन कर पक कोट कि तक।

एक और बैठ उन मिश्चयों ने घरावाब् को बढ़ कहा—मन्ते ! फोशकराब प्रसेगक्तित् ने बहुद कोगा को गिरस्तार करवा किया है । बिटाने रस्मी से और किराने सीवन् से बाँच विधे गये हैं ।

इसे काम मगवान् के हाँ इ से उस समय नह गावाप् निकक पडी---

कपरी श्री-रूप से मनुष्य जाना नहीं जाता, पेवल देख पर ही किसी में विश्वास मत करे, बढ़े संयम का भड़क दिखा कर, दुष्ट लोग भी विचरण किया करते हैं ॥ नकली, मिट्टी का बना भड़कदार कुण्डल के समान, या लोदे का बना और सोने का पानी चढ़ाया जैसे हो, कितने बेप बना कर विचरण करते हैं, भीतर से मैला और बाहर से चमकने ॥

§ २. पश्चराज सुत्त (३. २. २)

जो जिसे प्रिय है, वहीं उसे अच्छा है

आवस्ती में।

उस समय, प्रसेनिजित् प्रमुख पाँच राजाओं के बीच, पाँचों काम-गुणों का भोग करते हुये, यह बात चली—काम-भोगों में सबसे बढ़िया कोन है ?

उनमें से एक ने कहा—रूप काम-भोगों में सबसें घढ़िया है। उनमें से एक ने कहा—शब्द काम-भोगों में सबसे घढ़िया है। गन्ध बढ़िया है। रस बढ़िया है। मपर्श बढ़िया है। वे राजा एक दूसने को समझा नहीं सके।

तव, कोशल-राज प्रसेनजित् ने उन राजाओं को कहा—हमलोग चलें। जहाँ भगवान् है वहाँ जाकर भगवान् से इस बात को पृष्टें। जैसा भगवान् बतावें वैसा ही हमलोग समर्थे।

"बहुत अव्छा" वह, उन राजाना ने कोशलराज प्रसेनजित् को उत्तर दिया।

तय प्रमेनजित्-प्रमुख वे राजा जहाँ भगवान् थे वहाँ आये और भगवान् का अभिवादन कर एक स्रोर वैठ गये।

एक ओर वेट, कोशलराज प्रसेनजित ने भगवान् की कहा—भन्ते ! हम पाँच राजाओं के बीच, पाँचों काम-गुणों का भोग करते हुए, यह बात चली—काम-भोगों में सबसे बिहया कीन है ? एक ने कहा—रूप शब्द गन्ध रस स्पर्श । भन्ते ! सो आप बतावें कि काम-भोगों में सबसे बिहया कीन है ।

महाराज ! में कहता हूँ कि पाँच काम-गुणों में जिसको जो अच्छा छगे उसके छिये घही बिदया है। महाराज ! जो रूप एक के छिये अत्यन्त प्रिय होता है, वही रूप दूसरे के छिये अत्यन्त अप्रिय होता है। जिन रूप से एक सन्तुष्ट हो जाता है और उसकी इच्छायें पूरी हो जाती हैं, उन रूप से कहीं बह-खदकर भी दूसरा रूप उसे नहीं भाता है। वही रूप उसके छिये सर्वोत्तम और अलौकिक होते हैं।

महाराज ! जो शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श एक के लिये अत्यन्त प्रिय ।

उस समय, चन्दनङ्गलिक उपासक उस परिषद् में बैठा था। तव, चन्द्रनङ्गलिक उपासक अपने आसन से उठ, उपरनी को एक कन्धे पर सँमाल, भगवान् की ओर हाथ जोड़ कर बोला—भगवन् ! मुझे कुछ कहने की इच्छा हो रही है।

भगवान् घोले—तो चन्दनङ्गलिक । कहा ।

सब चन्दनक्रिक उपासक ने भगधान् के सम्मुख धनुरूप गाथाओं में उनकी स्तुति की।

र्जसे सुन्दर कोकनद पद्म,

पात काळ खिळा भीर सुगन्ध से भरा रहता है,

दूसरा भाग

द्विसीय वर्ग

६१ घटिल सच (३२१)

क्रवरी क्य-रंग म ज्ञानमा क्रिम

पुत्र समय भगवान् श्रावस्ती में सुगारमाता के पूर्वाराम मासाइ में विदार करते थे।

दस समय साँच को फात से वह बगवान बाहर निकत कर वेटे थे।

तत्र कोसक-राज प्रत्येतिकित् वहाँ सम्यान् वे वहाँ ध्यथा और समवान् का व्यक्तिवादन कर एक कोर वेट गर्याः।

दस समय सात बरिक सात विगन्ध सांत नारी, सात प्रकारिक धीर सात परिवादक कींच के रीवें और नासून बद्धारे अपने विविद्य प्रकार के सामांव किए प्रमावान के पास से ही शुक्रर रहे ने 1

ता प्रस्तितिहान् ने बासन में उठ पुरु कम्पे पर उपरक्षी को सैंगाक पाहिने हुनों को बसीन पर देश बिनार वे सास अधिक ने बचन हाम बीवृक्त तीन बार अपका शास सुनास-सन्ते ! में राखा मसेवितर हैं।

त्व राज्य यम सात बरिकों के निकस आने के बाद ही वहाँ भगवान् थे वहाँ ध्यापा और

भगवाद का समिवादन कर एक जोर केंद्र गया ।

एक और वैद्वारा ने भगवान को यह कहा-भन्ते । श्रीक में की अर्दत हैं या अर्दन-मार्ग पर काकर बक्तों में एक हैं।

सहरात | भारते—औ। शुद्रक काम मोगी वाज-वहाँ में रहमेशांके काही के कन्द्र को कामों वाके माझ-गाम और उपकर का हरतेमांक कावेशांके, रहमेशींने बढोरने वाके हैं—यह गड़त समस् किया कि ये बहुँग् या महीय-मार्ग पर व्यक्त हैं।

महाराज ! साथ रहने ही से किसी का सीक काना जा सकता है । सो भी नहुत कार तक रह, पुने नहीं । सो भी सहा कान में स्कने से देन नहीं। सो भी प्रशासन पुरुष से ही व्यवशासन से नहीं ।

महराज ! रप्यकृत हो स किसी की हैताववारी का पता क्याता है। सो मी बहुत कार के बाद एमें नहीं, सो भी सद्दा प्याव में रणने से ऐस नहीं। सो भी प्रकाशन पुरुष से ही कप्रकाशन से बाही।

महाराज ! विपक्ति पत्रणे पर ही मञुष्य की स्थिता का पता कमता है। आप्रशासाम् से नहीं । महाराज ! बात चीठ करने पर ही मञुष्य की महाचा का पता कपता है₁⊷ अमहासाम् से वहीं ।

मन्ते । स्वायर्ष ई अव्युत है ! भगवान् वे डॉक वतादा कि— यह गकत समझ किया कि वे अर्दन् या नर्दन् के मार्ग पर आकड़ हैं। साथ रहने ही से*** स्राधावान् से वहीं।

अन्ते [वे पुरुष मेरे गुरुषर हैं भेषिया हैं। किसी बगह का और केवर वाले हैं। उपसे पहले मैं भेद केवर पांक मैंसा ही समझता-मुख्ता हैं।

भनी [क्रम में उस समा समृत की थी, स्तान कर उत्तरम कमा नारू बनना उन्नर्छ कथा पहल, चींब काम-नुष्मी का भोग करेंगे।

इसे जान अगवान् के शुँद से उस समय यह शावारें विकल पढ़ी-

कोगलराज प्रस्नेनजित् ने सुना कि मगधराज अजानशत्रु घेटेहिपुत्र ने धावा मार दिया है।

तय कोशलराज प्रस्नेनजित् भी चतुरिहणी सेना है काशी में मगधराज अजातरात्रु के सामने आ दरा।

तत्र दोनां में वदी भारी लदाई छिड़ गई। उस लदाई में मगधराज ने कोशलराज " को हरा दिया। हार खा, कोशलराज प्रमेनिवन अपनी राजधानी आवस्ती को लीट गया।

तय कुछ भिक्षु सुप्रह में पहन और पात्र चीवर ले श्रावस्तों में भिक्षाटन के लिये पैठे। भिक्षाटन में लोट भोजन कर लेने के बाद जहाँ भगपान् थे वहाँ आये, और भगवान् का अभिवादन करके एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठ, उन भिक्षुओं ने भगपान् को कहा—

भन्ते । मगधराज ने काञी पर धात्रा मार दिया । 'हार खा, कोशलराज प्रयंनजित अपनी राजधानी श्रावम्ती को लौट आया ।

भिक्षुओ । मगधराज अजातदात्रु वेदेहिपुत्र बुरे लोगों से मिलने-जुलने वाला और बुराइयों को ग्रहण करने वाला है। ओर कोशलराज प्रसेनजित भले लोगों में मिलने-जुलने वाला और भलाइयों को प्रहण करने वाला है। भिक्षुओं। दिन्तु, हार खाये कोशलगज प्रसेनजित की यह रात भारी गम में वीतेगी.!

जीत होने से वेर बढ़ता है, हारा हुआ गम से सोता है, शान्त हो गया पुरुप मुख से रहना है, हार-जीत की बाना को छोड़ ॥

§ ५ दुतिय सङ्गाम सुत्त (३२ ५)

अजातरात्रु की हार, लुटेरा लूटा जाता है

तत्र मगधराज अजातशतु चेटेहिपुत्र ने चतुरङ्गिणी सेना को साज कोशलराज प्रसेनजित् के विरुद्ध काशी पर वावा मार टिया।

कोशलराज प्रसेनजित ने सुना कि मगधराज अजातशत्रु वेदेहिपुत्र ने धावा मार दिया है। तत्र,कोशलराज प्रसेनजित भी चतुरिहेगी सेना ले काशी में मगधराज अजातशत्रु के सामने आ उटा। तत्र, दोनों में बड़ी भारी लड़ाई छिड़ गई। उस लड़ाई में कोशलराज प्रसेनजित ने मगधराज को हरा दिया और जीता गिरफ्तार भी कर लिया।

इस पर, कोशलराज प्रसेनजित के मन में यह हुआ—भले ही मगधराज अजातशत्रु वेदेहिएत ने कुछ भी नहीं करने वाले मेरे विरुद्ध कुछ करना चाहा, तो भी तो मेरा भाआ होता है। तो, क्यों न में उसकी चतुरङ्गिणी सेना को छीन उसे जीता ही छोद दूँ।

तव, कोशलराज ने मगधराज को जीता ही छोड़ दिया।

तय, कुछ भिक्षु भगवान् के पास आये, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठ, उन भिक्षुओं ने भगवान् को कहा—

भन्ते ! तत्र, कोशलराज प्रसेनजित् वे मगधराज अजातशत्रु को जीता ही छोड दिया । इसे जान, भगवान् के मुँह मे उस समय यह गाथायें निकल पडीं—

अपनी मरज़ी भर कोई खटता है, किन्तु, जय दूसरे खटने लगने हैं, तो वह खटने वाला खटा जाता है, षसं इी 'जन जांमते हुए भन्नीरसङ्खी पैकी माकाश में तपते हुने धारित्स के पेसा छ

तर उन पाँच राजाओं ने सान्त्रमङ्गाद्धिक व्यासक को पाँच बच्च मेंट किये। तर उन पाँच बच्चों को सान्त्रनङ्गद्धिक ने सगवाय की सोचा में नर्गण किया।

§ ३ दोणपाक सच (३ २ ३)

भाषा से भोजन करे

मः वस्ती में।

बस समय कोदाकराज असेलिजिल जोन भर धीवन करता था। एव कोसकराज प्रसेनियर, भोजन कर सम्बी-कम्बी साँस केते वहाँ भगवान् ये वहाँ वापा और भगवान् का समिवादय करके पृत्र और बैड गवा।

तर कोशस-राज प्रमाणित को भोजन कर अभा-रुम्यो माँस क्षेत्रे दशकर समजात् के मुँह से उस समय यह भागा निकल पड़ी—

> मदा स्थ्रितसान् रहने बाकं प्राप्त मीजन में साका बानने बाकं उस मदुष्य को वेदनायें कम होती हैं (बहु भीजन) बालू को पाकमा हुआ पीरे बीरे हुआम हाना है व

उस समय सुब्दान माजवक राजा के पीडे लंबा वा।

तत शाबा में सुद्दीन आजवक को कामिन्त किया—शास मुक्सन । अगवान् में तुम पढ़ गाबा मीन को और मीजन करने के समय यह गाबा पड़गा। इसक किये बगाबर मनितिन तुम्हें सी बहुएक (ब्रध्याप्य) मिन्य करने हैं।

"महराज ! बहुत अराज" कह सुर्वेदाल मालावक ने राख्य को उत्तर के अगवान में उस गावा को शीर राज्य के मोजन करने के समय कहा करता—

> मदा स्युविमान् १डमें बाने मात भोजन में माता बानमें बाक उम मनुष्य की बनुनायें कम डोती हैं

(बह मीजन) आयु को पानना हुआ चीर-बीरे डबम डोना है ॥

नव राजा कमसः माखि मर दी मोजन करने अगा ।

मुच कुछ समय के बाद राजा का सरीर बदा सुबीक और गठीका हो गया । अपने गार्की पर डाय करने दुवे राजा के मूँद से कम समय क्यान के बद्द राज विजय परे—

अरे ! भगवान् में दोनों तरह में शुम पर अनुबन्धा की है—इस लीक की वाला में और परमोक की वालों में भी ।

> ६४ परम सङ्गाम सुच (३ २ ४) सर्वात की वा वार्ते असेनकिन की नार

कायस्तातः। नव मापरात्र अञ्चानदानु यदैदियुत्र वे चनुर्राहणी संगः वः सात्र वीक्रकरात्र प्रातनतिन् दे बन्द काणी पर पाण मार विचा।

भद्रीरमञ्चापक माधुद्ध । चिनके अंगी में श्रीवार्ग निक्क्त्री हु—आह्यथा ।

हमीलिए, हाथी का पैर दया होने में सबका अगुआ माना जाता है। महाराज ! हमी तरह, यह एक धर्म क्रोक और परलोक दोनों की यात में समान रूप से भावस्थक उहरता है।

> आयु, आरोग्य, घर्ण, स्वर्ग, उज्ञकुलीनता, और अधिकाधिक सुप्त पाने की इन्छा रणने वालों के लिये, पुष्य कमों में पण्डित लोग अप्रमाद की प्रशंसा करते है, अप्रमन्त पण्डित दोना अधीं को पा छेता है, जो अधीं लीकिक है और जो अधीं पारलीकिक है, अर्थ की जान हैने से यह धीर पुरुष पण्डित कहा जाता है ॥

§ ८. दुतिय अप्पमार सुत्त (३. २. ८)

अप्रमाद के गुण

श्रावस्ती में।

एक और बैट, कीशलगाज प्रस्नेनिजित् ने भगवान् को कहा। भनते ! एकान्त में ध्यान करते मेरे मन में ऐया वितर्भ उटा—भगवान् ने धर्म को बटा अच्छा समझाया है। किन्तु, घह भले लोगों के साथ रहने तथा मिलने जुलने वालों के लिए ही हैं। बुरे लोगों के साथ रहने तथा मिलने-जुलने वालों के लिए नहीं है।

महाराज ! ठीक में ऐसी ही बात हैं। मैंने धर्म को घड़ा अच्छा समझाया है। किन्तु वह भलें "।

महाराज ! एक समय में शाक्य-जनपद में शाक्यों के एक कस्वे में विहार करता था। तब,
आनन्द मिश्रु जहाँ में था वहाँ आया और मेरा अभिवादन करके एक और बैठ गया। महाराज ! एक
ओर बैठ, आनन्द भिश्रु ने मुझे कहा—

"भन्ते । ब्रह्मचर्य का करीव आधा तो भले लोगा के साथ मिलने जुलने और रहने में ही होता है।"

महाराज ! इसपर मैंने आनन्द भिक्षु को कहा—ऐसा मत कही आनन्द ! ऐसी घात नहीं है । घष्टाचर्य का विल्कुल ही मले लोगों के साथ मिलने-जुलने ओर रहने में टिका है। आनन्द ! भले लोगों के साथ मिलने-जुलने और रहनेवाले भिक्षु में ही आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग के विचारपूर्ण अम्यास करने की आशा की जा सकती है।

आनन्द । भले लोगें। के साथ मिलने-गुलने ओर रहने वाला भिक्ष आर्थ अद्यद्धिक मार्ग का कैसे अन्यास करता है ?

आनन्द्र ! भिक्षु विवेक, वराग्य, निरोध तथा त्याग ठाने वाली सम्यक् दृष्टि की भावना करता है, सम्यक् संकटप की भावना करता है, सम्यक् वाक् की भावना करता है, सम्यक् कर्मान्त की भावना करता है, सम्यक् आजीव की भावना करता है, सम्यक् व्यायाम की भावना करता है, सम्यक् स्मृति की भावना करता है, सम्यक् समाधि की भावना करता है—विवेक-दायक, वराग्य-दायक, निरोध-दायक तथा त्याग्य-दायक। आनन्द ! इसी तरह, भले लोगों के साथ मिलने-जुलने और रहने वाला भिक्षु आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग का अभ्यास करता है।

सानन्द ! इस प्रकार, यह समझ छेना चाहिये कि ब्रह्मचर्य का विल्कुल ही भले लोगों के साथ मिलने-जुलने और रहने में टिका है।

आनन्द ! मुझ ही भले मित्र (=कल्याण-मित्र) के साथ रह, जन्म प्रहण करने वाले प्राणी जन्म से मुक्त हो जाते हैं, बुढ़े होने वाले प्राणी खुड़ापा से मुक्त हो जाते हैं, क्षीण होने वाले प्राणी क्षय से मुक्त हो जाते हैं, मरने वाले प्राणी मृध्यु से मुक्त हो जाते हैं, शोक करने वाले, रोने पीटने वाले, दु ख और मूर्ल समझता है—हाथ मार किया ! यानी तक बस तक उसका पाप नहीं करता है ; किन्तु, बस पाप कंपना नठीज़ा काता है, तक मूर्ल हुएक ही दुःत्व पाता है । मारने वाके को मारने वाका मिकता है बीतने वाके को जीवने वाका मिकता है वाकी ये वाके को जीवने वाका (वीर) विशाइने वाले को विवादने वाका; इस तब्ह अपने किये कमें के चेर में पह स्कृत वाका स्कृत काता है ।

हु**६ थीतु सुत्त** (३ २ ६)

सिवाँ भी पुरुपों से थेष्ठ दोठी 🖡

भावस्ती में ।

तम कोशकराज प्रश्लेमित्रित् वहीं अगवान् वे वहीं आधा और सगवान का व्यक्तिवादन कर एक बार वेड गया ! तत्र, कोई काशमी बार्ड कोशकराज प्रश्लेमित्र या वहीं गया और काम में उपस्थान कर बोक्स-

महाराज ! मस्टिका देशों को क्यूकी पना हुई है। उसके पैसा काम पर कोसकराज का अन गिर गया ।

जसके पैसा कहन पर कांसकराब का समा गर गया । कोसकराब प्रसेत्तवित के सनको गिरा देखा भगवान के हींद्र से उस समय यह गावारी निकक परीं--

> राज्य । कोई-कोई कियाँ भी पुरुषों से बड़ी यही कुद्रिमती कोकवरी भाग की सेवा करने वाकी और परिवरत इस्ती हैं, करा पाकर-पोष्ण कर 8

हिसाओं को बीवने शाका महा स्रवीर अससे दुस पैदा होता है, बेसी कच्छी की का दुस राज्य का अनुसामक करता है ॥

६७ अप्पमाद सुत्त (३२ ७)

सप्रभाव के गुप्प

धावस्ती में।

पुक बोर फैंड, क्षेत्राकराज प्रसेनजिल् ने अगवान् को क्या-अन्ते ! नवा ऐसा कोई पुक वर्ग है हो कोक बीर परकोक दोगों को बाद में समान कर से बाबदरक उदरता हो ?

हाँ महाराज ! ऐसा एक वर्ग है भी कोक कीर परलोक होतां की बात में समाव कम से लाव जनक स्थारता है।

भन्ते ! यह कील-मा यमें है को खोक जीर परसीक दोजों की बात में समाज कर से आवश्यक दहरता है ?

महराज | जमसाद एक वर्ग है जो बोक और बर्गुडोड दोनों को जात में ससाव करा से बादानक इहरता है। महाराज | एप्पी वर रहवेबाके सितने बीच है सामी के पैर हाकी के पैर में चाह बारी हैं। में आये बेकार ही नह हो जायगा। महाराज! हर्या तरह, पुरे छोग धहुत भोग पासर भी उससे सुन नहीं उठा सकते: । तिना भोग विया गया धन बेकार में नष्ट हो जाता है।

महाराज । भरे लोग पहुत भोग पाकर उससे म्यय सुग उठाते हैं, माता-पिना को सुग देते हैं, श्रमण बाहाणों को ठान-दक्षिणा देते हैं । इस प्रकार, उनके भर्ला भोति भोग किये धन को न तो राजा है जाने हैं, न चोर चुरा ठेते हैं, न आग । महाराज । ऐसा होने से, उनका भर्ला भाति भोग किया गया धन सफल होता है, बैजार नहीं जाता ।

महाराज । किसी गाँव या करने के पास ही एक पानकी हो। रमणीय । उसके जल को आदमी हो जाये 'आर प्रयोग में लायें । महाराज । इस तरह उसका जल काम में आते रहने में सफल होता है विकार नहीं जाता है। महाराज । इसी तरह भले लोग बहुत भोग पाकर उसमें स्वयं मुख उठाते हैं। माता पिता को सुन्य देते हें । महाराज । ऐसा होने से उनदा भली भौति भोग किया गया धन सफल होता है, बेकार नहीं जाता ।

अ-मनुत्य (=भृत-प्रेत) वाले म्यान में जैसे शीतल जर, विना पीया जाकर ही सूच जाता है, ऐसे ही, बुरे लोग धन पाकर, म तो अपने भोग करते हैं और न दान देने हे ॥ जो धीर और विज्ञ पुरूप भोगों को पा, भोग करता ओर कामों में लगाता है, घह उत्तम पुरूप अपने जाति-समूह का पोपण करके, निन्दा रहित हो रार्ग-स्थान को जाता है ॥

§ १०. द्तिय अपुत्तक सुत्त (३ २ १०)

कंजूसी त्याग कर पुण्य करं

श्रावस्ती में।

तव, कोशलराज प्रसेनजित् दुपहरिये मे जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, ओर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैट गया। एक ओर वैटे हुये कोशलराज प्रसेनजित को भगवान् ने कहा— महाराज! इस दुपहरिये मे भला, आप कहाँ मे आ रहे हैं ?

भन्ते । यह श्रावम्नी का सेठ सी छाख अशिर्फियाँ, रुपयो की तो बात क्या ? पत्तो की छावनी वाले जर्जर रथ पर निकला करता था ।

महाराज । ठीक में ऐसी ही बात है। महाराज । बहुत पहले, उस सेंड ने तगरसिखि नाम के प्रत्येक बुद्ध को मिक्षा दिलवाई थी। "श्रमण को मिक्षा दो" कह, वह उठ कर चला गया। बाद में, उसे पश्चात्ताप होने लगा—अच्छा होता कि नीकर-चाकर ही मिक्षा में दिये गये हम अन्न को खाते। इसके अलावे, उसने धन के लिये अपने भाई के इकलाते पुत्र की हत्या कर ढाली थी।

महाराज ! उस सेठ ने तगरिसिखि नाम के प्रत्येक बुद्ध को जो भिक्षा दिलवाई थी उस पुण्य के फलस्वरूप उसने सात बार स्वर्ग में जन्म लेकर सुगित पाई। उस पुण्य के क्षीण हो जाने पर उसने सात बार इसी श्रावस्ती में सेठाई की।

महाराज ! भिक्षा देने के बाद, उसे जो पश्चात्ताय हुआ—अच्छा होता कि नौकर चाकर ही मिक्षा में दिये गये इस अब को खाते !—उसी के फल-स्वरूप उसका चित्त अच्छे-अच्छे भोजनों की ओर नहीं छकता है, अच्छे अच्छे बच्चां की ओर नहीं छकता है, अच्छे-अच्छे पाँच काम-गुणां की ओर नहीं छकता है, अच्छे-अच्छे पाँच काम-गुणां की ओर नहीं छकता है।

वेचैनी में यह रहने वाल परशानी में यह रहने वाल मार्जा हाम परशानी स मुख हा मार्त हैं। मानन्त ! इस मकार से बान संत्रा चाहिये कि ब्रह्मचर्य का विरवृत्त ही मत लोगों इं माय सिमने-अनने धीर रहन में निकार है।

महाराज ! इसलिए आप भी गई। लीयें । शह लीया क साथ ही सिर्स-हुन्दीगा अने कार्यों क माम ही रहेगा । महारास ! इमलिये आप का इसल-धर्मी म स्वमाद स रहने क किय सीलाग चाहिये । महाराज ! शपके अपमाद-पूर्वक विहार करने म आपकी रानिया क मन में वह हागा---राज्ञ अमसाद पूर्वक विदार करने हैं। तो इस लोगा का भी अभसाद-पूर्वक ही विहार करना चाहिय !

महाराख ! सापके कथीनक्ष्य शक्तिकों क भी मन भ वह डोगा ।

सहारातः । गाँव श्रीर सहर बाका के भी मन में वह हागा । सहारातः । इस तरह जाएक अवसाद पूर्वक विहार करने से अप श्वरं स्वतन रहा सिवाँ मी संतन रहेगी नवा आप का कवाणा और सम्बद्ध भी संततं रहेगा ।

> श्रीवकाशिक मांगा की इच्छा रखने बाका क मिय पुत्रव क्रियाओं में पाणिक कोगा कामान की मसीमा करने हैं अमानण पणिका होगों अभी का काम करना है इस काक में को खबें हैं और वो पार्स्डिकिश अर्थ हैं चीर पुत्रव काने कर्य का हो है कामें से पण्डिम काग बाता है ह

८६ अध्यसकस्तर (३९)

कंशसीत कर

भाषस्त्री में ।

त्तव कोमास्तराज अलोलिसिन् हुएवरियो में वर्षी भगवान् व वर्षी आधाः और भगवान् का क्षीम वादय कर एक कोर् बेट गया ।

पक भीर देंदे हुव कांककरात्र प्रभंगकित् को भगवान् ने कहा—सहाराज ! इस नुपहरिये नि व्यय सक्त कहाँ से का क्षेत्र है

भन्ते ! वह भावस्ती का सेट गृह्यति सर गवा है। उस विश्ते क वन को शुक्तमहरू मेजवा कर में भारता हूँ। मन्ते ! अस्ती काक जलकियाँ। द्यारों की तो नवा वात ! मन्ते उस सर का वह मोकन होता वा—का बार महा के साथ जुड़ी का भारत काता था। वह ऐमा कपता पहनता था—धीन जीवा कर यह पहनता का। दशकी पेतरी सवारी होती वी—पन्ता की कावनी वाके कर्यर एवं पर निकता करता था।

हीं सहाराज | श्रीक पूंतां हो बात ह । साहाराज | कुर कोग बहुत मोग पर कर सी अससे सुख बहीं कहा सकते हैं न भारता पिता का सुख नेते हैं न जी-वधां को सुख नेते हैं व मीकर व्यक्तों को मुख नेते हैं न वोतर-मुहीका का सुख नेते हैं न जातक-माहावा को शान विकास नेते हैं जिससे अध्यो गांव हो भीर स्वर्ग तक सुख मिला । इस सकत उनके बिना सोग किये जन को वा ता राजा के बाते हैं वा कोर तुए कोरों हैं वा काश कहा नेता है या पानी बहुत के जाता है ना संगित कोरों का हो काश है । सहाराज | पैसा होने से किया सांस किया गया कम केकरों में तह हो काश है !

सहरात ! कोई विजय स्थान में एक बावजी हो स्थक्त जरू बाजी सीमक वक बाजी साम्प्रकर बक्तवाठी साम बार्से बाजी रामनीय । काल्क वक को न ती कार्य स्वस्थी के जाव न रीचे; न दससे स्वान करें न दसकों मीर किसी बचोग में कोई कार्य । सहराज ! इस नरह वसना जाव दिवा किसी कास

तीसरा भाग

तृतीय वर्ग

९१, पुग्गल सुच (३.३.१)

चार प्रकार के व्यक्ति

श्रावस्ती में।

तय कोशलराज प्रस्तिनजित् जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ गया ।

एक ओर बैंटे हुए कोशलराज प्रसेनजित को भगवान ने कहा—महाराज ! ससार में चार प्रकार के लोग पाये जाते हैं। कोन से चार प्रकार के १ (१) तम-तम-परायण, (२) तम-ज्योति-परायण, (३) ज्योति-तम-परायण, (४) ज्योति-ज्योति-परायण। महाराज ! कोई पुरुष तम-तम-परायण कैसे होता है ?

महाराज । कोई पुरुप नीच कुल में पैटा होता है, चण्डाल-कुल में, वेन-कुल में, निपाद-कुल में, रथकार-कुल में, पुन्कुस-कुल में, दरिद्र और वदी तगी से रहनेवाले निर्धन-कुल में। जहाँ खाना-पीना बढ़ी तंगी से मिलता है। वह दुवैण, न देखने लायक, नाटा और मरीज़ होता है। वह काना, लूला, लँगदा या लूझ होता है। उसे अन्न, पान, वस्न, सवारी, माला, गध, विलेपन, शय्या, घर, प्रदीप कुछ नहीं प्राप्त होता है।

वह शरीर से दुराचरण करता है, वचन से दुराचरण करता है, मन से दुराचरण करता है। इन दुराचरण के कारण यहाँ से मर कर अपाय में पढ़ बढ़ी दुर्गति को पाता है। महाराज! जैसे कोई पुरुप एक अन्यकार से निकल कर दूसरे अन्यकार में पढ़ता है, एक तम से निकलकर दूसरे तम में पढ़ता है, एक ख़न के मल से निकलकर दूसरे में पढ़ता है, वैसी ही गति इस पुरुप की होती है। महाराज! ऐसे ही कोई पुरुप तम-तम-परायण होता है।

महाराज । कोई पुरुष तम-ज्योति-परायण कैसे होता है ?

महाराज ! कोई पुरुप नीच-कुछ में पैदा होता है कुछ नहीं प्राप्त होता है ।

वह शरीर से सवाचार करता है, वचन से सदाचार करता है, मन से सदाचार करता है। इन सदाचार के कारण, यहाँ से मर कर स्वर्ग में उत्पन्न हो सुगति को प्राप्त करता है। महाराज! जैसे कोई पुरुप जमीन से खाट पर चढ़ जाय, साट से घोड़े की पीठ पर, घोड़े की पीठ से हाथी के होंदे पर, हाथी के होंदे से महरू पर, वैसी ही बात इस पुरुप की है। महाराज! इसी तरह कोई पुरुप तम-ज्योति-परायण होता है।

महाराज ! कोई पुरुष ज्योति-तम-परायण कैसे होता है ?

महाराज । कोई पुरुप ऊँचे कुल में उत्पन्न होता है, ऊँचे क्षत्रिय-कुल में, ब्राह्मण-कुल में, गृहपति-कुल में, धनाढ्य, महाधन, महाभोग वाले कुल में । वह सुन्दर, दर्शनीय, साफ और यदा रूपवान् होता है । अय-पान यथेच्छ लाम करता है । सहाराज ! उस सेट ने चन के किए जो अपने भाई के हक्कीरो पुत्र की हरना कर हाथीं मी उसके फ्रम्स्वरूप वह हकारों अप करतों वर्ष तक नरक में पचता रहा । उसी के फ्रम्स्वरूप निष्ठा रहुद्र बसका पन सत्तवें नार शक्त कोच में चका गया । महाराज ! उस सेट का पुष्य समाप्त हो गया है, चीर मना भी कुछ संचित नहीं हैं। सहाराज ! चाज वह सेट महा हौरन नरक में पक रहा है।

मनते ! इस तरह बह सेठ महा रीरब भरक में बराज हुआ है ?

हाँ महरराज ! इस तरह बह सेठ महा रीरब भरक में बराज हुआ है ।

यब धान्य चौदी सीमा

और भी जो कुक सामान है

शौकर चाकर, महन्दर तथा चौर मी तूमरे सहारे दहने बाके हैं

सब को साथ केवर नहीं चाना होता है

समी को वहीं छोड़ चाना होता है ॥

वो कुछ सारीर से करवा है चचन से या चिक से

बही उनका चपना होता है और उसी को केवर काता है

बही उनका चपना होता है और उसी को केवर काता है

बही उसके पीड़े-रीड़ बाता है पीड़-रीड़ बाने बाड़ी काया के सामा ॥

इस्तिकों पुष्प करें, एककेक कवालें

परकोड में परब ही प्राणियों का साधार होता है ह

विशीय वर्षे समाप्त

तीसरा भाग

तृतीय वर्ग

६१. पुमाल सुच (३.३.१)

चार प्रकार के व्यक्ति

थावस्ती में।

तय कोशलराज प्रलेनिजित् जहाँ भगवान् थे पहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक और चेंठ गया ।

पुक ओर बैठे हुए कोशलराज प्रसेनजिन् को भगवान् ने कहा—महाराज ! संसार में चार प्रकार के लोग पाये जाते हैं। कोन से चार प्रकार के ? (१) तम-तम-परायण, (२) तम-ज्योति-परायण, (३) ज्योति-तम-परायण, (४) ज्योति-ज्योति-परायण। महाराज ! कोई पुरुष तम-तम-परायण केमें होता हैं?

सहाराज । कोई पुरुष नीच कुल में पैदा होता है, चण्डाल-कुल में, वेन-कुल में, निपाद-कुल में, रथकार-कुल में, पुक्कुस-कुल में, दरिद्र और वदी तगी से रहनेवाले निर्धन-कुल में। जहाँ राना-पीना घदी तगी से मिलता है। वह दुवैणें, न देपने लायक, नाटा ओर मरीज़ होता है। वह काना, खूला, लँगड़ा या लूझ होता है। उसे अज, पान, वस्न, मवारी, माला, गध, विलेपन, शय्या, घर, प्रदीप कुछ नहीं प्राप्त होता है।

यह शरीर से दुराचरण करता है, बचन से दुराचरण करता है, मन से दुराचरण करता है। इन दुराचरण के कारण यहाँ से मर कर अपाय में पड़ बढ़ी दुर्गित को पाता है। महाराज। जैसे कोई पुरुप एक अन्धकार से निकल कर दूसरे अन्धकार में पड़ता है, एक तम से निकलकर दूसरे तम में पड़ता है, एक ख़न के मल से निकलकर दूसरे में पड़ता है, वैसी ही गिति इस पुरुप की होती है। महाराज। ऐसे ही कोई पुरुप तम-तम-परायण होता है।

महाराज । कोई पुरुष तम-ज्योति-परायण कैसे होता है ?

महाराज । कोई पुरुप नीच-कुल में पैदा होता है कुठ नहीं प्राप्त होता है।

वह शरीर से सदाचार करता है, वचन से सदाचार करता है, मन से सदाचार करता है। इन सदाचार के कारण, यहाँ से मर कर स्वर्ग में उत्पन्न हो सुगति को प्राप्त करता है। महाराज! जैसे कोई पुरुप जमीन से खाट पर चढ़ जाय, पाट से घोड़े की पीठ पर, घोड़े की पीठ से हाथी के हौदे पर, हाथी के होदे से महल पर, वेसी ही बात इस पुरुप की है। महाराज! इसी तरह कोई पुरुप तम-ज्योति-परायण होता है।

महाराज । कोई पुरुष ज्योति-तम-परायण कैसे होता है ?

महाराज ! कोई पुरुष ऊँचे कुल में उत्पन्न होता है, ऊँचे क्षत्रिय-कुल में, ब्राह्मण-कुल में, गृह्दपति-कुल में, धनाक्ष्य, महाधन, महाभोग वाले कुल में । वह सुन्दर, दर्शनीय, साफ और वदा रूपवान् होता है । अग्र-पान यथेच्छ लाभ करता है । महाराज ! वह सरीर से बुरावरण करता है । इन बुराचार के कारण यहाँ से मर कर अपाप

में पद दर्गीत को मास शोता है।

महाराज | वैसे कोई पुरुष महरू से हाली के हीये पर करार आजे हाली के हीये से चोचे की पीठ पर घोदे की पीठ से साद पर कार से कमीन पर, बमीय से अन्यकार में; धैसी ही बात इस पुरुष की है। महाराज | इसी तरह कोई पुरुष क्वीति-कम-परावण होता है।

ग्रहारात ! कैमे कोई प्रतप अवोति-ज्योति-प्रशयण होता है ?

सहरात | इस का पुष्प स्वाचनगात पराचन होता है । सहरात | कोई पुरुष स्वेच इक में उलाह होता है । वह शरीर से सहाचार करता है स्था में उप हो सुगति को मार करता है। महाराव | कसे कोई पुरुष प्रमीय से लाट पर कर क्षम महत्व पर हैसी हो बात इस पुरुष की है। महाराव | इसी तरह कोई पुरुष ज्वीति-स्पेति-प्राप्तत होता है।

महाराज ! संगार में इतने बकार के पुक्त होते हैं-

हे राजन् ! (जो कोई) विश्व दुष्प अद्यागदित कंत्म सत्कांचूस पाए-संकर्नोवाका इद्वे सत मानने वाका दुष्य कर्मों से काय्र-पित होता है समय आहाय क्यावा सुपरे सी पायकों को बॉटता मीर गाकिमी देता है कोची जासिक होता है सींगर्य वादों को सीवव देते हुए रोक्ता है।

हेराजन् ! हे जना चिप ! उस प्रकार का पुद्य समन्तम प्राप्य है। वह यहाँ से सर के घोर

भरक में पहला है।

है शुक्रम ! (को कोई) वृधित्र पुरुष धकालु श्रेषुसी-रहित होता है दान वेता है अह संक्रम्मों बाह्य अध्यक्ष मन बाह्य पुरुष धसम माझ्य अध्यक्ष दुसरे पायकों को भी उटकर धर्मिवाइन करता है संयम का अन्यास करता है सींगने वाकों को भोजब देते हुए सवा वहीं करता ।

हेराजन्। कस प्रकार का पुरुष उस-अवोधि-स्थापन है। यह पहाँ से सर कर स्वर्शकोक से बराज होता है।

है राजन् ! (वो कोई) वनाक्य पुरुष अज्ञारिक कंत्स होता है सफ्लोचूस राय-छंकस्यों बाजा क्रुट्रे सत मानते बाक्य पुण्य बनों में काय-पहिल कमण, माक्य अथ्या बुसरे भी बाजकों को बीट्या और याविकों देता है अपेवी शारितक होता है जाँगने बच्चों की मांचन देते हुए सभा कर हेता है।

है राजन् ! उस प्रकार का पुक्ष्य अमोति-तम-परायण है जह यहाँ से सर कर भोर बरक सें पडता है !

हे राजन् ! (को कोई) वजाका पुरुष कहालू, कंत्र्सी-रहित होता है दाव देता है अह संक्रम्पा वाका अस्मा प्रश्न वाका पुरुष अस्मा नाह्या अववा वृत्तरे पाचकों को भी वर कर अस्मित्राहन करता है संबंध का अस्मास करता है भौगवे वाकों को शोकन देते हुए सवा नहीं करता !

है राजन् ! क्या प्रकार का पुरूप उनोति-अमोति-परायण है। यह यहाँ से भर कर स्था क्रीक में

उलक होवा है।

§ २ अध्यक्षासुच (३३२)

मृत्यु नियत 🕻 पुष्य कर

भावस्ती में।

एक जोर केंद्र हुने कोसकराज प्रदोनजिल् को समकान् ने कहा—सहसाज ! इस दुपद्रीचे में जब्दा जाप नहीं से आ रहे हैं ? भन्ते । मेरी दादी मर गई है। वह वडी वृदी, पुरनिया, आयु पूरी हुई, एक सौ वीस साल की थी।

भन्ते । सेरी दादी मुझे वडी प्यारी थी । भन्ते । हस्ति-रत्न को भी पाना में स्वीकार नहीं करूँ यदि मेरी दादी न मरे । भन्ते । हस्ति-रत्न को भी मैं दे डाल्ट्रॅ यदि मेरी दादी न मरे । भन्ते । अश्व-रत्न को भी पाना से स्वीकार नहीं करूँ यदि सेरी दादी न मरे । भन्ते । अश्व-रत्न को भी मैं दे डाल्ट्रॅ यदि मेरी दादी न मरे । भन्ते । अब्वे-अच्छे-अच्छे गाँव । भन्ते । जनपद ।

महाराज ! सभी जीव मरण-शील हैं, एक न एक समय उनका मरना अवश्य है, मरने से वे किसी तरह नहीं वच सकते ।

भन्ते । आश्चर्य है, अनुत है । भगवान् ने वहा ही ठीक कहा है—सभी जीव मरण-शील हैं, एक न एक समय उनका मरना अवस्य है, मरने से वे किसी तरह नहीं बच सकते हैं ।

हाँ, महाराज ! यथार्थ में ऐसी ही वात है। सभी जीव मरण-शील हैं

महाराज ! कुम्हार के जितने घढ़े हैं—कच्चे भी और पके भी—सभी फूट जाने वाले हैं, एक न एक दिन उनका फूटना अवन्य है, फूटने से वे किसी तरह नहीं चच सकते। महाराज ! वस, ठीक चैसे ही सभी जीव मरण-क्वील है, एक न एक समय उनका मरना अवश्य है, मरने से वे किसी तरह नहीं बच सकते।

सभी जीव मरेंगे, मृत्यु में ही जीवन का अन्त होता है, उनकी गित अपने कर्म के अनुसार होगी, पुण्य-पाप के फल से, पाप करने से नरक को, पुण्य करने से सुगति को, इसिलिये सदा पुण्य कर्म करे, जिससे परलोक वनता है, अपना कमाया पुण्य ही प्राणियों के लिये परलोक में आधार होता है।

३ लोक सत्त (३,३३)

तीन अहितकर धर्म

श्रावस्ती में।

एक और येंड, कोशलराज प्रसेनिजित् ने भगवान् को कहा—भन्ते ! लोक में कितने धर्म अहित, हु ख तथा कष्ट के लिये उत्पदा होते हैं ?

महाराज ! तीन धर्म लोक में अहित, दु ख तथा कट के लिये उत्पन्न होते हैं।

कौन से तीन ? महाराज ! लोभ धर्म लीक में अहित, दु ख तथा कप्ट के लिये उत्पन्न होता है। महाराज ! द्वेप धर्म । महाराज ! मोह धर्म ।

महाराज । यह तीन धर्म छोक में अहित, दु ख तथा कष्ट के लिये उत्पन्न होते हैं। छोम, हेप और मोह, पाप चित्त वाले पुरुष को.

अपने भीतर ही उत्पन्न होकर नष्ट कर देते हैं, जैसे अपना ही फल क्ले के पेड़ को ॥१३

§ ४ इस्सत्य सुत्त (३ ३,४) दान किसे दे १ किसे देने में महाफल १

श्रावस्ती में।

एक और येंड, कोशलरान प्रसेनजित् ने भगवान् को कहा—भन्ते । क्सिको दान देना चाहिये ?

महाराजः ! तिसके प्रति सन में अद्धा ही । भारते ! विस्तको बात देने से सहायक होता है ?

महाराज । यह नृसरी चात है कि किसको दान देना चाहिये और यह नृसरी कि किसको दान देने स महाच्छ होता है। महाराज ! श्रीकवान को दिये गये दान का महाच्छ होता है। हुन्सीर को निवेश गये दान का नहीं।

महाराज ! तो मैं आप को ही पठता हैं जैसा आपको छने वैसा कचर हैं !

सहाराज | साम के व्यापको कहीं व्यापहें किंद जान; युद्ध रुप व्यान । तथ कोई शिक्षपनुस्तार आपके वाद्य करे—किंदने मुद्ध पिया पढ़ी सीधी है जिसका हान साक नहीं है जनस्पता, उपोके कर्मप जाने वाद्य कर जाने वाद्य साम चान होने वाद्या । तो नया न्याप करे नियुक्त करेंगे ? हिसे युद्ध में आपना पात्र प्रशीवन किंदनेशा ?

नहीं सन्ते ! उस पुरुष को में नहीं नियुक्त कर्रोंगा, बैस से मेरा कोई प्रयोजन नहीं । सब कोई साह्य्यकृतार स्थाप के पास कार्य । एवं कोई वैश्वकृतार ग्राजकृतार ।

महीं सन्ते !- बसे से मरा कोई प्रवोचन नहीं ।

सहाराज | मान कें सापको कहीं कहाई कि बाध; युद्ध दन काथ। तय कोई छाप्रिय-क्रमार काय दे प्रात कारे—सिक्तने युद्ध विधा अच्छी तरह सीची है जिसका हाथ साफ है पूरा कम्यासी को कमी न दरें कैंपे नहीं क्रमी पीठ न हिचाने। तो क्या काय उसे नियुक्त करेंगे ! वैसे युद्ध से कायजा प्रयोजक निकस्ता। ?

हाँ मन्त ! कम पुरुष का मैं निमुक्त कर खुँगा । वैसे ही पुरुष से की काम निकरेगा ।

तत्र कोड् आक्रण-चुनार, वैश्व-चुनार स्व-चुनार । हॉं सन्ते (वसे दी पुरुप से तो काम विकक्ता।

महाराज ! ठीक उसी वरह जाहे जिल किसी कुछ से घर से धंवर हो कर साववित हुआ हो वह पाँच कहाँ से रहित और पाँच कहाँ से बुक होता है । उसकी हाव विचे गये का सहस्क्रक होता है ।

किन पाँच कहा से यह पहिल होता है ? वालच्छन्य से पहिल होता है । दिना-साव !!! रहित होता ह ! जानरत से रहित होता है ! जीवल्य-कैंकृत्य से पहिल होता है । यह इन पाँच कहाँ से रहित होता है ।

िरम पाँच भारति ते बहु शुक्ष होता है ? करीहर सील-स्कृष्य से पुक्त होता है। क्षेत्रेस सामाधि स्कृष्य ना शुक्ष होता है। भारतिक प्रकानस्कृष से जुक्ष होता है। क्षेत्रेस बिसुक्ति-स्कृष से पुक्ष होता है। भारति बिसुक्ति काम-पूर्वत से जुक्ष होता है। यह इस बाँच स्कृष्यों से पुक्ष होता है।

हम पाँच लहा में रहित कार पाँच लहा से पुन्त (लग्नल) की दिप गये दान का सहाकड़ होता है।

. भगवान् में यह कहा । यह कह कर तुद्ध में फिर भी कहा----

सीरस्त्राची बक कीर कार्य किर सुबक में हैं जमी को राजा पुत्र के किये विद्युत्र करता है जाति के कारण बारद की नहीं ॥ वैसे ही किया में क्यासीनाता सुरत जाय कार करी हैं जगी के क्यासी नाले पुरत्य को पुत्रित्यान् कोश हीन कार्ति में भी देशा होने से नुजत हैं ॥ हरण काराज को क्यासा परिवारों को बनाये निजल बस में कुछ सुद्दानों कोइ सामग्रे प्रमुख की सामग्रे अ सीचे लोगों को श्रद्धा-पूर्वक दान दे, जैसे, मेघ गद्माइते बोर नैकदों चिजलों चसकाते, घरम कर सभी नीची जगहों को भर देता है, घेसे ही, श्रद्धालु पण्डित पुरप भोजन के दान से, सभी याचकों को सान-पान से भर देता है, घड़े प्रसन्न चित्त से बोटता है, 'देशो, देशों' कहता है, यही इसका गरजना ह, प्रस्पते हुए मेघ का, बह प्रदी एण्य की बारा देने वाले पर ही घरसती है॥

§ ५. पव्यतूपम सुत्त (३३५)

मृत्यु घेरे आ रही है, धर्माचरण करे

श्रावस्ती में।

एक और बैठे हुए कोबालराज प्रसेनजिस् को भगवान् ने कहा—महाराज । कहाँ से आना हो रहा है ?

भन्ते ! राज्य-सम्प्रन्थी कामों में में अभी वेतरत बक्षा था । क्षत्रिय, अभिषेक किये गये, ऐश्वर्य के मद से मत्त, सासारिक काम के लोभ में पड़े, देशों को कटजा में रखने वाले, बहे-बड़े राज्यों को जीत कर राज करने वाले राजाओं को बहुत काम रहते हैं।

महाराज ! मान लें, प्रव दिशा में आप का कोई अद्वालु ओर विश्वस्त आदमी आवे और वहें— महाराज ! आप को माल्यम हो—में प्रव दिशा से आ रहा हूँ, वहाँ मैंने देखा कि एक मेघ के समान महान् पर्वत सभी जीवों को पीसते हुए आ रहा हैं। महाराज ! आप जैसा उचित समझे वैसा करें।

तव, दृसरा आदमी पिट्यम दिशा से आवे, तीसरा आदमी उत्तर दिशा से आवे, चौथा आदमी दिल्पन दिशा से आवे और कहे — वहाँ मैंने देखा कि एक मेघ के समान महान् पर्वत सभी जीवे। को पीमते हुए आ रहा है। महाराज ! आप जैसा उचित समझें बैमा करें।

महाराज ! मनुष्यों के इस प्रकार नष्ट होने के टारुण भय आ पड़ने पर क्या करना होगा ? भन्ते ! इस प्रकार के भग आ पढ़ने पर, धर्माचरण, सयम-अभ्यास ओर पुण्य कर्म के सिवा ओर क्या किया जा सकता है ?

महाराज ! में आपको कहता हैं, बताता हूँ। महाराज ! (बेसे ही) आप पर जरा और मृत्यु (का पहाइ) चढ़ा आ रहा है। महाराज ! जरा और मृत्यु के इस तरह चढ़ते आने से क्या करना चाहिये ?

भन्ते ! जरा और मृत्यु के इस तरह चढ़ते आने से धर्माचरण, सयम-अभ्यास और पुण्य कर्म के सिवा और क्या किया जा सकता है ?

भन्ते ! क्षत्रिय वहे-वहे राजाओं को जीत कर राज करने वाले राजाओं को जो हस्ति-युद्ध, क्षय-युद्ध, प्य-युद्ध, प्य-

भन्ते ! इस राज-कुछ मे वहे वहे ऐसे गुणी मन्त्री हैं, जो अपने मस्र के वछ से आते शत्रुओं को भगा दे सकते हैं। उनका मस्र-युद्ध भी जरा और मृत्यु के चढ़ते आने के सामने वेकार है।

भन्ते । इस राजकुल का खजाना ऊपर नीचे सोना से भरा है, जिस धन से हम आते शत्रुओं को फोइ दे सकते हैं। यह धन-युद्ध भी जरा और मृत्यु के चढ़ते आने के सामने वेकार है।

भन्ते ! जरा और मृत्यु के इस तरह चढ़ते आने से धर्मा घरण के सिवा और क्या किया जा सकता है ?

सहाराज ! टीक में ऐसी ही यात है। जस जोर सुत्यु के इस तरह चड़ते आने 🗉 धर्मापरण के सिका और क्या किया जा सफता है ?

भगवान् ने यह कहा । यह कह कर शुद्ध ने आर भी कहा---

कसे बहे-बहे हीक गाम-सुन्यो पर्यत सभी बीद से बाते हों चारों दिशाओं की पीतने हुए, बेसे ही करा बीद यानु का माणियों पर चहता बाता है है शरिय माहाण बेदम हाह चन्याक उपकर कोई भी नहीं हुट्या सभी सभाव कर से पीसे बा रहें हैं म हो बहों द्वारियों का श्रक्त है, म रच बीद म पहक का बीद म हो बसे सम्ब से बा चम से रोका बा सकता है है हुस पर्म बीद होय हमते महाहुई चैच है कुपे हुस पर्म बीद होय हमति महाहुई होये हैं से सम्बच्च से समीचान करता है क्समन्य करता है स्थानम्य करता है है

कोसङ संयुक्त समाप्त

चौथा-परिच्छेद

४. मार-संयुत्त

पहला भाग

प्रथम वर्ग

§ १. तपोकम्म मुत्त (४. १. १)

फटोर तपश्चरण वेकार

ऐसा मैने सुना।

एक समय भगवान् अभी तुरन्त ही बुद्ध काभ कर उरुवेला में नेरञ्जरा नदी के तट पर अजपाल नियोध के नीचे विद्वार करते थे।

तब एकान्त में ध्यान करते हुये भगवान् के मन में यह वितर्क उठा—उस दुष्कर किया से मैं छूट गया। बढ़ा अच्छा हुआ कि मैं अनर्थ करनेवाली उस दुष्कर किया से छूट गया। बढ़ा अच्छा हुआ कि स्थिर और स्मृतिमान् रह कर मैंने बुदुश्व पा लिया।

तब, पापी मार भगवान् के चित्त के वितर्क की अपने चित्त से जान जहाँ भगवान् थे वहाँ आया और भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोळा —

तुम तप-कर्म ने दूर हो, जिससे मनुष्य गुद्ध होता है। भग्नुद्ध अपने को गुद्ध समझता है, गुद्धि के मार्ग से गिरा हुआ॥

तब भगवान् ने 'यह पापी मार हैं' जान, गाथा में उत्तर दिया--

मुक्ति-लाभ के लिए सभी कठोर तपश्चरण को वेकार जान, उससे कुछ मतलब नहीं निकलता है, जैसे जमीन पर पदी बिना डाल पतवार के नाव ॥ शील, समाधि और प्रज्ञा वाले बुद्धस्व के मार्ग का श्वभ्यास करते, परम शुद्धि को मैंने पा लिया है, हे अन्तक ! तुम जीत लिये गये॥

तव, पापी मार 'मुझे भगवान् ने पहचान लिया' समझ, दु खित और खिन्न हो वही अन्तर्धान हो गया।

§ २ नागसत्त (४१२)

द्वाधी के बरव में मार का भारत

पेमा मैंने सना ।

पुत्र समय मगनाम् बसी तुरत ही बुद्दा काम कर बढावेसा में मेश्र करा नहीं के तह पर सम्बद्धाल नियोध के नीचे कियार करते थे।

इस समद भगवान रात की काकी अधिवारी में लुके भवान में बढ़े थे। रिमशिस वैंहें भी पड रही थीं।

तब पापी मार माराबान को बस कींगा और होंगड़े कहे का देवे की इच्छा से एक बहुत वहे शामी का कम भर कर कहाँ मगवान ये वहाँ भागा । उसका शिर था मादो एक काढी भट्टान । उसके वाँत में मानो धसकता चाँदी। उसकी सुँद भी मानो एक विसाद इस ।

तब मगवान ने 'बह वाची जार हैं' सान गावा के बकार-

इस रीवें नंसार में बच्छे तरे कर बर कर तम किरते ही करे पापी ! इसे जब रहते हैं। सन्तक ! शम बह हो धरे ह

यब पापी आर 'मुक्ते नगवान ने पहचान किया समझ बुर्शचत और किस हो वहीं नन्तर्वान हो शया ।

§ ३ सम सच (४ १ ३)

संयमी मार के थश में नहीं आते

करबेका में।

बस समय मगवान रात की काकी में विकारी में कुछ मैदाब में की थे। रिमिशन देंहें भी पह रही थीं।

तब पापी सार सगवान को बस कैंपा रॉगटे कई कर देने की इच्छा से अहाँ सगवान ने वहाँ भाषा और तरह-तरह के बोटे वहें जब्बे वरे कम तिवाले बना ।

तब सरकात के पह पापी सार है जान गावा में कहा-

इस बीर्ष संसार में अच्छे दर कर जरकर तम फिरते हो। भरे पापी ! इस अब रहने हैं। जन्तक ! तुम वह हो गर्ब प

को प्रतीर अक्स और प्राप के जंबल रहते हैं है आर के क्या में कार्र जाते है आर के चर में वर्षी रचते ह

तद पापी मार 'मुझे मगवाब वे पहचान किया समझ ब्राव्धित और विश्व हो वहीं अन्तर्याय क्षो गवा ।

§ ४ पास सच (४ १ ४)

बुख मार के आब से मुक्त

पैसे मैंने सना।

ण्ड समय यगवान् बाराणसी ≠ ऋषिपतत्त सुगदाव में विदार करते थे। वहाँ भगवान् वे मिभुनों को भागन्त्रत किया-"विश्वजी !"

"भइन्त !" कह कर कन निश्चनों ने अगवान की उत्तर दिया।

भगवान् योहे-भिक्षुओ । मन को उचित मार्ग में लगा और उचित उत्माह कर मेने अलैकिक विमुक्ति पायी हैं, अलैकिक विमुक्ति का साक्षाकार किया है।

भिक्षुओ । तुम भी मन को उचित मार्ग में लगा और उचित उन्साए कर अलैक्कि विमुक्ति का लाभ वरो, अलैकिक विमुक्ति का साक्षात्कार करा ।

त्र , पापी मार जहाँ भगवान् थे वहाँ आया और यह गाथा घोटा-

मार के जाल में धेध गये हो, जो (जाल) दिव्य और मनुष्य लोक के हैं, मार के प्रधन से बँधे हो, श्रमण ! मुझमें तेरा हुटकारा नहीं ॥

[भगवान्-]

मार के जाल में में मुक्त हूं, जो दिस्य और मनुष्य लोक के हैं, मार के यथन से मुक्त हूँ, अन्तक! तुम जीत क्रिये गये॥

तय, पापी मार 'मुझे भगवान् ने पहचान लिया' समझ हु खित और खिन्न हो यहीं अन्तर्धान हो गया।

§ ५. पास सुत्त (४. १. ५)

वहुजन के हित-सुख के लिए विचरण

एक समय भगवान् वाराणसी के ऋषिपतन भृगदाव में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने भिक्षुओं को आमित्रत किया—"भिक्षुओं!"

"भदन्त ।" कह कर उन भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया।

भगवान् वोले—भिक्षुओ। विच्य लोक और मनुष्य लोक के जितने जाल हैं सभी से मैं मुक्त हूँ। भिक्षुओ। तुम भी जितने जाल हैं सभी से मुक्त हो। भिक्षुओ। बहुजनों के हित के लिये, बहुजनों के सुख के लिये, लोक पर दया करने के लिये, देवताओं और मनुष्यों के प्रयोजन के लिये, हित के लिये, सुख के लिये विचरण करो। एक साथ दो मत जाओ। भिक्षुओ। आदि में कल्याण-(कारक), मध्य में कल्याण-(कारक), अन्त में कल्याण-(कारक) (इस) धर्म का उपदेश करो। अर्थ-सहित = व्यजन-सहित, पूर्ण, परिशुद्ध ब्रह्मचर्य का प्रकाश करो। अर्प दोपवाले भी प्राणी हैं, धर्म के न श्रषण करने से उनकी हानि होगी। (सुनने से वह) धर्म के जानने वाले वनेंगे। भिक्षुओ। मैं भी जहाँ उसवेला है, जहाँ सेनानी प्राम है, वहाँ धर्म-देशना के लिये जाऊँगा।

तव, पापी मार जहाँ भगवान् थे वहाँ आया और गाथा मे बोला—

सभी जाल में घँधे हो, जो (जाल) विष्य और मनुष्य लोक के हैं, घदे यन्धन में वैंधे हो, श्रमण ! मुझसे तेरा खुटकारा नहीं॥

[भगवान्—]

में सभी जाल से मुक्त हूँ, तो दिव्य और मनुष्य लोक के हैं, वदे धन्यन से मैं सूर शुका भन्तक । तम बीत किये गवे ॥

६६ सप्प सुच (४१६)

वकारतवास से विक्रस्टित न हो

पेसा मैंबे सवा।

एक समय भगवान राजगृह के घेलायन ककानकनिवाप में विदार करते थे।

दस समय मगवाण् रात की काकी कैं थियारी में सुके सैदल में की थे। रिमसिम पापी मी पत्र रहा था।

वद पापी मार प्रमावाण को दशा किंगा रांगदे कहे कर देने की ह्या से एक विकास सर्पेशक का क्ष्म परका वहाँ मागवान से वहाँ आवा। सेने एक वहे वृक्ष की वागी माव हो। सेसा उसका सरीर था। मैंसे महावार की वर्षाद् हो केसा उसका प्रक वा। बैसे कोसक की वर्षा (क्ष्मकर्ता) पाकी हो। वैसी समझी बीं की। किंसे महावार के से से दिख्यी करकशी है बैसे ही। उसके ग्रेंट से बीम करफवारी थी। असे कोहार की साथी वक्षण से सम्ब होता की ही उसका मार्सि की बीट की में से समझ होता का।

तथ प्रतासाय ने श्वह वापी तार है जान गामा में कहा-

को एकान्यवास का सेवन करता है
वह आरतसंगर शुनि कोंड है
सब कुछ लगानद वह वहीं विचाय करे
वैस पुरुष के किए वह विवाइक अनुष्क है ह
सह-तरह के मीव विचारत हैं तरह-तरह के वर देश करनेवाके
वहुत कैस अच्छर और साँग विचार कहु एक रोंचे को भी नहीं हिस्सवे
एकान्यवास करवेशका सासाहति है ह
वाकास करवेशका सासाहति है ह
वाकास कर वाच पुच्ची कींप आव
सभी माली वर बार्ग, स्वि

तम पापी सार 'शुक्ते मगवाम् ने पहचान किमा' समझ दुरिकत और किक हो वहीं अन्तर्यात ही गया।

⁸ ७ सोपसि सच (४ १ ७)

वितप्ज पक

ण्ड समय भगवान् राहासुद्ध के बेस्नुवन कळलक्तिवाप में विद्वार कारे थे।

वर मगवान् बहुत नहर तक सुने मैनान में नंत्रमन करते रहे। एत के मिनशारे ऐरी की रचार किहार के भीतर पने। वहाँ शहिनी करकर सिंह कच्या क्या कुछ हकते हुए पैर पर पैर रच स्मृतिमान् भार नंगक हो, मन मैं जन्मान संशा (= बड्टो कर विचार) का के हाने।

उपधि—पश्चरकम्ब की उपधियोँ—अडक्या ।

तय, पापी मार जहाँ भगवान् थे वहाँ आया और भगवान् से यह गाथा घोला-क्या सोते हो ? क्यों सोते ही ? क्यों ऐसा वेखनर सो रहे हो ?

सना घर पाकर सो रहे हो ?

सुरज उठ जाने पर क्यों यह सो रहे हो ?

भगवान —

जिसे फॅमा होने वाली और विप से भरी तृष्णा कहीं भी बहकाने को नहीं है, जो सभी उपधियां के मिट जाने से बुद्ध हो गये हैं. लेटे हैं रे मार ! इससे तुम्हारा क्या ?

तव, पापी मार 'मुझे भगवान् ने पहचान लिया' समझ, दु खित और खिन्न हो वहीं अन्तर्धान हो गया।

§ ८. आनन्द सूत्त (४. १. ८)

अनासक चिन्तित नहीं

ऐसा मैंने सुना ।

एक समय मगवान् श्रावस्ती में अनाधिपिण्डिक के जेतवन भाराम में विहार करते थे। तब, पापी मार जहाँ मगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् के पास यह गाया बोला-

> पुत्रों वाला पुत्रों से आनन्द करता है, वैसे ही गौवां वाला गांवां से आनन्द करता है, सासारिक चीजो से ही मनुष्य को आनन्द होता है, वह आनन्द नहीं करता जिसे कोई चीज़ नहीं॥

[मगवान्—]

पुत्रों वाला पुत्रों की चिन्ता में रहता है, वैसे ही गौवों वाला गीवो की चिन्ता में रहता है, सांसारिक चीजों से ही मनुष्य की चिन्ता होती है, वह चिन्ता नहीं करता जिमे कोई चीज नहीं ॥

तव, पापी मार 'युमे भगवात् ने पहचान लिया' समझ दु खित और खिन्न हो वहीं अन्तर्धान हो गया।

§ ९. आयुसुत्त (४. १ ९)

आयु की अल्पता

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् राजगृह के वेलुवन कलन्दक निवाप में बिहार करते थे। षहाँ भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्नित किया-"भिक्षुओ"। "भदन्त !" कहकर उन भिक्षुओं ने भगवान को उत्तर दिया।

भगवात् बोडे—सिमुधी ! समुर्जी की आयु घोड़ी है। परकोक जाता (शीप्र) है। पुरच कमाया चाहिचे जहावये पाकता चाहिय ! जा जन्म सेता है वह मरते से कमी वच नहीं सकता ! सिमुखो ! जो पहुत बीता है वह सी पथ बीता है। उससे कुछ क्रम या अधिक !

तप पापी मार अहाँ भगवान थे यहाँ भावा और भगवान से गाथा में योगा-

ममुष्यों की बायु करवी हं सत्युद्धर इसकी परवाह न करे समर्थिने वच्चे की तरह नहें शब्द भागी नहीं जा रही है ॥

[भगवान्—]

समुष्यों की भाषु बोदी है सस्प्रमण इससे अब सचेत रहे

शिरपर आग सम गई है प्रेमा समझते रहे ऐसा कोई समय नहीं जब सुरत व का आये।

सब पापी मार 'शुष्ठ भगवान् ने पहचान किया' समग्र शुप्तित और सिश्न हो वहीं सन्तरकोत हो गया ।

६१० आयु सुच (४१ १०)

आयु का सप

राजपृद्द में।

बहुँ समजान बोके—सिम्लावो । सनुष्यों की बानु बोही है। परकोण बाना (सिप्त) है। पुरव कमाना चाहिमें महत्ववे पाकना चाहिये । को बम्म केता है वह सरने से कमी वच नहीं सकता। सिम्लावो । को बहुत बीता है वह सी वर्ष बीता है उससे हुछ कम या व्यवका।

तब पापी मार कहाँ मग्रभाव वे वहाँ आया और भगवाब से ग्रामा में बोधा--

दिन और राव चके नहीं वा रहे हैं

बीवम (या प्रवाह) कमी स्कता गर्ही है सनुष्मी के चारों ओर भानु बैसे ही बुमती रहती हैं;

सेसे हाक गाडी के पुरे के ब

[सगवान्—]

मान्----। दिन भीर राग्न गीरो वा रहे हैं

धीयम (का प्रमाह निर्माण में) इन बाता है

सनुष्यों की व्याशु कीय हो रही हैं कोशी-कोशी वहियों का बैसे चढ़ा वाली ॥

त्रव पार्च मार 'सुक्के अमवान् में पहचान किया' समग्र श्रुमकित और क्रिक हो वहीं सम्मार्थिय हो परा !

मधम वर्ग समाप्त ।

दूसरा भाग

द्वितीय वर्ग

६१. पासाण सुत्त (४.२१)

बुद्धां में चञ्चलता नहीं

एक समय, भगवान् राजगृह में गृद्धक्ट पर्वत पर विहार करते थे। उस समय भगवान् रात की काली अधियारी में खुले मैदान में बैठे थे। रिसमिम पानी भी पड़ रहा था।

तत्र, पापी मार भगवान् को उरा, केंपा और रांगटे पड़े कर देने की इच्छा से जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् के पाम ही बड़े-बड़े पत्थरों को लुदकाने लगा।

तत्र भगवान् ने 'यह पापी मार हैं' जान गाथा में कहा-

चाहे सारे गृद्धकुट पर्वत को ही क्यां न लुदका दे,

यिस्कुल विमुक्त बुद्धां में कोई चन्चलता पैटा नहीं हो सकती।

तय पापी मार 'मुझे भगवान् ने पहचान लिया' समझ दुखित और खिन्न हो वही अन्तर्थान हो गया।

§ २. सीह सुत्त (४. २ २)

घुद्ध सभागा में गरजते हैं

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाधिपिण्डिक के जैतवन भाराम में विहार करते थे। उस समय भगवान् बड़ी भारी परिपद के बीच धर्मोपदेश कर रहे थे।

तव पापी मार के मन में यह हुआ--यह श्रमण गीतम वहीं भारी परिपद् के बीच धर्मोपदेश कर रहा है। तो क्यों न में श्रमण गीतम के पास चलकर लोगों के मत को फेर दूँ।

तव पापी मार जहाँ भगवान् थे वहाँ आया और भगवान् से गाथा में बोला-

सिंह के ऐसा क्यों गरज रहा है, सभा में निडर हो कर, तुम से जोड़ छेने वाला मौजूद है, अपने को बड़े विजयी समझे बैठे हो ॥

[भगवान्—]

जो महावीर हैं वे सभामों में निडर हो कर गरजते हैं, वछशाली बुद्ध, जो भवसागर को पार चुके हैं॥

तय पापी मार 'मुझे भगधान् ने पहचान छिया' समझ दुखित और खिक्न हो वहीं अन्तर्थान हो गया।

§ ३. सकलिक सुत्त (४. २. ३)

पत्थर से पैर कटना, तीव बेदना

ऐसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह के मद्दकुच्छि सृगदाव में विहार करते थे।

उस समय सगवान् के पैर पुरू पायर के हुकड़े से कर गये थे। सगवान् को बड़ी पीड़ा हो हुई थी---सारीरिक हु:कह तील करोर कह बड़ी चुर्रा। उसे अगवान् स्थिरता से स्मृतिमान् कार संप्रकृष्टी सह रहे थे।

हब पापी मार बहाँ भगवान् थे वहाँ भाषा और भगवान् से गावा में बोका-

इतका सम्ब क्यों वहें हो क्या किसी विकार में वहें हो ? क्या तुम्हारी माणश्यकतायें पूरी गई हैं। सरकेता इस प्रकारण क्याण में निहासका क्यों को ही ?

में मन्द्र नहीं पदा हैं व किसी विचार में साम हैं.

[मगपार-]

मैंसे परमार्थ पा लिया है मेर घोक इद गये हैं अचेका इस एकार्य प्रधान में समी ओर्डो पर अनुकरण करने वाका में सो रहा हूँ व जिनकी छाती में काल सुस गया है को रह रह कर हरण को काल-सा रेगा है वे बाल काल भी सो आते हैं, सो मारी बेदवानों से सहित में बतों के सोठें ! आगले में हुई से बाल ही कींत क मिलें से दरता हूँ, रात या दिन का हुई स पर कोई प्रभाव वहीं संसार में में कहीं भी अपनी हालि नहीं देशता इसकिंग में भी रहा हूँ.

इसकिय में मो रहा हूँ, प्रमानी वीकों पर लगुकाया करने वाला ह तद पार्थ आर 'शुझे मगवान ने यहचान किया' समझ बुशियत और विश्व हो वहीं जन्मकार हो गया।

६ ४ पविरूप सच (*२* २ ४)

त्रव मनुरोध विगोध से मुक्त

पुरु समय असवान् कोदारु से एकदात्मा समय आक्षणों के गाँव से विदार करने थे । उस समय समयानु गुरुन्ती की एक वही विशिष्ट क टीच धुर्मोरोहों कर रहे थ ।

मक पानी मार काम में यह भागा- नाह कामण शासम मृहक्यों दी वही परिवृत्ते वीच वर्मे दोस कर रहा है। सा वर्षी व में वहाँ कामण गीलम है वहाँ चलकर इसके मन की के। हैं।

तद बापी मार जहाँ मगवान के वहाँ आपा अन् अगवान में गत्या में बोला---

पुण्डे पूंचा करणा पुन्ड नहीं को मूनरे को सिन्धा रहे हो

पुरुष पुरार करना पुन्त नहां का मून्यर का त्रान्या रहे ह पुन्ता करते हुवे अभूरीच और विरोध में मन %सी ह

[मगवाय्—]

हिम भीर अनुस्तान करने वाले पृक् पृत्यते को अनुसामन कर रहे है ॥ पृक्ष अनुरोध भीर विशोध से सुन हैं ॥ तय पार्वी सार 'सुझे भगधान् ने पष्टचान लिया' समझ दुःग्यित आर ग्रिप्त हो वहीं अन्तर्धान हो गया ।

§ ५. मानस सुत्त (४. २. ५)

इच्छाओं का नाश

ऐसा मैंने सुना।
एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनायिपिण्डिक के जेतवन भाराम में विहार करते थे।
तय पापी मार जहाँ भगवान् थे वहाँ आया भीर भगवान् में गाथा में घोला—
आकाश में उदने वाला जाल, जो यह मन की उदान है।

उससे तुम्हें फैँमा ह्या, श्रमण ! मुझमे तेरा छुटकारा नहीं ॥

[भगवान्—]

रूप, शब्द, रस, गन्ध ओर स्पर्श, मन को लुभा लेने वाळे, इनके प्रति मेरी सारी इच्छाये मिट गईं, अन्तक ! तुम जीत लिये गये हो ॥

तव पापी मार 'मुझे भगवान् ने पहचान लिया' समझ ष्टु खित और खिन्न हो वहीं अन्तर्धान हो गया।

§ ६. पत्त सुत्त (४.२६)

मार का बैल वनकर आना

श्रावस्ती में ।

उस समय भगवान् ने पाँच उपादान न्कन्धों के विषय में धर्मोपदेश कर भिक्षुओं को दिखा दिया, षता दिया, लगन लगा दिया, और उनके भावों को जना दिया। और, भिक्षु लोग भी बढ़े ध्यान से मन खगाकर कान दिये धर्म श्रवण कर रहे थे।

तव पापी मार के मन में यह हुआ—यह श्रमण गीतम पाँच उपादान स्कन्धों के विषय में धर्मीपदेश कर । तो क्यों न में जहाँ श्रमण गीतम है वहाँ चलकर उनके मत को फेर हूँ!

उस समय, कुछ पात्र खुले मैदान में पहे (सूख रहे) थे।

तव, पापी मार एक वैल का रूप धरकर जहाँ वे पात्र पड़े थे वहाँ आया।

तत्र, एक मिध्र ने दूसरे भिक्षु से यह कहा—स्वामीजी, कहीं यह वैल पात्रों को तोड़ न दे !

उसके ऐसा कहने पर मगवान् ने उस भिश्च को कहा—भिश्च । वह बैल नहीं है। यह पापी मार तुम लोगों के मत को फेरने आया है।

तव भगवान् ने 'यह पापी मार है' जान गाथा में कहा-

- रूप, वेदना, संज्ञा, विज्ञान और संस्कार को, 'न यह मैं हूँ, और न यह मेरा है' ऐसा जान, उनके प्रति विरक्त रहता है, ऐसे विरक्त, शान्त, सभी बन्धनों से छूटे पुरुप को, सभी जगह खोजते रहकर भी, मार-सेंना नहीं पा सकती ॥ 1

तम पार्यी सार 'मुझे भगवान थे पहचान किया समझ वर्शनत और शिव हो यहीं समार्वाम हो समा ।

६७ आयतन सूच (४२७)

भावतर्ते में ही भव

एक समय मगवाम वैज्ञास्त्री में महाधन की कटावार गाम में विद्वार करते थे।

इस समय मगवान ने का स्पर्धायतमों के विषय में घर्मोपदेश कर मिशुओं की दिका दिया । सीर मिश्र कोरा सी कान विवे सर्वे शक्त कर रह से ।

तब पापी मार के मन में बह बाया-पह, धमन शातम का स्पर्धायतकों के विपन में । तो

क्यों व में बड़ों असय गीतम है वहाँ चककर बमड़े सब को फर हैं। तब पापी सार खडौँ भगवान ये बडौँ भाषा और भगवान के पास ही सह। सबीरपावक सम्ब कार्त क्या---माथे प्रथा पर चली।

तप एक मिस ने तुसरे को कहा--मिस मिस ! मानी प्रश्नी कर चन्नी !

उसके ऐसा कहने पर भगवान ने उस मिछ का कहा-मिछ ! प्रथ्वी कर नहीं रही है । यह मार तम क्षेगों के मत को फेर वने के कियं भागा है।

तब, भगवान वे 'बह पापी सार है' बाम गाया में बहा-

कर गाव्य रस गान्य स्पर्ध जीर भी कितने बर्म हैं संसार में बढ़ी मध है इनके पीछे संसार पायक है इनसे कपर उठ प्रक का भावक स्थाविमान हो मार के राज्य को काँच सर्थ के पेसा चमकता है।

तम पार्यी भार 'अझे मगवान ने पहचान किया समझ दावित और सिन्न हो दहीं जन्तर्वान हो गया ।

इ.द पिण्ड सुच (४२८)

युद्ध को मिसा म मिस्री

एक समय मगवान मगन्न में पश्चदास नामक बाह्यजें के ग्राम में विदार करते थे । उस समय उस प्राप्त में नुवक्षों का पर्शर धेंट देव का उत्सव अत्या हुना था ।

तब भगवान सबह में पहन और पात्र बीवर के गाँव में मिश्राहन के किये पैंडे।

क्षस समय प्रस्कृतास माम के बाह्यकों पर पापी भार सवार हो राया था-कि क्रिसमें असन सीतम को मिक्रा व मिक्ने पाने।

तब भगवान् बेसे हुने-पुकाने पात्र को केवर पद्मधाक ग्राम में मिखारन के किये हिंदे में मैसे ही त्रके-प्रकाचे पात्र को किये कांट गये ।

तम पापी मार वहीं भगनाव् ये वहीं धावा और मधवान् से बोध्य-धामय ! क्या भिद्या मिनी ? तम पापी ने बेसा किया जिसमें मुझे निका वहीं मिके ।

मन्ते ! तो मधवान् बुसरी बार पळशास आम में सिक्षादन के किने पेंडें । इस धार में पैसा वक्षा जिसमें भगवान को मिक्का क्रिकेशी।

> मार में बदा अपुष्प कमाया औ बुदा से दवा किया रे पापी ! क्या समझता है कि मेरे पाप का बक्क वहीं सिक्षेता है

सुरा पूर्वक जीता हूँ, जिम, मुद्दो कुठ अपना नहीं हैं, (समाधि-जन्म) प्रीति से सतुष्ट रहेंगा, यसे भाभाइवर देव॥

तय पापी मार 'मुरो भगवान् ने पत्यान लिया' समझ छु स्थित और रिश्न हो पहीं अन्तर्यान हो गगा।

§ ९. कस्सक मुत्त (४. २. ५)

भार का रूपक के रूप में शाना

थायस्ती में ।

उस समय, भगवान् ने निर्याण सम्बन्धा धमापदेत कर भिश्वओं को दिया दिया '। और, भिक्ष लोग भी'' कान दिये धर्म श्रवण कर रहे थे।

त्य, पापी मार के सन में यह आया-यह असण गीनम निर्वाण-सम्प्रम्बी धर्मीपदेश कर '। तो, फ्यों न में पहाँ असण गीतम है वहाँ चलकर उनके सत को फेर हूँ।

तय पापी मार कृपक का राप धर—पुक्र घड़े एक की फन्ये पर लिये, एक लम्बी छक्तनी लिने, घाल विग्येरे, टाट के कपड़े पड़ने, पेरी में कीचड़ लगाने, जहां भगवान ने वहाँ आया, और भगवान में घोला—'श्रमण! मेरे बलों की देना है ?'

र पापी । तुन्हें चेछी से पया बाम ?

श्रमण ! मेरी ही ऑय है, मेरे ही रूप है, मेरी ही ऑय में जाने जाये घाले विज्ञानायतन हैं। श्रमण ! यहाँ जाकर मुझसे छूट सबसे हो ?

श्रमण ! मेरे ही शब्द, गध, रस, ध्वक् ।

श्रमण ! मेरा ही मन हे, मेरे ही धर्म है, मेरे ही मन-संस्पर्श-विज्ञानायतन है। श्रमण ! कहाँ जाकर मुझसे इट सकते हो ?

पापी ! तेरी ही आँख है, तेरे ही रूप है, तेरी ही आँख से जाने जाये वाले विज्ञानायसन हैं । पापी ! जहाँ आँख नहीं है, रप नहीं है, ऑस से जाने जाये वाले विज्ञानायसन नहीं है, वहाँ तेरी गित नहीं है । पापी ! जहाँ शब्द, रान्ध, रस, विक् वहीं है ।

पापी ! तेरा ही मन है, तेरे ही धर्म हैं, तेरे ही मन-मस्पर्श-विज्ञानायतन हैं । पापी ! जहाँ मन नहीं है, धर्म नहीं है, मन-सस्पर्श-विज्ञानायतन नहीं हैं, वहाँ तेरी गति नहीं हैं ।

जो लोग कहते हैं 'यह मेरा है', जिसे लोग कहते हैं 'मेरा हे' !

यदि तुम्हारा भी मन यहाँ है, तो है अमण ! मुझसे नहीं छूट सकते ॥

[भगवान्—]

जिसे छोग कहते हैं वह मेरा नहीं है, जो लोग कहते हैं वह मैं नहीं हूँ, रे पापी ! इसे ऐसा जान, मेरे मार्ग को भी तू नहीं देख सकेगा ॥

तत्र, पापी मार 'मुझे भगवान् ने पहचान लिया' समझ दु खित और खिन्न हो वहीं अन्तर्धान हो गया।

हु१० रझ सुत्त (४२१०)

व्यांसारिक स्थानी की विकास

एक समय मगवाज् कोशांक्ष में द्विमाळय के पास र्यागक की एक कुरिया में विदार करते थे। तब एकाल्य में ज्वान करते समय मगवाज् के मन में यह नितर्क का—च्या विवा मारे या सरवाये विना स्रोते या किरावाये विवा हुन्क दिये या दुन्क विकास मार्ग-पूर्वक राज्य विवा का सकता है ?

तः पापी सार समावान् है विलर्ज को अपने विल से आव वहीं समवान् पे वहीं सापा और वोडा—सन्दे | समवान् हात्रा करें—विका सारे पर्म-वर्षक ।

पापी | दुमने क्या देखकर मुझे ऐसा कहा :—धन्ते | सगवान् राज्य करें —विना सारे वर्त-पूर्वक ।

सन्ते ! सगवान् ने चारों काहिए।व की सावना कर की है जनका नानास कर किया है जन पर पूरा अधिकार था किया है जनको सफक बना किया है जनका जनुद्धान कर किया है, जनका परिचर और प्रयोग कर किया है सन्ते ! यदि सगवान चाहें कि यह पर्यवस्ता हिसाक्य सोने का हो न्याव सी प्रगाम, के केवक अधिद्धान करने साथ से सारा सुवर्ण-पर्यंत हो काव्या।

[भगवाम् -]

विच्छुक मसकी सीने के पर्यंत कर बुगता भी पूक पुरुष के किये काफी नहीं है यह समक्ष कर (संसार में) रहे 2 सिमके कारण किसने हुन्य नेख किया कन कामों की ओर यह कैसे हुन्या गुर सांसारिक कारों की क्रमण बाल स्ता पा विजय जाव भीके 8

दब पापी मार शुक्ते मधवान ने पद्धान किया समझ बुध्वित बाँद विश्व हो बन्दर्शन हो मदा ।

ब्रिटीय वर्ग समाप्त ।

तीसरा भाग

तृतीय वर्ग

(जपर के पाँच)

§ १. सम्बद्धल मुत्त (४. १ १)

मार का यहकाना

ऐया मने सुना।

एक समय भगवान् शायम्य जनपद के शीलावती प्रदेश में विहार करते थे।

उम समय भगपान् के पास छा कुछ अप्रमत्त, आतापी (= क्लेशी को तपाने वाले) और प्रदितास (= सपमी) भिक्षु जिहार करते थे।

तय, पापी मार ब्राह्मण का रूप धर, — लम्बी जटा बदाये, स्मवर्म भोदे, बृदा, घड़ेरी जैसा हाका, धुर-धुर मॉॅंग लेते, गृलर का दण्ड लिये— जहाँ वे भिक्षु थे वहाँ आया। आकर भिक्षुओं से बोला— आप लोगों ने बढ़ी छोटी अवस्था में प्रमुखा ले ली हैं, अभी तो आप कुमार ही हैं, आप के केश अभी बाले ही हैं, आप की हतनी अव्ही जवानी हैं, इस चढ़ती उन्न में आपने तो ससार के कामों का स्वाद भी नहीं लिया है। आप मनुष्य के भोगों को भोगें। सामने की बात को छोड़कर मुद्दत में होनेबाली के पीछे मत दीहें।

नहीं बाह्मण ! हम सामने की यात को छोड़कर मुद्दत में होनेवाली के पाँछे नहीं दाँद रहें हैं। बाह्मण ! हम तो उल्डे मुद्दत में होनेवाली वात को छोड़कर सामनेवाली के फेर में है। बाह्मण ! भगवान् ने मसार के कामों को मुद्दत में होनेवाला वतलाया है, दु ख से पूर्ण, परेशानी से भरा, इन कामों में केंचल दोप ही दोप हैं। और, यह धर्म सांदृष्टिक (= ऑर्पों के सामने फल देनेवाला), शीघ्र ही सफल होनेवाला (= अकालिको), ढंके की चोट पर सजा बताया जा सकने वाला (= एहिएस्सिको = जिसके विषय में किसी को कहा जा सकता है—'आओ, देप छो'), मुक्ति के पास छे जानेवाला, विज्ञ पुरुषों से अपने भीवर ही भीतर समझ लिया जानेवाला है।

उनके ऐसा कहने पर पापी मार जिर हिला, जीम निकाल, ललाट पर तीन सिकोइन (अूर्भग) चढ़ा लाडी टेकता हुआ चला गया।

तय, वे भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आये ओर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठ, उन भिक्षुओं ने भगवान् को यह कहा—

भन्ते ! हम लोग भगवान् के पास ही अप्रमत्त, आतापी, और प्रहितात्म हो विहार कर रहे हैं। सब कोई ब्राह्मण, लम्बी जटा बढ़ाये आकर घोला—आपने बढ़ी छोटी अवस्था में । सामने की घात को छोढ़ कर मुद्दत में होनेवाली के पीछे मत दीढ़ें।

भन्ते ! इस पर हमने उस ब्राह्मण को उत्तर दिया—नहीं ब्राह्मण ! हम सामने की बात को छोड़ कर मुद्दत में होनेवाली के पीछे नहीं दीड़ रहे हैं। । और यह धर्म सांटिएक हैं।

मन्ते । हमा लोगों के ऐसा कहने पर वह बाह्मण । लाठी टेकता हुआ चला गया ।

भिक्षुओ । वह ब्राह्मण नहीं था । वह पापी मार तुम छोगों के मत को फेर देने के छिये ऑयॉ थाँ।

इसे बान, सरावाब् क हुँद से उस समय यह गाथा निरुक्त पड़ी— बिसने बिसने कराज बु:प होगा बाज रिया बह डन कार्यों की ओर कैस शुक्र सरशा है ? सांसारिक क्षार्यों को परुषा जान डन पर बिजय पाना सीपे ॥

ु २ समिदि सुच (४ ३ २)

समृद्धि को इरागा

पुत्र समय भगवान् द्वापस्य जनपर् में शिक्षाधती प्रदेश में विद्वार करते थे।

क्स समय आयुष्मान् सञ्ज्ञाक् सम्बद्धि सगवान् के पास ही अध्यमक व्यातापी, और प्रदितात्म हो विहार कर रहे थे।

त्तव प्रकार में। च्यान करते समय आयुष्पान् समृद्धि के मव में बह विठवें उस-नीरा वडा चाम हुच्य ! मेरा वड़ा भाग्य हुच्या कि भेरे गुरु आर्थ्य सम्बद्ध सम्बद्ध हुन्ये। मरा वड़ा साम हुच्य ! मेरा वड़ा माग्य हुन्या कि में हुत स्वाच्यात धर्म-विवाय में प्रार्थवात हुन्य ! मेरा वड़ा स्वाम हुन्य ! भरा वड़ा भाग्य हुन्या कि मेरे गुर-आई शीक्ष्यान और पुरुषात्मा है !

तक पानी सार कानुष्मान् समुद्रित के नितक को सन्तरे किन सं कान कहाँ कानुष्मान् समुद्रि ये वहाँ कान्य । साकर, कानुष्मान् समुद्रित के पास श्री सहामगोत्पाकक सन्त करूने स्नार। सामो सुष्मी

स्त्र पत्नी।

त क कार्यमान् सञ्जि बहीं मगवान् ने वहीं आवे और जगवान् का बसिवादन कर एक और वैद गवे। एक और पैठ कार्यमान् सञ्जीक ने मगवान् को कहा—

भन्ते ! में मयवान् के पास ही व्यवस्य बातापी और बहितारम हो विहार कर रहा हैं।

भारत है जाता प्रशास के स्थान करते सामय मेरे साम में यह विश्वर्ष करा । अन्ते ! तब मरे बास ही एक महानवीत्पावर प्रस्य होने करता, आनो ग्राम्य कर क्की !

सम्बन्धि । यह प्रमान वहाँ करी का रही थी । वह पाणी मार सुम्बरों सत को केर दने के किए बावा

या। समृद्धि | कामी वहीं कामण माधापी मीर प्रविदाया होकर विद्वार करो।
"मन्ते | बहुत काका" कह, कानुष्पाद समृद्धि भगवान् को उत्तर है, कासम से उड मगवार्ष

को सित्यादन तीर प्रदक्षिण कर चके गये ! दूसरी बार की सादुष्पाण सादुष्टि वहीं विद्युत्त करने करे ! बूसरी वार की एकान्य में व्यान करते साथ कायुष्पाण्य सादित के पत में वितर्क कहा होरा वहा काम हुआ ! मेरा बदा भाग्य हुआ !! कि मेरे गुष्पाणी विकास कीर प्रणाला हैं !

पुसरी कार भी पाणी भार गणा। सावौ प्रश्री प्रस्थानी।

.. तब च/दुप्माण् समृद्धि 'यह वापी मार है' बान शाया में बोके---

> सदा से में प्रवासित हुम्या हूँ घर से कैपर हो, स्पति और प्रवास को मेरी काल किया मेरा विश्व समाधिका हो गया बैसी इस्पर हो वैसे क्या विकास समझ मेरा हुआ वाहाँ विशास समझा ॥

तन पार्यों सार 'समुद्धि सिद्धु नै सुद्धे पहुणान क्रिया समझ बुश्चित और विश्व हो नहीं अन्त्रपान हो गया।

§ ३. गोधिक सुत्त (४. ३ ३)

गोधिक की आत्महत्या

ऐसा मैने सुना।

एक समय मगवान् राजगृह के चेलु ान कलन्दक निवाप से विहार करते थे।

उस समय, आयुरमान् गोधिक-ऋषिगिरि के पास कालिशाला पर विहार करते थे। तय अप्रमत्त, अतापी और प्रतिहास्म होकर विहार करते हुए आयुष्मान् गोधिक ने समाधि से होनेवाली चित्त-विमुक्ति को प्राप्त किया। फिर, आयुरमान् गोधिक की वह समाधि से होनेवाली चित्त-विमुक्ति हुट गई।

दूसरी बार भी, अप्रमत्त, आतापी और प्रहितारम होकर विहार करते हुए आयुष्मान् गोधिक ने समाधि से होनेवाली चित्त-विमुक्ति को प्राप्त किया। दूसरी बार भी, आयुष्मान् गोधिक की वह समाधि से होनेवाली चित्त-विमुक्ति हूट गई।

तीसरी बार भी, आयुद्मान् गोधिक की वह समाधि से होने वाली चित्त-विमुक्ति हट गई।

· चौथी बार भी, पाँचवीं वार भी, छडीं वार भी, आयुष्मान् गोधिक की वह समाधि होनेवाली चित्त-विमुक्ति हट गई।

सातवीं वार भी, अप्रमत्त, आतापी और प्रहितात्म होकर विहार करते हुए आयुष्मान् गोधिक ने समाधि से होनेवाली चित्त-विमुक्ति को प्राप्त किया।

तव, आयुष्मान् गोधिक के मन में यह हुआ—छठीं वार तक मेरी समाधि से होनेवाली चित्त-विमुक्ति टूट चुकी है—तो क्यों न में आत्महत्या कर छूँ।

तव, पापी मार आयुष्मान् गोधिक के वितर्क को अपने चित्त से जान, जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् से गाथा में वौला—

हे महावीर ! हे महाप्रज्ञ ! जो अपनी ऋदि से दीस हो रहे हैं।
सभी वैर और भय से मुक्त ! सर्वज्ञ ! में पैरों पर प्रणाम करता हूँ ॥
हे महावीर ! आपका श्रावक, हे मृत्युक्षय !
मरने की हच्छा और विचार कर रहा है हे तेजस्वी ! उसे रोकें,
भगवन् ! आपके शासन में लगा कोई श्रावक,
हे लोक-विख्यात ! यिना निर्वाण पाये,
शैक्ष्य ही होते कैसे मृत्यु को प्राप्त हो जायगा ?
उस समय तक आयुष्मान् गोधिक ने आत्महत्या कर ली थी ।
तत्र भगवान् 'यह पापी मार है' जान गाथा में बोले—
धीर पुरुप ऐसे ही करते हैं, जीवन में उनकी आशा नहीं रहती है,
तृष्णा को जह से उखाइ, गोधिक ने निर्वाण पा लिया ॥

तय भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—भिक्षुओं !! जहाँ ऋषिगिरि के पास कालिशिला है वहाँ चल चलो, जहाँ गोधिक कुलपुत्र ने आत्महत्या कर ली है।

"भन्ते ! बहुत अच्छा" कह, उन मिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

तव, कुछ मिश्चओं के साथ मगवान जहाँ ऋषिगिरि के पास कालिशिला थी वहाँ गये। भग-वान् ने दूर ही से आयुष्मान् गोधिक को खाट पर कथा छकाये सोये देखा।

.. उस समय कुछ धु वाता सा, कुछ छाया सा, पूरब की और उड़ा जाता था, पिश्चम की ओर उड़ा कातामा, उत्तर की जोर उदा बाता या, दक्षिण की ओर उदा बाताया; कपर, नीचे, सभी जीर दवा कातामा.

तद भगवान् ने सिञ्चकों को बामन्त्रित किया—सिञ्चको | देवी इस्क पुदातासा इत्र क्याना सा सभी भीरदवावाता है।

सस्ते ! बी हाँ।

सिद्धानी ! यह पाणी सार गोधिक कुन्युन के विज्ञान की सभी जोर कोन रहा है—गोधिक कुन्युन कर विद्यान कहाँ प्रतिविद्य है। शिक्षानी ! गोधिक कर विज्ञान कहीं भी प्रतिविद्य नहीं है। वसने विशोध सा विद्यार !

सब पापी मार विश्व-पण्डु बीचा (=भो बीचा पढे वेख के समाज पीकर था) की के बहुँ सम बात ये बहुँ साथा और गाया में कोका---

> करर बीचे मीर देहे महे विश्वालों बीर अनुविद्यालों में मैंने कोश छात्र कर मी नहीं पापा वह गोधिक कहाँ मचा श वह चीर, एकि-सम्बद्ध ज्यापी छहा ज्यान-रत विन एक का वह बीचव की मुख्य व करते हुन्दे चुत्यु की सेना को बीच जुनवंत्र्य व महत्त्व कर करते गुज्य के वह से बजार गोधिक में परिनिर्माण पर क्रिया व मारी सोक में पन दसकी कांच से बीचा चिसक गाईं हमसे बह साह क्रिकट हो नहीं अन्तर्यांत्र के गया ॥

å ४ सत्तवस्थानि सत्त (४ ३ ४)

मार द्वारा साद सास पीका किया जाना

पैसा मैंने सुवा ।

पुरु समय समयान् करूपेका में शिर्डकरा नहीं के तीर पर अञ्चलक निर्धाप के नीचे विद्यार करते थे।

उस समय पापी आर साथ साथ से अगवान् का पीका कर रहा थः—वनमें कोई होप निजाकने की उच्छा से किना को कभी कोई बोप नहीं दिखा ।

ध्य पारी मार वर्डी मध्यान थे वर्डी बाया और भगवान से धावा में बोका-

वड़ा चिनिता सा हो बन में प्यान करते हो बना तुम्पारा बन बहा हो गया है जिसकी फिंड कर रहे हो ? बना गाँव में तुमने कुछ बनात किया है कि जिसके कोनों को अपनी मेंट भी नहीं देते ? बना तुम्में किमी से भी बारी नहीं होती ?

[भगवान्—]

शोड़ के सारे मुख को कबाए विशा उत्पाद किये विश्वा-रहित हो प्याय करता हूँ प्रीयम के सभी कोग और काकब को कार, है अगत कोगों के जिल है कालीद-रहित हो प्याय करता हैं ह मार-]

जिसे कहते हैं 'यह मेरा है', जो कहते हैं 'यह मेरा है',

यहाँ यदि तम्हारा मन लगा है, तो श्रमण ! मुझमे तेरा छुटकारा नहीं ॥

भगवान-

जिसे लोग कहते है वह मेरा नहीं है, जो कहते हैं वह मे नहीं हूँ, रे पापी । ऐसा जान, मेरे मार्ग को भी तू नहीं देख सकेगा ॥

मार-1

यदि तुम्हे मार्ग का पता लग गया है, क्षेम और अजर-पद-गामी. तो उस पर अकेला ही जाओ, दूसरों को क्यों सिखाते हो ॥

ि सरावान —]

लोग पूजते है कि मृत्यु के राज्य का पार कहाँ है, जी उस पार जाने को उत्सुक हैं. उनसे पुछा जाकर में बताता ह कि उपाधियां का विल्कुल अन्त कहाँ है ॥

िमार—ी

भन्ते। किसी गाँव या कस्त्रे के पास ही एक बावली हो, जिसमें एक केकड़ा रहता हो। तब. कुछ लड़के या लड़कियाँ उस गाँव या कस्त्रे से निकल कर उस वावली के पास जायेँ। जाकर उस केकडे को पानी से निकाल जमीन पर रख दें। वह केकड़ा जिधर पैर मोड़े उधर ही उसे वे लडके या लडकियाँ लकड़ी या पत्थर से पीटें और उसके अंग-प्रत्यंग को छोड़ दें। और, तब वह केकड़ा' 'फिर भी पानी में वैठने से लाचार हो जाय।

भन्ते ! ठीक वैसे ही, जो मेरे अच्छे वहे पुष्ट अग थे सभी को भगवान् ने तोड़ दिया, मरोद दिया, नष्ट कर दिया । भन्ते ! अब में भगवान् में दोप निकालने के लिये आने में असमर्थ हो गया ।

तव, पापी मार भगवान् के सम्मुख यह करुणा-पूर्ण गाथा बोला-

चर्वी जैसे उजले पत्थर को देख.

कौआ झपटा मारा, यह कुछ कोमल चीज होगी.

यड़ी स्वादवाकी होगी॥

वहाँ कोई स्वाद नहीं पा,

कौआ उद्दे गया , पत्थर पर झपटने वाले कीए जैसा.

गौतम को छोड़ में भाग जाऊँ॥

तव पापी मार भगवान् के सम्मुख यह करुणापूर्ण गाथा कह वहाँ से हट कर भगवान् के पास ही जमीन पर पालथी लगा बैठ गया। चुप हो, गूँगा रह, कंघा गिरा, वह जमीन को तिनके से खोदने छगा।

§ ५. मारदुंहिता सुत्त (४. ३. ५)

मार कन्याओं की पेराजय

तब, तृष्णा, अरित और रगा मार की लड़कियाँ जहाँ पापी मार था वहाँ ओईं। आकर पापी मार को गाथा में बोडीं-

तात ! किस क्यों हैं ? किस पुरुष के कियम में बोक कर रहे हैं ? इस उसे राग के बाक में कैसे बंगारी द्वाची को कार कर के आवेगी। वह आप के पता में रहेगा p

िसार-- ो

ा संसार में भाईत पुद्ध राग से नहीं काचे का सकते हैं; मार के शत्य से को निकक गये इसकिये में इतना चिन्तित हैं ॥

तब तृष्या अरित और रुगा सार की कड़कियों बही मगवान वे वहीं बाई। ध्यकर भगवान से बोकी—असम ! बाप के बचनें की सेवा करूँगी।—किन्तु, मगवान ने ध्यान नहीं दिना वर्षोंकि वे दर्शाव के सप हो बाने से कनुकर विभक्ति को या लाके थे।

तह मुख्य करति और रंगा सार की कहिकों ने एक और इंडडर ऐसी अन्त्रणा की-पुरुषों की चाह तरह तरह की होती हैं । तो हम कोग एक एक सी हमारियों के क्यू पर हैं ।

क्षते भी मराबाल् वे प्यान वहीं दिया क्योंकि वे क्षपाधियों के क्षण हो आने से ज्युचर विद्वारित को पालके में।

तव मार भी कड़कियों ने एक भीर इट कर ऐसी मन्त्रण की—पुरुरों की बाह तरह तरह भी होती है। तो हम कोग एक एक सी एक बार मसब कर चुकने बाकी कियों के रूप दो बार मसब कर चुकने बाकी कियों के रूप बीच कम बाकी कियों के रूप पड़ी उस बाकी कियों के रूप बर सें।

उसे भी भगवान् ने ज्वान नहीं दिवा क्योंकि वे उपाधियों के क्य हो बादे से स्पूचर बिसुक्ति

को पाचुके ने।

तप त्या, बरित और रमा सार की क्विकों ने एक और इट कर क्या-एस कोगों के रिता ने कीक ही कहा था:--

संसार में आहेंच् हुद्ध राग से नहीं कापे का शकते हैं।

सार के राज्य से को विकक गये इसकिये में इतया विन्तित हूँ ह

परि इस कोग किसी समय वा नाइन के पांच इस वरह कार्यों को बीवराग नहीं हुआ है व रूपको कारी कर बावी था मुँह से उपल क्षेत्र बसन हो बावा वा पासक हो बावा वा सत्त्राका हो बावा। सैसे करो कार्स सुक बीर मुख्ते बावी है वैसे ही वह सुक और मुख्ते कारा।

यर कुष्या अरित और रसा मार की कविकाँ वहाँ अगवाद ये वहाँ आई । काकर एक और कपी हो गई ।

पुक्र और कड़ी हो तुच्छा सार की कड़की सगवान से गावा में बोकी-

वदा विनिद्धता हो वन में व्यान करते हो क्या तुम्हारा वन तह हो गया है सिसकी विक कर रहे हो ? क्या गाँव में तुमते हुक उत्तरत किया है, कि सिससे कोगों को घरणी मेंद्र थी नहीं हेते ?

क (न्यस काम का जनमा मह या नहां क् क्या तुम्हें किसी से भी कोस्ती नहीं होती ? [मगदाम्—]

परमार्थं की माहि, इत्य की काम्बि समार्थं कीर बहुकाने वाले पहार्कों पर विश्वप पा सर्वेका प्याद करते हुए सुख का अनुसब करता हूँ, इसी से लोगों के साथ मिलता-जुलता नहीं हूँ,
मुझे किसी से भी दोस्ती नहीं लगती है।
तय, अरित, मार की लड़की भगवान से गाथा में घोली—
'भिक्ष ससार में कैसे विहार करता है ?
पॉच वाड़ों को पार कर लड़ें को कैसे पार करता है ?
कैसे ध्यान के अभ्यासी को काम सज्ञायं,
पकड़ नहीं सकतीं, वाहर ही वाहर रहती हैं ?

[भगवान्—]

जिसकी काया शान्त हो गई है, चित्त विमुक्त हो गया है, जिसे सरकार नहीं, स्मृतिमान्, विना घर का, धर्म को जान अधितर्क ध्यान लगाने वाला, न क्रोध करता है, न चेर वाँधता है, न मन मारता है ॥ भिक्षु ऐसे ही संसार में विहार करता है, पाँच बाढ़ों को पार कर छठें को पार करता है, वैसे ध्यान के अभ्यासी को काम सज्ञायें, पकड नहीं सकती, बाहर ही बाहर रहती हैं ॥

तव, मार की लड़की रगा भी भगवान से गाथा में बोली—
नृष्णा को काट गण और सघ वाला जाता है,
और भी बहुत प्राणी जायेंगे,
यह प्रव्रजित बहुत से लोगो को,
मृत्यु-राज से छुड़ा कर पार ले जायगा ॥

बुद्ध उन्हें ले जाते हैं, तथागत (=बुद्ध) अपने सद्धर्म से, धर्म से ले जाये जाने वाले, ज्ञानियों को ढाह कैसी।

तव तृष्णा, अरति और रगा, मार की लड़िकयाँ जहाँ पापी मार था वहाँ आ । पापी मार ने उन लोगों को आती देखा देखकर वह गाथा में बोला—

मूर्लं ! कमल की नाल से पर्वत को मथना चाहा, पहाद को नख से खोदना, लोहे को दाँत से चवाना, चटान को शिर से टकराना, पाताल का भन्त खोजना, या बृक्ष के हुँँठ को छाती से भिदाना चाहा हार मान, गीतम को छोद चले आओ॥

चटक मटक से आईं, तृष्णा, अरित और रगा, हवा जैसे रूई के फाहे को (विखेर दे)-बुद्ध ने उन्हें जैसे, विखेर दिया॥

त्तीय वर्ग समाप्त ।

पाँचवाँ परिच्छेद

५ मिश्चुणी-संयुत्त

इ १ आलविका सच (५ १)

काम मोग तीर जैसे हैं

पेसा सैने सुवा।

> संसार से सुरकारा नहीं हैं एकाम्य-सेवब से रूपा काववा ! सांसारिक कामों का मोग करो पीड़े कहीं पड़वाबा न पढ़े थ

त्रद साक्कियेका सिद्धाणी के सन में यह हुआं—कीव यह सबुष्य था असबुष्य गावा में बोक रहा है ?

तब आक्रमिका मिश्रमी के अन में यह हुन्या—यह पाणी आप शहरे वस कंपा और रॉपे करें कर देने और सान्ति अंग कर देने की इच्छा से साथा बोक पहा है।

तव आखिका मिछुनी 'बह पापी मार में बाव गाया में बोकी—

संसार से जो हुटकांग होता है प्रका से मैंने बसे या किया है, प्रमण पुरुषों के मित्र पाणी ! तुम उस पद को नहीं कानते ॥ सांसारिक नाम तीर मार्क बैसे हैं जो स्कण्मों की सुरसे रहते हैं जिसे तुम काम मोग कहते हो बसमें मेरी दुन्दि नहीं हैं जिसे तुम काम मोग कहते हो बसमें मेरी दुन्दि नहीं रही ह

सब पापी मार[े] आस्त्रिकः निञ्चनी नै सुर्से पहचान किया^न सनस बुधित भीर**िक्व** हो बहीं अन्तर्वात हो गया ।

[§] २ सोगासुच (५२)

सी-माय पया हरेगा !

भावस्ती में ।

तव मोदा मिसूनी मुबद में बहुन और वाय शीवर के आवाली में सिशास के किन हैंडे ! मिखारन से कीर, मोजन कर केने के बाद दिन के निहार के किए कहाँ अरुश्वन है वहाँ बसी गई। अन्यवन में देर वृक्ष कुछ के लीवे दिन के निहार के किए की गाई।

गव वाली मार सामा शिक्षणी को वहां केंद्रा और तीमर लग्ने कर देने, तथा समापि से गिरा देने के विचार में वहाँ सोमा मिश्रुमी भी वहाँ जाता । जाकर सोमा मिश्रुणी में याना में बोका:--- ऋषि छोग जिस पद को पाते हैं उसका पाना वहा कठिन है, दो अंगुल भर प्रज्ञावाली खियाँ उसे नहीं पा सकती हैं॥

तव, सोमा भिक्षणी के मन में यह हुआ—कोन यह मनुष्य या अमनुष्य गाथा में वोल रहा है ? तब, सोमा भिक्षुणी के मन में यह हुआ—यह पापी मार मुमे डरा, कॅपा बीर रागटे खड़े कर देने, तथा समाधि से गिरा देने के विचार से गाथा वोल रहा है।

तव, सोमा भिक्षुणी "यह पापी मार है" जान गाथा में वोली-

जय चित्त समाहित हो जाता है, ज्ञान उपस्थित रहता है, शीर धर्म का पूर्णत. साक्षात्कार हो जाता है, तब छी-भाव क्या करेगा !! जिस किसी को ऐसा विचार होता है—मै छी हूँ, अथवा पुरुप हूँ, अथवा कुछ और ही, उसी से मार ऐसा कह सकता है ॥

तव, पापी मार "सोमा भिक्षुणी ने मुझे पहचान छिया" समझ, दु खित और खिन्न हो वहीं अन्तर्थान हो गया।

§ ३. किसा गौतमी सुत्त (५३)

अझानान्धकार का नाश

श्रावस्ती में।

तव, क्रशा-गौतमी मिक्षणी सुयह में पहन और पात्र चीवर छे श्रावस्ती में भिक्षाटन के छिये पैठी।

भिक्षाटन से छैंट, भोजन कर छेने के बाद दिन के बिहार के छिए जहाँ अन्ध्यसन है वहाँ चली गई। अन्ध्यसन में पैठ, एक बूक्ष के नीचे दिन के बिहार के छिये बैठ गई।

तव, पापी मार समाधि से गिरा देने के विचार से गाथा में बोला-

पुत्र-मृत्यु के शोक में पदी जैसे, अकेली, रोनी स्रुत लिये, वन में अकेली पैठ कर क्या किसी पुरुप की खोज में हैं।

तव कुशा-गौतमी मिक्षणी के मन में यह हुंजा-- 'पापी मार 'गाथा बोल रहा है। तव कुशा-गौतमी ने "यह पापी मार है" जान गाथा में उत्तर विद्या--

पुत्र-मृत्यु के शोक से में जपर उठ चुकी हूँ, पुरुप की खोज भी जाती रही, न शोक करता हूँ, न रोती हूँ, आबुस ! तुमसे भी अब डर नहीं ॥ ससार में स्वाद छेना छूट चुका, अज्ञानाधकार हटा दिया गया, मृत्यु की सेना को जीत, आध्रय-रहित हो विहार करती हूँ ॥

तव पापी मार "कृशा-गौतमी भिञ्जणी ने मुझे पहचान लिया" समझ, दु स्तित और खिन्न हो वहीं अन्तर्थान हो गया।

§ ४, विजया सुत्त (५. ४)

काम-तृष्णा का नाश

श्रावस्ती में।
तम विजया मिश्चणी [पूर्ववत्] दिन के विद्वार के लिये बैठ गई।
तब पापी मार गाथा में बोटा —

कम उम्र बाली तुम सुन्दरी हो, और मैं एक नया कुमार हूँ,

प्रवाहिक साम से थाओ, इस मीन वदार्थे ॥ वद विद्यापा भिक्तपी में "वह पापी मार है जान गांचा में उत्तर विचा----

> लुभावने क्य शब्द रस शब्द श्रीर इपर्ध तुम्बर दी किये श्रीव होंगे हूँ मार ! शुक्ते असकी माणक्षकता नहीं इस गंदगी से मरे बारिए से प्रमाहर कार वह दो कार्य गाके से, मेरा मन इदला है कुम कार्य ही मेरी काम-गुक्स मिद गाई है। को रूप-खोका या कार्य-शक्ते का (देवला) है

भीर को ज्वान की शास्त्र धवन्याएँ हैं सभी में मेरा धवासान्यकार नष्ट हो पना है प तब पाणी मार "पिकार मिहाजी ये मुझे पहचान किया" समझ हुर्शकत और फिन्न हो वहीं करतार्वीय हो गया।

8ु५ **स्थान्यण्या सुच (**५५)

रत्यस्त्वर्णो की ऋदियमा

भावस्ती में।

तव उत्पक्ष्यको सिशुणी अन्यवन में किसी सुदुष्यित साक वृक्त के बीचे चड़ी हो गई। तब पापी सार शामा में बोका:—

> निश्चिम ! मुपुष्पित साथ कुछ के नीचे तुम कर्ककी बाई। हो तुम्हारे सैदा सीम्बर्ध वृसरा बाई है को बाई आई हो मादान ! बदमानों से तुन्दें कर नहीं क्याता ?

त्रव सत्यक्षवर्णा सिक्षमी ने "वह पापी मार है" नान गावा में कशर दियाः—

बेसे पदि सी इकार भी बदमास को कार्वे तो में कहीं बर सकती भेरा एक रिक्र जी कहीं हिस्स सकता । सबेकी देह कर भी मार | दुक्र से पुक्र सक वहीं ॥ सभी में सम्बद्धांव हो का सकती हूँ, हम्मारे पेट में पुस का सकती हूँ, सौंचों के बीच ककी रहवे पर भी पुम मुझे नहीं देख सकते ॥ सि समी ककी रहवे पर महिसारों भी स्वयं प्राप्त हो कार्यों हैं में समी ककी में महत्त्व हैं आहुए | दुससे में कहीं करती हैं में सभी ककी में मुख्य हूँ, कार्युस में महत्त्व करती हैं

त्तव पापी सार 'करपळावर्षा मिश्चनी वे सुखे पहचान किया' क्षसह हुएकित जीर क्षित्र हो वहीं कन्तवीय हो गया !

[§]६ पाठा सुत्त (५६)

जन्म-अङ्ग के दीय भावस्ती में।

ठव चाछा मिश्चनी दिव के विदार के किये कैड गई। यब पापी मार वहाँ चाछा मिश्चनी की वहाँ जावा। आवद चाछा जिश्चनी से वह शोका---भिक्षनि ! गुर्में क्वा गई। इचका है ? [मार]

आबुस ! मुझे जन्म ग्रहण करना नहीं रुचता है । तुम्हें जन्म ग्रहण करना क्यों नहीं रुचता ? जन्म लेकर कामों का भोग करता है ।

तुम्हे यह किसने सिखा दिया कि —हे भिक्षुणि ! तुम्हें जन्म-प्रहण करना मत रुचे ?

[चाला भिक्षुणी—]

जन्म लेकर मरना होता है, जन्म लेकर हु ख देखता है, बॉधा जाना, मारा जाना, कष्ट भुगतना, इसी में जन्म नहीं रुचता है। बुद्ध ने धर्म का उपदेश दिया, जन्म-प्रहण से छूटने को, सभी हु ख के प्रहाण के लिये, उन्हीं ने मुझे सखा मार्ग दिखाया। जो जीव रूप के फेर में पहें हैं, जो अरूप के अधिष्टान में, निरोध (=निर्वाण) को न जानते हुये, पुनर्जन्म लेने वाले।

तव, पापो मार "चाला भिक्षणी ने मुझे पहचान लिया" समझ दु खित और खिन्न हो वहीं भन्तर्थान हो गया।

🖇 ७. उपचाला सुत्त (५. ७)

लोक सुलग-धधक रहा है

श्रावस्ती में।

तव, उपचाला मिश्चणी दिन के विहार के लिए बैठ गई। तव, पापी मार 'उपचाला मिश्चणी से यह बोला — मिश्चणि! तुम कहाँ उत्पन्न होना चाहती है ?

आवुस ! में कहीं भी उत्पन्न होना नहीं चाहती।

[**मार**—]

त्रयस्त्रिश, और याम, और तुपित (नामक देव-लोक के) देवता, निर्माणरित लोक के देवता, वशवर्ती लोक के देवता हैं, वहाँ चित्त लगाओ, उसका सुरा अनुभव कर सकोगी॥

[उपचाला भिक्षुणी—]

प्रयिश्वित, और याम, और तुपित लोक के देवता, निर्माणरित लोक के देवता, वशवर्ती लोक के जो देवता वे सभी काम के बन्धन से बँधे हैं, फिर भी मार के वश में आते हैं॥ सारा लोक सुलग रहा है, सारा लोक धधक रहा है, सारा लोक लहर रहा है, सारा लोक काँप रहा है॥

जो कम्पित नहीं होता, जो चलायमान नहीं है, ससारी लोगों की जहाँ पहुँच नहीं है, जहाँ मार की भी गति नहीं होती, वहाँ मेरा मन लगा है ॥

त्तव, पापी मार "उपचाला भिक्षुणी ने मुझे पहचान लिया" समझ हु खित और खिल हो वहीं अन्तर्शन हो गया।

[§] ८ सीसपचाला सन्त (५८) वद्य धासन में रुक्षि

धायस्ति में ।

तव इतिर्पेषसामा निम्नणी विन के बिहार के किय बैठ गई। तब पायी मार क्षिपीपशास्त्र मिश्रणी से यह बोक्ता--

भिम्नाचि । तभें बीब सम्प्रताय रुचता है १

भावस ! अहे किसी का भी सरवदाय वहीं दवता है। मार—ी

किस किए हिए सका किया है ? निकाणी-तर साहदा हो रही हैं। कोई सम्प्रवाप तुन्हें नहीं रुचताः चना सहकती किरती है ?

ि जीपॉपबाका मिश्रणी—] (बर्म से) वाहर रहवे वाके सम्प्रदाय के होते हैं.

साधा-वर्षि में जिनकी कवा बोली है। उक्के सत्त संसे स्वीकार कार्रि हैं

से पार्थ के सामने जाने मार्ग हैं है द्याक्य-कम में भवतार किये हैं

क्षक जिसकी बरावरी का कोई एकए नहीं सर्व-विजवी जार जिए. को करों भी पराजित वहीं होते

सर्वेका सन्त, वर्ण स्थतन्त्र परम जानी सब कुछ ब्यनते हैं सभी कर्मों के धन की मास

बपावियों के क्षय हो बाने से विश्वकः बड़ी भगवान मेरे गुढ़ हैं

जन्हीं का धासन सुझे दक्ता है ह सब पापी मार 'द्योपोंपचारा। मिल्लमी ने शुक्षे पहचान किया" समझ हुर्रासत और किस हो बही अन्तर्धान हो गया ।

६९ सेम्रासच (५९)

द्या से बल्पन्ति और तिरोध

भागवस्ती में ।

त्व दीसा भिशाणी" विण क बिहार क किये बैठ शारे । सब पाची मार बीका निभाणी को बता - हैमें की बच्छा से आबा में बोसा---किसमें इस पुतके को खड़ा किया पुतके को सिरमने बाब्य कीन है ?

कहाँ से यह पुराका पेदा हुआ। कहाँ इस पुराके का निरीज हो काशा है ? त्वच राजा भिरत्यों में "यह पापी मार है" काच तामा में उत्तर दिया-

म की यह बुलबा स्वर्थ रावा हो गवा है म का इस जंजान को बुसरे किसी में कास दिया है दैश के होने में हो गवा है

देंगु के एक वाने से एक बाना (व्यविशेष हो बासा) है ह

जैसे किसी बीज को,
खेत मे रोप टेने से पांधा उग आता है,
पृथ्वी का रस, ओर तरी, दोनों को पाकर,
बेसे ही, छ स्कन्ध, धातु ओर छ. आयतनों के,
हेतु के होने से हो गया है,
उस हेतु के रूक जाने से निरोध हो जाता है॥

तव पापी मार ''दोला भिक्षणी ने मुझे पहचान लिया'' समझ, दु.खित और खिन्न होकर वहीं भन्तर्थान हो गया।

§ १०. विज्ञा सुत्त (५. १०)

आत्मा का अभाव

श्रावस्ती मे।

तव वजा भिक्षणी सुबह में पहन और पात्र चीवर ले श्रावस्ती मे भिक्षाटन के लिये पैटी।

भिक्षाटन से लौट, भोजन कर चुकने के बाद जहाँ अन्धवन है, वहाँ दिन के विहार के लिये चली गई। अन्धवन से पैठ, एक बृक्ष के नीचे दिन के विहार के लिये बैठ गई।

तत्र पापी मार बज्जा भिक्षुणी को .हरा, कँपा ओर रागटे खड़े कर देने, तथा समाधि से गिरा देने की इच्छा से जहाँ बज्जा भिक्षुणी थी वहाँ आया। आकर बज्जा भिक्षुणी से गाथा में बोला —

किसने इस प्राणी को बनाया है, प्राणी का बनाने वाला कहाँ है ? कहाँ से प्राणी पैदा हो जाता है, कहाँ प्राणी का निरोध हो जाता है ?

तय वज्रा भिक्षणी के मन में यह हुआ—कौन यह मनुष्य या अमनुष्य गाथा में बोल रहा है ? तब वज्रा भिक्षणी के मन में यह हुआ—यह पापी सार मुझे डरा, कॅपा और रोगटे खड़े कर देने,

तथा समाधि से गिरा देने की इच्छा से गाथा में बोल रहा है।

"प्राणी" क्या बोल रहे हो.

तव बच्चा भिक्षुणी ने "यह पापी मार है" जान, गाथा में उत्तर दिया --

मार ! तुम मिथ्या आत्म-दृष्टि में पहे हो, यह तो केवल सस्कारों का पुक्ष मर है, "प्राणी" में यथार्थ में कोई नहीं है ॥ जैसे अवयवों को मिला देने से,

"रय" ऐसा शब्द जाना जाता है, वैसे ही, (पॉच) स्कन्धों के मिलने से,

यस हा, (पाच) स्कन्या का मरून स कोई 'प्राणी' समझ लिया जाता है ॥

हु स ही उत्पन्न होता है, हु स ही रहता है, और चळा जाता है.

तु ख को छोद और कुछ नहीं पैदा होता है,

दु ख को छोड़ और विसी का निरोध भी नहीं होता है॥

तव पापी मार ''वज्रा मिक्षुणी ने मुझे पहचान लिया'' समझ वही अन्तर्धान हो गया।

भिक्षुणी-संयुत्त समाप्त

भ पाँच—रूप, वेदना, सज्ञा, सस्कार, और विज्ञान । † आत्मा । १५

छठाँ परिच्छेद

६ ब्रह्म-सयुत्त

पहला भाग

प्रथम वर्ग

६१ आयाचन सुच (६११)

पेसा मैंने सुना।

पुक्र समय नगवात् उद्योश में सभी तुरत ही बुद्दू खान कर नेरुखुरा नहीं के तीर पर अस्त्र पास विकोध के मीचे विकास करते थे।

त्रव प्रभाग्य में ज्याप करते मगवान् के मन में यह वितक तक्षा— मिने गामीर दुर्वसीन दुर होव स्रोत उत्तम तक से सम्माप्य विद्वन तथा परिवर्ती हारा सावने योग्य इस प्रमोकी या किया। यह सनता काम-मृज्या में रामय करने वाकी काम-रत काम में मनक है। काम में रामय करते वाकी इस सनता के किये वह जो कार्य-अरण करी मतील प्रमुख्यात् है वह दुर्वजीय है। भीर वह भी दुर्वर्त-वी कि यह सामी संस्थारों का सामय सभी उपाधियों स मुख्य, कृष्ण्य-सन विरोध (अद्भाव-निरोध) बाका निरोध व यहि में क्योंगदेस भी कहाँ और दूसरे कसको न समझ गार्थे सी मेंने किये यह तरवह और तरवाजीक की होती।"

दशी समय मगवान को पहले कभी न सुबी वह बबुभुत वाधार्ये सुद्ध पड़ीं---

'बह बर्म पावा कह सं वृक्तका व युक्त प्रकाशना । वहि राग-ब्रेप-प्रकाश को है शुक्त इसका कामना ॥ गंभीर कक्षी पारवुक दुर्वपूर्व स्काम प्रवीक का । सम्पन्न काहित सारक हारा व संस्कृत सेटाना वा

सरावात् के पेता समझने कं कारण जनका विश्व पर्य प्रवार की और न सुकका करन-उन्मुक्त की और सुक गया। ता महूक्पित-कहा वे अपनात् के विश्व की बात की बावकर द्वास किया-कील बारा हो बायमा है। बाब स्थामत नहींन सम्बद्ध संबुद्ध ना विश्व पर्य-प्रवार की और व स्वर

भस्य प्रसम्बद्धा (#प्रदासीनता) की ओर शुक्र जाने 19

मगव में सक्षित चित्तवाओं से चिन्तित

पहले महाब धर्म पंता एका ।

(अय) अमृत का द्वार खुला गया,
विमल (पुरप) से जाने गये इस धर्म को सुनें ॥
जेसे शोल पर्वत के शिखर पर खड़ा (पुरुप),
चारों ओर जनता को देखे।
उसी तरह, हे सुमेध ! हे सर्वत्र नेत्र वाले!
धर्म-रूपी महल पर चढ़ सब जनता को देखें॥
हे शोक रहित! शोकाकुल जन्मजरा से पीडित जनता को देखों,
उठो बीर! हे संग्रामजित्! हे सार्थवाह! उऋण-ऋण!
जग मे विचरो, धर्म-प्रचार करो,
भगवन्! जानने वाले भी मिलेंगे॥

तब भगवान् ने ब्रह्मा के अभिप्राय को जानकर, और प्राणियों पर दया करके, ब्रह्म-नेत्र से लोक का अवलोकन किया। ब्रह्म-नेत्र से लोक को देखते हुये भगवान् ने जीवों को देखा, उनमें कितने ही अरप-मल, तीक्ष्ण-बुद्धि, सुन्दर स्वभाव, शीघ्र समझने योग्य प्राणियों को भी देखा। उनमें कोई कोई परलोक और पाप से भय करते, विहर रहे थे। जैसे उत्पिलिनी, पिश्तनी या पुढरीविनी में से कितने ही उत्पल, पद्म या पुढरीक उदक में पैदा हुये, उदक में बढ़े, उदक से बाहर न निकल (उदक के) भीतर ही इबे पोपित होते हैं। कोई कोई उत्पल (=नीलकमल), पद्म (=रक्तकमल), या पुढरीक (=इवेतकमल) उदक में उत्पन्न, उदक में बढ़े (भी) उदक के वरावर ही खड़े होते हैं। कोई कोई उत्पल उदक से बहुत कपर निकल कर, उदक से अलिप्त (हो) एउ होते हैं। इसी तरह भगवान् ने बुद्ध-चक्षु से लोक को देखा—अल्पमल, तीक्ष्ण-बुद्धि, सुस्वभाव, सुवोध्य प्राणियों को देखा जो परलोक तथा पाप से भय खाते विहार कर रहे थे। देख कर सहम्पति ब्रह्म से गाया में कहा—

उनके लिये अमृत का हार खुछ गया, जो कानवाले हैं, वे (उसे सुनने के लिए) श्रद्धा छोडें^र, हे श्रद्धा ! पीड़ा का ख्याल कर, मैंने मनुष्या में निपुण, उत्तम, धर्म को नहीं कहा॥

तव ब्रह्मा-महम्पति—''भगवान् ने धर्मोपदेश के लिये मेरी प्रात मान ली''—यह जान भगवान् को अभिवादन और प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तर्धान हो गया।

§ २. गारव सुत्त (६ १.२)

ऐसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् अभी तुरत ही बुद्धत्व लाभ कर उरुवेला में नेरञ्जरा नद्री के तीर पर अजपाल निप्रोध के नीचे विहार करते थे।

तव एकान्त में ध्यान करते भगवान् के चित्त में ऐसा वितर्क उठा—विना किसी को ज्येष्ठ माने और उसके प्रति गौरव रखते विहार करना दु खद है। मैं किस श्रमण या ब्राह्मण को ज्येष्ठ मान, उसका सत्कार और गौरव करते विहार करूँ?

तय भगवान् के मन में यह हुआ—अपिष्णं शील की पूर्ति के लिये ही किसी दूसरे श्रमण या बाह्मण को ज्येष्ट मान उसका सत्कार और गौरव करते विहार करना चाहिये। किन्तु, में—देवताओं के साथ, मार के साथ, ब्रह्मा के साथ, इस सम्पूर्ण लोक में, तथा श्रमण ब्राह्मण देव और मनुष्यवाली

१ अद्धा छोडे = कान दे=अडापूर्वक सुने ।

इस प्रका में—अपने बंसा किसी बुसरे कामण या बाहाण की शीकसम्बद्ध नहीं देखता 🐔 जिसे अपना कोड माम को सत्वार कीर शीवन कर्यों !

अपरिपूर्ण समाधि की पूर्ति के किये ही किसी तूसरे अमल या नाक्षण को ज्वेष्ट मात्र उसका

मत्कार बार गीरब करते विद्वार करना बाहिये ।

मारिपूर्ण महा की पूर्ति के किये ही । भवरिपूर्ण केमकि की पति के किये ही ।

यपरिएमं विद्युष्टि ज्ञान-वर्षन क कियं ही किसी तूसरे समय या माझण को ज्येष्ट मानवर उसका सत्कार और गीरव करि विद्यार करवा चाहिये । किन्तु में अपने वीसा किसी वूसरे अमय या माझण को विद्युष्ट-ज्ञान-वर्षन से सम्बन नहीं देखार हैं विसे अपना क्रमे मान क्ष्मे सम्बन्ध और गीरव कर्ने।

तो अच्छा हो कि मैं शपने शबक पर्म को ही क्येप आब क्ये शतकार और गौरव करते

क्रिकार क्रक्र ।

तब सहस्पति महा मगवाप के वितर्ज को वपने चित्र से बान वैसे—वक्ष्याप् पुरूप समेग्री वाँह को पसार के जीर पसारी बाँह को समेट के वैस ही—महा कोक में अन्तर्जन हो मगवाप के सामने मगर हुआ।

तब सङ्क्ष्य ते बहा। कपरभी को एक पत्र्ये पर सन्माछ मगवाय की ओर हाम क्षेत्रकर

यह बोधा—

समन्तृ पूनी ही बात है। समन्तृ पूनी ही बात है। सन्ते । पूर्व पुन के को कहूँ सम्बन्ध सम्बन्ध हो गमें हैं वे समन्त्र भी पर्ध को ही स्वत्र मान वसे सरकार कीर गारंव करते दिहार किया करते थे। सन्ते ! सन्ति काक में को बादेंद सम्बन्ध समुद्ध होगे वे समन्त्रम सी पर्म को ही । इस समन, महँग, सम्बन्ध करनुत्व सगन्ताम् भी पर्म को ही स्वेष्ठ साम बसे सरकार और गीरव करते विदार कीं।

सहस्पति प्रका में यह बड़ा । वह बहकर फिर वह भी नहां---

मृतकाक में मामुद्ध को हो गये क्यागात में बो बुद्ध होंगे सीर को कारी सामुद्ध है बहुतों के तोड स्थापेवाके। सामी चामें के मित्र गीरिय-तीक हो विद्यार करते में और वरते हैं हैसे ही विद्यार करेंग भी बुद्धों की यही च्यक है। इसकिये परसार्थ की कामण करनेवाक और सहस्य की माजवा स्वाप्य के तो सद्धार्थ हा गीरब करना चाहिये

ई ३ शक्षदेव राच (६ १ १)

आइति हका को नहीं मिसती

र्मना भिने सुना 1

ण्य समय भगवान् आयस्ती में बनायांपिण्डिकः व जानवन काराम में विदार करते से । जम समय किसी माहायीं का ब्राह्मदृष्ध नामक एक दुव समयान् के पास पर से वेदर दो ब्राह्मदित हो पास था।

तान भानुष्पान् प्रशाह्य में घरीना जनान्त में सध्यात्त आतापी (अवसेली की तपानेवाता) और प्रदिताना दो विदार करते महत्त्वपै के उस अनुसर काम प्रमा को देखते ही देखते एवर्च बान और साक्षात् कर लिया जिसके लिये कुछपुत्र सम्यक् घर से वेघर हो प्रव्यजित हो जाते हैं। "जाति क्षीण । गई, ब्रह्मचर्य-वास सफल हो गया, जो करना था सो कर लिया गया, अव वाद के लिये कुछ नहीं रहा जान लिया। आयुप्मान् ब्रह्मदेव अर्हतों में एक हुये।

तव, आयुष्मान् ब्रह्मदेव सुवह में पहन और पात्रचीवर ले श्रावस्ती में भिक्षाटन के लिये पैठे श्रावस्ती में विना कोई घर छोड़े भिक्षाटन करते जहाँ अपनी माता का घर था वहाँ पहुचे।

उस समय, आयुष्मान् ब्रह्मदेव की माता बाह्मणी प्रतिदिन ब्रह्मा को आहुति दे रही थी।

तय, सहस्पति ब्रह्मा के मन में यह हुआ—यह आयुप्मान् ब्रह्मदेव की माता ब्राह्मणी प्रतिदि ब्रह्मा को आहुति दे रही है। तो, मैं चलकर उसे सबेग उत्पन्न कर दूँ।

तव, सहम्पति ब्रह्मा—जैसे कोई यलवान् पुरुष समेटी बाँह को पगार दे और पसारी बाँह क समेट ले वैसे ही—ब्रह्मलोक में अन्तर्धान हो आयुष्मान् ब्रह्मदेव की माता के घर के सामने प्रगट हुआ

तव, सहम्पति बहा आंकाश में खड़ा हो, आयुप्मान् ब्रह्मदेव की माता बाह्मणी से गाथाओं में बोला—

हे ब्राह्मणि । यहाँ से ब्रह्मलोक दूर है, जिसके लिये प्रतिदिन भाहति दे रही हो, हे ब्राह्मणि ! ब्रह्मा का तो यह भोजन भी नहीं है, बहा-मार्ग को बिना जाने क्यों भटक रही है ॥ हे ब्राह्मणि । यह तुम्हारा (पुत्र) ब्रह्मदेव, उपाधियों से मुक्त, देवताओं से भी वढ़ा-चढ़ा, अपनापन छूटा, भिक्षु, जो किसी दूसरे को नहीं पोसता, तुम्हारे वर भिक्षा के लिये भाया है ॥ सत्कार के योग्य, दु ख-मुक्त, भावितात्मा, मनुष्य भौर देवताओं का पूजा-पात्र, पापा को हटा, ससार से जो लिस नहीं होता, शान्त हो भिक्षाटन कर रहा है॥ न उसके कुछ पीछे है, और न कुछ आगे. शान्त, बुझा हुआ, उत्पात-रहित, इच्छा-रहित, रागी और वीतराग सभी के प्रति जिसने दण्ड त्याग टिया है, वही तुम्हारी आहुति अग्र-पिण्ड को भोग 'लगावे॥ क्लेश-रहित , जिसका चित्त उढा हो गया है, दान्त नाग जैसा स्थिरता से चलनेवाला, भिक्षु, सुशील, सुधिमुक्त चित्त, वहीं तुम्हारी आहुति अग्र-पिण्ड को भोग छगावे ॥ उसी के प्रति भटल श्रद्धा से, दक्षिणा-पात्र के प्रति दक्षिणा का दान कर. भविष्य में सुख देनेवाला पुण्य कर, हे बाह्मणि । धारा पार किये सुनि को देखकर ॥

उसी के प्रति चाक सक्षा से ब्राह्मणी से बृक्षिण पात्र के प्रति पृष्टिचा का बात किया ! प्रतिच्य में सुन्त बेलेबाका पुष्प किया सबसागर पार किये सुनि को बेलकर !

§ ४ पदम्यास्त (६१४)

वक दावा का मान-मर्चन

पैसा मैंने सुना।

एक समय भगवाद आवस्त्री में मनायपिष्टिक के जीतपम बाराम में विदार कारों में । मम समय चंक प्रद्वा को ऐसी राज-रिंड क्लक हुई यी—वह निज है वह जुन है यह साइमर्ट है यह अपन्य है वह हुन्वेवाका नहीं है यहां (न्यहाडोक में बना रहता) न पेहा होता है म दुरावा होता है व समात होता है न वहाँ से मरकर कही तुसरी बगह कम्म प्रदा्ज करता है और इससे वहनर दूसरी मुक्ति भी नहीं है।

तन सगवाद यक ब्रह्मा के सन की बात को कपये विक से बान —वैसे कोई बस्त्रमान् पुरूप समेधी बाँद को प्रधार ने और प्रसारी बाँद को समद के बैसे ही—वतवन में अन्तर्यान हो इस श्रद्धकों

में प्रगट हुवे।

यक प्रकार में मगवाब को तूर सं ही आते देखा । वेषकर सगवान को यह कहा---मगरिय ! प्रवारें । सारिय ! आवका स्वागत हो । सारिय ! विरक्षक पर वहाँ प्रवारते की हुपा की हैं । मगरिय । यह निकार्त की बीर सक्से वषकर दसरी मुख्य में वर्षों हैं ।

उसके ऐसा कहने पर मगनान् ने बक नका को यह कहा---

सांक है यक नहां निविद्या में यह गने हैं। सोक है यक नहां विविद्या में यह गने हैं। वे फीनल रहते हुएे भी उस नित्य कर रहे हैं। न्युत रहते हुने भी उसे भूग कर रहे हैं। स्वास्त्य रहते हुने भी उस सारस्य कर रहे हैं। सरकाश्या होते हुने भी उसे सक्तर कर रह हैं। हरन्याला होते हुने भी उसे नहीं हरनेशांका कर रहे हैं। कहीं पूर्व बेंगा है। उसे कर रहे हैं वहाँ पैदा नहीं होता । इसके बहुकर भी सान्ध पुरित (विश्वान) के होते हुने कर रहे हैं कि इससे नहकर दूसरी शुक्त नहीं है।

> है गीता ! इस बहुतर (महा) जपने पुण्य-कर्म से वह जिन्द्रारवाड़े आदिमार से छूटे हैं महत्त्वीज में उरण होना ही हुएकों से क्षिता पुष्टि है, इस हो कोग (हेबर कर्म विमांता आहे मामों सेंक) पुष्टारत हैं।

भिगवान--

दे बक ! इसकी बाजु भी योषी ही है क्षत्री नहीं तिस भाजु को तुम क्ष्मती समझ रहे हो । मैक्को इसारों और करोशे वर्ष की है अपना ! तुम्हती आजु को मैं बायता हूँ ॥ मैं कम्मार्थी समावाद हूँ । व्यक्ति जारा और सोक स मैं करर बक्त सवा हूँ ।

विक ब्रह्मा—]

मेरा पहला शील ओर बत क्या था ? आप कहे कि मै जानूँ॥

[भगवान्-]

जो तुमने बहुत मनुष्यों को पानी पिलाया था, जो घाम में रोटाये प्यासे थे, यही पहले का तुम्हारा शील-वत था, सोकर जागे के ऐसा मुझे याद है। जो गंगा के किनारे धार में पडकर. वहें जाते पुरुष को तुमने वचा दिया था. यही पहले का तुम्हारा शील-व्रत था; सीकर जागे के ऐसा मुझे याट है ॥ गगा की धार में हे जायी जाती नाव को. मनुष्य की लालच से बड़े सर्प-राज के द्वारा, वड़ा वल लगाकर छुडा दिया था, यहां पहले का तुम्हारा शील-व्रत था, सोकर जागे के ऐसा मुझे याद है ॥ में कष्प नाम का तुम्हारा शिष्य या, उसे यहा बुद्धिमान् समझा, यही पहले का तुम्हारा शील-झत था, सीकर जागे के ऐसा मुझे याद है।।

[यक ब्रह्मा—]

अरे। आप मेरी इस आयु को जानते हैं,

• वैसे ही बुद्ध अन्य वातों को भी जानते हैं,
सो यह आप का देदीप्यमान तेज,

महालोक को प्रकाश से भर दे रहा है ॥

§ ५. अपरादिद्धि सुत्त (६ १ ५)

व्रह्मा की बुरी दृष्टि का नारा

श्रावस्ती में।

उस समय किसी ब्रह्मा को ऐमी पाप-दृष्टि उत्पन्न हो गई थी- कोई ऐसा श्रमण या ब्राह्मण नहीं है जो यहाँ आ सके।

तम, भगवान् [पूर्ववत्] उस ब्रह्मलोक में प्रगट हुये।

तब भगवान् उस ब्रह्मा के ऊपर आकाश में वलती आग जैसे पालथी लगाकर बैठ गये।

तव, आयुष्मान् महामौद्गल्यायन के मन में यह हुआ—भगवान् इस समय कहाँ विहार करते हैं ?

तय आयुष्मान् महामौद्गल्यायन ने अपने अलौकिक विशुद्ध दिन्य-च्छु से भगवान् को उस ब्रह्मा के ऊपर आकाश में वलती आग जैसे पालथी लगाकर बैठे देखा। देखकर, जेतचन में अन्तर्धान हो ब्रह्मलोक में प्रगट हुये। ठा आयुष्यान् महाआहरूपायन उस महा क उत्तर आकाश में बक्सी आग जमें पारूपी स्मा कर पूरव की ओर मतवान् म कुछ नीच बैठ गये।

ता भाषुष्मान् भ्रद्वानाद्यय कंशन में यह हुआ—मगनाज् इस समय कही विदार करते हैं ? [प्रानत] तन भाषुष्मान् भ्रद्वान्यण दनियम की और भगवान् स कुन जीने केत तने ! [प्रोनत] तत भाषुष्मान् भ्रद्वान्य रिप्टम की और भगवान्य से कुन जीने केताने ! तत भाषप्मान्य क्षात्रस्म "दन्य की भीर भगवान्य से कुन शीने केताने !

तत्र भायच्यान् अहासीत्रस्तायम् उस महार से गाया में बोलेः---

आयुम⁹ भाज भी तुम्हारी यही पार्का है जी ग्रही पारणा यहके थी ? इस हडे हा *सपम यो-*को तिस्य कांड में हम महानव का ?

[ब्रह्म-]

सारिय । आज सरी बह पारणा नहीं है जो पहछ थी देय रहा हूँ सवस बहे था दिएव लोड़ में इस सहारोज को । स्रक्ता लाज से यह अभ कह सकता हूँ कि से निया अन साधना है ॥

तर माराज् उस बहा का संवेग दिला अहम्पाठ में असराज हो जासपुत में सगर हुने ! तर उस बहा ने करने एक मार्था को आमिश्य किया—सुनी मारिय ! यहाँ आयुष्पान, सहासाज्ञ्यापन है वहाँ आभा ! यावा आयुष्पान् सहासीहरूपावन से यह कहा—मारिय मीज्ञ्यायन ! क्या माराज्ञ क नुसर सी धायक ऐन ही जादियान् और समार्थी हैं जैसे आप सीहरूपायन कार्यन कवित जनस्व ?

"मारिव हे बहुन भरता कह वह साथी उस मझा को उत्तर है जहाँ लाकुत्वाच् महामीहरूना वस से बहाँ गया। जाता महामाहरूकाव ले बोन्स-आरिव माहरूनायव ! बच्च धानवाद के सूनरे औ साबद देग ही क्षत्रिमाय भीर जागरी हैं जैस अब माहरूनायन कारवण वरिशन वा अनुस्त है

नव भारतमान महामाजस्थायन ने प्रमे गांचा में बनर दिया --

तुम्मान् अद्यासाइ स्वाधन व वस गाया स वनर गहुन। तीन विधाल की जाननेवाल का जुड़ाल विभ की कारी जाननेवाल साधवन्धील असा कहेंग

मुद्र के पहुंच आवक है । नव वह अमुस्मान प्रदासाप्त्रकारण के वह का अधिकादक और अमुसादक कर अहीं वह सहारतारण का वहीं तथा अच्या करा सहार से बाल ---

भाषुत्माम् सहामानुदरायत् वे वहा हि-

मंत्र विद्याची का क्षानवरण काहि हास विभाव कर्ने बाजनेवान कावव प्रीय ५ ह घरीन वह च बहुन कावह दे छ

वनने पर बरा र मान्य होका महा न उसके करे का अधिनश्य किया ।

§ ६. पमाद सुत्त (६. १. ६)

ब्रामा को संविग्न करना

श्रावस्ती में।

उस समय भगवान् दिन के विहार के लिये ध्यान लगाये वैटे वे ।

तव, सुब्रह्मा और शुद्धाचास नाम के दो प्रत्येक प्रशा जहाँ भगवान वे वर्श भावे। आकर एक एक किवाइ से रंग घड़े हो गये।

तव, सुब्रह्मा प्रत्येक ब्रह्मा ने शुद्धावास प्रत्येक ब्रह्मा को यह करा—मारिप । भगवान् में सत्यम करने का यह समय नहीं है, भगवान् दिन के विहार के लिये ध्यानस्थ है। हाँ, फलाना ब्रह्मलोक ब्रह्म उन्नतिशीस और गुरुजार है। किनु ब्रह्में का ब्रह्मा प्रमाद-पूर्ण हो बिहार करता है। आओ मारिप । जहाँ वह ब्रह्मलोक हैं वहाँ चर्च। चरकर उस ब्रह्मा को संवेग दिलाई।

"मारिव ! वहुत अच्छा" कह, शुद्धावास प्रत्येक वला ने सुब्रह्मा प्रत्येक वला को उत्तर दिया।
तय, वे भगवान के सामने अन्तर्शन हो उस लोक में प्रगट हुये।

उस त्रहा ने उन ब्रह्माओं को तूर ही में आते देगा। देख, उन ब्रह्माओं को यह कहा —हें सारियो। आप कहाँ में पंचार रहें हैं ?

मारिप ! हम लोग उन अर्हत् सम्यक् सम्यक् सम्यक् भगवान् के पास से आ रहे है । मारिप ! आप भी उन भगवान् की सेवा की चलेंगे ?

ऐसा कहने पर, यह ब्रह्मा उस प्रमाब का अनाटर करते हुये, अपने को हजार गुना वडा रूप यना सुब्रह्मा प्रत्येक ब्रह्मा से बोला —मारिप! मेरी ऋदि के इस प्रताप को देखते हैं ?

हाँ मारिप । आप की ऋदि के इस प्रताप को देखता हैं।

मारिप ! में ऐसा ब्रिह्मान् और प्रतापी होते हुये भी कियी दूसरे श्रमण या ब्राह्मण की सेवा को क्यों चर्हें ?

तव, सुमह्मा प्रत्येक ब्रह्मा अपने को दो हजार गुना वड़ा रूप बना उस ब्रह्मा से बोला —मारिप ! मेरी ऋदि के इस प्रताप को देखते हैं ?

हाँ मारिप । आपकी ऋदि के इस प्रताप को देखता हूं।

मारिप ! हम और आप से भगवान् ऋढि तथा प्रताप में बहुत वहे-चहे है। मारिप ! आप उन अर्हत् सम्बद्ध भगवान् की सेवा को चड़ेंगे ?

त्र, उस ब्रह्मा ने सुब्रह्मा प्रत्येक ब्रह्मा की गाथा में कहा --

तीन (सीं) गरुड़, चार (सीं) हस, और पाँच सी वाधिन से युक्त मुझ ध्यानी का, है ब्रह्मा ! यह विमान जलते के समान, उत्तर दिशा में चमक रहा है ॥

[सुब्रह्मा---]

अभापका विमान कैसा भी क्यों न जले, उत्तर दिशा में चमकते हुये। रूप के सदैव विनश्वर स्वभाव को देख, उस कारण से पण्डित रूप में रमण नहीं करता॥

तव, सुब्रह्मा प्रत्येक ब्रह्मा और शुद्धावास प्रत्येक ब्रह्मा उस ब्रह्मा को सवेग दिला कहीं अन्तर्धान हो गये।

यह ब्रह्मा दूसरे समय से उन अर्हत् सम्यक् सम्बद्ध भगवान् की सेवा को गया। १६

१ ७ कोकालिक स्रुत्त (६१७)

कोकारिक के स्थान व में

भाग्यनी में १

इस समय भगवान दिन के विदार के किये प्यानस्य केंद्रे थे।

त्रव सुप्रक्षा और शुद्धाचास नाम के दो प्रत्येक प्रका बहुँ समयान् थे वहाँ साथे। स्थक्त, एक-एक विकास में क्या कहे हो गये।

तब सुमद्या प्रत्येक बहा। कीकालिया मिल्लु की बहेश्य करके भगवान् वे सम्भूष मह

गामा चोकाः—

विद्यास बाह वहीं है उसका यक्षा कौन पण्डितकान बाह क्यापि की हप्का करेगा। विस्तका पार वहीं है उसका पार क्याणे की कोशिश करनेवाके की मैं सह और पुरुष कम समझता हैं।

⁸ ८ तिस्सक सत (६१८)

नियमक के पारक्ता में

आधस्ति में ।

उस समय मनवाब जिम के विवार के किये व्यावका केंद्र ने 1

रप सुद्रक्षा और शुद्धाधास पुरूपक कियाद से क्या पड़े हो गये। रुप सुवका प्रत्येक वक्का कृतमोरक तिरसक मिहा के विषय में समयाद के सस्सुध वर्ष गावा क्रेका:—

> किसका बाह वहीं है अस्त्र कीन हुदिसान् बसका बाह कागाना वाहेगा ? विस्तका पार नहीं है कसका पार कमाने की कोशिक करनेवाडे को मैं सह आर प्रका-विद्वीय समझता है है

8९ तुर्मक सुच (६१९)

कोकादिक को समग्रात

भावस्ती में।

त्यं तुद्र प्रत्येक प्रद्वा शत योधने पर अपनी चमक सं आरे जीवचन को चमको हुये वर्षे कांक्रारिक मित्रु था वर्षे आया। आकर आकार में यहा हो कोक्रारिक मित्रु से बोधा—हे कोक्रा किक! सारिपुत्र भीर मीज्ञास्यायन के मित्र किक्य में सन्ना काली। सारिपुत्र और मीन्नस्यायन वहें करो मित्र हैं।

भारुस ! तुम कीन हो ?

में तुत्रु प्रत्येक नका हैं।

भावुस ! चया प्रगावान् में तुमकी जनागाओं होना नहीं बताबा था ! तब वहीं कैसे धार्च ! देवी, तुम्हारा पह कितना अवसाब है !

> पुरुष के कम्म के साथ दी साथ करावे हुँदू हि युक्त कुरार पेया होता है । कसमें अपने ही की कारा करता है जूनों कुरी बार्से बीकते हुने ॥ मो जिल्ल्यीय की प्रसंस्य करता है

या उसकी निन्दा करता है जो प्रशसा-पात्र है,
मुँह से वह पाप कमाता है,
उस पाप के कारण उसे कभी सुख नहीं मिलता ॥
यह दुर्भाग्य छोटा है,
जो जूण में अपना धन खो बैठे,
अपने और अपने सब कुछ के साथ .

सबसे वडा दुर्भाग्य तो यह है
जो बुद्ध के प्रति कोई अपराध छगावे॥
सो, हजार निरर्बुट,
छित्तस और पॉच अर्बुट तक,
आर्य पुरुप की निन्दा करने वाला नरक में पकता है,

§ १०. कोकालिक सुत्त (६ १. १०) कोकालिक द्वारा अग्रश्रावकों की निन्दा

थावस्ती में।

तय, कोकालिक भिक्ष जहाँ भगवान् ये वहाँ आया और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ गया।

एक ओर बैठ कोकालिक भिक्षु ने भगवान् को कहा—भन्ते । सारिपुत्र और मौद्गल्यायन पापेच्छ हैं, पाप-पूर्ण इच्छाओं के बक्ष में पडे हैं।

इस पर मगवान् ने कोकालिक मिश्रु को कहा—ऐसी वात मत कहना कोकालिक । ऐसी बात मत कहना कोकालिक । कोकालिक । सारिपुत्र और मौद्गल्यायन के प्रति मन में श्रद्धा लाओ। सारिपुत्र और मौद्रल्यायन बढ़े अच्छे हैं।

दूसरी बार भी कोकालिक मिश्च ने भगवान् को कहा—भन्ते । मगवान् के प्रति मुझे वड़ी श्रद्धा भौर वड़ा विश्वास है, किंतु, सारिपुत्र और मौद्गल्यायन पापेच्छ हैं, पाप-पूर्ण इच्छाओं के वदा मैं पड़े हैं।

दूसरी बार भी भगवान् ने कोकालिक भिक्षु को कहा— सारिपुत्र और मौद्गल्यायन वहे अच्छे हैं।

तीसरी बार भी।

तव, कोकालिक भिक्षु आसन से उठ, भगवान् को प्रणाम् और प्रदक्षिणा करके चला गया। वहाँ से आने के बाद ही, कोकालिक भिक्षु के सारे शरीर में सरसों भर के फोड़े उठ गये।

सरसों भर के हो मूँग भर के हो गये, मटर भर के हो गये, कोलिट्ट भर के हो गये, वैर भर के हो गये, वाये भर के हो भर के हो भ्रूट गये भी और लहू की धार चलने लगी।

उसी से कोकालिक भिष्ठ की मृत्यु हो गई। मर कर कोकालिक मिश्रु पद्म नामक नरक में उत्त्वन्न हुआ—सारिपुत्र और मोद्रस्यायन के प्रति बुरे भाव मन में लाने के कारण।

तय, सहस्पति मधा रात बीतने पर अपनी चमक से सारे जेतचन को चमका जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो गया।

एक ओर खड़ा हो, सहरूपित ब्रह्मा ने भगवान को यह कहा — भन्ते ! कोकालिक भिक्षु की मृत्यु हो गई। भन्ते ! सारिपुत्र और मोद्गल्यायन के ब्रित मन में ब्रेर भाव लाने के कारण कोकालिक भिक्ष मर कर पद्म नरक में उत्पन्न हुआ है।

सहस्मति प्रका ने यह कहा । वह कह, संगवान् की शतिवादन और प्रवृक्षिण कर वहीं सम्बद्धांन हो गया ।

कस रात के बीतने पर अगवान थे भिक्षुमाँ का आसन्तित किया—भिक्षुमाँ। इस रात की सहस्पति महा। । असे अभिवादन और महस्रिण कर वहाँ अन्तवीन हो गया।

त्व किसी शिक्षु से सगवान को यह कहा—सन्ते | एका नरक में किसनी क्षमी आयु कोती हैं ! सिसु ! एका नरक को आयु वही करती होती हैं, यह कहा नहीं का सकता है कि इतने साक या इतने सी साक या इतने कवार साक या इतने काफ साक ।

मले ! प्रसारी कोई बच्छा की का सकती है ?

भगवान बोके--की का सकती है।

भगवान् वे वह कहा । इतना कहफर बुद्ध और भी बोके:---

प्रकृष के क्रम्य के साथ ही साथ उसके सैंड में पष बळार पैश होता है। क्ससे अपने भी को कादा करता है मूर्च तरी वार्ते बोकते हुये ॥ को निन्दनीय की प्रशंसा करता है या जनकी निन्दा करता है को असंसा-पास है र्शेष सं वह पाप कमाता है। कस पाप से क्से कमी शुक्र नहीं सिक्ता ॥ बह हमाँज कर है को जप में अपना चन हार अपन शपने और अपने सब ब्र**ड** के साथ s सब से बढ़ा बुमीम्ब तो बह है को तब के मिर कोई अपराध कमाने ह भी बनार निर्मंत. क्रविस और पाँच वर्त्रद सक माने प्रचय की मिला करने बाका वजन और अन को पाप में कता ॥

भयम वर्ग समात ।

दूसरा भाग

द्वितीय वर्ग (पञ्चक)

१. सनंकुमार सुत्त (६२.१.)

बुद्ध सर्वश्रेष्ठ

ऐसा मैने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह में सर्पिणी नदी के तीर पर विद्वार करते थे।

तव, ब्रह्मा सनत्कुमार रात बीतने पर । एक ओर खडा हो, ब्रह्मा सनत्कुमार ने भगवान् से गाथा में कहा—

मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ट है, जात-पात के विचार करने वालों के लिये विद्या और आचरण से सम्पन्न (बुद्ध), देवता और मनुष्यों में श्रेष्ट है ॥

वहा सनत्कुमार ने यह कहा। बुद्ध भी इससे सम्मत रहे।

तव, ब्रह्मा सनरकुमार 'बुद्ध इससे सहमत हैं' जान, भगवान् को अभिवादन और प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तर्धान हो गया।

§ र. देवदत्त सुत्त (६, २, २)

सत्कार से खोटे पुरुप का विनाश

एक समय, भगवान् देवद्त्त के तुरत ही जाने के बाद राजगृह के गृद्धकूट पर्वत पर विहार करते थे।

तय, सहम्पति ब्रह्मा रात बीतने पर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो गया। एक ओर खड़ा हो, सहम्पति ब्रह्मा देवद्त्त के विषय में भगवान् के सामने ब्रह्माथा कोला — केला का अपना फल ही केले के बृक्ष को नष्ट कर देता है,

अपना ही फल बेणु को, और नरकट को भी। अपना सत्कार खोटे पुरुप को नष्ट कर देता है, जैसे खच्चरी को अपना गर्भ॥

§ ३. अन्धकविन्द सुत्त (६ २.३)

संघ-वास का महातम्य

एक समय भगवान् मगध में अन्धकविन्द में विहार करते थे। उस समय, भगवान् रात की काली अधियारी में खुले मैटान में वेठे थे। रिमिक्सम पानी भी पद रहा था। १२६]

तव, सहस्पति मझा रात बीतने पर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर राहा ही गया । एक और राहा हो, सहस्पति मझा भगवान् के सामने यह गाया बोलाः—

> धर. प्रकारत स्थान में बास करे। पञ्चनी से शक बीवन वितावे। विक्रियाँ असका अस स को मो संघ में बिक्स संवत और वस्तिसात का कर कर । धर-धर सिश्तारण करते इये संपत्रेतिक कानी स्मतिमान इर पुद्रान्त स्वान में वाम करे सप से छर निर्मय विस्तक ह बर्डों सवाबाद साँच विच्छ हों विजयी कवकती हो सेच तच गयाता हो mul में चितारी वाकी रात : र्वैभ स्थाब है साम्तवित थिश्न बैस्ता है व इसे बीड में भैंने भाँचों देखा है क्षोरों की यह क्ष्मक कहावत नहीं है। एक ही जहारायें में इबार में बाल को बीत सिया 🏾 पाँच भी भीजाों से अधिक भीर बध-का बार सी समी स्रोत-अध्य तिरमीन बोनि में को नहीं वह सकते ह भीर को इसरे वाकी वर्षे हैं बिन्हें में बढ़ा पुण्यवान सामता हैं प्रस्ती रिक्ती भी नहीं का सकता ब्रद्ध बदा बाने के दर से व

§ ४ अरुगवसी सच (६२४)

मिम का अधि-प्रवर्शन

पेसा मैंने भ्रवा ।

पुत्र समय भगवान् सावक्षी में विद्यात करते थे। तब मगवान् थे सिद्धात को अध्यक्षित । पित्रा—"हे सिद्धाती ! "सदन्त्र !" वद कर वन सिद्धातीं ने मगवान् को उत्तर दिया !

सारवाद वोटे—सिद्धुनो ! एवं काक में सदलबान नाम का एक राव्य था। सदलवाद राव्य को राजवादी का वाम सदलबाती था। विद्वानो ! अदलबाती राजवाती से को वर्षेष्ठ सम्बद्ध समावाद हिएकी विदार करते थे।

मिश्रुको । कर्दन सम्बद्ध समावाद शिक्षी को अभिन्यू और सरस्य वाम के हो ओड अग-भावक थे।

मिञ्जूनो [तथ मनवाण विकासे ने कासिम् मिञ्जू को कासन्तित किया—कालो साहान ! कहाँ एक प्रदा कोक है वहाँ कहें कर तक सोवर कर दासर की होगा ! भिक्षुओ । तब, "भन्ते । बहुत आछा" का अभिभू भिक्ष ने भगवान् द्विरियो को उत्तर दिया । भिक्षुओ । तब, भगवान् ज्ञिपी ओर अभिभू भिक्षु "अरुणवर्ती राजधानी में अन्तर्धान हो प्रणालोक में प्रगट हुये ।

भिधुओ । तय, भगतान् दिग्यी ने अभिभू भिधु को आमन्त्रित किया—हे प्राह्मण । इस

व्यासभा में व्या और व्यासभासदों को धर्मीपदेश करी।

भिक्षुओ ! 'भन्ते, घतुत अच्छा' का, अभिभृ भिक्षु ने भगवान् शिर्यो को उत्तर है, बहासभा में बंडे ब्रह्मा और ब्रह्मसभायों को धर्मोपदेश कर दिया दिया, प्रतला दिया, उत्तेजित और उत्साहित कर दिया।

भिक्षुओं । किन्तु, ब्रह्मा और ब्रह्मसभागट चित्र गये और दुरा मानने छगे-स्थला यह कैसी बात है कि गुरु तुद्ध के उपस्थित रहते एक शिष्य धमोपटेश करे !

भिक्षुओं ! तद, भगवान् शिगी ने अभिभृ भिक्षु को आमन्त्रित किया—हे त्राह्मण ! बह्मा और बह्ममभासद चि; गये और बुरा मानने छगे हैं—भला यह केमी वात है कि गुर बुद्ध के उपस्थित रहते एक शिष्य धर्मीपदेश करे ! तो इन्हें जरा अच्छी तराः सबेग दिला हो ।

भिक्षुओं । 'भन्ते, बहुत भच्छा' कह, अभिभू भिक्षु भगवान शिखी को उत्तर है, दृश्यमान शरीर से भी धर्मापदेश करने लगा, भदृश्यमान शरीर में भी , नीचे के आधे शरीर को दृश्यमान करने पर भी 'ऊपर के आधे शरीर को दृश्यमान करने पर भी '

भिक्षुओं । तम, ब्रह्मा ओर ब्रह्ममभासद सभी आधर्य तथा अद्भुत से भर गये—आधर्य है, अद्भुत है । ध्रमण के किट्निव ओर प्रताप !!

तय, अभिभू भिक्ष भगवान दिाखी में योला—भन्ते । इस ब्रह्मलोक में रह, जैसे भिक्ष सघ में कह रहा हूँ वैमें ही कहते हुये हजार लोकों को अपना म्वर सुना सकता हूँ।

ब्राह्मण ! वस, यही मोका है । वस, यही मोका है कि तुम ब्रह्मलोक में रह हजार लोकों में अपनी बात सुनाओं ।

भिक्षुओं ! 'भन्ते, बहुत अच्छा' कह, अभिभू भिक्षु ने भगवान् शिखी को उत्तर दे बहालोक में खहे-खहे इन गाथाओं को कहा—

उत्पाह करो, घर छोड़ कर निकल जाओ, चुद्ध के शासन में लग जाओ, मृत्यु की सेना को तितर वितर कर दो, जैसे हाथी फूस की झोपड़ी को ॥ जो इस धर्म विनय में प्रमाद-रहित हो विहार करेगा, वह ससार में आवागमन को छोड़ हु खो का अन्त कर देगा ॥

भिक्षुओ ! तव भगवान् शिखी और अभिभू भिक्षु ब्रह्मा और ब्रह्मसभासदों को सवेग दिला । ब्रह्मलोक में अन्तर्धान हो अरुणवती में प्रगट हुये।

भिक्षुओ ! तव, भगवान् शिखी ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—भिक्षुओं ! ब्रह्मलोक से बोलते अभिभू भिक्षु की गाथाओं को तुम ने सुना ?

हाँ भन्ते । ब्रह्मछोक से बोलते अभिभू भिक्षु की गाथाओं को हमने सुना । भिक्षुओं । ब्रह्मछोक से बोलते अभिभू भिक्षु की गाथाओं को जो सुना उन्हें कहो । भन्ते । यह सुना —

> उस्साह करो, घर छोड़ कर निकल जाओ, बुद्ध के शासन में लग जाओ,

यास की सेना को नितर वितर कर नो । बंस हाथी फुम की ओपडी की ॥

भिद्रामो । ठीक कहा ठीक कहा ! तसने जहाकोक से वौकते अभिध मिहा की गाधानी को श्रीक में समा।

भगवान ने यह कहा । संतुष्ट श्लोकर शिक्षाओं ने भगवान के कहे का जमिनन्तन किया ।

§ प्र परिनिक्तान सन्त (६२५)

प्रकार कि निर्माण

पुरु समद भगवान अपने परिविशीण के समय कुद्मीमारा में सक्कों के साक्ष्यन सपतकान में हो प्राप्त क्यों के बीच किया करते है ।

तब सगबान ने मिसकों को बामन्त्रित किया-मिश्रको ! में तुम्बें कर रहा हैं "सभी संस्कार क्यर है अप्रम द के लाय बीवन के करन का सम्मादन करों। यही ग्रह का अभितम उपरेश है।

तब भगवान प्रथम व्यास में कीन हो गये। प्रवस व्यान छोड़कर द्वितीय व्यान में कीन हो राये । ततीय वतर्व भाव में ब्रोब हो राये । कतर्य भाव धोवबर, सावाधानन्यायतम विज्ञाना-स्याप्तत अस्तिकरूपादतम सेंबर्धजानस्थेजावतम् में बीत हो गर्च ।

नैवर्सकानासंकाबतन कोड आर्कियन्यायतम् संस्त्रीन हो गये। विस्तराः विर्ताप ज्यान को क्षेत्र क्राप्त क्षात्र में लीत हो शहे।

प्रधान प्यान कोड क्रितीय ततीय चनर्य प्यान में कीन हो गये। चतर्च प्यान से अस्ते ही सप-बान परिनिर्वांच की प्राप्त हो शबे।

भगवान के परिनिर्दाय को शास होते ही सहस्पति जहाा वह गावार्षे बोका:-

संसार के सभी जीव यक न यक समय किया होंगे ही

किन्त स्रोड में को ऐसे बेकोड बड़ हैं

तथागत बक्याम, भीर सरपढ परिनिर्वाच को माम हो गये थ

मगवान के परिनिवान को शास होते ही देवेन्द्र चाठ वह गाया बोस्सा---

समी संस्कार व्यक्तित्व है

उत्पन्न होना और प्रशाना हो बाधा अवका स्वमाब है

जरपण हाजर निवक हो बाते हैं

बनका विश्वय पाला हो बाना ही भग ह ॥

मगदान के परिनिव न की प्राप्त हाते ही आयुष्याम् आनुश्य यह गावा बोकेः---

बह समय बहा बोर था रोमाक्ति कर देनैबाब्य क सभी प्रचार से उनेप्र वज के परिनिर्वाण की प्राप्त होते ह

भारतम के परिविधान को भाग होते ही भाषप्रभाग सन्तरक यह साथा बासा---

वन स्थिर-विक के समान किसी का बीवन चारच नहीं या संक्रम पाम शानित पाने के किये

परम तक परिनिर्वाण को ग्राप्त हो यथे ॥

विक्रिया किए से बेरवाओं का कला का विवा

र्कम प्रशिष तम जाता है

बमें ही उनके विश्व की बिमुन्दि ही गईं ह

बद्ध-संयुष्ट समाप्त ।

सातवाँ परिच्छेद

७. ब्राह्मण-संयुत्तं

पहला भाग

अर्हत्-वर्ग

§ १. धनञ्जानि सुत्त (७. १. १)

क्रोध का नाश करे

ऐसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह के चेछुवन कछन्द्कनिवाप में विहार करते थे।

उस समय, किसी भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण की धनकज्ञानि नाम की ब्राह्मणी बुख, धर्म और संघ के प्रति बढ़ी श्रद्धावती थी।

त्व, धनञ्जानि बाह्मणी ने भारद्वाज गोत्र बाह्मण के छिये भोजन परोसती हुई आकर तीन बार उदान के शब्द कहे—उन अर्हत् सम्यक् सम्बद्ध भगवान् को नमस्कार हो ।

इस पर, बाह्मण ने बाह्मणी को कहा-तू ऐसी चण्डालिन औरत है कि जैसे-तेसे मथमुंढे श्रमण के गुण गाती रहती है। रे पापिन् । तुम्हारे गुरु की मैं वातें बताकेंं।

बाह्मण ! देवताओं के साथ, मार के साथ, ब्रह्मा के साथ इस सारे लोक में, किसी भी श्रमण, ब्राह्मणं, देव या मतुष्य, को में ऐसा नहीं देखती हूँ जो उन अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध भगवान् पर दोप लगा सके। ब्राह्मण ! तुम क्या ? चाहो तो उनके पास जाओ, जाकर देख लो।

तव, भारद्वाज मोत्र का बाह्मण हुन्छ और चिढ़ां हुआ जहाँ भगवान् ये वहाँ आया। आकर भगवान् का सम्मोदन किया। आवभगत और कुशल-क्षेम के प्रक्ष पूछकर एक और वैठ गया।

एक ओर वैठ, बादाण भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला —

किस का नाश कर सुख से सोता है ? किस का नाश कर शोक नहीं करता ? किस एक धर्म का, वध करना, हे गौतम ! आप को रुचता है ?

[भगवान्-]

क्रीघ का नाश कर सुख से सीता है, क्रीघ का नाश कर शोक नहीं करता, विप के मूल स्वरूप क्रीघ का, हे बाह्मण ! जो पहले बदा अच्छा लगता है, वध करना उत्तम पुरुषा से प्रशमित है, उसी का नाश करके शोक नहीं करता॥

भगवान् के ऐमा क्यूमे पर भाइए ने कहा—धम्ब हा गीतम ! धम्य हो ! हे गीतम ! जैसे उप का सहद दे वाँडे की बचार है, भटड़े की राह बता वे अन्यकार में तेज-प्रदीप बचा दे कि भाँधना रूपों को तरा हैं। बेमे ही माप गीतम ने अनेड प्रकार से धर्म का अपनेश किया । यह में माप गीत की द्वारण में जाता हूँ, चर्म की भार मिश्च-संघ की। में भाप गीतम के पास प्रवरमा पारं उपसम्पद्धा पाईँ ।

भारताज शोध के प्राह्मण ने भगवान के पास प्रह्माना पाई बार उपसम्पद्म भी पाई !

उपसम्पन्न हाने के कुछ ही बाद आयुष्पाक आरहात में पुकारत में अप्रमन्त आतापी भी प्रदिशाया हो बिहार करते हुये शीध ही जस अग्रवर्य-पास के कल्यिम एक (व्यप्तियांण) को दैपनी व दांगत जानकर मास कर किया जिसक किय कुछतुत्र सञ्चान्युवक घर सं वेधर होकर ठीक से महिका हाते हैं। 'कार्ति शीन हो गई, ब्रह्मचर्य बास चरा हो गवा जो करना या सो कर किया गवा अन 5-भार भारते के लिए बाकी नहीं के .---पंचर बाज किया ।

ई २ अक्कोस सच (७ १ २)

गाळियाँ का वान

पक समय भगवान् शाक्षमृद्ध क देख्न यम कक्षम्बद्धविदाव में विदार करते थे।

सीडा मुँद नारकत्र नाक्षण ने मुना कि भारकालगोध नाक्षण जमन गाउस के पास घर है वेपर क्षा प्रमुखित की गया है। लुद्ध और फिछ की वहीँ मगवानु थे वहीँ कावा। काकर जीडी-फीटी वार करते प्रवे मतवान का फरकार बताने और गासियाँ को बता ।

उसके पैमा कहने पर भगवान् उस गोटा मेंड शारकात बाद्यन से बोने । माह्यन (बंद तुरहारे यहाँ कोई योग मुद्दीय या बन्तु यान्यथ पहना जाते है या नहीं है

हाँ गाँचम ! कमी-कमी मेरे कील महीय वा वन्त-नान्यब मरे यहाँ पट्टमा आते हैं !

मामान ! क्या तम जनके खित्रे न्याने-वीचे की बीचें भी तैवार करवाते ही ?

हों गीतम ! कमी-कमी जनक लिये जाने-पीमे की चीमें भी में धैयार करपाता हैं। े

प्राप्तक । वहि के किया कारण से उन बीजों का उपयोग वहीं कर सकते हैं शी बीजें किसकी बिन्दी है १

गानम ! यदि वे दन थीजों का उपयोग नहीं कर बात है तो यह थीजें मुस ही को मिछती है।

माहाल । बगी वरड भी तुम कभी भी गीटी बार्ते व कहमेवाल गुद्ध की लीटी बार्ने नह रहे हो। कर्मा भी मृद्ध नहीं होनेशने शुग्न कर जुद्ध हो रहे हो। कभी दिशी की बुछ प्रेच्छ बीका न कहनेपाने मुझ है केंचा-जीवा कह रहे हो---हरों में व्यक्ति वहीं करना । तो अवहन ! यह वार्ते तम ही को मिल स्ती है, नय ही का बिक स्ती है।

माञ्चन ! का नोटी वार्ने बद्देशको को नाटी वार्ने बद्दता है सञ्च दानवाडे पर मृत्य शीता है र्धवानीचा करनेवान को र्धवानीका कहता है—यह आवस का शिलाना विधाना कहा अना है। प्र तुम्हारे तार्व अवध्य का विकास-विवास नहीं कहता । शुक्तारे दिव का है उपयोग ही नहीं करता । तो माद्राम ! बद वर्ने तुम ही को मिन रही हैं तुम हो की मिल रही हैं ।

भार गीतम को तो राजा की सका तक काननी है---असब दीतज अर्दन है। तक आप गीतम बेते बीच बर राक्ते हैं 1

धितपान -- रे

क्र-च रहित की क्रोब केंगा (श्री) क्षो क्रीबा बीचा क बाव में बो है राज्य पाम जानी विशास और दिवशा विश्व विकास सामा हा गया है ह उससे उसी की बुराई होती हैं, जो यटले पर कोध करता है, कुद के प्रति कोध नहीं करनेपाला, अजेय संप्राम जीत लेता हैं ॥ होनों को लाभ पहुँचाता है, अपने को भी और द्यरे को भी, दूसरे को गुस्ताया जान जो मावधान होकर शान्त रहता है ॥ दोनों की हलाज करनेपाले उसे, अपनी भी और दूसरे की भी, लोग 'वेषकृक' समझते हैं, जिन्हें धर्म का कुछ ज्ञान नहीं ॥

इतना करने पर, सोटा मुँह भारहाज नाएण भगवान् से नोला—धन्य है आप गीतम !

॰ [पूर्वचत] । शायुष्मान् भारद्वाज अर्हतो मे एक हुये ।

§ ३, असुरिन्द सुत्त (७. १. ३)

सह लेना उत्तम है

ऐसा मेने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह के चेलुवन कलन्दक्रनिवाप में विहार करते थे।

असुरेन्द्रक-भारद्वाज प्राह्मण ने सुना-भारद्वाज-गोत्र प्राह्मण श्रमणं गौतम के पास घर से वैघर हो प्रव्याजित हो गया है। क्रुद्ध और पिन्न होकर वह जहाँ भगवान् थे वहाँ आया। आकर, पोटी-पोटी पात कहते हुये भगवान् को फटकार यताने और गालियाँ देने लगा।

उसके ऐसा कहने पर भगवान् चुप रहे।

तय, असुरेन्द्रक मार्रद्वाज बाह्मण बोल उठा—श्रमण ! तुम्हारी जीत हो गई !! तुम्हारी जीत हो गई !!

[भगवान्-]

मूर्प अपनी जीत समझ लेता है, मुँह से कठोर यातें कहते हुये, जीत तो उसी की होती है जो ज्ञानी ज्ञुपचाप सह लेता है ॥ उससे उसी की ज़राई होती है जो यदले में कोध करता है, कृद के प्रति कोध नहीं करनेवाला अजेय सप्राम जीत लेता है ॥ टोनों को लाभ पहुँचाता है, अपने को भी और दूसरे को भी, दूसरे को गुस्साया जान जो सावधान होकर ज्ञान्त रहता है ॥ टोनों की इलाज करने वाले उसे, अपनी भी और दूसरे की भी, लोग "वेवक्ष"' समझते हैं, जिन्हे धर्म का कुछ ज्ञान नहीं ॥

भगवान् के ऐसा कहने पर असुरेन्द्रक-भारद्वाज वाह्मण भगवान् से बोला—धन्य हैं आप गीतम ! धन्य हैं !!

[पूर्ववत्] । आयुप्मान् भारद्वाज भर्दतों में एक हुये ।

§ ४. विलङ्किक सुत्त (७. १. ४)

निर्दोपी को दोष नहीं लगता

एक समय भगवान् राजगृह के वेलुवन कलन्दक निवाप में विहार करते थे। श्रिलक्षिक-भारजाज बाह्मण ने सुना—भारजाज गीत्र बाह्मण श्रमण गीतम के पास घर से वेघर हो प्रवितत हो गया है। कुद भीर सिख होकर बहाँ मगबाज़ ये वहाँ बाया । आकर गुपबाप एक ओर बड़ा हो गया । वह मगबाज़ विद्धाक्किक-सारकाज के दिवलें को वपने विच से बाग उसे गाया में घोडे—

जिसमें इस्क पुराई यहाँ है को द्वाद और पाप से रहित है बस पुरुष की जो दुराई करता है; बस पुरुष की जो दुराई करता है;

बद्द प्रसाई बसी सूर्ण पर कीट पश्ती है उक्की हवा फेंकी साई जैसे पतकी पक्ष श

[पूर्ववत्] । जासुध्मान् मारकृष्य वर्दतों में पृष्ठ हुये ।

८५ अद्विसक मुच (७ १ ५)

शहिंसक कौन !

श्राधस्ती में ।

तन महिलक भारताज माहन वहाँ भगवान ने वहाँ कावा । कावर मगवान का सम्मोदन किया, वादभगत और कुसक क्षम के सक्ष पुक्रने के पाद पुरू कोर बैठ गया ।

पक्ष भोर देठ अर्दिसक मारद्वास शास्त्रण भगवान् से वोका—दे गीतम ! में महिसक हैं। दे गीतम ! में महिस्सक हैं।

[भगवाम्--]

केसा भाम है पैसा ही होवो तुम एव में श्राहिस्तक ही होवो को सरिए से प्रकार से चीह सब से हिसा गर्दा करता वही स्टच में महिस्तक होता है को दशने को कमी वहीं सताता ॥ मगपान के देसा कमने पर कार्सिक्त भारताल माक्रण भागवान से चोका—कम्प हैं बार गौतन !

चन्प हैं ! सामुच्यास् भारतात गईवाँ में एक हुने ।

६६ सरा सच (७ १६)

बटा को सबझाने वाला

शायस्ती में।

कारप्रता । न । देव बारा भारद्वाल माह्यम कहाँ भागानन् ये वहाँ जाया । ब्यावर समाग्रह का सम्मोदन किया। ब्यावमारा कीर कुमार-बीम के प्रकारकों के बाव एक जीर कि गांत्र ।

एक कीर बैंद्र, जाता सारजाक माळव शंगवात से पावा में बीका-

भीतर में बढ़ा है बहुए में भी बढ़ा छमी है बढ़ा में सारे मानी उकसे हुएे हैं सो में बाप गीतम से पूछता है.

कीन मना इस बढा को सुक्का शक्ता है ?

[भगवाम्---]

मजायाम् वर सीख पर मतिशित हो वित्त भीर मजा की मावका करते हवे. हुं शों को तपानेवाला बुद्धिमान् मिश्च, वही इस जटा को सुलझा सकता है ॥ जिसने राग-द्वेप और अविद्या को हटा दिया है, जिनके आश्रव क्षीण हो गये हैं, अहीत; उनकी जटा सुलझ चुकी है ॥ जहाँ नाम और रूप विटकुल निरुद्ध हो जाते हैं, मतिव और रूप-सज्ञा भी, वहीं जटा कट जाती है ॥

भगवान् के ऐसा कहने पर जटा-थारद्वाज बाहाण भगवान् से घोला—धन्य हैं आप गौतम ! धन्य हैं !!

• अायुष्मान् भारद्वाज अर्हतीं में एक हुये।

§ ७, सुद्धिक सुत्त (७. १. ७)

कौन शुद्ध होता ?

श्रावस्ती में।

एक ओर बैठ, गुद्धिक-मारद्वाज बाह्मण भगवान् के पास यह गाथा बोला—

ससार में कोई बाह्मण शुद्ध नहीं होता है, वड़ा शीलवान हो तप करते हुये, जो विद्या और आचरण से युक्त है वहीं शुद्ध होता है, और कोई दूसरे लोग नहीं ॥

[भगवान्--]

वड़ा बोलनेवाला कोई जाति से ब्राह्मण नहीं होता है, (वह) जिसका मन बिल्कुल मैला है, दोगी, चालवाज ॥ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैस्य, शृद्ध, चण्डाल, पुक्कुस, उत्साही आत्म-सयमी तथा सदा उद्यम में तत्पर रह, परम शुद्धि को पा लेता है, हे ब्राह्मण । ऐसा जानो ॥

' [पूर्ववत्-]। आयुष्मान् भारहाज अर्हतों में एक हुये।

§ ८, अग्विक सुत्त (७. १. ८)

ब्राह्मण कौन १

एक समय भगवान् राजगृह के वेलुवन कलन्दकनिवाप में विहार करते थे।

उस समय अग्निक-भारद्वाज बाह्मण के यहाँ घी के साथ खीर तैयार थी-अग्नि-हवन करने के निमित्त ।

तब, भगवान् सुवह में पहन और पात्र चीवर छे राजगृह में भिक्षाटन के छिये पैठे। राजगृह में घर-घर मिक्षाटन करते क्रमश जहाँ भग्निक भारहाज ब्राह्मण का घर या वहाँ पहुँचे। पहुँचकर एक श्रोर खड़े हो गये।

अग्निक-भारद्वाज ने भगवान् को भिक्षाटन करते टेखा । देखकर भगवान् को गाया में कहा —

Fu.ts

(बो) दीन बेर्ने को कामनेवाला खेंची वादि का. यहा विद्यात. तका विधा और भाषरण से सम्पन्न हो यही इस सीर को साव ह

[मगयान-]

वदा बोसनेवाका कोई बावि से बाह्य वहीं होता है कर जिसका सब विरुद्धक सेवा है होंगी भारताल ह को पूर्व क्रम्म की वालों को क्रामता है। स्वर्ग कीर भवान को बेघाता है को भावागमन से इन्द्र गया है परम ज्ञानी सबि इन तीन को सावने के फारच वह जाडाण सैनिस डीता है विद्या करेर काचरण से सम्बद्ध अही इस सीर का सीरा करें ह

ह गौतम ! भाप भोग कराचें । भाप गौतम बाहान हैं । मिगयान-]

चर्मोपरेस करने पर मिस्रा शोजन ससे स्वीकार मही. ह माद्यण ! जानियों का यह बर्म नहीं बद धर्मोपदेस के किये निये गर्य की जीकार नहीं करते माज्ञज ! यमें के रहने पर यही बात होती है ह इसरे ज्ञा और पान से केवछी सहिंप श्रीणाशव परम झार हुये की सेवा करी। प्रभाजी तमाता प्रम्य को छ भावुच्यान् भारतात्र भईती में एक हुए ।

६९ सुन्दरिक सच (७ १ ९)

दक्षिणा के धोरम परुप

पुरु समय मगबान कोहाल में सुम्बरिका बड़ी के तीर पर बिहार करते थे । वस समय सुन्दरिक भारकाञ माधन सुन्दरिका नहीं के तीर पर भारत-हमन कर दुताबग्रेप की परिचर्का कर रहा था।

देव मुन्द्रिक-भारहात वढ वारों और देखने क्या--वान इस इच्छावधेप को मोग क्याबे १ मुख्दिक मारहाज ने युक्त कुछ के बीचे मंगवान को बिर वक्ते बैदा देखा । देखरर मार्चे हान से इम्परीप को और वाहिये द्वाब से बसायहम् को से बहाँ भगवान थे बहाँ भावा ।

त्व ररम्परिक आरक्षात के माने की भावर पर मगवाब के शिर पर से बीवर उत्तार किया । तव मुन्दरिक भारहात "जरे | यह सम्मीता है || जरे | यह सम्मीता है ||" कहता उसरे पाँच कार सामा चारा ।

तव र्1़र्रिया भारक्राञ्च व सब में बह हुआ-विश्वने जाहान भी माथ भुड़वा लिया करते हैं। सी में चरकर बमडी आह वर्जें ।

तत्र सुरद्रश्रदा भारक्काञ्च नहीं भगवान् वे वहीं लावा । जावर भगवान् से बोका-भार किस जान करें हैं ?

[मनपाम्-] मार्गमन पूत्रा कर्ने पूछो न्द्रची मैं माँ भाग पैदा हो जाती है नीच कुछवारे भी धीर मुनि होते हैं,
श्रेष्ठ भार छजाशीछ पुरुष होते हैं,
सत्य से दान्त, भार सयमी होते हैं,
हु खाँ में अन्त को जाननेवाले, ब्रह्मचर्य के फल पाये,
यज्ञोपवीत तुम उसका भावाहन करों।
वह समय पर एवन करता है, दक्षिणा पाने का पात्र॥

[सुन्डरिक-]

हों। मेरा यह यज्ञ किया हुआ हवन किया हुआ सफल हुआ, कि आप जैसें ज्ञानी मिल गये, आप जैसें के दर्शन नहीं होने के कारण ही दूसरे-तीसरे हन्यशेष को खा लिया करने हैं।। आप भोग लगावें। भाष गीतम बाह्यण है।

[भगवान्—]

धर्मोपटेश करने पर मिला भोजन मुझे स्वीकार नहीं,

[पूर्ववत्--]

तो, हे गीतम । यह हव्यशेप मे किसे दूँ ?

हे ब्राह्मण ! देवता के साथ इस लोक में में किसी को नहीं देखता हूं जो इस हव्यशेप की खानर पचा ले—खुद या खुद के श्रावक को छोड़ । तो, हे ब्राह्मण ! या तो तुम इस हच्यशेप को किसी ऐसी जगह छोड़ दो जहाँ ब्रास उगी न हो, या धिना प्राणीवाले किसी जल में बहा दो ।

ता, सुन्दिरिक आरङ्गाज ने उस हत्यशेष को विना प्राणीयाले किसी जल में वहां दिया। तव, वह हव्यशेष पानी पर गिरते ही चटचटाते हुये भभक उठा, लहर उठा। जसे, दिन भर, आग में तपाया लोहे का फार पानी में पड़ते ही चटचटाते हुये भभक उठता है, लहर उठता है, वैसे ही वह ह्व्यशेष पानी पर पड़ते ही चिड़चिड़ाते हुये भभक वठा, लहर उठा।

त्तप, सुन्दरिक मारहाज माहाण कीत्हल से भर जहाँ भगवान् थे वहाँ भाषा । आकर एक ओर खडा हो गया ।

एक ओर खड़े हुये सुन्द्रिक भारद्वाज बाह्मण को भगवान् ने गाथा में कहा-

है बाह्मण ! कि हियाँ जला-जलाकर,
अपनी छुद्धि होना मत समझो, यह बाहरी ढोंग भर है।
पण्डित लोग उससे छुद्धि नहीं दताते,
जो बाहरी बनावट से छुद्धि पाना चाहता है॥
हे बाह्मण ! मैं लकदियाँ जलाना छोद,
आप्याप्म ज्योति जलाता हूँ,
मेरी आग सदा जलती रहती है, नित्य समाहित रहता हूँ,
मैं अर्हत् हूँ, ब्रह्मचारी हूँ॥
हे बाह्मण ! अभिमान तुम्हारे लिये अनाज है,
क्रोध धूँसा, मिथ्या-भाषण राख,
जीम जुवा, हृद्य जलाने की जगह,
अपना सुदान्त आत्मा ही ज्योति है॥
धर्म जलाशय है, शील घाट है,

निर्मेख और सम्बन्धें से प्रशान बिसमें काणी पुरुष रणान करते हैं स्वच्छ गायवाओं पार तर बाते हैं ॥ सत्य पत्री संबन तथा प्रशुप्यंचाका हे ब्राह्मव ! सप्यान मार्गे और हैं सुमार्ग पर का गवे कोगों को पसहकार करी कसी गर को में पत्रांचाना कहता हैं ॥ [चूर्षवर्ष] । साल्याल मारहास कहता में एक हवे ।

ह रै॰ **वहु**घीतु सुच (७ १ १०)

पैछों की बोज में

पुरु समय भगवान् कोहार जवपद के पुरु संग्रह में विदार करते ने । जस समय किसी मारजारागोत्र जायन के चौबद वैद्य शुम हो गये थे ।

त्र बहु माहल अपने बैंकों की कोकता हुका वहाँ वह बंगक या वहाँ जा निज्ञा । आकर कस बंगक में सगकाद की काशन कमाचे किर को सीचा किये स्मृतिमाण हो बैंडे देखा ।

देपकर वहाँ भगवाय् थे वहाँ भाषा । बाकर भगवाय् के पास यह गाषायें वीखा-

जबस्य ही इस भगन को चीवह वैक नहीं है मान प्रः दिन हुने इसे माखन वहीं इसी से यह भगन सुन्नी है ह मबद्दन ही इस अमग को तिक-संत की वर्षांची नहीं होती होयी पौधे एक पत्तेवाछे या दो पत्तेवाछ होकर इसी से वह धमन भूकी है 🛭 मदस्य ही इस समद ने खाकी शब्दार में जुद्दे रुप्ट पेक मही रहे हैं इसी से यह जनन शकी है। भवस्य ही सात महीवों से इस बमन की विकादन पदी-पदी चीकर और बदौस से मरी पदी नहीं है इसी से यह भगण संख्री है ॥ मदस्य ही इस भगन की नाश विधवा कर्यकर्मी एक बेरेवाकी और वो बेर्डेवाकी नहीं हैं इसी से पह बमन सुन्नी है व अवस्थ ही इस अमज को पीकी और तिकों से मरे वारीस्वाकी श्री नहीं होगी जो कांच मारकर जपाती होगी इसी से वह धमन मुक्ती है। भवरत ही इस कमक को सुबह ही सुबह कर्नेदार "जुकाओ कर्म जुकामी" कर, नहीं तेंग करते होंगे इसी से वह समन सुद्री है ह

[भगवान्—]

नहीं बाह्मण ! मुझे चौदह चैल नहीं है, आज छ दिन हुये यह भी पता नहीं, बाह्मण ! इसी से में सुखी हूँ॥

ं इसी तरह

नहीं पाह्मण ! मुझे सुघह ही सुघह कर्जें दार, "चुकाओ, कर्जा चुकाओ" कहकर नहीं तग करते हैं, प्राह्मण ! इसी से से सुखी हैं॥ ""[पूर्ववत्] । आयुष्मान् भारद्वाज अहंती से एक टुये।

अर्हत्-चर्ग समाप्त।

दसरा भाग

उपासक-वर्ग

ह१ इतसि सच(७ २ १)

वय की बेती

पसार्मने सका।

एक समय नगवान् मगञ्ज में दृक्तिणागिरि पर एकतासा शासक आसन-माम में विदार कारों थे।

उस समय योगी के काक पर छुपि मारक्काज बाह्मज के पाँच सी हक कम रहे थे।

त्रक भगवाब् सुबह में पहन और पावचीवर के वहाँ कृषि-मारहाज शाहम का कम कम रहा या वहाँ गये।

उस समय पृथि मारकाज बाक्स की और से वाना वाँग्र का रहा था। तब मगवान् वाँ ज्यास्त एक और पारे हो गये।

कृषि मारद्वाज माहल ने भगवान् को भिक्षा के किये एका देखा । देवकर भगवान् से वर्ष बोका—भगवा | में बोकता और बोका हूँ। में बोक-बोकर काता हूँ। समय | तुम भी बोकी और बोमी । तुम भी बोक केमर पानो ।

प्राक्रम ! में भी कोतता और बोता हैं। मैं भी बोत-बोकर प्राता हैं।

किंत, में तो काप गीताम के तुर हुक कार छत्नवी वा बैक कुछ गई। देखता हूँ। इस पर मी काप गीताम कहते हैं—आहम] में भी बोतता कीर बोता हूँ। में भी बोत-लेकर काता हूँ।

त्तव कृषि-भारतात्र माञ्चन भगवान् से गाधार्वे कहा---

हपड़ हाने का दावा करते हैं। किंतु आप की फेरी में नहीं देखता कृपक बुद्धता है कहें---दस चेती की में कैसे कार्ने ह

[मगधान्—]

श्रदा भीज कप बृधि जजा ही मेरा जुलाद और इस है स्त्रा इसिस है यह की बोत है स्पृति फाक-छुन्थों है गारि आंद कपत से संदर्ग भीजन का मेराज बातनेवारां साथ की निराई करता हूँ, सीराच मंत्र विचास है बार्च मेरा कपती बैस है वो निर्वाच तक से जाता है दिना कीई हुने कपता जाता है वहाँ करकर चीत नहीं बरता व ऐसी शारी करनेवारा अध्या की उपत्र वाता है इस रोजी की कर, साथी हुस्पों से इस जाता है

भार गीनम भाग कमाचे । बाद गीतम सचमुच में इपक हैं। की बाद की रोती में असूत की बचन दोगी है ।

[भगवान्-]

धर्मोपदेश करने पर मिला भोजन सुझे स्वीकार नहीं, हे घाएण ! ज्ञानियों का यह धर्म नहीं, युद्ध धर्मोपदेश के लिये दिये गये को स्वीकार नहीं करते, घाएण ! धर्म के रहने पर यही घात होती है ॥ दूसरे अन्न और पान से, केवली, महर्षि, क्षीणाध्य, परम गुन्द हुये की सेवा करो, पुण्यार्थी तुम्हारा पुण्य वहे ॥

ऐसा कहने पर कृषि-भारद्वाज पाछाण भगवान् से घोला—धन्य है आप गोतम । धन्य है !! है गीतम, जैसे उल्टे को पलट दे, हैं के को उचार दे, भटके को राह बता दे, या अन्धकार में तेल-प्रटीप जला दे जिसमें आँखवाले रूपों को देख लें, वैसे ही भगवान् गौतम ने अनेक प्रकार से धर्म को प्रकाशा । यह में भगवान् गौतम की शरण में जाता हूँ, धर्म की, और सघ की। आज से जन्म भर के लिये आप गौतम मुझे अपना शरणागत उपासक म्बीकार करें।

§ २. उदय सुत्त (७. २. २)

वार-वार भिक्षाटन

श्रावस्ती में।

तव, भगवान् सुवह में पहन और पात्र चीवर छे जहाँ उद्य बाह्मण का घर था वहाँ पधारे। तव, उद्य बाह्मण ने भगवान् के पात्र को भात से भर दिया।

दूसरी वार भी।

तीसरी वार भी उद्य घाझण ने मगवान् के पात्र को भात से भर कर कहा-श्रमण गौतम बड़े परके हैं, बार-बार आते हैं।

[भगवान्—]

वार-वार लोग बीज बोते हैं, वार-वार मेध-राज बरसते हैं, वार-वार खेतिहर खेत जोतते हैं, वार-वार देशवालों को उपज होती है ॥ चार-वार थाचक थाचना करते हैं, बार वार दानपित दान देते हैं, बार-वार स्वर्ग में स्थान पाते हैं ॥ बार-वार स्वर्ग में स्थान पाते हैं ॥ बार-वार माले दूध दृहते हैं, वार-वार महनत-परिश्रम करते हैं, बार-वार मूर्ज गर्म में महता है ॥ बार-वार मूर्ज गर्म में महता है ॥ वार-वार क्या सें स्थान करते हैं, वार-वार मूर्ज गर्म में महता है ॥ वार-वार लन्म लेता है और मरता है, वार-वार लन्म लेता है और मरता है, पुनर्भव से छुटने के मार्ग को वा मदा जानी बार-बार महीं जन्म प्रहण करता है व

[पूर्ववत्]। जास से जनम भर के किय आप गीतम शुक्ते अपना शरणागठ उपास-स्वीकार करें।

§ ३ देवदित सुच (७ २ ३)

पुत्र की राजता, दान का पाम

भावसी में।

उस समय मगबाय् को बाट की योमारी हो गईं थी। आयुष्मान् छएयात्रः भगगाय् की सेवा में सन्ते थे।

तव नगवार्वे आयुष्यात् तपयास्य को आयम्बित किया—कपयानः । शुनी कुछ धरम पानी के माभी।

"माने बहुत लच्छा" वह आयुष्मान् उपयान भगवाद को उत्तर देवहन और पात्र चीवर है वहीं वैद्यक्षित माहम का पर या वहाँ गये । आकर युपचार एक ओर कहें हो गये ।

देवदित शास्त्रम में बालुप्सान् उपचान को जुलकाप एक जोर कहे हेवा। देवकर बालुप्सान् उपचान को गावा में कक्त-

> चुपचाय बाप करे सिर मुद्दाये संवाध वंते क्या कारते क्या प्रोजने क्या माँगने के किये व्यावे हैं ?

[उपवान--]

संसार के आईन, बुद्ध भूमि बात-रोग से पीड़िय हैं पति गारस पात्री है तो ब्राह्मण ! भूषि के किये हो। पत्रतीयों में बो चुन्य सरकार-पात्री में तो सत्त्वार के पात्र तथा मात्रतीयों में बो कार्त्याय है कम्मी के किये में व्यवस्था हैं ब

त्व वेवहित माझ्य ने शरम पानी का एक मार बीर गुड़ की एक पोडकी नीकर से सँगधा माञ्चमान् वपयान को ने दिया।

तम धानुप्तान् उपवान कहाँ मगबान् वे वहाँ गर्ने । काकर, बन्होंने मगबान् को गरम पानी से बहुआ गरम पानी में कुछ गुढ़ बोधकर सगबान को विचा ।

वय मगरान की तथकीय क्रक धर गई।

त्र पेरहित महान नहीं मगभाज् ने नहीं आया । आकर मगवाज् का सम्मोदन किया । नाम मगठ भीर क्रमक-सेम के मन्त्र पत्रने के नाम पत्र और वैद्या गया।

एक भीर पैट देशहिल माझण ने सगवान को साथा में कहा— दाव देनेवाला किसे वान है ? किसको देने का सहायक दीता है ? फैस वहा करनेवाले की कैसी इहिन्या सफल होती है ?

[सरावाम्—]
पूर्वं जन्म की बावों को दिस्मने कान किया है
स्वर्ग कीर सराव की बावों को दो दो सरावता है
विस्तरी कार्ति कीण हो गाई है,
परत काल का करनी हालि :

दान देनेवाला इन्हीं को दान दे, इन्हीं को देने का महाफल होता है, ऐसे यज्ञ करनेवाले की, ऐसी ही दक्षिणा सफल्होती है॥

...। आज से जन्म भर के लिये आप गौतम मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें।

४. महासाल सुत्त (७. २. ४)

त्रों द्वारा निष्कासित पिता

श्रावस्ती मे।

तव, एक ब्राह्मण बड़ा आदमी गुदड़ी पहन जहाँ भगवान् थे वहाँ आया। आकर भगवान् का सम्मोदन किया। आवभगत और कुशल-क्षेम के प्रश्न पूछने के बाद एक ओर बैठ गया।

एक और वैठे उस ब्राह्मण बढ़े आदमी को भगवान् ने कहा—ब्राह्मण! इतनी गुद्दी क्यों पहने हो ?

हे गौतम ! मेरे चार बेटे हैं। अपनी खियों की सलाह से उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया है। तो, हे ब्राह्मण ! इन गाथाओं को तुम याद कर सभा खूब लग जाने पर अपने पुत्रों के वहाँ होते उठकर पदना—

> जिनके पेदा होने से मुझे बढ़ा आनन्द हुआ था, जिनका बना रहना मेरा वड़ा अभीष्ट था. वे अपनी द्यियां की सलाह से, हटा देते हैं, कुत्ता जैसे सुभर की ॥ ये नीच और खोटे हैं. जो मुझे 'वावू जी, वावू जी,' कहकर पुकारते हैं, वेटे नहीं, राकस हैं, जो मुझे बुदाई में छोड़ रहे हैं।। जैसे वेकार खुद्दे घोड़े को, दाना मिलना बन्द हो जाता है, वैसे ही बेटों का यह वृढ़ा बाप, दूसरों के दुरवाजे भीख माँग रहा है। मेरा डण्डा ही यह कहीं भच्छा है, मगर ये नालायक बेटे नहीं, जो भड़के बैठ को भगा देता है. और चण्ड कुत्तीं को भी, भें घेरे में पहले पहल यही चलता है, गहरे का भी थाह लगा देता है. इसी उण्डे के सहारे, ठेस लगने पर भी गिरने से यच जाता हूँ॥

तव वह बाह्यण बदा आडमी भगवान् के पास इन गाथाओं को सीख सभा खूब जम जाने पर

बित्र वे पैदा होने से शुक्ते पका भागन्त प्रका था

[पूर्वपत्]

इसी बन्डे के सहारी

देस क्याने पर भी गिरने से बच बाता हैं॥

तब उस माझण को उसके पुत्रों ने घर के का नहका कर प्रत्येक ने वान का ओहा मेंड चड़ाया।

तम मह माह्यम एक बोक्र चान केकर वहाँ समयान् थे वहाँ स्थाम । एक ओर बैठ गया । एक ओर बैठ उस माह्यम में सम्बन्ध के कहा--हे गीतस ! इस माह्यम काचार्य को काचार्य-

एक मीर पेंड उस माझल में मरामाण् की कहा---ई गांवस ! इस माझल आचीर्य की सामान इसिजा दिया करते हैं १ साप गीतम इस भाषार्थ दक्षिणा को स्रोधित करें ।

भगवान् ने अनुकामां कर स्वीकार किया ।

[पूर्ववर]। जाज से खन्म भर के किये जाए गौतम श्रुक्ते वापना शरजागठ उपासक स्वीकार करें।

§ ५ मानस्थद् सुच (७ २ ५)

कसियास न करे

भावस्ती में ।

जार पान असिमान अकड़ नाम का एक माइन्स शावस्त्री में बाध करता था। यह न नी सारा को प्रथम करता था व पिता को व कावार्य को चीर न केडे मार्च को ।

बस समय भगवान वही मारी समा के बीच धर्मीपदेश कर रहे थे ।

तब श्रीममान-अंकड़ ब्राह्मच के मन में चह हुन्य.—यह समन तीतम वहीं भारी समा के वीच धर्मीपदेश कर रहे हैं। वो जहाँ असन गीतम है वहाँ में भी चहाँ। पदि ब्रमच गीतम मुस्ते इन् पुत्रवात करेंगे दो में भी बनसे कुछ वार्त करेंगा। यदि श्रमच गीतम मुस्ते हुन्न सुम्तान वहीं करेंगे दो में भी बनसे इन्न न नोहाँगा।

तन असिमान अंकतु माहत्व वहाँ भगवान् वे वहाँ गया। आकर जुरवाय एक कोर वाहा को गया।

तव मगदान वे उससे इन्ड प्रकार वहीं की ।

त्र अभिमान अकड़ जाक्षण "यह जनन गीतम कुछ नहीं कावते हैं" सीच और बाने के किये वैपार इन्छ :

तार मरावाल वे महिलाल-सक्तक जाकान के वितार्व की जपने विश्व से वानकर कहा--

शाहाण ! कसिमाण करना शक्ति वहीं सहाल ! किस उन्नेक्य से वहीं कार्य के

महिला । त्यस उद्याप स वहा जार

- उसे बैमा **कह शाळी** ह

यन अभिमान-भागकु नाहाय "समय गीतस मेरे चित्त की वाली की बानते हैं। बान भागवार् के पैरों पर यहे तिर गया उनके करनी की हुँह से चूमने बगा हान से पोछने क्या और अपना बाम सुवाने क्या-के गीतम ! मैं अभिमास सकत हूँ हैं। हे गीतम ! मैं सिमान-सकत हूँ हूँ।

तम समामें आने सभी कोग कावर्ष से व्यक्ति हो गये। ब्यावर्ष देशे वहुमुठ देश वह कनिमान-स्कड् माहत्व वती सावा को सवाय करता देव पिताकी व ब्यावर्ष की कीर न बेटे

माई को । सो अमन गीतम के करवाँ वर इतका शिर पह रहा है ।

तव, भगवान् ने अभिमान-अकड् बाह्मण को यह कहा—बाह्मण ! वस करो, उठो, यदि मेरे प्रति तुम्हें श्रद्धा है तो अपने आसन पर घेटो ।

त्व अभिमान अकड् बाह्मण अपने अस्तन पर वैठकर भगवान् से यह वोला —

किनके साथ अभिमान न करे ? किनके प्रति गौरव-भाव रक्खे ? किनका सम्मान किया करे ? किनकी पूजा करना अच्छा है ?

[भगवान् —]

माँ, वाप, ओर वहे भाई, और चौथा आचार्य, इनके प्रति अभिमान न करे, उन्हीं के प्रति गौरव-भाव रक्खे, उन्हीं का सम्मान किया करे, उन्हीं की पूजा करना अच्छा है। अभिमान हटा, अकड छोड उन अनुत्तर, अईत्, शान्त हुए, कृतकृत्य और अनाश्रव को प्रणाम् करे। । आज से जन्म भर के लिये आप गौतम मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें।

§ ६. पचनिक सुंत्त (७ २ ६)

झगड़ा न करे

श्रावस्ती मे ।

उस समय झगड़।लू नाम का एक ब्राह्मण श्रावस्ती में वास करता था।

तव झगड़ाल् बाह्मण के मन में यह हुआ—जहाँ श्रमण गौतम हैं वहाँ में चल चलें। श्रमण गौतम जो कुछ कहेंगे में ठीक उसका उलटा ही कहुँगा।

उस समय भगवान् खुली जगह में टहल रहे थे।

तव झगड़ात्रू बाह्मण जहाँ भगवान् थे वहाँ आया । आकर भगवान् के पीछे-पीछे चलते हुये कहने लगा—श्रमण ! धर्म उपदेशें ।

[भगवान्—]

जिसका चित्त मैला है, झगड़ा के लिये जो तना है, ऐसे झगड़ाल के साथ बात करना ठीक नहीं। जिसने विरोध-भाव और चित्त की उच्छुखलता को दवा, हैंप को विल्कुल छोड़ दिया है, उसी को कहना उचित है।

। आज से जन्म भर के लिये आप गौतम मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें।

§ ७. नवकम्म सुत्त (७ २ ७)

जंगल कट चुका है

एक समय भगवान् फोशाल के किसी जगल में विहार करते थे। उस समय नवकार्मिक-भारद्वाज बाह्यण उस जगल में लकड़ी चिरवा रहा था। नयकार्मिक स्परद्धात बाह्यण ने समयान् को किसी शास्त्र बृक्ष के वीचे जासन कमाये, सरीर सीचा किसे स्वतिसान ही कि देखा।

इस्तकर उसके सब में पह हुआ — मैं तो इस खंगाक में अपना काम करवाबे में समा हूँ। बड असम गीनस बचा कराबे में क्यों है ?

त्र नवकार्मिक सारद्वाला जाङ्गण कर्डों सगवान् ये वर्डों आया । सारूर सगवान् से गाम्य से क्षेत्र---

> भारते किस काम में कमे हो है सिक्षु इस साक-वन में है को इस अंगक्ष में अबेके ही सफ से विदार करते हो है

[भगवान्-]

जंगक ही मेरा कुछ काम नहीं वहार है मेरा कंगक कर-बाँडकर साफ हो गवा में इस बन में शुक्त से कुर परम पर पा, जनमतीप को छोजकर करेका रमता हैं।

मात्र से बन्म भर के बिने भाग गीतस असे भगता शरणागत क्यासक स्वीकार करें ।

[§]८ कहुहार सुच (७२८)

निजैन धन में बास

एक समय मगवाद कोशास के किसी बंगल में विदार करते थे।

इस समय किसी आरक्षाजारोज माझम है कर करजुनने नेके उसी बंगक में गने ।

काकर उन्होंने मगवान् को उस बंगक में स्वृतिमान्, हो पैट हैया । देकरर वहाँ मारह्यात्र-गाम माहल मा वहाँ गये । काकर मारह्याक्ष से बोके 'अरे ! आप कावते हैं । कराने बंगक में पृक् साथ स्वृतिमान् हो पैटा है ।

त्व आरद्धारामात्र माहन वन रुप्ते के साथ वहाँ यह बंगल था वहाँ गया। उसने भी भगवान् को दस वंगक में स्वतिभाग् हो हैं है देखा। हैस्तर नहीं भगवान् वे पहीँ बावा। ध्यकर भगवान् से गावा में बोधन-

> घाँर, भवावक सूम्य विश्वीत आरम्य में पैठ स्था वक्षम अस्पन कारायं निम्हा ; कार मुक्त च्याव कारायं पैटे हो इ ग जरां मीत है व कार्ये पाता एमें जंगल में करका ववसासी सुवि को देग सुने वहीं देशकों हो रही हैं हि वह कटना जीगन में केंगे जगकता से रहता है ॥ में समसान हैं कि कोस्सरियति के लाव मनुतर वर्णा की कासना से भाग निर्मत वहाँ करों सहा दहें हैं

[भगवान्-]

जो कोई आकांक्षा या भागन्य उठाना है,
नाना पदार्थों में सदा आसक्त,
इच्छायं, जिनमा मृल अज्ञान में है,
सभी का मेने जिट्छल त्याग कर दिया है,
नृष्णा और इच्छाओं से रहित में अकेला,
सभी धर्मी के तत्य को जाननेवाला,
अनुक्तर और शिव उद्घरव को पा,
हे ब्राह्मण ! एकान्त में में निर्भीक ध्यान करता हूँ।

। आज मे जन्म भर के लिये अप गोतम मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें।

§ ९. मातुपोसक सुत्त (७. २. ९)

माता-पिता के पोपण में पुण्य

थावस्ती में।

तव, मातृपोपक वाह्यण जहाँ भगवान् थे वहाँ आया । आकर एक ओर वेड गया ।

एक ओर वैठ मातृपोपक प्राह्मण ने भगवान् को यह कहा—हे गौतम । मै धर्म-पूर्वक भिक्षाटन करता हूँ। धर्म-पूर्वक भिक्षाटन कर माता-पिता का पोपण करता हूं। हे गौतम । ऐसा करनेवाला मै अच्छा करता हूँ या नहीं ?

ब्राह्मण ! अवश्य, ऐसा करनेवाले तुम अच्छा कर रहे हो । ब्राह्मण ! जो धर्म-पूर्वक भिक्षाटन करता है, धर्म-पूर्वक भिक्षाटन कर माता-पिता का पोपण करता है वह बहुत पुण्य कमाता है ।

जो मनुष्य माता या पिता को वर्म से पोसता है उससे पण्डित छोग उसकी प्रशसा करते है, मरकर वह स्वर्ग में आनन्द करता है।

। आज से जन्म भर के लिये आप गौतम मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें।

§ १० भिक्खक सुत्त (७ २ १०)

भिश्रुक भिश्रु नहीं

श्रावस्ती में।

तय भिक्षुक वाह्मण जहाँ भगवान् थे वहाँ आया। आकर एक ओर वैठ गया।
एक ओर वैठ भिक्षुक वाह्मण ने भगवान् को कहा—हे गौतम। मैं भी भिक्षुक हूँ ओर आप भी
भिक्षुक हैं। हम दोनों में फरक क्या है ?

[भगवान्--]

इसिलिये कोई भिक्ष नहीं होता क्यों कि वह भीख माँगता है, जब तक दोपयुक्त है तब तक वह भिक्ष नहीं हो सकता। जो ससार के पुण्य और पाप वहाकर, ज्ञानपूर्वक सच्चे ब्रह्मचर्य का पालन करता है, बही यथार्थ में भिक्ष कहा जाता है॥

। आज से जन्म भर के लिये आप गौतम मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें। १९

६ ११ संगारव मुच (७ २ ११)

स्माम से शक्ति नहीं

धावभी में।

उस समय संगारण पाम का पुरु माझल उदक-भुदिक उदक से सुदि होगा माभनेवाक्स स्थायस्त्री में रहता वा। साँक-सबह उदक में ही पैठा रहता था।

तन बातुप्पान् आत्रश्य सुन्द में पहण बीर पामचीवर के आवती में सिसाइण के किने पैंठ। सिसाइन से बीट मोक्स कर केन के बाद बहाँ अगवाश ने वहाँ कार्य चीर समावान का अभिवादन कर एक बोर केर राये।

एक बोर बैठ मानुष्याम् आनुष्य वे अगवास् को यह कहा—मन्ते ! सुनारय माझग सींश-सुबह बदक ही में पैटा रहता है। अन्ते ! ब्युक्तमा इन्हें अगवान् वहीं सीनारय का घर है वहीं करें !

मगबाद ने छप रशका खीकार कर विद्या ।

तक मगवान् मुक्ट में प्रदून कीर पात्र चीवर के जहाँ ईर्गगारत् का घर घर वहाँ गये। आकर विके कामन प्रदर्शेट गर्दे।

तप स्ति।एस माझस वहाँ भगवात् ये वहाँ आपाः धानर कुलक-प्रस पूक्त के बाद पूक कोर कि गता।

पुरु मोर केरे संगारक जाहाल को अगवात ने कहा—आहम्प (क्या सच में तुम वदम-सुनिक हो उपक से सुनि होना आवते हो ? सॉम-सबह बहक में ही की पहले हो ?

वाँ गीठम । पेमी भी कात है ।

माझन ! हुन किस बहेल्य से उद्दर-सुद्धिक हो उदक से सुद्धि होना सामने हो, और सींस-सबक उदक में बी पैढे रहते हो ?

है गीवन ! दिव मर में मुख्ये को कुछ पाप हो कावा है कसे सीक्ष में बहत्वर वहा देवा हूँ। और राज पर में को कुछ पाप हो बावा है वसे सुबह में बहारर वहा दवा हूँ। है गीवन ! में इसी बड़े बहेरर से करक-मुनिक हो करक से क्षुति होना मानवा हूँ और सॉस-मुबह करक में पैठा रहता हूँ।

भिगवान—]

हें म्यक्षण ! चर्म कप्राक्षय है द्वीक दसमें उत्तरने का बाद है

विरुद्धाः स्थापः सम्बद्धाः स प्रश्नातः

जिसमें परम जानी स्थान कर

पवित्र गाओवाका हो पार वर जाता है ब

। ब्यास से बन्धा शर के किये आप गीतम मुझे भवना धरणागत बपासक स्वीकार करें ।

§ १२ खोमदुस्सक सुच (७ २ १२)

सन्त की प्रदक्षात

पुरु समय मगवान् व्यापन्य वनपद में रोह्मशुक्त वामक वार्यों के करने में विदार करते थे।

तव मानात् सुनद में पहन भीर पायशंवर के खोमजुस्स करने में विकारत के किय हैंहे। उस समय रोमजुस्स करने के दश्चेगार्क माक्रम पुरस्य किसी काम से समागृह में इन्हें है। सिप्तिम मानी भी पारत दश था। तय, भगवान् जहाँ वह सभा स्मी थी वहाँ गये।

खोमदुस्स कस्त्रे के रहनेवाले बाह्मण मृह्स्यों ने भगवान् को दृर ही से आते देखा । देखकर यह कहा—ये मथमुण्डे श्रमण सभा के नियमों को क्या जानेंगे ?

त्र, भगतान् ने खोमदुस्स कस्ये में रहनेवाले ताहाण गृहस्यों को गाणा में कहा-

घह सभा सभा नहीं जहाँ सन्त नहीं, वे सन्त सन्त नहीं जो धर्म की नात नहीं प्रताव, राग, हेप और मोह को छोड़, धर्म को बखाननेवाले ही सन्त होते हैं॥

• ।। आज से जन्म भर के लिये आप गौतम हम लीगों को अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें।

उपासक वर्ग समाप्त ब्राह्मण-संयुत्त समाप्त ।

आठवाँ-परिच्छेद

८ वङ्गीश-सयुत्त

१ निक्खन्त सुच (८१)

धहीश का, इंड-संकल्प

पेमा मने भूगा।

एक समय भाषुप्तात् यहीता अपने उपाधात आयुष्पात् निप्रोध-कहर के साथ आख्यों में अगाख्य चैत पर विहार करते थे। उस समय आयुष्पात् यहीता जभी तुरत ही गये प्राप्तित हुपे के विहार की देखनेक करते के खिले प्रोप्त विश्व गये के।

तत कुछ स्थियों करं_{यु}त हो उक्ष कारास में देखने के किये वाई। उन कियों को देखकर वाई प्रमाप सक्षीता स्थान गर्ने, विक शाम से पागळ हो उठा।

त्य बातुष्मान् वहांत्र के अन में यह दुश्य — अश वहा ककान दुना काम नहीं, मेश वहा दुर्मोग्य दुन्य दुमान्य नहीं — कि में हाना गया और मेश विच राग सं पायक हो कर है। सुने कीन देशा मिकेना की मेरे हम मोह की बुर कर विच में सान्त्रिय का दे! यो में स्वयं ही जपने इस मोह की दर कर किया है।

तब व्यानुष्पान् वश्चीस नवने स्वयं उस सोड की पूर कर क्लिसें शास्ति के वाये; व्योर उस समय बनके हैंड से यह गावार्ये निकल पर्दी—

> जर से बेबर हो निकक गये भेरे मन में बे हुए बीए कार्य दिवार्ज वह रह हैं अहमां के दुज महाबमुर्चर विविद्य रह-परावसी वार्त और से हबारों वाज वरसायें विद् हस्त्री पी अधिक बिद्यां आवें हो भेरे भन को बहुँ बिद्या सखेगी, कब में भो में मितिक्व हो गया ॥ हैंने बदने कार्या प्रवेशकोपक एक को पहचे खुना है कि दिवांज के पाने का मार्ग नवा है, मेरा मन पन वहीं मैंच गया है ॥ इस मक्षर विदार करते पढ़ि पारी मार मेरे पास ध्यमेगा हो में देगा कर्क गा कि वह मेरे मार्ग को भी नहीं हैवा सबेगा ह

§ २ अरसि सुच (८२)

राग छात्रे

प्रेमा मैंने भ्रमा।

एक समय आयुष्पाण् राष्ट्रीया अपने क्याच्याय आयुष्पाण् तिक्रीक-कस्य के साथ आस्त्री में समाप्तस्य वैष्य पर विवार अन्ते थे। उस समय आयुष्मान् निश्रोध-कह्य भिक्षाटन से छौट भोजन कर छेने के बाद विहार में पैठ जाया करते थे, और सॉझ की या दूसरे दिन उसी समय निकला करते थे।

उस समय आयुष्मान् चङ्गीश को मोह चला आया था—राग से चित्त चञ्चल हो उठा था। तब आयुष्मान् वङ्गीश के मन में यह हुआ— [पूर्ववत्]। तो मैं स्वय ही अपने इस मोह को दूर कर चित्त में शान्ति ले आऊँ।

तव आयुष्मान् वङ्गीश अपने स्वय उस मोह को दूर कर वित्त में शान्ति हो आये, और उस समय उनके मुँह से ये गाथायें निकल पर्दा—

(धर्माचरण में) असतीप, (कामीपभीग में) संतीप, और सारे पाप वितर्कों को छोड़. कहीं भी जगल उगने न दे, जगल को साफ कर खुले में रहनेवाला भिक्ष ॥ जो पृथ्वी के ऊपर या आकाश में, ससार के जितने रूप हैं. सभी पुराने होते जाते हैं, अनित्य है, ज्ञानी पुरुप इसे जानकर विचरते है ॥ सासारिक भोगों में लोग लुभाये हैं. देखे, सुने, छूये और अनुभव किये धर्मों के प्रति, स्थिर-चित्त जो इनके प्रति इच्छाओं को दबा, उनमें लिप्त नहीं होता है-उसी को सुनि कहते हैं। जो साठ मिथ्या धारणायें, पृथक् जनों में लगी है, टनमें जो कहीं नहीं पहता है, जो दुष्ट वार्ते नहीं वोलता है, वही भिक्षु है ॥ पण्डित, वहुत काल से समाहित, होंग न पनानेवाला, ज्ञानी, लोभ-रहित, जिस मुनि ने शान्त-पद जान निर्वाण को प्राप्त कर लिया है, अपने समय की प्रतीक्षा कर रहा है ॥

§ ३. अतिमञ्जना सुत्त (८. ३)

अभिमान का त्याग

एक समय आयुष्मान् चङ्गीश अपने उपाध्याय आयुष्मान् निग्नोध-करप के साथ आस्त्रवी मे अग्गास्त्रव चैत्य पर विहार करते थे।

उस समय आर्,प्मान् बङ्गीश अपनी प्रतिभा के अभिमान से दूमरे अच्छे भिक्षुओं की निन्दा करते थे।

तय आयुष्मान् वङ्गीरा के मन में यह हुआ, "मेरा वड़ा जलाभ हुआ, लाभ नहीं, मेरा वड़ा दुर्भाग्य हुआ, सुभाग्य नहीं, कि में अपनी प्रतिभा के अभिमान से दूसरे अच्छे भिश्रुओं की निन्दा करता हूँ।"

तव स्वय अपने चित्त में परचासाप उत्पन्न कर आयुष्मान् चङ्गीश के मुँह से ये गायार्थे निकल पदीं — हे सौनम के धावक ! कमिमान सोधी श्रमिमान के भागें सं तर रही। समियान के शस्त्रे में भरकार बहत दिनों तक पश्चाचाप करता रहा ॥ सारी जनका अमच्य से बर है स्रामित्राच कालेकाके नरक में शिरते हैं बहत काक तक शोक किया करते हैं स्रातिकानी क्रोग सरक में उत्तक हो ह भिद्य कमी भी दोक नहीं करता है सर्ग को जिसके बीत किया है सम्बद्ध प्रतिपत्त सीति सीर शक का अनुगद करता है बचार्च में हो सोग उसे बर्मारमा करते हैं ह इस्रक्षिये सन के मैक को दर कर उल्लाही क्य बन्दर्भे को इसकर विश्वत. और अधियान को विश्वस रवा सारत हो जान-पर्वेड शन्त काता है रा

[§] ४ जानन्द् सुत्त (८४)

काभराग से मुक्ति का उपाय

पुरु समय कायुप्पाम् आसन्य शावस्ती में सनाध विधिक्क के जेतवस व्यासम में विदार कार थे।

सब आयुष्मान् कानस्य सुबद में पदन भीर पात्रवीवर के व्यायुष्मान् कङ्गीदा को पीछे किये सिकारन के किये ध्यावस्ती में पैठे।

इस समय मानुष्माल बहुति के जिल्ह में मीड हो गया था हाम से नक्क हो रहे थे : तब भानुष्मान सङ्गीहा भानुष्मान आतन्त्र से गावा में शोके—

कामसाग से बक रहा हूँ विश्व मेस बढ़ा जा रहा है

है गीवमञ्चक्रीत्वज्ञ मिस्र ! हुया कर इसे सान्य करने का बपाय नवार्षे !

[मायुष्पाम् सामन्द नी

सन वहक बाने से तुम्हारा निक वक रहा है
राग बरूब करनेवाड़े इस काकर्षन को छोड़ हो
वार्ष करनेवाड़े इस काकर्षन को छोड़ हो
वार्ष संस्थारी की परावा के ऐसा हेन्द्रों कुन्द्र और समाध्य के ऐसा
इस वहे राग को हुएत है इससे बार-तार तक कहा के
विका में कहम मानवा कानो एक्सम बीर समावित्य हो
तुम्हें कावराता स्थित का सम्मास होने बैताय बहामी ह
हुन्य कविश्व कीए सरायस की मानवा करो
किसमा कीए समाव की साम हो किस्तेती ह
वार्ष साव स्थाप के साम हो किस्तेती ह

§ ५. सुभासित सुत्त (८ ५)

नुभाषित के लक्षण

श्रावस्ती जेतवन में। वर्षों भगवान् ने भिक्षुओं, को आमन्त्रित किया—हे भिक्षुओं। "भवना !" एडकर उन भिक्षुओं ने भगवान को उत्तर दिया।

भगवान घोले--भिक्षुओं । चार अहीं से युक्त होने पर वचन सुभाषित होता है, हुर्भाषित नहीं, विज्ञों से अनिन्य, निन्य नहीं । किन चार से १

भिञ्जो । भिञ्ज सुभाषित ही बोलता है, हुर्भाषित नहीं, धर्म ही बोलता है, अधर्म नहीं, प्रिय ही बोलता है, अभिय नहीं, साथ ही बोलता है, असर्य नहीं। भिञ्जों। इन्हीं चार अहै। से युक्त बचन सुभाषित होता है, हुर्भाषित नहीं, विकार से अनिनय होता है, निनय नहीं।

भगवान् यह पोले । इतना कहकर उन्ह फिर भी पोले-

सन्ता ने सुभाषित को ही उत्तम गहा है, दृपरे—धर्म कहे, अधर्म नहीं, तीमरे—प्रिय कहे, अप्रिय नहीं, चीथे—सत्य कहे, असम्य नहीं ॥

तत्र, आयुप्तान् चङ्गीरा आसन से टट, उपरनी को एक कन्वे पर सँभाल, भगवान् की सोर हाथ जोदकर बोले--भगवन् ! में कुछ बहुना चाहता है । तुन्न ! सुत्रे कुछ कहने वा अवकाश मिले ।

भगवान् घोले—वतीश ! कहो, अवकाश है।

तत्र, आयुष्मान् चङ्गीका ने भगयान के सम्मुग्न अत्यन्त उपयुक्त गाथाओं में म्तुति की— उसी यचन को बोलें, जिससे अपने को अनुताप न हो, आर, दूसरों को भी कष्ट न हो, वहीं वचन सुभाषित है।। विष्य वचन ही बोलें, जो सभी को सुहायें, जो दूसरों के डोप नहीं निकालता, वहीं विष्य बोलता है।।

मत्य ही सर्घोत्तम वचन है, यह सनातन धर्म हे, सत्य, अर्थ ओर धर्म में मितिष्टिन मज्जनों ने कहा है ॥ उद्ध जो वचन कहते हैं, क्षेम और निर्वाण की प्राप्ति के लिये, हु खों को अन्त करने के किये, वही उत्तम वचन है ॥

§ ६. सारिपुत्त सुत्त (८. ६)

सारिपुत्र की स्तुति

एक समय आयुष्यान् सारिपुत्र श्रावस्ती मे अनाथ-पिण्डिक केट्वेतवन आराम मे विहार

उस समय आयुष्मान् सारिपुत्र ने मिश्चकों को धर्मोपदेश कर दिखा दिया । उनके वचन सभ्य, साफ, निर्दोप और सार्थक थे। और भिश्च लोग भी वहे आदर से, मन लगाकर, ध्यानपूर्वक कान दिये सुन रहे थे।

तव, आयुष्मान् वङ्गीश के मन में यह हुआ—यह आयुष्मान् सारिपुत्र धर्मोपदेश । और, भिक्षु छोग भी सुन रहे हैं। तो क्यों न में आयुष्मान् सारिपुत्र के सम्मुख उपयुक्त गाथाओं में उनकी स्तुति करूँ।

तब भायुष्मान् चन्नीश् नासन सं वट उपरंशी को एक उसे पर सम्मास नामुष्मान् सारियन की बोर क्षांच बोवकर योके---माबूस साविचल ! मैं कुछ कहना चाहता हैं। बाबुस सारियुत्र ! सुसे पुन करने का भारताश मिछ ।

धादम स्थीता । सम्बन्धा है कहें।

तन भाषुप्तान् चङ्गीश ने नायुप्तान् सारिष्य के सन्धन उपयुक्त गायानी में उनमी स्तृति की---

शम्मीर प्रश्न मेथायी, बच्डे श्रीर हुरे मार्ग के पहचामनेगाले सारिएम महाप्रज मिल्लों में भर्मोपदेश कर रह हैं । संक्षेप से भी उपरेक्ते हैं। इसका विकार भी कह वेते हैं बारिका की योकी बैसा मजर केंची वार्ते वता रहे हैं ॥ इस वेशना की मधर वाणी आमन्ददायक अवयीय और शुरुदर है। बदम्बित्त और प्रमुद्धित हो मिस्न कोग कान क्यापि उसे सुद रहे हैं ह

8 ७ प्रवारणा सच (८ ७)

प्रवारका-कर्म

एक समय भगवान पाँच सौ केवक थहाँद मिल्लकों के एक पड़े संघ के साथ आवस्त्री में सुगार मादा के पूर्वाराम शासाव में विहार करते थे।

दम समय रखरशी के दगोसम पर प्रवारण के किये सम्मक्ति हुये मिश्च-सन के बीच सुके

मैदान में भगवान बेंद्रे थे।

तब मगबान् ने मिझ्-संब को सान्त हैया मिछूकों को बामन्त्रित किया-मिझुबो । 🕅 प्रवारण

भगवान् के एसा कहने पर बायुप्तान् सारिष्ण कासव से वट उपरवी की पुत्र कंधे पर सम्मा≢

मगबान की भीर द्वाध ओड़कर बोधे-अन्ते ! इस खोगा ने शारीर या बचन से इस प्रराई कर मगबान पर दौष नहीं चहाया है। अन्ते ! सगवान् अनुराख सार्ग के उत्पन्न करनवाछे हैं 'व कहे गर्ने मार्ग के वदावेदाके हैं। मार्ग को पहचानवेदाक है। मार्ग पर कह हये हैं। सन्ते ! इस समद व्याप मावश्च भी आपके सनुगमन करनेवाके हैं। अन्ते ! में भगवान को प्रव रण करता हूँ-भगवान ने हमने कोई शारीरिक वा बाबसिक दोप सो नहीं देखा है ?

धारिएक ! मैंने गर्रार या बचन के दोन कारी तुन्हें कभी नहीं पाना है। सारिएम ! हमें पण्डित हो पुण्डबाब हो। महाप्रकाबाय हो। तुन्हारी प्रशा प्रसन्त सर्वगामी सीवन और अपराजेन हैं। सारिएध ! जैसे चळवर्ता राजा का जैदा पुष पिता के मवर्तित चळ का सम्यक् प्रवर्तन करता है वैसे ही तम मेरे मवर्तित अनुकर धर्मवड का सन्वर प्रवर्तन करते हो ।

भन्त ! यदि मगवान् इमर्मे कोई शारिरिक या वाचसिक दोप नहीं वाते हैं तो मगवान् इन पाँच सा भिग्नाओं में भी कोई दोन नहीं पार्वेंगे ।

सारिएल ! इस इव वॉब मी सिक्षकों में भी कोई दोच वहीं वाले हैं। सारिपुत्र ! इन वॉब सामिताओं में भी साह भिष्ठ श्रीयेदा साह मिश्र प्राहिता साह मिश्र श्रीकी मान से विसुन, बीर बुमरे महा-विसुक्त हैं।

तर मानुष्पान् यहींगा मासन से उद, उत्तरनी की पुर कृत्ये पर सरमास भगवान् की मीर हाम जोड़कर बाल-भगवन ! वि द्वार कहना चाहता हैं। युद्ध ! मुत्ते द्वार कहने का अपरास्त्र मिने ।

भगवान् घोले---विद्वीश । अवकाश है, कहो । तव आयुष्मान् विद्वीश ने भगवान् के सम्मुख उपयुक्त गाथाओं मे उनकी स्तुति की---

भाज पन्चटशी को विशुद्धि के निमित्त,
पाँच सो भिक्षु एकत्रित हुये है,
(दश) मानसिक वन्धनों के काटनेवाले,
निष्पाप, पुनर्जन्म से मुक्त ॥
जैसे चक्रवर्ती राजा अमात्यों के साथ,
चारों ओर घृम आता है,
समुद्र तक पृथ्वी के चारों ओर,
वैसे ही, विजित-सग्राम, अनुत्तर नायक की,
उपासना उनके श्रावक-गण करते है,
त्रैविद्य, मृत्यु को जीतनेवाले ॥
सभी भगवान् के पुत्र हे, इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं है,
नृष्णारूपी शत्य को काटनेवाले,
उन सूर्यवशोत्पन्न बुद्ध को नमस्कार हो ॥

§ ८. परोसहस्स सुत्त (८.८)

बुद्ध-स्तुति

एक समय भगवान् साढ़े वारह सौ भिक्षुओं के वहें सघ के साथ श्राचस्ती में अनाथिपिण्डिफ के जेतवन आराम में विहार करते थे।

उस समय भगवान् ने निर्वाण-सम्बन्धी धर्मीपदेश कर भिक्षुओं को दिखा दिया । भिक्षु छोग भी वहें आदर से मन लगाकर ध्यानपूर्वक कान दिये सुन रहे थे।

तव आधुष्मान् चङ्गीरा के मन में यह हुआ—यह शिक्षु लोग भी कान दिये सुन रहे हैं। तो क्यों न में भगवान् के सम्मुखं उपयुक्त गायाओं में उनकी स्तुति करूँ।

' तव आयुष्मान् बङ्गीश आसन से उठ [पूर्ववत्]।

तब आयुष्मान् वङ्गीश ने भगवान् के सम्मुख उपयुक्त गाथाओं में उनकी स्तुति की-

हजार से भी ज्यादा भिक्षु बुद्ध को घेरे हैं,
जो विरज धर्म दिवदेश रहे हैं,
भय से शून्य निर्वाण के विषय में ॥
उस विमल धर्म को सुन रहे हैं,
जिसे सम्यक् सम्बद्ध बता रहे हैं,
मिश्रम के बीच बुद्ध बड़े शोभ रहे हैं ॥
भगवान् का नाम नाग है, ऋषियों में सातवाँ आदि हैं,
महाभेघ-सा हो, आवको पर वर्षा कर रहे हैं ॥
दिन के विहार से निकल बुद्ध के दर्शन की इच्छा से,
हे महावीर ! मैं चङ्गीश आपका आवक चरणों पर, प्रणाम् करता हूँ ॥
वङ्गीश ! तुमने क्या हन गाथाओं को पहले ही बना लिया था अथवा इसी क्षण सुझी हैं ?

^{छ विपस्यी बुद्ध से लेकर सातवें ऋषि (= बुद्ध)─अहकथा ।}

सन्ते ! मैंने इस गायाओं को पहले ही नहीं बना किया या इसी शन सुसी हैं। तो बड़ीमा ! भीर भी कुक पहुँ गायानें कही कियाँ तुनने पहल कभी नहीं रचा है। सन्ते ! यहूठ बच्छा' कह, आयुष्धात् करीछ स्तायान् को उत्तर दे पहले कभी नहीं रची गई नहीं गायाओं में मताबान की शादि करने कमी :--

> मार के अभाग को बीत ग्रम की गाँठी को काइजर किवरते हैं बन्धन में मुख कानेवाक उन्हें वैद्यो स्बच्छन्त कोगों को (स्पृति प्रस्तान वाहि नव्यास) बॉटरे-पहरे I सार के नियमत के किये सते 🗵 वकार से मार्ग को बताया शापके इस अग्रत-वह क्सले वर सर्वे के काली सजेव को रावे ॥ पैरुका शकाचा तेलवाके तक से उच्च बहेब्य को धार कर व्यथने वेद्य किया बावकर भीत साम्रातकार कर सक्ती पहले जान की कर्ते बताई ॥ इस ब्रह्मार के धार्मीवर्षका करने वर चर्ने बायनेवाको को प्रशास केंगा । इसक्रिये उन मगदान के शासन में सदा अपनच हो नवता से अस्तास की ॥

§९ कोण्डम्अ सुत्त (८९)

बस्त्रा-कोरहस्त्र के गुण

एक समय भगवाम् राज्ञगृह में वेलुवन नवन्त्र विवकाप में विदार करते वे ।

तम भाजुम्मान् अञ्जाना अञ्चल का के प्राप्त का के पाद कहीं भाजान से बाही गमें । भाज्य माणान् से किए माणान् के प्राप्त का के पाद का माणान् से प्राप्त के प्राप्त को माणान् का माणान् के प्राप्त को माणान् के प्राप्त को माणान् का माणान का माणान् का माणान का माणान् का माणान्

तथ व्यक्तमान् राहीश के सब में यह हुना—नह व्यक्तमान् संस्था-कोण्डास्म अपना नाम शुना रहे हैं । तो में मणवान् के सम्मुल बाह्मा-कोण्डास्म की वपनुष्य सामानों में मसंसा कर्ते । [पूर्वम]

तव मायुष्मान् सङ्गीहा भगवान् के सस्मुध वपसुष्ट गायानी में बायुष्माव् सन्मा-कोण्डस्म की कर्मण कामे को---

हुद के बठाये शाम को व्यक्तिकां स्थावित यहे बस्ताही कोण्यामा सुरावर्षक विद्यार करनेवां के परस जान को गर्दे के हुए। इद के सासन में रह ,विसी व्यावक से को बुठ प्राप्त किना का सकता है वह सभी व्यापको प्राप्त है काएको को अपनाम हो कावास करने हैं वह सभी व्यापको प्राप्त है काएको को अपनाम हो कावास करने हैं वह उत्सावक कोण्यास नामान के काफों पर वश्या कर रहे हैं ब

१०. मोग्गल्लान सुत्त (८. १०)

महामौद्गल्यायन के गुण

एक समय भगवान् पाँच सौ केवल अईत् भिक्षुओं के एक वडे सघ के साथ राजगृह में ऋषि-गिरि के पास कालशिला पर विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् महामोद्गल्यायन ने अपने चित्त से उनके चित्त को विमुक्त और उपाधिरहित हो गया जान लिया।

तव, आयुष्मान् वद्गीश के मन में यह हुआ—यह भगवान् पाँच सौ केवल अर्हत् भिक्षुओं के एक बढ़े सब के साथ राजगृह में ऋषिगिरि के पास कालिशिला पर विहार कर रहे हैं। और, आयु-प्मान् महामोद्गाल्यायन ने अपने चित्त से उनके चित्त को विमुक्त और उपाधिरहित हो गया जान िथ्या। तो, में भगवान् के सम्मुख आयुष्मान् महामोद्गाल्यायन की उपयुक्त गाथाओं में प्रशसा करूँ।

तव, आयुष्मान् वङ्गीश भगवान् के सम्मुख उपयुक्त गाथाओं में आयुष्मान् महामोद्गिल्या-यन की प्रशसा करने छगे---

पहाड के किनारे बैठे हुये, दु ख के पार चले नये मुनि को, श्रावक लोग घेरे हैं, जो त्रैविद्य और मृत्युक्षय हैं ॥
महा ऋदि-शाली मौद्गल्यायन अपने चित्त से जान लेते हैं,
इन सभी के विमुक्त और उपाधिरहित हो गये चित्त को ॥
इस तरह सभी अगो से अनेक प्रकार से सम्पद्म,
दु खो के पार जानेवाले गीतम मुनि की सेवा करते है ॥

§ ११. गग्गग सुत्त (८ ११)

बुद्ध-स्तुति

एक समय भगवान् द्यम्पा में गग्गरा पुष्करिणी के तीर पर—पाँच सौ भिक्षुओं के एक वहें सघ के, सात सौ उपासकों के, सात सी उपासिकाओं के, थोर कई हजार टेवताओं के साथ—विहार करते थे। उनमें भगवान् अपनी कान्ति और यश से यहुत शोभ रहे थे।

तव, आयुष्मान् चङ्गीश के मन मे यह हुआ- उनमें भगवान् अपनी कान्ति और यश से यहुत शोभ रहे हैं। तो, में भगवान् के सम्मुख उपयुक्त गायाओं में उनकी स्तुति करूँ-

'। तब, आयुष्मान् वङ्गीश भगवान् के सम्मुख उपयुक्त गाथाओं में उनकी स्तुति करने छगे— मेघ-रहित आकाश में जैसे चाँद, अपने निर्मेळ प्रकाश से शोभता है, हे बुद्ध ! आप महामुनि भी वैसे ही, अपने यश से सारे छोक में शोभ रहे हैं॥

§ १२. वङ्गीस सत्त (८ १२)

वङ्गीश के उदान

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेतवन आगम में घिहार करते थे। उस समय, आयुष्मान् वङ्गीश अभी तुरत ही अर्हन-पद पा विमुक्ति-सुख की प्रीति का अनुभव कर रहे थे। उस समय उनके मुख से ये गावार्ये निकल पर्दा-

पहरे येवल कविता करते विचरता रहा, गाँव से गाँव और ब्रहर से ब्रहर,

१५६]

ठक, सम्बद्ध भगवान् का वर्षण हुआ, मन में वही अब्दा बत्यध हुई उनने मुसे प्रमोपनंत्र किया एकण्य आपवन भीर पातुओं के विषय में वनके पर्म को सुन में पर से क्यर हो मानित हो गया। बहुतों की अपीक्षिद्ध के किए, मुनि में शुक्त का काम किया मिशु और मिशुजियों के किए, जो नियाम को मास कर वेश्व किये हैं ॥ आपको मंग श्वापत हो; गुज् के पास मुसे तीन विधार्ण मास हुई हैं। हुद का सासव सफक हुथा ॥ प्रमेकमों की बात कानता हूँ, दिल्या पह विश्वज्ञ हो गया है विवेश सीन कादियान हूँ, दूसरों के विश्व को कामता हैं 8

वहीश संयुक्त समाप्त 🛚

नवाँ परिच्छेद

९. बन-संयुत्त

§ १. विवेक सुत्त (९१)

विवेक में रुगना

ऐसा मैने सुना।

एक समय कोई भिक्ष कोशल के एक जगल में विहार करता था।

उस समय वह भिक्षु दिन के विहार के लिये गया तुरे ससारी वितर्कों को मन में ला रहा था। तब, उस वन में 'वास करनेवाला देवता उस भिक्षु पर अनुकम्पा कर, उसकी शुभ कामना से उसे होश में ले आने के लिये, जहाँ वह भिक्षु था वहाँ आया। आकर, भिक्षु से गाथाओं में बोला—

विवेक की कामना से वन में पेंठे हो,
किन्तु तुम्हारा मन वाहर भाग रहा है,
दूसरों के प्रति अपनी इच्छा को ववाओ,
और, तब वीतराग होकर सुखी होचो ॥
स्मृतिमान् हो मन के मोह को छोड़ो,
सःयुरुप बनो, जिसकी सभी बदाई करते हैं,
नीचे और बुरे,
काम-राग से तुम वहक मत जाओ ॥
पक्षी जैमे धूळ पढ़ जाने पर,
पाँखें फटफटाकर उसे उड़ा देता है,
वैसे ही, उत्साही और स्मृतिमान् भिक्ष,
मन के राग को फटफटाकर झाड़ देता है।

तव, देवता के ऐसा कहने पर वह भिक्षु सम्भल कर होश में आ गया।

§ २. उपद्वान सुत्त (९.२)

उठो, सोना छोड़ो

एक समय कोई भिक्षु कोशाल के एक जगल में विहार करता था। उस समय वह भिक्षु दिन के विहार के लिये गया सो रहा था।

तव, उस वन में वास करनेवाला देवता उस भिक्षु पर अनुकम्पा कर, उसकी शुभ कामना से उसे होश में छे आने के लिये, जहाँ वह भिक्षु या वहाँ आया। आकर, भिक्षु से गाथाओं में बोला—

> उठो भिक्षु ! क्या सोते हो ! तुम्हें सोने से क्या काम ? तीर छगे छटपटाते हुये वेचैन आदमी को भरा नींट केसी ?

बिस श्रद्धा से घर सं वेघर होकर शशकित हुने हो उस श्रद्धा को बगाओं नींद के वहा में मत पड़ो ॥

[मिश्र—]

सांसारिक काम प्रविश्य कीर कामून हैं जिनमें मूर्ज हुमाये रहते को रवपक्रम्य कीर नम्बन से मुक्त है जस प्रक्रकित को ये नमीं सतामें ? छम्द-राग के एव कामे से अविद्या के सर्वधा हुद वाने से जिसका मान भूज हो गया है जस मजतित को ने नमीं सतामें ? विद्या से अविद्या को दूरा वालाकी के ब्रीण हो आगे से को तोक और परिचाणी से कुछ है जस प्रक्रित को ने नमीं सतामें ? की सीर्वधान कीर प्रविद्यालय है विश्य हुद एक्स करनेताका है जिलाल की बाह प्रयोगार्थ कर प्रक्रित को ने नमीं सतामें ?

§ ३ कस्मपगांच सच (९३)

वहेटिया को उपवेश

पक समय अञ्चलात् काइयपनाम क्षेत्रक के किसी वत-काड में विदार करते थे। इस समय नायुष्मान् काइयपनोम्न दिन के विदार के किये गये हुचे पुक धदेकिये को उपरेश्न दे रहे थे।

हर उस यह में बाम करनेवाका देवता कायुष्माच् काष्ट्रपयोश्व से गावाओं में बोका — महादीव सूर्य पुर्णम ग्राव प्रदाष में रहनेवाके वहिकये की मिशु ! वेवप्रत उपदेश करते कुछे बाप मुझे सब्द शाव्यत होते हैं ॥ मुनता है किन्तु समारता गृहीं कींट बोक्यता है किन्तु देशता नहीं यमोंपदेश किय जाने पर कुछ नयों नारे को नहीं दशता त प्राह्यप्य ! यहि काण दस समास भी दिगामें तो वह रुगों की यहीं देग सहना है। प्रमु को कींट हा की है।

देवता क एमा कहने पर आयुष्मान काह्यप्रशोध होस में आकर सँनक गये ।

६ ४ सम्बद्ध सच (९ ४)

मिश्रणीं का स्थम्प्रम्य विहार

प्र गासक बुध लिशु को गाय के दिसी बन-प्रकार में बिहार करता थे। त्रव तीन महीना वर्षोवाम बीत जाने पर थे लिशु रमत (=चारिका) के लिये बन परे। त्रव उस का में बात करवेशाना वैवता उन लिशुओं को न देल विध्याव करता हुआ उस समये में गामार्थे काला---

> भाक मुझे वहा वहामन्या जात्त्वस हा रहा है इस अमेड भागमी की गामी देगपर ये जैंबी कैंबी बारी करवेदान्य विकास भागम के भावक कहाँ चल गामे ?

उसके ऐसा कहने पर, एक दूसरे देवता ने उसे गाथा में उत्तर दिया— मगध को गये, कोशाल को गये, और कितने चित्तियों के देश को गये, छूटे मृग जैसे स्वच्छन्ट विचरनेवाले, विना घरवाले भिक्ष लोग विहार करते हैं॥

§ ५. आनन्द सुत्त (९. ५)

प्रमाद न करना

एक समय आयुष्मान् आनन्द को दाल के किसी वन-खण्ड में विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् आनन्द को गृहस्य लोग वहें घेरे रहते थे।

तव, उस वन में वास करनेवाला देवता आयुष्मान् आनन्द पर अनुकम्पा कर, उनकी शुभ कामना से उन्हें होश में ले आने के लिये, जहाँ आयुष्मान् आ(नन्द थे वहाँ आया। आकर, आयुष्मान् आनन्द से गाथाओं में वोला —

> इस जगल झाड़ में आकर, हृदय में निर्वाण की आकांक्षा से, हे गौतम श्रावक ! ध्यान करें, प्रमाद मत करें, इस चहल-पहल से आपका का क्या होना है ?

देवता के ऐसा कहने पर आयुष्मान् आनन्द होश में आकर सँभल गये।

§ ६. अनुरुद्ध सुत्त (९ ६)

सस्कारों की अनित्यता

एक समय आयुष्मान् अनुरुद्ध कोशाल के किसी वन-खण्ड में विहार करते थे। तव, त्रयस्त्रिश लोक की जालिनी नामक एक देवता, जो आयुष्मान् अनुरुद्ध की पहले जन्म में भार्या थी, जहाँ आयुष्मान् अनुरुद्ध थे वहाँ आई। आकर आयुष्मान् अनुरुद्ध से गाथा में बोली —

> उसका ज़रा एयाल करें जहाँ आपने पहले वास किया था, त्रयिंक्षश देव-लोक में, जहाँ सभी प्रकार के ऐश-आराम थे, जहाँ आप सदा देवकन्याओं से घिरे रहकर शोमते थे॥

[अनुरुद्ध—]

अपने ऐश-आराम में लगी, उन देवकन्याओं को धिकार है, उन जीवों को भी धिकार है, जो देवकन्याओं को पाने में लगे हें॥

[जालिनी—]

वे सुख को भला, क्या जानें, जिनने नन्दन-वन नहीं देखा ! प्रयस्त्रिश लोक के यशस्वी, नर और देवों का जो वास है ॥

[अनुरुद्ध—]

मूर्खे, क्या नहीं जानती है, कि अहंता ने क्या कहा है ? सभी सस्कार अनित्य हैं, उत्पन्न और क्षीण होनेवालें, उत्तर होकर निरुद्ध हो बाते हैं उनाम शान्त हो जाना ही सुध्र है है फिर भी वेह भरना नहीं है

हे आक्रिमि | किसी भी देवकोक में भाषागमन का सिक्सिका वन्त्र हो गणा पुनर्जनम कव होने का पहीं ॥

१७ नागदच सच (९ ७)

वेर तक गाँवों में उद्गता अच्छा नहीं

एक समय मारावक्त कोशाल के किसी बन-प्रान्ड में विद्वार करते थे।

इस समय व्यापुष्पात् भागत्य ठड्डे ही गाँव में पैठ काते ये आह बढ़ा दिन विवाहर छीटते थे। ठड उस कर में बास करवेवाका देवता व्यापुष्पात् नागदण पर अधुक्मा कर, उनकी हुस-कामना से वर्ष्ट्र दोश में के वाले के किये व्याह्म व्यापुष्पात् नागदण वे व्याह्म आकर, आधुष्पात्य नागदण से गावाकों में बोका-

> नागहण ! तबक हो गाँव में देंठ बहुत दिव चड़ बाने पर स्पीरते हो गृहस्मी से बहुत हिके-सिके विचरते हो बनके सुध-हुत्त में सुखी बुत्ता होते हो ते बड़े मान्स्स नागहण को बगाता हूँ इकों में बीचे हुने को मत बकात् सन्धातक ।

त्व देवतः के पेसा शहने पर बाबुष्माम नागदत्त सँगकवन होस्र में वा गये ।

१८ इलधरणी सुच (९८)

नक होता समग्र है

पुरु समय कोई मिश्न कोशास में किसी वय-काट में बिहार करता था। इस समय वह मिश्न किसी शहरू-कह में बहुत है। एक बहा रहता था।

ता वस वस में नात करनवाका देवता वस मिश्च पर अनुकम्पा कर उसकी ह्रसन्ध्रमण से वसे होता में के काने किये वस कुक की थी कुक-पूर्वी थी करनव क्ष्म पर वहाँ वह सिश्च का वहाँ भाषा। जाकर मिश्च से गाया में बोका-

> मत्री के तीर पर, सतस्य में समा में सकतों पर क्रोग मध्यस में वार्ते करते हैं —हमारे-तुम्हारे में क्या भेड़ हैं ?

[भि**स**—]

वार्ते बहुत कैक गई हैं सपली को सहनी चाहिये उससे कवाना नहीं पढ़ेगा उससे बहनायी नहीं होती म को सम्ब सुनजर नीड जाता है जंगक के दूग कैसे कसे कीन कह-किन कहते हैं उसका मत नहीं प्रा होता प्र

§ ९. विजिपुत्त सुत्त (९९)

भिशु जीवन के सुख को स्मृति

एक समय कोई विज्ञापुत्र भिक्षु विशाली के किसी वन खण्ड में विहार करता था।

उस समय, वैशाली में सारी रात की जगोनी (एक पर्व) हो रही थी।

तब, वह भिक्षु वैशाली में वाजे गांजे के शब्द को सुनकर पछताते हुये उस समय यह
गाथा वोला —

हम लोग अपने अलग एकानत जगल में पड़े हैं,

वन में कटे हुये लकड़ी के कुन्दे की तरह,

शाज जैसी रात को भला,

हम लोगों को छोड़ दूसरा कोन अभागा होगा !!

तब, उस वन में वास करनेवाला देवता भिक्षु से गाथा में वोला —

आप लोग अपने अलग एकान्त जगल में पड़े हैं,

वन में कटे हुये लकड़ी के कुन्दे की तरह,

भाप को देख बहुतों को ईंप्यों होती हैं,

स्वर्ग में जानेवालों को देख जैसे नरक में पड़े हुओं को ॥

तब, देवता के ऐसा कहने पर वह भिक्षु सँभलकर होश में आ गया।

§ १०. सज्झाय सुत्त (९ १०).

स्वाध्याय

एक समय कोई मिश्च कोशाल के एक वन-लण्ड में विहार करता था।

उस समय वह भिक्षु—जो पहले स्वाध्याय करने में यदा वझा रहता था—उत्सुकता-रहित हो चुपचाप अलग रहा करता था।

तव, उस वन में रहनेवाला देवता उस भिक्षु के धर्म-पठन को न सुन जहाँ वह भिक्षु था वहाँ आया, और गाथा में बोला —

भिक्षु ! क्यां आप उन धर्मपढों को, भिक्षुओं से मिलकर नहीं पढ़ा करते हैं ? धर्म को पढ़कर मन में सन्तोप होता है, बाहरी ससार में भी उसकी बढी बढ़ाई होती है ॥

[hag—]

पहले धर्मपटों को पदने की ओर मन बदता था, जब तक वैराग्य नहीं हुआ, जब पूरा वैराग्य चला आया, तो सन्त लोग देखे सुने आदि पदार्थों को, जानकर त्याग कर देना कहते हैं॥

§ ११. अयोनिस सुत्त (९ ११) उचित्रिविचार करना

एक समय कोई भिक्ष कोशल के किसी वन-खण्ड में विहार करता था। उस समय, दिन के विहार के लिये गये उस भिक्षु के मन में पाप-विचार उठने लगे, जैसे — काम-विचार, न्यापाट-विचार, विहिंसा-विचार। राप इस वन-प्रण्ड में रहनेवाका देवता उस मिशु पर धनुकम्पा कर उसकी हामेच्या से, उस को होस में है भागे के क्रिये जहाँ यह मिशु वा वहाँ गया। बाकर मिशु से गावामों में बोका—

> बडीक समय करते से आप तुरे विचारों में पड़े हैं इन तुरे वितर्जें को छाड़ कवित विचार सम में कार्ने । इस घर्म संघ में कहा रख सीक का पाकन करते हुआ कहे धानम्य कीर प्रीतिसुक का कावस छात करते। उस कावन्य को पा हुएके का करत कर होगे 8

देवता के ऐमा कहने पर वह मिस होश में बाउर सँवध गया ।

६ १२ मच्झन्तिक सच (९ १२)

अंग्रस में मंगल

एड समय कोई मिलु कोहाल के किसी वन-चन्द्र में विदार करता था। तव उस दन में बाध करनेवाल देवता वहीं वह मिलु वा वहीं शावा। भाकर भिलु से यह गामा कोका:—

> इस भीच दुपहरिये में जन पड़ी चोंसके में किए गर्ने हैं सारा जंगल औंच-कोंच जर एवा है सो माने बर सा क्याता है ह

[भिन्न-] इम वाच बुपहरिये में सब पश्चिमों बॉलके में किए गये हैं सारा संगत मोंब मोंब कर रहा ह सो समे वर्षा ग्रीति बोटी हैं ब

ह १३ पाकविन्द्रिय सुच (९ १३)

द्वराबार के दु∆ष

एक समय बुठ मिसु कोहाल के किसी वन-राण्ड में विदार करते थे। वे वहे बब्त उदण्य परण करवारी पूरी वार्त करतेवाले सान्य असम्बद्ध आसमाहित विद्यालयिक और दुरण्यारी थे। ता उस्प नमें में साम करतेवाल वेवता उन मिसुकों पर अनुक्रमा कर उनकी सुनेष्या में उत्पर होता में संक्षात कर किसी के किसू से वहाँ आया। आवद उन मिसुकों से गाणा में बोहात-

िक्षो शंध § 4.]

६१४ पर्यपुष्पत्सास (९ १४)

विमा विच पुण मूँचना भी चारी है

ण्ड मामच कोई सिश्च कोदान्त के किसी वज-कण्ड में विदार बरना था । जग मामच बह सिश्च सिशास्त्र से लाट भीतन वर केने के बाद पुरुवित्रों में पेटक्टर एक कम का गींद रहा था:

तब उप वन में रहनेवाका देवना [वृष्यन्] शिशा में शाधा में शीका:---

को द्वार वारिक पुण्य को कारी में सूँच रहे हो। मी पुष्ट अकार की चीरी ही है। आहित ! आप सम्ब केंद्र हैं ह



दसवाँ परिच्छेद

१० यक्ष-संयुत्त

९१ इन्द्रक सूच (१०१)

पैगाइका

पुरु समय मनवान् राज्यपुद्ध में इन्द्रकृष्ट पर्वेद पर इन्द्रक वहा के सवन में विद्वार करते थे। तब इन्द्रक पक्ष वर्दी मनवान् से वर्दी साथा। जावर, मनवान् से गाया में बोका —

> कप श्रीय नहीं है ऐसा हुए बहुते हैं तो यह सरीर कैसे पाटा है ! यह अस्पिपिय कहीं से साटा है ! यह असीपिय कहीं से साटा है !

[भगवान्⊷]

पहुंचे क्वक होता है क्वक सं धरहुर होता है बरहुद से पेसी पैदा होता है पेसी फिर वन हो जाता है बन से हरजर केश कोम और नक पैदा हो साते हैं बन के सक्तक पाम मोजन को माता वाली है असी से अवका पोपण होता है—साता की कोच से पट हम सकल हा ह

§ २ सकसच (१० २)

उपवेश वेमा वस्प्रम महीं

पुंच समय मार्चाम् टाजागुद्ध में मुद्धाकुट पर्यंत पुर विदार करते थे। सब ट्राइट बाल का पुत्र बख्न बहुँ समावात् ये बहुँ काचा । बाल्डर सरावाद् से गाया में बोक्य---निमार्ग समी गोर्जे कर गाई क्यूडिशाइ की विद्याप हुए, बाए कमल को यह कपट्ड लेक्स्टर हुन्सी के उपनेत्र से टेन्टिंग है

[मगवान —]

चार्य किसी तरह भी किसी का संचात हो जाता है तो जानी पुरुष के मार्थ में इसके मित्र क्युडम्पा हो बाती है प्रमाध मार्थ में में पूर्व को उपदेश पूर्व क्युडम्पा हो बाती है उपमाध मार्थ क्युडम्पन में बहुँ पहुंचा क्युड़ि मुख्यमा अपने में सो पैदा होती है व

^{§ ३} स्रिपेलोम सुच (१०३)

ध्विक्षीम यहा के अदन एक समय अगवान वादा में दक्षितमध्य पर स्विद्धान वहा के अवन में विद्वार करते थे। इस समय धार और सुविद्धीम नाम के दो वहा अगवान के वास ही से गुजर रहे थे। तय, खर यक्ष स्चिलोम यक्ष से बोला—अरे ! यह श्रमण है ! श्रमण नहीं, नकली श्रमण है । तो, जानना चाहिये कि यह सचमुच में श्रमण है या ढोगी है । तब, स्चिलोम यक्ष जहाँ भगवान् थे वहाँ आया । आकर, भगवान् से अपने शारीर को टकरा देना चाहा ।

भगवान् ने अपने शरीर को खींच लिया।

तव, सृचिलोम यक्ष भगवान् से बोला-श्रमण । मुझसे ढर गये क्या ?

भावुस ! तुमसे में डरता नहीं, किन्तु तुम्हारा स्पर्श अच्छा नहीं ।

श्रमण ! में तुमसे प्रश्न पूर्छूँगा । यदि उनका उत्तर तुम नहीं दे सके तो तुम्हं बदहवाश कर दूँगा, तुम्हारी छाती को चीर दूँगा, या पैर पकडकर गङ्गा के पार फेंक दूँगा ।

आबुस । में सारे लोक में किसी को ऐसा नहीं देखता हूँ जो मुझे ववहवाश कर दे, मेरी छाती को चीर दे, या पैर पकडकर मुझे गङ्गा के पार फेंक दे। किन्तु तौ भी, जो चाहे प्रश्न पूछ सकते हो।

[यक्स--]

राग और ह्रेप कैसे पैटा होते हैं ? उटासी, मन का लगना और भय से रॉगटे खड़ा हो जाना . इसका क्या कारण है ? मन के वितर्क कहाँ से उठकर खींच ले जाते, जैसे कीये को पकड़कर लडके लोग ?

[भगवान् —]

राग और ह्रेप यहाँ से पैदा होते हैं,
उदासी, मन का लगना का कारण यही है,
मन के वितर्क यहीं से उठकर खीच ले जाते हैं,
जैसे कीये को पकड़कर लड़के लोग ॥
स्नेह में पड़कर अपने में पैदा होनेवाले,
जैसे वरगट की शाखायें,
कामों में पसरकर फैली,
जगल में मालुवा लता के समान ॥
जो उसके उत्पत्ति-स्थान को जान लेते हैं,
वे उसका उमन करते हैं, हे यक्ष ! सुनो,
वे इस दुस्तर धारा को पार कर जाते हैं,
जिमे पहले नहीं तरा था उनका पुनर्जन्म नहीं होता ॥

§ ४. मणिभइ सुत्त (१०, ४)

स्मृतिमान् का सदा कल्याण होता है

एक समय भगवान् मगध में मिणमालक चैत्य पर मिणमद्र यक्ष के भवन में विहार करते थे। तव, मिणमद्र यक्ष जहाँ भगवान् थे वहाँ आया। आकर, भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला—

स्मृतिमान् का सदा कल्याण होता है, स्मृतिमान् को सुख होता है, वही श्रेष्ठ है जो स्मृतिमान् है, और, वही वैर से छूट जाता है॥ [मगवान्--]

स्यतिमान् का सदा करवाण होता है रहातिमान् को सुक्त होता है वही भेड़ हैं को स्त्रतिमान् हैं वह वेर सं विष्युक हुड नहीं जाता ग ब्रिसका मन दिन-तात थोईमा में कमा रहता है रामी बीचों के नति को सहा मीजी-मावका करता रहता है दम किसी के साथ वेर नहीं रह बाता ग्र

६ ५ सानु सुच (१० ५)

उपोलय करनेवाछे को यहा नहीं पीड़ित करते

ण्ड समय सगवान् श्रायस्ती में अनायपिण्टिक के जेतवन काराम में विद्वार करते में । इस समय किसी दगसिक का खातु नामक पुत्र वक्ष से एकड़ किया गया वा । तब बहु दगसिक रोठी दुई इस समयु यह गांवा बोकी—

> र्जने बहुँकों की पूजा की फ्रेंबे बहुँकों की बात सुनी बहु में बाज देगती हूँ—यस कोग सानु पर सवार हैं ब कुर्नुसी पन्त्रवृत्ती पस की कदमी आर प्रातिहान पर को बद्दोग तत पाकरी हुई उपोसन प्रद रकती हुई आईतों की बात सुवनेवाकी बहु में बाज देतनी हुँ स्थात प्रात्त प्राप्त सवार हैं ब

[यस-]

बतुरेसी पण्यस्ता पक्ष की जहारी कीर प्राविहार्ष पक्ष की कहांग तत पाकने रुपोस्स प्रत रागने, यथा महत्त्वर्ष पाकनेवार्कों क साथ पड़ सीग छेद-प्रत नहीं करते बर्दन् कींग बादी कहने हैं त प्रत्य खानु को गारी की इस बात का यह दी पाय-कर्म प्रत करता प्रत का पह दी पाय-कर्म प्रत करता प्रत कर ही भी तुन्हें हुन्य स कमी शुन्ति बहाँ हा सहन्यां कार्ड किना भी पाने बा स्ट्रोन्टी त

[गानु—]

में ? पुत्र व मर काने स मानायें रोती हैं अपका कहि जाते पुत्र का नहीं देन सकती हों माँ ! मुमे कीने देगती कुट्टै की कराकट मेरे किये हैं। यह क्षा ?

[माठा—]

पुत्र के घर जान में आलाई होती हैं संभवा चित्र जीते पुत्र का नहीं देख शहती हैं। भौर उसके दिन भी हों जीन कर और आला है पुत्र, उसके लिये भी रोती है, जो मरकर फिर भी जी उठता है, हे तान ! तुम एक विपत्ति से निकलकर दूसरी में पड़ना चाहते हो, एक नरक से निकल कर दूसरे में गिरना चाहते हो, आगे घड़ो, नुम्हारा कटयाण हो, किसे हम कप्ट दें ? जलते हुए से कुशलपूर्वक निकले हुये को, वया तुम फिर भी अला देना चाहते हो ?

§ ६. पियद्वर सुत्त (१० ६)

पिशाच-योनि से मुक्ति के उपाय

एक समय आयुप्सान् अनुरुद्ध श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेतवन आर(म मे विहार करते थे।

उस समय आयुष्मान् अनुरुद्ध रात के भिनसारे उटकर धर्मपढों को पढ़ रहे थे। तय, त्रियद्वर माता यक्षिणी अपने पुत्र को यो ठोंक रही थी—

मत शोर मचावो, हे प्रियद्धर !
भिक्ष धर्मपदा को पढ़ रहा हे,
यदि हम धर्मपटा को जानें
ओर आचरण करें तो हमारा हित होगा,
जीवो के प्रति सयम रवलें,
जान-बूह्मकर हाउ मत बोलें,
और इस पिशाच-योनि से मुक्त हो जावें ॥

🖇 ७, पुनव्यसु सुत्त (१० ७)

धर्म सबसे प्रिय

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिण्डक के जेतवन आराम में विहार करते थे। उस समय मगवान् भिक्षुओं को निर्वाण सम्बन्धी धर्मीपदेश कर रहेथे। भिक्षु भी कान दिये सुन रहेथे।

तव, पुनर्वसु-माता यक्षिणी अपने पुत्र को यां ठोक रही थी—
उत्तरिके! चुप रहो, पुनर्वसु! चुप रहो,
कि में श्रेष्ठ गुरु भगवान बुद्ध के धर्म को सुन सकूँ॥
भगवान सभी गाँठ से इंटनेवाले निर्वाण को कह रहें है,
इस धर्म में मेरी श्रद्धा बड़ी वह रही है॥
समार में अपना पुत्र प्यारा होता है, अपना पित प्यारा होता है,
मुझे इस धर्म की खोज उसमें भी वहकर प्यारी है॥
कोई पुत्र, पित या त्रिय दु खां से मुक्त नहीं कर सकता,
जैसे धर्म-श्रवण जीवा को दु खों से मुक्त कर देता है॥
दु ख से भरें ससार में, जरा और मरण से छगे,

बरा बार मरण से मुक्ति के किए जिस वर्ग का उदय हुआ है उस बर्ग को सुबना चाहता हूँ"। युगवस्तु ! शुप रहो ॥

[पुनर्वस—]

सों ! में इज न बोब्हेंगा बच्चरा भी चुप है इस चर्म भवण करों असे का सुवन्ता सुक है सद्दर्भ को बाव हे माँ [इस दुग्द को इस देंगे। ॥ भव्यकार में पढ़े देवता और सचुन्तों में सूर्य के समान, परमेका समावान यह झाती अमेंपियेश करते हैं।

[माता—]

मेरी कोक सं पैपा हुने तुम पण्डित पुष्ट कम्प हो मेरा पुत्र हुद के खुद धर्म पर अहा रफता है ॥ पुत्रवैद्ध ! धुक्षी रही, आज मैं कपर कठ गई, आप-सला का वर्षन हो गया एक्टो ! तम भी मेरी बात सभी ॥

[§]८ सुद्च सुच (१०८)

मनाधिपण्डिक द्वारा वृद्ध का प्रथम वर्धन

एक समय भगवान राजनाह के द्वीतवन में विदार करते थे।

बस समय अनाधिपिण्डक गृहपित किसी काम से राजगृह में नापा हुआ था।

समायपिष्डक पृद्वपित ने भुना कि संसार में हुद वश्यक हुने हैं। उसी समय वह मगवाए के वर्मन के किये कामावित हो गया।

त्व अन्तर्रायिनिक गृहपति के तम में पैसा हुन्या—जात चक्कर सरावान् को हेचने का जयस्य स्पर्य नहीं है। कर अधिक समय पर बकते वर्षण को चन्द्रीता। इन को बाद करते-करते सी गया। सुम्हें हो गया सराम एक में तील बार कर गया।

तप सनाधिपि । इस पृष्ठपति वहाँ सिवयिक-द्वार (इसशान का फाटक) वा वहाँ गया । भनतप्तों ने द्वार पीक दिया।

त्तव अनापाणिण्डाक पृष्पति के बगर से निकक्ष पर प्रकाश दर गया और अँधेरा छा गया। मब से बहु स्वतिस्त हो गया उत्तरके गुंगरे लहे हो गये। वहाँ से किर और जाने की हुएए होने सगी।

तव श्रीवद वस नगरपक्ष रूप से ही शब्द शुवाने क्या ।

सी को है भी हाथी भी वाहों वाका रख मोदी-आदिवन के कुणक पहने काल कन्यायें; ये सभी दुग्दारे हुन पक देग के शाकावाँ हिस्से के भी बरावर वहीं हैं क पुरुषति ! कामें वही पुरुषति ! कामें बढ़ी दुग्दारा भागे वहना ही करना कै शोके हुटना वहीं ह

तः अनापरिशिष्टक गृहपति के सामने से अन्यकार हट गया और प्रकास फैंक गया । सारा मण सामन के गया ।

नुवरी बार भी

तीमरी बार भी अनाथिषिण्डक के सामने से प्रकाश हट गया और अन्धकार छ। गया। भय से बह मक्भित हो गया, उसके रागटे खड़े हो गये। वहां से फिर लाट जाने की इन्छा होने लगी। तीसरी बार भी जीवक यक्ष अप्रयक्ष रूप से ही शब्द सुनाने लगा।

[पूर्ववत]

तुम्हारा आगे बदना ही अन्छा ह, पीछे हटना नहीं ॥

तत्र, अनाथिषिडक गृहपति के सामने स अन्धकार हट गत्रा और प्रकाश फेल गया। सारा भय 'शान्त हो गया।

तय, अनाधिपिण्डिक शीतवन में जहाँ भगवान् ये वहाँ गया। उस समय भगवान् रात के भिनयारे उठकर खुळी जगह में टहल रहे थे।

भगवान् ने अनाथिपिण्डिक गृहपिन को दृर ही से आते देगा। देग्रकर, टहलने से रुक गये और विजे आत्मन पर बैट गये। बैटकर, भगवान् ने अनाथिपिण्डिक गृहमिन को यह कहा — सुदत्त । यहाँ आओ। अनाथिपिण्डिक ने यह देग्य कि भगवान् सुझे नाम लेकर पुरार रहे है, एउडे उनके चरणो पर गिर यह कहा — भन्ते। भगवान् ने तो सुग्यपूर्वक साया १

[भगवान्-]

मटा ही सुम्ब में मांता है, जो निष्पाप ओर विमुक्त ह, जो कामा में लिस नहीं होता, उपाधिरहित हो जो बान्त हो गया है, सभी आमक्तियों को काट, हृदय के क्टेंश को दया, शान्त हो गया सुख में मोता है, चित्त की शान्ति पाकर ॥

§ ९. सुक्का सुत्त (१० ९)

शुक्रा के उपदेश की प्रशंसा

एक समय भगवान् राजगृह के वेलुवन कलन्द्रक-निवाप में विहार करते थे। दम समय द्युका भिक्षुणी वहीं भारी सभा के बीच धमापदेश कर रही थी। तब, एक बक्ष द्युका भिक्षुणी के धमीपदेश से अत्यन्त सतुष्ट हो सदक से सदक ओर चोराहा से चाराहा घूम-घूमकर यह गाथा वोल रहा था।

> राजगृह के लोगो ! क्या कर रहे हो, ढारू पीकर मस्त वने जैसे ? गुक्ता भिक्षणी के उपदेश नहीं सुनते, जो अमृत-पट को बसान रही हे, उस अप्रतिवानीय, विना सेचे ओज से भरे, (अमृत को) ज्ञानी लोग पीते हैं, राही जैसे मेघ के जल को ॥

§ १०, सुक्का सुत्त (१० १०)

शुका को भोजन-दान की प्रशसा

एक समय भगवान् राजगृह के चेलुचन कलन्दकनिवाप मे विहार करते थे। उस समय कोई उपासक शुका भिक्षणी को भोजन दे रहा था। तप शुक्ता भिश्चणी पर अप्यन्त अहा राग्नेपाला एक यहा सङ्कात सङ्कात परिवास में चीराहा पुस पुस कर यह गाया योक रहा था।

महुरु मारी पुण्य कमाया इस मकावान् वपासक थे, को सुका, को मोकन दिया जम का सारी मन्दियों से विमन्द हो गई है।

> \$ ११ चीरा सुच (१० ११) चीरा को चीयर-शम की प्रशसा

वेस्वव कमम्बर्गिवाय में विदार करने थे।

उस समय कोई क्यायफ कारा मिल्लुयों का थीवर दे रहा था । तथ खीरा मिल्लुयों वर शावाठ शका स्वर्गमाका एक पक्ष सबक से सबक और चौराहा से चराहा बूम-यूम कर यह गावा वास रहा जा ।

> बहुत धारी पुण्य कमाया इस महावान् उपासक न को सीहर को बीवर दिया इस का सारी प्रनिध्यां से विशक्त हो गई हैं 8

> > हु**१२ बालवक सुत्त** (१० १२)

आश्चक-एमन

पेसा मैंने सुना ।

एक समय भगवान् आहरकी हैं। आहरक्क यहा व भवन में विदार करते ये ।

त्व बाह्यक् वह मगवान् सं वीका-धमन । निक्क वा ।

'मानुस ! बहुत धर्डा" कह सगवाब तिहस तथे।

मत्त्व । भीतर चडे बाओ ।

"शासुस ! बहुत शब्का" कह सरावाद सीतर वह जाने ।

इप्तरी बार भी ।

यूधरायारमा । सीमरीकारमी ।

"मानुस | बहुद अच्छा कह मगवाम् मीतर वहे मावे।

चीथी बार भी आस्त्रपद थस्न बोका—समस ! तिकक का ।

भावस ! मैं नहीं जिनकता । तम्हें को करवा है करी ।

भारत ! में दशा प्रश्च पहुँगा । वहि उत्तर वहीं वे सके दो तुम्हें बहुदवादा कर दूँगा करती चीर

हुँगा वा पैर पक्षत्र कर शङ्का के पार खेंक हुँगा। व्यक्त ! सारे कोक में में किसी को वहाँ देखता वो मुझे वददवास कर दे, मेरी काती वीर है,

या पैर पण्डकर मुझे गाग के पार दें क है। किन्तु, तुम्हें जो पूछमा है सके में पूछ सकते हो। [पका-]

पुरुष का सर्वजेड धन नवा है ? क्या पटोरा हुआ सुख देता है ?

रसों में सबसे स्वाविश क्या है ?

कैंसा जीता सेंध कहा काता है 7

[भगवान्—] श्रद्धा पुरुष का सर्वश्रेष्ट धन है, घटोग हुआ धर्म सुग देता है, सत्य रसं में सगमें स्वादिष्ट हैं,

प्रज्ञा-पूर्वक जीना श्रेष्ट कहा जाता है ॥

[यक्ष—] घाड़ को कैसे पार कर जाता है ? समुद्र की कैमे तर जाता है ? केंमे हु.मी का अन्त कर देता है ? कैमे परिशुद्ध हो जाता है ?

[भगवान्-] शद्धा से बाद को पार कर जाता है, अप्रमाद से ममुद्र को तर जाता है, वीर्य में हु प का अन्त कर देता हैं, प्रज्ञा में परिशुद्ध हो जाता है।

[यक्ष--] केमे प्रज्ञा का लाभ करता है ? धन को कैसे कम। छेता है ? केमे कीति प्राप्त करता है ? मित्रा को कैसे अपना छेता है १ इस लोक से परलोक जाकर. केंसे शोक नहीं करता १

[भगवान्-] निर्वाण की प्राप्ति के लिये अर्हत् और धर्म पर श्रद्धा रख, अप्रमत्त ओर विचक्षण पुरुष उनकी शुश्रूषा कर प्रज्ञा लाभ करता है। अनुक्ल काम करनेवाला, परिश्रमी, उत्माही बन कमाता है, सत्य में कीति प्राप्त करता है, टेकर मिन्नों को अपना लेता है, ऐसे ही इस लोक से परलोक जाकर शोक नहीं करता ॥ जिस श्रद्धालु गृहस्थ के ये चारी धर्म होते हैं, सत्य, उम, रति और स्थाग वहीं परलोक जाकर शोक नहीं करता ॥ हाँ, तुम जाकर तृमरे श्रमण और ब्राह्मणा को भी पूछो, कि क्या मत्य, दम, त्याग और क्षान्ति से बदकर कुछ और भी हैं ?

[यक्स---] अव भला, दूसरे श्रमण ब्राह्मणों को क्यों पुर्हें ! आज हमने जान लिया, कि पारलीकिक परमार्थ क्या है, मेरे क्रयाण के लिये ही बुद्ध आलवी में पधारे. आज हमने जान लिया कि किसको देने का महाफल होता है ॥ सो में गाँव से गाँव, और शहर से शहर विचरुगा, बुद्ध और टनके धर्म के महत्त्व को नमस्कार करते॥

इन्द्रक वर्ग समाप्त यक्ष सयुत्त समाप्त

ग्यारहवाँ परिच्छेद

११ शक-संयुत्त

पहला भाग

प्रथम बर्ग

देवासर-मन्नाम परिश्रम की मर्शना

§ १ सुबीर सुच (४१ १ १)

एमा मैने सुना।

पुरु समय मगवान् आवस्त्री में अनाधपि विषक के जेत्वन आधम में विदार करते थे । वर्षों भगवान् ने मिश्रकों को सामन्त्रित किया—है मिश्रको !

'भद्रस्त । कड्कर मिशुओं ने मगदान को उत्तर दिना।

भगवाद वाके—सिमुक्षां ! पूर्वकाक में अमुर्ग ने दवाँ पर कहाई की । तथ देवेन्द्र द्वाक ने सुवीर देवेच्य को आमिन्दिन किया—सात ! वे अमुर दवाँ पर वहाई कर रहे हैं । तात सुवीर ! जाओ उनका मामना करा । सिमुक्षा ! तक 'अदस्त ! बहुत अपका' कह सुवीर देवपुत्र में दाज को उत्तर दं गाउकत कि दे रहा ।

मिधुओ ! बूमरी बार भी

मिश्रुमो ! तीमरी वार भी वेषेन्त्र इक्षि ने सुवीर वेषपुत्र को । सुनीर वेषपुत्र गक्रकट कियादाः

मिमुभा ! इंदरत्र द्वाम सुयीर देवपुत्र का गाया में बीका-

दिना ममुद्धान भार परिज्ञम किये जहाँ सुध्य की प्राप्ति हो आशी है सुर्घार ! तुम वहीं क्ले आजी सुझ भी वहीं के कसो ॥

[सुयीर---]

भाममी श्रादिक जिसम कुछ भी गई। किया जाता वैस मुझे द दाल ! समी श्रामों में सफल दाव का वर दें ॥

[TH-]

प्रश्नी भागमा पादिन भागमा सुरः काता है रहेकी र तुन वहीं वसे आभी सुने भी वहीं क वणी ॥

[गुपीर--]

र्ष पेयथेड दाशः १ कर्म छात्र जिस सुन्द का पा कोट और परेवानी से एट आई रेमा वर में स [হান্ধ]---

यदि कमें को छोड़कर कोई कभी नहीं जीता है, तो निर्वाण ही का मार्ग है, मुत्रीर ! नुम बहो जाओ, मुझे भी बहाँ छे चलो ॥

भिक्षुओं । वह देनेन्द्र शक अपन पुण्य के प्रताप से त्रयस्त्रिश देवों पर ऐश्वर्य पा राज्य करते हुये उत्पाह और चीर्य का प्रशंसक है। भिक्षुओं । तुम भी, ऐसे स्वाग्यात धर्म-विनय में प्रवित्ति हो उत्पाह- पूर्वक यह साहस से परिश्रम करो अशास की प्राप्ति के लिये, नहीं पहुँ चे स्थान पर पहुँ चने वे लिये, नहीं साक्षान्कार किये का साक्षान्कार करने के लिये, इसी में तुम्हारी शोभा है।

२. मुसीम सुत्त (११ १ २)

परिश्रम की प्रशंसा

श्रावस्ती जेतवन में।

वहाँ भगवान ने भिक्षुओं को आमन्त्रिन किया-है भिक्षुओं !

"भटन्त ।" कहकर भिक्षुओं ने भगवान को उत्तर टिया।

भगवान् योले —भिक्षुओं। पूर्वकाल में अमुरी ने देवी पर चढ़ाई की। तब, देवेन्ट शक्त ने सुसीम देवपुत्र को आमन्त्रित किया [शेप पूर्ववन]

§ ३ धजग्ग सुत्त (११ १ ३)

देवासुर-संश्राम, त्रिरत्न का महात्म्य

थावस्ती जेनवन में।

मगवान वोले-भिक्षुओं । पूर्वकाल मे एक वार देवासुर-मग्राम छिड़ गया था।

भिक्षुओं ! तय, देवेन्द्र शक ने त्रयस्त्रिश लोक के देवों को आमन्त्रित किया—हे मारिपो ! यदि रण-क्षेत्र में आप लोगों को दर लगने लगे, आप म्निभत हो जायँ, आपके रोगटे खड़े हो जायँ, तो उस समय में ध्वजाय का अवलोकन करें। मेरे ध्वजाय का अवलोकन करते ही आपका मारा भय जाता रहेगा। यदि मेरे ध्वजाय को नहीं देख सके तो देवराज प्रजापित के ध्वजाय का अवलोकन करें।

यदि देवराज प्रजापित के ध्वजाय को नहीं देख सकें तो देवराज वरुण के ध्वजाय को । देवराज ईशान के ध्वजाय का अवलोकन करें । इनके ध्वजाय का अवलोकन करते ही आपका

मारा भय जाता रहेगा।

भिक्षुओ ! देवेन्द्र शक्त के, देवराज प्रजापति, वरुण, या ईशान के ध्वजाप्रका अवलोकन करने से कितना का भय जा भी सकता या और कितना का नहीं भी जा सकता या।

सो क्या ? मिक्षुओ ! क्योंकि टेवेन्द्र शक अवीतराग, अवीतहेप, अवीतमोह, भीरु, म्निम्भित हो जानेवाला, घवड़ाकर भाग जानेवाला था।

भिक्षुओ ! किन्तु, में तुम से कहता हूँ। भिक्षुओ ! यदि वन में गये, श्रून्यागार में पेठे, या नृक्ष-मूल के नीचे बंठे तुम्हें भय लगे , तो उस समय मेरा स्मरण करो—वंसे भगवान् अर्हत, सम्यक्, सम्बुद्ध, विद्या और चरण से सम्पन्न, सुगति को प्राप्त, लोकविद्, अनुत्तर, पुरूपों को उमन करने में सारथी के तुल्य, टेवताओं और मनुत्यों में बुद्ध, भगवान् हैं।

भिक्षुओ ! मेरा स्मरण करते ही तुम्हारा मारा भय चला जायगा ।

पदि मरा नहीं तो धर्म का स्मरण करो—सगवाद का धर्म स्वास्थात (=वस्प्री तरह वर्षित) मोर्टिक (= देपता ही दसते फल दनेवासा) अकाकिल (=विधा हेरी के सफक होनेवाका) किसी की भी वाँच में पारा उत्तरनेवाका निर्वाण तक के आनेवाका और विश्वों के हारा अपने मीतर ही भीतर साथ काने वाग्य हैं।

भिम्नवो ! पर्म का स्मरण करते ही तुन्हारा सारा सव चक्रा आपगा ।

यदि यसे बर मही तो संब का स्मारण करो—सगवाय का बावक-संब सुप्रतियव (=भक्के मार्ग पर जावन) क अनुप्रतियक्ष (=भीचे मार्ग पर बावक) है जान के मार्ग पर बावक है वित्त वस से साम पर भावक द यो यह पुरुष का चार जोड़ा बाव पुरुष हैं । यही सगवान का बावक-संब निमान्य करत के सान्य है सन्वार काले के बील्य है जान हैने के बील्य है प्रकास करने के बील्य है संस्तार का सन्वार के सान्य है ।

भिक्षमो ! मेथ का स्मरण करते ही तुन्हारा मारा सब बका कावगा ।

मा क्या ? मिशुओ ! क्यांकि तयागत काईन् मन्यक् सम्युक्त बीतराग बीतहेय बीतमोह समय सीर रह है।

भार रहे हैं। भागगान ने यह कहा । यह व्यवकर श्रुष्ट ने फिर भी कहा—

> अरुव में वा बुध क नौके है सिशुओं] वा घून्यतार में सामुद का नमरण करों तुम्बारा भव वहीं रहण वादमां ॥ मोकडोड गरोत्तम मुद्द का वहि स्मरण क करो वा मोस्वयन मुद्दिशित कमें का स्मरण करों । मास्वदानक मुद्दिशित कमें का वहि समस्य करों है। अनुवा पुण्य-क्षेत्र मंग्र का नमस्य करों है सिशुओं | इस मासर युद्ध चर्म का संय के स्मरण का मय न्तिनित्त हो गाना वा रोसाण्य मानी पत्तम अवना त

> > १९ वेगचिति मुत्त (११ १ ४) क्षमा और सीजस्य की सहिया

धायस्ता जनवन में।

भगवाब बाले-भिश्वका ! प्रकार में देवाम्र मंग्राम छिद गया था ।

तक अमुरेन्द्र यगुश्चिल में अमुरी का आसन्तिन किया—सारियो । वहि इस देवासुर-संमान से अमुरी का जीन आर देवी में इस डा जाव नी देन्द्रदाझ की द्वाय पैर और बाँच बनवारी से बाँवकर असरास से सेर कार्य ल आशा ।

मिनुसी ! इंदरबू दान ने भी बचरित लोड के देवों को आवस्तित दिया—सारियो ! वाँद इस देवानुर-मंग्रास में देवा की जीन और अनुरा की दार दा अप तो अनुरेश्न सेमुसिन्ति को बाँव बन्दर्सी मैं बायदर सुपन्नी रामा में नेर वास क भाजा !

भिक्षाओं ! प्राप्त मीताम से देवों की जीत और बनतें की हार हाई !

भिभूजो ! तक देवी ने अगुरूत्र यथिकि का सन्न में पावर्षी करवन शत सुधमा सभा में देवन राज के पाया है

िश्वभी : धार्मित्रिण अनुनेत्र गरे में गाँचने बन्धन ने बँध रह देवेन्त्र नाम की सुध्यमान्त्रस्य प्रिश्त पर वर्षों स विकास असाम करी वस्त्री स सामित्रों तेना था ।

सब जिल्लामा । जाननित मेनपुर में देवेग्द्र राज का गावा में कहा---

र रोपर्याल इत्राहर्म अत्राप्ती अन्य अर्द्धिय में त्यावन को प्राप्त दी मानुजीहा दर्वे अ. कुरारी

7

हे शक ! क्या आपको दर लगता है ? क्या अपने को कमजोर देखकर सह रहे है ? अपने सामने ही वेपचित्ति के, इन कड़े-कड़े शब्दों को सुनकर भी ?

[शक--]

न भय से और न कमजोरी से, में वेपिचित्ति की वार्त सह रहा हूँ, मेरे जैसा कोई विज्ञ ऐसे मूर्ज से क्या मुँह लगाते जाय।

[मातिल-]

मूर्ख और भी बद जाते हैं, यदि उन्हें द्या देनेवाला कोई नहीं होता है, इसलिये, अच्छी तरह दण्ड दे, घीर मुर्ख को रोक दे॥

[शक—]

. मूर्ज को रोकने का मे यही सबसे अच्छा उपाय समझता हूँ, जो दूसरे को गुस्साया जान, स्मृतिमान् रह शान्त रहे ॥

[मातिल-]

हे वासव ! आपका यह सह लेना में बुरा समझता हूँ, क्यांकि, मूर्ख इसमें समझने लग जायगा, कि मेरे भय ही से यह सह रहे हैं, मुर्ख और भी चढ़ता जाता है, जैसे बैल भाग जानेवाले पर ॥

[शक -]

उसकी इच्छा, यदि वह यह समझे या नहीं, कि मै उससे डरकर उसकी बातें सह रहा हूँ, अपने को उचित मार्ग पर रखना ही परमार्थ है, क्षमा कर देने से बढ़कर कोई दूसरा गुण नहीं ॥ नो अपने वली होकर दुवंछ की वातें सहता है, उसी को सर्वोच शान्ति कहते है. दुर्बल तो सटा ही सहता रहता है।। वह वली निर्वल कहा जाता है, जिसका वल मूर्खों का वल है. धर्मात्मा के वल की निन्दा करनेवाला कोई नहीं है। जो मुद्ध के प्रति कुछ होता है, वह उसकी बुराई है, कुद्ध के प्रति क्रोध न करनेवाला, दुर्जेय सम्राम जीत लेता है।। दोनां का हित करता है, अपना भी और पराये का भी. दूसरे को जो कुद्ध जान, सावधान हो शान्त रहता है ॥ अपने और पराये दोना का इलाज करनेवाले उसे. धर्म न जाननेवाले पुरुप 'मूर्खं' समझते हैं॥

भिक्षुओ ! वह देवेन्द्र शक अपने पुण्य के प्रताप से त्रयस्त्रिश्च पर ऐश्वर्य पा, राज्य करते हुये क्षान्ति और सीजन्य का प्रशसक हैं । भिक्षुओ ! तुम भी ऐसे स्वाख्यात धर्म-विनय में प्रज्ञजित हो क्षमा और सीजन्य का अभ्यास करते शोभो ।

६ ५ सुमासित खब सुच (११ ९ ५)

समापित

भाषस्ता में।

मिल्लाओं ! पूर्व काक में एक बार देवासुर-संप्राम किए गया था !

त्र असुरेन्द्र वरिविति में देवेन्द्र हाक की यह कहा---वे देवेन्द्र | क्षुप्र वचन बोकनेवाके की ही स्रोत हो |

हाँ संपश्चिति । अस वचन बोकनवाक की हाँ जीत हो ।

सिश्चनी ! तक देवीं कार अञ्चल ने सम्बन्ध चुने—पड़ी सुमापित का दुर्मापित का फैसक्स करेंगे।

निश्चभी ! तव अञ्चलेक वेपशिक्षित में इंडेन्द्र साक का यह कहा—हे इंडेन्द्र ! कोई गाना करें ! निश्चका ! उसके ऐसा कहने पर ज्वेन्द्र राज में अञ्चलक वंपशिक्त को यह कहा—हं बेपश्चिति ! आप हो वह देन हैं आप ही पहले कोई गाया कहा।

मिश्रभी ! इस पर असरेन्द्र सेपचिक्ति यह गाया बाह्म-

मूर्ज भीत भी बद बात है यदि उन्हें इया देनेवास्त काई नहीं होता हं इम्मीकने समझी तरह तबह हो भीत सूर्ज को रोक दंग

मिश्रुमी ! अपुरम्ब-वेपश्चिति के वह गावा कान पर अपुरों ने बसका अपुनादन किया किया इंच सब बुपवाप रहें ।

मिश्रुमो | तत्र असुरेन्त्र वैष्विशित ने दवन्त्र सक्र का यह क्यां— हे देवन्त्र | जब आप कार्ट्र गाथा कर्षे

... मिल्लामा ! उसक पुरा वहने पर देवेन्द्र बाक वह साथा वीका---

मूर्ज को राजने का मैं बढ़ी सबसे अच्छा उपार्व समझदा 🕻

को नुमारे को गुम्साया जान भावचानी से सान्त रहे ह

मिहना ! देवेन्त्र राक क यह साथा कहने पर देवों ने कमका सतुसादन किया; किन्तु सर्थ ^{क्रमुर} सर्वभाग रहे ।

मिम्रुजी ! तव देवेण्य सकने असुरण्य स्पत्तिचा को यह कहा-चेपसिचा ! जाप कोई गाया कों !

विपधित्ति—]

हें शामन | आपना सह हमा मैं पुरा समझता हैं, वर्षों के सूर्य इसमा समझत क्या जापगा कि मरे भव ही स बह सह सह हैं। सूर्य बीह भी बहता जाता है

र्जेम बेल भाग जानेबाट पर ॥ भिक्षभा ! ममुरेज येपखित्ति क यह गामा वहने पर अनुरों ने उसका अनुमादन किया; कियुँ रंग पुर रहे ।

मिशुओं ! तत्र अनुरेश्व यंपिकालि ने दनश्व दाल का नद्द कहा-द देशश्व ! अब आप कार्र गाथा करें !

मिशुषा ! उसक वसा बहन पर न्त्रेम्य शह में इन शाधाओं को बहा-

उसकी इच्छा, यदि वह यह समझे या नहीं,

[देखो पूर्व सूत्र]

भिक्षुओ । देवेन्द्र शक के गाथायें कहने पर देवों ने उनका अनुमोदन किया, किन्तु, सब असुर चुपचाप रहे ।

भिक्षुओ । तब, देवां ओर असुरां के मध्यस्य ने यह फेंमला दिया-

वेपचित्ति अमुरेन्द्र ने जो गाथायें कही है, सो धर-पकड और मार की बातें है, झगड़ा और तक-रार बढ़ानेवाली है।

ओर, देवेन्द्र शक ने जो गाथायें कही है, सो धर-पकड और मार की वाते नहीं है, झगड़ा ओर तकरार बढ़ानेवाली नहीं है।

देवेन्द्र शक की सुभापित से जीत हुई।

भिक्षुओ। इस तरह, देवेन्द्र शक की सुभाषित से जीत हुई थी।

§ ६. कुलावक सुत्त (११ १. ६)

धर्म से जन की विजय

श्रावस्ती में ।

भिक्षुओ ! पूर्वकाल में एक बार देवासुर-सम्राम छिइ गया था।

भिक्षुओं । उस मग्राम में असुरा की जीत और देवा की हार हुई थी।

भिक्षुओ ! हार खाकर, देव उत्तर की ओर भाग चले और असुरा ने उनका पीछा किया ।

भिक्षुओ । तब, देवेन्द्र शक मात्रिल-सम्राहक से गाथा में बोला-

हे माति । सेमर बुक्ष में लगे बांसले,

रथ के धुरे से कहीं नुच न जायेँ,

असुरों के हाथ पडकर भले ही प्राण चले जायाँ,

किन्तु, इन पक्षियों के घोंसले नुच जाने न पावें।।

भिक्षुओ। "जैसी आज्ञा" कह माति कि ने शक की उत्तर दे हजार सीखे हुये घोड़ी बाले रथ की कीटाया।

भिक्षुओ । तब, अमुरो के मन मे यह हुआ — अरे । देवेन्द्र दाक्र का रथ लौट रहा हे । माल्र्म होता है कि देव अमुरों से फिर भी युद्ध करना चाहते हैं । अत ढरकर वे अमुरपुर में पैठ गये ।

भिक्षुओ । इस तरह, देवेन्द्र शक्र की धर्म से जीत हुई थी।

§ ७. न दुविम सुत्त (११ १ ७)

घोखा देना महापाप है

श्रावस्ती मे।

भिक्षुओ ! पूर्वकाल, एकान्त में ध्यान करते समय देवेन्द्र शक्त के मन में यह विनर्क उठा---जो मेरे शयु है उन्हें भी मुझे धोखा देना नहीं चाहिये।

भिक्षुओ । तब, असुरेन्द्र वेपचित्ति देवेन्द्र शक्र के वितर्क को अपने चित्त से जान, जहाँ देवेन्द्र शक्र था वहाँ आया ।

भिक्षुओ ! देवेन्द्र शक्त ने असुरेन्द्र वैपिचित्ति को दूर ही से आते देखा । देखकर, असुरेन्द्र वेप-चित्ति से कहा—वेपचित्ति ! टहरो, तुम गिरफ्तार हो गये । सारिए ! जाएके चित्त में जो जभी था उसे सत छोड़ें। वेपविचित्त ! पांसा कभी देने का सीगन्य खा छा। विपक्तिकि—]

जा हुद्र बासने स पाप स्थाता है को सन्तों की नितृत करने से पाप स्थाता है, तिल से ब्रह्म करने का को पाप है सहत्तकता से जो पाप क्याता है उसे बही पाप को है सुखा के पत्ति ! को तुम्बूँ चौता है।

६८ विरोचन अग्रुरिन्द ग्रुच (११ १ ८)

सफळ डाने तक परिश्रम करना

भावस्ती में।

क्स समय भगवान दिन के विदान के कियं नडे प्लान कर रहे ने ! यन देनेज्य सक कीर क्यूनोन्त्र वैरोधन वहीं भगवान से वहीं आने ! व्यक्त एक-एक किनाइ में क्यों करें ने गेरे !

वर अभूरेन्द्र वैटाकन अगवान् के सम्प्रुक्त वह गावा बोका-

पुरुष तब तक परिक्रम करता बाब मब तक बडेका सफक म हो बाध सफक होने से ही उद्देश का सहस्व है पैरोक्सन पेसा कहता है।

বিজ-ী

पुक्र तब तक परिश्रम करता वाण बब तक उद्देश सक्क न हो बाग सक्क होने से ही उद्देश्य का महत्त्व हैं आक्ति स बदकर दमरी कोई पीब नहीं ॥

[बैरोबन--] समी श्रीय के इस न हर धर्न हैं वहाँ नवाँ नवारी समित्मर,

धरवावक्षक भोजन तो सभी प्राधिया का है सक्क होने से ही बहैक्स का महत्त्व हैं प्रितेश्वल पेसा कहता हैं ह

[दाक-] सती बीव के पुष्ट न कुछ नर्थ हैं बहर्र-बहाँ वर्गनी सतित सर भत्तावहरक मौजन सा समी माभियों का है सरक होते में ही बहेश का सहस्य है कामिन से व्यवस्थ कुमरी कोई सीज वहाँ ह

§ ९. आरञ्जकइसि सुत्त (११.१.९)

शील की सुगन्ध

श्रावस्ती में

भिक्षुओं । पूर्वकाल में कुछ शीलवन्त और सुधार्मिक ऋषि वन-प्रदेश में पर्ण-कुटी बनाकर रहते थे।

भिक्षुओ । तब, देवेन्द्र शक्त और असुरेन्द्र वेपिचित्ति दोना जहाँ वे शीलवन्त और सुधामिक ऋपि थे वहाँ गये।

भिक्षुओ ! तव, असुरेन्द्र वेपचित्ति वहे लम्बे जूते पहने, तलवार लटकाये, ऊपर छत्र हुलवाते, अग्र-द्वार से आश्रम में पैठ उन शीलवन्त और सुधार्मिक ऋपियों का अनाटर करते हुये पार हो गया।

भिक्षुओ ! और, देवेन्द्र शक्त जूते उतार, तलवार दूसरों को दे, छत्र रखवा, द्वार से आश्रम में पैठ उन शीलवन्त और सुधार्मिक ऋषियों के सम्मुख सम्मान-पूर्वक हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

भिक्षुओ ! तव, उन शीलवन्त और सुधार्मिक ऋषिया ने देवेन्द्र शक्र को गाया में कहा-

चिरकाल से ब्रत पालने वाले ऋषियों की गन्ध, शरीर से निकलकर हवा के साथ जाती है, हे सहस्त्रनेत्र ! यहाँ से हट जा, हे देवराज ! ऋषियों की गन्ध बुरी होती है ॥

[शक—]

चिरकाल से ब्रत पालनेवाले ऋषियों की गन्ध, शरीर से निकलकर हवा के साथ भले ही जाय, शिर पर धारण किये सुगन्धित फूलों की माला की तरह, भन्ते ! इस गन्ध की हमको चाह बनी रहती है, देवों को यह गन्ध कभी अखर नहीं सकती है।

§ १०. समुद्दकइसि सुच (११ १ १०)

जैसी करनी वैश्री भरनी

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ । पूर्वकाल में कुछ शीलवन्त और सुवार्मिक ऋषि ममुद्र-तट पर पर्ण-कुटी बनाकर ् रहते थे।

भिक्षुमो । उस समय देवासुर-सम्राम जिहा हुना था।

भिक्षुओं ! तव, उन शीलवन्त और सुधार्मिक ऋषियों के मन में यह हुआ—देव धार्मिक हैं, असुर अधार्मिक है। असुरों से हम लोगों को भी भय हो सकता है। तो, हम लोग असुरेन्द्र सम्बर के पास चलकर अभयतर माँग ले।

भिक्षुओ ! तब, वे ऋषि—जैसे कोई वलवान् पुरुष समेटी बाँह को प्रमार दे और पसारी बाँह को समेट ले वैसे—समुद्र के तट उन पर्ण-कुटी में अन्तर्धान हो असुरेन्द्र सम्बर् के सामने प्रकट हुये।

भिक्षुओं । तब, उन ऋषियों ने असुरेन्द्र सम्बर को गाथा में कहा— ऋषि लोग सम्बर के पास आये हैं, अभय दक्षिणा का याचन करते हैं, जैमी इच्छा वैसा दो, अभय या भय ॥ [सम्बर—]

स्पियों को असप नहीं है जिल नुष्टों की संवा शक किया करता है अभव वर साँगवेवाके काप सोगों को मैं सब ही वेता हैं।

[ऋपि--]

असय बर सॉगनेवाके इसको सब हो दे दो हो तुम्दारे इम विषे को इस व्योकार करते हैं तुम्दारा सथ कमी न सिट ॥ जैसा बीक रोपका है वैसा ही करू पाता है जन्म करवेगाकों का करवाल भीर पाप करवेवाओं वा अकलाण होता है

केंगा बीज को रहे हां एक भी बैला ही राजनेते ॥

[सञ्चलते | तब के विश्वचलत और शुक्तिक कारि क्षमुरस्त्र सम्बद्ध को साथ दे—केंसे कोई
वक्रमान दुरुप — अञ्चलेत सम्बद्ध के सम्बद्ध अन्तर्भाव हो समृत्र के सह पर पर्ण-कृतियों में प्रकर हुवे।

प्रयम वर्ग सकाम

दूसरा भाग

द्वितीय वर्ग

§ १. पठम वत सुत्त ﴿ ११२१)

शक के सात वत, सत्पुरुप

श्रावस्ती में।

भिश्वओ ! देवेन्द्र शक्त अपने मनुष्य-जन्म में सात वर्तों का पालन किया करता था, जिनके पालन करने के कारण शक्त इस इन्द्र-पट पर आरूढ़ हुआ है।

कौन से सात बत १

(१) जीवन-पर्यन्त माता-पिता का पोपण करूँ गा, (२) जीवन-पर्यन्त कुछ के जेठों का सम्मान करूँ गा, (३) जीवन-पर्यन्त मधुर भाषण करूँ गा, (४) जीवन-पर्यन्त कभी किसी की चुगछी नहीं करूँ गा, (७) जीवन-पर्यन्त सकीर्णता और कजूसी से रिहत हो गृहस्थ-वर्मका पाछन करूँ गा, त्याग-शीछ, खुछ हाथोवाछा, ढान-रत, दूसरो की माँगें पूरी करनेवाछा, और वाँट-चूटकर भोग करने वाछा होऊँ गा। (६) जीवन-पर्यन्त सत्यवादी रहूँ गा, और (७) जीवन-पर्यन्त कोध नहीं करूँ गा। यदि कभी कोध उन्पन्त हो गया तो उसे शीघ ही द्वा दूँगा।

भिक्षुओ ! देवेन्द्र श्राक्त अपने मनुष्य-जन्म में इन्हीं सात वर्तों का पालन किया करता था, जिनके पालन करने के कारण वह इस इन्द्र-पद पर आरूढ़ हुआ है।

माता-िपता का जो पोपण करता है, कुछ के जेठों का जो आदर करता है, जो मपुर और नम्न भाषण करता है, जो चुगली नहीं खाता, जो कज़मी से रिहत होता है, सत्यवक्ता, कोध को दयाता है, घ्रयस्विश छोक के देव, इसी को सत्युरूप कहते हैं॥

§ २. दुतिय वत सुत्त्र (११२.२)

इन्द्र के सान नाम श्रोर उसके वत

श्रावस्ती जेतवन में।

वहाँ, भगवान् भिक्षुओं से बोलें — मिक्षुओं । देवेन्द्र शक्त अपने पहले सनुष्य-जन्म में मघ नामक एक माणवक था। इसी से उसका नाम मद्यवा पडा।

भिक्षुओ ! देवेन्द्र शक अपने पहले मनुष्य जन्म में पुर (=शहर)-पुर में दान देता था । इसी से उसका नाम पुरिन्टद पदा ।

भिक्षुओं! यत्कार-पूर्वक धान दिया करता था। इसी से उसका नाम शक्त पहा।

भिक्षुओं ! आवास का दान दिया था। इसी से उसका नाम वासव पडा।

भिक्षओ । देवेन्द्र शक महस्र वातों के मुहुर्त को एक वार ही मोच लेता है। इसी में उसका नाम सहस्राक्ष पहा। [सम्बर-]

140 1

करियों को समय नहीं है जिस दहाँ की लेवा बाक किया करता है भगय बर साँगनेवाडे भाग कोगों को में सब श्री देता हैं ॥

िऋषि—ो

भाग-बर माँगनैवाके प्रमुखे भय ही वे रहे हो त्राव्हारे इस विषे को इस स्थीकार करते हैं तुम्हारा सथ कमी न मिटे ॥ असा बीज रापता है बैसा भी फरू पाता है पुण्य करवेशाओं का करवाज भीर पाप करवेशाओं का अकरवाण होता है

बैमा बीज को रहे हां फरू भी बैमा ही पाधारे ॥ मिसुली ! तक के शीसकन्त और लुकार्मिक ऋषि मसूरेन्त्र सरकार की शाप दे-जाते कोई बसबान पुरुप -- ममुरम्य सम्बर के सम्मुल सन्तर्भाव हो समूत के तर पर वर्ध-कृटियाँ में प्रकर हुने। मिमुनी ! उन कवियाँ के साथ से अमुरेन्द्र सहदार हान में तीन बार बींक बींडकर बहता है !

प्रथम को समाप्र

भिक्षुओ । त्रयस्त्रिश लोक के देवों को समझाते हुए देवेन्द्र शक्त यह गाथाये वोला—
बुद्ध में जिसकी श्रद्धा अचल और सुप्रतिष्टित है,
जिसके शील अच्छे हैं, पण्डित लोगों से प्रशंसित ॥
सच में जिसे श्रद्धा है, जिसकी समझ सीधी है,
बह दिद नहीं कहा जा सकता, उसी का जीवन सार्थक है ॥
इसलिए श्रद्धा-शील, प्रसाद और धर्मवर्शन में,
पण्डित लग जावे, बुद्धों के उपवेश का स्मरण करते ॥

§ ५. रामणेय्यक सुत्त (११. २ ५)

रमणीय स्थान

श्रावस्ती जेतवन म।

तव, देवेन्द्र शक्त जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो गया।

एक ओर खड़ा हो, देवेन्द्र शक भगवान् से बोला—भन्ते ! कौन जगह रमणीय है ?

[भगवान्—]

आराम-चैत्य वन-चैत्य सुनिमित पुष्करिणी, मनुष्य की रमणीयता के सोहवाँ भाग भी नहीं हैं॥ गाँव में या जगल में, यटि नीची जगह में या समतल पर, जहाँ अर्हत् विहार करते हैं वही रमणीय जगह है॥

§ ६. यजमान सुत्त (११२६)

सांधिक दान का महातम्य

एक समय भगवान् राजगृह में गृद्धकूट पर्वत पर विहार करते थे। तब, देवेन्ड हाक्र जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक और खड़ा हो गया।

एक ओर खड़ा हो देवेन्द्र शक्त भगवान् से गाथा में बोला— जो मनुष्य यज्ञ करते हैं, पुष्य की अपेक्षा रखने वाले, अोपाधिक पुष्य करने वालों का, दिया हुआ कैसे महाफलप्रद होता है ?

[भगवान्—]

चार मार्ग-प्राप्तक्ष और चार फल-प्राप्त† यही ऋजुमूत सब है, प्रज्ञा, शील और समाधि से युक्त ॥ जो मनुष्य यज्ञ करते हैं, जो पुण्य की अपेक्षा रखने वाले हैं,

[🕾] स्रोतापित्त-मार्ग, सङ्दागामी मार्ग, अनागामी-मार्ग, अईत्-मार्ग । ो स्रोतापित्त-परू, सङ्दागामी परू, अनागामी परू, अईत्-परू ।

भिश्चमो ! पेदेश्त्र काक को पहले सुज्ञानाम की बसुरकम्था साथा थी । इ.मी.से उसका नाम सुद्धकपति पत्रा।

निशुना ! देवेन्द्र सक अवश्विम नेवकोक का पेडवर्ष या राज्य करता रहा । इसी से असका माम

देशे तुपका।

[दोप सात बतों का वर्जन पूर्व-सूत्र के समान]

८३ सक्तिय वक्ष सत्त (११ २ ३)

इन्द्र के नाम भीर वत

देमा मैंने सुना।

यक समय प्रत्यान यैज्ञाली में महायम की कुटानारदास्त्र में विदार करते थे।

ठच महास्ति किष्ठस्थी वहाँ मतवान् वे वहाँ मावा स्रोत सरावान् का असिवादन कर एक ओर वैठ गया।

एक और वड सङ्घाकि क्षिण्यक्षत्री सगवान में बोका- सन्ते ! सगवान ने देनेन्त्र शक्त की देवा है ?

हाँ सहारित ! मैंने वेबेन्स हाक को बंखा है।

भारते | कारहत बह कोई सूमरा हाक का वेश वशाकर काचा होगा । भारते ! देवेग्द्र हाक को कोई नहीं देवा सकता है ।

साहा कि | में शास को बानवा हूँ। सार कन यसी को भी बानवा हूँ जिनके पाकन करने से वह इन्द्र-पन्धर आकन हुन्या है।

[ग्रज के भिक्र नामों का वर्णन है २ के समान; और शाद करों का वर्णन है १ समान]

६४ दलि**इ स्च** (११ २ ४)

पुत्र मक्त वृध्य महीं

एक समय भगवान् राज्ञग्रह के वेलुबन कवन्त्वनिवाप में बिहार करते वे ।

वहाँ सतवान् ने मिश्लुओं को जामन्त्रित किया "हे सिश्लुओ ["सरन्त ! कहकर सिश्लुओं ने भगवान् को उत्तर दिया।

नगायान् बोके— निशुओं ! वर्षकाक में इसी राजाशृक्ष में एक बीच कुछ का दू किया वरित्र प्रवर्ष बास करता था। कसे बुद्ध के काविक कोनीवनक में वधी कहा हो गई। उसने सीक दिवा। स्वाग की महा का सम्मास किया। इसके ककलका कारि की कर सह कार्य के बाद वह अवसंक्रित वेपकों में करता हो स्वापित की माम हक्य। वह वसने देवा से वर्ष जीन था। में करा दक्ता था।

सिद्धानी ! उस से क्यरिकंत के देव कुनते ने निगमते ने और उसकी विद्धानि उदारों से ! वका कारकर्ष हैं ! वका कर्मुत हैं !! यह देवजुक क्याने सञ्चय-क्यार में एक बीच कुछ वर पूक्तिया दरित पुष्प था । वह क्यरिर कोचकर सर वाले के भाव क्यकिस देवकोक में उत्पाद हो सुगति को प्राप्त हुआ। वह

बुसरे देवों से वर्ष बीर पस में बना च्या रहता है।

भिश्यभी ! तब वेदेण्य सक वे जबकिस कोण के देवों की आसनिवात किया—मारियो ! बार स्पे देवपुत्र से सत क्षेत्र ! जबके सनुष्य करम में इस वेदपुत्र को तुब के व्यविष्य अमें विश्वच में वदी जबर हो गई भी । उससे तीक विध्या त्यारा और महा का कारात किया ! इसी के कमस्वकर सारी कोषका सर जाने के बाद वह वसकिस देवकों के में जाएक हो सुमति की मास हुआ। यह दूसरे देवों से वर्ष और यस में बदा बहा सहता है।

[शक--]

मुझे शेविश लोग नमस्कार करते हैं, ओर यसार के सभी राजे, आर, उतने बढ़े प्रनापी, चारों महाराज भी ॥ मैं उन श्रीलयभानी को जो चिरकाल में समाहित है, जो ठीक में प्रचित्तन हो चुके हैं, नमस्कार करता हूँ, जो ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन कर रहे हैं ॥ जो पुण्यानमा मृहस्थ है, श्रीलवन्त उपासक लोग, धर्म से अपनी खी को पोसने हैं, हैं मातिल ! मैं उन्हें नमस्कार करना हूँ॥

[मातिल—]

लोक में वे बड़े महान् हैं, शक्त ! जिन्हें आप नमस्कार करते हैं, में भी उन्हें नमस्कार करूँगा, वासव ! आप जिन्हें नमस्कार करते हैं।

> मधवा ऐसा कह कर, देवराज सुजम्पति, सभी ओर नमस्कार कर, वह शमुख रथ पर सवार हुआ ॥

§ ९. दुतिय सकनमम्सना सुत्त (११ २. ५)

सर्त्रश्रेष्ठ बुद्ध को नमस्कार

थावस्ती जेनवन में।

' [पूर्ववत्]

हे भिक्षुओं ! तब, देवेन्द्र शक वैजयनत प्रायाद में उतरते हुए हाथ जोदकर भगवान् को ममस्कार कर रहा था।

भिक्षुओं ! तब, मातिलि-संप्राहक देवेन्द्र शक्त में गाथा में बोला--जिस आपको है वासव ! देव और मनुष्य नमस्कार करते हैं,
भला, ऐसा वह कीन जीव है, हे शक ! जिसे आप नमस्कार करते हैं ?

[शक--]

वे अभी सम्यक् मम्हद्ध, दैवताओं के साथ इस लोक में, अनोम नामक जो दुद्ध है, मातिल ! उन्हीं को नमस्कार करता हू ॥ जिनका राग, हेप, और अविद्या मिट चुकी है, जो क्षीणाश्रव अहत् हैं, हे मातिल ! उन्हीं को नमस्कार करता हूँ॥ जिनने रागह्रेप को द्वा, अविद्या को हटा दिया है, जो अप्रमत्त शैक्ष्य हैं, सावधानी से अम्यास कर रहे हैं, हे मातिल ! मैं उन्हीं को नमस्कार कर रहा हैं॥

[मातलि—]

लोक में वे वहे महान् है, शक ! जिन्हें आप नमस्कार करते हैं, मैं भी उन्हें नमस्कार करूँगा, वासव ! आप जिन्हें नमस्कार करते हैं ॥ दन भौषाधिक पुण्य करने वालों की संघ के किए दिवें गये दान का सहाफक हाता है ॥

§ ७ बन्दना सुच (११२७)

वद्ध बन्द्रमाका हुँग

भारतानी जनवन में

अभवता जायपा न दम समय भगवान दिन के बिहार के किये समाधि समावे केंद्रे वे !

तत वरेन्द्र हाक और सहस्पति वक्षा कहाँ सगवान् ये वहाँ आप । आजर, एक-एउ विवाद से अस करे हो समें ।

त्व देवेन्द्र सक्र भगवान के सम्मूच यह गाथा वांसा---

हे जीर विकित्तर्गप्रास ! करें भाषका भार कतर जुका है भाष घर काई जाल नहीं इस काफ में विकास करें

भारका चित्र विस्तृत विर्मेश ह

बैसं पूर्णिमा की शत को चाँद ॥

र्बन्द ! हुद् को बल्दना इस प्रकार नहीं की कार्ती हैं। देवस्त ! हुद् की बल्दना ऐसे करनी पाहिस !

> है बीर विश्वितमंत्राम | उर्दे परम-गुद, अल-मुक्त | कोड में विचरें भगवान् धर्म का उपवेश करें समझ्लेबाल मी जिल्हों |

१८ पटम सरकामनस्सना सुत्त (१९ २८)

जीलवान सिम्न और यहस्यों को नगस्कार

भावली जन्म में।

सरावान यह वाल-सिक्षुको । प्रकार से इवन्त्र तक न सातक्ति-संप्राह्वक का सामन्त्र किया । मद्र सातिल ' इवार सिकाव हुव पांची स जोत सेंर रथ को तैवार करें। वर्गात्व की सेर करने क निर्वे रिक्तरम चाहना हैं।

'महाराज | र्रमा ब्याला' वह मालादि संग्राहक ने पेषेन्त्र शकको स्थर है इस की प्रेपार वर सकत री-मापि । पत्र नेवार है अब बाद को बाद ।

सिमुधा 'तथ द्वेन्त्र सक् वैजयस्त असाद स जनाने हुये दाव अदबर सभी दिशाओं को प्रमास करने लगा ।

भिक्षण ! तब मानसि-र्नमाहक १वेन्ट टाक से शाया में बाला—

भाषका बैक्षिण लोग नमस्तार करन है और संनार के सभी राजे उतने वह प्रशाणी चारों सहाराज भी भूमा जमा वह बील जीव है

र दाम ^१ जिथे भाग नगरफार कर रह है अ

तीसरा भाग कृतीय वर्ग

शक्त-पञ्चक

९ १. झत्वा सुत्त (११. ३. १)

कोध को नए करने में सुख

श्राचम्ती जेतवन में।

तम, देवेन्द्र दाक जहाँ भगवान ये महाँ आया, और भगवान का अभिवादन कर एक और खडा

एक और खड़ा हो, देवेन्द्र शक्त भगवान् से गाथा में बोला-

क्या नष्ट कर सुख से सोना है, क्या नष्ट कर शोक नहीं करता ? किस एक धर्म का बध करना गीतम को स्चता है ?

[सगवान —]

क्रोध को नष्ट कर मुख में मौता है, क्रोध को नष्ट कर शोक नहीं करता, है वामव ! पहले मीठा लगने वाले विप के मल क्रोध का, वध करना पण्डिनों से प्रशसित है, उसी को नष्ट कर शोक नहीं करता॥

६२. दुव्विणिय सुत्त (११. ३. २)

क्रोध न करने का गुण

श्रावस्ती जेतवन में।

भगवान् योले—भिक्षुओ । पूर्वकाल मे कोई यौना यदरूप यक्ष देवेन्द्र शक्त के आसन पर वैठा ।
 भिक्षुओ । उससे त्रयस्थित लोक के देव कृदते थे, धिअकते थे, और उसकी खिटली उड़ाते थे—
 आइचर्य है । अदभुत ह ।। कि यह याना यदरूप यक्ष देवेन्द्र शक्त के आसन पर वैठा है ।

भिक्षुओं ! जैसे जसे त्रयिक्षश लोक के देव कृदते गर्थे, वैसे वैसे वह यक्ष अभिरूप=दर्शनीय=सुन्दर होता गया ।

मिक्षुओं । तय, त्रयिक्षश लोक के देव जहाँ देवेन्द्र शक था वहाँ आये, और यह वोले-

मारिप ! यह कोई दूसरा बोना बटरूप यक्ष आप के आसन पर बैठा है। मारिप ! सो उससे त्रयिंक्ष लोक के देव कृदते, झिअकते हैं, और उसकी खिल्ली उड़ाते हैं—आध्चर्य है ! अद्भुत है !! कि यह यौना बटरूप यक्ष देवेन्द्र शक्ष के आसन पर बैठा है। मारिप ! जैसे-जैसे अयस्त्रिश लोक के देव कृदने हैं, वैसे-वैसे वह यक्ष अभिरूप=दर्शनीय=सुन्दर होता जाता है।

मारिप ! तो क्या यह कोई क्रोध-मक्ष्म यक्ष है ?

भिक्षुओं ! तव, देवेन्द्र शक जहाँ वह क्रोध भक्ष यक्ष था वहाँ गया । जाकर, उसने उपरनी को

सववा ऐसा कह कर देवराज सुख्यपति भगवान् को मसरकार कर वह प्रमुख रच पर सवार हुआ ॥

३ १० ततिय सक्नमस्मना सुत्त (११ ^२ १०)

मिश्च-संघ को समस्कार

भाषस्ती जेतवन में।

भगवान वोके--- । विकास के कार्य

सिश्चको ! तक देवन्त्र सक वैजयन्त प्रासाद शं उनरते हुवे द्वाप जांचकर सिश्च-संघ को नम स्कार करता था।

सिक्षत्रों ! तक जानकि संप्राहक इंबन्ड सक से गाया में बाका-

वक्ट जापको यहाँ कोम चसरकार करत गाने सरीर बारक करने वार्क वं दुवप इन्दर में को इवे रहते हैं ! मूच कीर प्यास से की परसान रहते हैं ॥ है बासक | वन बेबर बाइमें में का गुज देकते हैं ! कारियों के साम्बार कहें अल्ब्सी बात में सर्वेगा ।

(बाक----)

१९१२----) हे मातकि ! इसीकिये में इन वेबर बाकों की ईक्वों करता हैं।

> जिस गाँव को से कोईत है विशा किसी धपका के कर देते हैं कोईते में है हुक बमा गई करते न हाँची में बीर न र्रावा में इसरों में तैयार किये पने को पाते हैं से झुनत उसरे पा गुजरा करते हैं कच्छी बारों की मन्त्रना करते बाके से बीर चुन सान्त रहन बाके व एमा को कमुरों से निरोध है मातकि ! मतुष्यों (की मी विरोध है) फिन्तु, य विरोध करने बाकों में भी विरोध गई। करते हिम्म बीप शान्त ग्रहते हैं कोने बाक संसार में विशा कुछ किये है मातकि ! में कनी को समस्मा करता हैं व

विष पर्यवन ी

वित्तीय वर्षे समाप्त

रै माता की कान्य में जो बन महीने पढ़े रहते हैं---अहकशा है

२ विद्यम्ति-क्या शुक्र देन कर इच्या करते हैं।

लिया। तप, यह भिक्षु दूसरे भिक्षु के पास अपना अपराध स्वीकार कर क्षमा साँगने गया। किन्तु, वह भिक्षु क्षमा नहीं करता था।

त्य, कुर सिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आये, और भगवान का अभिवादन कर एक भोर वैट गये। एक ओर वेट, उन भिक्षुओं ने भगवान् को काण---

भन्ते ! दो भिक्षका में कुछ अनपन ।

भिक्षुओं। द्रो प्रकार के मूर्ख होते है। (१) जो अपने अपराध को अपराध के तौर पर नहीं देखता है, और (२) जो दूसरे को अपराध स्वीकार कर लेने पर क्षमा नहीं कर देता है। भिक्षुओं। यही दी प्रकार के मूर्य होने है। *

भिक्षुओं। दो प्रकार के पण्टित होते हैं। (१) जो अपने अपराध को अपराध के तार पर देख लेता है, (२) जो दूसरे को अपराध स्वीकार कर लेने पर क्षमा कर देता है। भिक्षुओ। यही दी प्रकार के पण्डित होते है।

भिनुओं । पूर्वकाल में देवेन्द्र दाप ने स्थम्बिश लोक के दो देवों का निपटारा करते हुए यह गाथा कहा था—

> कोध नुम्हारे अपने वश में होवे, नुम्हारी मिताई में कोई वहा लगने न पावे, जो निन्दा करने के योग्य नहीं उसकी निन्दा मत करो, आपस की चुगली सत खाओ, क्रोध नीच पुरुष को, पर्यन के ऐसा चुर चुर कर देता है ॥

§ ५. अक्रोधन सुत्त (११. ३ ५)

क्रोध का त्याग

ऐसा मने सुना।

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेतवन आराम में विहार करते थे। भगवान् बोले—भिक्षुओ। पूर्वकाल में देवेन्द्र शक्र ने सुधर्मा समा में दो त्रयिद्धश देवीं के कलह का निपटारा करते हुए यह गाथा कहा था—

तुम्हें क्रोध दयां मत दे,
क्रोध करनेवाले पर क्रोध मत करो,
अक्रोब और अविहिंगा,
पण्डिन पुरुषों में सदा वसती है,
क्रोध नीच पुरुष को,
पर्वंत के ऐसा चुर-चुर कर देता है॥

शक्र-पञ्चक समाप्त सगाथा वर्ग समाप्त । न्क कम्मे पर सैंसाक दक्षिण कालुको पृष्यी पर देक फ्रोध सक्ष पक्र की और द्वाय बोदकर तीन वार अपना नास सुवाया —

मारिप | मैं दंबेन्द्र शक 🖁 ।

नारर] न प्रत्य बारू मिसुओं | प्रत्य का केरे-केर्स व्यवस्था नाम सुवाता स्था वैसे-केर्स वह यह अधिकाधिक वर्कर भार वाता होता गया। कोल और व्यवस्था हो वहीं कलायाँन हो स्था ।

मिश्चर्या! तव वेयेण्य शक्र अपने अपन पर वैठ क्रपर्सिम के देवों की सान्य करते हुण सह साथा बोला—

सरा चिक्त जन्मी नवधा नहीं जाता हैं।
धींदर से पद्मार में प्रकृत नहीं जाता हूँ।
सर काम किये पहुन जातामा नीत गया
धुसमें भार काम रह महीं गया ।
स क्रांच करना भार न कामेर चम्मा कहता हूँ
सर न करना गुन को गाता फिरना हूँ
से प्रमुक्त का मीचम में रचना हूँ
से प्रमुख्या प्रमुख्य के रचना हैं।
से प्रमुख्य प्रमुख्य के रचने कु

§ ३ माया सच (१०३३)

सम्बर्श साया

भ्रायस्ति म ।

भगवान् वाल—सिशुष्रा । पूषरात् में एक बार असुरण्ड दंगश्चि (च रोग-प्रस्त वड़ा बीसार टो गया था।

सिद्धाना ! तव दवन्त्र दात्र, कहीं असुरन्त्र संपश्चितिश वा वहाँ कसकी कोळ उपर देने गया ! सिद्धानी ! असुरन्त्र सेपध्विति से त्रवेन्त्र दात्र का हुर ही भी अपने देखा । देखकर देवेन्त्र दात्री त पारा—र देवना ! असी रन्तात्र करें !

यपन्त्रित्ति ! सुर्मे सम्पर्श माथा (=आ)) कहो ।

म रिप ! सा में भ्रमतें य मनाए भर हरें।

निमुधी ! तब अमुरन्द्र राष्ट्रिकी जनुरा स समाह करने नगा—मारियो ! क्या मै इयेग्स दास्ट को सरवर्ग माया बना में ?

मही मारिक र अन्य ब्यन्त्र वाज का स्टब्स्ट शाया सत बतायें।

मिधुर्भा । तथ अस्तेन्द्र वेदनिक्ति देवेन्द्र शक्त सं साचा में बोला---

हं समया पात्र स्थातः, शुक्रमति । सामा (=बाक्) परते में घोर तरक सिलता है रिस्टी वर्ष नक सामार क एसा ॥

६ दे अथय सुन्त (११ ३ ४)

भगगध भीर शमा

धापानी में 5 इस समय पी जिल्लामें में पुंड समयम हो गया था 5 जनमें एक मिल्ला ने अवना अवराध समय

दूसरा खण्ड

निदान वर्ग



दुसरा खगड निदान वर्ग



पहला परिच्छेद

१२. अभिसमय-संयुत्त

पहला भाग

बुद्ध वर्ग

§ १. देसना सत्त (१२. १ १)

प्रतीत्य समुत्पाद

ऐसा मैने सुना।

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जैतवन आराम में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—हें भिक्षुओं।

"भदन्त ।" कह कर भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया।

भगवान् वोले-भिक्षुओ ! प्रतीत्य ममुत्पाद का उपदेश करूँगा । उसे सुनी, अच्छी तरह मन में छाओ, में कहता हूँ।

"भन्ते । बहुत अच्छा" कह, भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

भगवान बोले—भिक्षुओ ! प्रतीत्यसमुत्पाद क्या है ? भिक्षुओ ! अधिया के होने से सस्कार होते हैं। संस्कारों के होने से विज्ञान होता है। विज्ञान के होने से नामरूप होते हैं। नामरूप के होने से पढ़ायतन होता है। पड़ायतन के होने से स्पर्श होता है। स्पर्श के होने से बेदना होती है। बेदना के होने से तृष्णा होती है। तृष्णा के होने से उपादान होता है। उपादान के होने से भव होता है। भव के होने से जाति होती है। जाति के होने से जरा, मरण, शोक, रोना-पीटना, दु प, बेचैनी और परेशानी होती है। इस तरह, सारे दु ख-समूह का समुदय होता है। भिक्षुओ ! इसी को प्रवीत्य समुत्याद कहते है।

उस अविद्या के विल्कुल हट और रक जाने से सस्कार होने नहीं पाते। सस्कारों के रक जाने से विज्ञान होने नहीं पाता। विज्ञान के रक जाने से नामरूप होने नहीं पाता। नामरूप के रक जाने से पढ़ा- यतन होने नहीं पाता। पढ़ायतन के रक जाने से रपर्श होने नहीं पाता। स्पर्श के रक जाने से वेटना नहीं होती। वेदना के रक जाने से तृष्णा होने नहीं पाता। कुण्णा के रक जाने से उपादान होने नहीं पाता। उपादान के रक जाने से अब होने नहीं पाता। अब के रक जाने से जाति होने नहीं पाती। जाति के रक जाने से न तरा, न मरण, न शोक, न रोना-पीटना, न दु-ख, न बेचैनी और न तो परेशानी होती है। इस तरह, यह सारा हु-ख-समूह रक जाता है।

भगवान् यह बोले । सतुष्ट होकर भिक्षुओं ने भगवान् के कहे का अभिनन्दन किया ।

§ २. विभङ्ग सुत्त (१२ १. २)

प्रवीत्य-समुत्पाद् की व्याख्या

श्रावस्ती में।

• भगवान् वोछे--भिक्षुओ । प्रतीष्य-समुस्पाद का विभाग करके उपदेश करूँ गा । उसे सुनो, अच्छी तरह मन में लाओ, मे कहता हूँ ।

संयुक्त-निकाय

"मन्ते ! बहुत अध्या' कह मिशुओं ने भगवान् को उत्तर विधा ।

भगवान् पोर्छ---मिश्चओ ! प्रतीस्य समुत्पाव् न्या है ! सिश्चओ ! व्यविवा के दाने से संस्कार दोते

हैं।. [पुषचत्] इस तरह सारे पुरत्र समुद्र का समुद्रम होता है।

सिसुसा । और जरा प्रस्पा क्या है । को उम-उन जीवों के उम-उन शनियों में ब्हा हो बाना पुरिनेपा हो बाना पाँठों का टूट जाना बाक सक्त हो बाधा हार्रियाँ पढ़ बानी असर का बास्सा और इन्द्रियों का सिथिक हो बाना है, इसी को कहते हैं 'जरा'।

जो दब-दम बीकों के दब-दम घोतियों से दिसक प्रका १८क प्रका कर बागा करायांग हो त.ना सुत्यु सरण कहा कर बागा रुक्तों का छिक-निष हो बागा चोका को क्षेत्र हैंगा है; हसी की कहते हैं 'सरण' । ऐसी यह है जरा और ऐसा यह है सरण । किहानो | हसी को जरासरण कहते हैं।

सिद्ध्या ! क्रांति क्या है ? को उत्त-उत्त बीकों के उत्त उत्त वोतियों में करम केवा पैदा हो बामा चका माता मात्र प्राप्त हो बाता स्टब्यों का प्राप्तमीय आयवनों का प्रतिकास करता है; सिम्रुमी ! इसी को कहते हैं बाठि !

मिछुमो ! सम्र क्या है ! सिछुको ! सव तीन सकार के होते हैं। (1) कान सव (⇒रास-कोक में बना रहता) (*) इस सव (⇒रप-कोक में बना रहपा) और (4) शक्स-सव (सक्स-कोक में बना रहता) ! सिछुमो ! होती को कहते हैं भव।

मिसुमी ! उपादान का है । उपादान कार महरू के हैं। (१) कास-कपादान, (१) (सिन्पा) टीड-कपादान (१) सीकबत-कपादान और (४) कास्प्रकाद बपादान। सिद्धुमी ! इसी को कहते हैं बपादान"।

मिहुनी ! क्षरानुष्या है ! मिहुना ! तृष्या का तजार की है । (1) क्षरानुष्या (०) शस्त्रनुष्या (६) शस्त्र-तृष्या (५) शस्त्र-तृष्या (५) शस्त्र-तृष्या (५) शस्त्र-तृष्या (५) शस्त्र-तृष्या (५) शस्त्र-तृष्या कीर वर्शन-तृष्या । सिन्नुवो ! इसी को कहते हैं "तृष्या" ।

िम्लुसा | बेद्ना क्या है ? मिल्लुसो | बेदना कः प्रकार की हैं। (1) कहु के संस्पर्ध से होनेवाकी वेदना (4) ओन के संस्पर्ध से होनेवाकी वेदना (4) आन के संस्पर्ध स होनेवाकी बेदना (4) किया के संस्पर्ध स होनेवाकी बेदना (4) किया के संस्पर्ध से होनेवाकी बेदना और (4) अन के संस्पर्ध से हाने-वाकी वेदना और (4) अन के संस्पर्ध से हाने-वाकी वेदना । मिल्लुसी ! इसने को कहते हैं "व्यवसा"।

मिल्लमं । स्पर्दा क्वा धं । मिल्लमा स्पर्ध कः प्रकार के हैं । (1) क्लु-संस्पर्स (२) मोर्ट-मंश्यर्स (३) माम संस्पर्स (०) विद्वा-संस्पर्स (५) क्राया-संस्पर्स और (६) सक-संस्पर्स । मिल्लमे ! इसी को कार्ट हैं "स्पष्ठ"।

सिंसुओं । पड़ायतन क्या ह १ () यहा-धावतन (२) लोन आयतन (३) आग-धावतन (४) बिह्य-धायतन (५) काम जायतन और (६) अन अवतन । जिल्लामी हस्ती को कहते हैं "दरावतन"।

मिश्वमा ! नामक्ष्य क्या है ! बेनना शंजा बतवा १२ से मीर मन में कुछ क्षावा । इसे 'नाम' कहत है । बार महायूनों को केजर की क्ष्य कोते हैं इसे 'क्य' कहते हैं । इस तरह यह बास हुका और यह रूप हुआ। मिश्रमा ! इसी की कहते हैं बासक्य ।

मिल्लभी ! पिकास चया है ! मिल्लभी ! विशास का प्रकार क दांगे हैं। (१) चल्ल-विशास (१) साथ-विशास (१) प्राव-विशास (२) मिल्ल-विशास (५) काम विशास और (६) समीविशास । मिल्लभी इसी का बढ़ते हैं विशास ।

भिश्वभी ! संस्थान नवा है ! मिश्वभी ! संस्थार तीन प्रवार के है । () वाव-संस्थार (१) बार्ड् सन्दार (१) विशः-संन्दार । सिश्वमी ! इसी को बहने हैं "संस्थार" ।

मिशुनी ! करिया पना है ! मिशुना ! जो मुल्य की नहीं जानता है . जी पुल्य-मसुद्य की नहीं

जानता है, जो दु ख-निरोध को नहीं जानता है, और जो दु म निरोध-गामिनी प्रतिपटा को नहीं जानता है। भिक्षुओं। इसी को कहते हैं "अविद्या"।

भिक्षुओ । इसी अविद्या के होने में मन्कार होते हैं ।

्री पूर्ववत् । इस तरह मारे टु य समृह का समुद्रय होता है।

उस अविद्या के बिल्कुर हट और रक्त जाने से सस्कार होने नहीं पाते । [पूर्ववत] इस सरह, सारा हु ख-समूह रुक्त जाता है ।

§ ३. पटिपदा सुत्त (१२ १, ३)

भिध्या-मार्ग और सत्य-मार्ग

श्रावस्ती में।

भगवान् बोलं--भिक्षुओ ! मिध्या-मार्ग क्या हे और मत्य-मार्ग क्या है इसका मैं उपदेश करूँगा । उसे सुनो, अच्छी तरह मन मे लाओ, में कहता हूँ।

"भन्ते । बहुत अच्छा" कह, भिक्षुओं ने भगवान् काँ उत्तर दिया । भगवान् घोले---

भिक्षुओ ! मिथ्या-मार्ग क्या है ? भिक्षुओ ! अविद्या के होने से सस्कार होते हैं। इस प्रकार, सारे हु ख-समृह का समुद्य होता है। भिक्षुओ ! इसी को क्हते हैं 'मिथ्या-मार्ग'।

भिक्षुओं ! सत्य-मार्गं क्या है ? उस अविद्या के विल्कुल हट और रुक जाने से सस्कार होने नहीं पाते हैं इस प्रकार, सारा दु स-समृह रक जाता है। भिक्षुओं ! इसी को कहते हैं 'सन्य-मार्ग'।

९ ४. विपस्सी सुत्त (१२. १. ४)

विपर्यी युद्ध को प्रतीत्य समुत्पाद का ज्ञान

क

श्रावस्ती में।

भगवान् बोले—भिक्षुओ । अर्हत् सम्यक्-सम्बद्ध भगवान् विपस्सी की बुद्धत्व लाभ करने के पहले. बोधिसत्व रहते हुये मन में यह हुआ—हाय । यह लोक कैसे घोर दुख मे पड़ा है ॥ पैटा होता है, बूढ़ा होता है, मर जाता है, मर कर फिर जन्म ले लेता है। और, जरामरण के इस दुख का छुटकारा नहीं जानता है। अहो । कब मैं जरामरण के इस दुख का छुटकारा जान लहूँगा ?

भिक्षुओ ! तय वोधिसत्व विषस्सी के मन में यह हुआ—िकसके होने से जरामरण होता है, जरामरण का हेतु क्या है ?

भिक्षुओ । तव, वोधिसध्व विपर्स्ती को अच्छी तरह चिन्तन करने पर प्रज्ञा का उदय हो गया ।] जाति के होने से जरामरण होता हे, जाति ही जरामरण का हेतु है ।

भिक्षुओ । तय, वोधिसत्व विपम्सी के मन में यह हुआ—किसके होने से जाति होती है, जाति का हेतु क्या है ? भिक्षुओं । तब, वोधिसत्व विपस्सी को अच्छी तरह चिन्तन करने पर प्रज्ञा का उत्य हो गया । भव के होने से जाति होती है, भव ही जाति का हेतु है ।

किसके होने से भव होता है, भव का हेतु क्या है ? उपादान के होने से भव होता है, उपादान भव का हेतु है।

किसक होनेने जपाताब हाता है। जपातान का हेत बना है ? 'तुष्या के होते से हपाहान शाना है। तथ्या ही उपातानका हत है।

हिमके हातम तथा। होती हैं तथा। का इत क्या है ? बेबनाडे डामेसे तृष्णा डोती है

बेहना ही नव्या का दन है।

दियक क्षोत्रमें केशवा क्षोती है। बन्ताका देश क्या दे ? स्पर्शके होनेस बेदना होती है स्परा ही चेत्रसामा हेत है।

पदावतनके होनमे स्पर्ध होता है " "किसठ डानम स्वर्श दीता है स्पर्शका देत स्वा है ?

परायमय ही स्पर्गहा हेन हैं। क्रिम इतिम पहायतम होता ई पहायतमधा हेनु नया द ? शामस्पके होनेसे पहा

बतन होना है, नामरूप ही पहायतन का देन है।

दिस्त हाते स नासका होता ह नासका का इन नवा है ? विज्ञान के हातेमें नासका होता

है विभाग ही मासरपता देतु है। रियह हाने में बिजान हाता है बिजान का इन नवा है ? संस्कारों क हाने में बिजान होता

हैं संस्कार ही विज्ञान का देन हैं।

किया है हाने से संरकार हात हैं मांनकारों का बल क्या है ? अविचा के होने से संस्कार होते दे अविचा ही संस्थार का हैन हा।

'इस तरह अविधाक हानेस संस्कार हात हैं । संस्कारीं है हाने स विज्ञान है । गारे काम-समुद्र का समृत्य हाता है।

भिष्टको ! 'ससूरव असूरव ---प्या वाधिमध्य कियरमी का पहल कभी नहीं सूत्र गये बसी में बरा रायस हा गया जान सत्यत हो गया अना उत्पन्न हो गई विचा उत्पन्न हा गई, माडीक उत्पन्न द्योगपा ।

ख

शिशुओं | तब वाधिमान विवाहमी के मन में यह हुआ-कियक नहीं हान से जरामरन नहीं

क्षाना इ हिम्मडे रह जाने य जरामरून रह जागा है ?

बिहामा | तक वाधियात्र शिवास्ति का नव्यी तरह विस्तव करन पर प्रशा का उप्प हो गया । कारि के मही हाने से जरामरण गरी होता है। जाति के एक बाने में जरावरण एक बाता है।

दिनिस्म का से पार्य है

भिनाती र तम वाधिमान जिल्हाकी का अर्था तहह जिल्लाक वर्ष पर प्रता का प्रदेश हो गया है भविका के नहीं हाने में मंदरार कहीं शांते हैं। अधिका के एक आने में मंदरार एक आने हैं।

मा अन्या के एक आने से संस्थार एक क्षाने हैं। संस्थारों के एक बाने से विज्ञान एक जाना है।

इस प्रचार सारा दाल श्रमुद रह जाता है।

भिनाका र "एक कना एक जाना -- जना बोधिनान्य विश्वानी का श्रष्ट कभी नहीं सुनै गर्वे बर्कों में बार् प्राप्त का गया जान कराब दी गया जाग उराव दो गई किया कराब हो गई आलीक बारक दी गया।

मानी पुत्री व गांच नेता ही सबझ जेंगा चाहिए।

> ५ थियी गुच (१३ १ ५)

िंगी पुत्र का प्रशील समुन्तान का बाब बिश्वर्थ । मर्देश मध्यम सार्वृष्ट सारवाम् तिर्था क्षेत्र पृष्टाच साम वाले हे वहते । (पूर्वदश्)

\$ ६. वेस्सभृ मुन (१२.१ ६)

वेध्वभृ वृद्ध को प्रतीन्य समुत्राद का प्रान

निसुर्था । भगवान वेस्मभू हो

§ ७-९, मुन-त्तम (१२ १ ७-९)

तीन बुद्धां की प्रतीत्य समुत्याद का पान

भिक्षुंशी ! भगवान क्रयुष्यन्त्र, कीणागमन, काष्ट्रयप की बुन्नव रंगभ उरने के पहला ।

\$ १०, गोतम सुत्त (१२ १, १०)

प्रतीत्य समुन्पाट-पान

事

भिक्षश्रो ! मेरे युक्त प्रत्म करने के पाले, बाधिमत्य रहते हुये, मन में यह हुआ [पूर्ववत्] भिक्षओ ! 'समुद्य, समुज्य'— ऐमा मुझे पहले क्यों नहीं सुने गये धर्मों में चक्षु उत्पन्न हो गया, ज्ञान उत्पन्न हो गया प्रज्ञा उत्पन्न हो गया।

र्व

[..प्रतिलोस-घश]

भिछुओं 'रक जाना, रक जाना'—ऐमा मुझे पहले कभी नहीं सुने गये धर्मी में आलीक इरवन्त्र हो गया।

वुड-वर्ग समाप्त।

दसरा भाग

साहार वर्ग

8 १ आ **इ**।र सच (⟨२ २ १)

प्रावियों के भावार और उनकी दलिए

पुसा मैंबे छुना ।

पुरु समय मगदान आवस्ती में बनाधिपिक्कि व बेतवन भारम में विदार करते थे। मगाबान बोके-शिक्समो ! बनमे प्राणियों की स्विति के किये था क्षम केने वार्कों के भनुमह

के किये बार आसार# हैं।

कींश से चार ? (१) कीर वाका-न्यूक था सूक्त (१) स्पर्स (१) सन की चेतवा (= Volition) और (9) विश्वान । सिद्धानो ! अनमे प्राणियों की स्विति सं क्रिय, वा करम बेमे

बाकों के समग्रह के किसे नहीं जार आहार हैं।

मिश्रुकी ! बन बार माहारों का निवास क्या है = मश्रुद्य क्या है = व कैमे पैदा होते है=उसका प्रशास क्या है है

इन चार बाहारों कर निवान नृष्णा है। समुद्रव नृष्णा है। वे नृष्णा से पैदा होते हैं। बन्न म प्रसंप तृष्ता है।

मिश्चको ! तृष्णा का निवान क्या है ? समुद्रक क्या है ? वह कैसे पैता होती है ? उसका अभव क्या है ! तक्ष्मा का विवास बेबमा है। समारक बेबसा है। यह बेबमा से पैदा होती है। इसका प्रभव बेदमा है।

धेवना का निवास श्यमं 🛊 ः स्पर्शेका विवास वकायतम है । पदाधतन का निजान भागक्य है ।

गासक्य का निवान विकास है ।

विकाय का विश्वास संस्कार है ।

र्शस्कारों का निशान भविषा है ।

सिक्षको श्विम तरह अविचा के होने से संस्कार होते हैं। संस्कारों के दान से विशास होता है। इस तरह भारे द्वाच-समृद का समुदय होता है।

कस अविधा के विश्वान हर और कह जाने में संस्कार एक जाते हैं। इस धरह सारा हुन्य समुद्र भूक आता है।

§ २ फग़ान सच (१२ ३ ०)

बार महार बीर सतकी बत्पनियाँ

.. भगवान बीडे--निश्चवी ! जनमं प्राक्तिनों की किति के किये का सन्म ग्रेने बाक्रों व निर्मे बार भारार है।

उनके देव से अपना कम अल्राक करते हैं इतकिये ने आहार कहे जाते हैं---अब्बन्धा !

[पूर्ववत्]

भिक्षओं । यहाँ चार भाहार हैं।

ऐसा कहने पर आयुष्मान् मोलिय-फरगुन भगवान् मं घोले-भन्ते ! विज्ञान-आहार का कान आहार करता है ?

भग प्रान् बोले—ऐसा पूछना ही गलत है। में यह नहीं कहता कि कोई आहार करता है। यदि में ऐसा कहता कि कोई आहार करता है तो अलबत्ता यह प्रश्न पूछा जा सकता था कि—भन्ते। कौन आहार करता है ? किन्तु, में तो ऐसा नहीं कहता। मेरे ऐसा नहीं कहने पर, तुम यदि पूछते कि—भन्ते। इस विज्ञान-आहार से क्या होता है ?—तो हाँ, ठीक प्रश्न होता।

और, तप उसका उपयुक्त उत्तर होता-

विज्ञान-आहार आगे पुनर्जन्म होने का हेतु है। उसके होने से पडायतन होता है। पड़ायतन के होने से स्पर्श होता है।

भन्ते । कौन स्पर्ग करता है ?

भगवान् बोले—ऐया पूछना ही गलत है। में यह नहीं कहता कि कोई स्पर्श करता है। यदि में ऐसा कहता कि कोई स्पर्श करता है तो अलबत्ता यह प्रश्न पृछा जा सकता था कि—भन्ते। कौन स्पर्श करता हे ? किंतु, में तो ऐसा नहीं कहता। मेरे ऐसा कहने पर, तुम यदि पूछते कि—भन्ते। क्या होने से स्पर्श होता है ?—तो हॉ, टीक प्रश्न होता।

और, तब उसका उपयुक्त उत्तर होता-पड़ायतन के होने से स्पर्श होता है। स्पर्श के होने से वेदना होती है।

मन्ते ! कौरा वेदना का अनुभव करता है ?

भगवान् वोरे—ऐसा प्छना ही गलत है। मैं यह नहीं कहता कि कोई वेदना का अनुभव करता है। यदि में ऐसा कहता कि कोई वेदना का अनुभव करता है तो अलवत्ता यह प्रश्न पूछा जा सकता था कि—भन्ते। कौन वेदना का अनुभव करता है ? किंतु, मैं तो ऐसा कहता ही नहीं। मेरे ऐसा नहीं कहने पर, तुम यदि पूछते कि—भन्ते। किसके होने से वेदना होती है ?—तो हाँ, ठीक प्रश्न होता।

ओर, तत्र उसका उपयुक्त उत्तर होता—स्पर्श के होने से वेदना होती है। वेदना के होने से तृष्णा होती है।

भन्ते । कौन तृष्णा करता है १

भगवान् बोले—ऐसा पूछना ही गलत है। मैं यह नहीं कहता कि कोई तृष्णा करता है। यदि मैं ऐसा कहता कि कोई तृष्णा करता है तो अलबत्ता यह प्रश्न पूछा जा सकता था कि—भन्ते। कीन तृष्णा करता है ? किंतु में तो ऐसा नहीं कहता। मेरे ऐसा नहीं कहने पर, तुम यदि पूछते कि—भन्ते। किमके होने से तृष्णा होती है ?—तो हाँ, ठीक प्रश्न होता।

ं और, तब उसका उपयुक्त उत्तर होता—वेदाना के होने से तृष्णा होती है। तृष्णा के होने से उपादान होता है।

भन्ते । कौन उपादान (= किमी वस्तु को पाने मा छोढ़ने के छिये उत्साह) करता है ?

भगवान् बोले—यह प्लना ही गलत है। मुख्या के होने से उपादान होता है। उपादान के होने से भव होता है।

इस तरह, सारे दु ख-समूह का समुद्य होता है।

हे फ्रग्गुन ! इन छ स्पर्शायतनों के विट्कुछ रुक जाने से स्पर्श होने नहीं पाता । स्पर्श के रुक जाने से वेदना नहीं होती । वेटना के रुक जाने से तृष्णा नहीं होती । तृष्णा के रूक जाने से उपादान नहीं होता । उपादान के दक जाने से अब नहीं होता । अब के दक जाने से जन्म नहीं होता । जन्म न एक जाने से बरामरान छोक रोजा-नीटमा, दान्य चेर्चनी परेताणी सभी एक जाने हैं ।

इस नरह सारा हुःस-समूह एक बाता है।

\$ ३ पठम समजनाद्वाण सूच (१० ० १)

गुणार्थं साम के अधिकारी अग्राम-माधाम

भावस्ती में ।

सगावार योके—सिहाधा ! को असम या साहान करासरण को नहीं वानत करासरण के हेतु का वहीं वानत करासरण को वह काना शहीं वानते करासरण के रोकने का सार्ग नहीं वानते; वाति ; स्वां ; उपाहंपम ; एच्या ; वेदना ; रपकी ; पहावतन ; वासक्य ; विद्यान ; संस्कार के रोकने करासार्ग वात्र के साम के अधिकारी वहीं हैं। के राम का साहाल के परमार्थ को क्षम के साम के अधिकारी वहीं हैं। विद्यान कर या प्राप्त कर या प्त कर या प्राप्त कर या प्त कर या प्राप्त क

सिञ्जनों | भार को असल या माइल्य बरासरण की जानते हैं शंस्कार के रोकने का सार्ग जानते हैं—वह असय या साइल्य वयार्थ में अपने साम के कविजारी हैं। वे आयुध्मान् असय-मान का माध्य-मान को प्राप्त कर विद्यार करते हैं।

8 ४ द्विय समगनासण स्त (१२ ° ८)

परमाथ के जानकार समय-वासक

भावस्ति हैं ।

सिद्धानों ! को असम पा नाक्षम दून वर्मी को नहीं व्यक्ती हैं दून वर्मी के देतु को नहीं सावते हैं दून कमी का दक वाला वहीं व्यक्त हैं दून वर्मी के रीकने के मार्ग को नहीं सावते हैं वे किन कमीं के रोजने के सार्ग को नहीं वालते हैं?

बातमारण को नहीं बालते हैं। बातमारण के देत को नहीं बावते हैं। बातमारण का दक धाना नहीं बानते हैं। बातमारा के रोकाने के मार्ग को नहीं बातते हैं। बातिणां। यह ; उपादांना ; तप्पाः ; बेदला ; स्पर्धः ; पदायता ; भामका ; निवास ; संस्कार को नहीं बातते हैं। संस्कार के देत को बात बातते हैं। संस्कार का दक बाला नहीं बातते हैं। संस्कार के रोकाने के सार्ग को नहीं बात हैं।

मिह्नकी ! न ता बन समजों में समयत्त्व है और न सहकों में साहक्तवा न तो वे व्यवुप्ताद समय पा माह्यण के परमार्थ की बचने सामने बावकर साहता कर या माह कर विद्वार करते हैं।

सिहानी ! को कमन वा माहाय इस वर्मी 'के रोकने के मार्ग को जानते हैं थे किय वर्मी के रोकने के मार्ग को कमने हैं ?

करामरूज । काठि । शत । करायात । तुष्या । वेदवा । स्वर्श । पदावस्य । नामकप । विकास । संस्कार केरीकने केमार्ग को कावसे हैं।

सिद्धवों ! बचार्यता वन कामने में वसकार 🖡 और माह्यवों में बाह्यवाद, वे वायुध्माद समज वा माह्यव के परसार्य को वायने सामये बावकर शाह्यात कर और माह्य कर विदार करते हैं।

§ ५ कवानगोच सत्त (१२ २ ५)

सम्यक इप्रिक्षी व्याच्या

धायल्यों में । तम आयुष्पाम् कात्यायलगोष वहाँ सनम वृत्ते वहाँ आगे और सनावाल् का असिवादन ^{कर} वक्क और केंद्र गये । एक ओर घेठ, आयुष्मान् कात्यायनगोत्र भगवान् से बोले —भन्ते । जो लोग 'सम्यक्-दृष्टि, सम्यक्-दृष्टि' कहा करते हैं वह 'सम्यक्-दृष्टि' है क्या ?

कात्यायन ! संसार के लोग दो अविद्याओं में पड़े हैं—(१) अस्तित्व की अविद्या में, और (२) नास्तित्व की अविद्या में।

कात्यायन ! लोक के समुदय का यथार्थ-ज्ञान प्राप्त करने से लोक में जो नास्तित्व-बुद्धि है वह मिट जाती है । कात्यायन ! लोक में जो अस्तित्व-बुद्धि है वह मिट जाती है ।

कात्यायन । यह संसार तृष्णा, आसिक और ममत्व के मोह में वेतरह जकड़ा है। सो, (आर्य-श्रावक) उस तृष्णा, आसिक, मन के लगाने, ममत्व और मोह में नहीं पढता है, आत्म-भाव में नहीं वैधता है। जो उत्पन्न होता है दु ख ही उत्पन्न होता है, जो रूक जाता है वह दु ख ही रूक जाता है। न मन में कोई कांक्षा रखता है, और न कोई संशय। उसे अपने भीतर ही ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। कात्यायन। इसी को सम्यक्- दृष्टि कहते हैं।

कात्यायन ! 'सभी कुछ विद्यमान है' यह एक अन्त है, 'सभी कुछ श्रन्य है' यह दूसरा अन्त है। कात्यायन ! बुद्ध इन दो अन्तों को छोड़ सत्य को मध्यम प्रकार से वताते हैं।

अविद्या के होने से सस्कार होते हैं । इस तरह, सारे दु ख-समूह का समुद्रय होता है।

उसी अविद्या के विल्कुल हट और रुक जाने से संस्कार होने नहीं पाते । इस तरह, सारा दु ख-समूह रुक जाता है।

§ ६. धम्मकथिक सुत्त (१२. २. ६)

धर्मापदेशक के गुण

श्रावस्ती में।

तव, कोई भिक्षु जहाँ भगवान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गया।
एक ओर बैठ, वह भिक्षु भगवान् से बोला—भन्ते । लोग 'धर्मकथिक, धर्मकथिक' कहा करते
हैं। सो 'धर्मकथिक' के क्या गुण हैं ?

भिद्ध ! जो जरामरण के निर्वेट=चिराग=निरोध का उपदेश करता है वही अलबत्ता धर्मकथिक कहा जा सकता है।

भिक्षु ! जो जरामरण के निर्वद=विराग=निरोध के लिये प्रतिपन्न है वही अलयत्ता 'धर्मानुधर्म-प्रतिपन्न' कहा जा सकता है।

भिक्षु ! जो जरामरण के निर्वेद=विराग=निरोध हो जाने से विमुक्त हो गया है, वह अलवत्ता देखते ही देखते निर्वाण पा लेनेवाला भिक्षु कहा जा सकता है।

मिश्चु! जो जाति , भव , उपादान , तृष्णा ', वेदना , स्पर्श पढ़ायतन , नाम-रूप , विज्ञान , सस्कार ; अविद्या के निर्वेद=विराग≕निरोध का उपदेश करता है वही अलवत्ता धर्मकथिक कहा जा सकता है।

भिक्ष ! जो अविद्या के निर्जेंद=विराग=निरोध के लिये प्रतिपन्न है वही अलवत्ता 'धर्मानुधर्म प्रति-पृत्न' कहा जा सकता है।

भिक्षु ! जो जरामरण के निर्वेद=ियाग=िरोध हो जाने से विमुक्त हो गया है, वहीं अरुवत्ता देखते ही देखते निर्वाण पा छेने वाला भिक्ष कहा जा सकता है।

ई ७ अचेल सुच (१२ २ ७)

प्रतीस्य समस्पादः भचेन काद्यप की प्रवस्था

पैसा मैंने सुना।

एक समय मगवान् राजागृह के घेळुचन करुन्दक विवाद में विहार करते थे।

क

तव मगवान सुबह में पहच और पाशचीवर से राजगृह में मिधारन के किये पैरे।

मंगा साचु काह्यप्र ने मानवान् को बूर ही में काते देया । देखकर बहुँ मानवान् ये वहुँ गवा कीर मानवान् का सम्मोदन किया। तथा व्यवसात और कुत्रकक्षेत्र के प्रदन बुठ कर एक और सदा ही गया।

पुरु और सदा हो। जंगा मानु काश्यप भगवानु में वोका—जाप गीतम से में यक प्रश्न पूर्णा चाहता कि ज्या जाप दसे सत कर उच्चा होने को प्रैयार हैं ?

कारुवा ! यह प्रभ्य प्रकृते का उच्चित अवसर वहीं है। अभी नगर में मिखारन के किये पैस हैं !

वृत्तरी बार मी ।

तीसरी बार भी । काइ-सप ! अभी बगर में निखादन के किये पैटा है।

पारित्य : जमा नगर व । तकाव के क्या पक हूं। इस पर जंगा सामु काइयय सगवान् से बोडा—जाय पातम से में कोइ वही बात नहीं पूजा फाइता हैं।

कास्यप ! दो पुश्रो का पुछना चाहते हो ।

स्व

हे गीतम ! स्था दुल्ड अपना स्थर्भ किया# होता है ?

काल्यय ! ऐसी बात बडी है।

है गौरम ! ती च्या इ-क परावे का किया होता है ?

कादयप ! पेसी बात नहीं है।

है गीतम | को क्या कुमा अपने स्वर्त और पताने के श्री करने से होता है ?

इंगातमा वा क्या युक्ता अपन स्वतं आहं पतान के भा करण सं दाता इं काइयपं ! पेसी बात नहीं है ।

है गोतम ! बहि हुन्क बचने स्वर्ष बीर पराचे के आं करने स नहीं होता है तो क्या सम्माग ही सम्माग चम्म काल है ?

तात् वसम् काता हाः काइस्परा देशी वाता वहीं है।

हे बोतम ! तो क्या हुआ है ही वहीं ?

नहीं काइयप ! इन्ह है।

सो पदा चकदा है कि काप गीतम हुन्छ को बानते समझते वहीं है ।

काइयप ! पैसी बाव वहीं है कि में हुन्य को बावता संसहता नहीं हूँ । आह्यप ! में हुन्य को सम्बद्ध सनदा और समझता हूँ ।

सर्वेडच = श्रीय का कपना रुख किया इक्ष्य ।

"हे गोतम ! पया हु स्य अपना स्ययं किया होता है "" पूछे जाने पर आप कहते हैं, "काव्यप ! ऐसी पात नहीं है ।"

आप कहते हैं, ' फाइयप ! में दुन्य को सन्यत जानता और समापता हूँ । भगवान् मुझे यतार्थे कि दुन्य क्या है, भगवान मुखे उपदेश करें कि दुन्य क्या है ?

फाइयप । 'जो करता है वही भोगता है ग्याल कर, यदि वहा जाय कि हु म अपना स्वय किया होता है तो शाहबत-बाट हो जाना है।

काटयप । 'दूसरा करना है' ओर दूसरा भोगता है' त्याल कर, यटि समार के फेर में पड़ा हुआ मनुष्य कहें कि दू स पराये का किया होता है तो उच्छेट-घाट हो जाता है।

कात्यायन ! युद्ध इन दो अन्तो को छोए यन्य को मध्यम प्रकार ने बताने हैं । अधिया के होने से सस्कार होते हैं...। इस तरह, सारे दु-य-समूह का ममुदय होता है ।

उमी अविद्या के बिल्कुल एट और एक जाने से सस्कार होने नहीं पाते । इस तरह, सारा हु पन्ममूह रक जाता है।

ग

भगवान् के ऐसा वहने पर नंगा साधु काइयप भगवान् से बोला—धन्य है। भन्ते, आप धन्य हैं। जैसे उलटे को सलट टे . वैसे भगवान ने अनेक प्रकार से धर्म का उपटेश किया। में भगवान् की शरण जाता हूँ, धर्म की और भिक्षुसब की। भन्ते! में भगवान के पास प्रव्रज्या पाऊँ, और उपसम्पटा पाऊँ।

काइयप ! जो दूसरे मत के माधु इस धर्मविनय में प्रवज्या और उपसम्पदा चाहते हैं उन्हें चार मास का परिवास छे लेना पढ़ता है। इस चार मास के परिवास धीतने पर यदि भिक्षुओं को रचता है तो उसे प्रवज्या और उपसम्पटा देकर भिक्षु बना देते हैं। किन्तु, हमें व्यक्ति की विभिन्नता माछम है।

भन्ते ! यदि, जो दूसरे मत के साधु इस धर्मविनय में प्रवज्या ओर उपसम्पदा चाइते हैं उन्हें चार मास का परिवास छेना पदता है, इस चार मास के परिवास वीतने पर यदि भिक्षुओं को रुचता है तो उसे प्रवज्या और उपसम्पदा टेकर भिक्षु बनाते हैं,—तो में चार साछ का परिवास छेता हूँ, चार साछ के परिवास वीतने पर यदि भिक्षुओं को रुचे तो मुझे प्रवज्या और उपसम्पदा टेकर भिक्षु बना छें। नगा साधु काइयप ने मगवान के पास प्रवज्या पायी, और उपसम्पदा पायी।

घ

उपसम्पदा पाने के कुछ ही समय याद आयुष्मान् काइयप अकेला, एकान्त में अप्रमत्त, आतापी (=क्लेशों को तपाने वाला) और प्रहितात्म हो विहार करते हुये शीघ ही उस अनुत्तर ब्रह्मचर्य के परम फल को इसी जन्म में स्वय जान, साक्षात् कर, और प्राप्त कर विहार करने लगे जिसके लिये कुलपुत्र श्रद्धा-पूर्वक घर से वेघर हो प्रधिजत हो जाते हैं। जाति क्षीण हो गई, ब्रह्मचर्य प्रा हो गया, जो करना था सो कर लिया, अब और कुछ करना बाको नहीं है—ऐसा जान लिया।

आयुष्मान् काञ्चप अर्हतों में एक हुये।

^{*} परिवास-इस अवधि में प्रव्या-प्रार्थी को सेवा-टहरू करते हुये मिझुओं के साथ रहना होता है। जब मिझु उसकी हटता, आचरण, व्यवहार आदि से सतुष्ट हो जाते हैं तो उसे प्रविजत करते हैं।

[§] ८ विम्मरूक सुच (१२.२८)

सुख दुःख के कारण

धाधस्त्री में ।

तक तिस्वत्क परिवादक बहुँ सगवान ये वहुँ वाया । बाकर प्रगवान का सम्मोदन किया कीर कावमगठ तथा कुसकक्षेत्र के प्रवन पुक्ति के बात एक और वैद्वापा ।

पक भीर बेट कर लिडकरूक परिवायक भगवान से बोका-

हे गीतम ! क्या सुक्कारक अपने बायक हो जाता है ?

सगवान वोके-विस्मदक | येसी बात वहीं है।

हे गांतम ! तो क्या सुध-दुन्ध किसी तुसरे के करने में हाता है ?

सराबाय कोच्छे-विस्वयक । येथी बाध नहीं है ।

हे तीवम ! तो क्या मुक्त-हुक्क कपने बाद भी हो काता है कीर वूसरे के करने संभी होता है ! भगवान बोके--विकटक ऐसी बाद वहीं है !

है गीवस ! हो क्या सुक्ष-दुःका व व्यवने भाव और व यूक्त के करने से किन्तु अकारण ही हस्य. हो आहा है !

भगवान कोके-सिम्बदक ! येगी नास नहीं हैं।

है गीवम ! वो क्या सुक्रमुख्य है ही नहीं ?

तिस्वरुक्त ! पेसी वात महीं है कि शुक्त-मृत्य नहीं है, पुष्त-मृत्य तो है हो ।

वी पता क्यता है कि जाप गीतम मुख्य-तुम्ब को कानते यूसते नहीं हैं।

रिस्वकः [पेनी वात नहीं है कि में सुस्कृत्व को नहीं सन्तर स्वत् । तिस्वकः] में सुक् राज्य को स्वत्रा सन्तर सुक्ता हैं ।

वो दे गीतम ! मुझे वतार्वे कि सुक्ष-गुन्त क्या है । दे गीतम ! मुझे सुक्र-पुन्त का

वपदेत करें। तिस्ववक्क ! 'को वेदमा है नहीं (शुक्तकुत्व को) अनुसूचि कराने वाका है' समग्र कर तुमने कहां

कि सुक्त-हुन्क अपने काप हो बाठा है। से पैसा नहीं कराया। तिस्वादक ! वित्रण दलारे ही है और (सुक्त-हुन्क की) अपुस्ति कराने वाका हसरा ही समझ

[तुरस्वरूक] पर्या पूसरा दा द जार (शुक्तनुष्य का) मधुम्य करान बाका बूसरा दा यमन कर तुमने कहा कि सुक्तनुष्म बूसरे का किया होता है। मैं ऐसा यी नहीं क्वासा ।

तिस्वदक्त ! युद्ध इन दी कर्नी को क्रोड़ सज्बस शिंत से सल का वपदेस करते हैं। भविद्या के होने से संस्कार होते । इस तरह आहे क्रान्य-समूद का समुदन होता है।

दशी विश्वा के विश्वक हर और कर कार्य से धारा शुन्तासमूद एक बाता है।

दे गीतम ! बाब से बन्म भर मुखे बपना धरवागत उपासक स्वीकार करें।

§ ९ वास्त्रपण्डित सुच (१० २ ९)

मुर्ज और पण्डित में अन्तर

भाषस्ती 🗄 ।

मिश्चमो ! व्यविद्या में यन कृष्णा वहाते रहने से हो मूर्च क्षमी का चौका खना रहता है । और यह चोका बारर और मीतर से वास-कम (क्षमें क्कूम्ब) हो है । सो दोन्हों (व्यक्तिय और उसका विकर)

सर्थकर्त = लवं बेदना ही सुक-पुश्य की क्षतुभृति का कारण होना ।

के होने से स्पर्श होता है। यह छ आयतन हैं जिनमें स्पर्श कर मूर्ख सुख-दुःख का अनुभव करता है। अथवा, इन (छ आयतनों) में किसी एक से।

भिक्षुओ ! अविद्या में पड, तृष्णा वहाते रहने से ही पण्डित जनों का भी चोला खड़ा रहता है। और, यह चोला वाहर ओर भीतर से नाम-रूप (=पद्ध स्कन्ध) ही है। सो, दो दो के होने से स्पर्श होता है। यह छः आयतन हैं जिनसे स्पर्श कर मूर्ख सुख-दु ख का अमुभव करता है। अथवा, इनमें किसी एक से।

भिक्षुओ ! तब, सूर्ख और पण्डित में क्या अन्तर≔भेट होता है ?

भन्ते ! भगवान् ही धर्म के गुरु, नायक और उपदेश हैं । भन्ते । अच्छा होता कि भगवान् ही इस प्रश्न को खुळासा करते । भगवान् से सुन कर भिक्षु धारण करेंगे ।

तो, भिक्षुओ ! सुनो, अच्छी तरह मन लगाओ, मैं कहता हूँ।

"मन्ते । बहुत अच्छा" कह भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

मगवान् बोले—ि शिक्षुओ ! जिस अविद्या और तृष्णा के हेतु मूर्खं जनां का चोला खडा रहता है, वह अविद्या और तृष्णा उनकी क्षीण हुई नहीं होती है। सो क्याँ ? भिक्षुओ ! क्योंकि दु ख का विल्कुल क्षय कर देने के लिये मूर्खं ने ब्रह्मचर्य नहीं पाला। इसलिये मूर्खं एक चोला छोड़कर दूसरा धरता है। इस तरह चोला धरते रह, यह जाति, जरामरण, शोक, रोना-पीटना, दु ख, वेचिनी, परेशानी से नहीं छूटता है। दु ख से नहीं छूटता है—ऐसा में कहता हूँ।

भिक्षुको ! जिस अविद्या और तृष्णा के हेतु पण्डित जनों का चोला खड़ा रहता है, वह अविद्या और तृष्णा उनकी क्षीण हो गई होती है। सो क्यो ? भिक्षुओ ! क्योंकि दु ख का विल्कुल क्षय कर देने के लिये पण्डित ने बहाचर्य का पालन किया है। इसलिये, पण्डित एक चोला छोड़ कर दूसरा नहीं धरता इस तरह फिर चोला न बर, वह जाति, जरामरण, शोक, रोना-पीटना, दु ख, वेचैनी, परेशानी से छूट जाता है। दु ख से छूट जाता है—ऐसा मैं कहता हूँ।

भिक्षुओ। यही ब्रह्मचर्य पालन न करने और करने का अन्तर=भेद मूर्य और पण्डित में होता है।

§ १०. पचय सुत्त (१२ २. १०)

प्रतीत्य समुत्पाद की व्याख्या

श्रावस्ती में।

मिश्चओ ! मैं प्रतीत्य समुत्पाद और प्रतीत्य समुत्पन्न धर्मों का उपदेश करूँ गा । उसे सुनो, अच्छी तरह मन लगाओ, मैं कहता हूँ ।

"भन्ते ! बहुत अच्छा" कह, मिध्नुओं ने भगवान् को उत्तर दिया।

भगवान् बोले—भिक्षुओ ! प्रतीत्य समुत्पाद क्या है ? भिक्षुओ ! हुद्ध अवतार लें या नहीं, (यह तो सर्वदा सत्य रहता है कि) जनमने पर वृद्धा होता है और मर जाता है (=जाति के प्रत्यय से जरा-मरण होता है)। प्रकृति का यह नियम है कि एक धर्म के होने से दूसरा होता है, उसे बुद्ध भली माँति वृद्धाते और जानते हैं। उसे भली माँति वृद्धाते और जानते हैं। उसे भली माँति वृद्धाते और जानते हैं = उपदेश करते हैं = जताते हें = सिद्ध करते हैं = खोल देते हैं = विभाग कर देते हैं = साफ करते हैं, और कहते हैं—

देखों ! भिक्षुओं ! जाति के होने से जरामरण होता है । भव के होने से जाति होती है । उपादान के होने से भव होता है । तृष्णा के होने से उपादान होता है । वेटना के होने से तृष्णा होती है । स्पर्श के होने से वेदना होती है । पदायतन के होने से स्पर्श होता है । नामरूप के होने से पदायतन होता है । विज्ञान के होने से नामरूप होता है । सस्कारों के होने से विज्ञान होता है । अविद्या के होने से सस्कार होते हैं ।—बुद्ध का अवतार हो या नहीं यह नियम सदा बना रहता है ।

[§] ८ तिम्बरुक सच (१२ २ ८)

सुब दुम्ब के कारण

धारक्ती में ।

दव तिस्वरुक परिवासक बहाँ भगवान ने नहीं बाना । साकर, भगवान का सम्मोदन किया भीर आवसगत तथा असम्बद्धेस के प्रकृत पूछने के बाद एक बोर बैट गया ।

एक और बैठ कर निरुद्धका परिवासक संग्रवान से बोसा---

है गौतम ! क्या भृष्य-दृश्व कपने कापक हो बाता है ?

मगवान बोके-शिम्बरुक ! ऐसी वाट नहीं है ।

है गीवम ! का क्या सुदा-शन्त किसी इसरे के करने से होता है ?

अराबाब बोडे--तिस्वकड ! यसी कत वहीं है।

हे गौतम ! तो क्या सुक्र-इन्स अपने आप भी हो बाता है। आर इसरे के करने में भी होता है !

भगवान बोडे---िरावस्त्र ऐसी बात नहीं है। हे गीतम ! तो क्या सक्तमुल्ल न अपने जाप और न तुमरे के करने से किन्तु अकारन ही हरूप हो बाता है १

सराबान बोडे-- तिस्वक्ष । येसी बात नहीं है ।

हे गीवम ! वरे न्या लुक-इत्क है ही नहीं ?

तिस्वस्क ! ऐसी बात वहीं है कि सुक्त-पुन्य यहीं है सुक्त-पुन्य तो है ही !

तो पता चलता है कि भाप गौतम सपन्त च को कामते बसने महीं हैं।

तिस्वदक्त | येसी बात वहीं है कि मैं सुल-पुन्त को वही कन्दरा बुसता । तिस्वदक्त | मैं पुन-हान को सम्बद्धा कानवा कुसवा हैं।

वी है गीवस ! सुन्ने बतार्थ कि सुक्त-पुन्त क्या है। है पावस ! सुन्ने सुक्त-पुन्त का

उपरेक करें।

तिस्वदक ! 'को नेतृना है नहीं (सुक्क हुन्क की) जनुमृति कराने नाका है' समझ कर तुसने कहा कि सम्बद्धान भएके भाग हो जाता है। मैं येसा नहीं बताता ।

तिस्वरूक ! 'बेर्वा वृत्तरी ही है और (पुरू-पुत्रा की) अबुवृधि कराने वाका वृत्तरा ही' समझ

कर समने कहा कि सक्त-पुरुष इसने का किया होता है। मैं ऐसा जी वहीं बताता । तिस्थकः । तर प्रन वी अन्ती को बोब सच्चम रीति श सत्य का उपवेश करते हैं ।

वाविचा के होते से संस्कार होते । इस चरह सारे ब्रान्क-समृद का समुदय दौता है। उसी अविद्या के विकाक पर और एक काने से नारा प्राचनायह पत्र वाता है।

हे थीतम । बाब से बन्म धर मुझे बपवा तरवागत अपासक स्वीकार करें।

🙎 ९ पारुपण्डित सच (१२ २ ९)

मुर्क और पण्डित में बन्तर

भावस्ती में ।

मिश्चमों ! स्विचा में वह तृष्णा बहाते रहवे हैं ही शूर्व बर्वी का श्रोक्ष कहा रहता है। सीर, वह चोका बाहर और मौतर से वासन्त्रम (व्यंच स्कम्ब) ही है। हो होन्हों (व्यक्तिय और बसका विषय)

सर्पकरं = खर्व बेदना ही हुक्त-हुम्प की क्युमृति का कारण होना ।

के होने से स्पर्श होता है। यह छ आयतन हैं जिनमें स्पर्श कर मूर्व सुख-दुःख का अनुभव करता हैं। अथवा, इन (छ आयतनों) में किसी एक से।

भिक्षुओ । अविद्या में पट, तृष्णा वदाते रहने से ही पण्डित जनों का भी चोला खटा रहता है। और, यह चोला वाहर और भीतर से नाम-रूप (=पज्ञ स्कन्ध) ही है। सो, टो टो के होने से स्पर्श होता है। यह छः आयतन हैं जिनसे स्पर्श कर मूर्ख सुख-दुःख का असुभव करता है। अथवा, इनमें किसी एक से।

भिक्षुओ । तब, मूर्ख और पण्डित में क्या अन्तर=भेद होता है ?

भन्ते । भगवान् ही धर्म के गुरु, नायक और उपटेष्टा हैं । भन्ते । अच्छा होता कि भगवान् ही इस प्रश्न को खुळासा करते । भगवान् से सुन कर भिक्षु धारण करेंगे ।

तो, भिक्षुओ ! सुनो, अच्छी तरह मन लगाओ, मैं कहता हूं।

"भन्ते ! बहुत अच्छा" कह भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया।

भगवान् बोले—भिक्षुओ ! जिस अविद्या और तृष्णा के हेतु मूर्खं जनां का चोला खडा रहता है, वह अविद्या और तृष्णा उनकी क्षीण हुई नहीं होती है। सो क्यो ? भिक्षुओ ! क्योंकि दु ख का विल्कुल क्षय कर देने के लिये मूर्खं ने ब्रह्मचर्य नहीं पाला। इसलिये मूर्खं एक चोला छोड़कर दूमरा धरता है। इस तरह चोला धरते रह, यह जाति, जरामरण, शोक, रोना-पीटना, दु ख, वैचैनी, परेशानी से नहीं छूटता है। दु ख से नहीं छूटता है—ऐसा में कहता हूँ।

भिक्षुओ । जिस कविद्या और तृष्णा के हेतु पण्डित जनो का चोला खडा रहता है, वह अविद्या भीर तृष्णा उनकी क्षीण हो गई होती है। सो क्यों ? भिक्षुओ । क्योंकि दु स का विल्कुल क्षय कर देने के लिये पण्डित ने ब्रह्मचर्य का पालन किया है। इसलिये, पण्डित एक चोला छोड़ कर दूसरा नहीं धरता इस तरह फिर चोला न धर, वह जाति, जरामरण, शोक, रोना-पीटना, दु ख, वेचैनी, परेशानी से छूट जाता है। दु ख से छूट जाता है—ऐसा मैं कहता हूँ।

भिक्षुओं। यही ब्रह्मचर्य पालन न करने और करने का अन्तर=भेद मूर्ख और पण्डित में होता है।

§ १०. पचय सुत्त (१२ २. १०)

प्रतीत्य समुत्पाद की व्याख्या

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ ! मैं प्रतीत्य समुत्पाद और प्रतीत्य समुत्पन्न धर्मों का उपदेश करूँगा । उसे सुनो, अच्छी तरह मन छगाओ, मैं कहता हूँ ।

"मन्ते । बहुत अच्छा" कह, भिक्षुओं ने मगवान् को उत्तर दिया ।

मगवान् वोले—भिक्षुओ ! प्रतीत्य समुत्पाद क्या है ? भिक्षुओ ! हुद्ध अवतार लें या नहीं, (यह तो सर्वंदा सत्य रहता है कि) जनमने पर वृद्धा होता है और मर जाता है (=जाति के प्रत्यय से जरा-मरण होता है)। प्रकृति का यह नियम है कि एक धर्म के होने से दूसरा होता है, उसे दुद्ध मली भाँति वृद्धते और जानते हैं। उसे मली माँति वृद्धते और जानते हैं। उसे मली माँति वृद्धते और जानते हैं = उपदेश करते हैं = जाते हैं = सिद्ध करते हैं = खोल देते हैं = विभाग कर देते हैं = साफ करते हैं, और कहते हैं—

देखों ! भिक्षुओं ! जाति के होने से जरामरण होता है । भव के होने से जाति होती है । उपादान के होने से भव होता है । तृष्णा के होने से उपादान होता है । वेदना के होने से तृष्णा होती है । स्पर्श के होने से वेदना होती है । पदायतन के होने से स्पर्श होता है । नामरूप के होने से पदायतन होता है । विज्ञान के होने से नामरूप होता है । सस्कारों के होने से विज्ञान होता है । अविद्या के होने से सस्कार होते हैं ।—वुद्ध का अवतार हो या नहीं यह नियम सदा बना रहता है ।

महादि का यह नियस है कि कमें के होने से शूसरा होता है। वसे तुद्ध अबी माँति शृक्कते कीर कारते हैं। सार्थ प्रतिक कारतीर कारता कारते हैं - सार्थ करते हैं - सीर कारते हैं

भीर बानते हैं। सभी मौति वृक्त भीर खायकर बताते हैं = उपदेश करते हैं = ओर कहते हैं— देखों! निक्रमों! मविचा के दोने से संस्कार डोते हैं। निक्रमों! इसकी सारी सम्बद्धा इसी

हेंद्र-- निषम पर बिर्मर है। मिश्चमो ! प्रतीत्य समुत्यक यमें क्या है ? मिश्चमो ! जरामस्य क्षतित्व है संस्कृत है प्रतीत्व

समुद्धा । प्रतास समुख्य पान क्या है । तिमुख्य । जरामस्य क्षांत्र है स्व स्वतः है प्रतास समुख्य है अप होनेत्रा को स्वयं होनेत्रा को स्वयं होनेत्रा का सकता है। सिमुख्य । जाति । अस । जपावाल । तुष्या । विद्या । एवर्स । प्रदासन । माम-क्या । विद्या । स्वेत्रका । स्वयं । प्रदासन । माम-क्या । विद्याल । स्वेत्रका । कियाल । स्वयं होने वाकी है ।

मिञ्चयो ! बार्पेकाश्वक को यह प्रतीत्व समुत्याद का विषय और प्रतीत्व समुत्यान वर्ग बच्छी

तरह समझ कर प्यहतः साझान कर किए गये होते हैं। वह पूर्वोह्त की निष्पारिकों नहीं रहता है कि—में भूतकाक में वा में भूतकाक में नहीं वा मुतकाक में क्या वा मुक्तक में में कैसा वा मृतकाक में में क्या होकर क्या हो गया वा है

्रकार न राजा जा पुरिचक का करता जा गुरुकाक न अस्त हाकर राजा है। याजा जा गुरुकाक न अस्त हाकर राजा है। याजा जा म कह स्पर्यास्त्र की सिर्फाणिक में मी बही बहुता है कि मी अधिक में होती मी सिर्फाण में नहीं होईसा भविष्य में क्या होतीया अधिक में बेसा होतीया अधिक में क्या होता रूप हो कर राजा है। आईस्पा ।

बहु प्रस्तुत्वल्ल (व्यर्गसाय काक) को केवर की अपने शीवर संस्थ वहीं करता—में हूँ, में गर्ही हैं. में क्या है, में केसा हैं, मेरा बोब कहींसे आवा है आर कहीं वाचया।

हो क्यों है जिहुको ! क्योंकि कार्यकावक को यह प्रतीक समुताद कीर प्रतील समुताक वर्म क्यों तरह समझ कर स्थलत साझार कर किये गई होते हैं।

आहार-कर्ते समाप्त ।

तीसरा भाग

दश्चल-वर्ग

§ १. पठम दसवल सुत्त (१२.३.१)

बुद्ध सर्वोत्तम कहलाने के अधिकारी

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ । बुद्ध दशवल और चार वेशारद्य से युक्त हो सर्वोत्तम कहलाने के अधिकारी हैं। सभा में सिंह-नाट करते हैं, ब्रह्मचक्रको प्रवर्तित करते हैं।

यह रूप है, यह रूप का उगना है, यह रूप का लय हो जाना है। यह वेटना है । यह सज्ञा है । यह सस्कार है । यह विज्ञान है, यह विज्ञान का उगना है, यह विज्ञान का लय हो जाना है।

सो, एक के होने से दूसरा होता है, एक के उगने से दूसरा उग खड़ा होता है। एक के नहीं होने से दूसरा नहीं होता है, एक के रूक जाने से दूसरा रूक जाता है।

जो अविद्या के होने से सस्कार होते हैं । इस तरह सारे दु ख-समृह का समुदय हो जाता है। उसी अविद्या के विल्कुल हट और रुक जाने से ''। इस तरह, सारा दु ख समृह रुक जाता है।

§ २. दुतिय दसबल सुत्त (१२. ३. २)

प्रवज्या की सफलता के लिए उद्योग

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ ! बुद्ध दशवल और चार वैशारद्य से युक्त हो [ऊपर वाले सूत्र की पुनरावृत्ति] इस तरह, सारा दु ख समूह रुक जाता है।

भिक्षुओ ! मैंने धर्म को साफ साफ कह दिया है=समझा दिया है=खोल टिया है=प्रकाशित कर दिया है=लपेटन काट दिया है।

भिक्षुओ । ऐसे धर्म में श्रद्धा से प्रज्ञजित हुये कुलपुत्र का वीर्य करना सफल होता है।—चाम, नाही, और हड्डियाँ ही मले शरीर में रह जायँ, मास और लोहित मले ही सुख जायँ—किन्तु, जो पुरुष के उत्साह, पुरुष के वीर्य और पुरुष के पराक्रम से पाया जा सकता है उसे विना प्राप्त किये उद्योग से सुँह नहीं मोहूँगा।

मिश्रुओ । काहिल पुरुष पाप-धर्मों में पदकर दु ख पूर्ण जीता है, महान् परमार्थ से हाथ धो बैठता है। मिश्रुओ । और, वीर्यवान् पुरुष पाप-धर्मों से बचा रह, आनन्द-पूर्वक विहार करता है, महान् परमार्थ को पूरा कर लेता है।

मिश्रुओ ! हीन से अग्र की प्राप्ति नहीं होती, अग्र से ही अग्र की प्राप्ति होती है। भिश्रुओ ! ब्रह्मचर्य पालन करने की श्रद्धा लाओ, सामने बुद्ध मौजूद हैं। इसलिये, हे भिश्रुओ ! वीर्य करो, अप्राप्त की प्राप्ति के लिये, नहीं पहुँचे दुये स्थान पर पहुँचने के लिये, कभी देखी नहीं गई चीज़ को साक्षात् करने के लिये। इस तरह सुमहारी प्रथमना काकी नहीं जायगी, वस्कि सफ्स और सिद्ध होगी। जिनका दान किया चीवर दिन्द्रपति अववासन म्हान्यस्थ्य सोग करोगे बन्ते वहा प्रथ्य मास्र होगा।

मिश्चमा तुम्हें इसी तरह सीखना चाहिये। सिश्चयों ! व्यप्ते हित को व्यास में रकते हुने सार-भाव हो बचान करो । तुसरों के हित को भी प्यान में रकते हुने सावधाय हो बचोग करो ।

६३ उपनिसासुच (१२ ३ ३)

भाश्रय क्षय, प्रतीस्य समुत्याद

धायस्ती में ।

सिक्तुओं | ही सामते और देकते हुये ही जासभी के सब करनं का उपवेश करता हूँ, विना वाने भार तेये नहीं ।

निम्नुओं ! थया साम और देखकर साक्ष्यों का श्रूप द्वांता है ? यह कम दे यह कप का त्यागा है यह कम का कम दो काना है। यह पेतृना संद्वा संस्कार । यह विश्वाय है यह विद्यान का द्वारा है यह विद्यान का कम दो जाना है। निश्चमाँ ! इसे दो जान और देखकर सामग्री ना श्रम दोता है।

है यह विज्ञान का अप्य हो जाना है। सिशुकों ! इसे दी जान कीर देखकर काल वी ना सन होता है। भिक्रुकों ! अप्य होने पर को स्वय होये का फाल होता है उसे भी में सहेतुक बताता हैं, कोनेफ नहीं।

मिश्रुमी ! झव होने के कान का होतु च्या है ! विश्वक्ति ही हेतु है---ऐसा कहवा व्यक्ति ।

भिक्षुको । विमुक्ति को भी में सहेतुक बताता हैं, कहेतुक गहीं । मिक्समो | विमुक्ति का हेतु नगा है | वैराज्य हतु है—पेसा कहवा चाहिये । मिक्समो ! वैराज्य को

भी में सहेत्रक बताता हैं, कहेतुक नहीं !

सिक्षको । वैराग्य का इतु क्या है ? संसार की दुराव्यों को देश करासे अब करणा (≔िवस्पिर) हैतु है—पेसा कहवा चाहिये । सिक्समें । से इस अब करने को भी सहेतुक बठावा हैं, अहेतुक वहीं ।

मिल्लाको । इस अन करने का हेनु क्या है ? अवका हो पायावीतानहर्सन है-ऐसा कहना काहिये। मिल्लाको । प्रमाणकार के भी मिल्लाक स्वतान है, क्यापन नहीं।

मिश्रुचा ! यमार्वज्ञावदर्भन का क्षेत्र क्या है ? उसका हेतु समाधि है—ज्या कदमा चाहिये ! सिश्रुची ! समाधि का भी में सहतुक बताता हूँ अहतुक वहीं ।

ासुना : तताथ का गा न सहयुक बताया हूं जाहुक नहां । निमुद्धतां समार्थित कहा क्या है ? उसका हेनु शुल्प ह—पुमा कहना चाहियं । निमुक्तों ! सुर्य को मी में महेरूक बताया हूँ जाहेनुक नहीं ।

ना न भड़्तुक बताता हूं ज्यातुक नदा । निमुखो ! सुग्य का हेनु बना दे १ जसका हेनु शानित (≡त्रश्रविष) है---वेमा बद्दनाः बाहिये ।

सिहाओं । सामित का भी में सहेतुक बनाता हूँ अहेतुक वहीं । सिहाओं । सामित का हैन क्या है । उसका हैन स्रीत है—सेना बहना चाहिये । सिहाओं ! प्रीति

का भी में महेनुक बनाता हूँ, अहेतुक नहीं। विकासी ! प्रीति का केल कार के 9 प्रतास केल स्थापन के केला समान स्थापन के किस्सी !

निशुक्ती । प्रीतिका क्षेत्र क्षण के १ जनका केतु प्रमोद है-संहता कहका काहिये । श्रिप्तानी । प्रमाद को जी में शहेतुक क्षाता है, जहेतुक नहीं ।

िमशुका ! अमीद का देतु क्या है ? उमका देनु धादा है—येगा कहना कादिय । मिशुओ ! अदा का भी मैं मदेनुक क्याता हैं। बहेनुक क्यों।

मितुको ! अदा का देतु वया है ? उसका देतु कुल दे—येगा ददना चाहिने । सिशुको ! कुला को जी में मदेतुक बताता हैं, कोतुक नहीं ! भिद्धुओ । दु स का हेतु क्या है ? उसका हेतु जाति है—ऐमा कहना चाहिये। भिद्धुओं । जाति को भी में सहेतुक वताता हूँ अहेतुक नहीं।

भिक्षुओ । जाति का हेतु ' भव है । '
भिक्षुओ । भव का हेतु ' उपादान है '।
भिक्षुओ । उपादान का हेतु तृष्णा है ।
भिक्षुओ । तृष्णा का हेतु वेदना हं '।
भिक्षुओ । वेदना का हेतु म्पर्ग हं '।
भिक्षुओ । स्पर्ग का हेतु पदायतन हे '।
भिक्षुओ । पडायतन का हेतु नामरूप हं ।
भिक्षुओ । पडायतन का हेतु नामरूप हं ।
भिक्षुओ । विज्ञान का हेतु नमका हे '।
भिक्षुओ । विज्ञान का हेतु नमका हे '।
भिक्षुओ । विज्ञान का हेतु अविद्या है।

भिक्षुओ ! इस तरह अविद्या के होने से सस्कार, सस्कार के होने से विज्ञान, नामरूप, पहायतन, स्पर्श, वेदना, "नृष्णा, उपादान, " भव, जाति, दुल, दुःप के होने से श्रद्धा, प्रमोद, प्रीति, प्रश्रद्धि, "सुप, समाधि, " यथार्थ ज्ञान-दर्शन, ससार-भीति, " वैराग्य, वैराग्य से विमुक्ति होती है, विमुक्ति से आश्रवों के क्षय होने का ज्ञान हो जाता है।

भिक्षुओ । जैसे पहाद के उपर मूसलघार वृष्टि होने से, जल नीचे की और यह कर पर्वत, कन्दरा प्रदर, शाखा सभी को भर देता है। इन्हें भर जाने से नाले यह निकलते हैं। नालां के भर जाने से देवियाँ भर जाती है। दोदियों के भर जाने से, छोटी-छोटी निद्याँ भर जाती है। छोटी-छोटी निद्याँ के भर जाने से सही-बड़ी निदयाँ भर जाती है। यडी-यडी निद्याँ के भर जाने से समुद्र सागर भी भर जाते है।

भिक्षुओ ! इसी तरह, अविद्या के होने से सस्कार, सस्कार के होने से विज्ञान, नामरूप, पहायतन, न्पर्श, वेदना, नृष्णा, उपादान, भव, जाति, दुल, – श्रद्धा, प्रमोद, प्रीति, प्रश्रविध, सुख, समाधि, यथार्थ ज्ञान-दर्शन, असार-भीति, वैराग्य, वैराग्य के होने से विमुक्ति और विमुक्ति के होने से क्षय होने का ज्ञान।

§ ४. अञ्जतित्थिय सुत्त (१२ ३ ४)

दुःय प्रतीत्य समुत्पन्न है

राजगृह के वेलुवन में।

तव, आयुष्मान् सारिपुत्र सुबह में पहन और पात्रचीवर ले भिक्षाटन के लिये राजगृह में पेठे । तव, आयुष्मान् सारिपुत्र के मन में ऐमा हुआ—अभी राजगृह में भिक्षाटन करने के लिये कुठ सवेरा है, तो में चल्हें जहाँ अन्य तैथिक परिवाजकों का आराम है।

तय, आयुष्मान् सारिपुत्र नहीं मन्य तैथिक परिवानको का माराम था वहाँ गये, जाकर उनका सम्मोदन किया और कुशल क्षेम के प्रश्न पूछने के बाद एक ओर बैठ गये।

एक ओर बंठे हुये आयुष्मान् सारिपुत्र को वे अन्य तिर्थिक परिवाजक बोले—आयुस सारिपुत्र ! कुछ श्रमण और व्राह्मण कर्मवादी हैं जो दु ख को अपना स्वय किया हुआ वताते हैं। आवुस सारिपुत्र ! ऐसे भी कुछ श्रमण और व्राह्मण कर्मवादी हैं जो दु ख को दूसरे का किया हुआ वताते हैं। आवुस सारिपुत्र ! ऐसे भी कुछ श्रमण और व्राह्मण कर्मवादी हैं जो दु ख को अपना स्वय किया हुआ और व्यसरे का भी किया हुआ बताते हैं।

इस तरह तुम्हारी प्रकरण साक्षी महीं कायगी चरिक सकत और सिक् होगी। विगवन दान किया चीचर, विवहरात सुपनासन स्थानप्रत्यन भोग करोगे बन्धे बढ़ा पुष्प प्राप्त होगा।

मिञ्जूको तुम्हें इसी तरह सीकता जाहिया | मिञ्जूको | यपने हित को प्याम में १ करे हुये साक साम हो कसीत करी | बूसरों के हित को भी प्याम में १ करे हुवे सावधाव हो उसीत करी ।

६ ३ टपनिसासच (१२ ३ ३)

भाश्रव क्षय प्रतीत्व समत्याव

भावस्ती में।

मिशुपो | मैं कानते चीर वसते हुये ही बाजवों के झप करवे का उपदेश करता हूँ दिना कार्रे कार देखे नहीं !

मिलुओ | नया जान जीत नेपाकर आवाजों का क्षम होता है ? यह कम है, यह कम का तनाना है यह रूप का कम हो जाता है। यह नेपाता छंत्रा संस्कार ।। यह विज्ञान है यह विज्ञान का कमना है यह विज्ञान का कम हो जाता है। शिश्लुओं ! हुने ही जान जीत नेपाकर जाश्रमों ना क्षम होता है।

भिश्चको ! श्रव होने पर जो स्वव होने का ज्ञान होता है उसे भी में सहतुत्व बताता हैं,

अहेतुक नहीं ।

सिहनी । इस होने के बाव का बेट क्या है ! बिहुकि दी बेट है—एसा करना चाहिये। भिक्रको ! बिहुकि को भी में सहेतक बताता हैं, अहेतक नहीं।

मिशुको ! विज्ञक्ति का हेतु क्या है ? वंशस्य हेतु है—एसा बहुवा चाहिये । मिशुको ! वैरास्य को

भी में सहेतुक बताया हूँ, बहेतुक बही।

मिह्नजा | पेरान्य का हेतु क्या है १ मंसार की हराइयों को देश उससे मय करवा (≖विनिया) हेतु है—पेसा कहना चाहिये । मिहाओ | में इस अब करने को भी सहेतुक बचावा हूँ, जहेतुक वहीं ।

वर्ष व—पूना कर्ना पाविष (अस्ति) अ इस अब करने का ना संवर्ष कराता है, नवर्ष पराः विश्वामी १ इस सब करने का हेत क्या है ? उसका हेतु वावार्यक्रावदर्शन है—ऐसा कर्मा वाहिये।

मिशुओ ! यवार्यदावरर्यंव को भी में सदेतुक बताता हैं, बदेतुक वहीं !

सिद्धना । यवार्यशानदर्शन का हेतु क्या है ! उसका हेनु समाधि है—ऐसा कहवा काहिने ! जिसको ! समाधि को मी में सहेतुक बहाता है बहेतुक नहीं !

भिन्नुभा ' समाधि का हेतुं क्या है ? उसका हेतु सुन्य ई—ऐसा वदका चाहिये । भिन्नुजो ! सुन्य को भी मि सहेतक बसाया हैं कहेतुक बहीं ।

िम्युमो ! सुर्ग का इनु का है ? बगज़ा हेनु शान्ति (≋प्रसम्प) है—मेमा कर्मा काहिने ।

मिश्रुओ ! शान्ति का भी में सहेतुक यतता हूँ अहतुत्र नहीं ।

भिशुना । शास्ति का कृत का है ? उसका कृत शांति है—वैसा बहना चाहिये । सिशुनी ! प्रीति का भी से सदेनुक बताता हूँ, कदेनुक नहीं ।

निमुत्ते ! श्रीति का देव वया है ? वसका देव प्रमोद है—केसा कदना चाहिने ! जिसुने ! श्रमोद को भी में सदेवक बनाता हूँ, जहेवक नहीं !

भित्तुको । प्रमीत का क्षेत्र करा है ? उसका हेतु अका है—स्था कहना चाहित । मित्तुको । कदा को भी में सहेतुक कराता हैं, क्षेत्रक कहीं।

धितुम्मी । अद्या का हेतु चया दे १ तमका हेनु युक्त है--वेमा वहना चाटिये । सितुमो । दुग्य को भी में गरेपुक समामा हूँ, सरेपुक मही । आनन्द । एक ओर बेठने पर अन्य तिथिक परिवालको ने मुलसे पूछा . . . । ••• वही प्रश्लोत्तर जो आयुष्मान् मारिपुत्र के माथ का गया हैं।

भन्ते. साध्ययं हे । अप्रभुत है ॥ कि एक ही पद से सारा अर्थ कह दिया गया । भन्ते । यदि यहीं अर्थ विम्नार से कहा जाना तो पदा गर्सीर होता, देखने में अध्यन्त गहरा माल्म पटता ।

तो, आनन्द ! नुस हमें कारो।

ग

भन्ते ! यदि मुक्कमे कोई प्रे-आयुम आनन्द ! जरामरण का निटान क्या है, यमुटय क्या है, उत्पत्ति क्या है, उद्गम क्या है ?—तो में ऐसा उत्तर हैं —आधुम । जरामरण का निदान जाति हैं, ममुदय जाति है, उत्पत्ति जाति है, उद्गम जाति है। भन्ते। ऐसे पुछे जाने से में ऐसा ही उत्तर दें।

* ' जाति का निदान भव है '।

• सब का निदान उपादान हैं • । उपादान का निदान नृत्या है ।। तृणा का निदान वेदना है * 'वेदना का निटान स्पर्श है ।

भन्ते । यदि मुज में कोई पूछे-आयुम आनन्द । स्पर्श का निवान क्या ह '?-तो में ऐसा उत्तर हुँ—आयुम । म्पर्ग का निवान पढ़ायतन हे । आयुम । इन्हीं छ स्पर्शायतनी के दिल्कुछ स्क जाने से स्पर्श का होना रक जाता है। स्पर्श के एक जाने से वेटना नहीं होती। वेटना के हक जाने से तृष्णा नहीं होती। तृष्णा के रक्त जाने से उपादान नहीं होता। उपादान के रक्त जाने से भव नहीं होता। भव के कक जाने में जाति नहीं होती। जाति के रक जाने से जरा, मरण, शोक, रोना-पीटना, दु स, वेचैनी, परेशानी सभी कक जाने हैं। इस तरह, सारा दु ख-समृह कक जाता है। भन्ते। ऐसे पूछे जाने से में ऐसा ही उत्तर दें।

§ ५. भृमिज सुत्त (१२ ३ ५)

मुख-दु ख सहेतुक है

श्रावस्ती मे ।

雨

तव, आयुप्मान् भूमिज सध्या समय ध्यान से उठ, जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र थे वहाँ गये, और 'कुशलक्षेम के प्रवन पूछकर एक ओर बैठ गये।

एक और बैंट, आयुप्मान भूमिज आयुप्मान् सारिपुत्र से बीले-आवुम सारिपुत्र ! कुछ श्रमण और बाह्मण कर्मवादी हैं जो सुख-दु ख को अपना म्वय किया हुआ मानते हैं। को दूसरे का किया हुआ मानते हैं। " जो सुख-दु ख को अपना म्वय किया हुआ और दूसरे का किया जो सुख-दु ख को अकारण हठात् उत्पन्न हो गया मानते हैं।

आवुस मारिपुत्र-। इस विषय में भगवान का क्या कहना है ? क्या कह कर हम भगवान के मिद्धान्त को यथार्थत वता सकते हैं, जिससे हम भगवान् के सिद्धान्त में कुछ उलटा-पुलटा न कर दें, उनके धर्म के अनुकूल कहें, और, जिसके कहने से कोई सहधार्मिक वातचीत में निन्ध-स्थान को न प्राप्त हो जाय।

भारतुस सारितृत्र ! जीर पुस भी कितने क्षमण और प्राह्मण कर्मवादी है जो शुल्य को न अपना

न्यं किया हुणा आर म दूसरों का किया हुणा किया जकाता हो गया बवाले हैं। सादुस सारिपुत्र ! इस विश्व में अमण गांतम का क्या कहना है ? क्या कह कर हम अमण गीतम के भिद्रान्त को पंधार्यतः वता सकते हैं। जिससे अभन-गीतम के सिद्धान्त में इस उक्तर-पुरूष म कर हैं। इसके धर्म के असक्छ कहें। और जिसके कहने से काई सहधासिक तिल्य-स्वात की न प्राप्त हो काव।

भावुस ! भगवान ने तु ख को प्रतीरपसमुख्य वतकाया हं। किसके प्रत्यप स (≔होनं से) ! स्पर्स के प्रत्यय सं । पुंसा ही कह कर आप अगवान के सिदान्त को यवार्यतः वता सकते हैं किससे भगवास के सिजान्त स नाप उछरा-पुछरा न कर हैं। उनके धर्म के अनुकृत कहें

भारत ! जो कर्मवादी असन या बाह्मन हु:क को जपना स्वयं किया हुना बठाते हैं वह सी स्पर्स के प्रत्य ही सं होता है। को कर्मवादी असन था आहम दु स को नपता न्वयं किया हुआ और दसरे का भी किया इका बताते हैं वह भी स्पर्स के प्रत्यथ ही स हाता ह । को कर्मबारी असन या माद्याज दक्ष्य को न अपना स्वयं किया इक्षा धाँर न नुसरे का किया इक्षा किन्तु कजारण इठाव हो गया अनकाले हैं बद भी स्पर्स के प्रत्यय ही से होता है।

आहम ! सो कर्मनात्री असल या जाहरण नारा को संपना नार्य किया हुआ बताते हैं वे विद्या स्वर्त के ही कुछ अनुसब कर हैं—यंसा सम्मव वहीं। । को असक वा बाह्मण दृश्य को सकारम हरात हो गया बताते हैं में भी विमा स्पर्ध के ही कुछ अनुसब कर कें-देसा सम्सब गर्ही !

Ħ

बायपान बातरत ने संस्थ तैक्षिक परिवादकों के साथ बायपान, सारियम को क्या-संवाप करते सना ।

तम भाषुप्पान् सानुस्त निशारव सं कार जोजब कर संवे पर बहाँ मगवान् ये बहाँ गये और भगवान का अभिवादन करके एक ओर बैढ गये। एक और बैढ ब्यायप्यान आतस्य में भगवान की मन्द देविक परिमायकों के साथ जानुष्मान साविषुत्र का वी कुछ कवा-संसाप क्रमा वा बसे न्यें की

त्यों कह संबंदा ।

र्श्व है सातस्य ! सारियव में शेक ही समझाया है। मैंने हुवा की अतीत्यसमुख्या (वेंग्र के हाने स उत्पन्न होनेवांका) बठावा है । किसक प्रशीख स (≔होने से) १ व्यर्क के प्रत्यव से । पैसा ही करकर कोई भी मरे दपदेश की प्रधार्यतः वता सकता है ऐसा करवेदाका मरे सिकान्य में कुछ बकरा प्रकरा नहीं करता है । पैसा बढ़नेशक। बोर्ड सहधारिक बलचीत में निन्ध-स्थाय को नहीं प्राप्त करता है । भागम्य को वर्मनानी असम या माझल कुल्य को बताते हैं वह सी स्पर्ध मान्यम

द्वी से काता है।

भारतस्य ! जो कर्मवाती क्रमण वा माद्याच बाल्य का वतात है व विना स्पर्ध के ही क्रम सनुसर कर के पैपा सम्भव नहीं ।

भागन्त ! एक समय में इसी राजगृह के शरायन कव्यम्बनिवाप में विद्वार कर रहा थी। भानगर ! यब में सुपद में पहन और पात्रचीवर के शिक्षारण के किए राज्यश्व में पैदा । आनगर ! वर्ष मेरे मन में वह हुना-अमी राजगृह में भिक्तारव करन के लिय क्या सवेरा है। ता में बड़ों जन्म रीपिक परिपायकों का जाराम है वहाँ करों।

भागन्द ! तब मैं जहाँ अन्य सैभिक परिवाजकों का आराम था वहाँ शवा आर क्षत्रका सम्मोदन किया। तथा कुशल क्षेत्र के प्रश्न चारते के बात एक क्षोर केंद्र शया ।

भानन्द । एक ओर बैठने पर भन्य तैर्थिक परिवालको ने मुझसे पूछा।

• [वही प्रश्नोत्तर जो भायुष्मान् सारिपुत्र के साथ कहा गया है ।]

भन्ते, आश्चर्य है। अद्भुत है। कि एक ही पद से सारा अर्थ कह दिया गया। भन्ते। यदि यही अर्थ विस्तार से कहा जाता तो बढ़ा गम्भीर होता, देखने में अत्यन्त गहरा माल्यम पडता।

तो, आनन्द ! तुम इसे कहीं।

ग

भन्ते ! यदि मुझमें कोई प्छे—आवुम आनन्द ! जरामरण का निदान क्या है, समुदय क्या है, उत्पत्ति क्या है, उदम क्या है ?—तो में ऐसा उत्तर हूँ —आवुम ! जरामरण का निदान जाति है, समुदय जाति है, उत्पत्ति जाति है, उदम जाति है। भन्ते ! ऐसे पूछे जाने से में ऐसा ही उत्तर हूँ।

- · 'जाति का निदान भव हैं''।
 - भव का निदान उपादान है ।
 - ' उपाडान का निडान नुरुणा है ''। तथ्या का निडान चेडना है ।
- वेदना का निटान स्पर्श है ।

भन्ते । यदि मुझ से कोई पूछे—आबुस आनन्द । स्पर्श का निदान क्या हं "?—तो में ऐसा उत्तर दूँ—आबुम । स्पर्श का निदान पड़ायतन है । आबुम । इन्हीं छ म्पर्शायतनों के दिल्कुल सक जाने से स्पर्श का होना एक जाता हैं। स्पर्श के रक जाने से वेदना नहीं होती। वेदना के रक जाने से तृष्णा नहीं होती। तृष्णा के रक जाने से उपादान नहीं होता। उपादान के रक जाने से भव नहीं होता। भव के रक जाने से जाति नहीं होती। जाति के रक जाने से जरा, मरण, शोक, रोना-पीटना, दुख, वेचैनी, परेशानी सभी रक जाते हैं। इस तरह, सारा दुख-समृह रक जाता है। भन्ते। ऐसे पूछे जाने से में ऐसा ही उत्तर दूँ।

§ ५. भूमिज सुत्त (१२ ३ ५)

सुख-दु.ख सहेतुक है

श्रावस्ती में।

事

तव, आयुप्मान् भूमिज सध्या समय ध्यान से ठठ, जहाँ आयुप्मान् सारिपुत्र थे वहाँ गये, और 'कुशलक्षेम के प्रक्र पुरुकर एक ओर बैठ गये।

एक और वैंट, आयुष्मान मूमिज आयुष्मान् सारिपुत्र से बोले---आवुम सारिपुत्र ! कुछ श्रमण और बाह्मण कर्मवादी है जो सुख-दु ख को अपना म्वय किया हुआ मानते हैं। 'जो सुख-दु ख को अपना म्वय किया हुआ भानते हैं। 'जो सुख-दु ख को अपना म्वय किया हुआ और दसरे का किया हुआ मानते हैं। 'जो सुख-दु ख को अकारण हठान् उत्पन्न हो गया मानते हैं।

आबुस सारिपुत्र इस विषय में भगवान् का क्या कहना है ? क्या कह कर हम भगवान् के सिद्धान्त को यथार्थत बता सकते हैं, जिससे हम भगवान् के सिद्धान्त में कुछ उलटा-पुलटा न कर हैं, उनके वर्म के अनुकृल कहें, और, जिसके कहने से कोई सहधार्मिक वातचीत में निन्ध-स्थान को न प्राप्त हो जाय।

साकृत ! मगकान् ने सुन्त-तुरार को प्रतीत्वसमुख्य बताबा है । किसके प्रतीत्व से है स्पर्श के प्रतीत्व से | पूसा हो कहने बाका मगबान के सिकान्त को प्रमार्थतः बताता है ।

भावुस | जो कर्मवादी समन या माझक भुष्य-पुच्च को "सकारन दराण्डल सही गया मानते हैं वह भी स्वर्ण के होते ही से बोला है।

वे विका स्पर्ध के ही क्षप्त कम्मव कर सें-मेमा सम्मव नहीं ।

ख

धातुष्मान् श्रातन्त् वे बायुष्मान् भूमिज के साव श्रातुष्माव् झारिपुण के कवासंकाप को तुना । तव जायुष्मान् धानाव् बहाँ भगवान् ये वहाँ गये और भगवान् का अभिवादव करके एक और वैट गये । एक और वैट श्रातुष्मान् सावन्त्र ने भगवान् का धातुष्मान् भूमिज क माथ धातुष्माव् सारि प्रज का वा कथासंकार इक्षा था सभी त्यों का त्यों कह सुनाथा ।

टीक ई आहर्तन् ! मारिपुत्र ने वहा क्षेत्र समझ्या ! आहरून् ! मेने सुल-हु-क को नदीरमसु एक बतावा ई ! क्रिमक प्रदीरव स ? रचर्त के प्रमीरव से । ज्या कहने बास्स मेरे सिद्धान्त को प्रमाप्त। धनाता ई !

नगागा व सानन्दृ! सा कर्मचारी असय या प्राक्षण सुल्क्युप्य की अकारण क्रवार् क्यक हा गया सानते हैं वह भी स्थर्ग के होने ही स कृत्या है |

वं विना स्पर्धे क ही बुद्ध अनुसंध कर में गैमा सम्मध वहीं।

जानन्त्र ! सर्तर म बाई क्यों कांच घर क्यों की चेतना (क्यां!!) के बतु स खरने में सुन्त-तुरक बायस होता ह | भातन्त्र ! कोई बचन बोक्षन पर बार चेतना के बेतु स करने में सुन्य-तुरक्ष उत्पन्न होता है ! भागन्य ! मन स सुष्ठ विवर्त कांच पर सनाचतना के देश मा करने में सुन्य-तुरक्ष उत्पन्न होता है !

भागन्त् ! चाह भविष्या के कारण जो ज्वरं वावशत्त्राह इउद्दा करता है उसके प्राप्त से उसे भवन में सुरा-पुष्टा वस्प्रव होता है। जानन्त्र ! चाह जो हुंगरे वी वावसंस्कार इक्द्रा करते हैं उसके प्राप्त स सी उस क्षण में सुरा तुत्र उस्प्रव हाता है। आगन्त् ! चाह चाव वहरू का कावसंस्कार इच्छा करता है उसके प्राप्त कर का जाने में सुरा-पुष्टा उस्प्रव होता है। आजन्त् ! चाह विशा असे वृत्र जा वावसंस्वार इच्छा वरता है उसके प्राप्त का उसे अपने में सुन्य दुष्टा वर्ष्य होता है।

भागनर ! चार व्यर्थ को बारमंत्रकर इवड्डा करना है । उसके प्रत्यक्ष सं उस अपने से सुरस्युत्य उनाव रागा है !

भावनम् १ चाद न्वर्ष क्री श्रवासंस्कारः ।

भागर ! इस छ। यसी में अधिया सभी हुई है। विकास के विश्वन दर और एक उसने से बह कर्म नहीं होता है जिसमें उस मुल-पुत्त रुक्त हों। वह बचन वह सब के दिताई नहीं दोने हैं जिसमें उसे मुल-पुत्त रुक्त हों।

उमें यह क्षत्र ही यही रहता है आयाद ही नहीं दश्ता है आयमन नहीं रहता हेनु नहीं रहता। क्रियके अनवस उसे अपने में सुन-दुल्य उसका हों।

६६ उपयान मुन्न (१२ ६ ६) युग्ग समुख्या है

धापानी में ।

त्रव आपुन्माय रायम् अधि समयाव थे वहाँ आर्थ और अमयाव का अभिनादन करके कर और कैर समें १ कर और कैर आयुक्ताय रहतान समयाव से वाले- भन्ते ! कितने श्रमण या बाह्मण है जो दु.ख को स्वय अपना किया हुआ वताते हैं। " दूसरे का किया । स्वय अपना किया हुआ भी और दूसरे का किया भी ""। "न स्वय अपना किया हुआ ओर न दूसरे का किया हुआ, कितु अकारण हठात् उत्पन्न "।

भनते । इस विषय में भगवान् का क्या कहना है ?

उपवान ! मैंने दु ख को प्रतीत्यसमुत्वन्न वताया है । किसके प्रत्ययसे ? स्पर्शिके प्रत्ययसे ।""
उपवान ! जो दु ख को" अकारण हठात् उत्पन्न हुआ मानते हैं, वह भी स्पर्श के होने से ही
होता है ।

उपवान ! " वे विना स्पर्श के ही कुछ अनुभव कर लें--ऐमा सम्भव नही।

§ ७. पच्य सुत्त (१२. ३ ७)

कार्य-कारणका सिद्धान्त

थावस्ती में।

भिक्षुओं ! अविद्याके होनेने सस्कार होते हैं । " । इस तरह, मारा दु ख-समृह उठ खड़ा होता हैं। भिक्षुओं ! जरामरण क्या है ? जो उन उन जीवोंके उन उन योनियोंमें बूढ़ा हो जाना, पुरनिया हो जाना, दांतोंका हूट जाना, वाल सफेट हो जाना, झिरेयों पढ़ जानी, उमरका खातमा और इन्द्रियोंका शिथिल हो जाना, इसीको कहते हैं जरा । जो उन उन जीवोंके उन उन योनियोंने सिसक पड़ना, टपक पड़ना, कट जाना, अन्तर्वान हो जाना, मृत्यु, मरण, कज़ा कर जाना, स्टन्धोंका छिन्न भिन्न हो जाना, चोलाको छोड देना है । इसी को कहते हैं मरण । ऐसी यह जरा और ऐसा यह मरण । भिक्षुओं ! इसीको कहते हैं जरामरण ।

जाति के समुदयसे जरामरणका समुदय होता है। जातिके निरोधसे जरामरणका निरोध होता है। यही आर्य-अष्टाङ्गिक-मार्ग जरामरणके निरोधका उपाय है। आर्य-अष्टाङ्गिक मार्ग हैं—-(१) सम्यक् दृष्टि, (२) सम्यक् सकट्व, (३) सम्यक् वाक्, (४) सम्यक् कर्मान्त, (५) सम्यक् आजीव, (६) सम्यक् व्यायाम, (७) सम्यक् स्मृति, (८) सम्यक् समाधि।

भिक्षुओ ! जाति, भव, उपादान, तृष्णा, बेटना, स्पर्श, पड़ायत्तन, नामरूप, विज्ञान, सस्कार क्या है ? [देखो—पहला भाग § २ (२)]

अविद्या के समुदय से सस्कार का समुदय होता है। अविद्या के निरोध से सस्कार का निरोध होता है। यही आर्य-अष्टागिक-मार्ग सस्कार के निरोध करने का उपाय है।

भिक्षुओ ! जो आर्यश्रावक इस प्रत्यय को जानता है, प्रत्यय के समुद्रय को जानता है, प्रत्यय के निरोध को जानता है, प्रत्यय की निरोधगामिनी प्रतिपदा को जानता है—वहीं आर्य-श्रावक दृष्टिसम्पन्न कहा जाता है, दर्शनसम्पन्न भी, सन्दर्म को प्राप्त भी, सन्दर्म को देखने वाला भी, शेंक्य-जान से युक्त भी, शेंक्य-विद्या से युक्त भी, धर्म के स्रोत में आ गया भी, निर्वेधिकप्रज्ञ भी, अमृत के द्वार पर पहुँच कर खडा हुआ भी।

§ ८. भिक्खु सुत्त (१२. ३. ८)

कार्य-कारणका सिद्धान्त

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ । यहाँ, भिक्षु बरामरण को जानता है। जरामरण के समुदय को जानता है, जरामरण के निरोध की जानता है। जरामरण की निरोध-गामिनी-प्रतिपदा को जानता है।

सर्ति को बानता है । सब को व्यमता ह । उपादान को बानता हं "'(नृष्णा को बानता है । वेदमा को बानता है । स्पाँको व्यसता है । पदावतन को बानता है । नामक्य को बानता है । विद्याल को व्यमता है । संस्कार को बानता है"।

मिश्रुजी ! जरामरण थ्या है ! [अपर के स्त्र प्सा]

8 ९ पटम समणमामण सत्त (१२ ३ ९)

परमार्थकाता भ्रमण-भ्राह्मण

भावस्ति में ।

更

सिन्नुओं ! को असल वा बाह्य करासरण कारित सब उपाहान गुका देहना सर्वो पहाबतन आसरूप विज्ञान संस्कार को नहीं बानते हैं संस्कार के समुद्रक को नहीं बानते हैं संस्कार के निर्देश को नहीं बानते हैं संस्कार को निरोधनामिन्नी महिष्दा को नहीं बानते हैं—उन असलों की न हो असलों में निननी होती हैं की तन बाह्यलों का बाह्यों में ! वे स्वाप्तान हुनी समा में असल का बाह्यल के परसार्थ को कर्य बान माझान कर और प्रस्त कर विकार नहीं करते |

सिनुनी | वा असम वा बाह्य कामरण संस्कार की निरोधनामिनी प्रतिपदाको सामने है—नृत्वी अमधीकी अमलीम निनती हाती है आर माहणांची बाह्योमें | वे बाहुप्तादृष्टी बनमें समय या प्रायणके पामार्थको स्वर्थ आव साधाल कर कीर ताल कर विराह करते हैं ।

६ /० दृतिय समणना**द्यण** सुत्त (१ ३ १०)

नेस्कार-पारंशन श्रमण वाह्यण

भाषसी में ।

निशुक्षी । वा असव वा ब्राह्मण जरामरच वानि संस्थरको नहीं कानते हैं 'समुद्दर को नहीं जानते हैं निशेषको नहीं अनते हैं 'विहायगामिनी प्रतिपदाको नहीं जानते हैं—वे ब्राह्मण संस्थानिक पानक हैंगा देशा सम्भव नहीं ।

मिसुन्नी | नो ध्रमण या बाह्मण करामरण सम्मारण जानने हैं 'समुद्दको समत हैं विरोधक सामने हैं निराधनामिनी प्रतिपत्तको ज्ञानते हैं—ने जरामरण प्रत्कारीको पार कर हैंगे —रोमा हो सक्तर है।

दशबम यग समाम

चौथा भाग

कलार क्षत्रिय वर्ग

६१. भृतमिडं सुत्त (१२ ४ १)

यथार्थ ज्ञान

णुंसा मेने सुना । एड समय भगवान श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेतवन आराममें विहार करते थे।

क

यहाँ, भगवानने आयुष्मान सारिपुत्र कां आमन्त्रित किया—मारिपुत्र । अजित के प्रश्न पूछनेमें यह कहा गया थार

जिन्होंने धर्म जान लिया है, जो इस शासन में सीयने योग्य है, उनके ज्ञान और आचार कहें, है मारिप ! में प्छता हूँ ॥ सारिपुत ! इस सक्षेप से कहें गये का कैसे विस्तार से अर्थ समझना चाहिये ? इस पर आयुष्मान सारिपुत्र चुप रहें । दूसरी धार भी । तीयरी बार भी आयुष्मान सारिपुत्र चुप रहें ।

ख

सारिपुत्र ! यह हो गया, तुम देखों। सारिपुत्र ! यह बीत गया, तुम देखों।
भन्ते ! यह हो गया, इसे यथार्थत सम्यक् प्रज्ञा में देखता ह । यह हो गया—इसे यथार्थत
सम्यक् प्रज्ञा से देखकर, उसके निर्वेद = विराग = निरोध के लिये यववान् होता है। उसे आहार के
हेतु में होते सम्यक् प्रज्ञा में देखता है। इसे आहार के हेतु से होते सम्यक् प्रज्ञा से यथार्थत देख, आहार
के सम्भव के निर्वेद = विराग = निरोध के लिये यववान् होता है। उसके आहार के निरोध से जो हो
गया है उसका भी निरोध होना यथार्थत सम्यक् प्रज्ञा से जान निरोध धर्म के निर्वेद = विराग =
निरोध = अनुपादान से विमुक्त हो जाता है। भन्ते ! धर्म इसी तरह जाना जाता है।

भन्ते ! अजित के प्रश्न प्छने में जो यह कहा गया था— जिन्होंने धर्म ॥ उस मक्षेप से कहे गये का मैं एसे ही विस्तार से अर्थ समझता हूँ।

ग

ठीक है, सारिपुत्र, ठीक हैं !' ि निवेंदु=विराग=निरोध=अनुपादान से निमुक्त हो जाता है । -[उपर जो कहा गया है उसी की पुनरिक्त]

[12.3 10

संयत्त-निकाय

बाति को जानता है। मध की जानता ह "उपादान को जानता है"। तृष्या की बानता | बेहबा की बानता है | स्पर्श की बानता है | पदायतन को बानता है ! नासकप को बानता है। विभाग की बातता है। श्रीन्द्रश की बातता है।

सिममी ! बरामरच क्या है १ विचर व सब पेमा]

८९ परम समग्रहाद्यांण सच्च (१० ३ ९)

वरमार्थेशता धमण-बाह्यव

भावसी में।

क

मिल्ली को समज या जाकाण करामरण आदि सब उपादामा गुज्य बेदना पहाचतन नामक्य विज्ञान सन्कार को पहीं जानते हैं संस्कार के समृद्य को नहीं बानत हैं संस्कार के निराय को नहीं बानत है संस्कार की निरोधगामिनी प्रतिपदा को नहीं बानते है—दन असमें की न तो असमें में रिक्ती होती है और व बाहाओं की बाहामों में । वे बाहापान इसी करम में ब्रमल वा प्राव्यत्र के परमार्थ को स्वयं बान साक्षात कर और ग्राम कर विदार नहीं करते ।

विभागों । जा अग्रज या आक्रम करामरण "संस्कार "की विशेषसामित्री प्रतिपताको बागरे है—इन्हीं समर्थों है। अमर्थों में विनती हाती है और माझनोंकी माझवाँमें ! वे आवत्मान हमी बन्ममें धमान या बाझानके परमार्थको स्थर्प धान साक्षात कर और प्राप्त कर विद्यार करते हैं।

संस्कार-पारंचन भ्रमण प्राच्छक

धायकी में।

भिम्नभा । का धमण या बाह्यण बरामरण व्यति संस्कारको नहीं सानते हैं 'समुद् को नहीं जानते हैं निरायको नहीं आनते हैं 'निरोधगामिनी प्रतिपदाको नहीं जानते हैं- वे जरामरथ संस्थारों ही पारकर लेंगे ऐसा सहजब नहीं ।

मिश्रणी ! वा समन या प्राञ्चन बरामरण नीन्द्रारका जानने हैं समुद्दको धानत है निरोधको जानमें हैं निरोक्तग्रामिकी प्रतिपदाको जानते हैं-के बरामरक अंस्कारीको पार कर केंगे ---रेमा को सकता है।

दशक्स यग समाप्त

मेने जान लिया कि--जाति क्षीण हो गई, प्रहाचर्य पूरा हो गया, जो करना था सो कर लिया, अब और कुछ बाकी नहीं बचा ।

सारिपुत्र । यदि तुमसे कोई ऐसा पूछे--आवुम सारिपुत्र ! जातिका क्यां निदान है,=क्या उत्तरि है,=क्या प्रभव है ?—तो तुम क्या उत्तर दोगे ?

भन्ते । यदि तुझे कोई ऐसा पूछे तो में यह उत्तर दृ —आवुस । जातिका निदान भव है ।

•••भवका निदान उपादान है।

* * 'उपादानका निदान मुख्या है।

तुरणाका निदान वेदना है।

सारिपुत्र ! यदि तुमसे कोई ऐसा पृष्ठे—अ। यस सारिपुत्र ! क्या जान और देख छेने से आपको किसी चेदनाके प्रति आसिक नहीं होती है ?—तो तुम क्या उत्तर दोगे ?

भन्ते ! यदि मुझे कोई ऐसा पूछे तो में यह उत्तर हूँ—आयुस ! वेटनायें तीन है। कान सी तीन ? (१) सुखा वेटना, (२) हु ता वेदना, (३) अहु ख-सुखा वेदना । आवुस ! यह तीनो वेटनायें अनित्य है। "जो अनित्य है वह दु स है" जान, किसी वेदना के प्रति मुझे आसिक्त नहीं होती है।

ठीर कहा है, सारिपुत्र, ठीक कहा है। इसे सक्षेप में यो भी कहा जा सकता है—जितने अनुभव (=वेदना) है, सभी हु स ही है।

सारिपुत्र ! यदि तुम से कोई पूछे-किस विमोक्ष के आधार पर आपने दूसरों की कहा कि जाति क्षीण हो गई , ऐसा मैने जान लिया ?—तो तुम क्या उत्तर दोगे ?

भन्ते ! यदि मुझे कोई ऐसा पूछे तो में यह उत्तर दूँ—आबुस ! भीतर की गाँठों से में छूट गया, सारे उपाटान क्षीण हो गये, मैं ऐसा स्मृतिमान् होकर विहार करता हूँ कि आश्रव आने नहीं पाते 'और अपना भी निरादर नहीं होता ।

ठीक कहा है, सारिपुत्र, ठीक कहा है ! इसे सक्षेप में यों भी कहा जा सकता है—अमणो ने जिन आश्रवों का निर्देश किया है उनमें मुझे सटेह बना नहीं है, वे मेरे में प्रहीण ही चुके, मुझे विचिकित्सा भी नहीं रही ।

यह कह, भगवान् आसन से उठ विहार में पैठ गये।

ग

भगवान् के जाने के वाद ही आयुष्मान् सारिपुत्र ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया-

आवुमो ! भगवान् ने जो मुझे पहला प्रश्न पूछा था वह मुझे विदित नहीं था, इसीलिये कुछ द्रीयिल्य हुआ। जब भगवान् ने मेरे पहले प्रश्न का अनुमोदन कर दिया, तब मेरे मन में हुआ—

यदि भगवान् मुझे भिन्न-भिन्न शब्दों में भिन्न-भिन्न प्रकार में दिन भर इसी विषय में पूछते रहें हों में दिन भर भिन्न-भिन्न शब्दों में भिन्न-भिन्न प्रकार से उन्हें सतोपननक उत्तर देता रहूँ।

यदि भगवान्" रातमर, रात दिन, दो रात दिन, तीन, चार, पाँच, छ, सात रात दिन इसी विषयमें पूछते रहें तो में "उत्तर देता रहूँ।

घ

तव, भिक्षु फलारक्षत्रिय आसनसे उठ, जहाँ भगवान् थे वहाँ गया, और भगवान्का अभि-वादन कर एक एक ओर बैठ गया।

§२ कलार **सुच** (१२ ४ २)

प्रतीरय समुस्पाद सारिपुत्र का सिहनाद

धायस्ती में।

क

तव भिन्नु कछारक्षत्रिय वहाँ आयुष्मात सारिपुक्ष ये वहाँ आया । आकर अयुष्मात सारि पुत्र का सम्मोदन किया, तथा कुशल-क्षेत्र के यहन पूछ कर एक और बैठ गया ।

पुढ और बैठ मिश्च कुरु।रहात्रिय अञ्चयान सारिएक से बोडा--

भादुम सारिप्रव ! सिखु मोस्थियकरमुत चीवर कोड् गृहस्य हो शवार्ड ! इस अध्युष्मार् हे इस अमेरिक्य में स्थासन नहीं तावा !

क्या नाप भावुप्तान् सारिपुत्र नं इस धर्मविश्य में धावासन् पाना है।

भावत ! इसमें मुझे कुछ संदंध नहीं है।

आबुस ! मदिव्यकार में ।

मानुस ! इसकी सुझ विविक्तिता नहीं है !

तर, निशुक्त सारक्ष जिल्ला भारत से उट व्यक्ती भगवान् च वहीं गया और ध्यावान् का असि-वारत कर एक भीर केट गया।

एक बीर मेंड निद्ध कंट्यारहांकिय भगवान् से बोध्य "सन्ते ! स्तारिपुत्र ने जान किना है कि बाति झील हो गई महत्त्वर्ण प्रा हो गया को करना वासो कर किया अब और कुछ बाकी नहीं क्या है—ऐसा में बानता हैं।"

तव भगवान् ने किसी मिछु को मामन्त्रित किया—है सिछु ! सुनो बाका सारिपुत्र को न्हीं

कि तब तुन्द तका स्वे हैं।

नन्ते ! बहुत अच्छा' वह वह मिश्चु नगदान् को उत्तर दे वहाँ बाबुप्तान् सारिप्रत में वहाँ गवा भीर बोधा—साबुद्ध सारिपुत्र ! जाएको हुद्ध हुका रहे हैं ।

"आपुस ! बहुत सप्ता" कह, जातुप्पान् सारिपुत्र वस मिश्रु को उत्तर हे बहाँ सामाद है

बहाँ गर्म धार भगवान् का जीनवान्त्र करके एक कोर बैठ गये ।

स्र

पुत्र भोर क्षेट हुये अधुष्माण् सारिपुत्र को भगवान् वे कहा—सारिपुत्र । क्या गुमने सच्छेण साथकर पुस्त कहा है कि में बालवा हैं कि मारि सील हो गई, बहावर्ष पूरा हो गया १

मन्ते ! मैने इन वार्तत्वा इस तरह नहीं कहा है ।

सारिपुत्र ! किम किसी वरहाई कुकपुत्र वृसरेको कहे विश्व कहा हुआ तो कहा हुआ हो हुआ। मन्ते ! वसी तो में कहता हूँ कि मैंबे इन वार्तोको इस वरह नहीं कहा है ।

मन्ते । वर्षि मुझे कोई ऐसा पुछे ती में यह उत्तर वृँग्न-अनुस ! किस विदान (= हेतु) सं कार्ति होती है जम विदानक सन्य हो आसेसे मेंने काल किया कि उसका भी सुन हो गया। वह सावकर भेने जान लिया वि--जाति ध्रीण हो गई, प्रशास्त्रये प्रशानी गया, जो करना था मी कर लिया, अब और इन्द्र थाकी नहीं यथा ।

सारिषुद्र ! यदि गुममे कोई ऐमा पूरे--शावुत सारिषुत्र ! जानिका पत्रा निजन है,=पता उत्पत्ति हैं,=पत्रा प्रभव हे ?--नो नुम यवा उत्तर दोगे ?

भनों ! यदि मुति फोई ऐसा पुछे तो में यह उत्तर हैं --आमुप ! जातिका निदान भव है ।

** भवका निदान उपायन है।

***डपादानका निदान मुल्ला है।

मृत्याश निजान बेदना है।

सारिष्ठत्र ! यदि तुमसे कोई ऐसा प्रें—अ।युग सारिष्ठग ! क्या ज्ञान वीर देग रेने से आपको किसी चेदनाके प्रति आसिक नर्रा होती है ?—तो तुम क्या उत्तर टागे ?

भन्ते । यदि मुझे कोई ऐसा पूछे तो मैं यह उत्तर दृं—आपुम ! पेडनायें सीन है। कीन सी सीन १ (१) सुगा चेट्या, (२) हुया चेदना, (३) अहु ख सुगा पेटना । आबुम ! यह तीनीं घेदनायें अनित्य है। "जो अनित्य हे यह हुम्य है" जान, किसी चेदना के प्रति मुझे आसिक नहीं होनी है।

ठीक कहा ह, स्वारिपुत्र, ठीक कहा है। इसे सक्षेप में यों भी कहा जा सकता है—जितने अनुभव (=वेदना) है, सभी हुए ही है।

सारिपुत्र ! यदि तुम से कोई पूछे—िकम विमोक्ष के आधार पर आपने दूसरों को कहा कि जाति क्षोण हो गई , ऐसा मैंने जान लिया ?—ता तुम क्या उत्तर दोगे ?

भन्ते ! यदि मुझे कोई ऐसा पूछे तो में यह उत्तर दूँ—आतुम ! भीतर की गाँठों में में छूट गया, मारे उपादान क्षीण हो गये, मैं ऐसा स्मृतिमान् होकर विहार करता है कि आश्रव आने नहीं पाते ओर अपना भी निरादर नहीं होता ।

टीक कहा है, सारिषुत्र, टीक कहा है। इसे सक्षेष में यो भी कहा जा सकता है—श्रमणों ने जिन आश्रमों का निर्देश किया है उनमें मुझे सटेह बना नहीं है, वे मेरे में प्रहीण हो चुके, मुझे विचिकित्सा भी नहीं रही ।

यह कह, भगवान् आसन में उठ विहार में पैठ गये।

ग

भगवान् के जाने के वाद ही भायुष्मान् सारिपुत्र ने भिक्षुओं को भामन्त्रित किया-

आवुमो । भगवान् ने जो मुझे पहला प्रश्न पूछा था वह मुझे विदित नहीं था, इसीलिये कुछ इंथिल्य हुआ। जय भगवान् ने मेरे पहले प्रश्न का अनुमोदन कर दिया, तव मेरे मन में हुआ—

यदि भगवान् मुझे भिन्न-भिन्न शब्दों में भिन्न-भिन्न प्रकार से दिन भर इसी विषय में पूछते रहें सो में दिन भर भिन्न-भिन्न शब्दों में भिन्न-भिन्न प्रकार से उन्हें सतीपजनक उत्तर देता रहूँ।

यदि भगवान् ''रातभर, रात दिन, दो रात दिन, तीन, चार, पाँच, छ , सात 'रात दिन इसी विपयमें पूछते रहें तो मे'''उत्तर देता रहें ।

घ

तय, भिक्षु कलारक्षिय आसनमे उठ, जहाँ भगवान् ये वहाँ गया, और भगवान्का अभि-वादन कर एक एक और बैठ गया। पक्र और केंट कराज्यक्राधिय शिद्ध सगवान्से बोका—मन्ते ! आयुष्मान् सारिपुत्र ने सिंवणव किया है कि आयुक्तो ! विदे अगवान् सात राजवित इसी विषयमें पुक्रते रहें तो में 'वैत्यर वैजा रहें।

है सिझ ! सारिपुचने (प्रतीरम समुत्याव) वर्गको पुरा-पूरा समझ किया है । पदि 🗎 सात रात

दिव भी" 'इसी विषवमें पूछता रहें तो वह" 'बचर देता रहेगा ।

हु**३ पठम आणचरप्र भ्रुत्त (१२ ४ ३)**

श्रामके विषय

आचरनी में ।

सिंह की | मैं कह जालके दिवरोंका उपदेश कर्केंगा | उसे सुनी अध्वती तरह सन कगानी मैं कहता हैं |

"माने ! बहुत ककार" कह सिद्धार्मीनै मनवाक्को उधर दिया।

भगवान् वाके-शिक्षणो ! जानके ४० विषय कीनसे हैं ?

अरामरणका क्राम जरामरणके सञ्जूषका क्राम करामरणके निरोधका क्राप्त करामरणकी विरोध

शामिनी प्रतिपद्म का काम । ५---- कातिकाः ।

6-12 27W

५—१२ सम्।

12-14 अपादान ।

१७--१ तृष्टाः ।

११---१४ वेदवा' ।

१५--१८ स्पर्ध ।

१९-६१ पश्चाचतम् ।

३३-३६ मासस्य ।

म्हण्यस्य सामायस्य । १९७०-४ विकासः ।

७३ संस्कार का ज्ञान ७२ संस्कार के सञ्जवन का जान ७३ संस्कार के निरोध का ज्ञान और ४७ संस्कार की निरोधगार्मिनी प्रतिपदा का ज्ञान ।

सिद्धकी ! यही ४४ शाम के विषय करें बाते हैं ।

मिश्चमी ! बरामरण क्या है ?… [देखी श्रद्धवर्ग पहला माग ह २ (२)]

मिसुधी ! बाधि के समुद्द से करामरंथ का समुद्द दोशा है। बाधि के विरोध से करामरंथ का विरोध होना है। बरामरंथ की विरोधपारियो मधिपदा धर्दी व्यक्तियक सार्थ है को कि (1) सम्बन्ध् परि, (४) सम्बन्ध सक्कर (६) सम्बन्ध बाक (७) सम्बन्ध कर्यान्त (५) सम्बन्ध आधीव (६) सम्बन्ध म्यावाम (७) सम्बन्ध स्थापि (४) सम्बन्ध समाधि !

चिहुनी ! को कार्य जाक इस तरह जरामरण को काल सेता है करामरण के समुदर्व को जान केता है करामरण के लिरोब को बाल सेता है करामरण को निरोधगानियों प्रतिप्रदर्श को जान केता है। वर्षा वनका चर्म-जात है। में इस वर्षों को देख केता है जाव कंता है पहुँच चुक्रता है प्राप्त कर रेता है बमार्थता अवसाहन कर केता है वही कराति क्षिर काराज तो लेतुल प्रदर्भ करता है।

अंतित काक में जिन जनान वा नाहान ने बराधरण की "महाव है करने इसी तरह जाना है बसा

में व्याप्ता हैं।

मिल्म में जी असम का माश्रम जासरण को 'आमेंगे ने इसी ताह आजेंगे ईस्स में कह रहा है । यह बरण्यरा का मान है । मिक्षुओ । जिन आर्य श्रावकों को (१) धर्म का ज्ञान, और (२) परम्परा का ज्ञान परिशुद्ध हो जाता है, वे आर्य श्रावक दृष्टि-सम्पन्न कहे जाते हैं, दर्शन सम्पन्न, धर्म में पहुँचे हुये, धर्मदृष्टा, शैक्ष्य ज्ञान से युक्त, शैक्ष्य विद्या से युक्त, धर्म-स्रोतापन्न, आर्य निर्वेधिकप्रज्ञ, और अमृत के द्वार पर पहुँच कर खड़े होने वाले कहे जाते हैं।

भिक्षुओ । जाति . , भव .., उपादान ु, तृष्णा. ., चेदना .., स्पर्श . , पहायतन .., नाम- रूप..., विज्ञान. , सस्कार . ।

§ ४. दुतिय ञाणवत्थु सुत्त (१२ ४.४)

ज्ञान के विपय

श्रावस्ती में।

भि बुओ । मै ७७ ज्ञान के विषयों का उपदेश करू गा। उसे सुनी "।

भिक्षुओं । ७७ ज्ञान के विषय कौन से हैं ?

- (१) जाति के प्रत्यय से जरामरण होने का ज्ञान, (२) जाति के नहीं होने से जरामरण के नहीं होने का ज्ञान, (३) अतीत काल में भी जाति के प्रत्यय से जरामरण हुआ करता था इसका ज्ञान, (४) अतीत काल में भी जाति के नहीं होने से जरामरण नहीं होता था इसका ज्ञान, ५-६ भविष्य में भी, *** और (७) जिन धर्मों की स्थिति का ज्ञान है वे भी क्षय होने वाले, ब्यय होने वाले, इटने वाले और कि जाने वाले है—इसका ज्ञान।
 - २ भव के प्रत्यय से जाति होने का जान
 - ३. उपादान के प्रस्यय से भव ।
 - ४. तृष्णा के प्रत्यय से उपादान ।
 - ५, वेदना के प्रत्यय से तृष्णा ।
 - ६. स्पर्श के प्रत्यय से वेदना ।
 - ७ पड़ायतन के प्रत्यय से स्पर्श ""।
 - ८ नामरूप के प्रत्यय से पदायतन ।
 - ९ विज्ञान के प्रत्यय से नामकत ।
 - १० संस्कार के प्रत्यय से विज्ञान ।
 - ११ भविद्या के प्रत्यय से संस्कारों के होने का ज्ञान ।।।

भिक्षुनो । यही ७७ ज्ञान के विषय कहे गये हैं।

🞙 ५. पटम अविज्जा पचया सुत्त (१२ ४ ५)

अविद्या ही दुःखां का मूल है

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ ! अविद्या के प्रत्यय (=होने) से सस्कार होते हैं । सस्कारों के प्रत्यय से विज्ञान होता है ...। इस तरह, सारा दु ख-समृह ठठ खड़ा होता है ।

ऐसा कहने पर एक भिक्षु ने भगवान् को यह कहा-

भनते ! जरामरण क्या है, और जरांमरण किसको होता है ?

भगवान् वोले-पे्सा पूछना ही गलत है। भिक्षु ! जो ऐसा कहे कि . "जरामरण क्या है, और जरामरण किसको होता है", अथवा जो ऐसा कहे कि "जरामरण दूसरी ही चीज है, और दूसरे ही को वह करामरण होता इंतो इव दोवाँ का अर्थ एक है, केवल सक्त ही निकारी। मिछु ! को बीव है वहीं सरीर है, वा बीव तूसरा है और सरीर बुसरा—गेमी दृष्टि देखनेशकों का महत्ववंचास सफल नहीं हो सकता है। मिछु ! इव दोनों अनतीं को छोद छुद सच्च से धर्म का उपदेश करते हैं कि जाति की प्रस्था से जरामरण होता है।

मन्ते ! बाति चवा हं और किसकी वाति होती है ?

सरवाक् वोद्ये—पंता पृक्षमा ही गकत है। किसा क्षत कहा गया है] मिसु ! इन दोनों अन्दों को छोद कह सम्प्र से पूर्व का उपवेस करते हैं कि मध के सम्बन्ध ने साति होती है।

उपादान के प्रत्यक से अंध । मृद्ध्या के प्रत्यक से उपादान । बेदवा के प्रत्यक से मृद्ध्या । स्वर्ष के प्रत्यक से वेदना । पहावतान के प्रत्यक से पहावता । 'विद्याक के प्रत्यक से पहावता । 'पिद्याक के प्रत्यक से पहावता । 'पिद्याक के प्रत्यक से पहावता । 'पिद्याक के प्रत्यक से विद्याल ।

मार्था के अर्थना के सर्वात के सर्वात के सर्वात के कि कुछ भी सर्वात की र कम्मी एक्सी है हि—बरासरम नवा है जीर करासरक होता है किसकी। क्षत्रा करासरक बुसरी चीन है जीर किसी कुसरे के करासरक बुसरी चीन है जीर किसी बुसरे के करासरक बुसरी चीन है जीर किसी बुसरे के करासरक बुसरी चीन है जीर करा के किसी कुसरे के करा कि किसी बुसरा है भीर करारे कुसरा—सभी इस चारों है जिस्से को जाती है किस भी जाने कायक नहीं स्टूरों है।

वावि संस्थार समीहर शावी है ।

६६ दतिय अविक्षायस्यासत्त (ौ २४६)

सविचा ही वसीं का सह है

भायस्ती में !

मिश्चर्या । अविधा के प्रत्यय से संस्कार होते हैं। । इस तरह कारा हुन्य-ससूद उठ वड़ा क्षेत्रा है।

भाग द। भिञ्चला | वर्षि कोई पुछे कि बरामाच क्या है और बस्तमस्य होता विद्यस्ता है। प्रयमा यह कि बसामाच बुक मुसरी हो चीज है और किसी तूमरे ही चीज को जरामस्य होता है। यो मिछुणी दोर्मी बा एक ही करों है।

मिश्रुओ ! जो जीन है नही प्रतीर है। जनना बीन तुसरा है जीर नारीर तूसरा-ऐसी मिध्यादहि

होने से ब्रह्मचर्न बास नहीं हो सकता है।

मिश्चणी ! इन दोवों बन्दों की काव शुक्र सध्य से वर्स का उपदेश करते हैं ।

मिशुओ ! वदि कोई वृष्टे कि वाति क्या है ।

भवक्षा है।

चित्राकान क्या है ।

मूच्याक्या 🖁 ।

ल वेदना क्या है । लाध्यार्थ क्या है ।

- पदायतन क्या हे ।
- " नामरूप पया एँ।
- चिलान प्या है ।
- ं सरकार प्या हैं । भिक्षुओं । इन डोनों अन्तों को छोड़ बुद्ध मध्य से धर्म का उपधेश करते हैं, कि, अविद्या के प्रत्यय से सहवार होते हैं ।

मिश्रुको । उसी अविधा के धिर्हर एट और रक लागे से जो एए गद्यदी और उस्टी पस्टी है, कि--जरामरण पया है, और असमरण होता है किसवी, अध्या, जरामरण दसरी चीज है ' --सभी एट जाती है।

जाति "सम्बार" सभी हट जाती हैं।

§ ७. न तुम्ह सुत्त (१२. ४. ७)

शरीर अपना नहीं

धावस्ती में।

भिधुओं ! यह कावा न तुम्हारी अपनी है, और न दूसरे विसी की । भिधुओं ! यह पूर्व कर्मों के फल्क्स्प, चेतना और वेदना से युक्त, प्रथ्यों के होने से उपपन्न हैं।

भिधुषो ! भार्यश्रावक इसे सीरा प्रतीत्वसमुत्वाद वा ही शीन से मनन करता है।

इस तरह, इसके होने से यह होता हैं, इसके उत्पाद से यह उत्पन्न हो जाता है। इसके नहीं होने से यह नहीं होना हैं, इसके निरोध से यह निरद्ध हो जाता है।

> अविद्या के प्रत्यय में सस्वार । उसी अविद्या के विच्कुल एट और रक जाने से ।

§ ८. पटम चेतना सुत्त (१२ ४.८)

चेनना और सकस्य के अभाव में मुक्ति

थावस्ती में।

भिक्षुओ ! जो चेतना करता है, किसी काम को करने का सकरण करता है, किसी काम में छम जाता है, वह विज्ञान की स्थिति बनाये रखने का आलम्धन होता है। विज्ञान के बने रहने से, बढ़ते रहने से, भविष्य में वार-वार जनम लेता है। भिष्य में बार-वार जनम लेने से जरामरण, शोक बना रहता है। इस तरह, मारा दुख-समूह डठ खढ़ा होता है।

भिक्षुओ । जो चेतना नहीं करता है, सक्च्य नहीं करता है, किन्तु काम में लग जाता है, वह भी विज्ञान की स्थिति बनाये रखने का आलम्धन होता है। विज्ञान के बने रहने, बढ़ते रहने से, भविष्य में बार-बार जन्म लेता है। भविष्य में बार बार जन्म लेने से जरामरण शोक बना रहता है। इस तरह, सारा दु ख-समूह उठ खड़ा होता है।

भिक्षुओ ! जो चेतना नहीं करता है, संकल्प नहीं करता है, और न किसी काम में लगता है, वह विज्ञान की स्थिति घनाये रखने का आलम्बन नहीं होता है। विज्ञान के बने नहीं रहने से, बढ़ते नहीं रहने से भविष्य में जार-बार जन्म नहीं लेता है। भविष्य में जन्म नहीं होने से जरामरण, शोक से छूट जाता है। इस तरह, सारा हु ख-समूह हक जाता है।

६९ दृतिय चेतना मुच (१२ ४ ९)

चेतमा भीर संकस्य के भगाय में मुक्ति

धायस्त्री में !

मिशुओं ! ओ चेतना करता है संकरन करता है किसी काम में क्या काता है, यह विज्ञान की व्यक्ति बनाने रखने का आकरणन होता है। आकायन होने से विज्ञान जाता रहता है। विज्ञान के जमे रहते कार वस्ते रहने से बाम-रूप काले रहते हैं।

नाम रूम के होने से पदावतन दोता है। पदावतन के होने से स्वर्ध होता है।' वेदना।

तृष्णा।' 'कपादान । भन । 'साति । अशंगरण ।

भिभुको । को चंठका नहीं करता हं संकटन नहीं करता है किन्तु काम में क्या रहता है वह विज्ञान की निवित्त में बनाने रक्तने का कांकन्यन होता है। कारतन्यन होने से विज्ञान क्या रहता है। विज्ञान के कमे रहने भीर वरते रहने का नाम-कप उतार रहते हैं।

बरामरत' 'सारा दुत्य-समृद्ध उट चन्ना होता है।

भिञ्चभी ! तो चेतना नहीं करता संबच्य नहीं करता और न उसमें क्या रहता है वह विभाग भी स्थिति बनाये रखये का आकारना नहीं होता है। साकस्थन नहीं होने सं विभाग छहारा नहीं पाता। विभाव के सहारा व पाने छे मास क्य नहीं करते।

नाम-क्रम के एक काने से पश्चायतन नहीं होता । इस तरह सारा हु:स-समृह एक बाता है।

हु रै॰ वृतिय चेवना सुच (१२ ४ १०)

बेतना और संकस्य के सभाव में मुक्ति

भावसी में ।

मिछुको । हो चतना करता है अंकस्य करता है किसी काम में करा व्यक्त है वह विद्यान की

निवर्ति थराथे रसमे का ध्यकन्तम होता है। माकन्तम होते से विकास कमा रहता है।

विज्ञात के बसे रहने और वनने ने हुआन (≔नीते) होता है। सुकाय होने से सबिष्य में गठि होती है। सबिष्य में गठि होने से सरमा-सौमा होता है। सरमा-बीजा होने से बाठि बरासरन । इस तरह सारा हु:ब-समृद्ध पढ़ बढ़ा होता है।

निश्चनो । जो चेवाना नहीं करता संकम्प नहीं करता निम्मु किसी काम में कमा रहता है वह भी किञ्चन की स्थिति वताचे एकने का |बाकानन होता है । इस शरद सारा दुन्त-धर्द वर्ड

व्यक्षा शीवा है।

मिश्चमी | मो चेठाना अहीं करता १८७मा वहीं करता काम में नहीं क्या रहता यह विज्ञान की किसी बरावे रखने का मामन्यन नहीं होता है। कामन्यन नहीं होने से विज्ञान करना नहीं रहता है कीर बक्ते मार्ग पाता।

विकास के व कमे रहने और न वक्ते रहने से खुकान (क्लिंट) नहीं होता है। छकान नहीं होने से शर्वकल में गति भी नहीं होती। गति नहीं होने से जीना-सरना नहीं होता। सारा दुष्ण-ससंह एक जाता है।

कखार समिव वर्ग समाप्त !

पाँचवाँ भाग गृहपति वर्ग

§ १. पठम पश्चवेरभय सुत्त (१२. ५. १)

पॉच वैर-भय की शान्ति

थावस्ती मे ।

क

तत्र, अनाथिपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवाद्म कर एक ओर वैठ गया।

एक ओर बैठे हुए अनाथिपिण्डिक मृहपित से भगवान् बोले—गृहपित ! जब आर्य श्रावक के पाँच बेर-भय शान्त हो जाते हैं, चार स्नोतापित के अगों से युक्त हो जाता है, आर्य ज्ञान प्रज्ञा से अच्छी तरह देख और समझ लिया गया होता है, तो वह यदि चाहे तो अपने को ऐसा कह सकता है—मेरा निरय क्षीण हो गया, मेरी तिरश्चीन-योनि क्षीण हो गई, मेरी प्रेत-योनि क्षीण हो गई, मेरा अपाय और हुर्गित में पढ़ना क्षीण हो गया। में स्रोतापन्न हो गया हूँ, में मार्ग से च्युत नहीं हो सकता, परम ज्ञान को प्राप्त कर लेना मेरा निश्चय है।

कीन से पाँच वेर भय-शान्त हो जाते है ?

गृहपति ! जो प्राणी-हिंसा है, प्राणी-हिंसा करने से जो इसी जन्म में, या दूसरे जन्म में भय और वैर बदाता है, चित्त में दुख और दौर्मनस्य भी बदाता है, सो भय और वैर प्राणी-हिंसा से विरत रहने वाले को शान्त हो जाते हैं।

गृहपति । सो भय और वैर चौरी करने से विरत रहने वाले को शान्त हो जाता है।

गृहपति । सो भय और वैर मिथ्याचार , मृपा भाषण , नशीली वस्तुओं के सेवन करने से विस्त रहने वाले को शान्त हो जाता है।

यही पाँच वैर-भय शान्त हो जाते हैं।

ख

किन चार स्रोतापत्ति के अगों से युक्त होता है ?

गृहपति । जो आर्थ-श्रावक वृद्ध के प्रति भच्छ श्रद्धालु होता है—चे भगवान् अर्हत्, सम्यक् सम्बद्ध, विद्याचरण से सम्पन्न, सुगति को पाये, लोकविद्, अनुत्तर, पुरुषों को दमन करने वाले, देवता और मनुष्यों को राह दिखाने वाले भगवान् बुद्ध।

गृहपित ! जो आर्य-श्रावक धर्म के प्रित अचल श्रद्धालु होता है—भगवान् का धर्म स्वाख्यात है, सादृष्टिक है, (=हसी जन्म में फल देने वाला है), लोगों को बुला बुला कर दिखाया जानेवाला है (=एहिपस्सिक), निर्वाण तक ले जाने वाला है, विज्ञों के द्वारा अपने भीतर ही (=प्रस्थारम) अनुभव किया जानेवाला है।

सूचरित ! जो आर्थ-आयक संध के प्रति कचक अज्ञास होता है—आगवान का आवक संध सुमार्ग वर जास्त है सीचे जाता पर जास्त है जान क मार्ग पर आवत है जच्छी तरह स मार्ग पर जास्त है। जो यह पुरशों का चार कोड़ा आठ की, यही आगवात का मार्गक-स्था है। यही आवक-संघ निमंतित करने स्रोध्य है सलकार करने के योग्य हैं जान होने के योग्य है प्रणास करने के योग्य है जोड़ का सनना प्रणास केड़ है।

सम्बर बीकों से पुष्क होता है। सपन्य अधिव असक निर्वोप सुरा हुना विश्वों से प्रसंसित

समाधि क अनुकुछ सीकों स ।

इन चार स्रोतापत्ति के अंगों स बुक्त होता है।

प्रका से सप्ती शरह देवा और बाना इसका आर्य जान क्वा है है

गृहरति ! आर्थ-आवक प्रतिश्वसमुत्याह की ही डीक से आवना करता है । इसके होने से यह होता है इस तरह सारा हुल्ल-समुद्दाय रुक बाला है ।

यही प्रशा से अच्छी तरह देखा भीर जाना हमका भावें शान होता है ।

§ २ द्रतिय पद्मवेरमय सत्त (१२ ५ २)

वाँच हैर प्रथ की शासित

धावसी में।

देव इन्ने मिछु वहाँ भगवान् वे वहाँ । भगवास् वोके— कियर वाकं सब के समाव ही ।

§ ३ दक्स सत्त (१२ ५ ३)

दान और बसका क्य

आवस्ती में ।

मिह्नमी | में हुन्स के समुन्य और कब हो जावे के विवन में वरवेस कर्रमा ! वसे मुक्ते ।

क

विश्वमा । दुःख का शतुवन क्या है ?

चहु और करों के होने से चहु-देखाव पैदा होता है। तोनों का शिकना रपता है। रपत्ते के होने के देखा | [सिमुलो] इसी तरह तुल्ल का कमुप्त होता है।

श्रोत्र भीर राष्ट्री के होने से । आण भीर शन्त्रों के हीने सं " | क्रिक्स और रसों के होने से ी

भावा और रहस्यों इ होने मे- }

मन कार करों के होने से धनोबिकान ऐदा होता है। तीनों का शिक्षका स्वसं है। स्वर्त के होने से बेदना होती है ": शिक्षुओं ! वही दुष्क का समुद्रक है।

स्र

भिभूमो (शुल्प का कथ हो क्रांशा (=त्रश्नेगामः) तथा है १

बहु और करों के दाने से बहु-विशास पैदा होता है। योगों का मिलना स्पर्स है। स्पर्स के दाने से बेदना हानी है। बेदना के हाने से मुलना होता है। उसी तृष्णा को बिल्कुल हटा और रोक देने से उपादान नहीं होता। उपादान के रक जाने से भव नहीं होता। '। इस तरह, सारा दुःप-समूह रुक जाता है।

भिक्षुओ । यही दु ख का लय हो जाना है।

श्रोत्र और शब्द ' मन और धर्मों के होने में '। इस तरह, सारा दु ख-समृह एक जाता है। '

s ४. लोक सुत्त (१२. ५ ४)

लोक की उत्पत्ति और लय

श्रावस्ती में।

भिक्षुओं। लोक के समुदय भोर लय हो जाने के विषय में उपदेश करूँगा। "

क

भिक्षुओ ! लोक का समुद्य क्या है ? चक्षु और रूपों के होने से [पूर्ववत्] भिक्षुओ ! यही लोक का समुद्य हैं।

ख

भिक्षुओ । यही लोक का लय हो जाना है।

§ ५. ञातिका सुत्त (१२. ५. ५)

कार्य-कारण का सिद्धान्त

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् अतिक में शिञ्जकावस्थ में विहार कर रहे थे।

क

तव, एकान्त से ध्यान करते हुये भगवान् ने इस प्रकार धर्म का उपदेश दिया-

चक्षु और रूपों के होने से चक्षुविज्ञान पैदा होता है। तीनो का मिलना स्पर्श है। स्पर्श के होने से वेदना होती है। वेदना के होने से तृष्णा होती हैं। इस तरह सारा दु ख-समूह उठ खदा होता है।

श्रोप्र भीर शब्दों के होने से", मन और धर्मी के होने से ।

चक्षु और रूपों के होने से चक्षुविज्ञान पैदा होता है। तीनों का मिलना स्पर्श है। स्पर्श के होने से वेदना होती है। वेदना के होने से तृष्णा होती है।

उसी तृष्णा के बिल्कुल हट और रक जाने से उपादान नहीं होता। उपादान के रक जाने से भव नहीं होता। ' इस तरह सारा दु ख-समूह रुक जाता है |

श्रोत्र और शब्दों के होने से , भव और धर्मी के होने से ।

ख

उस समय कोई भिक्षु भगवान् के पास खद्दा होकर सुन रहा था। २९ मनवान् ने कसे पास में सदा हो सुनते देगा। देग्रकर उस शिक्षुको कहा—सिक्षु तुमने मुना जिम प्रकार सैने पस का कहा !

मन्त्री औं हों।

मिशु ! इसी प्रकार प्रम का सीलो । मिशु ! इसी प्रकार धर्म को बूस कहो । सिशु ! इसी प्रकार पढ प्रम कर्पवान हाना है । प्रक्रवर्ध-बास का यह सुरू-उपरेश है ।

ई ६ अस्त्रतर सुच (१२ ५ ६)

मध्यम माग का उपरेश

धापनी हैं !

त्तव कोई माझल कहाँ भगवान् से वहाँ आया । आकर कुशल शम के प्रश्न पूछने के बाद एक और बर गया !

एक भार बेंद्र वह बह बाह्यम संगवान म बोला-हे गातम ! चया को करता है वही मांगमा है !

माराम र पना कहना कि जो करना है वही भोगता है एक सम्म है।

ह गानम ! प्या करता है काई नृमता और जीगता है कोई बूमरा ! इ जाहाम ! ऐमा कहना कि "कहना है कोई नृमता और आगा है काई बूमरा" नृमरा अना है।

मामन ! इन दाना भर्मी का काद पुद्र मध्यम स धर्म ना अपरेश करते ई ।

निया के हान से लंग्यार हान है। उसी भविता के विश्वन हर ओर दक जाने में "।

यमा बहुने यह बहु ब्राह्मन धराबाब में बामा—ा शुद्ध नेपना शहबारत उपासक हवीकार करें ।

६७ जानुम्मोणि सुच (१२ ४ ४)

अध्यम माग का उपर्श

भायम्ती में ।

तक जानुस्थानि ब्राह्मभ बही सत्त्रात्त थे वहीं आवा भार नृत्रात्र क्षेत्र के प्रश्न पूर कर पूर्व भी कि गया।

पुढ भीर वेंद्र जाराधाणि बाह्यन भगवान से बीना-दे गीनम ! वना सभी पुछ ह ?

है बादान ! मेला बहता कि "लामी बुछ ह । यह स प है।

दे र्तानम ! क्या शबी क्या वहीं है है

दै ब्राह्मण र नेपा बहुवा कि, "शाली पुछ नहीं हैं पुराश शाला है। ब्राह्मण हुन्य दोनी धन्ती कांक र पुछ अभाव अभी से [ब्राह्म के जुङ प्रसा]

ि शाकायम शुच (१० ५ ८)

शीकिक मार्गी का स्वाम

आपरानी है। तर शाहाप्रतिक शाक्षण पर शंप केंद्र सत्तवान्ती व लान्नी गीपस (वरा सती पूर्ण हैं है

है माध्य है मेंना पहला कि ''अब्बो कुछ है'' बहुओं की बाब बाव है ह है गिनक है एक अब्बो कुछ कहा है 6

\$ even ! for agains "mish as aft to got after and \$ 1

हे गौतम ! क्या सभी कुछ एकत्व (=अहैत) है ?

हे बाह्मण ! ऐसा कहना कि "सभी कुछ एकत्व ही है" तीसरी लोकिक वात है।

हे गीतम । क्या सभी कुछ नाना हे ?

हे गौतम ! "सभी कुछ नाना है" ऐसा कहना घोथी लौकिक वात है। बाह्मण ! इन अन्तों को छोद बुद्ध मध्यम से"।

§ ९. पठम अरियसावक सुत्त (१२ ५. ९)

थार्यथावक को प्रतीत्यसमुत्पाद में सन्देह नही

श्रावस्ती में ।

भिक्षुओं । पण्डित आर्यश्रावक को ऐसा संदेह नहीं होता—पता नहीं कि क्या होने से क्या होता है ? किसके उरपन्न होने से क्या उरपन्न होता है ? किसके होने से सस्कार होते हैं ? किसके होने से जरामरण होता है ?

भिक्षुओ ! पिंदत आर्यश्रावक को यह ज्ञान तो प्राप्त ही होता है---इसके होने से यह होता है... जाति के होने से जरामरण होता है | यह जानता है कि कोक का समुद्य इस प्रकार होता है।

भिक्षुओ ! पडित आर्यश्रावक को ऐसा सदेह नहीं होता—पता नहीं, किसके रुक जाने से क्या नहीं होता ? * * किसके रुक जाने से जरामरण नहीं होता ?

भिक्षुओं ! पदित आर्यश्रावक को तो यह प्रतीत्य समुत्पाद का ज्ञान प्राप्त ही होता है—इसके रक जाने से जरामरण नहीं होता है। वह जानता है कि छोक का निरोध इस प्रकार है।

भिक्षुओं । क्योंकि वह लोक के समुदय और तिरुद्ध होने को यथार्थत जानता है, इसीलिये भार्यश्रावक दृष्टिसम्पन्न कहा जाता है ।

§ १० दुतिय अरियसावक सुत्त (१२ ५ १०)

आर्यधावक को प्रतीत्यसमुत्पाद में सन्देह नहीं

[जपर वाले सूत्र के समान ही]

गृहपति वर्ग समाप्त ।

छठाँ भाग

ग्रस वर्ग

§ १ परिविषसा संख (१२ ६ १)

सबजा। इन्स सय के छिए प्रतीत्यसमृत्पाद का गतन

ऐसा मैंने सुना।

पुर समय भगवान् आवस्ती में भगाधिपिण्डिक के जेशया बाराम में विदार करते थे।

वहाँ मगवान ने मिशुओं को धामन्ति किया-भिशुओं !

महत्त्व । बहकर मिलुवों वे मगवाब को क्यर दिवा ।

मापान योके— शिह्याओं] सर्वतः कुछ के अध्य के किये विचार करते पूर्ण मिछा कैसे विचार कर ?

प्रस्ते | बर्म ≰ धावार नायक तथा सविद्याता मगवान् ही हैं । अच्छा होता कि भगवान् ही इस इसे हमें का अभ बताते । मगवान् सं सुन वर सिद्ध धारण करेंगे ।

वी मिलुभी ! सुनी अच्छी तरह मन बनाओं में कहता 🕻 ।

⁴ मन्ते ! यहुत अच्छा कह मिशुओं वे भगवान् को बचर दिया ।

मरावाद बोके :—सिक्षुणे | सिक्षु विकार करते हुये दिकार करता है.—जो बरासरम इत्यादि सनेह प्रकार से बाना कुछ भोक में उत्पन्न कोले हैं उनका निवास क्या है समुद्रय क्या है उत्पन्ति वर्षा है प्रभन क्या है है किसके डोले से जरासरक डॉला है है किसके नहीं होने से बरासरम नहीं होंगे हैं ?

िक्चर करते दुने यद इस मकार जान नेता ह्—जो बरामरण हावादि मने मकार से बाबा बुश्य खांक में बलाब होंगे हैं जबका निवास कांति है । आधि के हाने से जरामरण होता है। बाठि के सर्वी हाने से जरामरण नहीं होता है।

बह बरामान को जाम धता है बरामान क समुद्द विहोध "प्रतिपदा को बान केटा है। वह

इस प्रचार चर्म ६ सच्चे माग वर आक्ट क्षा जाता है।

भिश्वभी ! बह निशु समग्र पुरतकाष के लिये बरामरण के निरोध के किये प्रतिपत्न दोवा है ।

द्म दे बाद भी कियार बरल हुने विचार बरता है--- अब बचादान शुक्या पेदना ", इसा बरावनन " मामक्य विशास संबदात का नियास वया है "?

यह विचार कारी हुथ यह जान करता है मंददार का निवास अविद्या है '। अविद्या के हाने से संस्कार क्षेत्र है। अविद्या के मही होने से संस्कार कही हाने हैं ।

यह मंग्नामी का कान शैना है नासुर्व निरोधः "प्रतिप्रता को साम क्षता। इस प्रकार यह पर्म के सच्चे मार्ग वर कावप होता है ---)

भिन्नुभी दे अविधा में बहा हुआ पुरव कुषतन्त्रमें काता है। तथ कुष्य का विकास क्रमे हाता है। अपूरव (= पात्र) कर्मे काता है तथ अपूरव का विभाग करो हाता है। यह अथक कर्म (अभाग) ? काता है तब अथक प्रश्नापी विजास क्षी हाता है।

भार भग नवार्गभ ते शानक (अपन क्य) वहाँ शांगे हैं।

भिक्षुओ। जय भिक्षु की अविद्या प्रहीण हो जाती है और विद्या उत्पन्न होती है, तो वह न तो प्रण्य—कर्म करता है न पाप-कर्म, और न अवल-कर्म (कोई भी संस्कार नहीं होने देता है)। कोई भी सस्कार न करते, कोई चेतना न करते, लोक में कहीं भी आयन नहीं होता है। यर्क्या अनासक्त होने से उसे कार्न अय नहीं होता, यह अपने भीतर ही निर्वाण पा लेता है। जाति क्षीण हो गई, प्रशाचर्य प्रा हो गया, जो करना था सो कर लिया, अब ओर कुछ वाकी नहीं है—ऐसा जान लेता है।

यदि उसे सुख-चेदना का अनुभव होता है तो जानता है कि यह धनित्य है, चाहने योग्य नहीं है, स्वाद लेने योग्य नहीं है। यदि उसे दु रा चेदना, अदु ख असुख चेदना तो जानता है कि यह अनित्य है ••••।

यदि उसे सुख-चेदना, दु ख घेदना, या अटु.पा-असुख चेदना होती है तो उसमें यह आसक्त नहीं होता।

जन यह ऐसा अनुभव करता है कि काया का या जीवन का अन्त हो रहा है तो यह उस बात से सचेत रहता है। शरीर छुटने ओर जीवन का अन्त हो जाने पर सारी वेदनायें यही शान्त, वेकार और टही हो जायेंगी। शरीर छुट जाते हैं—ऐसा जानता है।

भिक्षुओ । जैसे, कुम्हार के शाँवा से निकाल वर गरम चर्तन कोई ऊपर रख दे तो उसकी सारी गर्मी निकल जाती है और वर्तन ठडा हो जाता है, वैसे ही शारीर छूट जाते हैं—ऐसा जानता है।

भिक्षुओं । तो क्या क्षीणाश्रत्र भिक्षु पुण्य, अपुण्य या अवल संस्कार इक्ट्रा करेगा ?

सर्वश सरकारों के न होने से, सम्कारों का निरोध हो जाने से, उसे विज्ञान होगा ? नहीं भन्ते !

सर्वश जाति के न होने से, जाति का निरोध हो जाने से, उसे जरामरण होगा ? नहीं भन्ते !

ठीक है, भिक्षुओ, ठीक हे ! ऐसी ही बात है, भन्यया नहीं । भिक्षुओ ! इस पर श्रद्धा करो, मन्देह छोड़ो, काक्षा और विचिकित्सा को इटाओ । यही हु खों का अन्त है ।

§ २. उपादान सुत्त (१२. ६. २)

सासारिक आकर्षणां में बुराई देखने से दुःख का नाश

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ । संसार के आकर्षक धर्मों में आसक्त होने से तृष्णा बदती है। तृष्णा के होने से उपादान होता है। '' इस तरह, सारा दु ख-सगृह उठ खड़ा होता है।

भिक्षुओ । आग की भारी हेर में दस, बीस, तीस, या चालीस भार लकहियाँ भी देकर कोई जलावे। कोई पुरुष रह रह कर यदि उसमें सूखी घाम डालता रहे, गोंयठे हालता रहे, लकडियाँ डालता रहे, तो सभी जल जाती हैं। भिक्षुओ। इसी तरह, कोई महा अग्निस्कन्ध आहार पड़ते रहने के कारण चरावर जलता रहेगा।

भिक्षुओं । ठीक उसी तरह, ससार के आकर्षक धर्मों में आसक्त होने से तृष्णा बदती है। तृष्णा के होने से उपादान होता है। इस तरह, सारा दु ख समूह उठ खड़ा होता है।

भिक्षुओ ! ससार के आकर्षक धर्मों में खराई ही बुराई देखने से तृष्णा रक जाती है। तृष्णा रक जाने से उपादान रक जाता है। इस तरह, सारा दु खसमूह रुक जाता है।

भिक्षुओ ! यदि कोई पुरुष रह-रह कर उस अग्नि स्कन्ध में सूखी घासें न राष्ट्रे, गोंघडे न

[१२ ६ ५

बाडे ककदियों न बाड़े, तो वह अस्मित्कण्य पहले के माहार समाप्त हो जान और वये ॥ पाने क कारम नद्र कर रेंडा हो जावना ।

मिसुभी ! बसी प्रकार संसार के भाकर्षक धर्मों में शुराई दी शुराई देखने सं सारा दुःवा

समृद् दक काता है।

§ ३ पठम सञ्जोतन ग्रुच (१२ ६ ३)

ग्रास्पाद-स्याग से राष्या का शाज

आयस्ती में । बन्पद में शक्ष्मेशक पर्ते में आस्ताद केते हुए विद्वार करने से मृज्या वहटी है । मृज्या के होने से बनादान होता है : "इस तरह सारा इस्पन्यक वट जबा हांछा है ।

सिंहाची | तेक और क्वी के होने से (क्वां प्रतीन से) तेक प्रतीन तकता रहता है, जा नहीं में से अंदरीन तकता रहता है, जा नहीं में से सुक्ष रह रह कर तेक बाकता बाद और क्वी उसकाता जान ती बहु आहार पार्ट रहने से बहुट

कास तक नकता रहेगा । मिश्रुमो ! बंसे ही वज्यन में डाकने वाके पर्मी में जारवाद केते हुये बिहार करने से तृष्टा वस्ती

है। तृष्या के होने से क्यादान होता है। "इस तरह सारा दुःग्र समृद्ध कर बादा होता है।

***मिश्चमो । उस प्रदीप में कोई पुरुष रह रह कर न तो तेल काके और न वर्षी उसकावे दी

वह प्रशीप पहले के सभी माद्दार समाप्त हो जाने पर नवे न पाने के कारण दुख कायगा ।

सिक्षुमी | मेरी ही जनवन में बाकने चाके वानों में सुराई ही बुराई देवते हुने निहार करने से रूपमा नहीं बनती है। इस तरह आरा बाज-समझ एक काल है।

8 ४ दतिय सम्ओजन सच (१२ ६ ४)

भारताव-रयाग से राज्या का नाश

भावसी में !

निर्मा । तेव और वची है होने से तेव-प्रदीप सकता रहता है | कोई पुष्प वस प्रदीप में रह रह कर तेक बाकता आप और वची जनकाता बाद तो वह आहार पाने रहने से बहुत काव तक बकता होता।

कियर के सब जैसा ी

§ ५ वटम महारुपता सूच (१२ ६ ५)

व्या भदावस है

आपध्यी में मिश्चओं ! संसार के जाकर्षक चर्मों में जासफ होने से एक्स बक्सी है। एक्स के होने से बपा

हान । सिद्धानी | कोई सहानुख हो । कालके को सुक नीचे ना ध्याक वातक चैके हों, ससी इस्तरास भेकते हों । इस तरह नह सहानुख व्याहर पाते रहमें के कारण विश्वक तक रह सकता है ।

मिश्रुको । वैसे ही संसार के माक्पेंक वर्तों में -।

सिम्रज्ञा ! कोई महापूज हो। यह कोई पुरूप कुम्तक और रोक्सी कंकर वाले ! वह उस पुरू के मूख को कारे, पूछ को कार कर कसके मीचे सुर्था औष हे और हुक के सामी गुरूसोई को बाद कर विसास है। वह दूस की कार कर हुक्से-पुरूपे का है। किर हुक्सों को भी बीर वाले ! चौर कर होती चैंडी निकाल दे। चेली को धूप और हवा में सुपा कर जला दे। जला कर कोयला बना दे। कोयले और राप को या तो एवा में उदा दे या नदी की धार में यहा दे। भिक्षुओ | इस तरह वह महाबृक्ष उन्मृल हो जाय, उसका किर प्ररोह नहीं हो।

भिधुओ। वसे ही, समार के आकर्षक धर्मों में केवल बुराई देगने से नृष्णा रक जाती हैं। नृष्णा के रक जाने में उपादान नहीं होता है। '। इस तरह मारा दुंग्व समृह रक जाता हैं।

§ ६. दुतिय महारु₹ख सुत्त (१२. ६. ६)

तुःणा महानुक्ष है

श्रावस्ती में।

•••[ऊपर के सूत्र जैमा]

§ ७. तरुण सुत्त (१२. ६. ७)

तुःणा तरुणवृक्ष के समान है

श्रावस्ति में।

भिक्षुओ ! वन्धन में ढालने वाले धर्मों में आस्वाद देखते हुये विहार करने से तृष्णा वहती है। नृष्णा के होने से उपादान होता हैं।***

भिक्षुओ ! कोई तरुणगृक्ष हो। कोई पुरुष समय समय पर उसके थाल को फुलका बनाता रहे, माद देता रहे, और पानी पटाता रहे। भिक्षुओ ! इस प्रकार वह बृक्ष आहार पाकर फुनगे, बढ़े और खूब फैल जाय।

भिक्षओं । वैसे ही, " 'आस्वाद देखते हुये विहार करने से तृष्णा बढ़ती है " ।

भिक्षुओ ! कोई तरुणवृक्ष हो । तय, कोई पुरुप कुदाल और टोकरी लेकर आवे ।

भिक्षुओं । वैसे ही, बन्धन में ढालनेवाले धर्मों में बुराई ही पुराई देखते हुये विहार करने से तृष्णा नहीं बदती । तृष्णा के एक जाने से उपादान नहीं होता । इस तरह, सारा दु ख-समूह एक जाता है।

§ ८. नामरूप सुत्त (१२. ६ ८)

सांसारिक आखाद-दर्शन से नामरूप की उत्पत्ति

श्रावस्ती में।

भिक्षुओं । बन्धन में डालने वाले घर्मों में भास्वाद देखते हुये विहार करने से नाम-रूप ठठते हैं। [महावृक्ष की उपमा देकर ऊपर वाले सूत्र के समान]

§ ९. विञ्ञाण सुत्त (१२. ६ ९)

सांसारिक आस्वाद-दर्शन से विशान की उत्पत्ति

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ ! बन्धन में हालने वाले धर्मी में आस्वाद देखते हुये विहार करने से विह्नान उठता है। [ऊपर वाले सूत्र के समान] बाचे ककदियों न बाचे सी वह भीवस्कन्य यहके के माहार सामास हो वाले और नये न पाने के कारण जम कर रेंडा हो आयता !

मिश्रको ! इसी प्रकार, संसार के आकर्षक घर्मों में प्रशाई ही बराई रेपने सं 'सारा दुग्य

समृद्ध धर बाता है।

§ ३ पठम सम्जोजन शुप्त (१२ ६ ३)

माखान-स्वाग से राजा का साडा

आवसी में !

बस्यन में बाक्रनेवाके धर्मों में आस्वाद केते. हुए विदार करने से भुष्णा बहती है। तृष्णा के दौने

से बपादान दोता है। 'इस तरह सारा दुल्य समूह कठ लड़ा होता है।

मिह्नुवां ! तेल और वर्षा के होने से (क्या प्रतान्य से) तेक प्रदीप करता रहता है। उस महीप में कोई पुरूप रह रह कर तेक काकता बाव कीर वर्षा उसकाशा जाय तो वह आहार पात रहने से बहुत काल तक प्रकार रहेगा ।

मिहामां | बेसे ही बन्धव में बासवे बाबे चर्मों में जास्वाद बेस हवे विहार करवे से सूच्या बस्टी

है। तृष्या के हाने से अपावान होता है। "इस तरह सारा ब्राल-सम्बद्ध कर पाना होता है।

। गुप्पाक हान संज्ञपादान हाता है । "इस तरह सात दुष्क-सश्चह कर पड़ा हाता है । ─ सिश्चनो ! उस प्रदीप में कोई शुरूप रह रह कर न तो तेक काके और व वची उसकाने तो

बह प्रदीप पहले के सभी माहार समाध हो काने पर नवे व पाने के कारण बहा कापा।

नाइ स्थाप पहल्क कारणा लाहाए प्रसाह हा कान पर नाव चापा के कारणा दुझ कारणा। | सिद्धानी | मैसे हो अल्पन में दाकते वाके भागों में दुराई दो दुराई देखते हुने विदार करने से तथ्या नहीं वादी हैं। इस तरह सारा दरका-सादाह कर कारत है।

8 ध दतिय सम्ओजन सच (१२ ६ ४)

भास्ताव-स्थाग से वच्चा का भारा

धावली मैं।

सिद्धार्थ | तेक और नची के होने से तेक-प्रश्नेप लकता रहता है | कोई पुरूप वस प्राचीप में रह रह कर तेक बाकता जान और बची बासकाता बाथ तो वह आहार पाते रहने से बहुत कार तक बच्चा कोगा |

िकपर के सम जैला है

8 ५ पठम महाठव छ छच (१२ ६ ५)

राष्णा मधावस है

धावसी में

सिद्धार्थी ! संशार के आकर्षक मर्नों में आसक दोने से एच्या वहती है। एच्या के दोने से उपा दाव'।

मिक्कुको | कोई सहस्कृष्ठ हो | वसके को सुक की के वा जगक केले हों, सभी कपर रस क्षेत्रमों ही । इस सरह कह सहस्कृष्ट माहार पाटे रहते के करना विरक्षक एक रह सकता है ।

मिश्रुको । वेसे ही संसार के बाक्पंक वर्तों में 😶

सिश्चनों । कोई सवायक की । यस कोई पुरुष कुशक और दीकरी केवर बादे । यह उस पुरु के मूल को करे, मूल को कार कर कफ़रे शीचे सुरंग कोच है और युक्त के सामी सुकसीहें को कार कर विकास है। यह युक्त को कार कर हुकने-हुकड़े कर है। किर हुकड़ों को भी और शक्त । और कर, कोड़ी वैकी निकाल दे। चैली की धूप और हवा में सुया कर जला दे। जला कर कीयला बना दे। कीयले और राख को या तो हवा में उदा देया नदी की धार में प्रशा दे। भिक्षुओ | इस तरह वह महाबृक्ष उन्मृल हो जाय, उसका किर प्ररोह नहीं हो।

भिधुको । वसे ही, संसार के आकर्षक धमे। में केवल बुराई देखने में नृष्णा रक जाती है। नृष्णा के रक जाने में उपादान नहीं होता है। "। इस तरह मारा दु.ख समृह रक जाता है।

§ ६. दुतिय महारु≉ख सुत्त (१२. ६. ६)

तृष्णा महानृक्ष है

श्रावस्ती में।

•••[कपर के सूत्र जैंसा]

६ ७. तरुण सुत्त (१२. ६. ७)

तुःणा तरणवृक्ष के समान है

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ । वन्धन में डालने वाले धर्मों में आस्वाद देखते हुये विहार करने से तृष्णा वदती है। तृष्णा के होने से उपादान होता है। ""

भिक्षुओ ! कोई तरणगृक्ष हो । कोई पुरुष समय समय पर उसके याल को फुलका बनाता रहे, माद देता रहे, ओर पानी पटाता रहे । भिक्षुओ ! इस प्रकार वह बृक्ष आहार पाकर फुनगे, बढ़े और खूब फैल जाय ।

भिक्षओ ! वेसे ही. "अस्वाद देखते हुये विहार करने से मुख्या बढ़ती है"।

भिक्षुओ । कोई तरणदक्ष हो । तब, कोई पुरुप कुदाल और टोकरी लेकर आवे

भिक्षुओं। वैसे ही, बन्धन में डालनेवाले धर्मों में बुराई ही बुराई देखते हुये विहार करने से नृष्णा नहीं बदती। नृष्णा के रक जाने से उपादान नहीं होता । इस तरह, सारा दु ख-समूह रुक जाता है।

§ ८. नागरूप सुत्त (१२. ६ ८)

सांसारिक आखाद-दर्शन से नामक्रप की उत्पत्ति

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ । वन्धन में डालने वाले धर्मों में आस्वाट देखते हुये विहार करने से नाम-रूप उठते हैं।
[महावृक्ष की उपमा देकर ऊपर वाले सूत्र के समान]

§ ९. विञ्जाण सुत्त (१२ ६. ९)

सांसारिक आखाद-दर्शन से विकान की उत्पत्ति

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ । बन्धन में हालने वाले धर्मों में आस्वाद देखते हुये विहार करने से विज्ञान उठता है। [ऊपर वाले सूत्र के समान]

§ १० निदान सुच (१२ ६ १०)

प्रतीत्पसमृत्याव की गम्भीरता

एक समय भगवान कुरु-जनपद में कुम्मासद्म्म नामक कुरुमों के करने में विदार काठे थे। तव जातुष्माल आसम्ब वहाँ भगवान ये वहाँ गये और अग्रवान का समिश्रव कर एक और अंद गरें।

पुत्र क्षोर केंद्र आयुष्पाण् आतम्ब भगवान् से बोडे :—मानो] आहवर्ष है अद्भुत है ! मानो ! प्रतीक्षसमुत्याद किताना गरमीर है | देखने मैं किताना गृह साख्य होता है ! किन्तु, मुझे यह विश्वक साथ मानम होता है !

आतम् । ऐया अत कहो ऐसा अत कहो । यह भतीत्वसञ्चापाइ वहा गम्मीर सार गुरु है। जातम् । पुरी कर्र को प्रेम-प्रेफ नहीं बावने और समझने के कारव वह अवा उककार हु के पाने की गुण्डी किसी गाँठ आर वन्त्रमाँ बाकी मूँच को हाजी कैसी हो जपाय में यह दुर्गित को प्राप्त होती है। संसार में हुकने नहीं पाती है।

चानन्द | संसार के आकर्षक कर्मों में भासक होने से तृश्या बढ़ती है। [महावृस की वयमा पूर्वस्य]

वसवर्ग समाप्त

सातवाँ भाग

महा वर्ग

६ १. पठम अस्सुतवा सुत्त (१२ ७ १)

चित्त वन्दर जैसा है

ऐसा मैने सुना।

एक समय भगवान श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेतवन आराम में विहार करते थे। भिक्षुओं। अज्ञ पृथक्जन भी अपने इस चातुर्महाभूतिक ज्ञारीर से ऊव जाय, विरक्त हो जाय, भीर छटने की इच्छा करे।

सो क्यों ? क्योंकि, इस चातुर्महाभूतिक शरीर में घटना, बढ़ना, लेना और फेंक देना सभी अपनी आँखा से देखता है। इसके कारण, अज्ञ पृथक्जन मी अपने इम चातुर्महाभूतिक शरीर से ऊब जाय, विरक्त हो जाय, छूटने की इन्डा करें।

भिक्षुओ ! किन्तु, यह जो चित्त=मन=विज्ञान हे उससे पृथक्षन अज्ञ नहीं ऊब जाता, विरक्त होता, ओर छूटने की इच्छा करता ।

सो क्यों ? भिक्षुओ ! क्योंकि चिरकाल से अज्ञ प्रयक्तन, "यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा खारमा है, के अज्ञान और ममत्व में पढ़ा रहा है। "

भिक्षुओ । अच्छा होता कि अज्ञ पृथक्जन इस शरीर को, न कि चित्त को आत्मा कह कर मानता। मो क्यों ? भिक्षुओ । क्योंकि यह चातुर्महाभृतिक शरीर एक वर्ष भी, दो वर्ष भी सो वर्ष भी, और अधिक भी ठहरा हुआ देखा जाता है। भिक्षुओ । किन्तु, यह चित्त=मन=विज्ञान रात हिन दूसरा ही दूसरा उत्पन्न होता आर निरुद्ध होता रहता है।

भिक्षुओं ! जैसे जगल में बूमते हुये बानर एक डाल प्रकृता है, उसे छोडकर दूमरी डाल पर उछल जाता है—वेसे ही यह चित्त=मन=विज्ञान रात दिन ।

भिक्षुओ । यहाँ, ज्ञानी आर्थश्रावक प्रतीत्यसमुत्पाद का ही ठीक से मनन करता है। इसके होने से यह होता है। इसके नहीं होने से यह नहीं होता है। इस तरह, सारा हु ख-समृह रुक जाता है।

भिक्षुओ ! इसे देख, ज्ञानी आर्यश्रावक रूप से भी विरक्त रहता हैं, बेटना से भी विरक्त रहता है, सज्ञा , सस्कार , विज्ञान । इस वैराग्य में वह मुक्त हो जाता ह । जाति क्षीण हो गईं' ऐसा जान लेता है।

§ २, दुनिय अस्सुतवा सुत्त (१२ ७, २)

पञ्चस्कन्धके वैराग्य से मुक्ति

श्रावस्ती में।

[ऊपर के सूत्र जेंसा]

मिक्षुओ। यहाँ, जानो आर्यश्रावक प्रतीत्यसमुत्पाद का ही ठीक से मनन करता है। इसके होने से यह होता है, इसके नहीं होने से यह नहीं होता है। इस तरह, सारा दु ख-समृह रक जाता है। भिनुमा ! मुखबेदर्शाय स्वार्ण के हाये सं भुरानेबरण पैदा होती हैं । उसी सुक्रवेदर्शाय स्वर्ण के निरोध से 'पार मानावेदमा निरुद्ध कीर साम्ब हो बाली हैं ।

स्तः 'यह सुरताबद्धा । लद्दा भार साम्य हा जाता है । सिक्षमी ! युभ्यवेदशीय स्पर्ध के बीगे से । अद्युग्धसुलवेदनीय स्पर्ध के डोनेस वह वेदस

मिरुद्ध भार झान्त हो बाती है।

िम्ह्रमो ! यो कड़ियों में श्रम कामै से मार्थी पैक् होती व और जाग निरुक जाती है । उन यो नरुदियों के सक्य-सरुप कर देन स बह गर्भी और जाग प्रकार रुपने हो जाती हैं ।

बिह्यमा ! वैस ही सुधवेदनीय स्पर्ध के हामे सं सुधावेदना पदा होती है। उसी सुखवेदणीय

स्पर्त के निरीय सं "बह सुध्यवेदना निरुद्ध बीर नाम्त हो बाता है।

भिष्ठभी ! तु प्रदेशनीय रासं क द्वान से , बतु लासुक्रवेदनीय रासं के दोन से । [भिक्रतो] दुने देख जानी कार्यकायक स्पर्दों से भी विरक्त रहता है बेदन्य संज्ञा विजान । इस दराव से बहु सक दो बाता है । कारी क्षीय हो गई पास जाय केता हैं।

§ ३ प्रचमस सच ((• ३)

भार प्रकार के बाहार

भायसी वै।

भिद्धिमी है व पन्त हुए शामी की दिवति के लिए, तथा उत्पन्न इत्वेदाओं के अनुमह के लिए चार क्याहर है। कीत स चार है (२) स्थूक या सृहम कीर क इस में। (३) स्पर्श ! (३) मन की मंचनना।(४) पिशान।

भिक्षा ! कार के कप का आहार किम जकार का समग्रमा चाहिए ?

मिहुमां ! दो पठि पत्ती कुछ पानेय केवर कान्दार के किसी साथ में पह बाँच । वनने सान करना एक प्यास करवस्य पुत्र हो । तब बनवा पायव चीर-वीरे समास हो प्राप्त, पास में कुछ न वर्षे भीर कान्स्या कर विकास प्राप्ती कथा गई ।

भिनुभा ति का पति पत्नी के सन में यह हा—इस लागों का पायेव समाग्र हो गया वास में बुद्ध नहीं बच्च के 1 तो इस लोग अपने इक्कान चारे काएक पुत्र को सार इक्क्ट्रेज़ के बीरी वारी कर क्षम पाने हुद्य पाने कालतर को न नहें। तीनों के तीनों ही सर न आयें।

भितान का नाम कुल के कार के कार्या का नाम का नाम कार्या का कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार

करें—का दुव ! का दुव ! सिपुमा ! ना नुस क्या शससन का क्या थ इस तरह सह सकान धार विभूगन के निवे साकार

स्थिति । तो नुसंघ्या स्थासन् इतं वया यं हम तरह अन् सम्प्रत वस्त । वसूरत कारण वार्य करते दंशे सर्दा आसी ।

मिशुकी ! देना ही चीर करून वा भारत रामाना चाहित ! जमा गमान मा चीन कमानुनी करात का प्रचान लगा है । चीन काम-गुना करात वा प्रचान कर ता उनके लिय बहु चर्चन नहीं रहना है जिन बचन में चेनक बहु कि सम्म प्राप्त करें !

मिशुओं है रक्षी क भादार की बैना समझका काहिने हैं

मिशुभा है बाँच बार्गी बुद्दें कोई गांच कियों आप के सदारों लगकर पर्या हा, भीता में रहने बार्ग बादे को कार्दे । कह कियों कुछ कारारों लगकर नहीं हो, कुछ में तहने बार्ग कोई हमें कार्दे । मन्द्रों हो । अध्यादा में मर्वा हा । सिशुभा ह कह गांच कहीं कहीं बार्ग की बार्दे को बाँ वर्षे के कोई को के हो निवास ह नवार्य कान्द्रा को भी हमी बाद्य का सम्मान वर्ष्टिकें। भिद्धओं । स्पर्ध के आतार को एम प्रकार समझ छने में तीनों बे नायें जान ही जाती हैं । तीनों वेदनाओं को जान तेने में आर्यवायक को फिर आर उठ बरगा याकी नहीं यचना है—ऐसा में कहता है।

भिञ्जो । सन की सर्चनना के आधार को कमा समझना चारिये १

भिधुओ । किसी पोरसे नर गई में लपट ओर हैं या से रित्त लहलहार्ता हुई आग भरी हो। तम, कोई पुरुष आये जो जोने की बामना रमता हो, मरना नहीं चाहना हो, सुष्य पाना चाहता हो, हु प से दूर रहना चाहना हो। उसे डो यलवान आउमी एक एक घाँट पमन कर उस गई में डोल हैं। भिक्षुओं। नो, उस पुरुष की चेनना, प्रार्थना धार प्रणिधि चहाँ से इटने के लिये ही होगी।

सो क्या १ भिलुओं । क्योंकि वह जानता है कि इस भाग में गिर कर से मर जाऊँगा, या मरने के समान हु य उठाऊँगा। भिलुओं। मन की सबेतना के आहार की ऐसा ही समझना चाहिये—में ऐसा कहता है।

भिल्लाो । विज्ञान के आहार को कैया समझना चाहिये ?

भिक्षुओं। किसी चोर अपरार्था को लोग पकड़ कर राजा के पास ले जाँय, और कहे—देय। यह आप का चोर अपरार्थी हैं, इसे जैसी इच्छा हो उण्ड हैं। तय, राजा यह करें—जाओ, इसे पूर्वीक्ष समय एक सी भालों से भोक हो। उसे लोग पूर्वीक्ष समय

तय, राजा मध्याह समय यह वह-उम पुरव की क्या हालत ॥ १

देव ! वह वैसा मी जीवित है।

तब, राजा फिर कहे—जाओ, उसे मध्याह समय भी सी भाले भीं हु हो। लीग भीक हैं। तब, राजा साल को कहे—उस पुरुष की क्या हालत है ?

उसे साज में भी लोग साँ भाले भोंक हैं।

भिक्षुओं ! तो प्या समझते हो, दिन भर में तीन याँ भाळां से चुभ कर उस दु ख और वेचेनी होगी या नहीं ?

भन्ते ! एक ही भाला से चुभ कर तो बझ हु प होवा है, तीन सी की तो बात क्या ?

भिक्षुओ । विज्ञान के आहार को ऐसा ही समझना चार्त्ये।

भिक्षुओ । विज्ञान को इस प्रकार जान, नामरूप को पहचान रोता है । नामरूप को पहचान आर्थ श्रावक को किर और कुठ करना धाकी नहीं रहता—से ऐसा करता हैं ।

§ ४. अत्थिराग सुत्त (१२ ७ ४)

चार प्रकार के आहार

श्रावस्ती में।

भिक्षुओ। उत्पन्न हुये प्राणी की स्थिति के लिये, तथा उत्पन्न होने वालों के अनुग्रह के लिये चार आहार हैं। कीन से चार १ (१) स्थूल या सूक्ष्म कौर के रूप में। (२) स्पर्श। (३) मन की सचेतना।

भिक्षुओं ! कौर के रूप के आहार में यदि राग होता है, सुख का आस्वाद होता है, तृष्णा होती है, तो विज्ञान जमता और बढ़ता है।

जहाँ विज्ञान जमता और बढ़ता है वहाँ नामरूप उठता है। जहाँ नामरूप उठता है वहाँ मस्कारों की वृद्धि होती है। जहाँ मंस्कारों की वृद्धि होती है वहाँ पुनर्जन्म होता है। जहाँ पुनर्जन्म होता है वहाँ जाति, जरा, मरण होते हैं। भिक्षुओ। जहाँ जाति, जरा, मरण होते हैं वहाँ शोक, भय, और उपायास (=परेशानी) होते हैं—ऐसा मैं कहता हूँ।

मिछुओं। स्पर्श , मन की चेतना , विज्ञान के आहार में यदि रोग होता है ।

मिल्लुमों | कोई रंगरेक या चित्रकार रंग या काइला वा इकड़ी या कीक या संतरित के होने से अपन्ती तरह साथ और पिक्ता किने फलक पर, या सित्ति पर वा कपने के हुक हे पर समी अंगों से चुक की स्वाप्तर का कर नतार है।

सिद्धाना ! चम ही कीर के रूप में बाहार में चित्र राग होता है । सुख का भारपात होता है करों ओक पर कार उपायाम होते हैं ।

मिससी ! ध्यां सन की सचेतना । विज्ञान के आहार में वर्षि राग होता है ।

मिसुको । ईत के रूप के लाक्कर से यदि राग नहीं होता है सुन्य का भारतात्र नहीं होता है गुप्ता नहीं होती है, तो विज्ञान नहीं समन पाता।

बहाँ बिजान बमना थीर बहता नहीं है वहाँ नामकृप नहीं बठता | वहाँ नामकृप नहीं बठता है वहाँ मोरक्सों की बढ़ि नहीं हाती है | वहाँ सोक भय भीर बपायाम नहीं होते हैं —येसा में बहता हैं।

मिलुको १९२६ । सन की संवेतना । विज्ञान क व्यक्षार में यदि तार नहीं होता है " तो वहाँ सोक नहीं होते ।

नहासात निहासी होई क्यागत या क्यागत्साका हो। उसके उत्तर इक्तिज श्रीर पूर्व में जिसकियीं स्मानी हो। तो सूर्व के बनने पर किर्ज उससे सबेश कर कहीं पहेंगी?

सम्मे । पश्चिम बाक्षी बीबाक पर ।

मिन्नजो ! वरि पश्चिम में कोई दीवाल न हो तो !

सल्त ! ता अधीन पर ।

मिलुको । वदि जमीन वहाँ हो तो कहाँ वहेंगी ?

मन्ते 🛚 🖛 पर ।

मिल्ला ! यदि कर भी नहीं हो तो वहाँ पर्वेशी ?

मन्ते । वहीं नहीं वहेंगी ।

मिसुना। वैसे ही कीर के रूप के इरलें " सब की श्रीत्रका विज्ञान के ध्यार में विद राग नहीं काम्बाद नहीं पुरुषा वहीं हो विज्ञान बसता बीर बढ़ना गड़ी है। ""वहा सीक अप और बगायार नहीं होने हैं----पेमा में बहुता हैं।

§५ नगर मच (१२ ७ ५)

भाग भए।क्रिक माग प्राचीन युद्ध माग ई

धायम्त्री में ।

सिमुनी । पुत्र व मान करन क पहले कोचिमाचा रहते मेर सम में नेमा हुआ-व्हाचा वह क्षेत्र आती विश्वित में कैसा ह | अलसला है पुराणा है माना है वहाँ अल्डर कहाँ देश होना है। और असामान के पुत्र से कैसे सुरकारा होगा नहीं आनना है। इस असामाच के पुन्त से मुन्दि का ताज कहारोगा

भिशुनि । नव भी यस मिं यद हुआः—कियक होर्ने में जताबारण दाना है जताबारण आ क्रमण पार्कि

भिशुभी । इस पर उच्चित सनवं करने से सुद्धं आस का अच्च हो सवा—गाति के हा^{ते से} इस्तासण हरणा है, अति ही अक्षासण का अवस्त्र हैं।

भव (वचान्तम ** । नृग्ना ** । चेत्ना : त्रात्रौ । चन्त्रमन् ** : नामस्य :

निमुजी १ इस वर अधिन सनन वाले से सुती जान का बन्द हा सदा—किलान के दोने में क्ष्मण दोना है विशान हो सम्बद्ध का स्वत्य है। भिक्षुओं ! तय, मेरे मन में हुआ—िक्यिके होने से विज्ञान होता है, विज्ञान का प्रत्यय क्या है ? भिक्षुओं ! इस पर उचित मनन करने से मुझे ज्ञान का उड़य हो गया—नामस्य के होने से

विज्ञान होता है, नामरूप ली विज्ञान का प्रत्यय है।

भिणुओ । तम मेरे सन मे पार हुना—नामरूप से यह विज्ञान लोट जाता हे, आगे नहीं पड़ता । इतने से जनमता है, तुइता हे "। जो नामरूप के प्रत्यय से विज्ञान लोता है, विज्ञान के प्रत्यय से नामरूप होता है। नामरूप के प्रत्यय से पड़ायतन होता है। पड़ायतन के प्रायय से न्पर्य "। इस तरह, सारा हु ध-समूह उट घटा होता है।

भिक्ष भी। "उठ पदा होता है" (=ममुदय)=ऐसा पहले कभी नहीं सुने गये धर्मों में चक्ष उत्पन्न हुआ, ज्ञान पदा तुआ, प्रज्ञा उत्पन हुई, विद्या उत्पन हुई, भालोक उत्पन हुआ।

भिक्षुओ ! तब, मेरे मन में यह हुआ-कियके नहीं होने से जरामरण नहीं होता है, कियका निरोध होने से जरामरण का निरोध होता है।

निक्षुओं । इस पर उचित मनन करने से मुझे ज्ञान का उठय हो गया—जाति के नहीं होने से जरामरण नहीं होता है । जाति का निरोध होने से जरामरण का निरोध होता है ।

स्य , उपादान , तृष्णा ", बेटना स्पर्ण , पदायनन ", नामक्य , कियका निरोध होने ये नामक्त का निरोध होता ह ?

भिधुओं । उस पर उचित मनन करने से मुझे ज्ञान का उदय हो गया-विज्ञान के नहीं होने से नामरूप नहीं होता है, विज्ञान का निरोध होन से नामरूप का निरोध होता है।

किसके नहीं होने से विज्ञान नहीं होता, किसका निरोध होने से विज्ञान का निरोध हो जाना है ?

नामरूप के नहीं होने से विज्ञान नहीं हीता है, नाम-रूप का निरोध होने से विज्ञान का निरोध हो जाता है।

भिक्ष भी । तम मेरे मन म यह हुआ — मेने मार्ग का ज्ञान प्राप्त कर लिया, नाम-रूप के निरोध से विज्ञान का निरोध होता है। विज्ञान के निरोध से नाम-रूप का निरोध होता है। नाम-रूप के निरोध में पड़ायतन का निरोध होता है। पड़ायतन के निरोध से स्पर्ध का निरोध होता है। । इस तरह, मारे हु ख-समृह का निरोध हो जाता है।

भिक्षुओ ! "निरोध, निरोध" ऐसा पहरूं कभी नहीं सुने गये धर्मी में चक्षु उत्पन्न हुआ, ज्ञान पेटा हुआ" ।

भिक्षुओ ! कोई पुरुप जगल में घृमते हुये एक पुराना मार्ग देखे, पूर्वकाल के लोगां का बनाया, पूर्वकाल के लोगों का इम्तेमाल किया। वह पुरुप उम मार्ग को पकड़ कर आगे जाय, और एक पुराने राजधानी नगर को देखे, जहाँ पूर्वकाल में लोग रहा करते थे, जो आराम, वाटिका, पुष्करिणी, और सुन्दर वहार-दिवाली से युक्त हो।

मिक्षुओ ! तब, वह पुरुप राजा या राजमन्त्री को जाकर कह दे—भन्ते ! जानते हैं, मैंने जगल में घूमते । भन्ते ! अच्छा होता कि उस नगर को फिर बसावें !

भिञ्जुओ ! तय, राजा या राजमन्त्री उस नगर को फिर भी वसावे । वह नगर कुछ काल के वाद यदा गुलजार, समृद्ध, और उन्निशील हो जाय ।

भिक्षुओ। वैसे ही, मैने पुराना मार्ग देख लिया है, जिस मार्ग पर पूर्व के सम्यक् सम्बद्ध चल चुके हैं। भिक्षुओ। पूर्व के सम्यक्-सम्बद्धा से चला गया वह पुराना मार्ग क्या है ? यहाँ आर्य-अष्टागिक मार्ग, जो सम्यक् दृष्टि' सम्यक् समाधि।

उस मार्ग पर मैंने चला। उस मार्ग पर चलकर मैंने जरामरण को जान लिया, जरामरण के

समुद्ध का बान निया, बरासरण के निरोध को बान किया धरासरण की निरोधगासिनी प्रतिपद्दा का बान निया।

डम माग पर मैंने चला। उस मार्ग पर चलकर मैंने आति। भव " डपादान मूच्या"

ः स्पर्गः पदाचतन नामस्य विकान संस्कारः

दम जाद मैसे मिलुकों का मिसुणियों का दयामकों का और उपनिवासों का उपनिवासों का उपनिवासों का उपनिवासों का उपनिवासों पटी महायये इतना महाद कार उक्तिसील है विकासित हैं बहुत तथों से भर गवा है सतुर्त्यों और नेक्ताओं में भयी प्रदार न प्रकासित है।

§६ सम्मसन सुत्त (१⁻ ७६)

त्रपारिमक समन

पुषा धने सना ।

पुत्र समय मागान पुण्यासगढ में शहमास्त्रहरम् नामक कुदमों के करन में विदार करते ने ।

भगवाम काले-विराधी ! तम आपी प्रांतर की प्रांतर एक फेरन केरी !

णेया कहते पर कोई मिशु समयान स वाना-मन्त्री ! में अपने मांतरही मीतर सुर करन केरता हैं।

भिद्ध ! कहा ता गरी तुम अपने भीतर ही भीतर कैन केटन केटने हा ।

भिशु में बतन्यथा जिल्हा जसके बतनाने स भगवान का चित्र संतुष्ट वहीं हुआ।

तर जानुष्यान भातम्य भगवन स वाले-- इ संगवन् । जय यह तसव हे-- भगवन् इत्तरा रगरेगा वर्षे कि भन्ने अंतर ही मीतर कवे फटन चेटा जाता है। अगनात से मुनरर मिग्ना पारत करेंगे।

ता भागन्द ! सुना अच्छी तरह शत समान्ती में बदता है ।

"मन्दे ! बहुन अरदा कह मिराओं वे धगवाब का उत्तर दिया !

ममवान बाल-सिद्धानो । कवर भीतर ही धीतर मितु गृथ देशव देला है—यह को कामगण रुप्ताद करूर प्रकार द माना पुत्रा कोक में चित्र होते हैं उनका विद्वान करा है ? उनकी नवा है ? प्रमय करा है । दिनद हाने ने जामगण होता है ? विगक्ते नहीं हाने से जासकरन नहीं होता है ?

जमा चेटन हुए बह जान ऐसा ह— 'यह चुन्त जमानि क निहान मा हाते हैं। जमानि क होने स बहात्रस्त होना है। कमानि के मही हाने स जामहान नहीं हाता है। वह सहायहमा की कार हेता है। सामुद्र निहोत्र कार "" निवहा का जान शेना है। इस तहह बहु वर्ष के सच्चे मार्ग वर सामुद्र कारों

विद्यार्था ! बद विद्या गया। सम्बद्ध पृत्यक्षण के लिए तथा ज्ञामान च विरोध के निष् प्रतिपत्र

सम्बद्धाः

्षपढे बाए की। कारने भीतर ही। मीता केटन केटना है--- प्रशाबि (अवस रकाय) का निराण क्या है-- !

े प्रचानिका निराणः मुख्या है। । यह प्रशासिको साम संगा है।

बिहा में " इसके बाद भी। भारत भीतार हो। भीतार फेल्स करता है---वह तृत्तर प्रशास दानी हुई कैंदे प्रशास दोनी है अर कार्री एना कारी है ?

नेवा में हो पूर्व काम नेवा है... मी क्राक्ति का शुर्वा और मुख्या में हारी में प्राच्या पानव कोरी है, भी कारणी में जात मार्थ के का का कि प्राप्त के किया जावता भी श्राप्तामाने हैं। इस्ती में मार्था प्राप्त होने हैं भी तथा मार्थित है

नोड में भोषान प्राप्त शिक्षा कामा अने दिवस शुरुश बीर शुधावने हें द्वारी में मुख्या प्रमुख दोगों है बीर कर प्रमाने हैं दू भिक्षुओं । अर्तात काल में जिन श्रमण या बाह्मणों ने लोक के सुन्दर और लुभावने विपयों को निन्य, सुख, आत्मा, आरोग्य और क्षेम के ऐसा देखा, उनने तृष्णा को बदाया ।

जिनने तृत्णा को बढ़ाया उनने उपाधि को बढ़ाया। जिनने उपाधि को बढ़ाया उनने दुख को बढ़ाया। जिनने दुख को बढ़ाया वे जाति जरामरण, शोक से मुक्त नहीं हुए। दुस से मुक्त नहीं हुए—ऐसा में कहता हूँ।

भिक्षओ । भविष्य काल में जो श्रमण या वाह्मण '।

भिक्षशो । वर्तमान काल में जो अमण या बाह्मण ।

भिक्षुओ । जैसे, कोई पीने का कटोरा हो, जो रग, गन्ध आर रस से युक्त हो, किन्तु उसमे विष लगा हो । तय, कोई धाम में गर्माया, धमाया, थका, माँदा प्यासा पुरुप आये । उस पुरुप को कोई कहे—हे पुरुप । यह तुम्हारे लिए पीने का कटोरा है, जो रंग, गन्ध और रस से युक्त है, किन्तु इसमें विप लगा है । यदि चाहो तो पी सकते हो । पीने से यह रग, गन्ध और स्वाद में बदा अच्छा लगेगा । पीने के बाद उसके कारण या तो मर जाओंगे या मरने के समान दुख भोगोंगे । वह पुरुप सहसा विना कुछ विचार किये उस कटोरे को पी ले, अपने को नहीं रोके। वह उसके कारण मर जाय या मरने के समान दुख पावे।

भिक्षुओ । वैसे ही, अतीत कारू में जिन श्रमण या ब्राह्मणा ने लोक के सुन्दर और लुभावने । दुःख से मुक्त नहीं हुए-ऐसा में कहता हूँ।

मिक्षुओं । भविष्य काल , वर्तमान काल मे ""।

भिक्षुओ । अतीतकाल में जिन श्रमण या बाह्मणों ने लोक के सुन्दर और लुभावने विषयों को अनित्य, दु ख, अनारम, रोग, और भय के ऐसा देखा, उनने तृष्णा को छोड़ दिया ।

जिनने तृष्णा को छोइ दिया उनने उपाधि को छोड़ दिया। जिनने उपाधि को छोड़ दिया उनने दु ख को छोइ दिया। जिनने दु ख को छोड़ दिया वे जाति, जरामरण, शोक से मुक्त हो गये। वे दु ख से छूट गये—ऐसा मै कहता हूँ।

मिक्षुओं । मिविष्य में , वर्तमान काल में । वे दु ख से छूट गये--ऐसा मै कहता हूँ।

भिक्षुको । जैसे । यदि चाहो तो पी सकते हो। पीने से यह रग, गध और स्वाद में बड़ा अच्छा छगेगा। पीने के बाद उसके कारण या तो मर जाओंगे या मरने के समान हु ख भोगोंगे।

भिक्षुओ । तय, उस पुरुप के मन में यह हो—मैं इस प्यास को सुरा से, पानी से, दही-महा से, रूस्सी से, या जीरा के पानी से मिटा सकता हूँ। इस प्यासे को मैं न पीऊँ जो बहुत काल तक मेरे अहित और दु ख के लिए हो। वह समझ वृक्षकर उस कटोरे को छोड़ दे, न पीये। इससे वह न तो मरे और न मरने के समान दु ख पावे।

मिझुओ । वैंसे ही, अतीत काल में जिन श्रमण या बाह्मणों ने लोक के सुन्दर और लुभावने विषयों को अनित्य, हु ख, अनात्म, रोग और भय के ऐसा देखा, उनने तृष्णा को छोड़ दिया।

वे दु ख मे छूट गये-पुता में कहता हैं।

भिक्षुओ । भविष्य में , वर्तमान काल में । वे दु.ख से छूट जाते हैं — ऐसा में कहता हूँ ।

§ ७. नलकलाप सुत्त (१२. ७ ७)

जरामरण की उत्पत्ति का नियम

एक समय आयुष्मान् सारियुत्र और अधुष्मान् महाकोद्धित वाराणसी के ममीप ऋषिपतन मृगदाय में विहार करते थे। त्रक अपुष्माम् महाकाष्ट्रित सींध का च्यान स उठ बहाँ बायुष्माम् मारिपुत्र ये बहाँ गये भीर कारू अस के प्रश्न प्रवक्त एक बीर यर गये ।

पुरु क्षारे यह कानुष्यायु सहाकोद्वित आयुष्यायु सारिष्ठत स बाल-आनुस सारिष्ठत ! क्वा करामरण करता न्यर्प किया हुआ है या तुसरं का किया हुआ है या अपना न्यर्थ भी और तूसरे का भी किया हुआ है या म अपना व्ययं आरंत तूसरे का किया हुआ किन्द्र सकारण हुआ है ज्या

. ≈त्रानुस कोद्वित ! इनमें एक मी ठीठ महा ।

≈धायुस सारियुद्ध । क्या जावि सब उपादान नृष्का सद्द्रता → स्पर्श पदायतम नामरूप अपना स्वयं क्रिया नुका है या खडारन बडाय क्रायद्व हो गया है ?

आतुम कोहित ! इनमें एक भी और वहीं । किन्तु, विज्ञान के प्रश्वत से नामकप होता हूं। भागुम सारिपुण ! नवा विज्ञान व्यनना नवा किना हुना है । वा वकारण उत्तव हुना है ? भागुस कोहित ! इनमें एक भी वीक नहीं। किना नामकप के मत्यव से विज्ञान होता है ।

तो इस आयुष्पाल मारियुन के नहे का अब हम प्रकार कार्ये—माप्तकार विशेष न तो अपना स्त्रं किया हुआ है न सकारक हरून उत्पन्न हुआ है। किन्तु विज्ञान के सम्बन्ध से नासक्ष्म सीर नाम कर के प्रवास से विज्ञान होता है।

भाइन सारिपुत्र ! इमना भर्य याँ हाँ न नमसना चाहिचे १

तो भावुम ! में एक क्यमा तुकर समझाता हूँ। क्यमा में फितने विश्न पुरूप स्ट्री हुय का अर्थ सर समझ क्य हैं।

भावुस ! जम दा भल्ककार (⇒ मरकट क कोस) एक तुसरे के सदार आपकर अने हों। वैसे ही समस्य के प्रश्व से विज्ञाव और विज्ञान के प्रश्व में नामस्य के प्रश्व के प्रश्व से प्रश्वित के प्रश्व से प्रश्वित होता है। इस तरक सभा श्री-मन्द्रद कर पदा होता है।

अध्यम ! क्रेम कत हो सम्बन्धायां में एक का गाँच केने से बुक्ता गिर पहता है। हैस ही आमान्य के निराय स बिजान का निरोध कीन विज्ञान के निरोध स आसक्य का निरोध होता है। असक्य के निरोब म पहावतन का निरोध होता है। पहायतन के निरोध से स्वर्ध का निराध होता है। । इस नाह बाते हुस-बन्धह का निरोध हो जाना है।

भाइम नारिपुत । जाभर्ष है अनुसूत है । जाप ने इस इतना अच्छा नामास्त्रा । आप के नहे

हर का श्रम ए सम प्रकार म अनुमादन करने हैं।

मी मिह्न प्रशासक क निर्मेद केशाय और विशास के निम प्रमापित्स करता है वहा अक्ष्मण प्रमेकीक क्या जा गरणा है। वा मिह्न क्षासरण क विषेत्र केशाय और विराय के निमे प्रतिप्रक होनी है पहि प्रस्वकार प्रमानुकों जीनपथ कहा जा जवना है। का लिह्न क्षासण के निर्मेद काम्य निरीय अनुसारण ने विद्यान हो जाग है वही जनकार एक्सोविशोच प्रशासकार का सकता है।

कारि यस कवास्था पृथ्या बेड्डा रखाँ पहालत साम्यस्थ । दिसान लोक्सर । क्रांभिशु कविष्याक निर्देश देशात निरोध अनुराद्यक से बिसुन हा जाता देशों अन्यस्था रहकारिनाचेल साम कदा का स्वस्था है।

वाण प्राप्त चड्डा का गवना है।

§ ८ बागम्बी सुम (१२ ७ ८)

मय का निगध ही निवाण

४६ संदर अनुष्याद मुश्किम आयुष्याद स्विष्टु आयुष्यात सावक् आर आयुष्याद मानाइ वालावर्ग के माणितालास में विदास करते भा

事

तय, अधुप्मान मधिष्ठ आयुष्मान मिनल से प्रीहे—आयुष्म मृसिल । श्रद्धा की छोड, रचि की छोड, अनुश्रव की छोड, आकारपरिवितर्क को छाउ, इष्टिनिण्यान क्षान्ति की छोड, आयुष्मान मृसिल की क्या अपने भीतर ही ऐसा ज्ञान हो गया है कि जाति के प्रध्य में जरामरण होता है ?

आधुम मिद्द ! श्रन्ता को छोड , मैं यह जानता हूँ, मैं यह देखता हूँ कि जाति के प्रत्यय में जरामरण होता है।

आबुस मृत्मिल । श्रद्धा को छोड़ , आयुष्मान् मृत्मिल को वया अपने भीतर ही ऐसा ज्ञान हो गया है कि भव के प्रत्यय से जाति होती है ?

> कि उपादान के प्रत्यय से भन्न होता है ? " कि तृष्णा के प्रत्यय से उपादान होता ह ? ' कि वेदना के प्रत्यय से तृष्णा होती है ? कि स्पर्श के प्रत्यय से वेदना होती ह ? " कि पदायतन के प्रत्यय से स्पर्श होता है ? " कि नामरूप के प्रत्यय से पदायतन होता है ? " कि विज्ञान के प्रत्यय से नामरूप होता है ? कि सस्तारों के प्रत्यय से विज्ञान होता है ? ' ' ' के अविद्या के प्रत्यय से विज्ञान होता है ?

आबुस स्विद्व । श्रद्धा को छोट ***, में यह जानता हूँ, में यह उपता हूँ कि अविद्या के प्रस्यय से मंस्कार होते हैं।

आदुम मूसिल । श्रद्धा को छोद , आयुष्मान् मूसिल को क्या अपने भीतर ऐसा ज्ञान हो गया है कि जाति का निरोध होने में जरामरण का निरोध होता हैं।

आद्युस सिवह ! श्रद्धा को छांद ° °, में यह जानता और देखता हूँ कि जाति का निरोध होने से जरामरण का निरोध होता है ?

" भव के निरोध से जाति का निरोध । [प्रतिलोम वश से] अविद्या के निरोध से सस्कारों का निरोध होता है ।

भावुस मुसिल । श्रद्धा को छोद , आयुष्मान मृमिल को क्या अपने भीतर ऐसा ज्ञान हो गया है कि भव का निरोध होना ही निर्वाण है ?

आयुम सिवह । श्रद्धा को छोड़ , मैं यह जानता और देखता हूँ कि भव का निरोध होना ही निर्वाण है ?

तो आयुष्मान् मूसिल क्षीणाश्रव अर्हत् है। इस पर आयुष्मान् मूसिल चुप रहे।

ख

तव, भायुष्माम् नारद् भायुष्मान् सिच्छु से बोले--आबुस सिच्छ । अच्छा होता कि मुझे भी वह प्रश्न पूछा जाता । मुझसे वह प्रश्न पूछें । में आप को इस प्रश्न का उत्तर दूँगा ।

में आयुष्मान् नारद को भी घह प्रश्न प्छता हूँ । आयुष्मान् नारद मुझे इस प्रश्न का उत्तर दें । [पूर्ववत्] आनुम सबिद्व ! सदा को छोड़ ** में यह जानता और दगता हूँ कि सथ का तिराप होना ही निर्वाण हो !

तो मायुष्यान् नार्द् श्रीमाश्रद महीत् हैं।

आबुस | मेंने इस पवार्थ ज्ञाब को पा किया है कि अब का निरोध द्योगा ही निर्दाण है किया में सीमाध्यस महीन पत्ती हैं।

भावुस | बेंस किसी कालार मार्ग में एक कुँता हा । वहीं नं बार हो न वाक्सी । तव कोई बाम में गर्माया चक्र-माँहा प्यासा पुरुष मार्थ | वह उस कुँता म झाँके । 'पानी है" ऐमा कह बामें किस्स वहीं तक पर्वेषने में कस्मार्थ हो ।

भावुस ! बस ही मैंने इस चधार्य-क्षाम का पा किवा है कि सब का निरोध होता ही निर्वाण है

किना में भीगायन भारत नहीं हैं।

ग

एंसा कहने पर बाबुप्पान् आतम्ब बाबुप्पान् स्विष्ट में बोसे—अबुस सबिह ! पूसा कह कर आप बाबुप्पान बारत् को क्या कहना काहत है ?

काञ्चस आनन्त ! में बायुप्पान् नारह को इशक और शस्त्राण छोड़ कर इस दूसरा करना नहीं पाइता है।

§९ उपयन्ति सुच (१० ७ ९)

जरामरण का हतना

प्रेमा सैने सुवा ।

एक समय भगवान आवस्ती में असारांपिण्डिक के आराम जनवन में विदार करते थे।

सामान् मारे-सिम्नुजी । सहासमुत्र वर्षकर सहामिक्षाँ को वदा इंटा है। सहामिक्षाँ को वदा इंटा है। सहामिक्षाँ को वदा है। क्रिक्टा (= सामा गिव्हाँ) को वदा हेती हैं। यही वही वदि वादि को वदा हैती है। "" कैटी-सिटी रोहियाँ को वदा हैती हैं।

सिक्षुको | इसी तरह अविधा बहकर संस्कारों को बड़ा वेती हैं | सरकार बहकर विद्यान की बड़ा चंते हैं | ***वादि बहकर बागरण को बड़ा देती हैं |

मिल्ल को । महासमुद्र के कीड कावे पर शहा शतिवाँ सीड काती हैं।

मिसुजा ! इसी तरह जविद्या के इट बावे से संस्थार इट बाते हैं । सस्वारों के इट बावे से विश्वास इट कारत हैं । 'कार्टि के इट बावे से बरासरूच इट बस्ता हैं !

६ १० सुसीम सुच (१२ ७ १०)

यम-स्वमाव-बात के प्रधात निर्धाण का बान

अनित्यता कार की तरह साधु हो कुक शांगता है पुगा मेंने सवा।

एक समय मनवान् राजगृह के यसुवस कक्षम्ब-विशाप में विहार करते थे।

क

दश्र समय अतवान् का वदा सकार = गुरुकार = सम्माव = पूजन = जादर हो रहा वा ! वन्हें चीवर पिरवरात शववासय कानपाचव अवज्ञ परिस्थार मास हो रहें थे | भिक्षमंच का भी प्रदा सन्कार' । किन्नु, अन्य तैर्थिको का सरकार' 'नहीं होता था । उन्ह चीवर "प्राप्त नहीं होते थे ।

ख

उस समय सुसीम परिवालक परिवालको की एक चड़ी भण्डली के साथ राजगृह में टहरा हुआ था।

त्र सुर्याम पिताजक की मण्डली ने सुसीम परिवाजक को कहा — मित्र सुसीम ! सुनें, आप श्रमण गातम के पास दीक्षा है हैं। श्रमण गीतम से धर्म सीय कर आर्य ओर एम लोगों को कहे। आप से धर्म मीखकर हम लोग गुल्कों को उपनेश हैंगे। हम तरह, हम होगों का भी सत्कार ' होगा, और हम भी चीवर श्राह करेंगे।

"मित्र । बहुत अच्छा" कर, सुमीम परिवाजक अपनी मण्डली की उत्तर है, जहाँ आयुष्मान् आनन्द्र थे वहाँ गया, और जुजल क्षेम के प्रकृत पूछकर एक और वैठ गया।

ग

एक ओर बैठ, सुमीम परिवाजक आयुष्मान आनन्द में बोला—आयुस आनन्द! में इस धर्म-विनय में ब्रह्मचर्य पारन करना चाहना हुं।

तय, आयुत्मान् आनन्द सुमीम परिवाजक को ले जहाँ भगवान् थे वहाँ गये, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर चेट गये।

एक ओर घट, आयुष्मान् आनन्द भगवान से बोले —सुमीम परिवाजक मुझसे कहता हे कि आयुस आनन्द । में इस धर्मविनय में ब्रह्मचर्य पालन करना चाहता हूँ।

भानन्द्र ! तो सुसीम को प्रवजित करो ।

सुसीम परिवाजक ने भगवान् के पास प्रवज्या और उपसम्पदा पाई।

उत समय कुट भिधुओं ने भगवान् के पास ऐसा स्वीकार कर लिया था—जाति क्षीण हो गई, ब्रह्मचर्य पूरा हो गया, जो करना था यो कर लिया, अब और कुट नहीं बचा, ऐसा जान लिया।

घ

आयुष्मान सुसीम ने इसे सुना कि कुछ भिक्षुओं ने भगवान् के पास ऐसा स्वीकार कर िया हैं।

तव, आयुष्मान् सुसीम जहाँ वे भिक्षु थे वहाँ गये, और कुशल क्षेम के प्रश्न पूछकर और बैठ गये। एक ओर बैठ, आयुष्मान् सुसीम उन भिक्षुओं से बोले —क्या यह सन्ती बात है कि आयुष्मान ने मगवान् के पास ऐसा स्वीकार कर लिया हे 9

हाँ, आबुस ।

आयुष्मानों ने यह जानते और देखते हुये क्या अनेक प्रकार की ऋद्वियों को प्राप्त कर लिया है ? एक होकर भी बहुत हो जाते हैं ? बहुत होकर भी एक हो जाते हैं ? क्या आप प्रगट होते और छन्न हो जाते हैं ? क्या आप प्रगट होते और छन्न हो जाते हैं ? क्या आप दीवाल, हाता, पहाद के आर-पार विना लगे बसे चले जा सकते हैं, जैसे आकाश में ? पृथ्वी में भी क्या आप दुवकियाँ लगा सकते हैं जैसे पानी में ? जल के तल पर भी क्या आप चल सकते हैं, जैसे पृथ्वी के जपर ? आकाश में भी क्या आप पलथी लगाकर रह सकते हैं, जैसे पक्षी ? चाँद सूरज जैसे तेजवान को भी क्या आप हाथ से छ सकते हैं ? ब्रह्मलोक तक भी क्या आप अपने शरीर से बश में कर सकते हैं ?

वासस. मही ।

मार धायुप्तान् ऐसा बातवे जीर देखते हुवे तया दिव्य अवीकिक विश्चन्न भ्रोप्तवार्ष से दिव्य और मानुष तथा तूर और निकट के हारवें को शुन सकते हैं ?

भावुस ! नहीं शुन सकते हैं।

म्पर आयुष्मान् ऐसा बातते कार देखते हुये त्या तृतरे बीधों और युदरी के वित्त को अपने विष से मान केते हैं ? सराग विष को सराग वित्त है ऐसा मान केते हैं ? बीवराग वित्त को बीवराग वित्त है ऐसा बात करते हैं ? हो भीड़ वाले वित्त को "वैया बात केते हैं ? सीक्षत जिसित , मेमान् , अमाहर , क्याहर से से कि से वित्त की वैया की वित्त की वैया वित्त की वैया वित्त की वैया वित्त की वैया वित्त की वित्त की वैया वित्त की वैया वित्त की वैया वित्त की वैया वित्त की वित्त की वैया वित्त की वैया वित्त की व

कावस नहीं।

नाप नायुम्मार पंसा बाबते और देखते हुने क्या ननेक मकार के अपने पूर्व जन्म की नारों को स्मरण करते हैं—जस एक जन्म भी दो जन्म भी वार्ष दक्ष " वीश्व प्रचास सी हजार" जावा "! कोने संवर्त करत भी जनेक विवर्त करत भी सर्वक संवर्तीववर्त करत भी। वार्ष वा। इस नाम का इस गोन का इस वर्ष का इस आवार का पेमा सुक्कपुन्त भोगने वाजा इतनी नायु वाजा । वा। तो वाहों से सर कर वाहों वर्षा हुना वाजा वा प्रमा नाम का स्वार कर वाहों वर्षा हुना वाहों भी हम नाम का "या। सो वाहों से सर कर वाहों करवा हुना हूँ—इस मकार कहा जाप आवार कीर उद्देश्य के साथ अनेक प्रकार के भाने पूर्व कम्म की वार्षों को सराय करते हैं।

नास्तरमञ्जू

भार आयुक्तान पंत्रा बानते लार देखते हुने क्या दिला सकाकेक विद्वास यहा है सार्यों की-मारते बातमते द्वील मार्गत शुक्त करने बाती की बात दुर्गति की मास अपने कमें के बहुतार बातमा की राष्ट्र—देखते हैं है जीव द्वारीत बात और तम से हुराचार करने वाड़े हैं अर्थ दुर्गति की तिक्या कार्य वाके हैं निरुप्त दिले बाते हैं निरुप्त दिले में तक कावरात करने वाड़े हैं—की मारते के बाद तरक में बराय हो कर हुर्गति की मास होंगे हैं वे बील सारित दक्त की साम से सहाचार करने बाद तरक में बराय हो कर हुर्गति की मास होंगे हैं वे बील सारित दक्त की साम कर से साचाया करने बाद कि मारते होता मार्गति श्रुप्त हुए कुकर अपन्नी गति को गास दुर्गति को मास वरण कमें के मनुसार सबस्था की गांध-व्यक्ति हों

भावस नहीं।

भाग नामुप्तान ऐसा बावत कीर इंक्से हुए क्या उस साल्य विमोश कए के परे सक्य जो हैं क्यों सारि से स्पर्ध करते विकार करते हैं ?

बाबस नहीं।

क्या क्याकुप्तानों का स्थाननर करणा डीक होते हुने जी आप ने इन (अवीडिक) धर्मी को नहीं पाता है?

नहीं मानुस यह नहीं है।

ता कैसे वह सम्मव है।

भावुस सुधीस [इस स्रोग प्रजा-विश्वक हैं ।

मायुष्पार्थों के इस संक्रप से कई गयं का इस विभार से वर्ष नहीं समझते हैं। इपर कर के आप होता ऐसा कई कि कानुष्पाला के इस संसंप से कई गयं का इस विस्तार से अर्थ जान कें।

माकुम सुसीम ! जाप जान में वा न बान कें। किन्तु इस कीरा प्रशाबिमुन्ड हैं ।

स

सय, आयुष्मान सुमीम आमन में उठ जाएँ भगवान् थे यहाँ गये, और भगवान् का अभिवादन कर एक और वैठ गये। एक और वैठ, आयुष्मान् सुमीम ने उन भिक्षुओं के माथ जो कथा-संलाप हुआ था सभी भगवान को कह सुनाया।

मुखीम । पहले धर्म के न्यसाय का ज्ञान होता है, पीछे निर्धाण का ज्ञान ।

भगवान् के एम सक्षेप से कहे गये का हम विस्तार में अर्थ नहीं समझते हैं। कृपा कर भगवान ऐसा कहें कि भगवान् के इस सभेप से कहें गये का हम विस्तार में अर्थ जान के।

सुर्यास । तुम जानो या न जानो, किन्तु पहले धर्म के स्वभाध का ज्ञान होता है, पीछे निर्वाण का ज्ञान । सुसीस । तो क्या समझते हो रूप निष्य है अथया जनित्य ?

भनते। अनिय है।

जो अनित्य रें बह हु न रें या मुन ?

भन्ते। इस है।

जो अनित्य, दु त्य विपरिणामधर्मा है उसे पया ऐसा समझना टीक है—यह मेरा है, यह में हूँ, यह मेरा आत्मा है ?

नहीं भन्ते !

चंदना नियह या अनिध्य ।

सज्ञा निया या अनिय ।।

सम्कार निग्य ए या अनित्य !!!।

विज्ञान नित्य है या अनिष्य "।

जो अनित्य, हुन्न, चिपरिणामधर्मा है उसे क्या ऐसा समझना ठीक है--यह भेरा है, यह मै हूँ, यह मेरा आत्मा है ?

नहीं भन्ते !

सुसीम । तो, जो कुछ अतीत, अन्मत - या पर्तमान् के रूप है -- आध्यात्म या यात्र, स्थूल या सूक्ष्म, हीन या प्रणीत, द्रस्थ या निकटस्थ-- सभी न मेरे है, न हम है, और न हमारे आत्मा है।

सुमीम ! जो कुछ अतीत अनागत या वर्तमान के वेदना , सज्ञां ", सहकार", विज्ञान हैं सभी न मेरे हैं, न हम है, और न हमारे आत्मा है । इस बात का यथार्थ रूप में अच्छी तरह साक्षान्कार कर छेना चाहिये ।

सुसीस ! ऐसा देखते हुये ज्ञानी आर्थश्रावक का चित्त रूप से हट जाता है, घेदना से हट जाता है, सज्ञा से हट जाता है, बिज्ञान से हट जाता है। चित्त के हट जाने पर चेरान्य उत्पन्न होता है। चेरान्य से विमुक्त हो जाता है। चिमुक्त हो जाने पर विमुक्त हो गया ऐसा ज्ञान होता है। जाति क्षीण हुई, ब्रह्म चर्य प्रा हो गया, जो करना था सो कर लिया, अब ओर कुछ बाकी नहीं बचा--ऐसा जान लेता है।

मुसीम ! तुम देखते हो कि जाति के प्रस्पय में जरामरण होता है ?

हाँ भन्ते !

सुसीम ! तुम देखते हो कि भव के प्रस्थय से जाति होती है ?

हाँ भन्ते ।

सुसीम ! तुम देखते हो अधिधा के प्रत्यय से सस्कार होते हैं ?

हाँ भन्ते।

सुमीम ! देखते हो कि जाति का निरोध होने से जरामरण का निरोध होता है ?

हाँ मन्त !

ु मुसीम ! देखते हो कि मविया का निरीध होने से सरकारों का निरीध हो जाता है।

हाँ भन्ते ।

सुसीस ! ज्या तुमने पेसा बावते जार नेवारे हुवे अनेक प्रकार की क्षत्रियों को प्राप्त कर किया है ? कि एक हो कर बहुत हो बामा [किन्हें सुसीस ने डम मिहाकी से पूछा या]

नहीं सम्त !

सुनीस ! ऐसा कहना भी और इस बसों को न पा केना सी-सुनीस ! वही हमने किया है ।

ਚ

त्व, कायुष्पाव सुनीस भाषान् के वार्णी पर सिर से प्रवास करक वोके—बात स्ट अङ्गक के ऐसा प्रमुख से भगराव को गया कि सैने ऐसे वर्ग-वितव में चोर के एसा प्रवन्तित हुआ। मन्ता ! मतावार् के पान में अपना कपराध न्वीकार करता हूँ। मो नगवाच सुने क्षमा कर हैं। सविष्य में भूसा नहीं कर्षा ।

सुसीस ! शुप्तने दीक में बका अवराध किया है।

पुनाम । जैसे कोग किमी जोर था त्रोजी की पण्ड कर राजा के शास के बार्च जीर कहूँ—देव ! सुमीम । जैसे कोग किमी जोर था त्रोजी की पण्ड कर राजा के शास के बार्च जीर कहूँ—देव ! सह प्राप्ता जोर दोगी हैं। जार जमा जाह हुई रूप हैं। तब राजा कहूँ—जाबी हुसके हुम्मी को पीछे करके रस्मी स कम कर जाँच हो आवा शहु दो विकास कीर कोटत हुम एक गड़ी से दूसरी गर्छ और एक कीराई म दूसरे जीराई क जाते हुए दिख्यन के काटक संविकास कर थार के दिख्यन और हुमका सिर काट हो। इस कोग विमे ही के जाकर उसका मिर काट हैं।

मुसीम ! ती क्या समझते हो उस पुरुष को उसम पुत्क वैचेनी हागी था नहीं !

मन्ते ! अवस्य हांगी ।

सुसीम ! उस पुष्प को बुल्प हो था नहीं हो किन्तु को चोर की साद इस धर्म-विवय में प्रवस्ति

हात है उन्हें अधिकाधिक दुःग भोगना होता है। वह नरक में पहता है।

मुमीम ! बो तुम अपने अपराय का अपरांध ममझण्यीकार का रहे हो इसकिये इस अमा कर इमें हैं ! मुमीम ! आपै-विजय में उमकी हृति ही है जो अपने अपराय का चर्मानुकृत मायमिस का हैया है और महित्य में न काने का संकृत्य का हैता है।

महाचग समाप्त

आठवाँ भाग

श्रमण-बाह्मण वर्ग

६ १. पचय सुत्त (१२.८ १)

परमार्थवाता श्रमण-ब्राह्मण

ऐसा मेने सुना ।

एक समय भगवान श्रावस्ती में अनाधिपिण्डिक के जेतवन आराम में बिटार करते थे।

•• भगवान् योले-भिक्षुओं । जो श्रमण या बाह्मण जरामरण की नहीं जानते हैं, जरामरण के समुद्रय को नहीं जानते हैं, जरामरण के निरोध को नहीं जानते हैं, जरामरण के निरोध गिमिण के नहीं जानते हैं, जरामरण के निरोध गिमिण के मिल्ला के परमार्थ को इसी जन्म में स्वयं जान, साक्षण कर, और बाह्म कर विहार नहीं करते हैं।

भिक्षुओं । जो श्रमण या बाह्मण जरामरण को जानते हैं, उन्हीं श्रमणों में श्रामण्य और बाह्मणों में बाह्मण्य है। वे आयुष्मान श्रमण या बाह्मण के परमार्थ को ह्मी जन्म में म्वय जान कर विहार करते है।

§ २-१०, पचय सुत्त (१२.८, २-१०)

परमार्थवाता श्रमण-ब्राह्मण

आवमी 'जेतवन मे।

जाति को नहीं जानता हु।

भव को नहीं जानता है ।

उपादान को नहीं जानता है

तृष्मा को नहीं जानता है

वेदना को नहीं जानता है।

स्पर्शको नहीं जानता है।

पदायतन को नहीं जानता है । नामरूप को नहीं जानता है ।

विज्ञान को नहीं जानता है

§ ११. पचय सुत्त (१२ ८. ११)

परमार्थज्ञाता अमण-ब्राह्मण

सस्कार को नहीं जानता है ।

श्रमण ब्राह्मण वर्ग समाप्त ।

नवाँ भाग

अन्तर पेरवाल

६१ सत्था मुच (१२ ९ १)

यथार्चज्ञान के छिप दुख की श्रोज

मिश्चना ! बरासरण का न बालते हुए, न देवाते हुए, बराधरब कं धवार्य ज्ञान के किए इन्ह की लोब कानी चाहिये ! समुद्रय निरोध कीर प्रतिपदा कं धयार्थ ज्ञान के किए ज्ञन की खोड करनी चाहिए ! यह पहला सुवान्त है !

सभी में इसी मौति समझ सना चाहिए।

मिसुमी ! जाति को न जानते हुए ।

सिक्षुणी | भाव वयादाण युष्या बेदना स्वर्गा पदायतम नासस्य विद्यान संस्कार को नजानते द्वय चुद्ध की कोज करनी चाहिये।

§ २ सिक्खा सुच (१२ ९ २)

यथार्थबान क खिप शिक्षा सेना

भिश्वनी ! बरासरण को न जानत हुए । बरासरण कं यथार्थ-जान के किये सिक्षा क्षेत्री चाहिय । [कपर क स्पन्न के समान ही । "बुद्ध की लोज करणी चाहिय" के क्यान पर "शिक्षा सभी चाहिये]

६३ योग सुत्त (१२ ९ ३)

यधार्थकान के लिए वाग फरना

वाग करता चारिय। हु ४ इटन्द्र सुच (१०९८)

यद्यार्थज्ञान के लिए छन्द करना

प्रन्त् करना चाहिये।

शंभाद कामा चाहित ।

🕯 ५ उस्सोरिइ सुच (१२ ९ ५)

यथार्धज्ञान के मिए उत्ताह करना

६ ६ अप्पटिवानिय सत्त (१२ ९ ६)

वधार्यद्यान के सिप पीछ न सीरना ...कंफे न मीरना कारने !

> १७ आतप्प गुत्त (१० ९ ७) यक्तकान च वित्र क्रांग करना

,... प्रधार करना कहिये ।

§ ८. विरिय सुत्त (१२. ९ ८)

यथार्थ द्वान के लिए वीर्य करना

.. वीर्य करना चाहिये।

६ ९. सातच सुत्त (१२ ९. ९)

यथार्थ ज्ञान के लिए सतत परिश्रम करना

अध्यवसाय करना चाहिये।

६ १०, सित सुत्त (१२, ५ १०)

यथार्थ ज्ञान के लिए स्मृति करना

.. स्मृति करनी चाहिये।

§ ११. सम्पजञ्ञ सुत्त (१२. ९ ११)

यथार्थ ज्ञान के लिए संप्रज्ञ रहना

मप्रज्ञ रहना चाहिये।

§ १२. अप्पमाद सुत्त (१२. ९. १२)

यथार्थ ज्ञान के लिए अप्रमादी होना

अप्रमाद करना चाहिये।

अन्तर पेष्यालं वर्ग समाप्त।

नवाँ भाग

अन्मर पेरवाल

ह १ सत्या सुच (१२ ९ १) यथार्यज्ञान के छिप वस को खोज

मिञ्चला ! बराधरण को प कानते हुए, न बेपन हुए, बराधरण प स्रोब करणी आहिते । सञ्चरण निरोध और प्रतिपदा के पकार्य ज्ञान वाहिए । यह पहकर सुकान्त है ।

समी में इसी भाँति समझ हेना चाहिए।

निश्चको ! काति को न नावते हुए ।

निधुमी | सद उपादान शुव्या बंदना विज्ञान संस्कार को नवानत हुए शुद्ध की कोज करनी

§ २ सिक्डासुच (

यथार्यकान के स्थित सिक्षण (बरामान को न बानत इस वरामा

्रियर के सूत्र के समात्र ही। अभी वाहिये']

8 ३ योग

यधार्थका

बोग करका चाहिये।

্ পুৰু

ग्रन्द करता श्राहिये ।

8 4

उत्साह कामा चा

8

पीछे न बीडम

भिक्षुओ । जैसे, जहाँ महानदियों का सगम होता है—जैसे गंगा, यमुना, अचिरवती, सरभू, मही नदियों का—वहाँ से कोई पुरुप दो या तीन वूँद पानी निकाल छे।

भिक्षुओं ! तो क्या समझते हो [अपर के सूत्र जैसा]

§ ४. सम्सेज्जउद्क सुत्त (१२. १०. ४)

महानदियां के संगम से तुलना

श्रावस्ती जेतवन" मे।

भिक्षुओ ! जैसे, नहीं महानिदयों का संगम होता है.. वहाँ का जल सूख कर खतम हो जाय, केवल कुछ बूँद यच जाय ।

भिक्षुओ ! तो क्या समझते हो.. ।

§ ५. पठवी सुत्त (१२. १०. ५)

पृथ्वी से तुलना

श्रावस्ती जेतवन 'मे।

मिक्षुओं । कोई पुरुप वैर के बराबर पृथ्वी पर सात गोलियाँ फेंक है । तो कौन बहा है, वैर के बराबर मात गोलियाँ या महापृथ्वी ° १

·[पूर्ववत्]

§ ६. पठवी सुत्त (१२. १०. ६)

पृथ्वी से तुलना

श्रावस्ती जेतवन में।

भिक्षुओं ! जैसे महापृथ्वी नष्ट हो जाय, खतम हो जाय, वैर के वरावर सात गोलियों को छोदकर।

§ ७. समुद्द सुत्त (१२ १० ७)

समुद्र से तुलना

श्रावस्ती जेतवन"में।

मिक्षुओ ! जैसे, कोई पुरुष महासमुद्र से दो या तीन पानी के बूँट निकाल ले . ।

§ ८. समुद्द सुत्त (१२. १०. ८)

समुद्र से तुलना

श्रावस्ती जेतवन में।

मिश्रुओ ! जैसे, महासमुद्र सूख कर खतम हो जाय, दो या तीन पानी के घूँद छोडकर । सिश्रुओ ! तो क्या समझते हो ।

§ ९. पब्बत सुत्त (१२. १०. ९)

पर्वत की उपमा

श्रावस्ती जेतवन में।

दशवाँ माग

अभिसमय धर्ग

[§] १ नखसिख ग्रुच (१२ १० १)

धोतापच के दृश्य अत्यस्य है

पुसा मैंने सना ।

एक समय भगवान् आयस्ती में अनाधिपिण्डक क जेतवन काराम में विहार करत वे ।

देव सगवाम् ने अपने वस के कपर एक पाट्यूबा कन रार सिद्धमाँ ने वासनित क्या— सिद्धनों क्या समझते हो कीन क्वा है पह बाद्यूका छोटा कम किसे सेवे अपने नक पर स्व किया है पा सहायुक्ती है

ं सन्ते ! महाप्रम्मी ही बहुत क्यी है। आधान में जिस मात्र,रूप को अपन गरा पर एक किया है

बह तो बहा अहबा है । बह महाप्रका का कावार्य माग मी बही है ।

सिक्षणी ! मैदा ही पहिसानका जानी आर्यभावक का वह तुस्य वदा है भी श्रीन हो गया = कर गया, जो बचा है यह तो अत्यन्त अस्पताद है ; यूचे के श्रीन हो गर्येन्ट्रद गये उस तुम्द स्कन्य के सामने यह बचा हुना हुन्य को अविक से अविक सात कम्मी तक यह सकता है आर्यवर्गभाय भी नहीं है।

िमिसुमा 🕻 चर्म का ज्ञान हो काना इतना नवा परमार्थ का 🕏 चर्म चस्रु का प्रतिकास इतना नवा

परमार्च का है।

[§] २ पोवसरणी श्चच (१२ ९० °)

स्रोतापण के तुःश शत्यस्य 🕻

भाषस्ती खेतवन" में।

भिञ्चलों ! पवास कोकल कानी पवास बोजन वीडी और पवास बोजन नाहरी पायों से कमारून समी बीटूं पुण्डीणी हो कि किसके कियारे बैठ कर कीमा जी वाली पी सकता हो ! सब डोई प्रवय वस पुण्डीकी से कुमार से कुछ पायों निवास के !

मिञ्जूनों ! यो क्या समझते हो। कुमान्न में आबे सकत्रण में अविक पानी है वा प्रकारियों में ?

मन्ते ! क्याम में माने कककम से पुष्करियों का पानी अवस्य कथिक है। यह तो वसका काकरों भाग भी नहीं उदस्या है।

मिश्चनी ! वैसे ही परिसम्बन्ध जानी आर्वजावक [अपर के सूच के पंचा हरे]

६ रे सम्मेज्जातर्क प्रच (१२ १० १)

महानवियों के संगम से तुखना

भावस्ती 'बोतवन में।

दूसरा परिच्छेद

१३. धातु-संयुत्त

पहला भाग

नानात्व वर्श

(आध्यातम पञ्चक)

§ १. धातु सुत्त (१३ १,१)

धात की विभिन्नता

श्रावस्ती जेतवन में।

भिक्षुओं । धातु के नानात्व पर उपदेश करूँगा । उसे सुनो, अव्छी तरह मन लगाओं, में कहता हूँ । ''भन्ते । बहुत अच्छा'' कह, भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

भगवान् वोले--भिक्षुओं । धातु का नानात्व क्या है १

चञ्जुधातु, रूपधातु, चञ्जुविज्ञान धातु । श्रोत्रधातु, शब्दधातु, श्रोत्रविज्ञान धातु । प्राणधातु, गन्धधातु, घ्राणविज्ञान धातु । जिह्ना धातु, रसधातु, जिह्नाविज्ञानधातु । कायधातु, स्पृष्टन्य धातु, काय-विज्ञानघातु । मनोधातु, मनोविज्ञानघातु ।

भिक्षु भो । इसी को धातुनानात्व कहते हैं।

§ २. सम्फरस सुत्त (१३ १ २)

स्पर्श की विभिन्नता

थावस्ती' जेतवन में।

भिक्षुओ । धातुनानात्व के होने से स्पर्शनानात्व होता है।

भिक्षुओं । धातुनानात्व क्या है ?

चक्षुधातु, श्रोत्रधातु, घ्राणधातु ।

भिक्षुओ । धातुनानास्य के होने से स्पर्शनानास्य कैसे उत्पन्न होता है ?

भिक्षुको । चक्षुचातु के होने से चक्षुसस्पर्श उत्पन्न होता है । श्रोत्रसस्पर्श उत्पन्न होता है । घाणसस्पर्श उत्पन्न होता है। "जिह्नासस्पर्श उत्पन्न होता है। कायसस्पर्श उत्पन्न होता है।" मन -सस्पर्शं उत्पन्न होता है।

भिक्षुओं ! इस प्रकार, घातुनानास्व के होने से स्पर्शनानास्व उत्पन्न होता हैं।

§ ३. नो चेतं सुत्त (१३ १ ३)

घातु विभिन्नता से स्पर्श विभिन्नता

श्रावस्ती जेतवन में। २५२] संयक्त-निकाय [82 to 18 भिमुमी ! जसे, कोई पुरुष पवतराज हिमारूच से नात सरमों द बरावर बंदद के ले ! मिमुमी ! हो द्या समझत हो "!

§ १० पम्बत स्च (१ १० १०)

वर्चत की वपमा

धायस्त्री जेतवस में। भिताओं ! जैसे पर्वतराज हिमास्त्रय नद हो जाब नातम हो जाब मात भरतों के बरावर कंकर **ए इक्ट । मिश्रको ! तो क्या समझते हो** ।

र्देश पब्बस सत्त (१० १० ११)

पर्यंत की उपमा

धायस्त्री 'डेतयन में।

मिलुओ । जैसे पर्वतराज सुनार स कोई पुरुष साल मूँग क बराबर कंकर केंक है। सिलुओं !

ता रपा समाने हा पश्चतात समेद वहा होता वा दे साव मैंग के बहादर बंदद है

भन्ते ! प्यतराज सुमेठ ही जन नात मूँग ने बतावर चंडड़ों से बड़ा होगा । वे तो इसका

मालवाँ भाग बही हो सक्ते ।

मिल्ला दे वर्ष ही रहिमाराज जानी आये सावड का यह बुल्प बबा है जो झीम हो गवामण्ड

गया; भीवता है यह तो अध्यान अध्यात है। पूर्व के क्षीण हो गरे≥कर गये उस हाल स्वन्ध के सामने बह बचा हुना दुन्य जो अधिक म नविक मान जन्मों तक रह मठता है" न्यायवाँ भाग भी नहीं है।

भमिममय मंतुत्त समाप्त

भिधुनो । श्रोत्रघातु मनोधातु ।

भिक्षुना । इसी तरह, धातुनानात्व के होने से स्पर्शनानात्व उत्पन्न होता है; स्पर्शनानात्व के होने से नेपर्शनानात्व उत्पन्न नहीं होता है, स्पर्शनानात्व के होने से नपर्शनानात्व उत्पन्न नहीं होता है, स्पर्शनानात्व के होने से पातुनानात्व नहीं होता है, स्पर्शनानात्व के होने से पातुनानात्व नहीं होता है।

(घाह्य पञ्चक)

ू ६, धातु मुत्त (१३, १, ६)

श्रातु की विभिन्नता

थायस्ती'' जेतवन में।

भिधुनो । धातुनानास्य के विषय में उपदेश करू गा। उसे सुनो, अच्छी तरह मन लगाओं, में कहता हूँ।

भिक्षुनों । धातुनानात्व वया है ? रूपधातु, शब्दधातु, गम्धधातु, रसधातु, स्पृष्टव्यधातु और धर्मधातु ।

भिधुओ ! इसी को कहते हैं धातुनानास्य।

🖇 ७. सञ्जा सुत्त (१३ १ ७)

संवा की विभिन्नता

श्रावस्ती'' जेतवन में।

शिक्षुओं । धातुनानास्य के होने से संज्ञानानास्य उथ्पन्न होता हे। सज्ञानानास्य के होने से सकत्वनानास्य उत्पन्न होता है। उन्दनानास्य के होने से उन्दनानास्य उत्पन्न होता है। उन्दनानास्य के होने से उन्दनानास्य के होने से हदय में तरह-तरह की छ उगन पदा होती है। तरह-तरह की छगन पैदा होने से (उसकी पूर्ति के छिये) तरह-तरह के यस होते है।

भिक्षुओं ! धातुनानात्व क्या हे ? रूपधातु धर्मधातु ।

भिधुओ । कैसे तरह तरह की लगन पैटा होने से (उसकी प्रिंत के लिये) तरह-तरह के यह होते हैं ?

भिक्षुओं! रूपधातु के होने से रूपसज्ञा उथपन्न होती है। रूपसज्ञा के होने से रूपसकरप उत्पन्न होता हैं। । रूप में तरह-तरह की लगन पैदा होने से (उसकी पूर्ति के लिये) तरह-तरह के यत्न होते हैं ?

धर्मधातु के होने से ।

भिक्षुओं ! इसी तरह, धातुनानात्व के होने से सज्ञानानात्व होता है।

§ ८. नो चेतं सुत्त (१३. १ ८)

धातु की विभिन्नता से संज्ञा की विभिन्नता

थावस्ती जेतवन मे।

तरह-तरह के यक होने से तरह-तरह की छगन पैदा नहीं होती है। तरह-तरह की छगन

थ परिलाइनानत्त=िकसी चीज के पाने के लिये द्वृदय में एक लगन ।

188.8 4 मिल्ला । चातुनामारम के होने से स्पर्शमानात्व उत्पद्म होता है। यह गडी कि स्पर्शनानात्व के होने

से प्रातनावास्त्र प्रत्यवा हो ।

सिद्धमो । चातुनानास्य पश है ? बधुमात् सबोबातु । सिद्धमो । इसी का करते हैं चातुनानास्य । पिताओं ! भातनानात्व के होने से स्पर्धनानात्व कैसे होता है, और वह तहीं कि स्पर्धनामात्व के होने सं पात्रवानास्य हो १

मिल्ला । कल्यात के होने से कलसंस्पर्य उत्पन्नहोता है। कलसंस्पर्य के होने से कल्यात उत्पन महीं होता । । महोचात के संस्थतें होते से महासंस्थर्त प्रताब होता है। सहासंस्थाने के होते से महाचात बत्पन्न नहीं होता ।

मिझमो ! इसी प्रकार, शतानानात्व के होने में व्यवीतानात्व बत्यन हाता है। स्वर्धनामात्व के होने से पातवानास्य नहीं होता है।

३४ प्रस्य वेदना सत्त (१३ १ ४)

वेदमा की विभिन्नता

भाषकी जेतकत है।

मिश्रमी ! बातनाभारत के होने से स्पर्धनावास्त्र करवस होता है । स्वर्धवानास्त्र के होने से बेदवा माबारक प्रत्यक्ष क्षेत्रा है।

भिक्षको । पातुकाशस्य क्या है ? वक्षपाधः मनोपात ।

मिझनो ! बातुनाबारत के होने से स्वर्गानानास्य कैमे चलक होता है और स्वर्मनाबारव के होने ल केन्द्रमानानारच कैसे चत्यच होता है ?

मिश्रुची ! बहुबान के होते से बहु-सस्पर्ध बरपक होता है । बहु संस्पृत्त के होने से बहु-संस्प र्षात्रा बैदना अत्यन होती है। । अनोपात के होने से अन्तर्शस्पर्य उत्पन्न होता है। अनासंस्पर्ध है होने में समर्त्यस्पर्धंका बेहवा बरएक होती है।

मिसाओं ! इसी तरह बातानानात्व के होने से श्यर्शनानात्व बत्यब होता है। स्पर्शनानात्व के होने से बेदनामाबस्य जरपह होता है।

६ ५ द्रतिय वेदना सच (१३ १ ५)

बेदना की विभिन्नता

भायस्ती जतवन में ।

विकाली ! कारानालास्य के द्रोते से स्पर्सनामास्य अस्पन्न होता है । स्पर्सनामास्य के होने से वेड्या मानात्व प्रत्यक्ष होता है । बेहना-नामात्व के होने में न्यर्शनामात्व नहीं होता है । स्वर्धनामात्व के होने में पाननाशास्त्र नहीं दोता है।

मिल्लो । यात्रकाशस्य क्या है ? याद्र ... सब

मिलाभी । यानुशासारव के दोने से व्यर्शनामास्त्र कैसे उत्पत्त बोला है। स्वर्शनामास्त्र के होने में केरमा-मानास्य अध्यक्ष क्षीता है। बेरुमामानास्य के होने से न्यर्शनामास्य कावस नहीं होता। स्यर्शनामान्य के होने में पानुवानात्व नहीं होता है है

बिहाओं ! क्यापाल के हाने से चलसंदर्श उत्पन्न होता है । क्यासंदर्श क हाने स क्यासंदर्शना मेरूना बराब बाती है। चतुर्नन्वर्गमा बेरूना के बाने में चतुर्मन्वर्ग नहीं ब्रोता है। चतुर्मन्वर्ग के बीने बराधान क्षत्र मही दीना।

भिक्षुओ । श्रोत्रधातु मनोधातु"।

भिक्षुओं। इसी तरह, धातुनानात्व के होने से स्पर्शनानात्व उत्पन्न होता है, स्पर्शनानात्व के होने से वेदनानानात्व उत्पन्न होता है। वेदनानानात्व के होने से स्पर्शनानात्व उत्पन्न नहीं होता है, स्पर्शनानात्व के होने से धातुनानात्व नहीं होता है।

(बाह्य पञ्चक)

६ ६. धातु सुत्त (१३ १. ६)

थातु की विभिन्नता

श्रावस्ती'' जेतवन मे ।

भिक्षुओ । धातुनानास्व के विषय में उपदेश करूँगा। उसे सुनो, अच्छी तरह मन लगाओ, में कहता हूँ।

भिक्षुओं ! धातुनानास्त्र क्या है ? रूपधातु, शब्दधातु, गम्धधातु, रसधातु, स्प्रप्रव्यधातु और धर्मधातु ।

भिक्षभो ! इसी को कहते हैं धातुनानास्व।

९७. सञ्जा सुत्त (१३ १.७)

संवा की विभिन्नता

श्रावस्ती' जेतवन में।

भिक्षुओ ! धातुनानात्व के होने से सज्ञानानात्व उत्पन्न होता है। सज्ञानानात्व के होने से सक्क्ष्यनानात्व उत्पन्न होता है। सक्कष्यनानात्व के होने से छन्दनानात्व उत्पन्न होता है। छन्दनानात्व के होने से छन्दनानात्व उत्पन्न होता है। छन्दनानात्व के होने से हदय में तरह-तरह की छगन पैदा होती है। तरह-तरह की छगन पैदा होने से (उसकी पूर्ति के छिये) तरह-तरह के यन होते है।

भिक्षुओ । धातुनानास्व क्या है ? रूपधातु धर्मधातु ।

भिक्षुओ । कैसे तरह-तरह की लगन पैदा होने से (उसकी पूर्ति के लिये) तरह तरह के यह होते हैं ?

थिक्षुओं । रूपधातु के होने से रूपसंज्ञा उत्पन्न होती है। रूपसज्ञा के होने से रूपसकरप उत्पन्न होता है। । रूप में तरह-तरह की लगन पैदा होने से (उसकी पूर्ति के लिये) तरह-तरह के यन होते हैं ?

धर्मधातु के होने से ।

भिक्षुओं । इसी तरह, धातुनानास्व के होने से सज्ञानानास्व होता हैं।

§ ८. नो चेतं सुत्त (१३. १. ८)

धातु की विभिन्नता से संद्या की विभिन्नता

श्रावस्ती जेतवन मे।

. तरह-तरह के यक्ष होने से तरह-तरह की लगन पैदा नहीं होती है। तरह-तरह की लगन

६ परिलाइनानच=िकसी चीज के पाने के लिये द्वटय में एक लगन।

पैदा होने से सम्भूतानारव करवह नहीं होता । सम्बूतावारव ६ होने से संबद्धपायारव स्टाप्स नहीं होता । सरस्यानारव के होने से संज्ञानानारव नहीं होता । संज्ञानानारव के होने से पातुनानारव महीं होता ।

सिञ्चनी ! पातुनानास्य क्या है ? इत्यवातुः धर्मभातुः ।

मिसुको | कैसे चातुनानात्व के होने से संज्ञानात्वात्व उत्पन्न होता हूं । जार [प्रतिकोसनस स वह श्रीक मही होता है] संज्ञानात्व के होते से चातनात्वात्व यहीं होता है ।

मिमुको । इत्यान इ होने से इत संका उत्तक होती है। इत में तरह-तरह की काम पैदा होने से (उसती पूर्ति के किये) तरह-तरह के पक्ष होते हैं। तरह-तरह के पक्ष होने से तरह-तरह की काम पैदा बारी होती है। संज्ञानमानक के होने से सालनामानक करण वर्ती होता है।

सद्द्रवास् । सम्बद्धात् " । सस्यास् । श्रष्टव्यवात् " । वर्गवात् ।

त्वन्याः । नार्याचाः । नार्याचाः । नार्याः । नार्यः । नार्याः । न

६९ परम फस्स सच (१३ १९)

विभिन्न प्रकार के काम के कारण

भावस्ती 'जेतवन में।

मिह्नबी ! प्रातुमात्वाच के होने सं संशानाताच्य उत्तर होता है । संशानाताच्य क होन से संक्रम नाताच्य उत्तर होता है। स्वक्रमक्यात्व के होने से स्वर्शनावाच्य उत्तर होता है। स्वर्मनाताच्य के होने से देवानाच्य उत्तर होता है। स्वर्मनाताच्य के होने से से देवानाच्या उत्तर होता है। से देवानाच्य के होने से स्वर्म में तरह तरह की काम पैता होती है। तरह तरह के क्या पैता होती है। तरह तरह के स्वर्मन से तरह तरह की काम पैता होती है। तरह तरह के स्वर्मन से तरह तरह की काम होते हैं। तरह तरह के स्वर्मन से तरह तरह की स्वर्मन से तरह तरह के स्वर्मन होते हैं।

भिद्धमो । बाद्यकाल्य क्या है ? कपवातः वर्शवादः ।

मिम्नी ! इस शरह-तरह की छमन पदा होने से तरह-तरह के पत्र होते हैं !

मिहानों ! क्यानात के दोन 11 क्यानंता जायक होती है। क्यानंता के दोन म क्यानंत्रका कंपन होता है। क्यानंत्रका के होने से क्यानंत्रमाँ वायक होता है। क्यानंत्रमाँ के दोने से क्यानंत्रमाँका बंदना होती है। क्यानंत्रमाँका बेदना के होने से क्याकश जायन होता है। क्याकन के होने से क्यानें तरह तरह की काम देवा होती है। क्यानें तरह के क्यान देवा होने से संदर्शनतह के यह होते हैं। क्या में तरह तरह के क्यानें में क्या के तरहनतह के क्यान होते हैं।

शस्त्र कातः कर्मचातः ।

मिसुस्री दुव्यी तरह पातुमानात्व के होने श श्लंका-मानात्व करनक होतर है । । तरह-तरह के बाज होने सं तरह-तरह के बाज होते हैं ।

६ १० द्वतिय कस्त सच (१६ १ १०)

चातु की विभिन्नता से ही संदा की विभिन्नना

भाषस्ती "कतत्त्व में ।

कारका स्वयंत्र में ।

मिद्वानी विद्युवन में ।

मिद्वानी विद्युवन में ।

मिद्वानी विद्युवन में ।

स्वयंत्र में स्वयंत्र में स्वयंत्र के स्वयंत्र मिद्र । स्वयंत्र । स्वयंत्र । स्वयं ।

भिनुभो । धानुनानाम्य ४पा ई १ रूप...धर्म ..।

भिधुओ । केवं धातुमानास्य के होने से सङ्घनामास्य उत्पन्न होता है । .। सङ्घानामास्य के होते से धातुनानाय उत्पत्त नहीं होता ?

भितुको । राषपारु पे होने से रायमझा उत्तम होनी है।

शब्द्धातु .धर्मधातु ..।

भिधुओं ! इसी सरह, धातुनानास्य य धाने से सञ्चानानास्य उपत्र होता है।..। संज्ञानानास्य के होने से धातुनानास्य अस्पत्र नहीं होता ।

नानात्ववर्ग समाप्त ।

दूसरा भाग

द्वितीय वर्ग

§१ सिनमं सुत्त (१३ ८ १)

सात धानवें

याएका-असवन में।

मिसुनी ! यातु यह सात हैं।

श्चीन संसात १ (१) आभाषातु (१) श्वायपातु, (१) श्वायपात् पातु, (१) विज्ञानानन्यायतन यातु, (५) साक्ष्यिन्यायत्व यातु, (१) त्रैवसंशानासञ्चयतम यातु (७) संगावद्यियतिरोप यातु।

मिशुमी ! वही सात बातु है।

िम्हु | को स्थानाशाह है वह अन्यकार के मत्वय से बाना जाता है। को हुमधाह दे यह महुम के मत्वय से बाना काता है। को आकासावज्ञायतन चातु है वह रूप के प्रत्यय से बाना जाता है। को विकाशनन्वायतन याद है वह आकासावन्वायतन के प्रत्यव से जाना बाता है। को आकिन्वन्यायतन याद है वह विज्ञाननन्वायतम के प्रत्यय से जाना बाता है। को नेवार्गहाससंदान्यतय पातु है वह स्वर्धि-क्ष्यायतन के प्रत्यय से बाना बाता है। को संज्ञावेष्यितियोगियो पातु है वह विशेष के प्रावय से जाना क्षया है।

मन्ते ! इन साव पातुनी की प्राप्ति कैस होती है ?

मिश्च ! वो व्यामांवात, सुमयात, व्यावातानंवातनं वात, विद्यावानंव्यावतनं पात, वाकिन्याना यदन-पात है वयकी मासि सजा से होती है।

मिह ! को नैवर्शकानासंज्ञानतम् चातुर्वे यद् संस्कारी के विकास अवसिष्ट हो जाने से प्राप्त दोदा है।

मिद्ध ! वो संशानेविधानिरोध बाह्य है वह निरोध के 🖹 बाने से ग्राप्त होता है ।

🖁 २ सनिदान मुच (१३ २ २)

कारण से दी कार्य

भावस्ती जेतदन में।

सिद्धणी ! कामितवर्षे किसी निवाल से सी बोधा है, विवा निवाल के नदी । व्यापायनिवार्ष जिसी निवाल से भी बीधा है विचा निवाल के नदी । विविद्यानिवार्ष किसी निवाल से वी दोधा है, विवा निवाल के नदीं !

भिञ्चनां केते १

सिक्षुओं । कामधातु के प्रत्यय से कामसज्ञा उत्पन्न होती हैं । कामसज्ञा के प्रत्यय से कामसंकल्प उत्पन्न होता है । कामसक्तर के प्रत्यय से काम की ओर एक लगन पेदा होती है । काम की ओर एक लगन पेदा होती है । काम की ओर एक लगन पेदा होने के प्रत्यय से काम की प्राप्ति के लिये यत्न होता है । भिक्षुओं । काम की प्राप्ति के लिये यत्न करते रह अविद्वान् एथक जन तीन जगह मिथ्या प्रतिपत्न होता है — शरीर से, यचन से और मन मे ।

भिक्षमो । स्यापाद्धातु के मत्यय से न्यापाद्सजा उत्पन्न होती है "।

भिक्षुओ ! विहिंसाधातु के प्रत्यय से विहिंसार्धज्ञा उत्पन्न होती है ।

भिक्षुओ । जैसे, कोई पुरुप वलती हुई एक लुकारी को सूखी घासा की ढेर पर फैंक है। उसे हाथ या पैर से शोध ही पीट कर बुझा न दे। भिक्षुओ ! इस प्रकार, घास लक्ष्ड़ी में रहने वाले प्राणी वहीं विपत्ति में पढ़ जायँ, मर जायँ।

भिक्षुओ। वैसे ही, जो अमण या बाहाण पैदा बुरी-बुरी सज्ञा को शीघ्र ही छोड़ नहीं देता, दूर नहीं कर देता विल्कुल उडा नहीं देता है, वह इसी जन्म में दु खपूर्वक विहार करता है, विधातपूर्वक, उपायासपूर्वक, परिलाहपूर्वक। शारीर छोड सरने के नाट उसे बडी दुर्गित प्राप्त होती है।

भिक्षुओ ! निदान से ही नैप्क्रम्य-वितर्क (= त्याग वितर्क) उत्पन्न होता है, विना निदान के नहीं । निदान से ही अध्यापाद्वितर्क उत्पन्न होता है, विना निदान के नहीं । निदान से ही अविहिंसा-वितर्क उत्पन्न होता है, विना निदान के नहीं ।

भिक्षुओं । यह कैसे ?

भिक्षुओ ! नैष्क्रम्यधातु (= ससार का त्याग) के प्रत्यय से नैष्क्रस्यसज्ञा उत्पन्न होती है। • नैष्क्रम्य-सकल्प । नैष्क्रम्य-उन्द • । रुगन । यत्न । भिक्षुओ ! नैष्क्रम्य का यत्न करते हुये विद्वान् आर्यश्रावक तीन जगह सम्यक् प्रतिपन्न होता है—शरीर से, वचन से, मन से।

भिक्षभो । भन्यापादघातु , भविहिंसाघातु ।

भिञ्जुओं ! जैसे, कोई पुरुष बलती हुई एक लुकारी को सूखी चासो की हेर पर फैंक दे। उसे हाथ या पैर से शीब्र ही पीटकर बुझा है । भिक्षुओं ! इस प्रकार, घाम लकड़ी में रहनेवाले प्राणी विपत्ति में न पड़ जायें, न मर जायें ।

भिक्षुओ ! वैसे ही जो अमण या बाह्मण पैदा हुई बुरी संज्ञा को शीब्र ही छोड़ देता है=रूर कर देता है=विच्कुल उदा देता है, वह इसी जन्म में सुखपूर्वक विहार करता है, विद्यातरहित, उपायासरहित, परिलाहरहित । शरीर छोड़ मरने के बाद उसकी अच्छी गिति होती है ।

§ २. गिझकावसथ सुत्त (१३ २ ३)

धातु के कारण ही संजा, दृष्टि तथा वितर्क की उत्पत्ति

एक समय भगवान् आतिकों के साथ गिलकाषसयक्ष में विहार करते थे। भगवान् बोले—भिञ्जलो। घातु के प्रत्यय से सज्ञा उत्पन्न होती है, वितर्क उत्पन्न होता है।

ऐसा कहने पर, आयुष्मान् श्रद्धाल कात्यायन भगवान् से बोले — भन्ते ! बुद्धत्व न प्राप्त किये हुये लोगों में जो दृष्टि होती है वह कैसे जानी जाती है ?

कारयायतन । यह जो अविद्या-धातु है सो एक बढ़ी धातु है।

कात्यायन ! हीन धातु के प्रत्यय से हीन सज्ञा, इहीन दृष्टि, हीन वितर्क, हीन चेतना, हीन अभिलापा, हीन प्रणिधि, हीन पुरुष, हीन वचन उत्पन्न होते हैं। वह हीन वार्ते करता है, हीन उपदेश

छईंटों से बनो हुई वाला—अद्वक्था ।

संयत्त-निकाय

वेता है हीन प्रकारम करता है शीम पक्ष की न्यापना करता है शीन विवरण देता है, शीन विभाग करता है बीन समझता है। इसकी उत्पत्ति भी बीन बोती है---पेसा मैं कहता हैं।

कारपायन ! सत्यस बात के प्रत्यय क सध्यस संज्ञा । उसकी बत्यति भी सध्यम होती है-

येमा मैं श्वदता हैं।

कात्यायन ! उत्तम बात के बरवय से उत्तम संज्ञा । उसकी उत्पत्ति भी उत्तम होती है--ऐमा में कहता हैं।

६ ४ द्वीनाधिमित्ति सच (१३ २ ४)

भागमी के सनसार ही मेछजोछ का होना

धायस्त्री जेनवन में।

मिसमो । बात से सत्व सिकसिका में चकते और मिक्ते हैं । हीन प्रवृत्तिवासे सत्व होन प्रवृत्तिवाँ के साम ही सिकमिक्षा में चकते और मिक्ने हैं। कस्पाण (= अपक्री) प्रवृत्तिवाके सत्त्व कस्पाम प्रवृत्तिकों के साथ ही सिकसिका में चकते आर मिकते है।

मिश्रमो । अरोतकाक में भी चात हो से सस्य मिकसिका में चकते रहे और सिकत रहे ।

मिसमो ! स्थानतकाल में बी ।

भिक्तभो । इस समय में भी

८५ वक्कम सच (१३ २ ५)

धाप्त के मनुसार 🗗 सत्वों में ग्रेडजोड का दोगा

पुर समय भगवान् राजगृह में गुरुक्ट पर्वत पर विदार करते वे ।

उस समय आबुध्यान सारियन क्रम सिक्षानों के साथ धरावान से क्रम ही तुर पर चंत्रसम वर रहे थे।

मानुष्मान् सहासीहरूपायम् । सहाकाष्ट्रयपः । अनुरुद्धः । पुण्या सन्तामिपुत्रः । क्यांकि । आमन्त । वेसवस्य भी कुछ मिल्ला के नाथ मगवाप् से कुछ ही दूर पर चंक्रमण कर क्टे के ।

तव मगदान में मिहाजों को नामन्त्रित किया:---

मिसभी ! तम सारिप्तको इस निश्चलों के माथ चंद्रमन करते वैक्तते हो त ?

हाँ सन्ते ।

. मिस्रभी ! वे गमी मिझु वदे शक्कावाके हैं।

मिशाभी ! तम मीवक्वावन को क्रुड मिहाओं के साथ चंत्रमण करते देखते हो न !

र्डी भन्ते !

विश्वमो ! में सभी भिद्ध वह ऋदिवाड हैं।

भिद्राची ! तुस नाइवर को कुछ मिश्रुओं के साथ चंत्रसंग करते देखते हा व ?

हाँ मन्ते ।

मिश्रामो ! में सभी मिश्र चुताह बारण करनेताके हैं।

मिर्फो ! तुम जनुरुद्ध को कुछ मिलुओं के साथ चंत्रमध करते वैदाने दा व ! हाँ भाग १

मिशुओं ! वे सभी मिशु विवय वशुवासं हैं ।

भिक्षुओ ! तुम पुण्ण मन्तानिपुत्र को कुछ मिक्षुओं के साथ चक्रमण करते देखते हो न ? हाँ भन्ते !

भिक्षुओ ! वे सभी भिक्षु वडे धर्मकथिक है।

भिक्षुओ । तुम उपाछि को कुछ भिक्षुओं के साथ चंक्रमण करते देखते हो न ?

हाँ भन्ते !

भिक्षुओं । वे सभी भिक्षु वई विनयधर है ।

भिक्षुओ । तुम आनन्द को कुछ भिक्षुओं के साथ चक्रमण करते देखते हो न ?

हाँ भन्ते ।

भिक्षको । वे सभी भिक्ष वहुशुत है।

भिक्षुओं । तुम देवदत्त को कुछ भिक्षुओं के साथ चक्रमण करते देखते हो न ?

हाँ भनते !

भिक्षुओं । वे सभी भिक्षु पापेच्छ है।

भिक्षुओ । धातु से ही सत्व सिरुसिला में चलते और मिलते हैं । हीन प्रवृत्तिवाले सन्व हीन प्रवृत्तियों के साथ ही सिलसिला में चलते और मिलते हैं । कत्याण प्रवृत्तिवाले सन्व कल्याण प्रवृत्तियों के साथ ही सिलसिला में चलते और मिलते हैं ।

भिक्षुओं । अतीत में भी ', अनागत में भी , इस समय भी ।

§ ६. सगाथा सुत्त (१३. २. ६)

धातु के अनुसार ही मेळजोल का दोना

श्रावस्ती ' जेतवन में ।

क

भिक्षुओ । धातु से ही सत्व सिलसिला में चलते और मिलते हैं । हीन प्रवृत्तिवाले सत्व हीन मवृत्तियों के साथ ही सिलसिला में चलते और मिलते हैं ।

भिक्षुओ। अतीत में भी , अनागत मे भी , इस समय भी ।

भिश्रुओ ! जैसे, मैला मैले के सिलसिले में चला आता और मिल जाता है। मूत्र मूत्र के । यूक यूक के । पीव पीय के '। लहू लहू के । भिश्रुओ ! वैसे ही, हीनप्रवृत्तिवाले सत्व हीन-प्रवृत्तियों के साथ ही सिलसिला में चलते और मिलते हैं।

भिक्षुओं । अतीत में भी , अनागत में भी , इस समय भी ।

भिक्षुओं । धातु से ही सत्व सिल्सिले में आते और मिलते हैं। कल्याण प्रवृत्तिवाले सत्व कल्याण प्रवृत्तियों के साथ ही सिल्सिले में आते और मिलते हैं।

भिक्षुओं ! जैसे, दूध दूधके साथ, तेल तेल के साथ, घी घी के साथ, मधु मधु के साथ, तथा गुढ गुढ़ के साथ सिलसिले में आता है और मिलता है।

' भिक्षुओ । अतीत , अनागत' , इस समय । भगवान् यह बोले । इतना कहकर बुद्ध और भी बोले---

ससर्ग से पैदा हुआ राग का जगल, अससर्ग से काट दिया जाता है, थोदी सी लक्ष्मी के ऊपर चद्द कर, जैसे महासमुद्द में दूब जाता है, बैसे ही निकास आहमी के साथ रह कर साखु पुरुष भी हुए बाजा है ॥ इस्तिल बसका वर्जन कर हेना थाहिये, को निकस्मा और बीथै-सिंह्य पुरुष हैं। एकान्स में रहने वाले को आर्यपुरुष है, मिलास भीर भाग में रत रहने वाले, बिनासे सर्व उत्साह बगा रहता है

६७ अस्सद्ध सुच (१३ २ ७)

घातु के अनुसार ही नेकजोठ का होगा

धावस्ती जेतवत में ।

क

मिहनो | बाह्य स हो । अर्थागदित पुरुष अर्थागदितों के साथ मिर्कन निर्मर्जी के साथ वेसमस वेसमसों के साथ पूर्व जूषों के साथ विकस्मा निष्कर्मों के साथ सूद व्यक्तिकारे सूद स्वतिकारे के साथ तथा हुव्यन हुव्यतीं के साथ विकसिकों में बाते और नेक बाते हैं।

निश्चमो ! सरीतकाक में । समायतकाक में । इस समय ।

相

सिद्धानी ! प्राप्ते संद्वी : । सद्भाल पुरुष कदालुओं के साथ [शिक उसका उच्छा] प्रज्ञावार्य, प्रज्ञावार्यों के साथ ।

§ **८ अभद्राम्**लकपच(१३२८)

६९ निर्छन्ज मुलक चार (१३ २ ९)

६ १० वेसमझ मृठक तीन(१३ २ १०)

§ ११ अन्यभत (= मूर्ख) होने से दो (१३ २ ११)

इ १२ निकम्मा (१३ २ १०)

[इन स्वा में ठवर की नहीं गई बातें ही बोच-मरीवकर कही गई हैं]

वितीय धर्ग समाभ

तीसरा भाग

कर्मपथ वर्ग

§ १. असमाहित सुत्त (१३. ३. १)

असमाहित का असमाहितों से मेल होना

श्रावस्ती जेतवन में '।

भिक्षुओ । धातु से सत्तः । श्रद्धारहित श्रद्धारहितों के माय, निर्लं निर्लं के साथ, वेसमझ वेसमझों के साथ, असमाहित असमाहितों के माय, हुष्प्रज्ञ दुष्प्रज्ञों के माय मिलमिले में आते और मिलने है।

''[उल्टा] । प्रजावान् प्रजावानों के साथ ।

§ २. दुस्सील मुत्त (१३. ३. २)

दुःशील का दुःशीलां से मेल होना

श्रावस्ती जेतवन में ।

भिक्षुओं । धातु में सन्द '। अहारिहत , निर्कल ', वेममझ ', दुर्शील दुर्शीलों के साथ, दुष्प्रज्ञ ।

[उलटा] । ' शीलवान् शीलवानों के साथ ।

§ ३. पश्चिसिक्खापद् सुत्त (१३ ३ ३)

बुरे बुरा का साथ करते तथा अच्छे अच्छा का

श्रावस्ती जेतवन में ।

भिक्षुओ । धातु से सत्ध । हिंसक पुरुप हिसकों के साथ, चोर चोरों के साथ, छिनाल छिनालों के साथ, झड़े झड़ों के साथ, नशायोर नशाखोरों के साथ सिल्सिले में आते ओर मिलते हैं।

'[ठीक इसका उलटा ही]। नशा से परहेज करनेवाले पुरुप नशा से परहेज करनेवाले पुरुपों के साथ सिलसिले में आते और मिलते हैं।

'§ ४. सत्तकम्मपथ सुत्त (१३, ३. ४)

सात कर्मपथ वालों में मेलजोल का होना

श्रावस्ती जेतवन में

मिश्रुओ । धातु से सम्ब । हिंसक पुरुप , चोर , छिनाल ••• , झ्रे • , चुगळखोर चुगलखोरो के साथ, गण्पी गण्पियों के साथ सिलसिले में आते और मिलते हैं।

। गप्प से परहेज करनेवाले गप्प से परहेज करनेवालों के साथ ।

९ ५ दसकस्मापथ सुच (१३ ३ ५)

दस कर्मपथवाठों में मेळजोळ का हाना

भावस्ती जेतवर्गं।

भावतमा जातवन भा मिह्नमा पाद से संस्था^{भा} हिंसक चोर किनाक इन्हें जुगसकीर सन्तेवचन कर्मेवार्थ गप्टी कोसी स्थापचित्रण सिम्बादिष्टे |

§ ६ अष्टक्रिक सुच (१३ ३ ६)

सपाकिकों में मेळजील का होगा

भाषसी क्षेत्रसम्म ।

भिद्वार्थ ! चार्तु मं सार । भिष्याचीहवाले । मिष्या चंकरवाकं भिष्या वचनवाले , भिष्या कर्मान्तवाले - भिष्या जीविकावाल , सिष्या न्वायासवाले - मिष्या स्ट्रिटिवाले सिष्या समाविवाले प्रत्य सिष्या समाविवाले प्रदर्श के साथ सिक्सिके निकाते और सिक्से ई ।

[उक्य] । सम्बक्त समाधिवाके पुक्ष सम्बक् समाधिवाले पुक्षीं के साव ।

९ ७ दसङ्ग सुच (१३ ३ ७) वद्याओं में नेक्कोर का होगा

युवाहा जनसङ्ख्या इति। भावस्ती जेतवसमें ।

कारपदा। यादासान । | मिसुसी | पादासाल । [कपर के काढ में दो और कोद दियं गये हैं]। मिष्या कास वार्क मिच्या विमुद्धिवालें ।

जिल्**य**ो।

कर्मपथ वर्ग समाप्त

चौथा भाग

चतुर्थ वर्ग

§ १. चतु सुत्त (१३ ४ १)

चार धातुये

श्रावस्ती जेतवन मे।

भिक्षुओं ! धातु चार है । क्रोन से चार १ (१) पृथ्वीधातु, (२) आपो धातु, (३) तेजो धातु और

(४) वायुधातु ।

भिक्षुओ । यही चार धातु हैं।

§ २, पुट्य सुत्त (१३, ४. २)

पूर्वज्ञान, धातुओं के आस्वाद और दुष्परिणाम

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ ! बुद्धस्व प्राप्त करने के पहले, बोधिसत्व रहते ही, मेरे मन में यह हुआ — पृथ्यीधातु का आस्वाद क्या है, आदिनव (= डोप) क्या है, आर नि सरण (= मुक्ति) क्या है ?

भिक्षुओ ! तब, मेरे मन मे यह हुआ—पृथ्वीधातु से जो सुख और चेन होता है वह पृथ्वीधातु का आस्वाद है। जो पृथ्वी में अनित्य, दु ख और विपरिणाम धर्म हैं वह पृथ्वीधातु का आदिनव है। जो पृथ्वीधातु के प्रति छन्दराग को दुवाना और हटा देना है यही पृथ्वीधातु का नि सरण (= सुिक्त) है।

जो आपोधातु.के प्रत्ययसे , जो तेजोधातु के प्रत्यय से , जो वायुधातु के प्रत्यय से : ।
भिक्षुओ ! जवतक इन पृथ्वीधातु के आस्वाद, आदिनव ओर नि सरण का यथाभूत ज्ञान मुझे
प्राप्त नहीं हुआ था, तब तक मैंने—देवताओं के साथ, मार के साथ, ब्रह्मा के साथ—इस लोक में
देवता, मनुष्य, ब्राह्मण और श्रमणों के बीच ऐसा दावा नहीं किया कि मुझे अनुत्तर सम्यक्
सम्बद्धत्व प्राप्त हुआ है।

भिक्षुओं ! जय, इनका " ज्ञान प्राप्त हो गया, तभी मैंने ऐसा दावा किया "।

मुझे ऐसा ज्ञान = दर्शन उत्पन्न हो गया कि अवस्य ही मेरे चित्त की विमुक्ति हो गई। यही अनितम जनम है, ओर अब पुनर्जनम होने का नहीं।

§ ३. अचिर सुत्त (१३ ४ ३)

धातुओं के आस्वादन मे विचरण करना

थावस्ती '।

भिक्षुओ । पृथ्वीधातु में आस्वाद इँक्ते हुये मैंने विचरण किया । पृथ्वीधातु का जो आस्वाद है

बहाँ तक में पहुँच गया। पृथ्यी धानुका जहाँ तक आश्वाद हैं मैंने प्रसां से देन किया। मिश्रुका। पृथ्वी धानु में क्यदिनव"।

िम्सुको । पृथ्वीयामु क नि-सरण को बुँवत हुये मेंन विवरण किया । पृथ्वीयातु का जो जिन्मरण

इ वहाँ तक में पहुँच राया । जिससे प्रश्वीचातु का निःसरण होता है मेंने प्रणा से तंत्र किया ।

" [हमी तरह आयोजातु संजीवातु और वायुषातु के साथ भी]

िहानो ! जबतक दूश चार कातुसी के जास्कार स्वितित चार तिशतरण का यजासूत ज्ञान सुद्रा प्राण नहीं हुआ था; तब तक मैंने ऐसा दाका नहीं किया कि सुद्रे सनुचर सम्प्रकृत सम्बद्धाल प्रस्र हमा है

सिद्धना ! बच इनस जान बास हो गया तसी मेंने पैसा दाना किया "।

ालक्षता । कर इनके आर्थ आहि हो गया उसा सम्मान्ति । भूरी ऐसा दासक्यिति अस्तव हो गया कि अवदय ही मेरे चित्त की विसुध्ति हो गई। यही अस्तिस अस्ति है भीर जब अनवस्त होने कर नहीं।

§ ४ नो चेदं सुच (१३ ४ ८)

धातुमा कं यथार्थं मान से ही मुक्ति

भाषस्त्री

मिसुस्रो | यदि पृथ्योकातु में आस्ट्रीव वहीं कोला तो शाली पृथ्योकातु में रक महीं कार्टे । मिसुस्रो | क्वोंकि पृथ्वोकातु में आस्थात है इसीकिये प्राणी पृथ्योकातु में रक दोते हैं ।

भिम्नभी ! यदि प्रविचान में बादिनक नहीं होते ती प्राणी पृथ्वीवात से उचाते नहीं । मिश्चनी !

क्योंकि प्रशीकार में कावित्रव हैं। इसीकिये आसी प्रशीकार से समय कारी हैं।

सिद्धनो ! चरि पुरबीवातु सं नि-सरल (= सुन्तिः) नहीं होता तो प्राचीः प्रश्नीपातु सं सुन्त नहीं होत । सिद्धनो ! क्होंकि प्रशीपातु सं निःसरण होता है हसीकिये वाली प्रशीपातु से सुन्द हो बाते हैं ।

[इसी तरह आयोजात त्रजोचातु और बातुबातु क साब भी]

भिश्चमी । बाद तक इस पार पातुमी के कारवाद, वादिवस और विशासन का साम समामृत नहीं जान रेते हैं तब तक वे ग्रहम काक स नहीं छुटते हैं "।

सिद्धका ! जब लाग इनकी प्रधान्त जान केते हैं तब वे इस लोक स सुद्र जाते हैं तब। विद्युक्त विकास विद्वार करते हैं।

र्दे ५ दुक्ल शुच (१३ ४ ४)

चातुर्वे क यथाध प्राप्त स भुक्ति

भाषणी ।

िस्तुको । यदि प्रध्यान में क्वम हुना ही तु न होता और सुन्य स विश्वक गुम्ब, तो प्राणी पूर्वाचानु से एक नहीं होते । विश्वका । नवीदि पूर्वाचानु से तृत्य है । दुत्य का समाव है । इसीनिये सामा कुर्याचानु ≅ एक होते हैं ।

•••[इसी तरह भाषापानु, समाधानु और वायुपानु के साथ भी]

िम्हुओ | बांद इश्बीचानु में देवल शुल हां तुम्ब बोना स्पर्धा दुस्य में दिश्यून प्रम्य ना इश्योबानु में दिस्क नहीं होने । सिद्धुनी ! व्योकि पृष्यीयानु में युग्य हैं तुम्य वा समाय है इसीलिये सम्मे पृष्यीयानु में दिश्य हाने हैं।

·· [इसी माद आंदीबानुं, मेंशायानुं धन्तः बानुबानु के माय धा]

§ ६. अभिनन्दन सुत्त (१३ ४. ६)

धातुओं की चिरिक्त से ही दुःख से मुक्ति

श्रावस्ती ।

क

भिक्षुओ । जो पृथ्वीधातु में आनन्द उठाता है वह दुख़ का स्वागत करता है। जो दुःख का स्वागत करता है। चह दुख से मुक्त नहीं हुआ है—ऐसा में कहता हूँ।

··भाषोधात · · . तेजोधात · · . वायुधातु ।

ख

भिक्षुओं । जो पृथ्वीधातु से विरक्त रहता है वह दु ख का स्वागत नहीं करना । जो दुःख का स्वागत नहीं करता है, वह दु ख से विमुक्त हो गया—ऐसा में कहता हैं।

§ ७. डप्पाद सुत्त (१३. ४ ७)

धातु-निरोध से ही दुःख-निरोध

श्रावस्ती'।

भिक्षुओ ! जो पृथ्वीधातु का होना, रहना और लय हो जाना है (= उत्पाद, स्थिति, अभिनिर्वृति), वह दु.ख ही का प्राटुर्भाव है, रोग तथा जरामरण का ही होना और रहना है ।

आपोधातु , तेजोधातु , वायुधातु

भिक्षुओ ! जो पृथ्वीधातु का निरोध=ग्युपशम=मस्त हो जाना है, वह दुख का ही निरोध है, रोग तथा जरामरण का ही न्युपशम और अस्त हो जाना है।

§ ८. पठम समणत्राह्मण सुत्त (१३. ४. ८)

चार धातुयँ

श्रावस्ती

भिक्षुओ । धातु चार हैं । कौन से चार १ पृथ्वीधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायुधातु ।

भिक्षुओ ! जो श्रमण या ब्राह्मण इन चार भूतों के आस्ताद, आदिनव और नि सरण को यथाभूत नहीं जानते हैं, न तो उन श्रमणों में श्रामण्य है और न ब्राह्मणों में ब्राह्मण्य । वे आयुष्मान् श्रमण या ब्राह्मण के परमार्थ को इसी जन्म में स्वय जान साक्षात् कर और ब्राप्त कर विहार नहीं करते हैं।

भिक्षुभो । जो यथाभृत जानते हैं वे प्राप्त कर विहार करते हैं।

§ ८, दुतिय समणत्राह्मण सुत्त (१३ ४. ८)

चार छातुर्ये

श्रावस्ती ।

ो जो श्रमण या ब्राह्मण इन चार धातुओं के समुद्य, अस्तगम, आम्बाद, आदिनव, नि सरण को यथाभृत नहीं जानते हैं [ऊपर के ऐसा]। सयुत्त ।नकाय

६ १० ततिय समगमाद्मण सुप (१३ ४ १०)

चार धानुर्ये

भायम्ती ।

साधन्ता । सिक्षुओं | जो समय या प्राह्मण पृथ्वीपात के समुद्रम को सही जानते हैं । पृथ्वीपाद के विरोध

की महीं बातते हैं। पुरुषीयातु की विरोधपासिनी प्रतिपदा को गहीं बातते हैं। अयोगातु । सेबोधातु । वासुमतु ।

सिद्धभी । को आनते हैं ।

चतुर्थं वर्गं समाप्त धानु-संयुक्त समाप्त

तीसरा परिच्छेद

१४. अनमताग-संयुत्त

प्रथम वर्ग

§ १. तिणकडु सुत्त (१४. १. १)

संसार के प्रारम्भ का पता नहीं, घास छकड़ी की उपमा

ऐसा मेंने सुना !

एक समय भगवान् श्रायस्ती में अनाथिपिण्डिक के आराम जेनवन में विहार करते थे। वहाँ, मगवान ने भिक्षुओं को आमन्त्रित क्यि।—हे भिक्षुओं।

"भदन्त" कहरूर भिक्षुना ने भगवान् को उत्तर दिया ।

भग्यान योले—इस संसार का प्रारम्भ (= आदि) निर्धारित नहीं किया जा सकता है। अविद्या में पदे, तृष्णा के बन्धन से बॅधे, चलते-फिरते नन्यों की पूर्वकोटि जानी नहीं जाती।

भिक्षुओ ! जैसे, कोई पुरप सारे जम्बृङीप के घान, एकजी, डाली ओर पत्ते को तोड़ कर एक जगह जमा कर है, ओर चार-चार अगुली भर के दुकड़े करके फेंकता जाय—यह मेरी माता हुई, यह मेरी माता की माता हुई—या यह माता का सिल्सिला ममात नहीं होगा, किन्तु वह मारे जम्बृङीप के घान, एकटी, टाली ओर पत्ते ममात हो जायें गे।

मो क्यों ? भिक्षुओं । क्योंकि, इस समार का प्रारम्भ निर्धारित नहीं किया जा सकता है। अविद्या में पड़े सब्बा की पूर्वकोट जानी नहीं जाती।

भिक्षुओं । चिरकाल से टु प, पीइा और अनर्थ हो रहे हैं, इमशान भरता जा रहा है।

भिक्षुओ ! अत तुम्हें सभी संस्कारों से विरक्त हो जाना चाहिये, राग नहीं करना चाहिये, विमुक्त हो जाना चाहिये।

§ २. पठवी सुत्त (१४ १ र्)

संसार के प्रारम्भ का पना नहीं, पृथ्वी की उपमा

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ ! इस ससार का प्रारम्भ ।

भिक्षुओ ! जैसे, कोई पुरुष सारी महापृथ्वी को वैर के वरावर करके फॅक्ता जाय—यह मेरा पिता, यह मेरे पिता का पिता—तो उसके पिता के पिता का सिलसिला समाप्त नहीं होगा, महापृथ्वी समाप्त हो जायगी ।

"[ऊपर के ऐसा]।

६ ३ अस्सु सुत्त (१४ १ ३)

संसार के प्रारम्भ का पता नहीं, ऑसू की उपमा

श्रावस्ती ।

भिञ्जुओ । इस समार का प्रारम्भ ।

सिक्षुमा ! क्या समझते हो जो किरकार से अनुसता सरन अधिय क संबंध और धियक दिवंग से रोते हुये कोगों के क्रम अधिक तिरे हैं कह अधिक हैं या पार्री महासमझ के क्रम !

सम्ते ! सगवान के यताचे धर्म का धिमा इस बानवं हैं उसने ता यही पना करना है कि को अध गिरे हैं वही चारों सहासमझ के करन अधिक हैं।

मच है जिल्लाों अथ है ! गुजने भी बताये यस को डॉब स जान निया है !

मिशुलो | चिरकाक में तुम माता की सायु पुत्र की सायु पुत्री की सायु परिवार के अनर्थ भीत की द्वारि और रोग के तुरस्र का अनुसन करते आ रहे हो । जो अब निर्देश बहुत करिक हैं।

सो वर्षे ? सिश्रमी । प्रम संसार का पारश्य ।

सिद्धार्थे | अतः मुक्तें सभी संस्कारी से चिरतः हो आना चाहिये, साम नहीं करमा चाहिय । विमुक्त हो जाना चाहिये ।

§ ४ सीर सच (१४ ° ८)

मैसार व प्रारम्भ का पता नहीं दुध की उपमा

मिश्रणी । इस संसार का बारम्य "।

मिश्चणी ! तुन क्या समझते हो जो चिष्काक में कामते सरत रह सावा का शूप पीया प्रण है वह प्रविक्ष है या चारी सहासमुद्र का कक ?

भन्ते] सावाज् के बताये वर्ष को जसा इस कानते हैं भी साना का कृप पीमा गवा है वही जारों सहासदात के बन से लिएक है।

मच है सिद्धानी ! जिपर के पैसा]

§ ५ पन्त्रच सुच (१४ १ ५)

करूप की वीर्धता

भावस्ती ।

त्तव कोई सिद्ध कहीं प्रमाणम् ने वहीं जाया और अशावाब् का अभिवाब्व कर तुक और बैठ गया। एक और बैठ वह सिद्ध प्रमाणक से वोका—अली एक क्षेत्र किराया वस होता है ?

सिद्ध | कब्द बहुत बड़ा होता है। उसमि गिनती नहीं की बासकती है कि इसने वर्षे या इसमें सी वर्ष या इसमें इसार वर्ष था इसमें कावा वर्ष !

मन्ते । जपमा करके क्रम समझा का सकता है 🏌

भगवान के के - उपमा करके हाँ कुछ समझा वा सकता है। सिद्धा कि से एक पोक्षय करना एक पोक्षय चीदा भीर एक पोक्षम ठीवा एक महान्य पर्वत हो-- विकास दीस जिसमें कोई विक भी न हो। वसे कोई पुरुप सी-भी वर्ष के बाद काहात्रि के देखा से प्रकृपक बाद पॉछ। सिद्धानी ! इस प्रकृप कह पर्यत्र सीम ही समझा हो कावना किन्तु एक कब्द भी वहीं पुरुषे पाला।

मिश्रु ! पक्र ऐसा दीर्म दोता है । ऐसं कार्को करूप बीत शुक्रै ।

सो क्यों ? क्योंकि संसार का प्रारम्म ।

९ ६. सासप सुत्त (१४. १ ६)

करुप की दीर्घता

श्रावस्ती '।

एक और बैठ, वह भिक्ष भगवान् से बोला-भन्ते । कल्प कितना वड़ा होता हे ?

• भगवान् वोले—हाँ, उपमा की जा सकती है। भिक्षु । जैसे, लोहे से घिरा एक नगर हो— योजन भर लम्बा, योजन भर चोड़ा, योजन भर ऊँचा—जो थोप-थोप कर सरसां से भर दिया गया हो। कोई पुरुप उससे एक-एक सो वर्ष के बाद एक-एक सरसां निकाल ले। भिक्षु । तो, इस प्रकार वह सरसों की देर शीघ्र ही समाप्त हो जायगी किन्तु एक कहप नहीं पुरने पायगा।

ं जपर के ऐसा]।

§ ६. सावक सुत्त (१४. १. ७)

वीते हुए करूप अगण्य है

श्रावस्ती

तव, कुछ भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आये ओर भगवान् का अभिवादन करके एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठ वह भिक्षु भगवान् से वोले—भन्ते। अभी तक कितने कल्प बीत चुके हैं।

·· भन्ते ! क्या उपमा करके कुछ समझा जा सकता है ?

भगवान् बोले—हाँ, उपमा की जा सकती हैं। भिक्षुओ ! सौ वर्षों की आयुवाले चार श्रावक हों | वे प्रतिदिन एक-एक लाख करपों का स्मरण करें। भिक्षुओ ! वे वेवल करपों का स्मरण ही करते जायँ | तव, सौ वर्ष की आयु समाप्त होने पर वे चारों मर जायँ |

इस प्रकार, अधिक कल्प बीत गये है। उनकी गिनती नहीं की जा सकती है।

[जपर के ऐसा]

§ ८. गङ्गा सुत्त (१४ १ ८)

वीते हुए कल्प अगण्य है

राजगृह वेलुवन मे।

एक ओर बैठ, वह ब्राह्मण भगवान से बोला, हे गाँतम । अभी तक कितने करप बीत चुके हैं ? भगवान बोले—हाँ ब्राह्मण । उपमा की जा सकती है । ब्राह्मण । जैसे, जहाँ से बाझा नदी निकलती है और जहाँ समुद्र में गिरती है उसके बीच में कितने बालुकण हैं उनकी गिनती नहीं की जा सकती है ।

याह्मण । इतने अधिक करप बीत चुके हैं। उनकी गिनती नहीं की जा सकती हैं।

सो क्यों ? ब्राह्मण ! क्योंकि इस ससार का प्रारम्भ निश्चित नहीं किया जा सकता है। अविधा में पड़े, तृष्णा के वन्धन में वैंधे, जीते मरते सत्वों की पूर्वकीट जानी नहीं जाती।

ब्राह्मण ! इतने चिरकाल से दु ख, पीड़ा और विपत्ति का अनुभव हो रहा है, इमशान भरता जा रहा है। ब्राह्मण ! अत, सभी सस्कारों से विरक्त रहना चाहिये, विमुक्त हो जाना चाहिये।

ऐसा कहने पर वह बाह्मण भगवान् से बोला — हे गौतम ! आप धन्य हैं ! आज से जन्म भर के लिये मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें ।

९ दण्ड सुच (१४ १ ९)

समार के प्रारम्भ का पता नहीं

भाषस्ति ।

मिसुमा । इस संसार वा प्रारम्भ निश्चित नहीं ।।

मिशुना | बसे करार पेंडी गई कारी जातन ही कमी तो सूक में कमी सच्च से और कमी कम माग से गिर पहारी हैं। वैसंदी अधिवार में पड़े गुल्या के बन्धन में वैंचे श्रीते मरते सत्त्व कमी तो इस कोक से बस कोक में पवार्त के जीर कमी कस कोक से इस कोक में।

सो नमाँ ! भिशुनी ! भत सभी संस्कारों स विरक्त रहवा चाहिचे, विशुक्त हो नामा चाहिमे !

१९० पुरमल सुत्त (१८ १ १०)

संसार के प्रारम्भ का पता नहीं

राजगृह में शृद्धकृष्ट पवत पर ।

निमुखी ! इस सचार का मारम्य निवित नहीं । निमुखी ! करन पर मित्र-भिन्न दोनि में पंदा हानेवाके एक ही युक्त की हित्रुणों कहीं एक बनाइ इकही की कार्यें—और बह नष्ट नहीं हों—की वनकी हैर बेशुद्ध नर्यत के समान हो बाद ।

सी वर्षों ? भिक्षुका ! करा सभी संस्कारों से विरक्ष रहता चाहिचे विशुक्त हो जाना चाहिचे ! भगवान पह बोक्रे । हतना कहकर शह फिर भी बोक्रे —

> एक पुरुष हो। पहाक-सा कुक हेर कम क्षत्र सहिष में ऐसा कहा---- की कहर मर की हिन्दों पिंद कसा की कार्य । वैसा वह महाज वेगुहु पर्वत है पुरुष्ट्र के दक्तर समाकों का गिरित्यत्र ह का भावंतरहों को सम्बद्ध महा से देख केता ह पुरुष हु प्रसागुद्ध दुराव का कार्य कर देगा आप्ते काशीय कार्यों नियस हु पर से मुक्ति होगी है स्विक स कार्य कर देशा है स्वार्थ कर सात पर करस केवर हु कों का कार्य कर देशा है

> > प्रथम धर्गे समाप्त ।

द्वितीय वर्ग

§ १. द्गात सुत्त (१४ २. १)

दुःगी के प्रति सहानुभ्ति करना

श्रावस्ती'''।

• भिक्षुओ । इस समार का प्रारम्भ''' ।

भिक्षुओं। यदि किसी को अत्यन्त दुर्गति में पहें देनों तो सोची—एस दर्गिकाल में हमने भी कभी न कभी इस अवस्था को भी ब्राप्त कर लिया होगा।

सो क्या ? विमुक्त हो जाना चाहिये।

§ २. मुखित मुत्त (१४. २. २)

सुर्या के प्रति सहानुभूति करना

श्रावस्ती"।

भिधुओ ! इन यनार का मारम्भ "।

भिक्षको । यदि किसी को एव सुग्व करते देयो तो मांची-इस दीर्घकाल में हमने भी कभी न कभी इस सुख को भोगा होगा।

सो क्या ? े विमुक्त हो जाना चाहिये।

§ ३. तिंसति सुत्त (१४ २ ३)

आदि का पता नहीं, समुद्रों के जल से खून ही अधिक

राजगृह चेलुवन में

तव, पावा के रहने वाले तीस भिक्ष सभी आरण्यक, सभी पिण्डपातिक, सभी पासुकूलिक, सभी तीन ही चीवर धारण करने वाले, सभी सयोजन (=वन्धन) में पड़े हुए ही—जहाँ भगवान् थे वहाँ आये, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये।

तव, भगवान् के मन में यह हुआ — ये' ''भिक्षु सभी सयोजन में पड़े हुये ही है। तो, में इन्हें ऐसा धर्मापटेश दूँ कि इसी आसन पर बैठे-बेठे इनका चित्त आश्रवों में विमुक्त और उपादान-रहित हो जाय!

तव, भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया-हे भिक्षुओ !

"भटन्त !" कह कर भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

भगवान् वोले —भिक्षुओ ! ससार का प्रारम्भ निश्चित नहीं किया जा सकता है। अविद्या में पड़े, तृष्णा के वन्धन में वैंधे, जीते मरते सखों की पूर्वकोटि जानी नहीं जाती।

मिक्षुओं । क्या समझते हो, जो चिरकाल से जीते मरते लोगों के शिर कटने से खून बहा है यह अधिक है या चारों महासमुद्र का जल ?

९ दण्ड सुच (१४ १ ९)

कसार ६ प्रारम्भ का पता नहीं

थायस्ती ।

मिहरणा ! इस संयार का प्रारम्भ निश्चित गई। 1" 1

जिल्लुका | अपने उपर चेंदी गई कारी काश दी कभी तो सूक स, कभी सम्भ स और कमी भग भाग से गिर पदती दें। मैस दी अविधा में पढ़ कृष्णा क बच्चन में मैंचे सीत सरते सत्व कमी तो इस काक स उस कोक में पदन हैं और कमी उस लाक स इस काक में।

मी नर्गे १ सिशुमी ! जतः सभी सन्दारों स बिरण रहना चाहिये, विमुन्द हो ताना पाहिने !

है १० पुग्गल मुच (१८ १ १०)

संसार के प्रारम्भ का पता नहीं

राम्रपृद्धं में युद्धकृत प्रवत पर ॥

निहुसी! इस सागर का प्रारम्भ विधित गर्दी । शिद्धाओ ! करन पर निश्च-भिन्न वानि में पंत्र हानेवाले एक ही युग्य थी हड्डिवों कहीं एक बगह हक्द्री की बार्यें—और वह नट नहीं हों—की वनकी देर ध्युद्ध पर्यंत क समाग्र हो जाय ।

सी वर्षों १ भिश्रुका है जतः सभी संस्कारों स विरक्त रहना चाहिये विसुक्त हो कामा वाहिये। भगवाद वह योगः । हनना कहकर एक फिर भी वर्षक —

> णक पुरुष तो पहाड़ सा एक देर कार काथ सहित्य है एसा कहा— की कपर सा की वहित्य पित्र कास की कार्य । कहा पढ़ सामान पेपुलु पर्यंत है पृद्युद के उत्तर सामानें का शिदिस्पत । को कार्यस्पता की समझ सहा सा एक कटा है पुरुष हु समझूचय पुत्त का सन्तर कर गा कार्य काशिय कामा जिहास हु का में सुन्कि दाती है काथिक से कियक सात बार कामा कंकर दुश्यों का अन्य कर देता है ससी करती के कीय कर 8

> > प्रथम कर्ग समाप्त ।

भिक्षुओ । बहुत ही पूर्वकाल में इस वेपुरल पर्वत का नाम वंकक पड़ा था । उस समय मनुष्य रोहितस्स कहे जाते थे । आयुषमाण तीम हजार वर्षों का था । वे रोहितस्म मनुष्य वकक पर्वत पर तीन दिनों में चड़ते थे ओर तीन दिनों में उत्तरते थे ।

भगवान् कोणागमन । भिरुयो और सुत्तर नाम के टो अग्रश्रावक । विमुक्त हो जाना चाहिये।

× × ×

" पर्वत का सुपस्स नाम पड़ा था। मनुष्य सुष्पिय कहे जाते थे। वीस हजार वर्षी का अायुप्रमाण '। दो दिन में चढ़ते थे।

भगवान् काश्यप । ''तिस्त और भारहाज नाम के टो अप्रश्रावक थे। विमुक्त हो जाना चाहिये।

 \times \times \times

भिञ्जओ। इस समय इस पर्वत का नाम चेपुल्ल पदा है। ये मनुष्य मागध कहे जाते हैं। भिञ्जओ। मागध मनुष्यों का आयुप्रमाण चहुत घटकर कम हो गया है। जो बहुत जीता है वह सौ वर्ष, उसके कुछ कम या अधिक भी जीता है। मागध मनुष्य चेपुल्ल पर्वत पर अल्प काल ही में चढ़ जाते हैं और उत्तर भी अते हैं।

भिधुओ । इस समय, अर्हत सम्यक् सम्बद्ध में ही लोक में उत्पन्न हुआ हूँ। मेरे सारिपुत्र और मौद्गाल्यायन दो अम्रशावक हैं।

भिक्षुओ । एक समय आयेगा कि इस पर्वत का यह नाम लुप्त हो जायगा। ये मनुष्य भी मर जायेंगे। मैं भी परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाउँगा।

भिक्षुओ ! सस्कार इतने अनित्य हैं, अधुव हैं, चलायमान है । भिक्षुओ ! अत सभी सहकारों से विरक्त रहना चाहिये, चिमुक्त हो जाना चाहिये ।

भगवान् यह बोले । यह कहकर बुद्ध फिर भी बोले-

पाचीनवश तिवरोंका, रोहितोंका वकक, सुष्पियों का सुपस्स, और मागघों का वेपुल्ल ॥ सभी सस्कार भनित्य हैं, उत्पन्न और न्यय होनेवाले, उत्पन्न होकर निरुद्ध हो जाते हैं, उनका शान्त हो जाना ही सुख है ॥

> द्वितीय वर्गं समाप्त अनमतग्ग-संयुत्त समाप्त ।

मन्ते | मगबान् कं बताये धर्म को कैसा इस बानवे हैं जससे तो पड़ी आख्या होता है कि यम ही समिक बहा है।

सब है मिसुओ सब है ! तुम मेरे अपन्त किय गर्ने बर्म को ठीक से कवते हो ।

सिमुणो ! फिरकाक सं नीवों के किर बढ़ने सं को जून बहा है वह जारों समुत्र के करू से अधिक है।

ंभेंस ;र्येका ;वररी ;सूग कुरकुर ;सूगर ;सूर्यर ने बो कोगों के सिर कार कर जान पक्षापा है ''। क्रियाकों जे ''

सो क्यों १ विस्तक हो वावा वाहिये।

भगवान यह बोके । जिल्लामें न संबद प्रज से प्रशासन के क्या का व्यक्तिनम्बद किया ।

इस अपनेस के दिये काशे पर उन पावा के शीस शिक्षाओं का किया विश्वक हो गया कपादान रहित हो गया।

९ अ माता स्य (१४ २ ४)

माता न इय सत्व वसम्बय

भावस्ती ।

मिश्रमी ! इस संसार का प्रायम ।

सिद्धनी ! पैता कोई साथ 'ग्रिक्स सुदिश्क है को जिस्कास में कमी न कमी आदा थ रह खका हो।

सो नयों 🧗 विश्वक हो भागा चाहिये।

\$ ५-९ पिता सुच (१४ २ ५-९)

पिष्ठा **न डु**ए सत्य असम्भव

मा चिरकार में कमी न कभी पिछा भाई बहल नेटा नेटी' १

§ १० वेपुन्लपन्त्रत सुच (१४ २ १०)

चेपुस्छ पर्वत की प्राचीनता सभी संस्कार सनित्य हैं

राश्चगृह में शृज्जकृत पर्वत पर ।

स्थानम् वाक-सिमुक्तां इस संसार का बारम्य ा सिमुक्तां । बहुत की पूर्णक्क में हवे पेपुस्स पर्वत का माम पाणीनवीत पत्रा चा वस समय अनुष्व (त्रवर करे कात्रे के । इस तिवर सनुष्यों का क्यापुक्रमाण कातीस हमार वर्षों तक का बा। सिमुक्तां । वे तिवर सनुष्य पाणीनवेस पर्वत पर कार दिनों में कात्रे के कीर कार दिनों में बीच बहरते के ।

मिशुवा ! कस समय वर्षत् सम्पक् कम्बुक् अग्रवाक् क्षयु सम्प्रा कोक में कापक हुने थे । अन्ते

विघट और संजीव नाम के को भारताक्क थे।

मिम्रुजो ! देली इस पर्नन का बह नाम तुझ हो गवा । वे मनुष्य सभी के सभी पतम हो गवे !

वे भगवान् भी वरिनिक्षण का जास हुने ।

×

सिमुणं ! संस्कार कृपने जनित्व हैं अञ्चल हैं चकावसाल हैं । निमुणो ! अता सभी संस्कारों से बिरनः रहना चाहित्रं विसन्द हा जाना चारित्रे । भिक्षुओ ! बहुत ही पूर्वकाल में इस घेषु पर्वत का नाम बक्षक पदा था। उस समय मनुष्य रोहितस्स कहे जाते थे। आयुषमाण सीम हजार घर्षी का था। ये रोशितस्य मनुष्य प्रकक पर्वत पर तीन दिनों में घदते थे और तीन दिनों में उनरते थे।

"भगवान कोणारामन" । 'भिष्यो ओर मृत्तर नाम वे हो अग्रश्रावक '।

विमुक्त हो जाना चाहिये।

× × ×

"'पर्वत का सुप्रस्त नाम पड़ा था। मनुष्य सुष्पिय करे नाते थे। वीम हनार वर्षी का अधुप्रमाण '। 'हो हिन में चदते '' थे।

'भगवान् फाइयप । 'तिस्म और सारद्वाज नाम के हो अप्रश्रापक थे।

। धिमुक्त हो जाना चाहिये।

× × ×

भिक्षओ। इस समय इस पर्नत का नाम चेपुरल पदा है। ये मनुष्य मागध कहें जाते हैं। भिक्षओ। मागध मनुष्यं का आयुप्रमाण यहुत घटकर कम हो गया है। जो बहुत जीता हैं वह सौ वर्ष, उसके कुछ कम या अधिक भी जीता है। मागध मनुष्य चेपुण्य पर्वत पर अन्य काल ही में चढ़ जाते हैं और उतर भी आते हैं।

भिक्षुओ ! इस समय, अर्गत् सम्यक् सम्यक् में नी लोक में उत्पन्न हुआ हूँ। मेरे सारिपुत्र और मौद्रास्यायन दो अवधावक है।

भिक्षशो । एक समय आयेगा कि इस पर्वत का यह नाम लुप्त हो जायगा । ये मनुष्य भी मर नायेंगे । में भी परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाउँगा ।

भिक्षुओ । सस्कार इतने अनित्य है, अधुव हैं, चलायमान है । भिक्षुओ । अत सभी संस्कारों से विरक्त रहना चाहिये, विमुक्त हो जाना चाहिये।

भगवान् यह बोले । यह कहकर बुद्ध फिर भी बोले-

पाचीनवश तिवरोका, रोहितोंका वकक, सुप्पियों का सुपस्स, ओर मागधों का वेपुल्छ ॥ मभी सन्कार भनित्य हैं, उत्पन्न और व्यय होनेवाले, उत्पन्न होकर निरद्ध हो जाते हैं, उनका शान्त हो जाना ही सुख है ॥

> द्वितीय वर्ग समाप्त अनमतग्ग-संयुत्त समाप्त ।

चौथा परिच्छेद

१५ काइयप-सयुत्त

६१ सन्तुष्ट सुच (१५१)

प्राप्त चीवर आदि से समुद्ध रहना

भावस्ती ।

मिसुनो ! कारूपए भैसे तैले जीवर से संतुष्ट रहता है। भैमें तैसे जीवर से संतुष्ट रहते को मसंता करता है। चौदर के जिले कार्मुच्य अनेवाम में नहीं करता है। चौवर नहीं मास होने से विश्व नहीं होता है, और सिन्ते से विमा बहुत कक्कायो-विचार हुये-जोम किने वसके आदिवस (= दोष) को देखें हुये मिक की मता के साथ बात चौदर का मीम करता है।

मिश्रुमी (कास्त्रप कैसे वैसे पिण्डपात ; चारवासन ; स्काद परवद सपरव-यशिकार से !

भिद्धानी ! इसकिये तुम्हें भी ऐसा ही स्रीकार बाहियो — बैसे सीसे बीवर से सीट रहेँगा। " सन्हार रहते की प्रसंसा करूँगा। चीवर के सिये अनुस्थित अन्वेशन में नहीं कर्गूंगा। । मुक्ति की प्रणा के साथ कस चीवर का ओग करूँगा। विश्वदात । अवगासच । "कार प्रस्त । सिक्को ! तर्जे ऐसा की सिक्का चाहिये ।

मिसुसी | काइनप समना कसी के समान किसी शूसरे का दिखाकर तुम्हें उपदेश करूँगा । उपनेत पासर तर्गे श्रीक केमा ही वर्गना चाहिये ।

§२ अनोत्तापी सुत्त (१५ २)

भातापी भीर भोचापी को ही ज्ञान-प्राप्ति

पेसा मैंबे सुवा ।

एक समय आयुष्याव् महाकाइयप भीर आयुष्यान् छारियुच वारायश्ची के पास ऋषियतः सगराय में विशार करते थे।

तन भागुष्मान् सारिपुत्र साँहा को प्यान से २८ वहाँ भागुष्मान् महाकार्यप ये वहाँ गर्ने सीर

कुछक-श्रेम के प्रकृत पुरुकार पुरु जोर बैंड गये ।

पुत्र भीर मेठ आयुष्पान् सारियुत्र बायुष्पान् प्रहास्त्रहत्य से मोके — मायुस्य करवय ! यह स्वरं प्रता है कि मनावारी (= को कावने कहेती को नहीं तथावा है) और जानेकारी (= को स्केसी के कहने पर सामधान नहीं रहता है) परम-बान विचान अनुवार मोराक्षेप को नहीं पा सकता है। बातारी और कोकारी ही परस-काल को पा सकता है।

ध्यक्स ! यह कीये १

क

आयुर्ग | सिंशु अयुराव पार अवस्था कार्य करान्य होकर आवर्ष करेंगे इसके किये जातार नहीं करता दें। उत्पन्न पार अक्टबन करी ग्रहीच नहीं होने से अवस्थे करेंगे इसके किये आतार वहीं करता है। मेरे अनुख्या मुझल धर्म उख्यन नहीं होने से अनर्थ परेंगे, हमके लिये आताप नहीं सरता है। मेरे उत्पत्त कुशल धर्म नह होने हुये अनर्थ करेगे, इसके लिये आताप नहीं करता है।

आयुम । इस प्रकार वह अनातापी होता है।

ख

आवुस । केंसे कोई अनोत्तापी होता है ?

आयुस | निक्षु, अनुत्पत्र पाप अकुशल धर्म उपन्न होकर अनर्थ करेंगे, इसके लिये उत्ताप नहीं करता है। किपर के ऐसा]

आदुम । इम तरह, अनातापी और अनीतापी परम-ज्ञान, निर्वाण, अनुत्तर योगक्षेम की नहीं पा सकता है।

ग-घ

[उलटा करके]

आयुम । इम तरह, आतापी और ओसापी ही परम-जान 'को पा मकता है।

§ ३. चन्दोपम सुत्त (१५३)

चॉद की तरह कुला में जाना

थ्रावस्ती "।

सिक्षुओ । चाँद की तरह कुळों में जाओ । अपने शरीर और चित्त को समेटे, सटा नये अनजान के ऐसा, अप्रगटभ ट्ये ।

मिक्षुओ ! जैसे कोई पुरुप पुराने कृयें, तीहद पर्वत, रातरनाक नदी को देखकर अपने शरीर और मन को समेटे रहता है, वैसे ही भिक्षुओ ! चौट की तरह कुलो में जाओ ! अपने शरीर और चित्त की समेटे. सटा नये अनजान के ऐसा, अप्रगटम हुए !

भिक्षुओ ! काञ्यप कुलों मे चाँट की तरह जाता है ।

× × ×

भिक्षुओ ! तुम क्या समझते हो, कैया भिक्षु कुछो मे जाने के छायक है ?

भन्ते । धर्म के आधार भगवान् ही है, धर्म के नायक और आश्रय भगवान् ही है। अच्छा हो कि भगवान् ही ह्स कहे गये का अर्थ वताते । भगवान् से सुनकर भिक्षु धारण करेंगे ।

तय, भगवान् ने आकाश में हाथ फेरा । भिक्षुओं । जैसे, यह हाय आकाश में नहीं लगता है, नहीं फैंसता है = नहीं वक्षता है, वैसे ही जिस भिक्षु का चित्त कुळों में जाकर भी नहीं लगता = नहीं फैंसता = नहीं वक्षता है । जो लाभकामी है वे लाभ करें , जो पुण्यकामी है वे पुण्य करें । जैसे अपने लाभ से सन्तुष्ट और प्रसन्न होता है, वैसे ही दूसरों के ।भी लाभ से । भिक्षुओं । ऐसा ही भिक्षु कुलों में जाने के लायक है ।

भिक्षुओं ! काइयप का चित्त कुळों में जाने पर नहीं लगता है=नहीं फर्सता है=नहीं वझता है ।

भिक्षुओं । तुम क्या समझते हो, किस भिक्षु की धर्मदेशना अपरिशुद्ध होती है, और किस भिक्षु की परिशुद्ध ? भगवान सं सनकर भिक्ष चारन करेंगे ।

मगवाण् कोठाः—मिलुकी ! जो मिलु मन में ऐसा बनुक धर्मदेशका करता है—जही ! कोग मरी घर्मदेशना को सुर्जे सुनकर प्रसम्र हों. जीर प्रसम्र होकर मेरे सामने अपनी प्रसक्ता दिलाये—

उसकी प्रसर्भमा अवस्तिहरू होती है।

सिष्ठमी ! जो मिश्रु सम में पूमा कार यारेड्सना करता है—सगवान का यार्म स्थानमात है, मान्तिक है सजाविक है मगद है निवांण को के आवेदाका है विशों के द्वारा अपने मीतर ही भीवर आतरे के पोम्प है। जहां ! कोग मेरी कमनेदाका की सुनें, सुपकर पार्ट को कारें, बानकर उसका कम्मार सुने पान वह बचित गीति से दूसरों को यार्स कहाता है। कहना से दमा से अनुक्रमा से दूसरों की पार्ट कहाता है। मिश्रुसी। इस गजार के लिश्र की वार्टनेक्सन परिक्रण कोशी है।

मिश्लुभी ! काश्वप ऐमे ही चित्त से धर्मदेसका करता है ।

भिमुभो ! वैसा **शै** तुम्हें भी वर्तना वाहिबे ।

§ ४ इस्त्रमास्च (१५ ४)

कर्सों में जान बोग्य मिश्र

भाषस्ति १

मिहनों तो क्या समझते हो क्या मिहा कुटों में बाने के दोग्य है बार कैस मिहा नहीं है निहुत्यों है बार केस मिहा नहीं है निहुत्यों है बार दे क्या है—हाई दे ही पैसा नहीं किय है, वहुत द, पादा नहीं किय है, वहुत द, पादा नहीं, क्या केस किया है है विकास सकता के सर्दे।

मिमुश्री हैं विद्वितम नहीं नते हैं जोड़ा देते हैं "तो उसे बड़ा हु स होता है वेर्चनी होती है।

भिशुमी । यह मिझु कुमों में बाने के पोस्प नहीं है ।

सिम्लुमी । वृद्धि बसे नहीं देत हैं योदा नेने हैं तो उसे पुत्य नहीं होता है।

मिल्ली ! बद मिल्ल क्रुकों में बाने के चोन्व है।

मिश्रमा ! काद्यप दुनों में इसी चित्र से जाता है । अभ हुन्द नहीं होता है।

मिश्रभी ! पैमा ही तुम्हें भी बर्तना कहियं ।

डु ५ बिण्ण मुत्त (१५ ५)

भारण्यक होने 🕏 साम

गाउपक हान के का राजपुद्ध याद्यन में गा

क्य और किर्दे आयुष्मान् अद्याकार्याय से भागवाय् वीको---कारवय (गुम बहुत पूरे हो गये ही यह रूपा बांगुहरू तुम्हें बहुता व बाता होगा । इशक्तिये गुम गृहरूमों के दिवे गये शीवर को पहनी तिमनमा के भावत्र का भाग कहा और मेह यास रहा ।

परे 'में बहुतराज म जारपर हूँ और जारपर रावे थी अर्थना करता हूँ । विश्वरातिक "! वीमुर्गिक" | तात्र चीचरी को चारण वरतेपात्रा | अध्यया "! मेनुष्ट" । प्यान्यवाती" । अर्थनर" वर्गाक्षात्रियाः

भारतप हिन्म उद्देश्य से सुझ बहुत काल स आरण्यक हो और आरण्यक हहते की क्रांसी करत हो ल

भागों ! या प्रदेश म । जब मी न्यूर्व हुम प्रत्य में शुम्पपुषक विदार करने के किये। भीर दूसरे

भविष्य में होनेवाली जनता के प्रति अनुकम्पा करके, कि कही ये अस में न पड जायें।——जो बुद्ध के आवक थे वे बहुत काल से आरण्यक थे । पिण्डपातिक थे उत्साहशील थे '——ऐसा जान वे भी उचित सार्ग पर आवेंगे जिससे उनका चिरकाल तक हित और सुख होगा।

भनते । इन्हीं दो उद्देश्यों से ।

ठीक है, काइयप ठीक है। तुम बहुतां के हित के लिये, बहुतां के सुख के लिये, लोक पर अनुकम्पा करने के लिये, टेव और मनुष्यों के परमार्थ के लिये, हित के लिये, और सुख के लिये ऐसा कर रहे हो। काइयप। तो, तुम रूखे पासुकूल चीवर धारण करो, पिण्डपात के लिये चरो, आरण्य में रहो।

§ ६. पठम ओवाद सुत्त (१५. ६)

धर्मोपदेश सुनने के लिए अयोग्य भिश्च

राजगृह चेलुवन मे ।

एक और बैठे हुये आयुष्मान् महाकाश्यप को भगवान् घोले —काश्यप । भिक्षुओं को उपदेश हो। काश्यप । भिक्षुओं को धर्मीपढेश करो। चाहे हम या तुम भिक्षुओं को उपदेश हों, धर्मीपदेश करें।

भन्ते ! इस समय भिक्षु उपदेश ब्रह्ण करने के योग्य नहीं हैं, इस समय उन्हें उपदेश देना ठीक नहीं । उपदेश को वे स्वीकार और सत्कार नहीं करेंगे । भन्ते ! इस समय मैने आनन्द के अनुचर भिक्षु भण्ड और अनुहद्ध के अनुचर भिक्षु अभिज्ञक को आपस में कहते सुना है—भिक्षु ! देखें, कोन बहुत बोलता है, कौन बहिया बोलता है, कौन अधिक देर तक बोलता है ?

तब, भगवान् ने किसी भिक्षु को आमन्त्रित किया—हे भिक्षु ! सुनो, मेरी ओर से जाकर " भिक्षु भण्ड, और अभिज्ञक को कहो कि "बुद्ध आयुष्मानों को बुला रहे हैं"।

"भन्ते । बहुत अच्छा" कह, वह भिक्षु भगवान् को उत्तर दे जहाँ वे भिक्षु थे वहाँ गया, और बोला—बुद्ध आयुष्मानों को बुला रहे हैं।

''आवुस । बहुत अच्छा'' कह, वे उस भिक्षु को उत्तर टे जहाँ भगवान् थे वहाँ गये, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये।

एक ओर बेंटे हुये दन भिश्चभा से भगवान् बोले —भिश्चभा । क्या यह सच है कि तुम आपस में ऐसी बातें कर रहे थे कि, 'टेर्ज़ें । कौन बहुत बोलता है, कौन बढ़िया बोलता है, कौन अधिक टेर तक बोलता है।'

हाँ भनते ।

मिक्षुओ ! क्या मैने तुम्हे ऐसा धर्म सिखाया है, कि तुम भिक्षुओ ! आपस में ऐसी वातें करों कोन अधिक टेर तक बोलता हैं ?

नहीं भन्ते !

भिक्षुओ ! जब तुम जानते हो कि मैंने ऐसा धर्म नहीं बताया है, तो तुम निकम्मे आद्मी क्या जानवृद्ध ह्स स्वाल्यात धर्मिवनय में प्रव्रजित होकर ऐसी बातें करते हो ' कीन अधिक देर तक बोठता है'?

तय, वे भिक्षु भगवान् के चरणां पर शिर टेककर बोले—याल, मूढ़, पापी के जैसा हमलोगों ने यह अपराध किया है, कि इस स्वाख्यात धर्मविनय में प्रज्ञजित होकर ऐसी वार्ते कर रहे थे । भन्ते ! भविष्य में ऐसा अपराध न होगा, कृपया भगवान् क्षमा-प्रदान करें।

भिक्षुओं ! जब तुम अपना दौप समझकर स्वीकार करते हो, तो में क्षमा कर देता हूँ।

सिक्षमां ! इस साथ-विजय में बह कृति ही है जो अधन दौष को जानकर स्वीकार कर लेखा है भीर सविष्य में पिर पेसान करने की शिक्षा छता हैं।

§ ७ दुतिय जोवाद सुत्त (१५ ७)

घर्मीपरेश सनने के खिए अयोग्य मिध्र

राजगृह येल्यन में "।

पुरू और बैट हुन आयुष्माच् महाकाहयए स सगवान् बोक---काइदप } सिद्धमाँ को उपकाताः

भन्ते ! इस समय मिद्ध वयदेश प्रकृत करणे के योग्य नहीं । अन्ते ! जिस किसी को इसक यमों में अब्दा नहीं है ! इं! अवन्या बीर्य प्रज्ञा नहीं है ! शत दिन इसक प्रमों में वनमें अवनति ही होतों करती है उसके नहीं ।

भारते ! पुद्रम अध्यक्षासुः होते यह परिदासि है, बही क अवक्रपा-रहित काहिक हुआहः; कार्या " वैदी यह परिदासि ही है । अस्ते ! अध्यक्षा देवेलाव सिक्क सी सहीं हो यह परिदासि है !

भन्ते ! बिन पुरुष को धन्ता ही अस्त्रया वीर्थ मद्याकुतक वर्मी में हैं, दनकी दिन राठ कशक वर्मी में बिक्र दी कोली है परिवानि नहीं।

मन्ते ! जैसे ग्रुक्कदक्ष का बो चाँद है वह राख-दिन वर्ण क्षीमा न्यमा भार नारीहपरिमाह से

बक्दा हो बादा है। मन्ते ! बैसे ही जिस अका हैं।

सन्ते ! युद्य अंदालु होत्र यह अपरिहाति है होत्र ; अपन्यस्तुन्छ ; उपनाहसीत्र । प्रहाबाम् : , कोप-रहित :) बेर-रहित यह अपरिहाति हैं | उपनंध श्रीवाले सिद्ध हों वह सी अपरिहाति हैं |

टीक है, काइयप डॉक है !

काइयर ! चैंस कृष्ण-पश्च का चाँद शता-दिव वर्ण स दीन दश्ता जाता है वस ही जिस कृष्ण-धर्मी में अदा नहीं है हो नहीं है अद्या नहीं है, उसे दिन-शन कुशान बसी में परिदानि ही होती है विदानहीं !

[काइक्य के कर्दे गर्थ की पुनरायृत्ति]

इ ८ तिव ओवा**द् ग्रु**च (१५ ८)

धर्मीपद्दा सुनन क क्रिप भवाग्य मिश्च

राजगृह चतुवन में ।

मभी ! इस समय मिझु प्रश्रेश ग्रहण करन के बाध्य वहीं ।

स्परण | तो भी प्रकार में त्यवित निशु आत्यवक थे और आत्यवक होन के मार्गन । " विष्णातिक | पोनुस्किक । तो आ देते लिखु हात थे जन्दी को द्यवित प्रमासन पर निर्माणन सरो थे — निशु जो आ में कीम हमना अनु और शिक्षादानी होगा | निशु जो जाये हम नामन पर केंद्र।

कारण [ता वर निशुओं के जन में यह होता था :--का निशु आरण्यक हैं दानों को स्पीरा प्रमानन पर निमित्रन कान हैं " । इस नन वे भी वैशा ही जायान काने थे की चित्रकान तक जनके हिन भी सुराव कि दे हो गा था ।

बारवर ! इस मानव न्यविर शिशु आह्ववृद्ध नहीं हैं और आह्ववृद्ध होंन के ज्ञासिक । सब

जा भिक्ष यशम्बी हे, और घीवर इत्यादि जिन्हें बहुत प्राप्त होते रहने हैं, उन्हीं को नाविर भिक्ष धर्मात्यन पर निमन्त्रित करते हैं । वे वेंसा करते हैं, जो चिरकाल तक उनके अदिन और हु प के लिये होता है।

काइयव ! जिसे उचित कहनेवाले कहते हे --- ये प्रधायारी घटावर्य वन के उपवय में पर गये,

§ ९, झानाभिञ्जा मुत्त (१५, ९)

ध्यान-अभिजा में काश्यप युद्ध-तुल्य

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ । जब में चाहता हैं, कामों से स्वक्त हो, अक्ष्यल धर्मों से 'यक्त हो, सवितर्क सविचार विवेरज ब्रांति-सुखबाले प्रथम ध्यान को बाप्त हो कर विहार करता हूँ।—भिक्षुओं । काइयप भी।' ब्रथम ध्यान को ब्राह्म''।

भिक्षको ! जब में चाहता हूँ, वितकं विचार के शान्त हो जाने में आध्यातम सप्रमाद, चित्त की एकामता में युक्त, समाधिज प्रीति सुग्वबाले हिनीय ध्यान को प्राप्त होकर विहार करता हूँ—भिक्षुओं ! काइयप भी । हितीय ध्यान को प्राप्त ।

भिक्षुओ । जय में चाहता हूँ तो प्रीति के हट जाने से उपेक्षा के साथ विहार करता हूँ, स्मृति-मान् ओर संप्रज्ञ हो काया से सुम्ब का अनुभव करते हुये । जिसे आर्यपुरुप कहते हैं कि, उपेक्षा के साथ स्मृतिमान् हो सुम्ब से विहार करता है इस तीसरे ध्यान को प्राप्त कर सुरा से विहार करता हूँ ।— भिक्षुओ । काइयप भी तीसरे ध्यान को प्राप्त ।

भिक्षुओ । जर में चाहता हूं, सुख आर दु प के प्रहाण में, पूर्व ही सोमनस्य ओर दोर्मनस्य के अन्त हो जाने से, अहु प, अमुप, उपेक्षा से स्मृति-पारिशुद्धियारे चतुर्थ ध्यान को प्राप्त कर विहार करता हूँ।—भिक्षुओ । काश्यप भी विधे ध्यान को प्राप्त ।

भिश्चको। जन में चाहता हूँ, मर्चया रूपमञ्चाओं के समितियमण से, प्रतिध सञ्चाओं के अन्त हो जाने से, नानात्व सज्ञाओं के अमनिमकार से, आकाश अनन्त हे—ऐसा आकाशानज्ञायतन को प्राप्त कर विहार करता हूँ।—भिश्चओं। काश्यप भी ।

भिक्षुओ ! जब में चाहता हूँ, सर्वथा आकाशानन्चायतन का समितिक्रमण कर 'विज्ञान अनन्त है' ऐमा विज्ञानकायतन की प्राप्त कर विहार करता हूँ—भिक्षुओ ! काश्यप भी ।

भिक्षुओ । जब मैं चाहता हूँ, सर्वथा विज्ञानद्वायतन का समितिक्रमण कर 'कुछ नहीं है' ऐसा भाकिञ्चन्यायतन को प्राप्त कर विहार करता हूँ। — भिक्षुओ । काश्यप भी ।

भिक्षुओ । जब में चाहता हूँ, सर्वथा शाकिज्ञ श्वायतन का समितिक्रमण कर नेवस ज्ञानास ज्ञायतन को प्राप्त कर विहार करता हूँ। — भिक्षुओ । काश्यप भी ।

मिछुओ । जब में चाहता हूँ, सर्वथा नैवसज्ञानासज्ञायतन का समतिक्रमण कर सज्ञावेदियत निरोध को प्राप्त कर विहार करता हूँ—मिछुओ । काइयप भी •••।

भिक्षुओ ! जब मैं चाहता हूँ, अनेक प्रकार की ऋदियों का अनुभव करता हूँ—एक होकर बहुत हो जाता हूँ [देखों पृष्ठ २४३]।—भिक्षुओ ! काश्यप भी ।

भिक्षुओ । मैं आश्रवों के क्षीण हो जाने से, आश्रव-रहित चेतोविमुक्ति और प्रज्ञाविमुक्ति को इसी जन्म में स्वय जान, साक्षास्कार कर और प्राप्त कर विहार करता हूँ।—भिक्षुओ । काश्यप भी आश्रवों के क्षीण हो जाने से, आश्रव-रहित चेतोविमुक्ति और प्रज्ञाविमुक्ति को इसी जन्म में स्वय जान, साक्षात्- कार कर और प्राप्त कर विहार करता है।

६ १० उपस्सय सुच (१५ १०)

युस्कतिस्सा भिश्चणी का संघ से वहिष्कार

पसा मैंने सुवा ।

पुर समय शाक्षुप्तान् काश्चयय आयस्ती में अवायपिण्डिक के माराम जतस्त में विद्वार करते में।

a

त्रव आयुष्मान् आत्मन् पूर्वोद्धसमय पहन कीर पावचीवर छ वहीं आयुष्मान् महाकास्वप पे वहीं राये । बावर आयुष्मान् महाकास्यप सं बोको---सन्तं कास्वप ! वहीं मिद्रानियों का रूपन है वर्षों वर्षों ।

भारतस्य मानन्य ! भाष कार्षे भाषको बहुत काम पास रहता है ।

बूसरी बार भी "।

चीसरी बार । तम व्यक्तमान् महाकाहपप पहन बार पानवीवर के सायुप्पान् आवन्द की पीछे किसे कहाँ मिह्नियों का स्थान वा वहाँ गये। बाकर विके सासन पर वेट गवे।

₹

वन पुस्तित्सा निश्चणी असंदृष्ट दोकर सर्तताप के सम्ब कहने सनी:—नवा भागे महाकारण को आपे देवेद्दृति सालव्य के सामने समीपदेश करना अपन्न का है केसे, कोई पूर्व नेक्वेसका किसी पूर्व बनालेकाके के पास सूर्व केचने को बाद। वंसे द्वी आपं महाकारूपण ने आपं सामन्य के सामने को सामने को सामने को

भाषुप्तान् सहाकास्वरं ने भुक्ततिस्ता सिद्धवी को ऐसा कहते सुना ।

ग

एव, मानुष्माव् महास्पर्यय वातुष्पान् भातन्त्र से बोके---सापुस भातन्त्र | वदा में सूर्य वेषये-वादा हैं कीर भाग सूर्व वतानेवाके या में सूर्व वतानेवाका हैं भीर बाग सूर्य वेषयेवाते !

मन्ते कास्पण ! वह मूर्ण की है इसे कमा कर हैं।

मामन्द ! उद्देर संध भापके विषय में और चर्चा न करे ।

आहुम व्यवस्य ! आप क्या समझते हैं ?

रवा अगवार्य वे कावके विषय में निष्ठासंत्र के सामने उपस्थित किया वा कि:—सिष्ठानी । वर्ष में बाहता हैं, अपने व्यान को बास कर विदार करता हैं—जार झालक्यू भी 'अपने क्यान की प्राप्त कर विदार करता है ?

मही भग्ते !

भादुम | मेरे विचव में मगवाब् ने मिश्चमंत्र के सामने पेता उपस्थित किया था | | | नवीं प्वावावस्थानी के विचय में पेता समझ केवा वादिन | आवुस । यह समझा जा सकता ह कि मात हाथ का ऊँचा हाथी ढेंद्र हाथ के तालपत्र में छिप जाय, किन्तु यह सम्भव नहीं कि मेरी छ अभिजायें छिप जायें।

घ

थुस्लितिस्सा भिधुणी धर्म से च्युत हो गई।

६ ११. चीवर सुत्त (१५ ११)

आनन्द 'कुमार' जैसे, शुह्ननन्दा का संघ से वहिष्कार

एक समय आयुष्मान् महाकाद्यप राजगृह में वेलुवन कलन्दक निवाप में विहार करते थे।

क

उस समय आयुष्मान् आनन्द दक्षिणाशिरि में भिक्षुओं के एक वहें सघ के साथ चारिका कर रहे थे।

उस समय आयुष्मान् आनन्द के तीस अनुचर भिक्षु जो विशेष कर कुमार थे, शिक्षा को छोड़ कर गृहस्थ हो गये थे।

ख

तव, आयुष्मान् आनन्द दक्षिणागिरि में यथेच्छ चारिका कर, राजगृह के वेलुवन में जहाँ आयुष्मान् महाकाश्यप थे वहाँ पधारे, और आयुष्मान् महाकाश्यप का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये।

एक और वैठे आयुष्मान् आनन्द को आयुष्मान् महाकाश्यप वोले --- आयुस आनन्द ! किस उद्देश्य से भगवान् ने कुलों में 'त्रिकभोजेन' की प्रज्ञिति ही है ?

भन्ते कार्यप ! तीन उद्देश्य से । बुरे लोगों के निग्रह के लिये, शीलवन्त भिक्षुओं के भाराम के लिये, कि पापेच्छ लोग पक्ष लेकर कहीं सध में फूट पैटा न कर दें, और फुलों की भलाई के लिये।

मानुस आनन्द ! तो, आप क्यों इन नये भिक्षुओं के साथ चारिका करते हैं, जो असयमी, पेह, भौर सुतक्कड़ हैं ? मालुम होता है कि आप शस्य और कुलों को नष्ट करते हुये विचरते हैं। मानुस आनन्द ! आप की यह नई मण्डली घट रही है, कमती जा रही है। यह नया कुमार मान्ना को नहीं जानता है।

भन्ते काश्यप ! मेरे बाल भी पक चले, किंतु आज तक आयुष्मान् महाकाश्यप के 'कुमार' कहकर पुकारे जाने से नहीं छूटे हैं।

आयुम आनन्द ! इसी से तो मैं कहता हूँ, यह नया कुमार मात्रा को नहीं जानता है ।

ग

थुल्लनन्द्रा भिक्षुणी ने सुना कि आर्थ महाकाश्यप ने धार्य वेदेहसुनि आनन्द को ''कुमार'' कहकर धत्ता वताया है।

तव, शुह्ननन्दा भिक्षणी समनुष्ट होकर असतोप के वचन कहने लगी —आयुष्मान् महाकाश्यप, जो पहले अन्य तैथिक रह चुके हैं, आर्य आनन्द को 'कुमार' कहकर धत्ता घताने का कैसे साहस करते हैं ? आयुष्मान् महाकाश्यप ने थुछनन्दा भिक्षुणी को ऐसा कहते सुना।

ह १० उपस्सम मुच (१५ १)

शुरुष्ठतिस्सा भिश्वणी का मंग्र से वदिष्कार

पुसा मिने सुमा । पुरू पुसुन असुपुरमाल बाहुयुप आयस्ती में अनायपिनिष्क क आराम अत्यम में बिहार करत थ।

क

त्रच आयुष्पान् भानम्ब पूर्वाद्वसमय यदन भार पासवीवर के बहाँ आयुष्पान् महाकास्य में वहाँ गये। बाकर शायुष्पान् सहावादवय ॥ बोट्य-अन्ने कादयय ! बहाँ भिभुषिकों का स्वान है वहाँ वहाँ।

आयुस कातन्य ! भाप कार्वे आपको बहुत काम धाम रहता है । इसरी बार भी' '!

त्तीसरी बार । तक आयुष्मान् महाकादयप पहन और बाद्यभीवर के आयुष्मान् आवन्य की पीछे किय कहाँ मिसुयियों का स्थान था बहाँ राये। जाकर दिछे शासन पर वट राये!

16

वत कुछ निष्ठिचियों वहीं बाहुस्माय महाकाश्यय थे शहीं गई काकर शाहुस्मान सहाजाश्यय का क्षित्रशास कर एक और केंद्र गई। एक और बैसी हुई कर शिक्षणियों की आहुस्मान, सहाकाश्यर ने कामेंपरैद्याकर दिवा दिया थेशा दिवा और उनके शासिक थानों को वर्षक्र कर दिया। धर्मोपरेद्य कर साहुस्मान, महाकाश्यय जावन से वडकर नके गये।

तव पुरस्कितिस्सा निष्कृणी कार्यद्वव होकर कामताण के बाव्य कहते कारी ——का बार्ल महाकालया को कार्य वेदेहमूनि कान्त्रम् के सामने प्रमोपदेश करना अध्या था। वेदे, कोई पूर्व वेवनेत्राका किसी पूर्व वानेत्राके के पास पूर्व वेवने का जाव। वेसे ही आर्थ महाकादवय वे आर्थ जानन्य के सामने वर्मी पदेश करने का साहर किया है

भाषुप्तान् सहाकास्त्रप नं शुक्कतिस्ता मिल्लूची को पुंसा कहते सुना ।

ग

पन, बाबुध्मान् महाकाश्वर कायुष्मान् कानम्य सं श्रोको—आयुस कानम्य १ रचा में सूई वेयने-बाका हूँ जीर भाग सूई वयानेवाके वा में सूई बवानेवाका हूँ और आग सूई वयवेवाके ?

मन्ते कारण (यह मूर्च की है इसे क्रमा कर हैं)

आनम्ब ! ठहरें सेव आपके विषय में और चर्चा व करे ।

माधुस मामान्य ! धाप क्या समारो है ?

भया समावान् में व्यावने विवन में सिद्धारीय के लामने उपलिक्त किया वा कि:—सिद्धानी ! वर्ष मैं बाहण हूँ, समय क्याव की माठ कर विहार करता हूँ—और आतन्त्व भी "मक्स क्याव की प्रारं कर विचार करता है !

नहीं भन्ते !

आयुक्त । मरे विधव में धारवाणू ने शिक्षुसंब के सामने देसा वपरिवय किया था । [बवा प्यानावस्थाओं के विधय में देसा समझ केना चाहिके] आवुस । कोई यह ठीक ही कह सकता है—यह भगवान् का पुत्र, मुझसे उत्पन्न, धर्म से उत्पन्न, धर्म से निर्मित, धर्मदायाद है जो उनके टाट जैसे रूखे पासुकूल को धारण करता है।

आबुस ! जब मे चाहता हूँ, प्रथम ध्यान "को प्राप्त कर विहार करता हूँ।

आवुस ! में आश्रवों के श्लीण हो जाने से, आश्रव-रहित चेतीविमुक्ति और प्रज्ञाविमुक्ति को इसी जन्म में स्वय जान, साक्षात्कार कर और प्राप्तकर विहार करता हूँ।

आदुम ! ... मेरी छ अभिज्ञायें नहीं छिप सकतीं।

घ

थुल्लनन्टा भिक्षुणी धर्म से च्युत हो गई।

§ १२. परम्मरण सुत्त (१५. १२)

अञ्चाकृत, चार आर्यसत्य

एक समय आयुष्मान् महाकाश्यप और आयुष्मान् सारिपुत्र वाराणसी के पास ऋषिपतन मृगदाय में विहार करते थे।

तव, आयुष्मान् सारिपुत्र सांझ को ध्यान से उठ नहीं आयुष्मान् महाकाश्यप थे वहाँ गये, और कुशल क्षेम के प्रश्न पृष्ठकर एक ओर बैठ गये।

एक भोर वैठ, आयुष्मान् सारिगुत्र आयुष्मान् महाकाश्यप से बोले— आबुस काश्यप ! क्या जीव मरने के बाद रहता है ?

आबुस ! भगवान् ने ऐसा नहीं वतलाया है कि जीव मरने के वाद रहता है।

आधुस ! तो क्या जीव मरने के वाद नहीं रहता ? "

भावुस ! भगवान् ने ऐसा भी नहीं वतलाया है कि जीव मरने के वाद नहीं रहता है।

आबुस ! तो क्या होता भी है, नहीं भी होता है ", न होता है, न नहीं होता है

आवुस । भगवान् ने इसे क्यों नहीं बताया है ?

आवुस । क्योंकि, यह न तो परमार्थ के लिये हैं, न ब्रह्मचर्य का साधक है, न निर्वेद के लिये हें, न विराग के लिये हैं, न निरोध के लिये हैं, न शान्ति के लिये हैं, न ज्ञान के लिये हैं, न सम्बोधि के लिये हैं, और न निर्वाण के लिये हैं। इसीलिये भगवान् ने इसे नहीं बताया।

आबुस ! तो, मगवान् ने क्या बताया है ?

आधुस । यह दु ख है—ऐसा भगवान् ने बताया है । यह दु ख-समुद्य ', निरोध ', निरोध-गामिनी प्रतिपदा है—ऐसा भगवान् ने बताया है १

आवुस ! भगवान् ने इसे क्यों चताया है ?

आवुस ! क्योंकि, यही परमार्थं का साधक हैं, ब्रह्मचर्यं का साधक हैं, निर्वेद के लिये हैं निर्वाण के लिये हैं। इसी से मगवान् ने इसे बताया है।

§ १२. सद्धम्मपतिरूपक सुत्त (१५. १३)

नकली धर्म से सद्धर्म का लोप

ऐसा मैंने सुना। एक समय मगवान् श्रावस्ती में अनाथपिंडिक के आराम जेतवन में विहार करते थे। संयत्त निकाय

तद बायुष्मान् महाकाश्यप बाबुष्मान् भानन्त् से बोक्रा-भावस भानन्त् ! श्रहनन्त्रा भिश्लमी का सहसा ऐसा कहता अवित महीं। आवस ी अव मैं किर हाडी सहवा कापाय वस पहन घर से वेघर हा प्रवस्तित हो रावा हैं बार उन आईन् सम्बक सम्बद्ध समझान को कोड़ किसी इसरे को गुरु नहीं मानवा हैं।

भागुस ! पहले घरवाली रहते मेरे मन में यह हुआ—धर में पश्चना बढ़ा शंकर है गाँवा है। भीर मजञ्चा सुता माकास सा है। भर में रहत हथे विश्वकृष्ठ भूड पूर्ण शक्तकिक्शित-सा अक्षावर्य पायम करना मदा कटिन है। सी नवा न मैं शिर बाबी सुववा कापावबद्ध पहल बर से बेधर होकर प्रक्रित

हो शार्द ।

भातुस ! तव में तुवड़ी का यक चीवर बवा को कोक में खईत हैं अनके बड़का से फ़िर गड़ी

महत्वा कापाय बच्च पहल बर सं बेचर होकर महत्वित हो शया ।

सी मैंबे इस प्रकार प्रवृतित हो। रास्ते में बाते हवे राजगृह और बाक्रम्या के बीच सहुपूत्र वाव पर मगवान को बड़े हुथ देखा । देखकर मेरे मन में हुआ-विद में किसी शुद को देखें दो मगवान ही को देन्द्र सगत और सम्बद्ध सम्बद्ध ।

मातुस ! सो मैंने बढ़ी अगवान के बरवों पर बिर कर कहा-मधवान मेरे गुढ़ हैं में

जापका माजक हैं।

नाबुस ! पुंसा कहने पर भगवान मुझस्र बोके--काश्वप ! जो इस प्रकार के चित्र से समझागत मायक को विवा जाने कह है कि 'शानता हूँ विभा तंत्र कह है कि 'देखता हूँ' उसका सिर इस-हर कर गिर बाव । काहमर ! में जानकर कहता हूँ कि 'शानता हूँ' देखकर कहता हूँ कि 'देखता हूँ ।

काश्यप ! इसकिये तुम्ह ऐसा सीकना चाहिये—स्थविरों में नये कोगा में और सम्बस में ही

भवपा प्राप्तुपश्चित होशी।

काइयप ! इसकिये तुःखें पेसा श्रीकवा चाडिये-क्रमकापसंदित को धर्म सुर्देगा सभी को दस-कर मन में का पद्माप्रक्रित से सर्वेता। ----

कारबप ! इसकिये तुर्वे ऐसा सीदाना चाडिये-अत्यन्त कामकारी कायगतास्यृति सुझसे कमी

भी छुदने व पामगी।

त्रव मगवान् मुझे ऐहा उपवेश है आसव से उउकर चडे गवे।

भारत ! सात दिनों तक मैं दिना मुक्त इये ही शहरियह का भोग करता रहा । बाहरें दिन समे विष्य ज्ञान बत्पन्न हो गया ।

थानुम } तर मगवान् रास्ते से इट एक इक्ष के नीचे गवे।

मानुस ! तब मेंने नवनी गुड्डी के शवाडी को भीवेत कर विधा दिवा और मगवान से नहा-भारते] मगवाबु इस पर वेंडें का चिरकाक तक मेरे हिंद और शक्त के किये हा ।

भगवात विधे जासन पर बैंड शये ।

भागुम ! यद वर मगधान् मुझमे बोक काल्यप ! तुन्हारी वह शुर्वी की संवारी तो वहुत मुकारम है।

मन्त ! मुसपर अनुकरना करके गणवाब इस संवादी को स्वीकार करें !

कार्यप ! तुम मेरे शह जसै क्ये प्राते पांसकृत को बारज करोगे ?

मन्ते ! हाँ चारच कक्षणा ।

मानुम ! मा मिने भगवान को अपनी समाही है वी और उनके प्रांसुकृत को अपने भारण कर निका।

पाँचवाँ पारिचछद

१६. लाभसत्कार-संयुत्त

पहला भाग

प्रथम वर्ग

§ १. ढारुण सुत्त (१६,१,१)

लाभसःकार दारण है

ऐसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् श्रावस्ती में श्रनाथ पिण्डिक के भाराम जेतवन में विहार करते थे।

भगवान् वोले—भिक्षुओ । अनुचर निवाण की प्राप्ति के मार्ग में लामसत्कार वटा दारुण है, कह है, तीया हे, विवकर है।

सिक्षुशो ! इसिलये, तुन्दे ऐसा सीयना चाहिये कि — लाम, सत्कार, प्रशासा आदि को छोड़ दूँगा, उन्हें मन में उहरने नहीं दूँगा।

भिक्षवो । तुम्हें ऐसा ही सीखना चाहिये।

§ २. वालिस सुत्त (१६. १. २)

लाभसत्कार दारुण है, वंशी की उपमा

श्रावस्ती ' जेतवन मे

भिक्षुओं । अनुत्तर निर्वाण की प्राप्ति के मार्ग में छामसत्कार वहा टारुण है, कह है, तीखा है, विशवर है।

मिक्षुओ । जैसे, अंकुसी फॅकनेवाला चारा लगाकर अकुमी को गहरे पानी में फेंक है । तब, चारे के लोम से कोई मल्ली उसे निगल जाय । भिक्षुओ ! इस तरह, वह मल्ली अकुसी को निगल कर यहे दु ख़ और विपत्ति में पद जाती है, महुआ जो चाहे उससे करता है ।

भिक्षुत्रो ! यहाँ अकुसी फेंकनेवाला महुवा पापी मार को ही समझना चाहिये, ओर उसकी अंकुसी यही लाम, सत्कार, प्रशसा आदि है।

भिक्षुभो ! जो भिक्षु लामादि पाने पर बड़ा खुश होता हे और आनन्द उठाता है, वह मार की अंकुसी में फँसा हुआ समझा जाता है। वह दुख और विपत्ति में पदता है। मार उसमे जैसा चाहता है करता है।

इसिक्ये, भिक्षुओ । तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये ।

त्तव आयुप्पात् महाकाश्यप अर्ही भगवाल् थे वर्ही आये और मगवात् का अभिवादन कर धक सोर बर गये।

भार बड गय। पक मोर बैठ भाषुप्पान् महावाहयय भागवान् से वोके:— मनते ! त्रवा हेतु है क्या प्रत्यव है कि पहले अपद दी शिक्षायव में भीर (दस पर थी) बहुतों में आईत् यत्र था किया था ! मनते ! त्रवा

हन है चरा प्रत्य दें कि इसे समय सिम्हापद बहुत हैं और कम महत्याद वर प्रतिक्रित हैं ? कायप ! पेमा दी दाता है—सालों के दीन हाले और सबसे के छन दाने पर महुत सिमापह

हात हैं भीर करन मिश्रु शहेन-नन पर प्रतिशित होते हैं। कास्तर ! तब तक सदमें का कोप नहीं होता है जब तक कोई तुसरा नककी धर्म उठ वार्व

का स्वरं । पर तक सद्ध का कांग नहां हाता ह वा तक वा हुने हा पुरुषा उनका अन पर पर मही होता। बच्च कोंद्र नक्की पर्ने कट पड़ा होता है तो सद्धमें का कीय हो काता है। कास्पर ! बेसे सब तक सच्च साम का कोंग नहीं होता वाच तक नक्की सैचार होने नहीं त्याता "बेसे ही।

काइयर ! पूर्णियान, सबसे का सुरु कहीं करता; न आयोशातु न तेश्रोणातु, और न नायुपातु ! किंतु पढ़ी ने मूर्ण कोग उत्तक होते हैं श्रो शब्दर्म का सुरू कर इंग्लंडिं। काइयर ! बसे अधिक सार से ताब कर सारी है यम पामें इक लाई काता !

काइवय ! यसे पाँच कारण हैं जिल्ला सन्दर्भ नह बोकर सुत हो जाता है । जीन से पाँच ?

(1) कारपप ! निशु निशुको जगामक जगारिकाचें हुद क प्रति गीरव नहीं करती वनका रकाक नहीं करनी हैं। (२) वर्ष के प्रति । (३) संख के प्रति । (७) क्षित्रा के प्रति । (५) समाचिके प्रति ।

काइयप ! यही पाँच कारण हैं जिसस सक्ष्मी नह हो कर सुद्ध हो बाता है ।

कारपप ! ऐसे पाँच कारच हैं जिनसं सदर्भ रहता रहता है सील और लुस नहीं होता !

(१) " चुद्द क मति शारव । (१) घम के मति" । (३) संव के मति" । (४) सिका के मति " । (५) समाधि के विति ।

कारकप ! बड़ी पाँच कारक है। जिससे सजूस उहरा रहता है। शील और शुस नहीं होता ।

कादयपश्चेतुत्त समाप्त ।

वह भिक्षु लाभादिकों पर फूल जाता है और दूसरे शीलवन्त भिक्षुओं को नीचा समझता है। भिक्षुओं। उस मूर्ख भिक्षु का यह चिरकाल तक अहित और दु ख के लिये होता हैं।

··। ऐसा सीखना चाहिये।

§ ६ असनि सत्त (१६. १. ६)

विजली की उपमा और लामसत्कार

श्रावस्ती"।

भिक्षुओ ! विजली के गिरने की उपमा उस शैक्ष्य भिक्षु से दी जाती है जिसका मन लाभादि में फँसता है ।

भिक्षुओ । लाभादि को ही बिजली का गिरना समझना चाहिये।

• ऐसा सीखना चाहिये।

§ ७. दिडू सुत्त (१६.१७)

विपैता तीर

श्रावस्ती ।

विपैछे तीर से चुमे पुरुप की उपमा उस शेक्ष्य भिक्षु से दी जाती है जिसका चित्त लाभादि में फैंस जाता है।

"'ऐमा सीखना चाहिये ।

§ ८. सिगाल मुत्त (१६.१८)

रोगी शृगाल की उपमा

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ ! रात के भिनसार में तुमने श्वगालों को रव करते सुना है ?

भिक्षुओ । वह श्वाल वृदा, उनकण्णक नामक रोग से पीदित हो न तो एकान्त में चेन पाता है, न बृक्ष के नीचे ओर न खुळी जगह में । जहाँ-जहाँ जाता है, जहाँ-जहाँ खड़ा रहता है, जहाँ-जहाँ वैठता है ओर जहाँ-जहाँ लेटता है वहाँ-वहाँ बड़ा दु ख मोगता है ।

भिक्षुओ ! वैसे ही, कितने भिक्षु लामादि में चित्त फँसा कर न तो श्रून्यागार न वृक्ष के नीचे और न खुली जगह में रमते हैं। नहाँ-नहाँ जाते हैं ... हुख उठाते हैं।

ऐसा सीखना चाहिये।

§ ९. वेरम्ब सत्त (१६ १ ९)

इन्द्रियां में संयम रखना, वेरम्व वायु की उपमा

"भिक्षुओ ! उपर आकाश में वेरम्व नामकी एक हवा चलती है। इसके बीच में जो पक्षी पदता है वह फेंग जाता है। उस पक्षी के पैर, पाख, शिर और शरीर सभी अलग भलग हो जाते है।

भिक्षुओ ! वैसे ही "भिक्षाटन के लिये पेठता है । उसके शरीर, घचन और मन अरक्षित रहते हैं । स्मृति और इन्द्रियो का सयम नहीं रहता है ।

संयुक्तनकाय

/ हु ३ कुम्म सुत्त (१६ १ ३) काभावि मयानक हैं, कछना और व्याधा की उपमा

धावस्ती ।

तिसुसो] पूर्वकाल में किसी जातासय में कसुओं का एक परिवार बहुस समय से बास करता था। उब एक कसूचे ये तृहारे कसूचे से कहा-—च्यारे कसूचे | उस बसह सह सामो। किन्तु वह कसूचा उस बसह पर कहा सथा। वहाँ किसी व्याये ने उसे भावा चकाकर सेच दिया। तब बह कसूचा वहाँ हस्सा क्यू क्या या वहाँ तथा। उस कसूचे ने इसे हर ही से बाते देखा। देखकर उसने कहा-— च्यारे | इस स्वाय पर सचे तो नहीं से !

प्यारे ! मैं बस स्वान पर गया ना ।

प्यारे ! को तुम भाक्ने से फिन्-विच को नहीं चये ?

प्यारे ! मैं माछे से छिद-दिय तो नहीं यथा हूँ, किन्दु यह बाया मेरे पीड़े-पीछे क्या है ।

प्यारे कपूर्व ! तुम किन पाने हो | किक याने हो | हुसी ब्यापों से तुम्बारे किसने बाप बादे फैसाकर मार किमे गाने हैं ! काली तम अब मेरे काम के नहीं पत्ने !

मिश्चमो ! पहाँ स्थाबा पापी मार को ही समझना चाहिये । माला यही सामादि है। भाषा

संसारमें स्थाद क्षेत्रा और राग करवा है।

[इत्रह के देशा]

इ. ४ दीघलोमी सुच (१६ १ ४)

सम्बे बास बासे ग्रेंडे की उपमा

भाषस्ती' जेतचन में ।

निम्नुको ! बैसे कन्ये-कन्ये वाक वाका कोई मेंदा केंद्रीकी झाड़ी में पैड बाव । यह हमर

क्या क्या काम कींस काम कक्ष काम बड़ी विपक्ति में पट काम ।

सिद्धानो ! वैसे ही कियवे भिद्धा कामादि में पदानर विकार विकार हो हाद में पहल और पात्र पीपर के गाँव वा करने में निकारन के किये पैन्सा है। यह इयर स्थर क्या स्थाता है वैसे बाता है पर बाता है।

[पूर्ववत्]

ई ५ क्लाइसच (१६ १ ५)

स्ममसत्कार से बातन्त्रत होगा बहितकर है

सिंहायों ! बीचे सेवा कावेबाका कोई रिवस सेवा से कबरण समा हो और उसके साम^{वे} सेकं की एक देर पड़ी हो। इससे यह बणने को बूसते शिक्कुमों स बड़ा समग्रे:—से सेवा बावेबाका रिक्य सेवा से कपरण समा हूँ और सेरे सामन सेके की एक वेर गड़ी है।

मिश्रुची ! वैसे ही 'निश्वादन के किये पैटता है । यह वहाँ मोश्रम करके हसरे दिन के किये

सी विमन्त्रित होता है और उसका पात करा होता है।

भार कार्यास में कार सिहानी के सामने गर्थ के मान नहात है—सैने मोजन कर किया पूरा दिन के कियो मी निमन्त्रत हूँ और सेरा पात्र सी बुता है। से चीनसादि का करन करनेपाया हूँ। वे दूसरे कसाते करनेपाया हूँ। वे दूसरे कसाते करनेपाया हूँ। वे

दूसरा भाग

द्वितीय वर्ग

§ १. पठम पाती सुत्त (१६. २. १)

लाभसत्कार की भयंकरता

श्रावस्ती'''।

भिक्षको । "लाभसत्कार वदा दारुण है।

भिक्षुओ ! मैंने एक समय एक पुरुप के चित्त को अपने चित्त से जान लिया. —यह भिक्षु सोने की थाली में भरे हुये रजत-चूर्ण के लिये भी जान-चूझ कर झूठ नहीं बोलेगा।

उसी पुरुप को मैंने आगे चलकर लाभसरकार के लिये जान वृझ कर झूठ घोलते देखा। • इसलिये, ऐसा सीखना चाहिये।

§ २. दुतिय पाती सुत्त (१६. २ २)

लाभयत्कार की भयंकरता

श्रावस्ती''।

मिक्षुओ। मैंने एक समय एक पुरुप के चित्त को अपने चित्त से जान लिया—यह मिक्षु चाँदी की थाली में भरे हुये सुवर्ण-चूर्ण के लिये भी जान युक्त कर क्रूठ नहीं वोलेगा।

उसी पुरुप को "।

§ ३-१०. सिङ्गी सुत्त (१६ २ ३-१०)

लाभसत्कार की मयंकरता

- ३ सुवर्ण-निष्क के लिये भी जान वृझकर झड़ नहीं।
- ४. एक सी सुवर्ण-निष्क के लिये भी
- ५ " निष्कों की एक ढेर के लिये भी ।
- ६. निष्कों की सौ ढेर के लिये भी ।
- ७ जातरूप में भरी हुई सारी पृथ्वी के लिये भी ।
- ८. ससार की किसी भी वस्तु के लिये
- ९. 'प्राणों के निकल जाने पर भी ।
- १० सम्रसे सुन्दरी स्त्री के किये भी ।

हितीय वर्ग समाप्त ।

बर बहाँ किसी की को देखता है जो अपने अंशों को ब्रीट से बँकी नहीं। उसे देख उसके बित में राग बया बाता है। बित में दाग बड़े आने से बह विद्वान को छोड़ सुहस्य हो बाता है। तर, नूमरे सोग इसके बीजर को, पाय की आसन को और सुद्दानी को बड़ा-उटा कर से बाते हैं। बेरम्य हवा में पढ़े पानी बीजरह।

" पुना सीराना चाहिए।

८ १० समाधा सत्त (१६ १ १०)

लामसत्कार वारण है

भाषस्ति***।

मिशुकी । अञ्चल भिवाल की मासि के मार्ग में सामसत्कार बदा प्राइण है, कहु है तीया है क्षित्रकर है ।

मिशुको ! में देखता हूँ कि फितमे स्रोध सत्कार में अपने विश्व को चैंसा कर माने के नाद नाक

में उत्पन्न हो हुगति को प्राप्त होते हैं।

भिगुको ! में देखता हूँ कि कितने कोण असन्तर में चित्त को स्मार कर मरन के बाद मरक में करम को दर्गति को प्राप्त कोल दि।

भिशुको । में देलता हूँ कि कितने क्षेत्र असरकार और सरकार में विक क्ष्माकर अहुराँति की

प्राप्त क्राते हैं ।

मिशुनों ! अनुभार निकांग की प्राप्ति के सार्थ में काश्यसनकार इतना दारण हैं कड़ है सीकार किलकार है।

मिमुक्ती । हमस्तिष् येमा शीराना चाहिए कि-स्थान सरकार, यशीमा की छाइ बूँया उन्हें सन में दहरने नहीं होता !

मगरान यह गाते । इतना धडकर यह किर भी बाते-

आ सम्बार वा असरकार के मिकने पर अमसार वा बिहार करते हुए गमाधि को नहीं दिगाता है।

द्वस प्याय में तत्त्वर शुरूम रहि रणमयान को नहीं हिस्सीत है र सम्पुद्ध दशाहान-झीन दोकर रसन बरनवाडा बहुत हैं है

प्रथम यग गमात ।

•••उपासिका श्राविकाओं में यही दोनों आदर्श हैं।

वेटी ! यदि गुम घर से वेघर हो प्रविधत होना तो वैसी होना जैसी कि भिक्षणी क्षेमा और उत्पलवर्णा हैं।

- · मिक्षणी श्राविकाओं में यही दोनो आर्ट्स है।
- ••• [कपर के ऐसा]

§ ५. परम समणत्राद्यण सुत्त (१६. ३. ५)

लामसत्कार के यथार्थ दोप-वान से मुक्ति

धावस्ती

भिक्षुनो ! जो असण या प्राह्मण लाभादि के आस्वाद, आदीनव, और निःयरण को यथाभृत नहीं जानते है, वे ' प्राप्त कर नहीं बिहार करते हैं ।

भिक्षुओं । जो जानते हैं । प्राप्त कर विहार करते हैं ।

§ ६. दुतिय समणबाद्यण सुत्त (१६ ३. ६)

लामसरकार के यथार्थ दोप-ज्ञान से मुक्ति

थावस्ती ।।

भिक्षुओं ! जो श्रमण या त्राह्मण लाभादि के समुद्रय, अन्तराम, आस्वाट, आदीनव और नि सरण को यथाभूत नहीं जानते हैं, वे "'शाप्त कर नहीं विहार करते हैं ।

श्रप्त कर विहार करते है।

९ ७. ततिय समणत्राह्मण सुत्त (१६. ३ ७)

लाभसत्कार के यथार्थ निरोध-ज्ञान से मुक्ति

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ । जो लाभादि के समुद्य, निरोध, और निरोधगामिनी प्रतिपटा को नहीं जानते हैं, वे प्राप्त कर नहीं विद्वार करते हैं।

' प्राप्त कर विहार करते हैं।

§ ८. छवि सुत्त (१६. ३ ८)

लाभसत्कार खाल को छेद देना है

" भिक्षुओ ! लाभादि खाल को छेद देता है, खाल को छेद कर चाम को छेद देता है, मांस, नहारू, हड्डी, मजा को छेद देता है।

§ ९. रज्जु सुत्त (१६ ३. ९)

लाभसत्कार की रस्सी खाल को छेद देती है

श्रावस्ती '।

···कामसकार दारुण है।

मिधुओं ! लामसकार हुई। को छेदकर मजा में जा लगता है।

तीसरा भाग

तृतीय वर्ग

§ १ मातुगाम सुच (१६ ३ १)

सामसत्कार वादण है

धावस्ती ।

कामसस्कार दादल है।

मिल्लुमी ! एकान्य में कोई मकेमी की भी निसक विच को खुमाने में ससमये होती है, इसका विच काम सत्कार और मखेला में जैस काता है।

ऐसा सीधना चाहिए।

§ २ करयाणी सुच (१६ ३ २)

द्यागमत्कार वारम 🕏

'प्कान्त में सून्द्रीकी भी ।

६३ पुच सुच (१६ ३ ३)

कामसत्कार में न फैसना दुद के शावर्षा भागक

भावस्ती ।

कामसस्बार शस्त्र है।

सिद्धको ! सञ्ज्ञक वरासिका जनने हकसीते कावके प्रक्र को इस तरह शिकाचे हे---यात ! वैसा ववना वैसे विक्र गृहपति या आध्ययक इत्यक्त है ।

मिश्रुणी ! क्योंकि मेरे शृहरूप कावर्षों में यही दो शादर्श माने बाते हैं !

—धार्थ | बहि तुम वर से नेवर दो बाजो तो वैसा को जनना बीसे स्तरियुक्त जीर मीह्नस्यायन हैं। फिल्ली ! क्वींकि मेरे मिल्ल जावकों में बढ़ी दो जावकों माने कार्त हैं।

—तात ! बामस्य होकर सिका का पावन करते हुए कामाबि के केर में मत ऐँसवा । कामाबि के फैर में फैसने से वह तमाने विका के किए होगा ।

" येसा गौजवा चाबिय ।

8 ४ एक **धीता भूच (१**६३४)

सामसन्तार में न पेंसना तुख भी बाद्दी शाविकाएँ

भाषस्त

'कामसन्त्रार बारक' है।

भिश्चभी ! सदस्तु उपासिका मपनी हकतीती जादबी कदकी को इस तरह सिधानै—नेटी ! हुम मैसी होना जैसी की उपासिका सुप्रकुत्तरा और वेलुक्चक्तिय वन्द्र शांता हैं ।

चौथा भाग

चतुर्थ वर्ग

१. भिन्दि सुत्त (१६ ४. १)

लाभसत्कार के कारण सघ में फ्रट

श्रावस्ती'''।

••• हामसरकार दारण है। हाभसरकार में फैंग और पदकर देवदत्त ने संघ को फोड दिया। ऐसा मीखना चाहिए।

> § २. मृल सुत्त (१६ ४.२) पुण्य के मूल का कटना

"'देवटन के पुण्य के मूक कर गये ।""

§ ३. धम्म सुत्त (१६. ४. ३)

कुराल धर्म का कटना

''देवदन्त के कुशल धर्म कट गये।

९ ४. सुक्धम्म सुत्त (१६.४४)

ग्रस्क धर्म का कटना

देवदन्त के शुल्क धर्म कट गये।

§ ५. पकन्त सुत्त (१६. ४. ५)

देवदत्त के वध के लिए लामसत्कार का उत्पन्न होना

एक समय देवद्त्त के जाने के कुछ ही याद भगवान् राजगृह में गृद्धक्ट पर्वत पर विहार करते थे।

वहाँ, भगवान् ने देवदत्त के विषय में भिक्षुओं को आमन्त्रित किया।

भिक्षुओं ! देवदत्त के अपने वध के लिए उसे इतना लाभसत्कार उत्पन्न हुआ है। अपनी परिहानि के लिए ।

भिक्षुओं ! जैसे, केळा का वृक्ष अपने वध और अपनी परिहानि के लिए ही फल देता है, वैसे ही देवदत्त के अपने वध के लिए।

भिक्षुओं ! जैसे, वेणु का बृक्ष अपने वध और अपनी परिहानि के लिए ही फल देता है ।।

भिध्नुओ ! जैसे नक ।

भिक्षुओ ! जैसे, खचरी अपने वध और अपनी परिहानि के लिए ही बचा देती है ।

मिश्रुओ ! हीते कार्यू जकमान् प्रदूप एक सकत्त कभी धारी से बंधी में करोड कर चैंसे । वह कामा पास को बेदकर हारी को बेदकर समा में का कमे ।

वसे इति ।

६ १० मियस्तु सुच (१६३ १०)

सामसंस्कार गहुँच के द्विप भी विकासारक

भाषकी ।

थिसुमी ! को मिश्च श्रीणायन महत् है उसके किये भी में सामसत्कार को निम्म बताता हैं !

पैसा कहने पर कापुणमान सामान्य मगवान् से बोधे—मन्ते । सका झीनामव वर्षन् मिछ को बाममत्वार केटे दिव्य कर सकता है ?

भागन्द ! जिसका चित्र विस्कृत विद्युक्त विद्युक्त हो जुका है उसके क्रिये में कामसकार को जित्रकर नहीं बदाता।

मानल्य ! को तुम्क मातायी प्रदितास्य इसी कम्प में भ्रुम्त विद्वार को भ्राप्त कर केवेबाकों के क्रिये में कामसत्कार को विष्यकर बताता हूँ !

बातन्य | निर्माण मासि के मार्गा के किये कामसत्कार देखा इतका कहु तीका और विध्वकर है। ध्यतन्य | दूपकिये दुग्वें पेसा सीकता बाहिये—काम सत्कार और प्रसंसा को मैं छोड़ हूँया उनमें अपने विद्य को कैंसने नहीं हैता।

भाष्ट्र ! तुम्हें ऐसा श्रीक्ता चाहियं।

वतीय वर्गे भगाम ।

छठाँ परिच्छेद

१७. राहुल-संयुत्त

पहला भाग

प्रथम वर्ग

§ १. चक्खु सुत्त (१७. १ १)

इन्द्रियों में अनित्य, दुःख, अनातम के मनन से विमुक्ति

पुंसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् श्रावस्ती में

· एक शोर येठ, आयुष्मान् राहुल भगवान् से योले—भन्ते ! भगवान् सुझे उपदेश दें कि जिसे सुनकर में एकान्त में अकेला अप्रमत्त, आतापी, और प्रहितात्म होकर विहार करूँ ।

राहुल ! तो, क्या समझते हो चक्षु नित्य हे या अनित्य ?

अनित्य, भनते !

नो अनित्य हे वह दुःख है अयव। सुख ?

दु ख, भन्ते !

जो अनित्य, दु ख और परिवर्तनक्षील है क्या उसे ऐसा समझना चाहिये—यह मेरा है यह में हूँ, यह मेरा आत्मा है ?

नहीं भन्ते।

[वंसे ही]—श्रोत्र , बाण , जिह्ना , काया , मन ।

राहुल ! यह जान और सुनकर आर्यश्रायक चक्षु से मन को उचटा देता है।

उचटा कर विरक्त हो जाता है। विरक्त रह विसुक्त हो जाता है। विसुक्त होने से विसुक्त हो गया ऐसा ज्ञान हो जाता है। जाति क्षीण हुई, ब्रह्मचर्य पूरा हो गया, जो करना था सो कर लिया, कीर कुठ वाकी नहीं वचा—ऐसा जान लेता है।

§ २ रूप सुत्त (१७ १ २)

रूप में अनित्य, दु'ख़, अनात्म के मनन से विसुक्ति

राहुल । तो क्या समझते हो, रूप , शब्द , गन्ध , रस , स्पर्श , धर्म निर्त्य है वा अनित्य ?

अनित्य भन्ते।

[पूर्ववत्]

पसा सीधना चाडिने।

भगवान यह ओसे । इतना कह कर बुद फिर भी बोसे---

क्रम केंग्रा को भार बंता है

क्तस बेणु को एस वस को सत्स्मर कायुरूप की मार बेता है

हैसे अपना नर्म सचरी की II

§६ रयसच (१६ ८ ६)

देवदन का सामसत्कार उसकी हाति के सिप

राष्ट्रगढ चेत्रवन ।

इस समय कुमार अफ्नाठराजुलांक भुवद गाँव भी रखें को लेकर वेबदत्त के उपस्थान के के किसे भारत करता था: गाँव भी पक्कान की भाकियाँ भेजी आजी थीं।

त्व कुक सिद्ध वहाँ सम्बन्ध ये वहाँ आये और सम्बन्ध का लिम्बाइव कर एक ओर बैट गये। एक ओर बैट कर कम सिद्धानों ने समाबन को कहा—अन्ती (कसार अक्षतसम् प्राणियों सेकी

वाती है।

. सिक्षको | देवदश के जामसरकार की ईम्बॉनस करो | इससे कुक्क पर्मी में देवदश की

शानि ही है बुद्धि वहीं ।

मिहनी ! बैंसे जब्द कुले के नाक पर कोई फिल काट दे वसले कुला और मी जब्द हो वहे, वैसे हो, बब तक कुमार नवाद दब्द देवन्त का बपत्याव इस प्रकार करता रहेगा तब तक कुसक कर्मी में वसकी जानि भी है बिज करीं।

प्रेसा स्टीबना चाविये ।

§ ७ भाता सुच (१६ ४ ७)

रामसंस्कार वादन है

भावस्ती ।

सिद्धमों । जाससरकार रावन है। मिनुभो ! मैं किसी पुरुष के विश्व को अपने विश्व से बाब केसा हूँ—यह माता के कारण भी बाव इस कर हुट वहीं बोजेगा। शिक्षमा | वसी को कामसरकार में चैंस करवाल वर बट बोकते हेसता हूँ।

क्षि कर गुरु पहा वाकपा । शिक्षुका । करा का कानदास्वार न करा कानदार वर करू पाकप दूसपा हूं। मिक्सुका । इसकिये गुन्हें ऐसा सीक्षमा आहिये—बागसप्वार को बोध वूँया कामसप्वार

में अपने जिस को नहीं कैंसने बूँगा। मिल्लामी ! पैसा सन्दिना कालिये।

क्षात्रा संस्थान व्यवस्था ८८–१३ पितासच्च (१६४८–१३)

सामसत्त्रार बाठण है

(4) पिता; (९) माई; (१) थहन; (११) पुन; (१२) पुनी; (११) स्त्री '[करर के पैसा]

चतुर्घ पर्ग समास ।

दूसरा भाग

द्वितीय वर्ग

§ १. चक्खु सुत्त (१७. २. १)

चक्षु आदि में अनित्य, दुःख, अनात्म की भावना से मुक्ति

श्रावस्ती 1

· एक ओर घंडे हुये आयुष्मान् राहुल से भगवान् बोले —राहुल । · · चक्षु नित्य है दा अनिष्य ?

अनित्य भन्ते ।

जो अनिस्य है वह दु ख है या सुख ?

दुख भन्ते !

जो अनित्य, दु ख और परिवर्तनशील है उसे क्या यह कहना उचित है कि—यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा आत्मा है ?

नहीं भन्ते ।

श्रोत्र , प्राण , जिह्ना , काथा , मन ।

राहुल ! ऐसा देख और सुनकर आर्यश्रावक इनसे उचटा रहता है । उचटा रह वैराग्य करता है । वैराग्य से विमुक्त हो जाता है । विमुक्त होने से विमुक्त हो गया ऐसा ज्ञान उत्पन्न होता है । जाित क्षीण हुई, ब्रह्मचर्य पूरा हो गया, जो करना था सो कर लिया, और कुछ वाकी नहीं वचा है—ऐसा जान लेता है ।

इसी मॉिंत दश सूत्रान्त कर छेने चाहिये।

§ २-१०, रूप मुत्त (१७ २. २-१०)

अनित्य, दुःख की भावना

श्रावस्ती "।

राहुछ ! तो क्या समझते हो रूप — धर्म , चक्कुविज्ञान — मनोविज्ञान ° , चक्कुस स्पर्श ° —मन सस्पर्श , चक्कुसस्पर्शजा वेदना ° — मन सस्पर्शजा वेदना ° , रूप सज्ञा — धर्म सज्ञा , रूपसचेतना ° ° — धर्म सचेतना ° , रूपतृष्णा — धर्मतृष्णा ° , पृथ्वी धातु — विज्ञान धातु , रूप, वेदना, सज्ञा, सस्कार और विज्ञान नित्य हैं या अनिस्य ?

अनिस्य भन्ते ।

§ ११. अनुसय सुत्त (१७ २. ११)

सम्यक् मनन से मानानुदाय का नादा

थ्रावस्ती 🐰

• एक और बैठ, आयुष्मान् राहुल भगवान् से बोले — मन्ते । क्या जान और देख लेने से

🕯 ३ विष्ठाण सप (१७ १ ३)

विज्ञान में भौनत्य जुःस, सनात्म के मधन से मुचि राइस ! तो नेपा सरमध्ये को चक्ष्मिकान स्रोधविकान अपविकाय विद्वारिकान

कावाविकान मनीविकाम निश्य है वा कमिन्य है

श्ववित्य सम्ते ।

१४ सम्बन्धसम्बन्धः ४४)

सस्पर्ध में भनित्य काम जनातम के मनन से मक्ति राइक ! तो रथा समझते हो कार्सस्यका सन्तर्भाषको किन्य है वा अतिस्य ! अवस्थित प्राप्ते ।

६ ५ वेदना मच (१७ १ ५)

धेदमा का मनन

राहरू ! ही क्या एमसने ही कक्षासंस्थातील बेतना मन संपर्धना नवना वित्य है का सनित्य १

धानित्य अस्ते !

ई ६ सुरुजा सुच (१७ १ ६)

सम्राका मनव

शहरू ! की पना समझते हो करान्सला ---धर्म-र्नला किया है या अपित्य ? भनित्व सम्ते !

इ 🛢 सञ्चेतना सच (१७ १ ७)

संबेतरा का अनम

राष्ट्रक ! श्री क्या समझते हो कप-संबेदधाः ---पर्यान्यवेतमा नित्य है वा अभित्य ! बंगित्व धन्ते ! ~

> वैंट तण्हास्य (१७ १ ८) त्रप्णा का शनग

राहक ! ही पना समझते हो कच-नुष्णा नित्न है का अनित्प ? श्राविषय सम्ते ।

£ ९ धात सच (१७ १ ९)

धात का मनन शहस ! तो क्या समझते हो पूर्णा बाद्य आयोधातु " तेजो-बातु बाबु मोद्य "

आबारा मात्र 🦟 विद्यान पात्र निस्त है वा अनित्य ?

अभिरब अली ई

£ १० खाच सुस (१७ १ १०)

रकन्य का मनन

राष्ट्रक [ता क्या नामाने को कारण श्रेषना संशा संस्कार विद्यान नित्य है था ध्वतित्व १

श्रक्षिण समी । ↔

सातवाँ परिच्छेद

१८. लक्षण-संयुत्त

पहला भाग

प्रथम वर्ग

§ १. अहिपेसि सुत्त (१८. १. १)

अस्थि-कंकाल, गौहत्या का दुष्परिणाम

ऐसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह में चेलुचन कलन्दक निवाप में विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् लक्षण और आयुष्मान् महामौद्गल्यायन गृद्धकूट पर्वत पर विहार करते थे।

तव, आयुष्मान् महामौद्गल्यायन पूर्वाह्न-समय पहन और पात्रचीवर ले जहाँ आयुष्मान् लक्षण ये वहाँ गये । जाकर आयुष्मान् लक्षण से बोले—आयुस लक्षण ! चलें, राजगृह में भिक्षाटन के लिये पैठें ।

'आबुस, बहुत अच्छा' कहकर आयुष्मान् रूक्षण ने आयुष्मान् महामौहल्यायन को उत्तर दिया। तब, आयुष्मान् महामौहल्यायन ने गृद्धकृट पर्वत से उत्तरते हुये एक जगह मुसकरा दिया।

तव, आयुष्मान् रुक्षण आयुष्मान् महामौद्गल्यायन से योले—आवुस । आप के मुसकरा देने का

आबुम लक्षण ! इस प्रश्न का यह उचित-काल नहीं है। भगवान् के सामने मुझे यह प्रश्न पूछना तव, भायुष्मान् लक्षण और आयुष्मान् महामीहत्यायन भिक्षाटन से लोट भोजन कर लेने के बाद जहाँ भगवान् थे वहाँ गये, ओर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये।

एक ओर बैठ, आयुष्मान् रूक्षण आयुष्मान् महामोहस्ययन से बोरे —आप आयुष्मान् महा-मोहत्यायन ने गृद्धकूट पर्वत से उत्तरते हुये एक नगह मुसकरा दिया। सो आपके इस मुसकरा देने का क्या हेतु था ?

भावुस ! गृद्धक्ट पर्वत से उतरते हुये मैंने हिट्ठियों के एक ककाल को आकाश मार्ग से जाते देखा । उसे गींघ भी, कोए भी, और चील भी सपट-झपट कर नोचते थे, घीचते थे, दुकड़े-दुकडे कर देते थे, और वह आर्तस्वर कर रहा था ।

आवुस ! तय, मेरे मन में ऐसा हुआ—वडा आइचर्य है, बड़ा अट्भुत है। ऐसे भी प्राणी है। इस प्रकार का भी आत्मभाव-प्रतिलाभ होता है।

तय, भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—भिक्षुओ । मेरे श्रावक आँख खोले विहार करते हैं, ज्ञान के साथ विहार करते हैं। मेरे श्रावक इस प्रकार को भी जान लेते हैं, देख लेते है, साक्षात्कार कर लेते हैं।

भिक्षुओं । पहले मैंने भी उस सत्व को देखा या, किन्तु किसी को नहीं कहा । यदि मै फहता तो

किञान-सहित इस ऋरीर में तथा काइर के सभी निमित्तों में काइंडार⊏≂ममंदार≖मानातुदाय नहीं डोते हैं ?

राहुक | करीत क्याराठ या वर्षमात्र के क्याप्यास्म या बाहर के स्पूक वा स्प्रमा हीन वा प्रवीत, तूर के वा निकर के जिलने रूप हैं सभी न तो भेरे हैं य में हूँ, 11 भेरे आस्मा है। जो इसे बच्चापूठ सम्बक्त प्रकार से देवता है।

किटनी चेदना संजा संस्थार जीर विज्ञान है सभी म को मेरे हैं; न में हूँ व मेरे वायमा है। वो

इसे प्रयाभत सम्पन्न प्रज्ञा स देखता है।

राहुछ ! इसे बान और देख धेने से विद्यान-सहित इस धारीर में तथा बाहर के सभी निमित्तों में बर्डकर मर्माभार मामानकथ नहीं होते हैं।

ह**१२ अपगत स्ता** (१७ २ १२)

ममत्व के त्याग से मक्ति

आवस्ती ।

" पुरु कोर सैंड काशुप्तान् राहुछ अयवान् से बोर्ड — अन्ते | क्वा बान और देव केने से विकाय-सहित इस सती में तथा बाहर के सभी विभिन्नों में बाईकार समंकार और साम इर बाते हैं सब कर बान्य कीर विस्कृत हो काल है !

राहुक ! मतौत समागत या वर्तमान के जितने कप हैं सभी स तो मेरे हैं व में हैं, व भेरे भारता है।

वेदमा । संक्षा । संस्कार । विकास ।

राहुक ! इसे बाब की देख की में निज्ञान-सहित इस सरीर में तथा नाहर के सभी निर्मिणों में वर्षकर मर्मकर लीर मान इस बाते हैं मन हाइद साला और विस्तार हो बाता है।

राह्य संयत्त समाप्त ।

§ ८. म्रचिसारथी सुत्त (१८ १.८)

सुई-जैसा लोम और सारधी

स्चिलोम पुरुष को

• इसी राजगृह में सारिथ था

§ ९. सूचक सुत्त (१८. १. ९)

सुई-जैसा लोम और सुचक

स्चिलोम पुरुप को ।

इसी राजगृह में सूचक था ।

§ १० गामक्टक सुत्त (१८. १ १०)

दुष्ट गाँव का पञ्च

कुम्भण्ड पुरुप को आकाश से जाते देखा ।

वह जाते हुये उन अण्डों को कन्धे पर रख कर जाता था, बैठते हुये उन्ही पर बैठता था। 'वह आर्तस्वर कर रहा था।

"'वह इसी राजगृह में दुष्ट गाँव का पञ्च था।

प्रथम वर्ग समाप्त।

साबद बूमरे नहीं आनते। को अुद्दे नहीं साकते उनका यह चिरकाळ तक अदित भीर हुन्त्र के किये होता।

भिद्धभा । यह तरब इसी राजगृह में गीहरण काने वाला था। इस गाय के प्रकासकर वह कारों वय तक लाक में पवता रहा। वस कार्यके अपसाय में कसने पृसा आसमाय प्रतिकाम किया है। सभी सर्वो में इसी तरह।

§ २ गोषातक भ्रुत (१८ १ २)

मांश्रपेशी, गीहत्या का इप्परिणाम

[हम मद सूचा में नाजुष्मान् महासीद्रश्यायन बसी मकार सुसबराते हैं जिसकी व्यावना भगवान् करते हैं---}

भारत मासपेशी को मावास से खते देखा" ।

इसी राजग्रह में गोधातक था ।

§ ३ पिण्डसाङ्गणी सुच (१८ १ **१**)

पिण्ट और चिकिसार

मासपिण्ड को आकाश सं खाते हेका । इसी शत्रपुद में विविधार का ।

§ ४ निष्छयोरिन्म सत्त (१८ १ ४)

गास उत्तरा भार मेडों का क्साई

साक्ष कहर हव प्रका को केवा ।

पद इसी राजगृह में भेड़ों का कसाह था ।

६५ असिस्फरिक सुचर्धर १५०

्रसम्यार और स्ट्रार का कसाइ

मानुगा ! पृद्कुट वर्षत स कारते हुवे एक शांसकास (ध्यासहे शार्षे तमकार जगे हों) तुरुष को मानुगा ॥ कार्य पृत्ता । च जांस पृक्ष सूत्र वर कशी के सरीर पर शिशों च । यह बससे मार्डर्डर कर रहा था ।

बह दुगी राजगुद्ध में सम्भर का कमाई वा ।

§ ६ मसियागयो सत्त (१८ १ ६)

कर्ती जैन्स स्तम और वहनिया

शब्दिन्हाम पूरण को जाहणा से जाते हैंगा । इसी शब्दगृह में बुगमार (००१तिका) था ।

🛂 ७ उगुकारनिक सुच (१८ १ ७)

याच त्रीमा ग्यम और भश्यापी दाविम

पुण्योस पुरुष का भाषाता के अपने हैला। । पुण्यो राजगृह है अन्याची हर्गका था। । भी

§ ६. सीसछिन सुत्त (१८ २. ६)

सिर कटा हुआ डाकू

·विना शिर के एक कवन्ध को आकाश से जाते देखा। उसकी छाती ही में आँख और मुँह थे। · वह आर्तस्वर कर रहा था।

" वह सत्व इसी राजगृह में हारिक नामक एक डाकृ था।

§ ७, भिक्खु सुत्त (१८, २, ७)

भिक्ष

आवुस । मृद्धकूट पर्वत में उतरते हुये मैंने एक भिक्ष को आकाश से जाते देखा। उसकी संघाटी छहलहा कर जल रही थी। पात्र भी लहलहा कर जल रहा था। काय-बन्धन। शरीर भी । वह आर्तस्वर कर रहा था।

भिक्षुओ । वह सत्व सम्यक् सम्बुद्ध भगवान् काश्यप के कालमें पापभिक्षु था।

§ ८. भिक्खुनी सुत्त (१८ २ ८)

मिश्रुणी

भगवान् काइयप के काल में पापिभञ्जणी थी।

§ ९. सिक्खमाना सुत्त (१८ २ ९)

शिध्यमाणा

भगवान् काइयप के काल में पापी शिक्ष्यमाणा थी।

§ १०. सामणेर सुत्त (१८ २ १०)

श्रामणेर

पापी श्रामणेर था।

§ ११. सामणेरी सत्त (१८. २. ११)

श्रामणेरी

वह आर्तस्वर कर रही थी। आद्युस । तब मेरे मन मे यह हुआ—आश्चर्य है, अद्भुत है। ऐसे भी सत्व होते हैं, ऐसा भी आत्मभाव-प्रतिलाभ होता है।

तव भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—भिक्षुओ ! मेरे श्रावक आँख खोलकर विहार करते हैं, ज्ञान के साथ विहार करते हैं कि वे इस प्रकार को भी जान लेते हैं, देख लेते हैं, साक्षात्कार कर लेते हैं।

मिक्षुओं ! पहले भी मैंने उस श्रामणेरी को देखा था, किन्तु किसी से कहा नहीं । यदि मैं कहता तो शायद लोग विश्वास नहीं करते, यह चिरकाल तक उनके अहित और दु ख के लिये होता ।

भिक्षुओ । वह श्रामणेरी सम्यक् सम्बुद्ध भगवान् काश्यप के कालमें पाप-श्रामणेरी थी। वह उस पाप के फल से लाखों वर्ष नरक में पदती रही। उस कर्म के अवसान में उसने ऐसा आत्मभाव-प्रतिलाभ किया है।

> द्वितीय वर्ग **ठक्षण-संयुक्त** समाप्त

दूसरा भाग

द्वितीय वर्ग

§ १ कृपनिश्वमा सुच (१८ २ १)

परस्री-गमन करने वाका कुर्वे में गिरा

'आहुत ! सृहक्ट स्वात से उत्तरते हुवे शॅंने गृह के कृपें में विश्वक हुवे एक पुरुष को हेना ! 'वह हुती रामपृह में परकी के पास काने वाका ना ।

८२ गुमलादी सच (१८२ **८**)

गृह सानेवासा द्वर प्राह्मण

'एक प्रदुष को देखा जो गृह के कुचें में गिरकर दोवां हायों स गृह पा रहा था।

मिहुको ! वह सत्व इसो राजपूर में एक माद्यन था । उसने सन्वक् सनुक् भगवान् क्रमण इ सासन रहते मिहु-संव को भीवन के किये निमम्तित कर एक कर्तन में गृह भर कर कदा।—आप कोग निवती मासी कार्य भी कार्य भी वार्य ।

६३ निष्क्षवित्थी सुच (१८२३)

बाद वहारी हुई छिनास सी

खाक बतारी हुई की को सामाना से साती देया |. यह नार्यकार कर रही मीं । यह हुमी राजगृह में बड़ी कियाक भी नी ।

६ ४ मङ्गलिखी सुच (१८ २ ४)

रमस वेंकनेवाटी मंगुद्धी स्ती

हुगन्य से भरी कुरूप की की देशा'। 'आर्तला कर रही थी। यह इसी राजगृह में रसक फेंबर करती थी।

हु ५ ओ कि लिनी सुच (१८२ ५)

सुरी-सीत पर अंगार पेंकनेवाळी

मूर्या चित्री और बद्दबामा एक याँ को आकास से बाते देगा। यह आईम्बर दर रही थी। भिश्वामी ! यह यो कस्तिष्ट्र राजा की बरशवी थी। कसने दूंग्यों से अवसी सीत के क्या वर्ष कशारी भेगार केंद्र दिया था। भिधुओं। वेसे ही, जिस किमी भिधु की मेत्री चेतोविमुक्ति भावित और अभ्यस्त रहती है वह अमनुष्यों से पीक्षित नहीं किया जा सकता है।

भिलुओ ! इमलिये, तुम्हे ऐसा सीएना चाहिये—मेत्री चेतीविमुक्ति मेरी भावित होगी, अम्यस्त होगी, अपनी कर ली गई होगी, सिन्ह होगी, अनुष्टित होगी, परिचित होगी, सुसमारव्ध होगी।

§ ४. ओक्खा सुत्त (१९८४)

मेत्री-भावना

धावस्ती '।

भिञ्जो ! जो सुबह, दोपहर ओर साँझ को सी-सो ओक्खा का दान दे । और जो '''गाय के एक दूहन भर भी मेंत्री की भावना करें, तो वही अधिक फल देनेवाला है।

भिक्षुओ । इसहिये, तुम्हें ऐसा मीखना चाहिये—मेत्री चेतोविमुक्ति मेरी भावित होगी''।

s ५. सत्ति मुत्त (१९. ५)

मैत्री-मावना

श्रावस्ती ।

भिक्षुओं ! जैसे, कोई तेज धारवाली वर्टी हो । तव, कोई पुरप आवे—में इस तेज धारवाली वर्टी को हाथ और मुक्के से उलट दूँगा, कृट दूँगा, पीट दूँगा। भिक्षुओं ! तो, क्या समझते हो वह पुरुप ऐसा कर सकेगा ?

नहीं भन्ते !

सो क्याँ १

भन्ते । तेज धारवाली वर्छी को कोई पुरुप हाथ और मुक्के से ऐसा नहीं कर सकता है। विक्क, उस पुरुप का हाथ ही जख्मी हो जायगा और उसे यदा कप्ट भोगना पड़ेगा।

भिक्षुओ । वसे ही, जिस किमी भिक्षु की मंत्री चेतोविसुक्ति भावित रहती है, उसे यदि कोई भम्बद्ध टरा देना चाहे तो उसी को विपत्ति में पहकर कप्ट भोगना पहेगा।

भिक्षुओं । इसिलये, तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये-मैत्री चेतोविमुक्ति मेरी भावित होगी।

§ ६. धनुग्गह सुत्त (१९. ६)

अप्रमाद के साथ विहरना

श्रावस्ती

भिक्षुओ ! जैसे, चार बीर धनुर्धर—शिक्षित, हाथसाफ, अभ्यासी—चारों दिशाओं में खड़े हों। तब, कोई पुरुप आबे और कहें—में इन चारों के छोड़े हुये बाण को पृथ्वी पर गिरने के पहले ही ले आऊँगा।

भिक्षुओं । तो क्या समझते हो, ऐसी फुर्ती होने से वह बड़ा भारी फुर्तीवाज कहा जा सदेगा ? भन्ते । यदि एक ही के छोड़े वाण को पृथ्वी पर गिरने से पहले से भावे, तो वह सबसे बड़ा फुर्तीबाज कहा जायगा, चारों की बात तो दूर रहे ।

भिक्षुओं। उस पुरुप की को तेजी हैं, उससे भी अधिक तेज चाँद-सूरज हैं। भिक्षुओं। उस

१ भात पक्ताने का यहुत वडा वर्तन (तींला)—अटुकथा।

२. उत्तम भोजन से परिपूर्ण मौ बदे तोलो का टान करे- अट्टक था।

आतवाँ परिच्छेद

१९ औपम्य-संयत्त

६१ कुट सच (१९१)

समी भक्रशंख भविधामस्य है

पसा मैंने सुवा।

पठ समय मगबान् खावस्ती में सनाचपिण्डिक के भाराम जेतवन में विहार करते थे। मताराज योके :-- सिक्षुको ! जसे कुशागार के जितन चरम हैं सभी कुट की कोर जाते हैं कर पर बा अपने हैं कर में कोड़े रहते हैं कर में वाकर मिक वाने हैं।

मिलाबी ! देसे ही जितने अकुसक धर्म हैं सभी अविधासकर अविधा में क्मो रहने वाके

अविद्या में आफर जरने और मिसने बासे हैं।

टसकिये हे मिल्लो ! तुन्हें ऐसा सीकवा चाहिये-अवसत्त होका विहार करूँया ।

८२ नस्यसिस्य सत्त (१९२)

प्रमाद न करना

भावस्ती ।

तम अपने मध्याप्र वर युक्त छोडा रजन्मध रख कर अगवात ने मिशुओं को आमन्त्रित किया।---किसबी ! बया समझते हो यह छोटा रक-कन बढ़ा है या महापूर्णी ?

अला ! सहायुक्ती वही है। यह रजन्मन तो यहा जबना है । यह जबना क्या सहायुक्ती के किसी भी भाग में वहीं समझा का सकता है।

भिराजी | बैसे ही में माथ महै सका है को अनुष्य-मीति में सम्म वर्त है । में साथ महत है जो इसरी योजि 🏿 बन्म केते 🖥 । टम्मिये है मिशुत्री ! हुम्हें वैमा सीसना चाहिये-सामस होकर विदार करूँना ।

६३ इल स्प (१९३)

मेत्री भाषमा

धापम्नी ।

सिराजा ! जैसे वह तुन्द क्रिनमें बहुत श्चिमीं और भरप पुरुष हों चोर बालुओं से सहज्ञ में नीदिन किवे जने हैं।

बिराको ! बैत ही जिल किसी भिद्यु की सर्था जेगोविमुक्ति अमावित और अनत्परत रहती है

कर अमनुरुरों स सहज में वीदित किया आता है। विकासी ! बेरे यह कुछ जिनमें अपन सिवरों और अधिक गुरुत हों चोर-साहुओं से बौदित नहीं दिया प्राप्ता है।

६ ९. नाग सुत्त (१९. ९)

लालच-रहित भोजन करना

श्रावस्ती''।

उस समय कोई नया भिक्षु कुवेला करके गृहस्थ कुलों में रहा करता था। उसे दूसरे भिक्षुओं ने कहा—आयुष्मान् कुवेला करके गृहस्थ-कुलों में मत रहा करें।

इस पर वह सिक्षु बोला—ये स्थविर भिक्षु गृहस्थ-कुलों में जाया करते हैं, तो अला सुझमें

क्या लगा है १

तव, कुछ सिक्षु जहाँ भगवान् ये वहाँ आये, और भगवान् का अभिवादन करके एक ओर बैठ गये।
एक ओर बैठ, उन सिक्षुओं ने भगवान् को कहा—भन्ते। एक नया सिक्षु कुवेला करके । '''तो
भला मुझमें क्या लगा है १

भिक्षुओ । बहुत पहले कोई जगल में एक सरोवर था। कुछ नाग भी वहीं वास करते थे। वे उस सरोवर में पैठ, सूँद से कमल के नाल को उखाड़, अच्छी तरह थो, कीचढ़ हटाकर निगल जाते थे। वह उनके वर्ण और वल के लिये होता था। उसमे न तो उनकी मृत्यु होती थी और न वे मृत्यु के समान दुःख पाते थे।

भिक्षुओ । उनकी देखादेखी छोटे छोटे हाथी भी उस सरोवर में पैठ, कमल के नाल को उखाड, उसे भो, कीचड़ लगे हुए ही निगल जाते थे। वह न तो उनके वर्ण के लिये होता था और न बल के लिये। उससे वे मर भी जाते थे, और मरने के समान हु ख भी पाते थे।

भिक्षुओ । वैसे ही, ये स्थिवर भिक्षु सुबह में पहन और पात्र-चीवर ले भिक्षाटन के लिये गाँव या कस्बे में पैठते हैं, वे वहाँ धर्म का उपदेश करते हैं। उससे गृहस्थों को बड़ी श्रद्धा होती है। जो भिक्षा मिलती है उसका वे लोभरहित हो, उसके आदीनव और नि सरणका ख्याल करते हुये, भोग करते हैं। यह उनके वर्ण और बल के लिये होता हैं ।

भिक्षुओ। उनकी देखादेखी नये भिक्षु भी कस्ये में पैठते हैं। जो भिक्षा मिलती है उसका वे ललचा हदिया कर भोग करते हैं, उसके आठीनव और नि सरण का कुछ ख्याल नहीं करते। वह न तो उनके वर्ण के लिये होता है, और न यल के लिये।

भिक्षुओं। इसिक्ये, तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये—विना ललचाये हिद्शिये, तथा भादीनव और नि सरण का स्थाल रक्ष कर भिक्षा का भोग करूँगा।

§ १०. बिलार सुत्त (१९ १०)

सयम के साथ भिक्षाटन करना

श्रावस्ती ।

उस समय कोई नया भिक्ष कुवेला करके गृहस्थ-कुलों में रहा करता था। उसे दूसरे भिक्षुओं ने कहा-अायुष्मान् कुवेला करके गृहस्थ कुलों में मत रहा करें।

भिक्षुओं से कहे जाने पर भी वह भिक्षु नहीं मानता था।

तय कुछ भिक्षु जहाँ भगवान थे वहाँ गये, शीर भगवान का अभिवादन कर एक ओर येंट गये। एक शोर बैठकर उन भिक्षुओं ने भगवान को कहा-भन्ते। वह भिक्षु नहीं मानता है।

भिक्षुओ । यहुत पहले कोई विलार एक गवौरे के पास चृते की ताक में वंटा या—र्जिसे ही चृष्ठा बाह्र निकलेगा कि में झट उसे पकड़ कर खा जाउँगा। पुरुष की को रोजी है काँब्-स्रज की को रोजी है काँब्-स्रज के आगे आगे वकव वाके देवताओं की का रोजी है, उस सभी से रोज बालुसंस्कार क्षीण हो रहा है।

मिलाको । इसकिवे सार्थे ऐसा शीक्षमा चाहिने-अप्रमच डोकर विदार कर्य था ।

१७ भागी सुच (१९ ७)

शस्त्रीर धर्मी में मन लगाना, शविष्य-कथ्म

भावस्ती ।

िमानुष्यो ! पूर्वकाक में ब्याराहीं को आगक बान का एक ग्रापंत वा ।

उस धानक पुरुष्ट में बब बोई धेन हो काता था तो इसारह क्येग उसमें एक पूरी होंक देते थे। बीरे-बीर एक ऐसा समय भावा कि सारे युद्ध की भवनी दुरानी ककड़ी हुक भी नहीं रही सारे का सारा करियों का यक कथन कथ गया।

सिमुको । मार्क्चकाक में शिद्ध पेसे ही वन कारों। । सुद वे को सम्मीर, सम्मीर कार्य वाके, कोकोचर सुरुवतामतिसंयुक्त सुव कहें हैं कनके वह कार्य पर कार्य म होंगे, सुनने की हस्या न करेंगे समझते की कोविका नहीं करेंगे। वर्षों को वे सोकार्य और जनवास करते के बोध्य नहीं समझेंगे।

को बाहर के लावकों से बड़े कविता झुन्यूर बढ़ार थीर झुन्यूर बढ़ान वाके को सूर वर्षेने वर्नी के बड़े बाने पर कान देंगे सुनने भी इच्छा करेंगे समझसे की कोशिस करेंगे। कन्यी पानी को वे सीचने और जन्मास करने के योग्य समझेंगे।

मिह्नभो ! इस तरह हुन् ने किन गम्भीर स्कूरों को कहा है उनका कोप हो बावगा।

सिद्धार्थी ! इसकिये तुन्हें ऐसा सीवामा व्यक्ति — तुन्न से वो सम्मीत सूच कहें हैं उनके करें बावे पर काव हूँया सुबवे की इच्छा कर्योगा ससझने की कोशेसन कर्येगा । उसी यमें को सीवावे और अस्ताव करने के बोगन समर्वांगा ।

३८ कलिङ्ग्रसुच (१५८)

धकड़ी के बने तकत पर सोना

देशा मैंने शुधा ।

पुत्र समय मधवान् वैद्यासी में महादश की कुटाशारशास्त्र में विदार करते थे।

सारवाष्ट्र बोके--- विश्वली ! शिक्षक्षदी कक्षती के बने तकत पर लोते हैं व्यवसन हो उत्साह के साथ नपने क्येंक्य कुत कारी हैं। सगवताज विदेशियन सञ्चालशायु उक्के विकट कीई वॉट-नेंच नहीं वा रहा है।

सिद्धवी ! अनागत काळ में किप्कशी छोग वह सुकुमार तथा खोसक हाथ पैर बाके होंगे। वे गोरेश्वर विकास पर गुक्तुक तकिये कमा दिव कर बावे तक सोचे रहेंगे। तब समकरात" को उनके विकास पूर्व मेंच शिक बावमा।

मिल्लुमी ! इस समय किल्लु कोग ककड़ी के बने तकत पर लोते हैं। अपने उद्योग में बातायों और अम्मन्य डोकर फिल्लु करते हैं ! पानी सार इसके विकक्ष कीई बॉब-मेंच कही था रक्षा है ।

भिश्चमी ! अवागत काक में जिल्ला कोग "दिन कर बाने तक सोवे रहेंगे । जनके विरन्न पापी

मार की चौँव-पेंच शिक्र कानगा।

सिद्धानी ! इसकिये सुर्वे देसा शीवाना चाहिये—बक्यों के बये शब्दा पर शीकाँगा। अपने क्योग में शतापी जीर घटनाच होकर विहार कर्येगा ।

नवाँ परिच्छेद

२०. भिक्षु-संयुत्त

१ १. कोलित सुत्त (२०.१)

आर्थ मौन-भाव

ऐसा मैने सुना।

एक समय भगवान श्रावस्ती में ।

वहाँ आयुग्मान् महामाद्गल्यायन ने भिक्षुओं को आमन्त्रत किया-हे भिक्षुओ !

"आञ्चस ।" वहकर भिक्षुओं ने उत्तर दिया ।

आयुष्मान् महामोद्रत्यायन वोले-आयुस । एकान्त में ध्यान करते समय मेरे मन में यह वितर्क उठा-अार्य त्ष्णी-भाव, आर्य त्ष्णी भाव कहा जाता है, सो यह आर्य त्ष्णी-भाव क्या हे ?

आधुस ! तय मेरे मन में यह हुआ—भिक्षु वितर्क और विचार के शान्त हो जाने से दितीय ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है। यही आर्य तूणी भाव है।

आयुस । सो में द्वितीय ध्यान को प्राप्त कर विहार करता हूँ। इस प्रकार विहार करते हुये वितर्क —सहगत सज्ञार्ये मन में उठती है।

आबुस । तव, भगवान् ने ऋढि से मेरे पाम आकर यह कहा—हे मौद्रल्यायन, हे ब्राह्मण । आयं तूष्णी-भाव में प्रमाद मत करो । आयं तूष्णी-भाव में चित्त को स्थिर करो, चित्त को एकाप्र करो, चित्त को छगा हो ।

आबुस । तय, में दितीय ध्यान को प्राप्त कर विहार करने लगा। यदि कोई ठीक में कहे, "गुरु से प्रेरित होकर श्रावक ने महा अभिज्ञा को प्राप्त किया" तो वह ऐसे मेरे ही विषय में कह सकता है।

६ र उपितस्स सत्त (२० २)

सारिपुत्र को शोक नहीं

श्रावस्ती ।

सारिपुत्र वोले —आवुस ! एकान्त में ध्यान करते समय मेरे मन में ऐसा वितर्क उठा— क्या लोक में ऐसा कुछ है, जिसको विपरिणत होते जान मुझे शोकादि उत्पन्न हों १

आवुस ' तब, मेरे मन में ऐसा हुआ—लोक में ऐसा कुछ नहीं है, जिसको विपरिणत होते जान मुझे शोकादि हों।

ऐसा कहने पर आयुष्मान् आनन्द आयुष्मान् सारिपुत्र से बोले--आबुस सारिपुत्र ! क्या बुद्ध को भी विपरिणत होते जान आपको शोकादि न होंगे ?

आवुस आनन्द ! वुद्ध को भी विपरिणत होते जान मुझे शोकादि न होंगे। किन्तु, मेरे मन में ऐसा होगा—ऐसे प्रतापी, महर्द्धिक और महानुभाषी, वुद्ध अन्तर्धान मत होवें। यदि मगवान् चिरकाल

मिश्रमा ! तन चुदा बाहर निकला | विकार सपदा मार उसे सहसा नियक गया | चुद्दे ने उस विकार की चेंतरी-वचीती को कार दिना। उससे वह सत्य को मात हुआ वा सत्य के समान दुःस का। मिल्ला ! वेसे ही कितने शिक्ष गाँव या करने में शिक्षारन के किये पैरते हैं-शरीर वचन

मीर विश्व से असंयत न्यूतिशृंग इन्त्रिओं के साथ ।

बह बहाँ किसी बंपर्य स्त्री को बेसता है। उससे उसके किए में जबरदस्य राग उठता है। उससे बह अत्य को माम होता है था अध्य के समान ताक को ।

मिलानी ! में शिक्षा कोएकर गृहस्य वम बाता है उसे इप वार्यविषय में शास ही कहते हैं ।

मिझनी ! को मनवा एंसा मैका हो बाता है वह मृत्यु के समान द्रान्त शी है ।

मिल्ला ! इसकिने तम्हें ऐसा सीखना चाहिये-सरीर, वचन और सन से रक्षित हो स्पृति पर्ण इञ्चित्रों से गाँव का करने में सिकाइक के किये पैटेंगा ।

६ ११ ५ठम सिगाल सत्त (१९ ११)

अप्रमाद के साथ विश्वरना

धावस्ति ।

मिश्रमी ! राव के मिनसारे तुवन सिवारों को रोते सुना है ?

हाँ भन्ते !

निज्ञमी ! यह कर शामक उद्धवनक नामक रोग से पौतित होता है । अह वहाँ बहाँ वाता है चना होता है मैस्ता है या सोवा है वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ देश हवा सकती है।

मिल्लामें । कोई शाववपुत्र (क्र मिल्ला) पैसे आरमसाब प्रतिकास का ग्राप्त करते हैं । मिल्लमो । इमहिने तुन्दें पेना मीएना कहिय-अपमत्त होकर दिवार कर्या।।

६ १२ देविय सिगाल सत्त (१९ १०)

€तच होतः

धायस्ती

'दब सियारों में भी क्ष्मकता है किना क्षत्र निहा में बड़ी है।

भिप्नुतो ! इसकिये तुरुई पैना सीवना काहिये।—में इत्तत वर्गेगा । अवने प्रति किये यदे बोड से भी उपकार को नहीं सर्खांग ।

भौपम्य संयुच समाप्त

इस तरह, इन महानागों ने एक दूसरे के सुभाषित का अनुमोदन किया।

§ ४. नव सुत्त (२० ४)

विधिलता से निर्वाण की प्राप्ति नहीं

थावस्ती ।

इस समय कोई नया भिक्षु भिक्षाटन से लौट भोजन कर छेने पर विहार में पैठकर अन्पोत्सुक चुपचाप बेठ रहता था। भिक्षुओं को चीवर घनाने में सहायता नहीं करता था।

तव, कुछ भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आये, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये।

• भन्ते । • वह भिक्षुओं को चीवर वनाने में सहायता नहीं दरता है।

तब, भगवान् ने एक भिक्षु को आमन्त्रित किया—हे भिक्षु ! जाकर उस भिक्षु को मेरी ओर से कही, "आवुस ! बुद्ध आपको बुला रहे हैं।"

• तय, वह भिक्षु बहाँ भगवान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन करके एक ओर बैठ गया।

एक ओर बंठे हुये उस भिक्षु से भगवान् बोले-भिक्षु । क्या तुम सच में ' महायता नहीं करते हो ?

भनते ! मै भी अपना काम करता हूँ।

तव, भगवान् ने उसके चित्त को अपने चित्त से जान भिक्षुओं को क्षामिन्त्रत किया—भिक्षुओं!
तुम इस भिक्षु से मत रूठो। यह भिक्षु इसी जन्म में सुख पूर्वक विहार करने वाले चार आभिचैत्तसिक
ध्यानों को जब जैसे चाहता है प्राप्त कर लेता है। यह इसी जन्म में ब्रह्मचर्य के उस परम-फल को जान,
साक्षात् कर, और प्राप्त कर विहार करता है, जिसके लिये कुलपुत्र अध्छी तरह घर से बेधर हो प्रबक्तित
हो जाते हैं।

भगवान् यह बोळे। यह कहकर बुद्ध फिर भी बोके— शिथिलता करने से, भटप शिक से, यह निर्वाण नहीं प्राप्त होता, सभी हु खों से छुड़ा वेनेवाला। यह नवजवान भिक्षु, यह उत्तम पुरुष, अन्तिम देह वारण करता है, मार को विल्कुल बीत कर।

§ ५. सुजात सुत्त (२०. ५)

वुद्ध द्वारा सुजात की प्रशंसा

श्रावस्ती

तव, भायुष्मान् सुजास जहाँ भगवान् थे वहाँ आये।

भगवान् ने आयुष्मान् सुजात को दूर ही से आते देखा। देखकर भिक्षुओं को आमन्त्रित किया — भिक्षुओ ! दोनों तरह से कुछपुत्र शोभता है। जो यह अभिरूप = दर्शनीय = प्रासादिक = अस्यन्त सौन्दर्य से युक्त है, वह इसी जन्म में ब्रह्मचर्य के उस परम-फल को जान, साक्षात् कर, और प्राप्त कर विहार करता है, जिसके लिये कुलपुत्र अच्छी तरह घर से वेघर हो प्रवनित हो जाते हैं।

'यह कह बुद्ध फिर भी बोछे-

यह भिक्ष शोभता है, ऋजुभूत चित्त से, सभी धन्धनों में अलग होकर छूट गया है,

तक टहरें तो वह महुता के दित और सुका के किये, संसार की अनुकश्या के किये तथा देवता और मनुष्यां के अर्थ दित और सुका के किये होगा !

सबप्तुच में आयुष्मान् सारिश्वत से 'बहुंबार, मर्मबार, और मानावुश्तप दिरबाध से उड गना

था । इसंक्रिये बुद्ध को भी विपरिवत होते जान आयुष्मान् सारिपुत्र की सोकादि वहीं होते ।

ु ३ घट सुच (२०३)

सप्रधावकों की परस्पर स्तुति, सारव्य-वीर्थ

धावस्मी ।

दस समय आयुष्मान् आरिपुत्र और आयुष्मान् महामीक्षस्यायन राज्ञगृह के येसुयन फारस्टक-नियाप में एक हो स्थाह विहार करते थे।

तत्र आयुष्मान् छारिधुत्र सर्वेश को ज्यान से वढ वहाँ आयुष्मान् महासीहस्यायन ये नहीं गये

भीर इसम क्षेम के प्रकृत पृष्ठ कर एक कोर बैठ गये।

प्रकार केव अध्युष्मान् सारिपुण अध्युष्मान् महामीहरूवायन सः कोधे — अध्युष्म मीहरूवायन हे आपनी होन्द्रमाँ विषयस हैं। मुख-वर्ष सतेज और परिसुद्ध है। क्या बाज अध्युष्मान् सहामीहरूवायन ने साम्य विदार के विदार किया है।

मायम ! जाज मेंने ओसारिक विदार से विदार किया है। और पार्मिक कथा भी हुई है।

किमके साथ चार्तिक क्या हुई है है

बाबुस ! भगशब् के माथ।

बाबुस | मगवान् ता बहुत बूर आवस्ती में विद्वार कर गड़े हैं। क्या आप मगवान् के शास

कांद्रि में राये थे का अगवान की आपके पास काये थे ?

अब्दुस | म तो कादि ॥ प्रेशनावाम् के पास गवा वा और व सगवान् सेरे पास आये थे। किन्नु बहाँ सगवान् है वहाँ तक सुसे दिल्य कानु और स्रोत करनक हुवे। वैसे ही बहाँ में हूँ वहाँ तक सगवान् को दिल्य कानु और स्रोत करनक हुवे।

आक्षप्राम् सहासीहस्थावम् की शगवान् के साथ क्या वर्मक्या हुई है

आयुम ! शिके भगवाण से वह कहा-भनी ! जारकवरीये आरववरीये कहा जाता है। सी

भाररपशीर्थ कैसे हाता है ?

आपुता ! ऐसा कहने पर ज्यावान् इससे नोधे—शीहरूवायन् ! मिशु इस प्रकार आरश्यमीये हा विहार करना है—त्यावा नहाकः और इहि ही मके वच कार्यः, सर्रार से मांन और सीरित मी मर्क हा नृत्य कार्यः हिन्तु, पुण्य के बरसाहः थीने और पात्रमा सः सी पात्रमा का सपता है दस दिवा पार्य विभाग नहीं स्त्रीता । आप्रत्यावन ! हुमी ताहः कारण्यांनी होता है।

मानुन र प्रशास के साथ गैरी वही वर्मक्रमा दुई ।

भागुरा ! असे वर्षतामा हिमालय के सामने वन्तर बंबवी को वृक्त देर अद्दर्श है थेसे हो आयु रकान, महानीहरूनावन के सामने हमारी अवस्था है। आयुष्पाच् अहासीर्गरनावन वहें सुदिहाँने सहायुमाची है। वहि चाहें शें करत मह भी दहर सकते हैं।

आपूर्त । प्रीम नजक के एक वह कहे के माजने बागड का एक काम कर अपूर्व है मिरे ही हज

ज्ञानुपान् गारिक्न के मामने हैं।

जगवान् में भी भाषुष्माय् लारियुक्त की अमेड प्रकार से बर्चामा की है-

मारा में गारिकृष की नरह शीक में और उपसम में यह मिश्र भी वार्रशन है बड़ी वरम-वर्ड है। इस तरह, इन महानागों ने एक दूसरे के सुभाषित का अनुमोदन किया।

§ ४. नव सुत्त (२० ४)

दिश्यिलता से निर्वाण की प्राप्ति नहीं

थ्रावस्ती ।

उस समय कोई नया भिक्षु भिक्षाटन से छोट भोजन कर ऐने पर विहार मे पैटकर अरपीत्सुक चुपचाप वैठ रहता था। भिक्षुओं को चीवर घनाने में सहायता नहीं करता था।

तय, कुछ भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ भाये, और भगवान् का भभिवादन कर एक ओर बैट गये।
• भन्ते ! वह भिक्षुओं को चीवर बनाने में सहायता नहीं करता है।

तय, भगवान् ने एक भिक्षु को आमन्त्रित किया— है भिक्षु ! जाकर उस भिक्षु को मेरी ओर से कहो, "आवुस ! बुद्ध आपको उला रहे हैं।"

• तम, वह भिक्षु जहाँ भगवान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन वसके एक ओर वैठ गया।

एक और बंदे हुये उस भिक्षु से भगवान् बोले-भिक्षु । क्या तुम सच में ' सद्दायता नहीं करते हो ?

भन्ते । में भी अपना काम करता हूँ।

तय, भगवान् ने उसके वित्त को अपने चित्त सं जान मिक्षुओं को आमन्त्रित किया—भिक्षुओ !
तुम इस मिक्षु से मत रूठो । यह भिक्षु इसी जन्म में मुख पूर्वक विहार करने वाले चार आभिचैतसिक
ध्यानों को जब जैसे चाहता है प्राप्त कर लेता है । यह इसी जन्म में महाचर्य के उस परम-फल को जान,
साक्षात् कर, और प्राप्त कर विहार करता है, जिसके लिये कुलपुत्र अच्छी तरह घर से बेवर हो प्रविज्ञत
हो जाते हैं।

भगवान् यह बोले । यह कहकर बुद्ध फिर भी बोले— शिथिलता फरने से, अटप शक्ति से, यह निर्वाण नहीं प्राप्त होता, सभी हु खों से खुड़ा देनेवाला। यह नवजवान भिक्षु, यह उत्तम पुरुष, अन्तिम देह धारण करता है, मार को बिल्कुल जीत कर।

§ ५. सुजात सुत्त (२०. ५)

वुद्ध द्वारा सुजात की प्रशासा

श्रावस्ती

तय, भायुष्मान् सुजात जहाँ भगवान् थे वहाँ भाये।

भगवान् ने आयुष्मान् युजात को दूर ही से आते देखा। देखकर भिक्षुओं को आमिन्त्रित किया भिक्षुओ ! दोनों तरह से कुछपुत्र शोभता है। जो यह अभिरूप = दर्शनीय = प्रासादिक = अध्यन्त सौन्टर्य से युक्त हैं, वह इसी जन्म में ब्रह्मचर्य के उस परम-फछ को जान, साक्षात् कर, और प्राप्त कर विहार करता है, जिसके छिये कुछपुत्र अच्छी तरह घर से बैघर हो प्रवित्ति हो जाते हैं।

यह कह बुद्ध फिर भी बोले-

यह मिक्षु शोभता है, ऋजुभूत चित्त से, सभी वन्धनों से अलग होकर छूट गया है, धनुपादाल के क्रिये निर्वाण पा किया हैं सन्तिम देश धारण करता हैं मार को विदङ्कक बीतकर ॥

§ ६ म**दि**म सुच (२०६)

दारीत से नहीं जान से यहा

भ्रायस्ति ।

त्व शापुरमान् सकुब्दक अश्विय वहाँ मगवान् मे वहाँ शाये ।

सरावाद ने बाबुक्तात् क्युम्बक महिल को दूर हो से व्यते देखा । देखकर सिक्षुणों को व्यसम्बद्ध किया—सिक्सपी ! इस कोडे कुकम अब सारे हुवे निक्षु को व्यत्ने देखने हो ?

हाँ मन्ते !

सिक्षुओ ! वह सिद्ध वही व्यक्तिकाका वहा ठकावी है । किम समापतियों को इस सिक्ष से पा किमा है वे मुक्तम नहीं हैं । वह इसी कमा में ब्रक्तकर्ष के इस करियम एक को ।

यह कहकर तर किर भी बोके---

इंस कींच और अधूर हाथी और विश्वकरों द्वार सभी सिंह से करते हैं अधीर में कोई शुक्रका नहीं व इसका मुक्तों में कम दक्ष को में दिस्मानाम् ही से बढ़ में में मामान होता है सरीर से कोई बाक्क नहीं होता व

९७ विसास सुच (२० ७)

धर्म का बयदेश कर

देमा 👫 सवा ।

पुक समय भगवान् वैद्याखी में महावन की कुटागारहा।खा में विहार करते ये ।

बस समय बायुप्पान् विस्तार पास्याखपुत्र ने वयकावसाका में सिक्षुओं को समीपहेग कर दिला दिया बता दिया अब ववर्गों से उचित रीति से दिना दिसी वकाता से परमार्थ को बतात हुने विषय पर ही बहुते हुने।

सब भगवान साँह को प्यान स उठ आयाँ वह उपस्थानसाका थी वहाँ गण और विग्रे आसर्ग पर बैट गवे।

भन्त ! भाषुप्राप् विसाध वाजाकपुषः "।

तक भगवाव ने वाबुध्यान् विसाध को बामनितः विवाः—दीक डे विसाध ? तुमवे वदा अध्या दिया वि भिश्लमी का यमोदनेत कर रहे थे ।

" वह बहुका श्रुष्ट किर भी बाले---

नवीं कहने से भी कोग जान केते हैं मून्सी में मिल हुने परिवार का उनके कहने पर जान देने हैं अमूत-बन्द का उपनेत करते हुने ह पर्म बी बड़े महाधित करें, चरित्रों के प्रधान के पास की सुधारित ही चरित्रों का प्रधाहि धर्म ही नमका प्रधाहि है ह

६८. नन्द् सुत्त (२०.८)

नन्द को उपदेश

श्रावस्ती

तप्, भगवान् के मासरे भाई आयुष्मान् नन्द सीट और सिजिल किये चीवर को पहन, आँख में अञ्जन लगा, सुन्टर पात्र लिये जहाँ भगवान् थे वहाँ आये, और भगवान् का अभिवादन कर एक और वैठ गये।

एक ओर बेठे हुये आयुष्मान् नन्द से भगवान् बोले—नन्द ! श्रद्धापूर्वक घर से वेघर हो प्रव्रजित हुये तुम जैमे कुकपुत्र के लिये यह उचित नहीं कि ऐसे मीटे ओर सिजिल किये चीवर को पहनो, आँख में श्रद्धन लगाओ, ओर सुन्टर पात्र धारण करों।

नन्द । तुम्हें तो उचित या कि आरण्य में रहते, पिण्ड पातिक और पासुकृष्टिक हो कामों में अनपेक्षित रहते।

"यह कहकर घुढ़ फिर भी बोले.— कब में नन्द को देखेंगा, आरण्य में रहते, पांसुकृष्टिक, भिक्षा से जीवन निवाहते, कामों में अनपेक्षित !

तय, उसके वाद आयुष्मान् नन्द आरण्य में रहने छगे, विण्डवातिक और पासुकृष्टिक हो। गये कामों में अनवेक्षित होकर विदार करने छगे।

५९. तिस्स सुत्त (२० ९)

नहीं विगड़ना उत्तम

थावस्ती ।

तय भगवान् के फुफेरे भाई आयुष्मान् तिस्स जहाँ भगवान् थे वहाँ आये, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ गये—दु खी, उदास, आँसू टघराते।

तव, भगवान् आयुष्मान् तिस्स से बोले —ितिस्स । तुम एक ओर बैठे दु खी, उदास और भाँस् क्यों टघरा रहे हो ?

भन्ते ! भिक्षुओं ने आपस में मिलकर मेरी नकल की है, और मुझे बनाया है । तिस्स ! तुम तो भले ही दूसरों को कहना चाहो, किन्तु उनकी सह नहीं सकते ।

तिस्म ! श्रद्धापूर्वक घर से वेघर हो श्रव्यक्तित हुये तुम जैसे कुलपुत्र के लिये यह उचित नहीं कि अपने तो भले दूसरों को कहना चाहो, किन्तु उनकी सह नहीं सकी । यदि तुम दूसरों को कहते हो तो उनकी तुम्हें सहना भी चाहिये ।

यह कह कर बुद्ध फिर भी बोले —

विगन्ते क्यों हो, मत निगदो, तिस्त ! तुम्हारा नहीं घिगदना ही अच्छा है, फ्रोध, मान, और माया को दबाने ही के लिये, विस्त ! तुम ब्रह्मचर्य का आचरण करते हो ॥

§ १० धरनाम सुत्त (२० १०)

सक्ष्मा रहने वाला कौन ?

ण्क समय भगवान् राज्यस्य मि ।

दम समय व्यक्ति पांस का कीई सिशु अकेका रहता था और शक्क रहने का प्रसंसक था। वह सक्त्या ही गाँव में भिश्रावन के किये पैठता था; सबैका ही कैठता था खरेका ही एकान्य में बैठता था और सबैक्य की सेक्समा करता था।

तर कुछ मिश्च अर्थी भगवान् भे वहाँ आवे और भगवाल् का श्रीमदादन कर पुरु मोर मेंट गर्मः

तव मतवान् वे एक विश्व को कामन्त्रित किया ।

पुरु कोर देरे हुने आयुप्पाम् स्ववित को प्रश्वात् वोकः — स्वा सन है कि तुम अपेके ही रहते और उसकी प्रसंसा करते ही ?

धॉ सक्ते १

रथिए । तम बढेका हो क्षेत्र रहते और अधकी प्रशंसा किया करते हो !

सन्ते [पुन करणा है। कर रहत भार वसका स्थापन करणा करणा है। सन्ते [में लवेसा है। गाँव में निश्चारक के किये पेटला हूँ अवेदा हैं। वंडसान करला हूँ। मान्ते इस तरह में सकेदा रहता हैं और कड़ेके रहते की ग्राचेला करला हूँ।

स्पवित ! इसे में महेका रहना नहीं बताता । बवार्य में भावेशे वैमी रहा बाता है उसे सुनी

भव्यी तरह सन कराजी में बहुता हैं।

स्वविद [बो बीठ गवा बह महीय हुव्या को कभी अनगर है उसकी बाठ छोदो, वर्तमाय में या छन्द-राग है उसे बीठ को। स्वविद [पेसे ही प्रवार्ष में अवेका रहा वाला है।

·· वह वह कर हहा किर सी बोके:—

सर्वाभिम् सर्वोषेष् पण्डित सर्वा धर्मो में अनुपक्षित सर्वासामी गुण्या के शीय हो बावे से विसुधः, पेसे ही पर को में बलेका रहते बाका करता हैं ह

६११ कपिन सच (२० ११)

शायुष्माम् ऋष्यिन के शुर्जी की प्रशंका

भावत्ती । वर्षे अपुष्मान् महाकप्यित वहाँ मगवाव् ये वहाँ वाये ।

मगरान् वे व्यव्यास् विध्य को इर ही से बाते देखा। देख वर सिश्चुकी को आमर्त्तित विद्यान-सिश्चकी ! तुल इस गोर्ड पतके कैंचे बाद बाके शिश्च को बाते देखते हो !

हाँ मन्दे १

मिञ्चलो ! यह मिञ्च वर्षा कविवक्ता वदा अनुसाव वाका है । जिन समावतियों को इसने पा किया है वे सुकम नहीं हैं । इसने नक्षण के उदा अन्तिम प्रक्रकों ।

यह कह कर सगवाज् जिर भी थीड़े---नतुष्मी में कतिय जेड हैं जो ग्रीश का नवाक करने बाद हैं। विद्याचरण से सम्पन्न, देव-मनुष्यों में श्रेष्ट हैं ॥ दिनमें सूर्य तपता है, रात में चाँट शोभता है, सन्नद्ध हो क्षत्रिय तपता है, ब्राह्मण ध्यान से तपता है, सौर, सदा ही दिनरात, अपने तेज से बुद्ध तपते हैं ॥

§ १२. सहाय सुत्त (२० १२)

टो ऋदिमान भिश्च

श्रावस्ती ।

तव, आयुष्मान् महाकष्पिन के दो अनुचर मित्र भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आये।
भगवान् ने उन दोनों को दूर ही से आते देखा। देख कर भिक्षुओं को आमन्त्रित किया —
भिक्षुओं। इन दोनों को आते देखते हो।

हाँ भन्ते !

ये दोनों भिक्ष यही ऋदिवाछे और वहे अनुमान वाले हैं .। यह कह कर भगवान् फिर भी बोळे:—

> ये भिक्ष आपस में मित्र हैं, चिरकाल से साथी है, मदर्म को उनने पा लिया है, किप्पन के द्वारा, बुद्ध के धर्म में सिखाये गये हैं, जो आर्य प्रवेदित है, अन्तिम टेह को धारण करते हैं, मार को बिल्क्कल जीत कर ॥

> > भिधु-सयुत्त समाप्त। निदान वर्ग समाप्त



तीसरा खण्ड

खन्ध वर्ग



पहला पारेच्छेद

२१. खन्ध-संयुत्त

मूल पण्णासक

प्रहला भाग

नकुलपिता वर्ग

§ १. नकुलपिता सुत्त (२१. १ १ १)

चिन का आतुर न होना

ऐसा मैने सुना।

एक ममय भगवान भर्ग (देश) में सुसुमारगिरि के भैस कला-वन मृगदाव में विद्वार करते थे।

तब, गृहपति नकुल्सिता जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और एक ओर वैट गया।

एक ओर बैठ गृहपित नकुलिता भगवान् से बोला—भन्ते ! मैं जीर्ण = बुद्ध = महरूलक = पुरिनया = आयु-प्राप्त = हारे शरीर वाला हुँ, न जाने कब मर जाऊँ। भन्ते ! मुझे भगवान् और मनो-भावनीय भिक्षुओं के दर्शन प्राप्त करने का बरावर अवकाश नहीं मिलता है। भन्ते ! भगवान् मुझे उप-देश दें, जो चिरकाल तक मेरे हित और सुख के लिये हो।

गृहपित, सच है। तुम्हारा दारीर हार गया है, तुम्हारी आयु पुर गई है, तुम जीर्ण हो गये हो। गृहपित ! जो ऐसे दारीर को धारण करते मुहूर्त भर भी आरोग्य की भाद्या करता है वह मूर्ज छोड़ कर और क्या है ? गृहपित ! इसिल्ये, तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये—मेरा दारीर भले ही आतुर हो जाय, किन्तु चित्त आतुर होने नहीं पायगा।

तव, गृहपति नकुलिपता भगवान् के कहे का अभिनन्दन और अनुमोदन कर, आसन से उठ, भगवान् का अभिवादन और प्रदक्षिणा कर, जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र थे वहाँ गया, और उनका अभि-वादन कर एक और बैठ गया।

एक ओर बैठे गृहपति नकुलिपता से आयुष्मान् सारियुत्र बोले --गृहपति । तुम्हारी इन्द्रियाँ प्रसम्न दीख रही हैं, मुखवर्ण सतेन और परिशुद्ध है। क्या तुम्हे आन भगवान् से धर्मकथा सुनने की मिली हैं ?

भला और क्या भन्ते ! अभी ही मैं भगवान् के धर्मोपदेशरूपी अमृत से अभिपिक्त किया गया हूँ। "भगवान् ने कहा--गृहपति ! तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये--मेरा शरीर भले ही आतुर हो जाय, किन्तु चित्त आतुर होने नहीं पायगा।

गृहपित ! इसके आगे की बात भगवान् से पूछने को तुम्हें नहीं सुझी ?— अन्ते ! कैसे शरीर के आहुर होने पर चित्त आतुर होता है ? भन्ते ! कैसे शरीर के आतुर होने पर चित्त आहुर नहीं होता है ?

भन्ते ! मैं बड़ी दूर से भी इस कहें गये के अर्थ को समझने के लिये आयुष्मान् सारिपुत्र के पास आउँ । अच्छा हो, आयुष्मान् सारिपुत्र ही इसका अर्थ बताते । गृहपति ! तो सुनो सच्छी तरह सब छगाओं मैं कहता हूँ ।

मन्ते ! बहुत बन्दा^ग कह गृहपति नकुक्रपिता ने बाधुन्मान् सारिप्रथ को उत्तर दिवा ।

बायुप्तान् सारियुन बोके — मूहपति ! कैस वारीर के बायुर हो जाने पर जिल मी जाहर हो साता है ? यूहपति ! कोई प्रयक्षन अधिहान, आजों को न देखने वाका आर्थवर्म को नहीं स्वनने बासा, धार्य-पर्म में जिनीय नहीं हुआ सत्युरमों को न देखने बाका सत्युरमों के प्रमं को नहीं बानने बाका सत्युरमों के पर्म में जिनीत नहीं हुआ रूप को अपनायन की वधि से देखता है। या क्यवान् को सपता, या अपने में कर को; या रूप में अपने को देखता है। में रूप हूँ मेरा क्य है—पेसा मत में काता है। वह जिस कर को सपने में और अपना समझता है वह विपरिश्वत हो बाता है वह खावा है। उस क्य के विपरिश्वत और अन्यवा हो जाने से बसे शोक, रोजा पीडवा हु:ख, दौमंनस्य और वरायाम होते हैं।

बंदवा को अपनायत की श्रीप से वेश्वना है ।

संद्राली ; भरकारों का , विज्ञान को अपनापव की दृष्टि से चंकता है, वा विज्ञान को अपना; या अपने में विद्यान की; या विज्ञान में अपने को देखता है। में विज्ञान हूँ, नेरा विज्ञान है—ऐसा मर्म में आता है। यह विक्स विज्ञान को अपने में और अपना समझता है वह विपरिस्त हो बाता है अभ्याद है। जस विज्ञान के विपरिस्त और अस्पया हो आने से उसे सोड़ रोजा-मीटमा दुंग्ली हीर्मनस्य बीर उपाधास होते हैं।

गृहपति ! हसी तरह आरीर के कातुर हो काने पर विश्व भी आहुर हो काता है।

गृहपति ! कैसे सरीर के कातुर हो बावे पर क्षिण कातुर वहीं होता है ?

्राप्ति | कोई विहान मार्वसायक, आर्थों को देखने बाका, आर्थों के बस्त का सामने दाका भागों के पर्स में तुर्विनीत सायुक्तों के कर्म में सुविकीत होता है। यह क्य को अपनायन की सीत से नहीं देखता है। इस कर को अपना; या अपने से क्या को, बा क्या में नपने को वहाँ देखता है। में रूप हूँ। मेरा कर नै—पेसा मन में नहीं काता है। तब बस कर के विपरिचल जीर अन्यसा हो। जाने से सस बीकादि नहीं होते।

वेदना को ; संदा को ; बस्करों को ; विकास की अपनापक की होई से वहीं देखता है । तक उस्त विज्ञान के विवरित्तत और अस्त्यमा हो बाने से वर्षे शोकादि वहीं होते ।

गृहपति. ! इसी तरह शारीर के बातुर हो बाने पर विश्व जातुर वहीं होता है :

आयुप्पात् सारिपुत्र वह बोके । गृहपति वकुकित्वा वे सल्युष्ट होकर आयुष्पाद् सारिपुत्र के कर्ष का मिननत्रन किया !

§ २ देवद्द सुच (२१ १ १ २)

गुरु की शिक्षा सम्बन्धाय का दमन

देमा भैत्रे भुगा।

दक मार्गप मागवा सावधी के देश में त्युवृष्ट बामक सावधी क करने में विदार करते थे। तब कुछ पश्चिम की जोर साने वाले मिश्रु वहाँ मगवान के बहुर्ग जाये और भगवानुका अभि बादन कर एक ओर कि गये।

दक कार पेट वे शिष्टु भगवान् म बोक:---भन्ते [इस पश्चिम देश में काण बाहते हैं पश्चिम देश में निवास काल की हमारी इच्छा है।

र रामाओं के सरक्षर के पात बना हुआ। नगर दनवर कहा जाता या आर आलगत का निमन भी देनी नाम ने प्रतिक पा— अहक्या।

भिक्षुओं ! सारिपुत्र से तुमने छुट्टी छे ली है १

नहीं भन्ते । मारिपुत्र से एमने छुटी नहीं ली हैं।

भिक्षुओ । सारिपुत्र मे चुट्टी ले लो । मारिपुत्र भिक्षुओं में पण्डिन हं, सबद्यचारियों का भनुप्राहक है ।

"भनते । बहुत अच्छा" कइ, उन भिधुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

उस समय आयुरमान् सारिपुत्र भगवान् के पास ही किसी प्लगला नामक गुम्त्र के नीचे वेठे थे।

तव, वे भिक्षु भगवान् के भाषित का अनुमोदन और अभिनन्दन कर, आसन से डट भगवान् को अभिवादन और प्रदक्षिणा कर, जहाँ आयुष्मान् सारिषुत्र थे वहाँ गये। जाकर, आयुष्मान् सारिषुत्र से कुशल क्षेम के प्रदन प्छ एक ओर वैठ गये।

एक ओर चैठ, वे भिक्षु आयुप्मान् सारिषुत्र से वोले:—भन्ते ! हम पश्चिम देश में जाना चाहते हैं, पश्चिम देश में निवास करने की हमारी इच्छा है। हमने बुद्ध से छुटी ले ली है।

आबुस ! नाना देश में घूमने वाले भिक्षु को तरह तरह के प्रश्न करने वाले मिलते हैं— क्षत्रिय पिटत भी, ब्राह्मण पिटत भी, गृहस्य पिटत भी, श्रमण पिटत भी। आबुस ! पिटत मनुष्य पृष्ठेंगे, ''आबुप्मानों के गुरु की क्या शिक्षा है, क्या उपदेश हैं ?'' आबुप्मानों ने क्या धर्म का अच्छी तरह अध्ययन कर लिया है, अच्छी तरह ब्रह्मण कर लिया है, अच्छी तरह मनन कर लिया है, अच्छी तरह धारण कर लिया है—

जिससे आप भगवान् के धर्म को ठीक-ठीक कह सकें, कुछ उलटा-पुल्टा न कर दें, धर्माचुकूल ही बोलें, वातचीत करने में किसी सदोप स्थान पर नहीं पहुँच नायँ ?

आञ्चम ! इस कहे गये का अर्थ जानने के किये हम दूर से भी आयुष्मान् सारिपुत्र के पास आवें । इसका अर्थ आप आयुष्मान् सारिपुत्र ही कहते तो अव्छा था ।

आबुप । तो सुनें, अच्छी तरह मन लगावें, मे कहता हूँ।

"भावुस । बहुत अच्छा" कह, भिक्षुओं ने भायुष्मान् सारिपुत्र को उत्तर दिया ।

आयुष्मान् सारिपुत्र वोले —आवुस । पण्डित मनुष्य आप से पूछेंगे, "आयुष्मानों के गुरु की क्या शिक्षा है, क्या उपदेश हैं ?" आवुस । ऐसा पूछे जाने पर आप यों उत्तर टेंगे—छन्दराग को दमन करना हमारे गुरु की शिक्षा है ।

आवुस,। ऐसा उत्तर देने पर भी, ऐसे पण्डित छोग हैं जो आगे का प्रश्न प्छेंगे, "आयुष्मानों के गुरु छन्दराग को कैसे दमन करने का उपदेश देते हैं ?" आवुस ! ऐसा पूछे जाने पर आप यों उत्तर हेंगे—रूप में छन्दराग का उमन करना हमारे गुरु की शिक्षा है, वेदना में , संज्ञा में , सस्कारों में , विज्ञान में !

आबुस ! ऐसा उत्तर देने पर भी ऐसे पण्डित लोग हैं जो आगे का प्रक्त पूछेंगे, "आयुष्मानों के गुरु रूप में क्या दोष देखकर उसमें छन्दराग को दमन करने का उपदेश देते हैं ?" चेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान "। आबुस ! ऐसा पूछे जाने पर आप यों उत्तर टेंगे—जिसको रूप में राग लगा हुआ है, छन्द लगा हुआ है, प्रेम लगा हुआ है, प्यास लगी हुई है, लगन लगी हुई है, तृष्णा लगी हुई है, उसे रूप के विपरिणत और अन्यथा हो जाने से शोकादि उत्पन्न होते हैं । चेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान । हमारे गुरु रूप में इसी टोप को देखकर उसमें छन्दराग को दमन करने

र वृक्षों का मण्डप । यह मण्डप पानी वाले प्रदेश में था । उसके नीचे ईटों का एक वगला-सा बना दिया गया था, जो बटा ही शीतल था—अहकथा ।

का बपदेस देते हैं। बेहना । सक्षा । संस्कार । विशान में धन्दराय को बसव करने का बपदेस 22 2 1

बाहुस ! पैसा बचर दवे पर भी पैसे पश्चित हैं वो बागे का प्रस्य पूर्वेंगे "बामुप्तार्थी के ग्रद वे क्या धाम देखकर कम में ग्रन्त-तात की दमन करने का बतदेश दिवा है। बेदना । संशा"। संस्थार , विज्ञान: १ मालुस ! ऐसा बुछे बाने पर आप वी बचर होंगे-क्य में जो विगतरांग विगतकन्द विगतपेस विगतपिपास विगतपरिकाह और विगतकण है उसे कप के विपरिक्षत और भन्यया हो बाबे से शोकादि वहीं होते । बैदवा : संज्ञा : संस्कार: विज्ञान । इसी काम की देख-कर बचारे शुरू वे कम में बेरवा में क्षेत्रा में संस्कारों में विज्ञान में छन्दराय की दमन करने का सपदेस दिया है।

आवस ! अक्सक बर्मों के साथ विद्वार करनेवाका इसी अन्य में यदि सुख से विद्वार करता उसे विचाद परिवाह का बयाबास नहीं होते। सरीर कर कर मरने के बाद उसकी गाँव नच्छी होती।

तो मगदान बकुसक धर्मी का प्रदाय वहीं बताते।

बाबस ! क्वोंकि बाबसक बर्मों के साथ विद्वार करने स इसी अध्य में द्वाच से विद्वार करता है उसे विकात परिकाह और क्याधास होते हैं तका सरीर कर कर मरने के बाद हर्गति को प्राप्त होता है इसी से मगबाबू ने महश्रक बर्मी का प्रदाय बताया है।

भाषस ! बताब बर्सी के बाध विद्यार बरने से पढि इसी अगर में दृश्य से विद्यार करता जा

भगवाब असब धर्मों का सक्रय करना वहीं बताते ।

बातुम ! क्वोंकि क्रवाद कर्तों के साथ विद्वार करने से इसी क्रम में सुक स विद्वार करता है बसे विश्वातादि नहीं होते तथा शरीर सुद कर मरते के बाद उसकी गति बच्छी होती है हमी से भग बान ने क्रमक-धर्मी का समय करवा बतावा है।

बाबुप्साव् सारिवृश्व वह बोके ! संतुष्ट होकर का मिल्लक्षों ने बाबुध्मात् सारिवृश्व के क्षरे ^{क्}र

स्थितकात विकास

§ ३ परम द्राष्टिकानि सच (२१ १ १ ३)

ग्रापन्तिय-प्रश्न की स्पाक्या

वेसा मैंने सुना।

एक समय कायुध्यान शहाकारयायन सवन्ती में कुररदार के बीचे पवत पर विहार करते से। त्वन, प्रद्रपति हासिहिकानि नहीं आयुष्माण् महाकालाच्य थे वहाँ नावा और स्वका अभि-बादम कर एक और बैंड गया । एक और बैंड, गृहपति हाकिदिकानि आव्याम सहाकात्वावन से बोजा-मन्ते ! भगवान् ने बद्धकवर्गिक ग्रामन्त्रिय प्रदत्त में कहा है---

बर को छोद देशर दूसदेशका

सनि गाँव में बगाव-बशाब न करते हुने कामों से रिश्व कहीं अपनापन न क्रोड किसी मनुष्य से कुछ संसद वहीं करता है ॥

भन्ते । मगवाह में वो वह संबंध से कहा है उसका विकाल-पूर्वक कैसे वर्ष समझवा चाहिये ! ग्रदपति । कनशात विज्ञान का वर है । क्यवात के क्य में वैंवा हुवा विद्यान वर में रहनेवाका कड़ा आता है। गुरपति ! वेदकापानु विशास का तर है। वेदनावातु के राग में बँबा हुआ। विशास वर हैं रहने बाका कहा काता है। गुहबति ! संशाधातु विद्यान का कर है। संशाकातु के सारा है । संशाकातु विज्ञान घर में रहने वाला कहा जाता है। गृहपित । संस्कारधातु विज्ञान का घर है। सस्कारधातु के राग में वैँघा हुआ विज्ञान घर में रहने वाला कहा जाता है।

गृहपति ! इसी तरह कोई घर में रहने वाका कहा जाता है।

गृहपति । कोई वेघर कैसे होता है ?

गृहपति ! जो रूपधात के प्रति छन्ड=राग = निन्द = नृष्णा = उपादान तथा चित्त के अधिष्ठान, भिनिवेश और अनुशय है, सभी बुद्ध में प्रहीण=उच्छित्रमूल=शिर कटे तास्वृक्ष के ऐसा=मिटे=भविष्य में कभी उठ न मकने वाले हुये रहते हैं। इसीलिये, युद्ध वेघर कहे जाते हैं।

गृहपति ! जो वेदनाधातु के प्रति''', संज्ञाधातु के प्रति''', संस्कारधातु के प्रति'''। इसी

गृहपति । ऐसे ही कोई वेघर होता है।

गृहपति । कैमे कोई निकेतसारी होता है ?

गृहपति ! जो रूप निमित्त के निक्ति में फॅसकर घँध गया है वह निकेतसारी कहा जाता है । जो शब्दनिमित्त '', गन्धनिमित्त ''; रसनिमित्त ', स्पर्शनिमित्त' , धर्मनिमित्त ' ।

गृहपति । केसे फोई अनिकेतमारी होता है ?

गृहपति ! जो रूप निमित्त के निकेत में फँसकर चँध जाता है, वह बुद्ध में प्रहीण = उच्छिन्न मूल = शिर कटे तालबृक्ष के ऐसा = मिटे=भविष्य में कभी उठ न सकने वाले हुये रहते हैं। इसीलिये, बुद्ध भनिकेतसारी कहें जाते हैं। शब्द', गन्ध ", रस", स्पर्श ; धर्म ।

गृहपति ! गाँव में लगाव-बझाव करने वाला कैसे होता है ?

गृहपति । कोई (भिक्षु) गृहस्थों से मस्पृष्ट होकर विहार करता हैं, उनके आनन्द में आनन्द मनाता है, उनके शोक में शोकित होता है, उनके सुख-हु ख में सुखी-हु खी होता है, उनके काम-काज आ पढ़ने पर अपने भी जुट जाता है। गृहपित ! इसी तरह, गाँव में छगाव-वझाव करने वाला होता है।

गृहपति ! कैसे गाँव में लगाव-बझाव करने वाला नहीं होता है ?

गृहपति । कोई (भिक्षु) गृहस्थों से असंस्ष्ट होकर विहार करता है, उनके आनन्द में आनन्द नहीं मनाता, उनके शोक में शोकित नहीं होता, उनके सुख-हु ख में सुखी-हु खी नहीं होता, उनके काम-काज आ पढ़ने पर अपने भी जुट नहीं जाता है। गृहपति । इसी तरह, गाँव में लगाव-बझाब करने वाला नहीं होता है।

गृहपति ! कैसे कोई कामां से अरिक होता है ?

गृहपति ! कोई कामों में अविगतराग होता है, अविगतछन्द=अविगतप्रेम=अविगतिपास= अविगत-परिलाह=अविगततृष्ण होता है । गृहपति ! इसी तरह, कोई कामों से अरिक होता है ।

गृहपति ! कैसे कोई कामों से रिक्त होता है ?

गृहपति ! कोई कामों में विगतराग होता है, विगतछन्द=विगतप्रेम=विगतिपपास=विगतपरि-छाह=विगततृष्ण होता है। गृहपति ! इसी तरह कोई कामों से रिक्त होता है।

गृहपति ! कैसे कोई कहीं अपनापन जोइता है ?

गृहपति ! किसी के मन में ऐसा होता है—अनागतकाल में में इस रूप का होऊँ, इस वेदना ' विज्ञान का होऊँ। गृहपति ! इसी तरह कोई अपनापन जोड़ता है।

गृहपति । कैसे कोई कहीं अपनापन नहीं जोइता है १

गृहपति ! किसी के मन में ऐसा नहीं होता है—अनागतकाल में में इस रूप का होते, इस वेदना'''विज्ञान का होतें। गृहपति ! इसी तरह, कोई अपनापन नहीं जोढ़ता है। गृहपति ! कैसे कोई किसी मनुष्य से शहर करता है ? गृहपति ! कोई इस मकार कहता है—सुन इस वर्मविषय को नहीं वापते हो में इस वर्मविषय को बानता हूँ तुम इस पर्मविषय को क्या बानोगे ! तुम निष्या मार्ग पर आवन हो में सुमार्गपर बावक हूँ ! को पढ़के कहना चादिये वा उसे पीछे कहा, को पीछे कहना चादिये या उसे पहले ही कह दिया ! मेरा कहना विपयानुक है तुम्हारा कहना तो विषयानगर हो गया ! को तुमने इतना कहा सभी उकट गया ! तुमारी विषय तक है दिया गया है, जब कुछने की कोशिश करो ! तुम तो पकड़ा गये पहि ताकत है तो निककी ! गुदर्शत ! इसी तयह कोई किसी समुच्य से संसद करता है !

गृहपति ! केमे कोई किसी समुख्य स श्रीसर गर्ही करता है ।

सुरपति ! कोई इस प्रकार नहीं कहता है---तुम इस अमैधिनय को नहीं वानते हो में इस बर्म विनय का कामता हूँ । गृहपति ! इसी काड कोई किसी मञुष्य से शंसद गड़ीं करता है ।

गहपति ! यही मगनाय ने अनुक्रवर्शिक मागन्तिय प्रकृत में कहा है--

तर को क्वोब बेचर धूमने वाका मुनि गाँव में कगाय-वकाय व करते हुये कामों से रिक्ट, कहीं अपनापम म बोद

किसी अनुष्य स कुछ संसद यहीं करता है। गृहपति ' मगवानु में जो यह संस्थेप से कहा है उसका विस्तारपूर्वक एसे ही अर्थ समझवा वातिये।

§ ४ दुतिय हालिदिकानि सुत्त (२१ १ १ ४) शक्र प्रकृत की स्पाक्या

र्यमा सेने सुना।

पक समय आयुक्ताय महाकात्यायम असन्ती में कुररग्रर के कवे पथत पर विहार करते थे। हथ " एक क्षार वढ पृहरति हाकिदिशामि आयुक्ताय सहस्रात्यायम स वीकार—अन्ते ! सपदान् ने वह राज्य नेत्र में कहा है।—

> 'को सप्तय वा प्राक्षण एच्या क शय से विश्वक हो गय हैं वन्हींने करना कर्तव्य प्रा कर किया है वन्हींने पास— वोग-क्षेत्र वा क्रिया है के ही सावता बद्धकारी हैं बन्हींने बच्चत स्वान को पा क्षिया है तथा देवताओं धीर मनुष्यों में वे हो बेह हैं।

अस्य ! भगवाज् के हुस संक्षेप स नहें गये का विकारपूर्णके वर्ष कमें समझ्या चाहिए ! गृहपति ! करवाज् के प्रति जो सम्ब≂ागा≖मानन्द सहजाल्युरमा≡दराहाल दीमा विचा के क्षपिद्वात अमिनियोग और अनुगव हैं उनके सब्बलीयरामलियोजल्याग से विच विद्वात कहा बाता है !

गृहवति । वेदमा बाहुई प्रति - । संदा बाग्यः । संस्कार-बाग्यः । (वेह्यम बाग्यः । गृहवति ! वही समवान न बाक पहन में वहा है जो समल वा साइक तृष्या क अवते । । । गृहदति ! सगदान के हम संक्ष्य म वहे गवे वा विकारपुषक जर्म गेसे ही समझमा वाहिने ।

६ ७ मगाधि मुक्त (२१ १ १ ५)

समाधि का अध्यास

टेना मिने मुना । [अपुको] मसाबि का अध्यास करो । [अधुका] समाहित क्षाकर मिछ चवार्य को जान सेना हैं। किसके प्रधार्थ को जान ऐसा हा? ऋष के उसने और दूधने के। बैटना के उसने कीर हूपने के। संज्ञाके । सम्बन्धिकेण । विद्यान के ।

भिधुओं ! स्व का रमना क्या है ? घेटना : : यजा: , संकार: , विज्ञान का उमना क्या है ?

निधुओं ! (कोई) आनम्य सनाता है, शानन्द के बब्द कहना है, उसमे हुए जाता है। किससे आनन्द सनाता है : ॰

क्ष्य में आनन्द सनाता है, आनन्द में शब्द पहला है, उसमें द्वय जाता है। इसम वह रूप में आमक्त हो जाता है। क्ष्य में तो यह आमक्त होना है वही उपादान है। उस उपादान के प्रायय से भय होता है। भव के प्राराय में जानि होनी है। जानि के प्रायय में जरा, मरण "होते है। इस तरह सारा ह स ममूह उठ पदा होता ह।

चेदना से १ महा से ११, मस्दारों से १ , विज्ञान से आनन्द मनाता है। इस तरह सारा हु छ-समूह दर गया तिता है।

भिलुओं। स्व, बेदना, यहा, सम्कार, विज्ञान यहाँ उगना है।

भिधुओं । रूप, वेदना, महा, सरकार, विज्ञान का हय जाना क्या हे ?

भिक्षुओ ! (कोई) न तो भानन्द मनाता है, न आनन्द के घटद वहता है, और न उसमे हुब जाता है। किससे न तो आनन्द मनाता है '?

रूप से न तो धानन्द मनाता है, न आनन्द के घट्ट कहता है, और न उसमें द्वय जाता है। इससे रूप में, उसकी जो आसिक हैं वह निरुद्ध हो जाती है। आसिक के निरुद्ध हो जाने से उपादान नहीं होता। उपादान के निरुद्ध हो जाने से भय नहीं होता। । इस तरह, मारा दु स-समृह रुक जाता है।

वेदना से , मजा से , मम्कार से , विज्ञान में । इस तरह, सारा दु ख समूह रुक जाता है।

भिक्षुओ । यही रूप का दुव जाना है, चेदना का इब जाना है, सज्ञा का दुव जाना है, सरकारों का दुव जाना है।

६६. पटिसञ्चान सुत्त (२१ १ १.६)

ध्यान का अभ्यास

श्रावस्ती '।

मिक्षुओ। ध्यान के अन्यास में लग जाओ। भिक्षुओ। ध्यानस्थ हो भिक्षु वथार्थ को जान लेता है। किसके यथार्थ को जान लेता है?

रूपके उगने और दूवने के यथार्थ को। वेदना ', सजा', सस्कार , विज्ञान । [कपर वाले सूत्र के समान]

§ ७. पठम उपादान परितस्सना सुत्त (२१ १ १. ७)

उपादान और परितस्सना

थ्रावस्ती'''।

मिश्रुषो ! उपादान भीर परितस्सना के विषय में उपदेश करूँगा । अनुपादान और अपरितस्सना के विषय में उपदेश करूँगा । उसे सुनो, अच्छी तरह मनमें लाओ, मैं कहता हूँ ।

"भन्ते । बहुत अच्छा" कह भिक्षु भो ने भगवान को उत्तर दिया।

संयुक्त मिकाय

भगवान् वोके-निश्वकी ! बपावान और परितरसवा कैसे दोती है !

सिद्धार्थी ! कोई कविद्वाल पुण्यक्षक क्य को अपना समझता है। अपने को स्पनाका समझता है। अपने में रूप पा क्य में अपने को समझता है। तब वह क्य विपरिणत तथा दूसरा ही हो बाता है। रूप के विपरिणत तथा वृद्धार ही हो बाले से रूपविपरिणामाधुवर्धी विज्ञान होता है। उसे क्यांवि परिणामाधुवरिकर्तका परितस्तवा के होने से विश्व उसमें वह बाता है। विश्व के यह काने से उस कास हुएक, सरेका और परितस्तवा होती है।

मिद्वाबो ! बेर्वा को अपना समस्ता है । सका को अपना समस्ता है । मस्कारों को

भगवा समझ्या है । "विश्वाय को नगवा समझ्या है

पिमुको ! इसी तरह अपावान और परिवरसमा होती है। पिमुको ! अनुपादान और अपरिवरसमा कैसे होती है !

निहु को ! कोई विद्वाल आर्थधानक करको कपना नहीं समझता है। जाने को कपनाका नहीं समझता है, अपने में रूप था कप में अपने को नहीं समझता है। तब, नह कप विपरित्त तथा दूसरा ही हो बाता है। क्या के विपरित्त तथा दूसरा ही हो बाते से क्यरिपरित्तमाइवर्ध विद्याल नहीं होता है। क्याविपरित्तमातुपरिवर्धका क्यों की करपित से उसका विच्य परित्तमा में नहीं वहतो है। विच के वहीं बाते हैं। उस बाता हाल, क्योबा परित्तस्वान नहीं होती है।

सिद्धको [" वेदना" । श्रंका । श्रंकार ; विज्ञान को धरना कहीं समझता है ।

मिञ्जूनी । इसी तरह अनुपादान जीर अपरितरसवा शोवी है ।

६ ८ दतिय जवादान परितस्सना <u>स</u>च (१२ १ १ ८)

वराशन और परितस्सना

भावस्ती ।

'मिल्लमो ! बपादान और परितस्तना कैसे दोती है !

सिद्धानी ! कोई लिक्दिल प्रवाहनत क्या को "यह मेरा है। यह मेदी जह मरा जारामा है" समझ्या है। बसाबा वह कर विपरिणय तथा काम्य्या हो जाता है। क्या के विपरिणय तथा जानवार हो जावे से उसे सोक परिचेत कुछ कीमंत्रक और उपायात होते हैं।

मिश्चनी ! वेदना को ; शंशा को ; शंस्कार को ; विश्वास को ।

मिशुणी ! इसी तरह, क्यादान और परितरसना होती है।

मिसुमी ! अनुपादान बीड अपरितस्थाका नेसे होती है ?

मिहनी ! कोई विहास कार्यकाशक करको "वह मेरा है। यह में हूँ। यह सेरा आद्रार है" वही समस्ता है। यसका वह कर विपरिकत तथा जन्मधा हो जाता है। इस के विपरिकत तथा अन्यवा हो कार्य से कसे सीक परिदेश हुन्य जीतंत्रस्य और वपावास नहीं होते हैं।

""वेदमा | संबा "; संस्थार" : विशास |।

मिश्रुको ! इसी सरह जनुपान्य और जनरितस्तमा होती है।

इ १० पठम **मतीतानागत सुच (२१ १ १ ९)**

भूत और मविष्यत्

भाषस्ती***।

'धगवाब् वोके--मिश्रुवी ! अब अलीत बीर जनागत में अनित्व है। वर्तमान का कहना वजा!

भिक्षुओ । इसे जानकर विद्वान् आर्यश्रावक अतीत के रूप में अनपेक्ष रहता है, अनागत रूपका अभि-नन्दन नहीं करता, वर्तमान रूप के निर्वेद, विराग और निरोध के लिये यत्नवान् रहता है।

·· वेदना · , संज्ञा · , सस्कार · · , विज्ञान ।

§ १०. दुतिय अतीतानागत सुत्त (२१ १. १. १०)

भूत और भविष्यत्

श्रावस्ती

• भगवान् वोले-भिक्षुओ ! रूप अतीत और अनागत मे दु ख है, वर्तमान का कहना क्या ? भिक्षुओ ! इसे जानकर विद्वान् आर्येश्रावक अतीत के रूप में अनपेक्ष रहता है, अनागत रूप का अभि-नन्दन नहीं करता, वर्तमान रूप के निर्वेद, विराग और निरोध के लिये यसवान् रहता है।

वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

§ ११. तितय अतीतानागत सुत्त (२१ १ १. ११)

भृत और भविष्यत्

श्रावस्ती ।

भगवान् बोले — भिक्षुओ । रूप भतीत और अनागत में अनास्म है , वर्तमान का कहना क्या ? [पूर्ववत्]

नकुळ(पतावर्ग समाप्त

द्सरा भाग

अनिस्ध वर्ग

१ अनिव सुत्त (२१ १ २ १)

भनित्यता

पैसा मैंबे सुवा।

*****भावस्ति** ।

***मगवान् वोक्रे :---शिक्क्षणे ! क्रम जनित्य है वेदना कवित्य है संज्ञा अवित्य है विकाय मनित्य है।

मिल्ला ! इस वावकर विज्ञान आवैज्ञावक को कर में भी निर्वेद होता है, वेदवा से भी निर्वेद दोता है संज्ञा से भी निर्वेश दोता है संस्थारों से भी निर्वेद होता है विद्याद से भी निर्वेद होता है। निर्देष होने से विरक्त हो बाता है वैशाम से विश्वक हो बाता है। विश्वक हो जाने से विश्वक हो गर्ग पंसा कान होता है। विमुक्त हो बाने से बूरा हो गया को करना या था कर किया गया अब कुछ नाकी नहीं भवा-एसा काव केता है।

हु२ दुक्सा शुच (२१ १ २ २)

ট্রান্ত

भावस्ती ।

मिल्लुमी ! क्य हु:पा है बेदना हु:क है शंदा हु:पा है संस्कार पु:ब है विश्वान हु:ब है। मिश्रको ! इसे बान कर ~।

६३ अनचसुच (२११२३)

भेतारमा

भावस्ती 1

मिश्रुको । क्य जमारम है ** ।

मिध्रको । इसे बाग कर ।

हु¥ पठम य≰निच सुच (२१ १ २ ४)

मनिरयता के गुण

भावसी ।

मिल्लामी [का मनित्य है | की कनिन्द है वह हु साहै। को हुए के दे वह अनामा है । को अनारम है वह न तो मेरा न में न शेरा जात्मा है। इसे वधार्यता मझपूर्वक देखना काहिये।

वेदना''', मजा''', सम्कार '', विज्ञान अनित्य हे'''। भिक्षुओ । इसे जानपर विटान् आर्यश्रायक जाति क्षीण हुई ''ऐसा जान छेता है।

§ ५. दुतिय यदनिच सुत्त (२१ १ २. ५)

दुःख के गुण

थावस्ती ।

••• भिक्षुओ । रूप हु य है। जो हु व है वह अनान्म है।

• [शेष पूर्वंयत्]

§ ६. ततिय यदनिच सुत्त (२१ १.२.६)

अनात्म के गुण

श्रावस्ती ।

भिक्षओं । रूप अनातम है।

[शेप पूर्ववत्]

§ ७. पठम हेतु सुत्त (२१ १.२ ७)

हेतु भी अनित्य है

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ । रूप अनित्य हैं। रूप की उत्पत्ति के जो हेतु और प्रत्यय है वे भी अनित्य ह भिक्षुओ । अनित्य से उत्पत्त होकर रूप नित्य कैसे हो सकता है।

[इसी तरह वेदना, सज्ञा, सस्कार और विज्ञान के विषय में]

भिक्षुओं ! इसे जान कर विद्वान् भार्यश्रावक "जाति श्लीण हुई " ऐसा जान लेता है।

§ ८. दुतिय हेतु सुत्त (२१ १ २. ८)

हेतु भी दुःख है

श्रावस्ती ।

· मिक्षुओं ' रूप दु'ख है। रूप की उत्पत्ति के जो हेतु और प्रस्यय हैं वे भी दु ल हैं। भिक्षुओ। दु:ख से उत्पन्न होकर रूप सुख कैसे हो सकता है।

[इसी तरह वेदना, सज्ञा, सस्कार, और विज्ञान के विषय में]

भिछुओं ! इसे जानकर विद्वान् आर्यश्रायक जाति क्षीण हुई "ऐसा जान लेता है।

६९ ततिय हेतु सुत्त (२१ १ २ ९)

हेतु भी अनातम है

थावस्त<u>ी</u>

भिक्षुओ ! रूप अनात्म है । रूप की उत्पत्ति के जो हेतु और प्रत्यय हैं वे भी अनात्म है । भिक्षुओ ! अनात्म से उत्पन्न हो कर रूप आत्मा कैसे हो सकता है ।

[पूर्वमत्]

६१० आनन्द सुच (२१ १ २ १०)

विरोध किसका !

भाषकी ।

तप, आतुरमान् आतम्ब बार्री मगवाध् ये वहीं आवे और मगवान् का अभिवादन कर एक और

पुर और बैठ आयुष्पान आनम्ब शतदामु से बीकं : न्यानी ! कींग 'निरोध निरोध' कहा

करते हैं। यन्ते ! किए चर्मीका मिरोच निरोच कहा बाता है ? मानस्य ! क्य अवित्य है संस्कृत है जलीत्वसम्प्रत्य है, शक्यमां है, व्यवधार्म है विरोधधर्मा है। उसी के निरोध से विशेष कहा जाता है।

वेदना' । संज्ञा' । संस्कार" : विशाव' : बसीव विरोध से निरोध कहा बाता है ! जावन्द ! इन्हीं धर्मी के निरोध से विरोध कहा बाता है।

श्चतित्व वर्गं समाप्त ।

तीसरा भाग

भार वर्ग

§ १. भार सुत्त (२१ १. ३. १)

मार को उतार फेंकना

श्रावस्ती '।

भिक्षुओ । भार के विषय में उपदेश करूँगा भारहार के विषय में, भार उठाने के विषय में और भार उतार देने के विषय में । उसे सुनो ।

भिक्षओ । भार क्या है ?

इन पाँच उपादान-स्कन्धों को कहना चाहिये। किन पाँच १ जो यह, रूप-उपादान-स्कन्ध, वेदना-उपादान-स्कन्ध, सज्ञा-उपादान स्कन्ध, सस्कार-उपादान-स्कन्ध, और विज्ञान-उपादान स्कन्ध हैं। भिक्षको । इसी को भार कहते हैं।

भिक्षुओ ! भारहार क्या है ? पुरुप को ही कहना चाहिये। जो यह आयुष्मान् इस नाम और इस गोत्र के हैं। भिक्षओ ! उसी को भारहार कहते हैं।

सिक्षुओ । मार का उठाना क्या है ? जो यह तृष्णा, । पुर्नजन्म करानेवाली, आसित्त और राग-बाली, वहाँ वहाँ लग जानेवाली है। जो यह काम तृष्णा, भव तृष्णा, विभव-तृष्णा है। भिक्षु भो। इसी को भार का उठाना कहते हैं।

भिक्षुओ ! भार का उतार देना क्या है ? उसी नृष्णा का जो बिल्कुल विराग=निरोध=त्याग= प्रतिनि सर्ग=मुक्ति=अनालय है । भिक्षुओ ! इसी को कहते हैं भार का उतार देना ।

भगवान् यह बोले । यह कह कर बुद्ध फिर भी बोले --

ये पाँच स्कन्ध भार हैं,

पुरप भारहार है,

भार का उठाना लोक में दुख है,

भार का उतार देना सुख है ॥ १॥

भार के बोझे को उतार,

दूसरा भार नहीं लेता है,

तृग्णा को जइ से उखाइ,

दु खमुक्त निर्घाण पा लेता है ॥२॥

६ २. परिञ्जा सुत्त (२१ १ ३ २)

परिक्षेय और परिका की व्याख्या

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ । परिज्ञेय धर्म और परिज्ञान के विषय में उपदेश करूँगा । उसे सुनो ''। भिक्षुओ । परिज्ञेय धर्म क्या है १६ सिक्षुओ । रूप परिज्ञेय धर्म है, वेदना परिज्ञेय धर्म है, सज्ञा

1 49 9 8.4

परिश्चेष समें है संस्कार परिज्ञय धर्म है विज्ञान परिज्ञेय धर्म है | लिशुको ! इन्हों को परिज्ञेय धर्म करने हैं ।

भिद्धको ! परिका क्या है ! सिद्धको ! को शग अप और सोह अप है उसी को परिका कहते हैं !

§ ३ अभिजान सुप (०१ १ ३ ३)

भग को समग्रे विना दुःख का शय नहीं

भायस्ती ।

जनपटना | मिद्रुको | फ्लाको विज्ञासमले जाने, त्यागकिये तथा उसले विरख्ड हुये कोई बुत्सींका क्रम कार्रीका सकता है।

'वेर्ना' । भंता । सरकार । विकास को विना समसे अभी त्याग कियं तथा उससे विरम इये कोई प्रार्थों का स्रय नहीं कर सकता है।

मिश्रको ! इप को समझ जान स्थाय उससे विरुक्त हो कोई दश्कों का अप कर मकता है।

वेदना । श्रंता ", संस्कार । विद्यान को समझ काक लाग कर तथा उसस विरक्त हो काई दःव्यां करनाक कर सकता है।

६४ छन्दराग सुच (२८१३४)

छन्दरांग का त्याग

श्रावस्ती ।

निश्चना ! क्यमें को छन्दराय है उसे छोड़ दो। इस तरह वह कर प्रदीय हो जादगा विश्वक्ष मूक करें हुयें सिर बाके ताइहछ के समान अवसाव किया हुआ किर सी कमी न उस सकते वाणा।

वेदना । संज्ञा । नंदश्वारा । विकाय में बो क्रम्ब्सम है वसे क्रोप हो "।

६ ५ पटम अस्साद सुच (२१ १ ३ ५)

रूपादि का भारताद

भावस्ती ।

्रिमुली हिन्दरूप प्राप्त करने के पहले वीकिसरूप रहते ही अरे सनमें वह हुआ :--क्रका शास्त्राद क्या है तौच क्या है झुरक्सर क्या है (वेदना संझा∸ (संस्कृतर) विश्वात है

सिञ्जनो ! तम मेरे मनोर्ग यह हुन्या !—क्या के मलाव से को मुख्य और सीमवरण होता है वहीं कर का साकार है । क्या को जनिल्य हुम्य विगरिकामकारों है नह कर कर दोन (≃ धार्शकर) है । को कर के मारी करनार को क्या होना मारीन करनार है नहीं कर में स्वस्तात है।

विद्या संभा संस्थार जीर विद्यान के साथ भी ऐसे ही]

सिद्धानी ! सन तक सैने इन गाँच उपादान-स्कार्जी के आस्त्राव को आस्त्राव के तीर पर दोव को दोव के तीर और सुरकारें को सुरकारें के तीर पर बमार्कता नहीं ज्याव किया या तक तक इस कोड़ से अनुसार सन्यक्त सम्बद्धान्य माश करने का दावा नहीं किया।

मिसुची ! वर मेंने" चनार्यता वान किया तभी इस कोक में जनुत्तर सम्बद्ध सम्बद्धान प्राप्त

करने का शाबा किया ।

मुझे ऐसा बान = वृद्धेन कारक बुका-मोरा किस डीक में विद्युत्त हो गया नहीं अस्तिम बार्ति 2 अब पुरुष्टम्म डीमें का नहीं।

§ ६. दुतिय अस्साद सुत्त (२१ १ ३. ६)

थास्वाद की खोज

श्रावस्ती 1

भिक्षुओ । मेने रूप के आस्वाद की योज की । रूप का जो आस्वाट ह उसे ममझ लिया। कहाँ तक रूप का आस्वाद है उसे प्रज्ञा से अच्छी तरह देख लिया।

भिक्षुओ । मैंने रूप के टोप की सोज की । रूप का जो दोप है उसे समझ लिया । जहाँ तक रूप का दोप है उसे प्रज्ञा से अच्छी तरह देख छिया ।

भिक्षुओ ! मेंने रूप के छुटमारे की खोज की । रूपमा जो छुटमारा है उसे समझ लिया। जहाँ तक रूप का छुटमारा है उसे प्रज्ञा से भर्जी तरह देख लिया।

[वेदना, सजा, सस्कार, और विज्ञान के साथ भी ऐसे ही]

भिक्षुओ ! जब तक मेने इन पाँच उपादान स्कन्धों के आस्वाद को आस्वाद के तार पर '

यही अन्तिम जाति हं, अब पुनर्जन्म होने का नहीं ।

§ ७. ततिय अस्साद सुत्त (२१ १. ३. ७)

आस्वाद से ही आसिक

श्रावस्ती

भिक्षुओ । यदि रूप में आस्वाद नहीं होता तो सत्व रूप में आसक्त नहीं होते। भिक्षुओ । क्योंकि रूप में आस्वाद है इसीलिये सत्व रूप में आसक्त होते हैं।

भिक्षुओ । यदि रूप में दोप नहीं होता तो सत्व रूप से निर्वेद (= विराग) को प्राप्त नहीं होते। भिक्षुओ । क्योंकि रूप में दोप है, इसिलये सत्व से निर्वेद को प्राप्त होते हैं।

भिक्षुओ । यदि रूप से छुटकारा नहीं होता तो सत्व रूप से मुक्त नहीं होते । भिक्षुओ ! क्योंकि रूप से छुटकारा होना है, इसल्यिं सत्व रूप से मुक्त होते हैं ।

[वेदना, सज्ञा, सस्कार, विज्ञान के साथ भी ऐसे ही]

भिक्षुओ ! जब तक सर्वों ने इन पाँच उपादान-रक्ष्मधों के आस्वाद की आस्वाद के तीर पर, दोप को दोप के तीर पर, और छुटकारे को खुटकारे के तीर पर यथार्थत. नहीं जान लिया तब तक "'चे नहीं निकले = छूटे = मुक्त हुये तथा मर्यादा रहित चिक्त से विद्वार किये।

भिक्षुओ । जब सत्वों ने ' 'यथार्थत जान छिया तय ' वे निकल गये = छट गये = मुक्त हुये तथा मर्यादा रहित चिक्त से विहार किये।

§ ८. अभिनन्दन सुत्त (२१ १ ३ ८)

अभिनन्दन से दुःख की उत्पत्ति

थावस्ती ।

भिक्षुओ ! जो रूप का अभिनन्दन करता है वह दु ख का ही अभिनन्दन करता है। जो दु ख का अभिनन्दन करता है वह दु ख से मुक्त नहीं हुआ है—ऐसा मैं कहता हूँ।

वेदना , सज्ञा : , सस्कार , जो विज्ञान का अभिनन्दन करता है ।

मिक्षुओ । भीर, जो रूप का अभिनन्दन नहीं करता है वह दुख का अभिनन्दन नहीं करता है। जो दुख का अभिनन्दन नहीं करता है वह दुख से मुक्त हो गया—ऐसा में कहता हूँ।

वेदना , सज्ञा , सरकार , जो विज्ञान का अभिनन्दन नहीं करता है ।

१९ उप्पाद सुच (२१ १ ३ ९)

कप की उत्पत्ति दःक का उत्पाद है

भाषस्ती ।

शिक्षुको । कुन के को करपाव स्थिति पुनवत्म, और प्रावुमांव हैं वे कुल के करपाव रोगों की स्थिति भीर करामस्थ के प्रावर्गांव हैं]

मेरना ; संजा ; मंस्कार" विज्ञान के वो बत्याद क्यिति"। मिश्चमो ! को रूप का निरोध स्तुपसम तथा बरामरण का नस्त हो बाना है।

क्षेत्रका अंका संस्कार क्षेत्रकार ।

६१० अपमुख्याचा (२१ १ ३ १०)

उःवकासङ

भावस्ति ।

सिक्षुको | द्वाच के विषय में उपदेश करोंगा तथा हु:स क मुक के विषय में । उसे सुबी ।

सिद्धानी | दुल्क क्या है | सिद्धानी | कप दुल्क है । बेदबा दुल्क है । संज्ञा दुल्क है | संस्कार दुल्क है । विद्याप दुल्क है । सिद्धानी [इस्सी की दुल्ल कहते हैं ।

शिक्षमी ! हुत्य का शुक्र नवा है ?

ाबक्षमा : दुःच का पूर्व परात् । को यह तृष्या पुलर्मन करते वाकी वाकिक भार राग से युक्त वहाँ वहाँ भारम्य कोल्ते वाकी ! मो वह समन्त्रका अवन्युका विशवन्त्रका ! मिल्लुका ! इसी को दुःख का मुख्य कहते हैं !

દ **રેરે પર્માણ સત્તા** (ગ્ર ર ક રર)

अवमंग्रस्त

भावस्ती "

मिसुनी ! यहर के विषय में उपदेश कहाँगा और समझर के विषय में ।

ानधुना! लहुर कोच्यम अवदश्य करूमा आर बसबुर के व्ययस्थ । सिक्षामी ! च्या सहुर है जीर ज्या जसहुर ? शिक्षामी ! च्या सहुर है । वो इसका निरोध = खुपसा = च्या हो चाना है यह जसहर है ।

" वेदना : संज्ञा संस्कार : जिल्लान ।

मार चर्ग सम्बद्धाः

चौथा भाग

न तुम्हाक वर्ग

§ १. पठम न तुम्हाक सुत्त (२१ १. ४. १)

जो अपना नहीं है, उसका त्याग

श्रावस्ती ।

सिक्षुओ । जो तुम्हारा नहीं है उसे छोड़ दो । उसका प्रहीण हो जाना तुम्हारे हित ओर सुख के लिये होगा ।

भिक्षुओ ! तुम्हारा क्या नहीं है ?

भिक्षुओ ! रूप तुम्हारा नहीं है, उसे छोद हो । उसका प्रहीणमें हो जाना तुम्हारे हित और सुख के लिये होगा ।

वेदना , संज्ञा , संस्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओं । जैसे, कोई आदमी इस जेतवन के तृण, काष्ट, शाखा और पत्ते को ले जाय, या जला दे, या जो मरजी करे। तो क्या तुम्हारे मन में ऐसा होगा—यह आदमी हमें ले जा रहा है। वा जला रहा है, या जो मरजी कर रहा है ?

नहीं मन्ते ।

सो क्यों ?

भन्ते । क्योंकि यह हमारा आत्मा, आत्मनीय नहीं है।

भिक्षुओ ! इसी तरह, रूप तुम्हारा नहीं है। उसे छोद दो। उसका प्रहीण हो जाना तुम्हारे हित और सुख के लिये होगा।

वेदना , सज्ञा , सस्कार 🦙 विज्ञान तुम्हारा नहीं है, उसे छोड़ दो ।

§ २ दुतिय न तुम्हाक सुत्त (२१. १. ४. २)

जो अपना नहीं है, उसका त्याग

श्रावस्ती ।

[ठीक अपरवाले के जैसा, जेतवन का दृशान्त नहीं]

§ ३. पठम भिक्खु सुत्त (२१. १. ४. ३)

अनुशय के अनुसार समझा जाना

श्रावस्ती ।

क

तव, कोई सिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठ कर वह सिक्षु मगवान् से बोला — मारो ! भरावाल मुझे संक्षेप क बर्ग का उपवेश करें। कि में भरावाल के बर्ग को सुमकर करेका, एकान्य में बामस्त संवयविक तथा प्रविद्याल होकर विवार करें।

दे सिद्ध ! किसका कैसा अनुसम रहता है वह वैसा ही समझा बाता है; बैसा अनुसम नहीं रहता है वैसा वहीं समझा कहा है !

भगवन ! समझ गका । भगत ! समझ गया ।

है मिश्र ! मेरे इस संक्षेप से कहे गये का शमये विस्तार से वर्ष कैसे समझा !

भारते ! पदि कर का जबूक्य होता है को यह चैसा ही समझा बाता है । पदि वेदना का । संज्ञाका । संस्कारों का । विज्ञायका ।

मन्ते । पिद (किसी को) कम का अनुकार नहीं होता है तो वह वैसा नहीं समझा काता है। पिद वेदना का । संद्रा का ं संस्कारों का । विशान का । सगवाद के हुए संक्षेप से कहे गये का मैं ऐस ही विस्तार से वर्ष समझगाई।

डीक हैं मिद्धु डीक हैं | मेरे हुए संद्वेप से कहे गये का दुमये डीक में विस्तार से धर्म समझ किया : 'मेरे इस संद्वेप का कहे गये का पेसे ही विस्तार से धर्म समझमा चाहिने !

त्व वह सिद्ध जातवाण् के क्ये का व्यक्तिमन्द्रम और बाबुसीदम कर व्यक्ति से वढ सगवात् की स्रोतवाहत और प्रदक्षिण कर कका गया।

स्र

तब उस सिद्ध ने व्यवेका प्रकार में ध्यामण र्जवस्थीक तथा महितामा हो बिहार करते हुये सीप्त ही महत्वमं के उस व्यवक्त भन्तिम फरू को इसी कम्म में स्वयं जाय हैक और पा क्रिया विसक्ते किये कुळदुक श्रद्धा से सम्बन्ध कर से वेधर हो कर प्रतक्तिय हो व ते हैं। बादि झीज हुई, महत्वमं सम्बन्ध हो गया वो करना वा सो कर किया जब और कुछ बाजी नहीं रहा—पेटा बाव किया।

वह मिश्च कईवीं में एक हुआ।

🖁 ४ दुतिय भिक्सु द्वच (२१ १ ४ ४)

मनदाय के अनुसार मापना

मावसी ।

कोई भिन्न वहाँ भगवान् ने वहाँ कामा और मधवान् का अभिवादन कर एक और बैठ गना । एक जोर बैठ कर वह शिक्ष मधवान् से बोका :---

याने ! भगवान मुत्ते संसेप से वर्ग का अपवैक्ष करें कि मैं मतवान के वर्ग को मुच कर सकेशा पुकास में अप्रमुख संपद्माधीक क्या प्रविकास द्वीकर विकार कर्यों !

दे मिलु ! जिसका जैसा अनुस्त्र रहता है यह वैसा ही आवता है। जो कैसा भाषता है वह वैसा ही समझा काता है।

[क्यर वासे सूत्र के समान हरे]

बह मिशु नईसी में एक हुआ।

हु५ पठम ज्ञानन्द् सुच (२१ १ ४ ५)

किनका रुत्पाद ध्यय और विपरिचाम ?

भाषस्त्रीः । पद और वैदें भाषुत्माद वानम्द स मगशब् बोक "व्यवन्द । यदि ग्रुवस कोई पूछे बादस आनन्द ! किन धर्मों का उत्पाद जाना जाता है, व्यय, जाना जाता है, तथा स्थित हुओं का अन्यथात्व जाना जाता है।" आनन्द ! ऐसा पुछे जाने पर तुम क्या उत्तर दोगे ?

भन्ते । ऐसा पूछे जाने पर में यो उत्तर दूँगा .--

आबुस ! रूप का उत्पाद जाना जाता है, व्यय जाना जाता है, तथा स्थिर हुये का अन्ययात्व जाना जाता है। वेदना का , सज्ञा का , सस्कारी का , विज्ञान का । आबुस ! इन्हीं धर्मी का उत्पाद जाना जाता है । भन्ते ! ऐसा पूछे जाने पर मैं यो ही उत्तर दूँगा।

ठीक है, आनन्द, ठीक है। ऐसा पूछे जाने पर तुम यों ही उत्तर दोगे।

§ ६. दुतिय आनन्द सुत्त (२१. १. ४. ६)

किनका उत्पाद, व्यय श्रौर विपरिणाम ?

श्रावस्ती'''।

एक ओर बैठे हुये आयुष्मान् आनन्द से भगवान् बोले, "आनन्द । यदि तुमसे कोई पूछे, आवुस आनन्द । किन धर्मों का उत्पाद जाना गया है, व्यय जाना गया है तथा स्थित हुये का अन्यथात्व जाना गया है ? किनका जाना जायगा ? किनका जाना जाता है ?' आनन्द । ऐसा पूछे जाने पर तुम क्या उत्तर दोगे ?"

भन्ते । ऐसा पूछा जाने पर में यों उत्तर हूँ गा -

आबुस ! जो रूप अतीत हो गया = निरुद्ध हो गया = विपरिणत हो गया, उसका उत्पाद जाना गया, ज्यय जाना गया, स्थित हुये का अन्यथात्व जाना गया। वेटना ,सज्ञा , सस्कार, जो विज्ञान अतीत हो गया ।

, आबुस ? इन्हीं धर्मी का उत्पाद जाना गया है, व्यय जाना गया है, तथा स्थित हुये का अन्यथात्व जाना गया है।

भावुस ! जो रूप अभी उत्पन्न नहीं हुआ है, प्रगट नहीं हुआ है, उसी का उत्पाद जाना जायगा, क्या जायगा, तथा स्थित हुये का अन्यथात्व जाना जायगा। वेटना , सज्ञा , संस्कार , जो विज्ञान अभी उत्पन्न नहीं हुआ है ।

जानुस ! इन्हीं धर्मों का उत्पाद जाना जायगा, व्यय जाना जायगा, तथा स्थित हुये का अन्यथात्व जाना जायगा।

साबुस ! जो रूप अभी उत्पन्न हुआ है, प्रादुर्भृत हुआ है, उसी का उत्पाद जाना जाता है व्यय जाना जाता है, तथा स्थित हुये का अन्यथात्व जाना जाता है। वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

आधुस । धर्मों का उत्पाद जाना जाता है, व्यय जाना जाता है, तथा स्थित हुये का अन्यथात्व जाना जाता है।

भन्ते । ऐसा पूछा जाने पर में यों ही उत्तर दूँगा।

ठीक है आनन्द, ठीक है ! [सारे की पुनरुक्ति] ऐसा पूछे जाने पर तुम यों ही उत्तर दोगे।

§ ७ पटम अनुधम्म सुत्त (२१. १. ४. ७)

विरक्त होकर विहरना

श्राचस्ती ।

भिक्षुओ । जो भिक्षु धर्मानुधर्म प्रतिपन्न है उसका यह धर्मानुकूछ होता है, कि रूप के प्रति विरक्त होकर विहार करे, वेटना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान के प्रति विरक्त होकर विहार करे। इस प्रकार विरक्त होकर विदार करते हुने वह कर को बाव खेला है वैदना । संशा ; संस्कार । विदान को खान केता है।

बह रूप विद्वार को बागकर रूप से मुक्त हो बाता है विद्या से मुक्त हो बाता है, संद्रा से मुक्त हो बाता है संस्कारों से मुक्त हो बाता है विज्ञाय से मुक्त हो बाता है। बाति बरा मरण सोक, परिदेव हुन्छ दीर्मेवस्य उपायास से मुक्त हो बाता है। दुन्त से सुर बाता है—सुना में कहता हूँ।

🖁 ८ वृतिय अनुधम्म सूच (२१ १ ४ ८)

थमिल्प समाप्रमा

धायरती । सिद्धांभी को सिद्धा भगोतुषर्यं प्रतिपत्त है उसका वह वर्गालुक्क होता है कि रूप को

सिद्धार्थः । को सिद्धं प्रसानुष्यं प्रतिपन्न दं उसका वह वसानुकृतः हाता दं । कः अनित्य समक्षे [पूर्ववद्]।

हुत्य से सूर बाता है--पेसा में कहता हूं।

९ तविय अनुषम्य सच (२१ १ ४ ९)

प्रथ्य समझना

धावस्ती ।

मिश्चभो ! किक्य को कुला समझे ।

\$ १० चतत्व अनुषम्म स्**त** (२१ १ ४ १०)

मनासा ममझना

भावस्ती ।

।यस्याः । सिद्धानो ! किका को जनायन समक्री

न तुम्हाक वर्ग समाप्त ।

पाँचवाँ भाग आत्मद्वीप वर्ग

§ १. अत्तदीप सुत्त (२१. १. ५. १)

अपना आधार आप वनना

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ । अपना आधार आप बनो, अपना शरण आप वनो, किसी दूसरे का शरणागत मत बनो, धर्म ही तुम्हारा आधार है, धर्म ही तुम्हारा शरण है, कुछ दूसरा तुम्हारा शरण नहीं है।

इस प्रकार विहार करते हुए तुम्हे ठीक से इसकी परीक्षा करनी चाहिये—शोक, परिदेव, दु ख, दौर्मनस्य और उपायास का जन्म = प्रभव क्या है।

मिक्षुओ । इनका जनम=प्रभव क्या है ?

भिक्षुओ । कोई अविद्वान् पृथक्जन रूपको अपना करके समझता है, अपने को रूपवान् सम-झता है, रूप में अपने को समझता है। उसका वह रूप विपरिणत=अन्यथा हो जाता है। रूप को विप-रिणत तथा अन्यथा हो जानेसे शोकादि उत्पन्न होते हैं।

वेदना को , सज्ञा को , सस्कारों को , विज्ञानको अपना करके समझता है ।

भिद्धां । रूप के अनित्यत्व, विपरिणाम, विराग, निरोध को जान कर, जो पहले के रूप थे, और जो अभी रूप हैं सभी अनित्य, दु.ख और विपरिणाम-धर्मा हैं, इसे यथार्थंत प्रज्ञापूर्वंक देख लेने से जो शोकादि हैं सभी प्रहीण हो जाते हैं। उनके प्रहीण हो जाने से त्रास नहीं होता। त्रास नहीं होने से सुखपूर्वंक विहार करता है। सुखपूर्वंक विहार करते हुये वह भिक्ष उस अश में मुक्त कहा जाता है।

वेटना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान , सुखपूर्वक विहार करते हुये वह भिक्ष उस अश में सुक्त कहा जाता है।

§ २. पटिपदा सुत्त (२१ १. ५. २)

सत्काय की उत्पत्ति और निरोध का मार्ग

श्रावस्ती ।

" भिक्षुओ ! सत्काय की उत्पत्ति तथा सत्काय के निरोध के मार्ग के विषय में उपदेश करूँगा । उसे सुनो ।

सिक्षुओ ! सत्काय की उत्पत्ति का मार्ग क्या है ?

भिक्षुओ । कोई अविद्वान् पृथक्जन रूप को अपना करके समझता है, अपने को रूपवान् समझता है, अपने में रूप को समझता है, रूप में अपने को समझता है।

वेटना , सज्ञा' , सस्कार , विज्ञान '।

भिक्षुओ ! इसी को सत्काय की उत्पत्ति का मार्ग कहते हैं। भिक्षुओ ! यही दु ख की उत्पत्ति का मार्ग कहा जाता है, यही समझना चाहिये।

भिक्षुओ । मत्काय के निरोध का मार्ग क्या है ?

मिश्रुमो | कोई विद्वास् आर्थभावक रूप को कपना करके नहीं समझता है अपने को रूपकास् नहीं समझता है अपने में रूप को नहीं समझता है रूप में अपने को नहीं समझता है ।

वेदना ; मैदा ; संस्कार ; विद्यान । मिद्धनो ! इसी को सत्काय के निरोध का आर्थ कहते हैं । मिद्धमो ! यही हुन्त के निरोध का सार्थ कहा कहत है—नहीं सरकामा काविये !

ैं ३ पठम अनिचतासच (२१ १ ५ **१**)

मिस्यता

आवस्ती 1

कायरणां सिह्मजों ! क्या असित्य है। को कित्य है वह श्रुत्व है को हुत्य है वह अनास्य है। को सवास्य है सो न मेरा है न में हुँ न मेरा आस्या है। इसे ववार्यका महापूर्वक देख केया चाहिये। विज उपादान-रिकृ हो मालचों से विश्वक चोर विभ्वक हो बाता है।

त्वान-रहित हो आज्ञातो से विशेष्ठ कोर विशेष्ठ हो काता है बेदना :भैजा :धस्कार :विद्यान"।

मिहाओं ! पदि मिहा का किए कम के प्रति उपादान नहित को आजनों से विरक्त मीर विहास हो बाता है। बेदना ; संस्कार ; विकास के प्रति ; तो स्वित हो ताता है; स्वित होने से सास्त हो बाता है। बाला हमें से बास नहीं होता; जास नहीं होने से अपने भीतर ही भीतर निर्वाण पा बेता है। बाता ही बाल हुई ऐसा बाव केता है।

है ४ द्विय अनियता द्वच (२१ १ ५ ८)

अनिस्पता

सावली ।

मिल्ला ! इस अवस्य है [कपर बीसा] इसे पनार्यका प्रवासूर्यक देश केवा चाहिये ।

बेदबा जनित्य है सेवा । संस्कार । विज्ञान ।

इसे बचार्यन प्रश्नाप्तंक देक केने से यह पूर्यांत्व की सिव्या-पाडि में बहाँ पहला है। पूर्यांत्व की सिव्या-पाडि में मार्ग पहले से उसे करराव्य की भी सिव्या-पाडियों में माप्तंत्र के उसे करराव्य की भी सिव्या-पाडियों में माप्तंत्र की उसका कि सिव्या है। उसका किया किया है। उसका किया किया है। उसका किया की सिव्या हो बाता है। सिव्या हो बाते से सिव्या हो बाता है। सिव्या हो बाते से सिव्या हो बाता है। साम की सिव्या हो बाता है। साम की सिव्या की सिव्या हो बाता है। साम की सिव्या है। साम की सिव्या हो बाता है। साम की सिव्या हो सिव्या हो

🕯 ५ समनुपस्सना धुत्र (२१ १ ५ ५)

बारमा मानने से ही अस्मि की अविद्या

भाषस्ती ।

मिहुसी ! नितरे समज वा जाइन्त जरेक प्रकार से बास्ता की बावते और समझते हैं, वे सभी इन्हीं गाँव वपात्रल स्कर्मी को बावते और समझते हैं वा उनमें से किसी को !

কিন ঘৰি গ

मिश्रमो ! कोई वर्षिद्वाच प्रवस्थन कपडी वपना करके समझका है अपने को रूपवाच् समस्ता है अपने में रूप को समझका है, कप में अपने को समझका है। · वेटना ', सज्ञा , संस्कार , विज्ञान । ऐसा समझने से उमे "अस्मि" की अविद्या होती हैं।

भिक्षुओ। "अस्मि" की अविद्या होने से पाँच इन्द्रियाँ चर्ला आती हैं—चक्षु, श्रोत्र, घाण,

जिह्ना, और काया ।

भिक्षुओ ! मन हें, धर्म हैं, और अविद्या है। भिक्षुओ ! अविद्या संस्पर्शोत्पन्न वेदना होने से अविद्वात् पृयक्जनको 'अस्मिता' होती है। 'यह में हूँ'—ऐसा होता है। 'होऊँगा'—ऐसा भी होता है। 'क्षिवान्' , 'अरूपधान्', 'संज्ञी' , 'असंज्ञी' , 'न सज्जी और न असज्जी होऊँगा'—ऐसा भी होता है।

भिक्षुओ । वहीं पाँच इन्द्रियाँ टहरी रहती हैं। यही विद्वान् आर्यश्रावक की अविद्या प्रहीण हो जाती है, विद्या उत्पन्न होती है। उसको अविद्या के हट जाने और विद्या के उत्पन्न होने से 'अस्मिता' नहीं होती है। 'होऊँगा'—ऐसा भी नहीं होता है। 'रूपवान्', 'अरूपवान्', 'सज्ञी', 'अस्ज्ञी, 'न सज्ञी और न असज्ञी होऊँगा'—ऐसा भी नहीं होता है।

§ ६, ख्रम्ध सुत्त (२१. १. ५. ६)

पॉच स्कन्घ

श्रावस्ती

भिक्षुओ । पाँच स्कन्ध तथा पाँच उपाटान स्कन्ध के विषय में उपदेश करूँ गा। उसे सुनी । भिक्षुओ । पाँच स्कन्ध कीन से हैं ?

मिश्रुको । जो रूप—अतीत, अनागत, वर्तमान् , आध्यारम, बाह्य , स्थूल, सूक्ष्म, हीन, प्रणीत, दूर का, या निकट का—है वह रूपस्कन्ध कहा जाता है।

जो वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

मिधुओ । यही पाँच स्कन्ध कहे जाते हैं।

भिक्षुओ । पाँच उपाटान स्कन्ध कौन से हैं ?

मिक्षुओ ! जो रूप—अतीत, अनागत, वर्तमान, आध्यात्म, बहि , स्यूल, सूक्ष्म, हीन, प्रणीत, दूर का, या निकट का आश्रव के साथ उपाटानीय है वह रूपोपादानस्कन्ध कहा जाता है।

जो वेटना , सज्ञा , संस्कार , विज्ञान । भिक्षुओ । इन्हीं को पञ्च-टपाटानस्कन्ध कहते हैं।

§ ७. पठम सोण सुत्त (२१ १. ५. ७)

यथार्थ का ज्ञान

ऐसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह में बेलुवन कलन्द्क निवाप में विहार करते थे।

तव, गृहपतिपुत्र सोण जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ गया।

एक और वैठे हुये गृहपतिपुत्र सोण को भगवान् वोले —सोण । जो श्रमण या ब्राह्मण इस अनित्य, हु ख, विपरिणामधर्मा रूप से अपने को बढ़ा समझते हैं, सदश समझते हैं, या हीन समझते हैं, वह यथार्थ का अज्ञान लोड़ कर दूसरा क्या है।

वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

128 8 4 8

होग | जो अनल या माझल इस विलय तुग्य पिपरिणासधर्मी इस स व्ययने की बड़ा भी नहीं समझते हैं सहस भी नहीं समझते हैं या हीन भी नहीं समझते हैं यह बचार्यका ज्ञान छोड़ कर कीर क्या है ?

वेदना ; संज्ञा ; संस्कार ; विज्ञान ।

सीज ! तो तुस बना समझते हो, रूप नित्व है या अनित्व ?

भारते । अनित्व ।

जो जनित्य है वह बाग्र है या सक्त ?

भन्ते ! दुःदा इं≀

को अमित्य है हु:ता है विश्वतिमासयमाँ हैं उसे स्था एमा समसना र्राष्ट्र है कि यह मेरा है यह में हैं। यह मेरा आत्मा है ?

महीं मन्ते !

सोज ! बेन्ना । मेना । संस्कार । विज्ञान अविध है था नित्य ।

मांग ! इस्तिये को स्थ्य - अतीत अवस्तात कामान् आध्याम बाह्य स्पूछ सूक्त हीन प्रजीत हुए का मा निज्य का -- है उस वसार्थन: प्रज्ञापूर्वक देख सेवा चाहिये कि न मह सेरा है न पह से हैं. और न यह सेरा आस्ता है ।

को बेदना : संज्ञा : संस्कार : विज्ञान ।

सोय ! ऐसा देवनेवाका विद्वाल् आर्थमावक रूप से विवेद करता है वेदवा स निर्वेद करता है। संदा से संव्यासे से । विद्वाल से । निर्वेद स विराद हो काता है। विराद्य से कुछ हो काता है। विद्वाल हो वामें से विद्याल हो गया पेसा ज्ञान अथक होता है। वासि श्लीय हुई प्रदार्थ परा हो गया, को करता या सो कर किया वस और इक वासी वहीं यथा—परा बाल केता है।

⁸ ८ दुतिय सोण शुच (२१ १ ५ ८)

भ्रमण और हाइएए कीन १

पेसा मैंचे सुना । एक समय भगवान् राजगृह में बेल्बन कक्कन्दक निवाप में विदार कारी थे ।

पुरु पानव नागान्य राजाश्रह न बहुबना कळानुका (नवार्य न ग्रन्शां करण न । तब पुरुपदिपुत्र छोण कहाँ समसाव ने वहाँ कामा और समयाव का असिबादन कर एक भोर बेंद्र गया :

एक भीर बैढे हुने शुह्रपतिपुत्र सोज की सरावान् वोखे :---

सीन ! बी समन वा प्राक्षम का नहीं बातते हैं कम के समुद्र को नहीं जामते हैं, सम के तिरोध को नहीं बातते हैं, कम के विशेषमानी मार्ग को नहीं बातते हैं। बैदना ; संख्या ; संख्यार विद्याद को नहीं बातते हैं ; वे न दो बातवों में जानन बाता कार्य हैं। वीर न कार्यों में बाहता ! के बाहुस्ताह इसी कम में जानन वा बाहत ने परमार्थ के बात देख बीर पावस विदार नहीं करते हैं।

सीम [को समय ना प्राह्मम क्या की जानत हैं विद्याप को जानते हैं वे ही असमी में असय समये जाते हैं, और माक्रवों में प्राह्मय | वे कामुप्तान इसी क्रम्म में असय ना महाया के परमार्थ

को बान देख और पाकर विदार करते हैं।

🕯 ९ पठम नन्दिक्काथ शुक्त (२१ १ ५ ९)

शानन्द का शय कैसे ।

आवस्ती । मिश्रुकी ! मिश्रु को क्य को जनित्व के तीर वर वैच्च वेता है, उसे सम्बद्ध रहि बहुते हैं । इसे अच्छी तरह समझ कर वह निर्वेद को प्राप्त होता है। आनन्द छेने की इच्छा मिट जाने से राग मिट जाता है, राग मिट जाने मे आनन्द छेने की इच्छा मिट जाती है। आनन्द छेने की इच्छा और राग के मिट जाने से चित्त विस्कुल मुक्त कहा जाता है।

भिक्षु जो वेदना को , संज्ञाकी , संस्कारों को , विज्ञान को अनित्य के तौर पर देखता है उसे सम्यक् दृष्टि कहते हैं । । आनन्द लेने की इच्छा और राग के मिट जाने से चिक्त विल्कुल मुक्त कहा जाता है ।

§ १०. दुतिय निन्दिक्खय सुत्त (२१. १. ५. १०)

रूप का यथार्थ मनन

श्रावस्ती '।

भिक्षुओ ! रूप का ठीक से मनन करो, रूप की अनित्यता को यथार्थत देखो । रूप का ठीक से मनन करने, तथा रूप की अनित्यता को यथार्थत देखने से रूप के प्रति निर्वेद को प्राप्त होता है । आनन्द लेने की इच्छा मिट जाने से राग मिट जाता है, राग मिट जाने से आनन्द लेने की इच्छा मिट जाती है । आनन्द लेने की इच्छा और राग के मिट जाने से चित्त दिल्कुल मुक्त कहा जाता है ।

वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान का ठीक से मनन करो ।

भात्मद्वीप वर्ग समाप्त । मूळ पण्णासक समाप्त

दूसरा परिच्छेद

मज्झिम पण्णासक

पहला भाग

रुपय बर्ग

§ १ तपयासुचा(२१ २ १ १)

भगासक विमक्त है

भावस्ती !

भिक्षको । सासक समित्रक है जनासक विसुक्त है।

मिद्धानी | क्य में आतक होने से विद्यान बना रहता है— क्य पर आकस्मित क्य पर मितिहित कामन दक्ती बाका और काला बन्दा तका कैकता है।

मानन्द्र क्यान बाका कार करता चना चन्या च। मंस्कारी पर काकस्थित संस्कारी पर प्रतिक्रित कानम्ब राजवे बाका उगाता बनता तथा

फैक्दा है।

सिक्षको ! को कोई ऐसा कहे कि मैं विना रूप विना वेदना विना संबा विना संस्कार विना दिक्षाय के बादागमय मरना बीना मा उशना चनुना रामा फैनना सिद्ध कर हुँगा यह सम्मद नहीं है।

सिद्धानी ! यदि सिद्धा का क्यन्यातु से राग प्रदोण हो जाता है, तो जिलान का साह्यस्वन प्रतिक्रा पर्दाण हो साहत है। यदि सिद्धा का कैपनान्यातु सें ; पंजान्यातु सें संस्थान्यातु सें स्ट विकार पात सें राग प्रतीन हो तथा है से विकास का साह्यसम्बद्धान्त प्रतीन हो बाता है।

ना का प्राप्तिक विद्यान कार्यन नहीं जाता संस्कारीं से रहित हो सिद्धक हो जाता है। सिद्धक होने स रिश्त हा बाता टि स्थित हाने से खाला हो बाता है। बात्त होने से बाता हो हो रहा हा प्राप्त नहीं होने स सपने मीना हो। मीतर निर्माण को मात कर केवा है। बाति होने हुई मुझ्यदे पूरा हो गया को करना वा हो कर किया अब बीट हुआ बाकी नहीं है—देशा खान केवा है।

§ २ शी**ज** शुच (२१ २ १ २)

पाँच मकार के बीज

भाषस्ती ।

" मिशुको १ वीज पाँच प्रकार के दाते हैं। श्रीय सं पाँच १ सूक्ष-वीज, रचन्य-वीज अप्र-वीज

फर-बीज और बीज-बीज ।

निमुत्री ! में पॉच प्रकार के बीज नाप्तिकत हीं सब्द पाने वहीं ही इवार वा वृत्र से नड नहीं हो नवे हीं भार बाने हीं और कासानी से रोपे वा सबने बाने हीं। किन्तु सिडी न हो और कन नहीं हो सिमुत्री ! हो बदा वे बाज बोंगे कोंगे और कैसेंगे ? नहीं भन्ते !

भिक्षुओ । ये पाँच वीज खण्डित हों, सहे-गले हों, हवा या धूप से नए हों, नि.सार हों, और आसानी से रोपे जा सकनेवाले नहीं हों, किन्तु मिट्टी भी हो और जल भी हो । भिक्षुओ । तो क्या वे बीज उगेंगे, बहेंगे, और फैलेंगे ?

नहीं भन्ते !

मिक्षुओ । ये पाँच बीज अखिण्डत हो , और मिट्टी और जल भी हो । मिक्षुओ ! तो क्या वे बीज उगेंगे, वहेंगे और फैलेंगे ?

हाँ भन्ते । यहाँ जैसे पृथ्वी-धातु है वैसे विज्ञान की स्थितियाँ समझनी चाहिये । यहाँ जैसे जल-धातु है वैसे नन्दिराग समझना चाहिये । यहाँ जैसे पाँच प्रकार के बीज हैं वैसे आहार के साथ विज्ञान को समझना चाहिये ।

भिक्षुओ । रूप में आसक होने से विज्ञान बना रहता है—रूप पर आलम्बित, रूप पर प्रति-ष्ठित आनन्द उठानेवाला, और उगता, बढ़ता तथा फैलता है। [शेप ऊपर वाले सूत्र के समान ही।]

§ ३. उदान सुत्त (२१. २. १. ३)

आश्रवों का क्षय कैसे ?

श्रावस्ती "।

वहाँ मगवान् ने उदान के यह शब्द कहे, "यदि यह नहीं होवे तो मेरा नहीं होवे, नहीं होगा, वह मेरा नहीं होगा—ऐसा कहनेवाला भिक्षु नीचे के बन्धन (=औरम्मागीय सञ्जोजन) को काट देता है।"

ऐसा कहने पर कोई भिक्षु भगवान से वोला, "भन्ते! यह कैसे ?"

भिक्षुओ ! कोई अविद्वान् पृथक्जन रूप को अपना करके समझता है, अपने रूपवान् समझता है, अपने में रूप को समझता है, या रूप में अपने को समझता है।

वेदना , सङ्गा , सस्कार विज्ञान को अपना समझता है, अपने को विज्ञानवान् समझता है ।

वह अनित्य रूप की अनित्यता को यथार्थंत नहीं जानता है, अनित्य चेदना की , संज्ञा की ; सस्कारों की ', विज्ञान की अनित्यता को नहीं समझता है।

वह दु खमय रूप के दु ख को यथार्थत नहीं जानता है, दु खमय वेदना के , सज्ञा के ', सम्कारों के , विज्ञान के दुख को नहीं जानता है।

वह अनात्म रूप के अनात्मत्व को यथार्थत नहीं जानता है, अनात्म वेदना के , संज्ञा के , सरकारों के 'विज्ञान, के अनात्म को नहीं जानता है।

षह सस्कृत रूप को सस्कृत के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है। सस्कृत वेदना को , संज्ञा को , सस्कारों को , विज्ञान को संस्कृत के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है।

रूप नहीं रहेगा वह यथार्थत नहीं जानता।

वेदना ', सज्ञा ', सस्कार , विज्ञान नहीं रहेगा वह यथार्थत नहीं जानता है। भिक्षुओ ! कोई विद्वान् आर्यश्रावक रूप को अपना करके नहीं समझता है '। वह अनित्य रूप की अनित्यता को यथार्थत जानता है। वह उस मय रूपके दु स को यथार्थत जानता है। वह अनात्म रूप के अनात्मत्व को यथार्थत जानता है। वह संस्कृत रूप को सस्कृत के तीर पर यथार्थत जानता है।

स्त्य **पड़ी रहे**गा वह बयार्यतः खानता है ।

क्य वेदना सेजा संस्कार कार विज्ञान के वहीं होने से वो सिक्षु 'यदि यह नहीं होने ठो मेरा पहीं होने नहीं होगा वह मेरा नहीं होगा —पैसा कहे वह बीचेके बन्यन को कार देश हैं।

भन्ते | येसा कहवेवाका मिस्र नीचे के वन्त्रम को काट वृंता है।

सन्ते ! क्या काम और दूध केन के बाद भागायों का खब हो जाता है ?

सरा | पर्या का बाद व्या कर के बाद जाया के किया पर कास की प्राप्त होता है। जिल्हा | प्रिष्ठा | कोड कविद्यान प्रमन्त्रक प्राप्त नहीं करने के स्थाप पर कास की प्राप्त होता है। जिल्हा | अविद्यान प्रमन्त्रनों को पह जास होता है कि—'विद पह नहीं होने तो जेस नहीं होने; नहीं होगा नह जेस नहीं होगा ।

सिद्ध ! विद्वाल कार्यकावक जाम धड़ीं करने के स्वाब पर जास को नहीं प्राप्त द्वांचा है। मिद्ध !

विद्वाप मार्वभाषक का यह जास नहीं होता है कि-विद यह नहीं होते ।

निष्ठ ! कर में कासक दोने स विकास बचा रहता है—कर पर आख्नामत कम पर शतिहित क्रिय १३ १ ३ साथ के समाण]

मिस ! यह बान और देख केने के बाद उसके मामनों का सब हो बाता है।

६ ४ तपादान परिवच सच (२१ २ १ ४)

इपादान स्कर्मों की स्याक्या

धायस्ती ।

'मिश्ववी | पाँच कपावान-स्कन्ध हैं । स्रोथ मे पाँच १ को यह स्परोपादान स्कन्ध बेदबी-पादान स्कन्ध, मेहोपादान स्कन्ध मेहस्रारोपादान स्कन्ध श्रीर विज्ञानोपादान स्कन्ध ।

भिश्चमी ! अब तक सेंगे इन पाँच तथायान एकप्यी को चारी सिकसिके में यथायेत: नहीं समझा बा तथ तक इस कोक में 'अनुचार सम्मन्द समुद्धाल शास करने का दावा नहीं किया था।

भारको ! चन मेंचे यनार्थका सम्मानिया क्यी वादा किया।

ास्तुक्ता । वन सम्य पनायका सम्मान्या कर्या वाला त्व्या । च चार सिकसिक्ष करी है क्य को बाल क्रिया । क्य के समुद्दक को बाव क्रिया । रूप के निरोध को प्राव निया । क्य के निराधगानी आर्त को आव क्षिया । वंदवा को । संव्या को । संस्थारों को । विज्ञान को ।

निशुमों ! एन नया है ? चार महासूत सीर वार महासूत से वनने वाले कम । यही कव है। आहार के मशुरून म कर का समुद्दच होता है। आहार के विराध सा कर का विरोध होता है। वहीं

भार्य अहार्रहरू मार्ग रूप क निरोध का मार्ग हूं। यो यह सम्बद्ध रहि सम्बद्ध समापि। भिरामा । सो समल या प्राक्षण हमें यान कर क्षत्र के निर्मेद क किये किसाग के सिन्ने विरोध

के जिन प्रतियम्ब दोते हैं वे बोलुप्रतियक्त हैं। जो सुप्रतियक्त हैं वे इस पर्स विवय में प्रतिक्षित होते हैं। सिर्मा ! को काम का माहत्व हमें जाब कर कर के निर्मेश से विशास तो. जिसास से

ारापुण्ण : का समय का माह्यूच हुन का कर फूट का नवन दा विदास है। सनुरादात में सिमुत्त हो सर्वे दें थ दी क्यार्थ में विमुत्त हुन हैं। का क्यार्थ में विमुत्त हो सर्वे हैं ने ही करही है। को क्यार्थ में क्रमके स्थित में मेंबर नहीं हैं।

भिग्नमों ! वेदना बना है ? भिग्नभों ! वेदना-काच का है । व्यासंस्थांका वेदना । आवसंस्थांका वेदना ! सम्मान्यांका बहना ! क्रियांच्यांका वेदना ! क्यानंस्थांका वेदना । सन-संस्थांका वेदना ! सिग्नभों ! इसे वेदना वदने हैं । वसी के नामुख्य से वेदना का नामुख्य साम है । दस्यों के निराय स वेदना का निरोय हमा है । वसी कार्य क्यांकित कर्यों वेदना के निरोय का समाई है।

निप्ताची ! का धालन का बाह्यतः पूर्वे काल" ।

बिद्युओं । जंदा क्या है १

भिक्षुओं । संज्ञ(काय छ हैं। रूप-संज्ञा, शब्द-सज्ञा, गन्व-संज्ञा, रस-यज्ञा, स्पर्श-यज्ञा, धर्म-संज्ञा। यही संज्ञा है। स्पर्श के समुदय से मज्ञा का समुदय होता है। स्पर्श के निरोध से संज्ञा का निरोध होता है। यही आर्य अष्टाद्विक मार्ग सज्ञा के निरोध का मार्ग है।

मिधुओ । जो श्रमण या बाह्मण '' इसे जान ''।

भिक्षुओ । सस्कार क्या है ?

भिक्षुओ । चेतना-काय छ हैं । रूप-मचेतना, शब्द-मंचेतना, गन्ध-सचेतना, रम-संचेतना, स्पर्श-संचेतना, धर्म-संचेतना । भिक्षुओ । इन्हीं को संस्कार कहते हैं । म्पर्श के समुदय से मकारों का समुदय होता है । स्पर्श के निरोध से सस्कारों का निरोध होता है । यही आर्य-अष्टाद्विग मार्ग संस्कारों के निरोध का मार्ग है । "

भिक्षुओ । जो श्रमण या बाह्मण 'इसे जान ।

भिक्षुओ ! विज्ञान क्या है ?

भिक्षओ । विज्ञान-काय छ हैं। चक्षुविज्ञान, श्रोत्रविज्ञान, बाणविज्ञान, जिह्नाविज्ञान, काय-विज्ञान, मनोविज्ञान। भिक्षुओ । इसी को विज्ञान कहते हैं। नामरूप के समुदय से विज्ञान का समुदय होता है। नामरूप के निरोध से विज्ञान का निरोध होता है। यही आर्थ अष्टाङ्गिक मार्ग विज्ञान के निरोध का मार्ग है।

भिक्षु । जो श्रमण या ब्राह्मण इसे जान कर रूप के निर्वेद के लिये, विराग के लिये, निरोध के लिये प्रतिपन्न होते है वे ही सुप्रतिपन्न है। जो सुप्रतिपन्न है वे इस धर्म विनय में प्रतिष्टित होते हैं।

भिक्षुओं। जो श्रमण या बाह्मण॰ इसे जान कर रूप के निर्वंद से, अनुपादान से विमुक्त हो गये हैं वे ही यथार्थ में विमुक्त हुये हैं। जो यथार्थ में विमुक्त हो गये है वे ही केवली हैं। जो केवली उनके लिये भैंवर नहीं है।

§ ५. सत्तद्वान सुत्त (२१. २. १. ५)

सात स्थानों में कुशल ही उत्तम पुरुप है

थ्राचस्ती '।

भिक्षुओं ! जो भिक्षु सात स्थानों में कुशल तथा तीन प्रकार से परीक्षा करनेवाला होता है, वह इस धर्मविनय में केवली, सफल बहाचर्यवाला, और उत्तम पुरुष कहा जाता है।

मिश्रुओं ! भिश्रु सात स्थानों में कुशल कैसे होता है ?

भिक्षुओं। भिक्षु रूप को जानता है। रूप के समुद्य को जानता है। रूप के निरोध को जानता है। रूप के निरोध गामी मार्ग को जानता है। रूप के आस्वाद को जानता है। रूप के दोप को जानता है। रूप के खुटकारे (=मुक्ति) को जानता है।

• वेदना , सज्ञा , संस्कार , विज्ञान

भिक्षुओं ! रूप क्या है ? चार महामृत भीर उनसे होनेवाले रूप । भिक्षुओं ! इसी को रूप कहते हैं । आहार के समुद्य से रूप का समुद्य होता है । आहार के निरोध से रूप का निरोध होता है । यही आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग रूप के निरोध का मार्ग है ।

जो रूप के प्रत्यय से सुख और सौमनस्य होता है वही रूप का आस्वाद है। रूप जो अनित्य, दु ख, विपरिणामधर्मा है यह रूप का दोप है। जो रूप से छन्द-राग का प्रहीण हो जाना है यह रूप की सुक्ति है।

भिक्षुओं जो श्रमण या बाह्मण इस प्रकार रूप को जान, रूप के समुद्य को जान, रूप के निरोध को जान, रूप के निरोध के मार्ग को जान, रूप के आस्वाद को जान, रूप के दोप को जान, रूप की क्रम वहीं रहेगा यह यथार्यतः सामता है ।

क्रम सेवता संज्ञा संस्कार और विज्ञान के नहीं होने से को मिश्र पादि यह नहीं होने तो मेरा नहीं होवे नहीं होगा वह भेरा नहीं होगा -- एसा कडे वह वीचेके बन्यम का कार देता है।

मन्ते ! ऐसा कश्तेवाका मिश्र तीचे के बन्यम को धाट वेता है।

मारों । बना काम और तेम क्षेत्रे के वाद आधार्य का शय ही बाता है ?

मिछ ! कोई श्रविद्वान प्रयक्त्यम जास नहीं करने के स्वाम पर बास को प्राप्त डांका है । मिस ! अविद्वाम प्रवादनों की यह प्रास होता है कि-पिट यह नहीं होने ती मेरा नहीं होने। नहीं होगा बद्ध सेश नहीं होता ।

मिल ! विद्यान आर्पशायक बास वहीं करने के स्थान पर त्रास को नहीं माछ हाता है। मिश्र !

विहान बार्पमानक को यह पास नहीं होता है कि-प्यति वह नहीं होने ।'

सिक्ट ! क्रम में आसक्त हाने स विज्ञान बना रहता है-क्रम पर जाकम्बित क्रम पर प्रतिहित सिंप ११ १ १ शया के समानी।

सिक्ष ! वह बान और वेस क्षेत्रे के बाद उसके सामर्थों का सब हो बाता है।

§ श्रु तपातान परिवत्त सत्त (२१२१४)

क्याताल स्महत्व्यों की दवाक्या

शास्त्रक्ती ।

सिश्चको । पाँच प्रपादान-स्थान हैं। कीन सं पाँच । को यह क्योपादान स्थान नेहनी-पादान स्कन्य, संजीपादान स्कन्य संस्कारोपादाव स्कन्य शीर विकामीपादान स्कन्य ।

मिल्लमो ! वन तक सेने इन वाँच उपादान शक्तमों को चारों सिकसिके में नमार्थता नहीं समझा था तब तक इस छोक में 'बानुकर सत्यक सम्बद्धत्व बाह करने का दादा नहीं किया था।

मिश्रको । धन मैंने ववार्यकः समझ क्रिया तजी 'दावा किया।

वे चार सिकसिके कैसे ? कप को बान किया । कम के समुदय को बाय किया । सम के निरोध को बाम किया । कम के निरोधसाधी समाँ को काफ किया । वेदना को । शंका को । संस्थारी

कां । विद्यान को । भिद्भाषी ! कर क्या है ? कार ग्रहामूत और बार ग्रहासूत से दक्ते वाके क्या । वही इस है । आहार के ममुबद से कम का समुद्ध होता है। आहार के मिरोब से कम का मिरोब होता है। यही

भार्य मशाहिक मार्ग कम के निरोध का आर्ग है। को वह सम्बक् ग्रीट सम्बक् समाधि। मिसूजी ! को समय का माहाज हसे कान कर कम के निर्वेष के किने, विराग के किने निरोध के किये प्रतिपत्न होते हैं वे ही सप्रतिपत्न हैं। को सप्रतिपत्न हैं वे हस कर्म जिवब में प्रतिक्रित होते हैं।

भिश्रका ! को अधन या आह्यय इसे जान कर क्ष्य के निर्वेद से, विद्या से निरोध में समुपाराम से विसक्त दो गये हैं ने ही बनार्व में विसन्त इसे हैं । को बनार्व में विसन्त हो तने हैं ने ही केवजी है। को केवकी हैं उनके किये सेंबर महीं है।

सिमनो ! वेदना क्या है ? शिक्षमी ! वेदनानाव का हैं। व्यासंस्पर्धका वेदना । मोश्रसंस्पर्धना वेदना । मान-संस्थरीमा नेदना । विद्वासंस्थरीमा वेदना । कायसंस्थरीमा नेदना । मनम्स्यर्थमा वेदना । मिद्याना ! इस बेदना कहते हैं । स्वर्त के समुद्रय से बेदना का समुद्रक दोवा है । स्वर्त के विरोध से बेदना का निरोध दोवा है। वही कार्व कहांगिड सार्व बेदना के विरोध का मार्ग है।

मिसुनी ! जो समय या माझव इसे जाव

मिश्रणी । गंजा का है १

§ ६. बुद्ध सुत्त (२१. २. १.६) बुद्ध और प्रशाविमुक्त भिक्षु में भेट

श्रावस्ती'''।

भिक्षुओ । तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध रूप के निर्वेट, विराग तथा विरोध से उपादान-रहित हो विमुक्त सम्यक्-सम्बुद्ध कहे जाते है , भिक्षुओ । प्रज्ञाविमुक्त भिक्षु भी रूप के निर्वेट, विराग, निरोध तथा अनुपादान से विमुक्त हो प्रज्ञाविमुक्त कहा जाता है ।

भिक्षुओ । तथागत अहंत् सम्यक्-सम्बुद्ध वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान के निर्वेद, विराग, तथा निरोध से उपादान-रहित हो विमुक्त सम्यक् सम्यक् कहे जाते हैं। भिक्षुओ । प्रज्ञाविमुक्त भिक्षु भी वेदना , सज्ञा , सस्कार, विज्ञान के निर्वेद, विराग, निरोध, तथा अनुपादान से विमुक्त हो प्रज्ञाविमुक्त कहा जाता है।

भिक्षुओं ! तो, तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध और प्रज्ञाविमुक्त भिक्षु में क्या भेद है ?

भन्ते । भगवान् ही हमारे धर्म के अधिष्ठाता है, भगवान् ही नेता हैं, भगवान् ही प्रतिशरण हैं । अध्छा होता कि भगवान् ही इसे वताते । भगवान् से सुनकर भिक्ष धारण करेंगे ।

भिक्षुओ । तो सुनो, अच्छी तरह मन लगाओं मैं कहता हूँ।

"भन्ते । वहुत अच्छा" कहकर भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

भगवान् वोले—भिक्षुओ ! तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बद्ध अनुत्पन्न मार्ग के उत्पन्न करनेवाले होते हैं, अज्ञात मार्ग के जनाने वाले होते हैं, नहीं बताये गये मार्ग के बताने वाले होते हैं, मार्ग-विद् और मार्ग-कोविट होते हैं। भिक्षुओ ! इस समय के जो श्रावक हैं वे वाद में मार्ग का अनुगमन करने वाले हैं।

भिञ्जओ । तथागत अहेत् सम्यक् सम्यद और प्रज्ञाविमुक्त भिञ्ज में यही भेद है।

§ ७ पञ्चविगय सुत्त (२१.२ १.७)

अनित्य, दुःखं, अनात्म का उपदेश

ऐसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् वाराणसी के पास ऋषिपतन मृगदाय में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने पंचवर्गीय भिश्चओं को आमन्त्रित किया।

भिक्षुओ ! रूप अनात्म है । भिक्षुओ ! यदि रूप आत्मा होता तो यह दु ख का कारण नहीं बनता, और तय कोई ऐसा कह सकता, 'मेरा रूप ऐसा होने, मेरा रूप ऐसा नहीं होने ।'

भिक्षुओ ! क्योंकि रूप अनात्म है इसीलिये यह दु ख का कारण होता है, और कोई ऐसा नहीं कह सकता है, 'मेरा रूप ऐसा होवे, मेरा रूप ऐसा नहीं होवे।'

भिक्षुओ । वेटना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान अनात्म है

मिक्षुश्रो । तो क्या समझते हो, रूप अनित्य है या नित्य ?

अनित्य, भन्ते !

जो अनित्य है वह दु ख है या सुख ?

दु ख भन्ते।

जो अनित्य, दु ख, और विपरिणामधर्मा है क्या उसे ऐसा समझना ठीक है कि 'यह मेरा है, यह में हूँ, यह मेरा आत्मा है ?'

नहीं भन्ते ।

वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान नित्य है या अनित्य ?

मुक्ति को बान निर्देश के किये विशाग के किये तथा निर्वाध के किये प्रतिपच्न होते हैं वे ही सुप्रतिपच्न है। जो सुप्रतिपच्न हैं वे इस विजय में प्रतिहित होते हैं।

भिन्नुओं ! को समय पा माहल इस मक्टर क्य को बात क्य की मुक्ति को बात रूप के तिर्वेद में किराय से निरोध से समा बनुभावान से बिमुक्त हो गये हैं वे ही प्रधार्य में विमुक्त हुने हैं। जा प्रधार्य में विमुक्त हो गये हैं वे केवली हैं। जो केवली हो गये हैं उनके किये मैंबर नहीं है।

शिक्षुमो ! बेदना प्या है ?

मिशुको ! वेदना-काव छ हैं। वाहुसंस्पाँजा वेदना मानासंस्पराँजा वेदना। मिहुको ! इसे वेदना करते हैं। स्पाँ के समुद्ध स वेदना का समुद्ध होता है। स्पर्श के निरोध से वेदना का विरोध हाता है। वहीं जार्व कहाँगिक मार्ग वेदना के निरोध का आर्य है।

का बदना के प्रत्यव स पुत्र सीमनत्व होता इंबह बेदना का व्याकाद है। बेदना को अनिक हु-क विपरियासमार्ग है वह बेदना का दोप है। को बेदना के प्रति छन्दरास का प्रहीय हो जाना है वह बदना की सुन्ति है।

मिसनी ! जो क्रमण या माझय इस प्रकार बेहमा को जाम ।

भिश्वत्रो ! सजा च्या है ?

भिन्ना । संज्ञाकाय क है। कपसंजा वर्गस्ता। मिक्का । इसी की संज्ञा कहते हैं।

मिसूत्री । जो भ्रमण या बाह्यन हम प्रकार सुंता को बान ।

भिश्वणी । संस्कार क्या है । शिश्वणो । चेत्रपाकाय छा है । क्यसंच्यतना वर्मसंचेतना । सिक्षणो । हुनी का संस्कार बहुते हैं । स्पर्श के समुद्दय से संस्कार का समुद्दय होता है ।

भिद्धभो ! यो समन वा माहाम इस प्रकार ग्रंतकारों को यान ।

मिसुओ ! विद्यान वना है ?

मिन्नुशा | विद्यानकाय ग्रार्थ | कानुविद्यान अशोविद्यान । शिन्नुशो | इसी को पिद्यान व्यक्ते हैं। नामक्य के समुद्द सा विद्यान का समुद्द होता है। नामक्य के निरोध से विद्यान का निरोध होता है। आर्थ कहारिक आर्ग विद्यान के निरोध का आर्ग है ।

विज्ञान के प्रत्यन में जो सुगर सीमनत्व होता है वह विज्ञान का श्वास्तान है। विज्ञान को सनित्य पुनर और विवरिकामधनों है यह विज्ञान का दोन है। जो विज्ञान के प्रति उम्ब्राम का महीन हो जाना है यह विज्ञान की मुन्ति है।

भिश्वामी । जो समय या माहण विद्वान को इस प्रकार कान निर्वेद के क्रिने तथा निर्वाण के किये प्रतियम होते हैं वे ही सप्रतियम्ब हैं। जो सुप्रतियक हैं के इस प्रियद में प्रतिहिम होते हैं।

सिद्धारी | 3। समझ या माहत्य इस मकार विकास को जात विकास के निर्धेद सा विकास के मिराज से समा अनुसराम में बिगुका हो गावे हैं की बायारी सिहक हुन हैं। जा बयारों में बिगुक ही सबे दें के मेमारी हैं। जा केवनी हो गावे हैं कमते की की वार मीहि हैं।

जिलुओं | इसी प्रधार लिलु जात व्यानी में कुछक द्वारा है । जिल्लो रे जिल्ल कैसे तीन प्रवार व पर्शक्त कामे बाका दोता है ?

भिग्नुनी ! भिग्नु पा परिका करने वाका होता है। आवतन ता नरीका करने वाका होता है। इसी-नमानार रा परिका करने वाका होता है।

भिश्वभा ! बेसे ही बिश्व शीन प्रकार श वरीक्षा करन बाना होता है ।

[अर्गुला] की लिशु लाग रचनों में बुधान तबा तीन तकार से नरीका करने बाका होता है यह इस भर्म नियन में केरनी लावज सम्माने बाका और क्रमम चटन कहा साता है। निर्वेद नहीं करते। महालि । क्योंकि रूप में वड़ा दु रा और युख का अभाव है, इसलिये सस्व रूप से निर्वेद को प्राप्त होते हैं , निर्वेद से विरक्त हो जाते हैं; विराग से विशुद्ध हो जाते हैं।

महालि | सत्वों की विशुद्धि का यही हेतु=प्रत्यय हैं । इस तरह, हेतु=प्रत्यय से सत्व विशुद्ध हो जाते हैं ।

[वेदना, सज्ञा, संस्कार, विज्ञान के साथ भी ऐसा ही]

६९ आदित्त सुत्त (२१.२ १.५)

रूपादि जल रहा है

श्रावस्ती ।

भिक्षुओं । रूप जल रहा (= आदीस) है। वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान जल रहा है।

भिक्षुओ ! विद्वान् आर्यधावक इसे समझ कर रूप से निर्वेद करता है, वेदना , संज्ञा , संस्कार , विज्ञान से निर्वेद करता है। निर्वेद से विरक्त हो जाता है, विराग से मुक्त हो जाता है, मुक्त होने से मुक्त हो गया—ऐसा ज्ञान होता है।

जाति क्षीण हुई, ब्रह्मचर्य पूरा हो गया, जो करना था सो कर लिया, अब और कुछ वाकी नहीं बचा- ऐसा जान लेता है।

§ १०. निरुत्तिपथ सुत्त (२१ २ १ १०)

तीन निरुक्ति-पथ सदा एक-सा रहते हैं

श्रावस्ती

• मिश्रुओं ! तीन निरुक्ति-पथ = अधिवचन पथ = प्रज्ञिस पथ बदले नहीं हैं, पहले भी ६भी नहीं बदले थे और न आगे चलकर बदलेंगे। श्रमण, बाह्मण या विज्ञ पुरुष उसे उलट नहीं सकते हैं। फोन से तीन ?

भिक्षुओं ! जो रूप अतीत = निरुद्ध = विपरिणत हो गया, वह 'हुआ था' ऐसा जाना जाता है। वह 'अभी है' ऐसा जाना नहीं जाता । वह 'होगा' ऐसा भी नहीं जाना जाता।

जो वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओं । जो रूप अभी उत्पन्न = प्रादुर्भृत नहीं हुआ है, वह 'होगा' ऐसा जाना जाता हे। 'वह है' ऐसा जाना नहीं जाता । 'वह था' ऐसा जाना जाता ।

जो वेदना , सज्ञा , सस्कार ः विज्ञान ।।

भिक्षुओ ! जो रूप अभी उत्पन्न = प्रादुर्भूत हुआ है, वह 'है' ऐमा जाना जाता है। 'यह होगा' ऐसा जाना नहीं जाता। 'वह था' ऐसा जाना नहीं जाता है।

जो वेंदना , सज्ञा , सस्क'र ", विज्ञान

भिक्षुओ ! यही तीन निरुक्ति पथ = अधिवचन-पथ=प्रक्षित-पथ वदले नहीं हैं, पहले भी कभी नहीं बदले थे और आगे चलकर भी नहीं बदलेंगे। अमण, ब्राह्मण या विज्ञ पुरुष उसे उलट नहीं सकते हैं।

भिक्षुओ । जो उत्कल (प्रान्त के रहने वाले) वस्स और भड़्स अहेतुवादी, अकियवादी, नास्तिक वादी हैं, वे भी इन तीन निरुक्ति पथ=अधिवचन पथ=प्रज्ञप्ति-पथ को मान्य और अनिन्द्य समझते हैं।

सो क्यों ? निन्दा और तिरप्कार के भय से।

उपय-वर्ग समाप्त

भनित्व सन्ते ह

जो कमित्य है वह दुन्छ है वा सुग्र है

दुःग्व समा }

का अतिरथ बुक्त कोर विपरिधासयमों इंच्या उस प्या समझना ठीक है कि यह मेरा है, यह मैं है, यह मरा आल्या है ?

वहीं सम्त !

मिशुको ! इसमिय का यी कर-अर्थाण जनायत वर्षमान् व्यवस्थ वाक स्युक्त पूस्म हीन, प्रणीत पूर्व या निकट में — है सभी यवारीता प्रजायूर्यक पृथा समझना काहिये कि 'यह मेरा नहीं है यह मैं नहीं के यह भरा कारण नहीं है।

जो भी बेरवा : संहा ं संस्कार * विशास ।

सिम्रुभा | एमा समझने वास्त विद्वान् कार्यकावक रूप में निर्वेद करता है वेदना संमा संस्कार दिनान में निर्वेद रुखा दें। निर्वेद करते स विद्यु हो जाता है। विद्युच्छ होने स विद्युच्छ हो जाता है। विद्युच्छ हो जान से सिद्युच्य हा गया—पैसा झान होता है। व्यक्ति क्षीय हुई —पैसा जात असार।

भगजान् यह बास । संपृष्ठ हो पंचवर्गीय शिक्षुओं ने भगवान् के वह का अभिनन्द्रव किया । इस वर्मीयुरा के किय जाने पर पंचवर्गीय शिक्षाओं का वित्त उपादान रहित हो आवयों से मुक्त हो गया ।

≸ ८ महालि सच (२१ ^२ १८)

सत्यां को गाँद का हम पूज काइयप का बहेतु-याद

एक ममय भगगान धैनाहरी में महाचन को कहातार-साखा में विहार करते थे।

गय मानारिन्न किच्छपि वहाँ मधारान् ये वहाँ भाषा आर मधवान् का अभियादन कर एक मोर

वर गया।

पर भीर बैंट कर महाति निष्यांके आगान् स बोना "मन्ने ! पुराण काद्यप गेमा वहता है

मन्ते के निक्से कोई कोई हेनु प्रत्य वहीं है। विना देनुक्यन्य के मान संकास में पहते हैं।

मन्ते की विमुद्धि निर्मे कोई हेनु प्रत्यक वहीं है। विना देनुक्यन्य के मन विमुद्ध होते हैं। इसमैं

मगरा को वा बहा बहना है।

महाति ! सर्पों के संस्कता के तिने हेनू=प्रपाय है । हेनू=स्वत्त शाही गरम संस्केश में पहन हैं । गर्पों की विश्वति के तिन हेनू=प्रपाय है । हेनू=स्वत्त्व ग्रह्मा विश्वति होते हैं ।

भगा गार्थी के शंक्षेत्र के जिल्ले क्या हेनु=बार्य दें गुल्यां के हेनु=बार्य संस्था में वर्ष प्रभावित

महानि ! वहि बज बेदल पुन्य ही बुध्य और मुख्य मं सर्वदा रहिता हाना ता अन्य क्या में रहते वहीं हान । महानि ! वर्षीकि कर में बहु। मुख्य है तथा पुन्य नहीं है। हर्यानिये स्थल क्या में रहते होते है रहते हो अन्य में समस्य गंदीना बस्ते हैं, गंदीना में क्लेज में बच्च अने हैं ।

महानि है तांची के र्यक्तेश का कह देतू अजनक है। इस तरह भी हैंगुक्जायय से स पा संक्री। के करते हैं।

[वेदमा मीला लेखार विकास के साथ भी लिया ही] अपने भारती की विद्युत्व को बेगुलाम्बर का है ? डेंग्लाम्बर को साथ कैसे विद्युत्व होते हैं ? सार्वि ? वर्ष कर वेदक गुण ही मुख और गुण्य की सार्वका सीहर होता की साथ कर में निर्वेद नहीं करते। महािल । क्यों कि रूप में बदा दुख और सुख का भमाव है, इसिलिये सत्व रूप से निर्वेद को प्राप्त होते हैं, निर्वेद से विरक्त हो जाते हैं, विराग से विशुद्ध हो जाते हैं।

महालि ! सत्वों की विशुद्धि का यही हेतु=प्रत्यय हे। इस तरह, हेतु=प्रत्यय से सत्व विशुद्ध हो जाते हैं।

• [वेदना, सज्ञा, संस्कार, विज्ञान के साथ भी ऐसा ही]

६ ९. आदित्त सुत्त (२१. २ १. ५)

रूपादि जल रहा है

श्रावस्ती ।

·भिक्षुओ। रूप जल रहा (=आदीस) है। वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान जल रहा है।

भिक्षुओ ! विद्वान् आर्थश्रावक इसे समझ कर रूप से निर्वेद करता है, वेदना , संज्ञा , संस्कार , विज्ञान से निर्वेद करता है। निर्वेद से विरक्त हो जाता है, विराग से मुक्त हो जाता है, मुक्त होने से मुक्त हो गया—ऐसा ज्ञान होता है।

जाति क्षीण हुई, ब्रह्मचर्य पूरा हो गया, जो करना था सो कर लिया, अब और कुछ बाकी नहीं बचा - ऐसा जान लेता है।

§ १०. निरुत्तिपथ सुत्त (२१ २ १ १०)

तीन निरुक्ति-पथ सदा पक-सा रहते हैं

श्रावस्ती ।

• भिश्रुओ । तीन निरुक्ति-पथ = अधिवचन पथ = प्रश्नित पथ बदले नहीं हैं, पहले भी ६भी नहीं बदले थे और न आगे चलकर बदलेंगे। श्रमण, ब्राह्मण या विज्ञ पुरुष उसे उल्टर नहीं सकते हैं। कीन से तीन ?

भिञ्जभो ! जो रूप भतीत = निरुद्ध = विपरिणत हो गया, वह 'हुआ था' ऐसा जाना जाता है । वह 'अभी है' ऐसा जाना नहीं जाता । वह 'होगा' ऐसा भी नहीं जाना जाता।

जी वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओ । जो रूप अभी उत्पन्न = प्रादुर्भूत नहीं हुआ है, वह 'होगा' ऐसा जाना जाता है। 'यह है' ऐसा जाना नहीं जाता । 'वह था' ऐसा जाना जाता ।

जो वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओं । जो रूप अभी उत्पन्न = प्राद्धुर्मृत हुआ है, वह 'है' ऐसा जाना जाता है। 'वह होगा' ऐसा जाना नहीं जाता । 'वह था' ऐसा जाना नहीं जाता है।

जो वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान

भिक्षुओ । यही तीन निरुक्ति पथ = अधिवचन-पथ=प्रक्षिति-पथ वदले नहीं हैं, पहले भी कभी नहीं बदलें थे और आगे चलकर भी नहीं बदलेंगे। अमण, ब्राह्मण या विक्र पुरुप उसे उलट नहीं सकते हैं।

भिक्षुओं ! जो उत्कल (पान्त के रहने वाले) वस्स और भड़ा अहेतुवादी, अक्रियवादी, नास्तिक-वादी हैं, वे भी इन तीन निरुक्ति-पथ=अधिवचन पथ=प्रज्ञिस-पथ को मान्य और अनिन्द्य समझते हैं।

सो क्यों ? निन्दा और तिरण्कार के भय से।

उपय-वर्ग समाप्त

दूसरा भाग

अर्हत् वर्ग

६१ डपादिय सुच (२१ २ २ १)

डपादान के स्वाम से मुक्ति

धावस्त्री ।

तम कोई सिम्न कहाँ अग्रमान के नहाँ भाषा और अग्रमान कर कसिवादम कर एक और बैट राया ।

एक और बैठ वह जिल्ला अगवानुको जीका 'अल्लो ! जशवानु झुछे संक्षेप में कर्मीपर्देक करें जिसे शुक्कर में एकान्त में अंग्रेका अप्रेमण कातायी और महिताया ही विदार करूँ ।

मिह्य | बपादान में पक्षा हुमा जार के क्लबन से बैंचा रहता है। बपादान को छीद देनपासा इस पापी से अन्त हो बाता है।

मगवान् ! जान किया । शुगत ! काथ किया ।

भिन्न ! महे संक्षेप से बताबे गब का तुमने विस्तार से नर्प क्या समझा ?

भन्ते | इस्प के जपातान में पथा हुआ सार के बन्धन श वैधा रहता है। कम के उपादान की धोद देनैचाचा उस पायी से अन्द्र हो काता है।

मैदमा : संका : संस्कार : विकास :

मन्ते ! मगबान् के संक्षेप से क्तापे गये का इसमे विस्तार से पड़ी अर्थ समक्षा ह ।

मिश्च ! डीक है। तुम्हें वड़ी समझवा जाहिने।

तव बद्द भिक्षु अनवात् के कद्दे का अभिनन्त्रन कर अनवात् को प्रथाम् वर चका गया । तब बस भिक्षु ने पुकान्त में अप्रेका अप्रमच आतापी और प्रदिवारम हो निवार करते हुन सीम ही महाचर्य व वस करियम प्रक को प्राप्त कर बिहार करने कना जिसके विधे कुरुपुत्र महीसीति भर संवेधर हा प्रजीवत हो काते हैं। वाति श्लीत हुई --वैमा आन खेता है।

यह मिश्र कार्यों में एक क्ष्मा।

६२ मध्प्रमान सुच(१९२ ० २)

मार से मुक्ति कीसे !

पायस्ती ।

···· कोर बैंद बद जिशु मगवान् से योका "असी ! सगवान् मुझे संक्षेप में बर्मीपदेश करें । मिश्र ! मानते हुनै वाई मार के कथान में वैंचा रहता है । मानना क्रोप नैन स पापी के कथान

मन्त ! कप का मानते हुने कोई मार के बन्दम में बैंचा रहता है । [शेप कपरवार्क सूत्र

के समाव हो ।]

§ ३. अभिनन्दन सुत्त (२१. २ २. ३)

अभिनन्दन करते हुए मार के वन्धन मं

श्रावस्ती'।

भिक्षु । अभिनन्दन करने हुये कोई मार के प्रनधन से वंधा रहता है।

[शेप अपर याले सून के समान]

९ ४. अनिच्च सुत्त (२१. २. २ ४)

छन्द का त्याग

थावस्ती ।

ंभिक्षु ! जो अनित्य है उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर देना चारिये। भगवान् ! समझ लिया। सुगत ! समझ लिया।

भिक्षु ! मेरे इस सक्षेप से कहे गये का तुमने विस्तार सं अर्थ कैसे समगा ?

भन्ते ! रूप अनित्य है। उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर देना चाहिये। वेदना , सजा ', यस्कार , विज्ञान ।

, पर्याप यह भिक्षु अहंतों में एक हुआ।

§ ४. दुक्ख सुत्त (२१. २. २. ५)

छन्द का त्याग

श्रावस्ती ।

भिक्षु । जो हु ख है उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर देना चाहिये। वह भिक्षु अहतों में एक हुआ।

§ ६. अनत्त सुत्त (२१. २. २. ६)

छन्द का त्याग

श्रावस्ती ।

भिक्षु । जो अनात्म है उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर देना चाहिये। वह भिक्षु अर्हतों में एक हुआ।

§ ७. अनत्तनेय्य सुत्त (२१ २ २ ७)

छन्द का त्याग

थ्रावस्ती''।

भिक्षु ! जो अनात्मनीय है उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर देना चाहिये। वह भिक्षु अर्हतों में एक हुआ।

§ ८. रजनीयसण्डित सुत्त (२१. २, २. ८)

छन्द का त्याग

थावस्ती ।

भिक्षु ! जो राग उत्पन्न करनेवाळी चीज है उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर दो।

§९ गध सुच (२१ २ **२ ९)**

शहंकार का सात केंगे है

भायस्ती " ।

तप भायुष्मान् बहुद्य लहाँ भगवान् ये पहाँ भावे और भगवान् बा अभिवादन करके एक और बैठ सथ।

पुरु मीर बेंद्र आयुष्मान् राथ भगपाप् स थाल अस्त ! क्या जान और देगदर इस निजान-पुनः

सरीर में तथा पादर मनी निमित्तों में अददार ममदार आर मानानुपाय नहीं दाते हैं !

राय ! को कर है---अनीन व्यवागत बरामान भीतर काहर क्यूब शूक्त हीन प्रयोग पूर में या निकट में---अमी 'मरा नहीं है में बहीं हैं, सग अपमा यहीं ह ---यमा चवार्थना मन्यपूरक वेदान है।

येदमा ; मॅशः । भंग्यार । विचान ।

राप | इसे जान भार पेराकर इस विज्ञानपुन्द पारीर में तथा बाहर मानी निमित्तों में गहहार समझर नीर मामनाच नहीं बात हैं ।

मायुष्मान् शब नहंती में एक उसे।

महंकार से बिस की विमुक्ति दीसे ?

भाषस्ती ।

तक आयुष्पात् सुराध भाषान् स बोक 'मन्ते ! क्या बाव और पनर इस विशास-पुक्त सर्रोर में तका बाइर के मानी निर्माणों में कहतार समुद्रार और साम सर्राहत ही फिट विशुक्त होता है!

सुराव ! वो क्य है सामी 'मेश महीं हैं — येमा आला और देशकर क्यादाभ रहिता हो कोई पिसक होता है।

थंदना । संक्रा । सस्त्रार : विकास ।

सुराभ ! इसे बान कीर नेजकर इस विज्ञव-तुक करीर में तथा बाइर के सभी निक्षिणों में कदकर समझार कीर मान से रहित हो विच विसक्त होता है !

नामुप्ताच शराच वर्श्यों में एक हवे।

भारत धर्ग समाप्त

तीसरा भाग

खजानीय वर्ग

६ १. अस्साद सुत्त (२१. २ ३. १)

आस्वाद का यथार्थ ज्ञान

श्रावस्ती '।

मिधुओं । अविद्वान् पृथक्जन रूप के आस्वाट, आडीनय (=डीप) और मोक्ष को यथार्थत . नहीं जानता है।

चेदना , सज्ञाः , सस्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओ ! विद्वान् आर्यश्रावक रूप के आस्वाट, टोप और मोक्ष को ययार्थत जानता है। वेटना , सज्ञा ', संस्कार , विज्ञान '।

§ २. पठम समुद्य सुत्त (२१ २ ३ २)

उत्पत्ति का झान

श्रावस्ती

भिक्षुओ । अविद्वान् पृथक्जन रूप के समुदय, अस्त, आस्त्राद, दोप और मोक्ष को यथार्यत नहीं जानता है।

• विद्वान् भार्यश्रावक यथार्थत जानता है।

§ ३. द्तिय समुद्य सुत्त (२१. २ ३, ३)

उत्पत्ति की शान

श्रावस्ती ।

भिक्षुओं - विद्वान् आर्यश्रावक रूप के समुदय, अस्त, आस्वाद, दोप ओर मोक्ष को यथार्थत. जानता है।

वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान

§ ४. पठम अरहन्त सुत्त (२१ २ ३ ४)

अर्हत् सर्वश्रेष्ठ

श्रावस्ती ।

मिक्षुओ ! रूप अनित्य है। जो अनित्य हैं वह दुख है। जो दुख हैं वह अनात्म है। जो अनात्म हैं वह न मेरा है, न मैं हूँ, न मेरा आत्मा है। इसे यथार्थत प्रज्ञापूर्वक समझना चाहिये। वेदना , सज्ञा , संस्कार , विज्ञान ।

सिक्षको ! विद्वाल कार्यकावक ऋप में निवेंत करता है । वेदमा ; संका ; संस्कार ; विकास

निर्वेद से किरक हो बाता है। विराग से विसक हो वाता है। विसक हो बाने से विसक हो

गमा पेसा जान होता है। जाति श्लीन हुई' यह बान सता है।

मिसको ! कितके सरपाणाम भवाश हैं उनमें नहींतु ही सर्वश्रेष्ठ जीर सर्वांश हैं । मगवान यह बोल । यह कहकर वह फिर भी बोले :---

बाईत वहे सकी है अन्य त्या नहीं है। सम्मिन्याण समाच्यित्र हो गवा है औद-आक कर गया ह ॥१॥ ध्यास्त्र परमार्थ-पाम सक्रथत अमास्त्र । कोक में भनुपविश स्वच्छ चित्रवासे ॥२॥ क्षेत्र क्रक्रमाँ को काम पास कर्यों में क्षित्रसीवाके । प्रशंसनीय सत्तवप तक के प्यारे प्रश्न वक्ष साल वर्धों से सम्बन्ध शीन किलाकों में किसित । सहाबीर विचरते हैं जिनके भय भेरब प्रशील हो गये हैं हुए। इत बड़ों से सम्पन्न महा-माग समाहित । क कोड में भेद हैं कन्द्रे सच्या नहीं है शयह सरीक्य पर प्राप्त अस्तिय सन्त शास । कारको का को सार है जसे अवना केने काके सहध हैस में अमियत प्रवर्तन से विमुद्ध । तान्त अभिको ग्राप्त वे कोठ के विवयी हैं ॥७॥ क्रपर भीचे टेंडे कारों सी उन्हें शासकि नहीं है। के सिंह भार करते हैं कोच के अनुसर बदा ॥४॥

§ ५ दतिय अरहन्त सच्च (२१ २ ३ ५)

महंत सर्वधेय

धायस्ती ।

मिश्रका ! क्रप जनित्व है। जो जनित्व है वह द्वारा हं। जो हुना है वह अवास है। वो भनारम है वह न तो मेरा है न में हूँ, न मेरा भारमा है। इसे वयार्थता प्रका वर्षक केंद्र केंगा काहिये।

बेक्स त्यंका त्यंकार विकास ।

भिष्ठाओं ! बिह्नान् स्थापेकाणक हमें वेश क्य में निवेंद करता है। बेतुना | संता | संस्कार | विज्ञान में निर्देश करता है। विवेद करत हुए विरक्त हो जाना है । विरक्त हो विमुक्त हा जाता है । विमुक्त हो विमुक्त हो

राया' ऐसा साम दोना है। वार्ति शीन हुई -आन लेखा है।

भिशामा ! जितने मानापास मनाम है जनमें बाहेंस ही सर्वश्रम और सम्रोध है :

६६ पठम सीइ सुच (२१ २ ३ ६)

वय का उपरा सन बंधता भी भगभीत हो आते हैं

भाषरती निशाभी ! खुनराज सिंह साँहा को अथनी साँह से निकासता है । साँह सा निकास कर खें मार्र लेता है। जॅभाई लेकर अपने चारा ओर देखता है। अपने चारा ओर देखकर तीन वार गर्जना करता है। तीन वार गर्जना कर शिकार के लिये निकल जाता है।

भिक्षुओं । जितने जानवर सिंह की गरजना सुनते हैं सभी भय = संवंग = संत्रास को प्राप्त होते हें। विल में रहनेवाले अपने बिल में घुस जाते हैं। जल में रहनेवाले जल में पैठ जाते हैं। जंगल-झाड में रहनेवाले जंगल-झाड में पठ जाते हैं। पक्षी आकाश में उड़ जाते हैं।

भिक्षुओ । राजा के हाथी जो गाँव, कस्वे या राजधानी में वॅधे रहते हैं वे भी अपने दृढ़ वन्धन को तोद-ताइ, दर से पेशाव-पाखाना करते जिधर-तिधर भाग खड़े होते हैं।

भिक्षुओ । जानवरों में मृगराज सिंह का ऐसा तेज और प्रताप हैं।

भिक्षुओ । इसी तरह, अर्हत, सम्यक्-सम्बद्ध, विद्या-चरण-सम्पन्न, सुगत, लोकविद्, पुरुपों को दमन करने में सारयी के समान, देवताओं और मनुष्यों के गुरु भगवान् बुद्ध लोक में जन्म लेकर धर्म का उपदेश करते है। यह रूप है। यह रूप का समुद्य है। यह रूप का अस्त हो जाना है। यह वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओ ! जो दीर्घायु, वर्णवान्, सुख-सम्पन्न और ऊपर के विमानों में चिरकाल तक वने रहने वाले देव है वे भी बुद्ध के धर्मीपदेश सुनकर भय को प्राप्त होते हैं। अरे ! हम अनित्य होते हुए भी अपने को नित्य समझे बैठे थे। अरे ! हम अध्रुव होते हुए भी अपने को ध्रुव समझे बैठे थे। अरे ! हम अजाश्वत होते हुए भी अपने को शाश्वत समझे बैठे थे। अरे ! हम अनित्य = अध्रुव = अशाश्वत हो सकाय के घौर अविद्या-मोह में पढे थे।

भिक्षुओ ! देवताओं के साथ इस लोक में बुद्ध ऐसे तेजस्वी और प्रतापी है। भगवान् यह बोले। यह कह कर बुद्ध फिर भी बोले —

जय बुद्ध अपने ज्ञान-बर्क से धर्मचक्र का प्रवर्तन करते हैं, देवताओं के साथ इस लोक के सर्वश्रेष्ठ गुरु ॥१॥ सत्काय का निरोध और सत्काय की उत्पत्ति, और आर्थ अष्टाङ्किक मार्ग, दु खों को शान्त करनेवाला ॥२॥ जो भी दीर्घायु देव हैं, वर्णवान्, यशस्त्री, वे दर जाते हैं, जैसे सिंह से दूमरे जानवर ॥३॥ क्योंकि ये सत्काय के फेर में पढ़े हैं। अरे ! हम अनित्य है ! वंसे विमुक्त अर्हत के उपदेश को सुनकर ॥४॥

§ ७. दुतिय सीह सुत्त (२१ २.३ ७)

देवता दूर ही से प्रणाम् करते हैं

श्रावस्ती "।

भिक्षुओ ! जो श्रमण या द्याह्मण अपने अनेक पूर्व जन्मो को वातें याद करते हैं, वे सभी पाँच उपादान स्कन्धों को या उनमें किसी एक को याद करते हैं।

भूतकाल में में ऐसा रूपवाला था—यह याद करते हुये भिक्षुओ ! वह रूप ही को याद करता है। भूतकाल में मैं ऐसी वेदना वाला था—यह याद करते हुये भिक्षुओ ! वह वेदना ही को याद करता है। ऐसी सज्ञा वाला । ऐसे सस्कारों वाला , ऐसे विज्ञान वाला ।

भिक्षुओ । रूप नयों कहा जाता है ? भिक्षुओ । क्योंकि यह प्रभावित होता है, हमी से 'रूप' कहा जाता है । किससे प्रभावित होता है । याति से प्रभावित होता है ।

मिशुको | विद्वात् थार्यश्रावक रूप में निर्वेद करता है । येदना ; संग्रा ; संस्कार । विद्यान ।

मिर्जेन से बिरक्त को जाता है। बिराग स बिग्लुक को जाता है। बिग्लुक को जाने से विमुक्त को गया पेमा जान कोता है। साति क्रीय तर्ष 'कड़ कार्य सेवा है।

(सा दान हाता है। श्रात काम तुहै। यह बान श्रता है। मिछन्ने! बितने सत्यावास अवास है उससे वर्डत ही सर्वसेट मीर सर्वाप्त हैं।

मगवाद पह शके। यह कहकर शुद्ध फिर भी बोळे :---

महेत् वहे भुधी है कर्षे तृष्या नहीं है। मिस-मान पशुष्किक हो गया है मोह-माक कर गया है।।।। पास्य परमार्थ मात महस्य नगाम । कोड में न्युपिक स्वयन्न विकास । १२॥ पींच स्क्रमी को मान साथ बसी में विचलेगाके। मर्गसमीय सायुक्य बुद के च्यारे पुर 8६॥

सात रकों से सम्बक्त तीन सिखानों में दिखित । महाबीर विकात हैं विक्के भय भेरब प्रहीण ही गये हैं सब्ब इस बढ़ीं से सम्बक्त महा भाग समाहित ।

ये कोक में बोड़ है उन्हें तृष्णा नहीं है। १५॥ भरोहर पह प्राप्त अभित्तम बन्म बाड़े। प्रकृत्वर्थ का को सार है उस अवना केने बाक़े ॥६॥

हैत में बाजियत पुत्रमेंब से बिशुक्त । सम्बद्ध भूमिको शास वे कोक के विकास हैं शब्ध कपर कीचे जेंद्रे कही सी उन्हें कासकि वहीं हैं ।

कपर नाम की कहा भी उन्हें भागक नहीं है। वे सिंह-नाव कारी हैं कोफ के अमुचर शहर।।41

§ ५ दुविय अरहन्त सुच (२१ २ ३ ५)

महैत् सर्वेभेष्ठ

धावस्ती ।

सिद्धानो । क्रम समित्य है। यो समित्य है बह हुन्स है। यो हुन्स है वह बनाया है। यो सनाया है वह न दो मेरा है न में हूँ न मेरा स्थायत है। इसे यवार्यदाः प्रका-पूर्वक देवा सेना चाहिये। चेदना । सेवा । संदर्भ । विकास ।

पद्ता (सक्ता) सरकार । स्वाप्त । मिश्रुओ ! विद्वाल् कार्यकालक इसे देव क्या में निर्वेद वरता है। वेदवर । संक्षा । संस्थार ।

विज्ञान में निर्वेद करता है।

क्षित्राच मा प्रवेद करता है। विवेद करते हुए विरक्ष हो जाता है। विरक्त हो विश्वक हो जाता है। विश्वक हो विश्वक हो सन्दर्भ देसा खाम होता है। जाति जीम हाई —आज केता है।

मिसुनो ! जितने सत्वानास भनाप्र है जनमें वहंत् ही सर्वेत्रह और सर्वोत्र हैं।

६ ६ पठम सीइ सुत्त (२१ २ ३ ६)

वुद्ध का अपन्धा सुन देवता यी मयमीत हो जाते हैं भावस्ती ।

·· जिल्ला ! ब्रायाव सिंह साँछ को अपनी गाँव से निकल्ता है। गाँद से निकल कर वीमार्ट

किसको छोड़ना है, बटोरता नहीं , बुषा देता है, सुलगाता नहीं ? रूप को '', बेदना को , सजा को', सस्कारों को '; विज्ञान को ।

भिक्षुओ । यह समझ कर, बिड़ान् आर्यश्रायक रूप से भी निर्वेद करता है; बेडना से भी '', संज्ञा , परकार , बिज्ञान '। निर्वेड करने में बिरक्त हो जाता है । बिरक हो बिमुक्त हो जाता है । बिमुक्त होने पर 'बिमुक्त हो गया' ऐसा ज्ञान होता है । जाति क्षीण हुई —जान छेता है ।

भिक्षुणी । इसी को कहते हैं कि न छोड़ता है ओर न प्रदोरता है , न बुझाता है, न मुख्याता है । किसको न छोडता है आर न बढोरता है , न बुझाता है, न सुख्याता है ? रूप की '', बेडना को , यज्ञा को ', सस्कारों को , बिज्ञान को ।

भिक्षुओ । इस तरह विट्फुल बुद्याकर विमुक्त-चित्त हो गये भिक्षु को इन्छ, ब्रह्मा, प्रजापित आदि सभी देव दर ही से प्रणाम् करते हैं ।

> हे पुरुष-श्रेष्ट । आपको नमस्कार हे, हे पुरुषोत्तम ! आपको नमस्कार है। जिसके हम भी उसे जाने, जिसके लिये अप ध्यान करते हैं॥

§ ८. पिण्डोल सुत्त (२१ २ ३. ८)

लोमी की मुर्दाडी से तुलना

एक समय भगवान् शाक्य जनपद में किपलिश्वस्तु के निश्रोधाराम में विहार करते थे। तत्र, भगवान् किसी कारणवश भिक्षु-सब को अपने पास से हटा सुवह में पहन और पान्न-चीत्रर ले क्रिपलिश्वस्तु में भिक्षाटन के लिये पेंटे।

भिक्षाटन में छोट मोजन कर छेने के उपरान्त दिन के विहार के छिये जहाँ महाचन है वहाँ गये, ओर एक तरुण विच्व बृक्ष के नीचे बैठ गये।

तय, एकान्त में ध्यान करते समय मगवान के चित्त में यह वितर्क उठा — मेने भिक्षसघ को स्थापित किया है। यहाँ कितने नव-प्रवित्त भिक्ष भी हे जो इस धर्मविनय में अभी तुरत ही आये है। मुझे न देखने से शायद उनके मन में कुछ अन्यथात्व हो, जैसे माता को नहीं देखने से तरण बत्त के मन में अन्यथात्व होता है, जैसे पानी नहीं मिलने से अभी तुरत का लगाया बीज अन्यथात्व को प्राप्त होता है। तो क्यों त में भिक्ष-सघ को स्वीकार लूँ जैसे में पहले से कर रहा हूँ।

तव, महम्पित ब्रह्मा अपने चित्त से भगवान् के चित्त को जान—जेमे बलवान् पुरुष ममेटी बॉह को फैला दे और फैलाई वॉह को समेट ले वैसे—ब्रह्मलोक में अन्तर्धान हो भगवान् के सम्मुख प्रगट हुये।

तव, सहम्पति वहा उपरनी को एक कन्धे पर सम्हाल भगवान् की ओर हाथ जोड़ कर योले —भगवान् । ऐसी ही बात है। सुगत । ऐसी ही वात है। भन्ते। भगवान् ने ही भिक्षु-सघ को स्थापित किया है।

यहाँ कितने नव-प्रवित्त मिक्षु भी हैं जो इस धर्मविनय में अभी तुरत ही आये हैं। भगवान् को न देखने से शायद उनके मन में यन्यथात्व हो, जैसे माता को नहीं देखने से तरुण वत्स के मन में अन्यथात्व होता है, जैसे पानी नहीं मिलने से अभी तुरत का लगाया वीज अन्यथात्व को प्राप्त होता है।

भन्ते ! भगवान् भिक्षुसव का अभिनन्दन करें । भन्ते । भगवान् भिक्षुसव का अभिनन्दन करें । जैसे भगवान् भिक्षुसव को पहले से स्वीकार कर रहे हैं, वैसे ही अभी भी स्वीकार कर लें ।

भगवान ने चुप रह कर स्वीकार कर छिया।

मूग स प्रशादित हाला है। प्याप से प्रशादित होता है। वैस्य सप्पाह हवा भूग तथा फीने सभीहें के स्पर्धा ल प्रशादित हाला है। शिक्षाकों | वर्षोकि यह प्रशादित होता है हसी से 'स्पर' कहा जाता है।

निश्वमा । पदमा वर्षो कहा आता है | मिश्वमा । वर्षोकि अनुसव करता है हसी स वैदना प्रदा जना है। वरा अनुसव करता है | मुल का भी जनुसव करता है दुःख का भी जनुसव करता है गुरा भार दुःष म रहित वा भी अनुसव करता है। भिश्वभी । वर्षोकि जनुसव करता है हसीसे विदना कहा जाना है।

सिधुको। मेन्य वर्षे वहा जाता है | सिधुका | क्वेंकि जानता है इसकिये 'सहा वहा जाता है। क्या जानता है | मील का भी जानता है। चीके को भी जानता है। काल को भी जानता है। उत्तर का मी जानता है। सिधुको ! क्वेंकि जानता है इसकिये 'संहा' वहा काल है।

िश्वामां । मंददार वर्षो वहा जाता है । जिल्लामां । मंदहर का कमिर्मद्रका करता है। हगरिय गॅरहार वहा जाता है । दिन मंदहर का कमिर्मद्रका करता है । देशक के किये संस्कृत क्र का असि मंदहर क्रामा है । मंदहागज के जिले मंदहर बदान का असिर्मद्रकार करता है । संदारक के जिले मंदहर गंदार का । गंदहाराज के किय सम्हरूप गंदहरर का । विद्यान के विदे मंदहर विद्यान कर । जिल्ला । गंदहाराज के किय सम्हरूप गंदहरर का । विद्यान किये मंदहर विद्यान करा ।

सिशुना दिलान का बड़ा जाना है ! सिशुनों । वर्षों कि वहस्थनता है इसस्य दिलान वहा जाना है। वस वहस्यनता है । वर्षन का भी वहस्थनता है। तीने को भी ; कच्च हो भी ; और वे भी ; सारे का भी ; जा तरा नहीं है उस नी ; कार्योग को भी ; जो वसर्जन नहीं है उस भी । चिनुभा ! क्यांकि वहस्थानता है इसस्यि विशान कहा जाना है।

भिशुभें। १ यहाँ श्रिट्रान् धार्यभाषक देमा सनव काता है।

इस सम्बन्धि रण संस्था व्यास्त्रहा हूँ। अर्माश काम में भी में रूप सरवार गया है असे इस समय नामा मारहा है। यह में अवासन रूप का अभिन्तरूप करोंगा वा अवासन रूप से भी से हैं। रूपा अमेगा मारहा हो। यह विसास रूप सा। बढ़ केला मानक कर अर्थात हुए में अववार रहता है। अनामी रूप का भी भनरूप नहीं करता है। तथा पनमान रूप के निवेद किसा और निरोध के किने प्रतिपत्र रूपा हा।

इम गर्मा के बदना में का या जा रहा हूँ । मंत्रा म । मंग्राता म । विज्ञान रा ।

निराधा ! मा मूब एता गबसर हा रूप निष्य है वा अनिष्य !

भ ना मान !

अ। भ न १ द बद दु ल है या गुल १

कुल धारत ।

२ भ रणे पूजा विचालियानको है पता जने नेता समझना यहिचे "यह मेता है अह में हैं पह मेता भ मा द" ?

मही था। ।

ter idri inten ifere t

िर्मुच है इस तरे १८ वन करीन करामन वर्गमान —है सभी कंग्रेस के हैं व रेस कंप्रस ह—रेना शम्मान कंप्रिक है

b fir jun juten ifenn i

ाम् । १४४ व वरवर्षे विभवेतास्य शहरा है वरशास्त्री । युक्त हेगा है गुर्व रूप सार। किसको जीउता है, बटोस्ता नहीं , बुझा देता है, सुलगाता नहीं ? रूप को , बेदना को , मज़ा को , संस्कारों को , विज्ञान को…।

भिधुशो । यह समाप्र कर, बिद्वान् आर्यश्रावक रूप से भी निर्देर करता है, बेदना से भी , स्वा , सम्कार , विज्ञान । निर्देर करने से विरक्त हो जाता है। विरक्त हो विमुक्त हो जाता है। विगुक्त होने पर 'विमुक्त हो गया' ऐसा ज्ञान होता है। जाति क्षीण हुई —जान छेता है।

भिश्रुओ । इसी को कहते हैं कि न छोड़ता है और न प्रशेरता है , न बुझाता है, न सुलगाता है । किसको न छोड़ता है ओर न बटोरता है , न बुझाता है, न सुलगाता है ? रूप की ', बेटना की ', सज्जा को , सस्कारों को , बिज्ञान को ।

भिक्षुओ । इस तरह विरक्तल बुझाकर विमुक्त-चित्त हो गये भिक्षु को इन्द्र, ब्रह्मा, प्रजापित आहि सभी देव दूर ही से प्रणाम् करते है ।

हे पुरुव-श्रेष्ठ । आपको नमस्कार हे, हे पुरुपोत्तम । आपको नमस्कार है। जिससे हम भी उसे जाने, जिसके लिये आप ध्यान करते हैं॥

§ ८. पिण्डोल सुत्त (२१. २ ३. ८)

लोभी की मुद्दिश से तुलना

एक समय भगवान् शाक्य जनपद में किपिलवस्तु के निश्रोधाराम में विहार करते थे। तव, भगवान् किसी कारणवश भिक्षु-सघ को अपने पास से हटा सुवह में पहन और पात्र-चीवर ले किपलबन्तु में भिक्षाटन के लिये पैठे।

भिक्षाटन से छोट भोजन कर छेने के उपर न्त दिन के विहार के छिये जहाँ महाचन है वहाँ गये, ओर एक तरुण विख्य बुक्ष के नीचे बैठ गये।

तब, एकान्त में ध्यान करते समय भगवान् के चित्त में यह वितर्क उठा '—मेने भिक्षुसंघ को स्थापित किया है। यहाँ कितने नव-प्रमंजित भिक्षु भी है जो इस धर्मविनय में अभी तुरत ही आये है। मुझे न देखने से शायड उनके मन में कुछ अन्यथात्व हो, जैसे माता को नहीं देखने से तरुण वत्स के मन में अन्यथात्व होता है, जैसे पानी नहीं मिलने से अभी तुरत का लगाया बीज अन्यथात्व को प्राप्त होता है। तो क्यो न में भिक्षु-संघ को स्वीकार हूँ जैसे में पहले से कर रहा हूँ।

तव, सहम्पति ब्रह्मा अपने चित्त से भगवान् के चित्त को जान—जेमे बलवान् पुरुप समेटी बॉह को फेला दे ओर फैलाई बाँह को समेट ले बैसे—प्रह्मालोक मे अन्तर्धान हो भगवान् के सम्मुख प्रगट हुये।

तय, सहम्पित ब्रह्मा उपरनी को एक कन्धे पर सम्हाल भगवान् की ओर हाथ जोड़ कर बोले —भगवान् ! ऐसी ही बात है। सुगत ! ऐसी ही बात है। भन्ते ! भगवान् ने ही भिक्षु-सच को स्थापित किया है।

यहाँ कितने नव-प्रविज्ञत मिश्च भी हैं जो इस धर्मविनय में अभी तुरत ही आये हैं। भगवान् को न देखने से शायद उनके मन में यन्यथात्व हो; जैसे माता को नहीं देखने से तरुण वत्स के मन में अन्यथात्व होता है, जैसे पानी नहीं मिलने से अभी तुरत का लगाया बीज अन्यथात्व को प्राप्त होता है।

भन्ते ! भगवान् भिक्षुसघ का अभिनन्दन करें । भन्ते ! भगवान् भिक्षुसघ का अभिनन्दन करें । जैसे भगवान् भिक्षुसघ को पहले से स्वीकार कर रहे हैं, वैसे ही अभी भी स्वीकार कर लें ।

भगवान् ने चुप रह कर स्वीकार कर छिया।

तर सहस्यति प्रकासमयम् की स्थाहति को जान समयान् का अभिवादन भार प्रद्याणा कर वर्षा अस्तर्यान हा सब ।

नय माँहाको प्यक्त मे उठ भगवान् कहाँ निम्नोधाराम या यहाँ गवे आर विधे आसम पर बदायदानक समामन्त्र अवत्र व्यक्ति-वयः तो यसा क्रिया किसारा शिक्षार्थय एक साथ यक्ष मेस से भगवान् क सम्मुगः आ उपस्थित दुआ। व सिक्षु भगवान् के यास आ अभिवादन कर एक और करायः।

क्य भार वेद इय उन भिक्षाओं स भनवान घाटा-

मिनुमा ! यह का भिश्तारत करने जीवा है सी सानी जीविकाओं में होन है। विन्यु, तुम अपने हाथ में पान से मारे सान का साव निश्चारत करने किरते हा। मिशुओं ! यह कुक्युय अपन किसी वर्षस्य के वारत ही एमा वरत हैं। व किसी राजा या किसी जार म स्वित्त हाकर देमा नहीं करत व ता किसी भीत सब सा और न किसी नुमरी जीविका न सिकने के कारवा ही। वरिक वस्स जरा सुणु, ताक राना पीटना चुन्न स्थाननक कार उपायाम (अपरेशामी) सा मुक्त हा अन के लिए ही ये एमा सदावरण करते हैं जिससे हमें हम विशास बुनराशि वा अन्त सिस जाव। मिशुओं ! बुन्दुय रैमी सरामरीया को कहा स्थानन हाता है।

यदि बहु (कृत्युक) लाभी भीत विकास में तीम राग करनेवास्य गिरे हुए पिसवास्य वोषप्ती में प्रशासास्य सुर स्मृतिवास्ता अर्थस्य सम्मादित विश्वास्त्र विश्ववस्थ कीर अर्थवरित्र हो तो है सिद्धास ! वह समात्र में फेंग्रे हुदै कम अर्था स्ववद्गी क समात्र वे जो वालों भार स उससे हुदै शेव संबंध में नरप्ती लगी हुदै है जो व नीच में केंग्र त का करत दो से रवसी के वाम में सा सम्मी है। वह गृहम्य क मात्र में विचल रहता है और स्वत्र अन्नस्त्र साव का भी बही रहत वर सप्तम है।

सिशुधा ! तीन अपुनान (=्यापक) विक्रक हैं—(1) काम विक्रक (२) प्यापाद विनक और (३) विदिगा विनक। सिशुधा | यह सीन विनक कहाँ दिल्युन्त निरुद्ध हा जन हैं ? चार वसूनि प्रत्यानी में गुर्शनिहर का अनितम समाधि के अध्यक्त विक्र में ।

िसर्भा । भग तुम्हें इस अविश्वित समाधि की मावना बर्खा चाहिए । शिशुमा ै इस समाधि

थीं मादना तथा करवार का चार ग्रहाबु है।

िम्तुभी। दी (सरा) रिवर्ष हैं। (1) सय रहि और (4) विभव रहि । मिशुमा। से बोई परिदन भावेश पढ़ नेगा विकास है—स्या हम लाड़ में नेमी बाई फीज है जिस पाडर में दाय में बचा रह गहें।

बह ऐसा जान अमार्ड-- हम स्पन्न में केशों काहूँ भीज नहीं है जिस पायर में दिन से बचा रह मध्यें में बाने की अर्थना करेंगा ता जब हो का बेहना हो का मौता हो को मौतार हो को बा दिसार हो को पार्टिया है सम बात की का सार (अक्तरह म) स्व मन हमार अब सा अर्थन जाति से सरसाम होती हम प्रकार नाम इन्त समझ यह नहत हसा हमार।

जिल्ला ! ता क्या महाहत हो अन बिना है सा अ अ प ?

RP4 W 471 1

मदि अनाव है का बद बुन्त है वर गुन्त है

भारत रहे व कि

. च. १ - नेना सम्रतन इं.व. वर्ता

िष्ट किया समामा व वेदव साम भी कह विकास ।

भिक्षुओं । इसी से ऐसा समझने बाला "फिर जन्म को नहीं ग्रहण करता है।

६ ९. पारिलेय्य सुत्त (२१ २ ३.९)

वाश्रवों का क्षय कैसे ?

एक समय भगवान् कौंशास्त्री के घोषिताराम में विद्यार करते थे।

त्र, भगवान पूर्वाह्में समय पहन और पात्र-चीधर ले कीशास्त्री में भिक्षाटन के लिये पैठे। कोशास्त्री में भिक्षाटन करके लीट, भीजन कर लेने के बाद स्वयं अपने आसन लपेट, पात्र ओर चीवर ले, किसी सहायक को बिना कुछ कहें और भिक्ष-संघ में भी बिना मिले बिल्हल अकेले रमत के लिये चल पड़े।

तय, भगवान के चले जाने के कुछ ही देर पाद कोई भिक्ष जहाँ आयुष्मान आनन्द थे वहाँ आया। आकर आयुष्मान आनन्द में घोला—अञ्चय आनन्द ! अभी तुरत भगपान स्वय अपने आसन रपेट, पाप्र और चीवर ले, किसी महायक को जिना कुछ नहें और भिक्ष-मव में भी विना मिले वित्कुल अकेले रमत के लिये निक्ल गये हैं। अञ्चस ! ऐसे समय भगवान अकेला विहार करना चाहते हैं, अत किसी को उनके पीछे-पीछे हो लेना अच्छा नहीं।

तय, भगवान् रमत (= चारिका) लगाते हुये क्रमश यहाँ पटुँचे जहाँ पारिलेय्यक है । वहाँ भगवान पारिलेय्यक में भद्रशाल बृक्ष के नीचे विद्यार करने छगे ।

तय, कुछ भिक्ष जहाँ आयुष्मान् आनन्द थे वहाँ पहुँचे, ओर कृशल-समाचार पृष्ठ कर एक ओर वैठ गये। एक ओर वैठ, वे भिक्ष आयुष्मान् आनन्द से वोले--आयुस आनन्द। भगवान् के मुंह से धर्म सुने बहुत दिन बीत गये। वदी इच्छा हो रही है कि फिर भी भगवान् के मुंह से धर्म सुने।

तव, आयुष्मान आनन्द उन भिक्षुओं को साथ हो पारिलेट्यक में भद्रशाल वृक्ष के नीचे जहाँ भगवान् विहार कर रहे थे वहाँ गये और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये।

एक ओर बंडे हुये उन भिक्षुओं को भगवान् ने धर्मीपटेश कर दिखा दिया, वतला दिया, उत्साह से भर दिया और पुलकित कर दिया।

उस समय किसी भिक्षु के चित्त में ऐसा वितर्क उठा-- क्या जान और देख छेने से आश्रवों का क्षय होता है ?

तव, भगवान् ने अपने चित्त से उस भिक्षु के चित्त के वितर्क को जान भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—भिक्षुओं । मैंने विश्लेषण करके वतला दिया कि धर्म नया है, चार स्मृति-प्रस्थान नया हैं, चार सम्यक् प्रधान नया हैं, चार ऋदि-पाट नया हैं, पाँच इन्द्रियाँ न्या हैं, पाँच वल नया हैं, सात बोध्यक्त नया हैं, आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग नया हैं। भिक्षुओं । मैंने इस प्रकार विश्लेषण कर धर्म समझा दिया हैं। भिक्षुओं ! तो भी, एक भिक्षु के चित्त में ऐसा वितर्क उठा है—न्या जान और टेख लेने से आध्रवों का क्षय होता हैं ?

भिक्षुओं । क्या जान और देख लेने से आश्रवों का क्षय होता है ?

भिक्षुओ ! कोई अज्ञ = पृथक्जन = आर्य सत्यां को न समझने वाला सत्युरुपों के धर्म में अविनीत रूप को आत्मा करके जानता है। भिक्षुओ ! ऐसा जो जानना है वह सस्कार कहलाता है। उस सस्कार का क्या निदान = समुदय = जाति = प्रभव है ?

भिक्षुओ । अधिया-पूर्वक सस्पर्श से जो वेदना होती हैं उससे अज्ञ=प्रथक्जन को तृष्णा उत्त्पन्न होती है। उसी से सस्कार पैटा होता हैं। भिक्षुओ । इस तरह, वह सस्कार भी अनित्य, सरकृत और किसी कारण से उरपन्न होने वाला है। वह तृष्णा भी अनित्य, सस्कृत और किसी कारणसे उत्पन्न होने तव सहस्यति प्रकासगवान् की स्वीकृति को जान समवान् का अभिवादन और प्रवृक्षिणां कर वर्षा भस्तर्गान हो गये।

ठव सींहा को प्यान में उठ सगवान वहाँ निमोधारास या वहाँ गये और विश्वे आसा पर कंग्या । तय सगवान् ने अपने अवि-वक्ष से प्या किया कि सारा शिक्षारेव एक साथ वहे प्रेम से सगवान् कं सस्मार आ उपनिषत हुआ। वे निश्च सगवान् के पास का अभिवादन कर एक ओर कंग्या

एक बार बंद इसे दम शिक्षकों से भगवान बोखा---

भिनुसो ! यह जो निहारण करके श्रीचा है सो सानी बोबिका को में हीन है ! कि.स. तुम अपने हाथ में पात्र से सारे मान का छाड़ निहारत करते किरते हो ! निहाजो ! यह इन्हणूब सपने किसी श्रीदेश के कारण हो एमा करते हैं ! वे किसी राजा या किसी चोर में इच्छित हाकर ऐसा नहीं करते व तो किसी और सप सा और न किसी नृस्ती बीबिका न सिकने के कारण ही ! वरिक दाना जार मृत्यु सोक राजा पाँदगा हु या हांगीसस्य और उपाचान (=परेशामी) से मुख्य हो बान के किस्प हो वे एमा प्रताबद्या परते हैं जिसमें होंगे होशा है पुल्यासित का अन्त सिक बाय ! मिसुसी ! इन्हणूज एसी सहराजीया को संस्तर कर्मना काल हैं।

पदि यह (कुष्पुण) काशी और विकास में तीब राग करनेवाका गिर दुए विचवाका वोपएर्य संम्मार्गावास स्व स्वतिवास्त अर्थाम् जससादित विद्याला विचवाका कार असपरितृत हो हो है सिद्धा ! यह समाप्त में फेंडो दूर कर बच्ची करवी के समाप्त है जो तीने जोर स कर्यों दूर विवस्त से स्वान है के साम है जो तीने कर सम्बन्ध स्वति है। वह सुद्दार के मारा स्त्री विचित रहता ह कीर वचने कराय को भी नहीं दूरा वर समस्त्री है।

निशुओं ! तीन बजुरास (=पापक) विश्वक हैं—(1) काम विश्वक (4) ब्यापाद विश्वकें और (३) विदिधा-विश्वक । मिशुओं ! यह तीन विश्वक नहीं विश्वक निवह को को हैं ? च्यर रखति प्रस्थानों में पुणतिद्वित या निर्मान समाधि के अध्यक्त चित्र में ।

मिहाबा ! भनः तुर्वे इस अनिमित्त समाचि को मावना करकी चाहिए । सिहाजा ! इस समाचि

की भाउना तथा सम्यास का कम महानु है।

मिशुमा ! यो (मिन्ना) रिव्वी हैं; (1) मन रवि और (२) विमय रहि । मिशुमा ! मो काई परितृत कार्यकायक ऐमा विचारता है—बवा कुम साक में पूर्ण काई कीज है जिस पाउर में दौप में बचा रह नहीं है

बह ज्या जान केना है—हम लाक में गाँ कोई चेंत्र वहीं है जिसे पापर में दीव से वच्छा रह महूँ। में पाप की वर्षाका वस्ता का रूप हो को बेदना ही वा जंता हो को संरार हो को या दिलान ही का पार्टिया। उस्प पाने की वाशिका (अदावादान) से पाद होगा अब से बाति जाति से सरामरण हैंगा। हम प्रकार सात दुल्य सबूद कर पहड़ा होगा।

जिसकी ! ता क्या समझते हा रूप तित्व है या अन्य ?

भन्द ! समिला।

वर्षि अभिन्य है हा बद्द दुला इ वा गुरा है

भ ने ! दुःष है।

मा अभिनंद नुग विविजेत सीम वै जल क्या लेगा समझता श्रीक इ कि — यह सेरा दे वह मि दूर देता आपना है।

धारे ! भगा समागः रोह नहीं ।

बिश्वभा तिश्वपा समान का वेदव स्टेश संस्था किशान ।

§ १०. पुण्णमा सुत्त (२१.२.३.१०)

पञ्चस्कन्धों की व्याख्या

एक समय भगवान् वहे भिक्षु-संघ के साथ श्रावस्ती में मृगारमाता के पूर्वाराम प्रासाद में विहार करते थे।

उस समय, भगवान् उपोसय को पूर्णिमा की चाँदनी रात मे सिक्षु-सघ के वीच खुळी जगह में बैठे थे।

तव, कोई भिक्ष अपने आयन से उठ, उपरनी को एक कन्धे पर सम्हाल, भगवान् की ओर हाय जोड़कर वोला—यिट भगवान् की अनुमित हो तो में भगवान् से कोई प्रश्न पृष्ट्टें ?

भिक्ष ! तो, तुम अपने आसन पर बैठकर जो पूछना चाहते हो पूछो ।

'भन्ते। बहुत अच्छा' कह वह भिक्षु अपने भासन पर वेठ गया और वोला-भन्ते। वही पाँच उपादान-स्तन्ध है न, जो (१) रूप-उपादान स्कन्ध, (२) वेदना-उपादान स्कन्ध, (३) संज्ञा-उपादान स्कन्य, (४) सस्कार-उपादान स्कन्ध और (५) विज्ञान-उपादान स्कन्ध १

हाँ भिक्षु । यही पाँच उपाटान-स्कन्ध है, जो रूप-उपाटान स्कन्ध ।

सायुकार दे, वह भिक्षु मगवान् के कहे का अमिनन्टन और अनुमोदन कर उसके आगे का प्रश्न पूछा-भन्ते । इन पाँच उपादान-स्कन्धो का मूल क्या है ?

भिक्षु ! इन पाँच उपाटान-स्कन्धों का मूल इच्छा (=छन्द) है।

साधुकार दे प्रश्न पूछा—भन्ते ! जो उपादान है क्या वही पच-उपादान-एकन्ध है, या पच-उपादान स्कन्ध दूसरा है और उपादान दूसरा ?

भिक्षु ' न तो जो उपादान है वही पत्त-उपादान-स्कन्ध है, और न पत्त-उपादान-स्कन्ध से भिक्ष ही कोई उपादान है। बब्कि, जो जहाँ छन्दराग है वही वहाँ उपादान है।

साधुकार दे प्रश्न पूछा-भन्ते । पाँच उपादान स्त्रन्थों में छन्दराग का नानात्व होता है या नहीं ?

भगवान् बोले, "होता है। भिक्षु! किसी के मन में ऐसा होता है—में आगे चलकर ऐसा रूप-वाला हूँगा, ऐसी वेदनावाला हूँगा, ऐसी सज्ञावाला हूँगा, ऐसे सस्कारवाला हूँगा, ऐसा विज्ञान वाला हूँगा। भिक्षु, इस तरह पाँच उपादान स्कन्धों में छन्द राग का नानात्व होता है।

सापुकार वे फिर आगे का प्रश्न पूछा - भन्ते ! इन स्कन्धों का नाम "स्कन्ध" ऐसा क्यों पड़ा ?

भिक्षुओ । जो रूप—अतीत, अनागत, वर्तमान, अध्यात्म, वाह्य, स्थूल, सूक्ष्म, हीन, प्रणीत, दूर, निकट है—वह रूप-स्कन्ध कहा जाता है। जो वेदना । जो सज्ञा । जो सस्कार । जो विज्ञान—अतीत —है वह विज्ञान-स्कन्ध कहा जाता है। भिक्षु । इसी से स्कन्धों का नाम स्कन्ध पड़ा है।

साधुकार दे फिर आगे का प्रश्न पूछा—भन्ते । रूप-स्कन्ध की प्रज्ञिस का क्या हेतु = प्रत्यय है १ वेदना-स्कन्ध की १ सज्ञा-स्कन्ध की १ सस्कार-स्कन्ध की १ विज्ञान-स्कन्ध की प्रज्ञिस का क्या हेतु = प्रत्यय है १

भिक्षु ! रूप-स्कन्ध की प्रज्ञिस का हेतु = प्रत्यय यहीं चार महाभूत हैं । वेदना-स्वन्ध की प्रज्ञिस का हेतु = प्रत्यय स्पर्श है । सका-स्कन्ध की प्रज्ञिस का हेतु = प्रत्यय स्पर्श है । सकार-स्कन्ध की प्रज्ञिस का हेतु = प्रत्यय स्पर्श है । विज्ञान-स्कन्ध की प्रज्ञिस का हेतु = प्रत्यय नाम-रूप है ।

साधुकार दे फिर आगे का प्रक्त पूछा-भन्ते ! सत्काय-दृष्टि कैसे होती है ?

भिक्षु । कोई अज्ञ = प्रथक्जन ' रूप को आत्मा करके जानता है, या आत्मा को रूपवाला,

वासी द्वं। यह पेट्नाभी । यह स्वर्णमी । यह कथियामी | मिश्रुओ ! इसे भी भागभार देख को में वामर्थों का स्वय होता है।

बह रूप को कामा करके नहीं कालता है किंद्रा कारमा को कूप बाखा जामता है। मिहामी! उसका जो ऐसा पानना है वह संस्कार है। वस संस्कार का नया निवान = समुदय = वार्त = ममब है! मिहामो! निराम प्रकृति संस्कृत है। वेदा के प्रकृत होती है उससे क्ष्ण = पूपक्षन को तृष्णा उसक हाती है। उसी से संस्कार पैता होता है। मिहाभी | इस तरह बह लंस्कार भी करिय नृप्या मी पत्रना भी । स्पर्त भी अधिवा भी करिय संस्कृत कीर किसी कारण से उपक्ष होने वासी है। मिहाभी! इस भी बाय भीर देख करे से आकर्ष का अब होता है।

बहु क्य को मार्गमा करके नहीं बानता है। जीर न बारमा को क्यवाका जानता है। किन्तु मारमा में क्या है जेमा जानता है। मिल्लुजो | उसका को ऐमा। जानना है बहु सरकार है। कम संस्कार का क्या निहान । मिल्लुफो | कुमै भी खान जीर ऐसा को से माजवाँ का सम होता है।

यह रूप को जारमा करके नहीं कानता है, य धारमा को रूपकाका कानता है न सारमा में रूप ह एसा क नता है मिन्तु रूप में धारमा है, ऐसा कानता है। मिश्रुओ ! कदक को पेपा बानता है वह सरगर है। उस संस्थार पा नया नियान = ध्युत्य = काति = प्रमाव है ! मिश्रुओ ! किसा-पूर्व में गरंपरों मां भी बदना होती है उकसे मक=प्रथक कन को तुरगा उत्पक्त होती है। उसी में मंदमा पैता होता है। मिश्रुओ ! युग तरह कह मंदकार भी जानित्य तृष्णा भी वेदना भी रूपरों भी अविद्या भी कतिया संस्कृत कर किश्च कराज से उत्पक्त होते वाकी है। मिश्रुओ ! इस भी जान कर देग्य कैसे से प्रावादों का स्वय होता है।

बह रूप को आपना करके नहीं जनता है व कारमा को क्यबाजा जानना है न आपना में रूप है ऐसा व नता है और न कर में जापना है येखा व्यानता है क्लू वह बेदना को आपना करके जानता है जापना को बर्गना याद्या जापना है कारमा को वेदना है ऐसा आपना है येदना में भारता है ऐसा जानता है। संता की । संस्कार को । किस्ता को "

बहुन हा कर को न बेनुना का न संद्रा को न संस्थार को जार न विद्राव को आराग वरके बानहा हूं किन्तु नेगा मह मानदा है—को आराग है बढ़ी कोक है। सा मैं मरने के बाद निन्य भुव साहरत और परिवर्णन-दिश्य हा व्यक्तिंग।

भिश्लमी ! कमकी जी यह कारतह होते हैं यह संस्कार है । उस संस्तार का क्या विदान है । मिलाओं ! इस सी जान आर देख कर काकाकों का क्या होता है ।

हिन्तु "ह ऐसा सह सानता है—म से हुना हूँ भीर न सरा कुछ होने न में हूँगा और न सरा कुछ होगा।

सिहुका | उसकी का बह उच्छेप् रुष्टि है यह संस्कार हैं। । शिहुको | इसे मी जान और दैप कर कामर्थी का सम्बद्धाना है।

किन्तु वह संग्रह घाएं। इति है विचिक्तिया करने बाला और सब्दर्स में उसकी तिद्धा नहीं होता इ

िशाओं | उपका जो यह लाग्देद वसमा और सन्दर्भ में निष्ठा का वही हाना है यह संस्थार है।
उस संस्थार का का निष्ठाण = मामुद्य ज्ञाति का सकत है। निष्ठाण | कावियान्त्र के संस्था से जो
देश्या होनी है जाना आग = व्यवस्था को मुस्ता जनका होनी है। वसी से संस्थार देशा होना है।
जिन्नाभी | दूरा नार का वर्णकार को अभिनयः कृष्या जी विष्या की दूरमं की क्षेत्र की
की विस्ता सेमा है।
की कीमा सेमा होना है।
किस्सा वा का को साथ होने वार्ला है। निष्ठाओं | दूरों की जान भीर देग सैने
का अस्ता वा का होना है।

चौथा भाग स्थविर वर्ग

§ १. आनन्द सुत्त (२१ २ ४ १)

उपादान से ही अहंभाव

ऐसा मैंने सुना।

एक समय आयुष्मान् **आनन्द श्रावस्ती में अनाथिपि**ण्डिक के आराम जेनवन में विहार करते थे।

वहाँ आयुप्तसन् आनन्द ने मिक्षुओं को आमत्रित किया—आबुस भिक्षुओ ।

"आद्यस ।" कहकर उन भिक्षुओं ने आयुष्मान् आनन्द को उत्तर दिया ।

आयुप्मान् आनन्द बोले—आबुस । यह आयुप्मान् मन्तानिषुत्र पूर्ण हम नये मिश्चओं के बहे उपकार करने वाले हैं। वे हमें ऐसा उपदेश देते हैं, "आबुस आनन्द । उपादान के कारण ही 'अस्मि' होता है, अनुपादान के कारण नहीं।

"किसके उपादान से 'अस्मि' (=में हूँ) होता है ।

"रूप के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं। वेदना के । सज्ञा के । सस्कार के । विज्ञान के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं।

''आबुस आनन्द ! जैसे कोई स्त्री, पुरुप, लड़का या युवक अपने को सज-धज कर दर्पण या परि-द्युद्ध निर्मल जलपात्र में अपने चेहरे को देखते हुए उपादान के साथ देखे, अनुपादान के साथ नहीं। आबुस आनन्द ! इसी तरह रूप के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं। वेदना । सज्ञा । सस्कार ं। विज्ञान के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं।

"अञ्चस आनन्द ! तो तुम क्या समझते हो, रूप नित्म है या अनित्य ? अञ्चस ! अनित्य है।

''वेटना , सज्ञा् , सस्कार , विज्ञान ।

आवुस । अनित्य है।

"इसिलिये , यह जान और देख कर पुनर्जनम में नहीं पड़ता है।"

अञ्चल ! अञ्चल्यान् मन्तानिपुत्र पूर्ण हम नये भिक्षुओं के बढ़े उपकार करने वाले हैं। वे हमें ऐसा उपदेश देते हैं। उनके इस धर्मीपदेश को सुन मैं स्रोतापन्न हो गया।

§ २. तिस्स सुच (२१, २, ४, २)

राग-रहित को शोक नहीं

थ्रावस्ती जेतवन

उस समय भगवान् के चचेरे भाई आयुष्मान् तिष्य कुछ भिक्षुओं के बीच ऐसा कह रहे थे— आयुम ! मुझे कुछ उत्साह नहीं हो रहा है, मुझे दिशायें भी नहीं छीन रही है; धर्म भी मुझे नहीं स्याट या भारता में रूप था रूप में भारता बालता है। वेदवा को । मंद्रा को । संस्कार को । विश्रान को भारता करके ी सिद्धा | दूसी सरह सत्काय-तरि होती है।

सामुक्तर वे किर आगे का महत्र पूछा-भारते ! रूप के तथा साहबाद दोप जार मीहा है ? वेदमा संबा संस्कार विज्ञान के तथा आस्त्राह बाप जार मीहा है ?

मिश्रु । कर के कारण जो जुल और भारम जनक होता है वह कर का भारताद है। कर नो स्वित्त होता है वह कर का भारताद है। कर नो स्वित्त होता है नह रूप का सीट परिवर्तन होता है। कर नो स्वित्त होता है। वहन के प्रति को कल्पराग का प्रहाण है वह कर से मांछ है। वहन के निर्मा के । मंत्रा के । मंत्रा के । संस्कारों के । विद्याल के करल वो सुन्न और भाराम उत्तव होता है वह विद्याल का भरताद है। बिद्याल को अनित्व दुन्ता और परिवर्तनतीय है वह विद्याल को प्रति को कल्पराग का प्रहास है वह विद्याल से मोंग्र है।

साहकार दे किर आने का महन बुक-अन्ते ! क्या कान और देखका इस विज्ञान बाढ़े सरीर में तबा बाहर के सभी निभिन्ता में बहुकार सम्बंधर साह और जन्मवान नहीं होते हैं !

सिह्यु ! को कर-अतीत क्यागत वर्तेसान आकारम बाह्य न्यूक सुद्दम द्वीन प्रणीत हुए, निकट-है समी न मेरा है व 'में' हूँ, बार व मेरा कारमा है। इसे वचार्यता स्वा-एवंक बात छेवा है। को बेदा मंत्र संस्कार विज्ञान व मेरा है जिंदी हैं बीर न मेरा आरमा है। इसे वचा पैता प्रचा-एवंक बात केता है। प्रिस्तु ! इसे हो बाव कीर वेककर दृष्ट विज्ञानवाक दारीर में तथा बादर के समी विभिन्ना में बहंबार समंत्रार, सात और बजुचव नहीं होते हैं।

वस समय किसी शिक्ष के बिक्त में येखा. विकर्ष वस—यदि कर बनाया है बेदना संबा संस्थार दिल्लान सभी बनाया है तो बदाया से क्षित्रे गर्च कमें कैसे किसी को कॉर्सी !

त्रव मागवा ने जयने विकास का मिश्च के विकास के विकास मिश्च माँ का सामित्रव किया—सिश्च मो है हो सकता है कि वहाँ कोई बेसमक अविदाल तुष्या से असिस्त हो अपने विकास प्रतिकृति के सामित्र की अपने विकास प्रतिकृति के सामित्र की कोर जाने वोग्य समझ बैठे—कि विकास का का है तो अवस्था है किये गर्न कर्म कैसे किसी को कर्मों है सिश्च को असी में सी देशी में ही असिस्त का हमें प्रतिकृति के कर्मों है सिश्च को असी में सी देशी में ही असिस्त का हमें प्रतिकृति के कर्मों हमें सिश्च कर समझ क्षेत्रा चाहिये।

मिल्ला ! तो तथा समझते हो कप नित्व है वा अनित्व !

स्रोतिय सन्ते ।

बंदना मंत्रः मंस्कार विश्वान

को भनित्व है वह बुजा होगा या सुन्त है

मन्ते ! हुन्छ होगा ।

का समित्य पुत्ता और परिवर्शनसीक है उसे क्या देखा समझना वश्चित है—यह मेरा है वह मैं है, यह मार कारना है है

महीं मन्ते 1

इमलिये । यह कान जीर देख वह पुनर्जन्म में नहीं पहला।

च अनीय वर्ग समाप्त

चौथा भाग

स्थविर वर्ग

६१. आनन्द सुत्त (२१ २ ४ १)

उपादान से ही अहंभाव

ऐसा मैने सुना।

एक समय अायुष्मान् **आनन्द् श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के** आराम जेनवन में विहार करते थे।

वहाँ आयुप्तसन् आनन्द ने भिक्षुओं को आमंत्रित किया-आवुस भिक्षुओ !

"आव्रुस ।" कहकर उन भिक्षुओं ने आयुष्मान् आनन्द को उत्तर दिया।

आयुप्मान अनन्द वोले—आवुस । यह आयुप्मान् मन्तानिषुत्र पूर्ण हम नये भिक्षुओं के वदे उपकार करने वाले हैं। वे हमें ऐसा उपदेश देते हैं, "आवुस आनन्द । उपाटान के कारण ही 'अस्मि' होता है, अनुपादान के कारण नहीं।

"किसके उपादान से 'अस्मि' (=मै हूँ) होता है ।

"रूप के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं। वेदना के । सज्ञा के । सस्कार के । विज्ञान के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं।

"शाबुस आनन्द ! जैसे कोई स्त्री, पुरुप, लड़का या युवक अपने को सज-धज कर दर्पण या परि-गुद्ध निर्मल जलपात्र में अपने चेहरे को देखते हुए उपादानं के साथ देखे, अनुपादान के साथ नहीं। आबुस आनन्द ! इसी तरह रूप के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं। वेदना । सज्ञा । सस्कार । विज्ञान के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं।

"आवुस आनन्द ! तो तुम क्या समझते हो, रूप नित्य है या अनिस्य ?

आवुस ! अनित्य है।

''वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

आवुस । अनित्य है।

"इसिलिये , यह जान और देख कर पुनर्जन्म में नही पड़ता है।"

अञ्चल ! अञ्चल्मान् मन्तानिपुत्र पूर्ण हम नये भिक्षुओं के बढ़े उपकार करने वाले हैं। वे हमें ऐसा उपदेश देते हैं। उनके इस धर्मोपदेश को सुन मैं स्रोतापक्ष हो गया।

§ २. तिस्स सुत्त (२१, २, ४ २)

राग-रहित को शोक नहीं

थावस्ती जेतवन

उम समय भगवान् के चचेरे भाई आयुष्मान् तिष्य कुठ भिक्षुओं के बीच ऐसा कह रहे थे— आवुम ! मुझे कुठ उत्पाह नहीं हो रहा है, मुझे दिशार्ये भी नहीं दीख रही है, धर्म भी मुझे नहीं स्वास्त्र हा रहा है, मरे विकास बहा आकरत हो रहा है, बेसन से मैं शहाबर्य का पासन कर रहा हैं, धर्म मैं मधे विविधितमा दरवस हो रही है।

तर कुड सिद्ध वहाँ समदान से वहाँ कामे और समदान को समियान्त कर एक ओर बैठ गये। एक भर बंड उन मिद्धमाँ ने समदान से कहा "सम्हे | अग्रहान के वचेरे माई समुप्तान् तिष्य इष्ट सिद्धमां के बांच ऐमा कह रहे वे — वर्ध में सुक्ष विविक्तिया उत्तव हो रही है।"

तद सराव मृशंकिसी सिक्षुको अध्यामिकता किया 'सिक्षु] हुवी मेरी और से आकर तिष्व भिन्न को कहो— अपूस तिष्य ! आपको कुक कुका रहें हैं।"

भारते बहुत अन्त्रां कर वह तिहु प्रशासन को उत्तर है वहाँ मासुप्तान् तिस्य से वहाँ गया भार सेका—मादम तिस्य । यह सायको बुका रहे हैं।

श्रृष्प । बहुत वण्डा के अधिवादक कर एक और वैंट गया । सामा और अगवाद को अधिवादक कर एक और वैंट गया ।

कार्या भार सरावार्य्य कर एक जार वट राय । एक क्षोर हिंदू को शाकुप्तान् तिरुप से सरावार्य्य कोके "तिरुप | क्या तुसने सबसुष कुठ मिह्नुसाँ के ग्रांच पना कड़ है— वर्स में सन्ने विश्विकता अंचक को रही है !

मन्ते ! हाँ ।

शन्त : हा । दिन्द । तो द्वास क्या समझने ही किसे क्ष्ण के प्रति तता च हन्त् = प्रेस = दिपासा = परि टाइ = तृत्या यह दिवसे कस कप के विपरिणत तथा सन्दरका ही जाने से क्या सीक रोजा पीदमा सुगर पीर्मनन अप उपालस (च्योसानो) वर्षी हाले दिंग

कों सम्बे | इस्ते वं। रेंक है किया | येगी हो बात वं। एस्प कंप्रति ; बन्तन केप्रति । सङ्घा केप्रति ; मंरद्वारा केप्रति : स्तानि ने कोक परिवेच उरुपक कोले के ?

हाँ मन्त्र !

दों इ. ६ किया । जानी ही बात है। बिकास के प्रति किमे ताम = एज्य = प्रेस = पिपाला = परिक्र इ. = मृत्या वस हैं उसे उस विज्ञास के विपरित्तत तथा अन्यश्न हो जाने से सीक रोजा परित्या सुन्य व्यक्तिक अन्य कवायाल हात हो हैं।

हाँ मन्दा !

निष्य ! तर का समझते हा जिस कर के मति सभी इत्ताति वह ही सर्थ हैं उसे उस रूप के विवरित्तन तवा अस्पना हा ज ने 🔳 साक्षाकृति होते !

नहीं भन्ते !

बांक है निष्य | जारी हो बात है। जिस रूप क सति । वेदका के मति । संज्ञा के मति । संस्तार के मति । विभाग के मति तानी सामादि लक्ष हा ताव है उस्त अस विज्ञान के विवासिकत तथा अस्पार हो आने सा सामार्गद चाही होते।

निष्य ! शा तहा यथा रामझने हा अप तिन्य ह या अनिन्य !

अन्दिर मुख्य १

बेरमा । गेहा । गेरकार । विभाव है

अस्तिः इत्याः

इपान्ति । यह जान भार देग लेने में भी पुनर्जन्म वर्षी होता है।

्रिया अने थे। पुरुष बंा। वृक्ष पुरुष आने कुमान ही और शुरुश नहीं। शुक्ष बहु अनुस्य को अनीहमान नहीं है क्षण आर्तपुत्रक अनुस्य से आर्त वृत्ति । वह निमा वहें—है पुरुष १ यह आर्त है। इस वह कुछ दृश्य थी। पुछ पुरु क्षण्या पुत्र कर बोलामा देखाते। वहों वर्षे दी ग्रीव दादिस वा वदद्या। उस रास्ते पर भी कुछ दूर जाओ। कुछ दूर जाकर तुम्हें एक घना जगल मिलेगा। उस पर भी कुछ दूर जाओ। कुछ दूर जाकर तुम्हे एक नीचा गड्ढा मिलेगा। उस पर भी कुछ दूर जाओ। कुछ दूर जाकर तुम्हें एक खाई ओर प्रपात मिलेगा। उस पर भी कुछ दूर जाओ। कुछ दूर जाकर तुम एक समतल रमणीय प्रदेश में पहुँचोगे।

तित्य । बात को समझाने के लिये मैंने यह उपमा कहीं है। उसका मतलब यह है। तित्य । यहाँ मार्ग में अकुशल मनुष्य में पृथक्जन समझना चाहिये, और मार्ग में कुशल मनुष्य से अईत् सम्यक् मम्बुद्ध तथागत को।

तित्य । दो रास्ता विचिकित्सा का द्योतक है, वायाँ रास्ता अष्टाद्विक मिथ्यामार्ग का, टाहिना रास्ता आर्य अष्टाद्विक मार्ग का—जैसे सम्यक् दृष्टि सम्यक् समाधि ।

घना जगल अविद्या का द्योतक है। बेढा नीचा गड़ा कामा का, खाई और प्रंपात कोघ तथा उपायास का, और समतल रमणीय प्रदेश निर्वाण का द्योतक है।

तिर्प । इसे समझ कर श्रद्धा से रही, में तुम्हें उपदेश देता हूं । भगवान यह बोले ! सतुष्ट हो आयुष्मान तिष्य ने भगवान के कहे का अभिनन्दन किया ।

§ ३. यमक सुत्त (२१. २ ४ ३)

मृत्यु के बाद अर्हत् क्या होता है ?

एक समय आयुष्मान् सारिपुत्र श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के आराम जेतवन में विहार करते थे।

उस समय यमक नामक भिक्षको इस प्रकार की पापयुक्त मिथ्या धारणा हो गई थी—में भग-वान् के बताये धर्म को इस प्रकार जनता हूँ कि क्षीणाश्रव भिक्ष शरीर के गिर जाने पर (=मृत्यु के बाद) उच्छित्र हो जाते हैं, विनष्ट हो जाते हैं, मरने के बाद वे नहीं रहते हैं।

कुछ मिक्षुओं ने यमक भिक्षु की यह पापयुक्त मिथ्या घारणा को सुना । तब, वे मिक्षु जहाँ आयुष्मान् यमक थे वहाँ गये, और कुशल-क्षेम पृष्ठने के वाद एक ओर वैठ गये। एक ओर वैठ, उन मिक्षुओं ने आयुष्मान् यमक को कहा, 'आवुस यमक । क्या सचमुच में आप को ऐसी पापमय मिथ्या- घारणा उरपन्न हुई है ।'

आवुस । में मगवान के वताये धर्म को इसी प्रकार जानता हूं कि क्षीणाश्रव भिक्षु शरीर के गिर जाने पर उच्छित्र हो जाते हैं, विनष्ट हो जाते हैं, मरने के बाद वे नहीं रहते हैं।

आबुस यमके ' ऐसा मत कहें। भगवान् पर झूठी वात मत यापें। यह अच्छा नहीं है। भगवान् ऐसा नहीं कह सकते है कि, क्षीणाश्रव भिक्षु शरीर के गिर जाने पर उच्छिन्न हो जाते हैं, विनष्ट हो जाते हैं, मरने के वाद वे नहीं रहते हैं।'

उन भिक्षुओं से ऐसा कहे जाने पर भी अत्युप्मान् यमक अपने आग्रह को पकड़े कहने छगे, "आवुस! में भगवान् के बताये धर्म को इस प्रकार जानता हूं।"

जब वे भिक्षु आर्युष्मान् यमक को इस पापमय मिध्या धारणा से नहीं अलग कर सके, तव भासन से उठ जहाँ आर्युष्मान् सारिपुत्र थे वहीँ चले गये। जाकर आयुष्मान् सारिपुत्र से बोले, "आवुस सारिपुत्र ! यमक भिक्षु को ऐसी पापमय मिध्या धारणा हो गई है । अच्छा होता यटि आप कृपा करके जहाँ अर्युष्मान् यमक हैं वहाँ चलते।

आयुप्मोंने सारिंपुत्र ने चुप रह कर स्वीकार कर लिया। तव आयुप्मान् सारिपुत्र ने संध्या समय ध्यान से उठ जहाँ आयुप्मान् यसक थे वहाँ गये, और ४९ दारहा है, मेरे सिक्त में कहा जाकरण दारहा है, बेसन से मैं महत्त्वर्णका पाकत कर रहा हैं। पर्ममें ससे विविक्रिया उत्पन्न हो नहीं हैं।

ता कुछ निश्च वहाँ प्रवास में बहाँ अपे और आपसात को अभिवादन कर एक ओर वेट गए। एक भर वेट उन मिश्चमां ने मासतन से कहा "अप्ते ! अग्रस्त के बचेरे माई आसुम्मान विष्य इस्स् मिश्चमां के बांच ऐपा कह रहे थे— घर्म में अग्रस विधिकत्सा उत्पन्न हो रही है।"

त्तव सगव न में किसी शिक्षा को कासनिकत किया सिक्षा ! शुप्तों सेरी कार से साकर तिष्य सिक्षा को कही — में क्या किया | कायको बुद्ध बच्चा रहे हैं |

'मार्च बहुत मध्या कह वह मिश्च भगवान को उत्तर दे वहाँ आयुष्पाम् विष्य ये वहाँ गया

और बोका—आदुस तिप्प ! युद्ध आपको युक्त रहे हैं । अनुस ! बहुट संस्का कह सामुप्तान तिप्प कस लिख को कस ए वहाँ सगवान् से वहाँ

सावा भीर मराबाद को जिलवादन कर एक ओर बैठ गया। एक सोर बैठे हुये जालुच्यान तिच्य से अराबान बाके "तिच्य ! नवा तुमने सबसुच कुछ मिश्चर्यों के बीच ऐसा कहा है— बाते में सुक्ते विधिकत्या उत्पेक हो रही है !

शको । हाँ ।

ित्य | यो तुम नवा समझते हो किसे इन्न के मित राग = इन्च = मेंस = पिपासा = परि छाह = तुम्मा वर्ते हैं इसे दस इन्न के विपरितन्त तथा सन्त्रया हो आने से क्या शोक रोगा पीटना दुन्त होर्लनस्य भीर क्यासस्य (=चरेसालो) नहीं होते हैं १

हाँ मन्ते ! होते हैं।

क्षेत्र है, तिरव ! पेसी ही भात है। इस्य के मति ; संज्ञा के मति ; संज्ञा के मति ; संस्क्रारों के मति : समावि से सीक परिचेत्र जन्मक दोनों हैं!

हाँ सम्ते !

होक है, तित्व । ऐसी हो बात है। विकास के प्रति जिसे राग व रुम्य व्यक्ति हो वा परिस्ताह व त्या करें हैं उसे उस विद्यास के विपरिस्ता तथा अन्यमा हो बाने से सीक रोबा परिस्ता हुन्य वीसेन्तर बीर उपायान होते ही हैं।

हाँ मध्ये ।

तिरव ! तो क्वा समझते हो। जिसे कम के अधि सभी समाहि वस हो। सबै है बसे बम रूप के विचरित्त तवा सम्मधा हो अने से सोअबि होंगे !

वहां सन्ते !

दी के हैं दिन्द | पेश्ती हो बात है। जिसे क्या के मित्री | वैत्वार के मित्रे | संझा के मित्र | एंस्प्रार के मित्र | श्रिताय के मित्रि कमी पागायि लक्ष दो गये हैं जाने जास विश्वास के विपरित्य त^{ार्थ} सम्पन्ना हो जाये से क्षोचावि नहीं दींगे |

तिष्व ! तो तुस क्या समझते हो क्य नित्य है वा अभित्य !

व्यक्तिय सन्ते !

मेर्या । संशा । संस्थार । विशाम ?

शनिया मन्ते !

इससिए यह बाब भीर वैण केने से थी पुनर्जन्स नहीं दौता है।

विष्य | बेसे की प्रवस्त हो। वह पुरुष मार्ग-कुमक हो और तुसरा नहीं । तब यह मुक्त की मार्गक्राम कहीं है वह आर्गक्रक मनुष्य से मार्ग कुछे। यह देशा को—है पुरुष ! यह नार्ग है। इस पर कुत कुर कामो ! कुत पूर काका पुन्न एक गोरास्ता हैगीते । वहाँ वार्व को बीक शाविक से नक्षम ! मन में ऐसा हो, " " इसके माथ मदा आरक्षक तैयार रहते हैं, इसे पटक कर जान में मार देना सहज नहीं हैं। तो क्यां न में चाल से भीतर पैठ कर अपना काम निकाल ।" वह उस मृहपित या मृहपित-पुत्र के पाम जा कर ऐसा कहें—देव! में आपकी सेवा करना चाहता हूँ। तब, उसे वह अपनी मेवा में नियुक्त कर ले। वह सेवा करें, म्बामी के टठने के पहले ही उठ जाय, स्वामी के सोने के याद मोये, आजा सुनने में सदा तत्पर रहें, मनोहर आचार-विचार का बनके रहें, और बड़ा प्रिय बोले! वह मृहपित या मृहपित-पुत्र उसे अपना अन्तरम मित्र समझ कर उसमें बड़ा विश्वाम करने लगे। जय उस मनुष्य को यह माल्यम हो जाय कि मैने इस मृहपित या मृहपित-पुत्र के विश्वाम को जीत लिया है, तय कहीं एकान्त में उसे अकेला पा कर तेज तलवार से जान से मार हे।

आवुस यमक । तो आप क्या समझते हैं—जब उस मनुष्य ने उस गृहपित या गृहपित-पुत्र से कहा था—देव । में आपकी सेवा करना चाहता हूँ—उस समय भी वह उसका बधक ही था। बधक होते हुये भी उसने नहीं पहचाना कि यह मेरा बधक है।

जय वह सेघा कर रहा था, स्त्रामी के उठने के पहले ही उठ जाया करता था, स्त्रामी के मोने के बाद सोता था, आज्ञा सुनने में सदा तम्पर रहता था, मनोहर आचार-विचार वाला होके रहता था, और बड़ा प्रिय बोलता था, उस समय भी वह बधक ही था। बधक होते हुए भी उसने नहीं पहचाना कि यह मेरा बधक है।

जव उसने एकान्त में उसे अकेला पा जान से मार दिया, उस समय भी वह बंधक ही था। वधक होते हुये भी उसने नहीं पहचाना कि यह मेरा यधक है।

आवुस । ठीक है।

अतुस । इसी तरह, अज पृथक्जन रूप को अत्मा करके जानता है, या आत्मा को रूप वाला, या आत्मा में रूप, या रूप में आत्मा, वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान । वह अनित्य रूप को अनित्य रूप के तीर पर यथार्थत नहीं जानता है, अनित्य वेदना को अनित्य वेदना के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है, अनित्य सक्तार को , अनित्य विज्ञान को । वह हु ख रूप को दु ख रूप को दु ख रूप के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है, दु ख वेदना को , दु ख सज्ञार को , दु ख संस्कार को ', दु ख विज्ञान को । वह अनात्म रूप को अनात्म रूप के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है, अनात्म वेदना को , अनात्म सज्ञा को , अनात्म संस्कार को , अनात्म विज्ञान को । सस्कृत रूप को तौर पर यथार्थत नहीं जानता है । यथक रूप को वधक के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है । वधक रूप को वधक के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है । वधक रूप को वधक के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है ।

वह रूप को प्राप्त होता है, रूप का उपादान करता है, और समझता है कि रूप मेरा आत्मा है। वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान । पंच-उपादान स्वन्ध को प्राप्त हो, उनका उपादान कर उमे दीर्घकाल तक अपना अहित ओर दु ख होता है।

आवुस । ज्ञानी आर्थश्रावक रूप को अत्मा करके नहीं जानता है, न आत्मा को रूप वाला, न आत्मा में रूप, न रूप में आत्मा, न वेदना , सज्ञा , सर्कार , विज्ञान ।

वह अनित्य रूप को अनित्य रूप के तोर पर यथार्थत जानता है। अनित्य वेटना को '। अनित्य मझा को । अनित्य सस्कार को । अनित्य विज्ञान को ।

वह दु ख रूप को दु ख रूप के तौर पर यथार्थत जानता है । वह अनात्म रूप को अनात्म रूप के तौर पर यथार्थत जानता है । वह संस्कृत रूप को संस्कृत रूप के तौर पर यथार्थत जानता है । वह वधक रूप को वधक रूप के तौर पर यथार्थत जानता है । • वह रूप को नहीं प्राप्त होता है, रूप का उपादान नहीं करता है, न ऐसा समझना है कि रूप कुमल-प्रेम पुत्र कर एक और बैठ गय। एक जोट बैठ अ जुन्म म् सारिपुत्र अ चुन्माम प्रमक्त से बोध 'भारत'। क्या मच में अपको ऐसी पायमय जिल्ला आरला हा गाई है

म चुम ! में मगवान के बताये धर्म को इसी प्रकार बानता हैं

मानुस पसक ! तो पेवा समझते हैं इस्प निष्य है वा म नत्य है

सबुय ! अभिन्य है।

पर्ता _ह मञ्जा ह संस्कार ह विज्ञान है

सबुम ! सने-य है।

इसकिय यह अन कर देश कर बुनर्जन्स में नहीं पहता।

म.चुम पसक ! तो क्या समझते हैं जो वह रूप है वही सीव (= तयागत) है ?

नहीं अनुसः !

वेदना । मंद्रा: । संस्कार । विशास है वही जीव है ?

नहीं मञ्जय !

म बम बमक ! तो क्या समझत है कर में बीच है !

नहीं साहम !

ता क्या जीव रूप स मिज कहीं है है

महीं अज़म !

बेइना । बेइना में मिछ ?

मंत्रा । मंत्रा से सिम्न 📍

मंस्कार । मंस्रार स भिन्न 🚶

विज्ञान । विज्ञान से शिक्र 🚶

नहीं स्थापन ।

| बायुम पम इ । ना क्या समझते हैं। रूप देवना-संज्ञा-संरक्षर आर विशास कीय है । | निर्मा कायुम !

भ पुन ममक । तो स्वा ममक्ष्म हैं जीव कोई कप-रहित बंदमा-रहित मंत्रा-रहित संस्कार रहित और विकास रहित है ?

नहीं आतम १

अपुन नमत ? जब प्रवार्थ में मारता शाह आँव उपकाब नहीं हाता है तो क्या आपका ऐसा कहन। देक हैं "मारज्ञ क बनाय पर्म का में हुन प्रशार जनता हूँ कि सीमार्थन सिम्न हारीर के तिर जान कर वरिष्यु हा जात है विनव हो जा है जिसने के नाव में बारी रहते हैं?

भारतान प्रशासक के जात है । यात है। जात है । असे के भारत कार प्राप्त है। भारतान मारिपुत्र ! मात्र सूर्ण का द्वांक में यायमक मिण्या वाश्या हा गई थी। किन्तु अपके हैंसे भारतियोग का गुण सेरी वह मिन्दा पारत्या किर गई और वर्षों में स्वासक में आ गोरा।

भनुग बसका पहि बागका बाहे ज्या पुण--हे सिय यसक शीवाश्रय अहेन निशु साथ के बार करा साम है !--मा भाग क्या कमा ती !

धानुम बकट है आपने टीट बटा। धैं कह उपना देना हूँ कियमें बान और भी ताह हो जपनी। अ चुन बक्ष है केन काई मुश्तिन वा मुक्ति कुछ महानवी बैभवासनी हा लियके ताब गरा अन्यक निगर रहते हा । यह जनका कोई सन् बन कर कर को उसे जन मान्यत बारवा बन्हें। उसके मन में ऐसा हो, "'''इसके साथ सदा आरक्षक तैयार रहते हैं, इसे पटक कर जान से मार देना सहज नहीं है। तो क्यां न में चाल से भीतर पंठ कर अपना काम निकाल ।" वह उस गृहपति या गृहपति-पुत्र के पास जा कर ऐसा कहें—देव। में आपकी सेवा करना चाहता हूँ। तब, उसे वह अपनी सेता में नियुक्त कर ले। वह सेवा करे, स्वामी के उठने के पहले ही उठ जाय, स्वामी के सोने के याद सोये, आज्ञा सुनने में सदा तत्पर रहे, मनोहर आचार-विचार का वनके रहे, और वडा प्रिय बोले! वह गृहपति या गृहपति-पुत्र उसे अपना अन्तरग मित्र समझ कर उसमें बड़ा विश्वास करने लगे। जब उस मनुष्य को यह मालूम हो जाय कि मैने इस गृहपित या गृहपित-पुत्र के विश्वास को जीत लिया है, तब कहीं एकान्त में उसे अकेला पा कर नेज तलवार से जान से मार दे।

आवुस यमक ! तो आप क्या समझते हैं—जब उस मनुष्य ने उस गृहपित या गृहपित-पुत्र से कहा था—देव ! में आपकी सेवा करना चाहता हूं—उस समय भी वह उसका वधक ही था । बधक होते हुये भी उसने नहीं पहचाना कि यह मेरा बधक है ।

जय वह सेवा कर रहा था, स्त्रामी के उठने के पहले ही उठ जाया करता था, स्वामी के सोने के बाद सोता था, आज्ञा सुनने में सदा तथ्पर रहता था, मनोहर आचार-विचार वाला होके रहता था, और वडा प्रिय बोलता था, उस समय भी वह वधक ही या। वधक होते हुए भी उसने नहीं पहचाना कि यह मेरा वधक है।

जब उसने एकान्त में उसे अकेला पा जान से मार दिया, उस समय भी वह वर्धक ही था। वधक होते हुये भी उसने नहीं पहचाना कि यह मेरा वधक है।

आवुस ! ठीक है।

अ.बुस ! इसी तरह, अज पृथक्जन रूप को अत्मा करके जानता है, या आत्मा को रूप वाला, या आत्मा में रूप, या रूप में आत्मा, वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान । वह अनित्य रूप को अनित्य रूप के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है, अनित्य वेदना को अनित्य वेदना के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है, अनित्य सस्कार को , अनित्य विज्ञान को । वह दुख रूप को दुप रूप के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है, दुख वेदना को , दुख सज्ञा को , दुख संस्कार को ', दुप विज्ञान को । वह अनात्म रूप को अनात्म रूप के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है, अनात्म वेदना को , अनात्म सज्ञा को , अनात्म संस्कार को , अनात्म विज्ञान को । सस्कृत रूप को संस्कृत रूप के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है । वधक रूप को वधक के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है । वधक रूप को वधक के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है । वधक रूप को वधक के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है ।

वह रूप को प्राप्त होता है, रूप का उपादान करता है, और समझता है कि रूप मेरा आत्मा है। वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान । पच-उपादान स्कन्ध को प्राप्त हो, उनका उपादान कर उसे दीर्घकाल तक अपना अहित और दु ख होता है।

आवुस । ज्ञानी आर्यश्रावक रूप को अत्मा करके नहीं जानता है, न आत्मा को रूप वाला, न आत्मा में रूप, न रूप में आत्मा, न वेटना , यज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

वह अनित्य रूप को अनित्य रूप के तोर पर यथार्थत जानता है। अनित्य वेदना को । अनित्य मजा को । अनित्य सस्कार को । अनित्य विज्ञान को ।

वह दु स रूप को दु ख रूप के तीर पर यथार्थत जानता है । वह अनात्म रूप को अनात्म रूप के तीर पर यथार्थत जानता है । वह सस्कृत रूप को संस्कृत रूप के तीर पर यथार्थत जानता है । वह वधक रूप को वधक रूप के तीर पर यथार्थत जानता है । वह रूप को नहीं प्राप्त होता है, रूप का उपादान नहीं करता है, न ऐसा समझना है कि रूप मेरा नात्मा है। वेदना ी संज्ञा । मंसकार | विज्ञान । वृद्धा समझता है कि विज्ञान मेरा भारता है। बपादान स्टब्सों को व मास हो उनका बपादान म करते हुए उसे वीर्वकार तक भएता दित और क मुख होता है।

न बुष्ट सारियुत्र ! वे ऐसा द्वां होते हैं किम आधुष्यामों के बैसे कहणाशीक परसार्यी और उपन्नश हेने बासे गुरू-माई होते हैं। यह आधुष्माण् सारियुत्र के पर्सीपदेश को सुन सेश विश्व उपादान-रहित हो अन्यवा से सुन्त हो गवा !

आयुष्पान् सारिपुत्र वह बाके। संतुष्ट हो आयुष्पान् वसक वे आयुष्पान् सारिपुत्र के न्हें का

अभिनन्त्रन किया।

६४ अनुसाध सुच (२१ २ ४ ४)

त्रास का निरोध

मेसा मैने सुना।

पुत्र समय मगवान वैद्यासी में महाचन को कुटागारशास्त्र में बिदार करते में।

जस समय सञ्चाम अनुराध भाषान के पात ही बारण में इसी समाकर विहार करत थे।
तब कुछ तीरिक परिश्र कर वहीं अचुध्यान अनुराध ये वहीं जाये और कुसक-होन पूर कर एक
सार बैट गये। पुत्र जोर बढ़ जम तैयिक परिश्र कर्डों ने अनुष्यान अनुराध को कहा—अनुसा | को
तमागद जसर पुरुष = परमपुद्रश परान मांशि मार्ट है से पुत्रे आवे पर खेंच के विषय में चार स्वामों में से
किसी एक को बताते हैं—(1) मारी के बाद बोब रहता है (१) या मारी के बाद और नहीं रहता है
(2) या मारी के बाद बोब रहता मी है कार नहीं भी रहता है (९) या मारी के बाद जीव रहता में रहता है
कीर मारी देखता है।

दनके ऐसा कहते पर अमुराय ने दल तैयिक परित्र बका को कहा-अधुमा ! हाँ तब गत

चार स्थाना में सं किसी पुढ़ को बताते हैं।

इस पर उन वैधिक परिश्वकार ने कहा—स्वत्य यह कोई भया सभी द्वरत का बना मिछ भौगा था कोई सूर्व बेसमस न्यविर ही होगा | इस तरह व अधुष्पाय् बसुराव की सबहेकना कर भागन से उट बड़े गवे ।

तव उन परिमानको के साथे के बाद हो अनुप्राम भग्नराम के सम में पह हुमा—बाद में पर मामक मुने समके अभी का माम पुत्रे जो हैंहे किए सकार कहते से मानवम के सिकाम्न का सीन-प्रीम मामक माम सामान पर हुटी बात का बाएना बही होगा नमीं सुक्क बात होगी और कोई अपने पर्म प्रामान के निर्मालक में कि नेपन स्थान को नहीं प्राप्त होगा ?

तब आयुष्माय मनुराय वहाँ मरावाम् वे वहाँ रावे और मरावाम् व्य अभिवादव कर एक

और बैठ गरे।

ण्ड कोर कर अनुष्माण अनुराज जगवाण से बोल---अगी ! में स्ववाण के पास हो ज्ञारण में मुग्ने कमाकर विदार करना का । उस परिश्व कड़ी के अने के बाद ही मेरे सब में जह हुआ 'पदि व' परिश्व कर मुझे उमके आगे था अस्य पुर्जे जो मेरे किय प्रकार कड़ने से कोई अपने पास पर वाद के निम्मिनों में मिनिएन स्थान का नहीं सात होता है

अनुराय ! मी तुम पना समझने हो। कप निन्त है वा अनिरय है

अनिन्द भन्ते ।

इसमित प्रिया कन भार पेटर केंग्रे से पुनर्जन्स से नहीं पड़ता। अनुराव ! ती तुस पना समझते दा कर बीव ई है नहीं भन्ते।

वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान "?

नहीं भन्ते ।

अनुराध । तो तुम क्या समझते हो, रूप में जीय हैं ?

नहीं भन्ते ।

क्या रूप से भिन्न कही जीव है ?

नहीं भन्ते ।

वेदना , सजा , सस्कार , विज्ञान से भिन्न कही जीव है ?

नहीं भन्ते।

अनुराध ! तो तुम क्या समझते हो, रूप-पेटना-संज्ञा-सरकार और विज्ञान के विना कोई जीव है ? नहीं भन्ते !

अनुराध ! तुमने स्वय देख लिया कि यथार्थ में मत्यत कियी जोव की उपलिख नहीं होती हैं, तो क्या तुम्हारा ऐसा कहना ठींक या कि—''आवुम ! हाँ, जो तथागत उत्तमपुरप = परमपुरुष परम-प्राप्ति-प्राप्त हैं वे पूछे जाने पर जीव के विषय में चार स्थाना में से कियी एक को बताते हैं —-(१) मरने के बाद जीव रहता है, (२) या, मरने के बाद जीव नहीं रहता है, (३) या, मरने के बाद जीव रहता भी है और नहीं भी रहता है, (३) या मरने के बाद जीव न रहता है और न नहीं रहता है ?''

नहीं भन्ते !

ठीक है अनुराध, में पहले ओर अप भी दुख और हु ख के निरोध को बता रहा हूँ।

६ ५. वक्किलि छत्त (२१ २. ४.५)

जो धर्म देखता है, वह बुद्ध को देखता है, वक्कि छारा भात्म-हत्या

ऐसा मैने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह में वेळुवन कळन्दकनिवाप में विहार करते थे।

उस समय आयुष्मान् वक्किलि एक कुम्हार के घर में रोगी, हुँ खी और बढ़े वीमार पहें थे।

तव, आयुष्मान् चक्कि ने अपने टहल करनेवालां को आमिन्तित किया, "आवुस! सुनें, जहाँ भगवान् हें वहाँ जायाँ, और मेरी और से भगवान् के चरणों पर शिर से प्रणाम् करें, और कहें—भन्ते! वकिल भिक्ष रोगी, दु की और वहें वीमार हैं, वे आपके चरणों पर शिर से प्रणाम् करते हैं। और ऐसी प्रार्थना करें—भन्ते! यदि भगवान् जहाँ वकिल भिक्ष हैं वहाँ चलते तो वज़ी हता होती।"

"भावुस । यहुत अच्छा" कह कर वे भिक्षु आयुष्मान् वक्ष्मिक को उत्तर दे जहाँ भगवान् ये वहाँ गये, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ गये। एक ओर बैठ, उन भिक्षुओं ने भगवान् को कहा, "भन्ते। वक्क्षि भिक्षु रोगी , वहाँ चलते तो बढ़ी कृपा होती।"

भगवान् ने चुप रहकर स्त्रीकार कर छिया।

तव, भगवान पहन और पात्र-चीवर ले जहाँ आयुप्मान् वक्किल थे वहाँ आये।

मायुष्मान् बक्कि ने भगवान् को दूर ही से आते देखा, देखकर खाट ठीक करने लगे।

तव, मगवान अञ्चल्मान वक्किल से बोले, "वक्कि । रहने दो, खाट ठीक मत करो, ये आमन बिछे हैं, में इन पर बैठ जाऊँगा।" भगवान थिछे आसन पर बैठ गये। बैठकर, भगवान वक्कि भिक्ष में बोले, "वक्कि । कहो, तबीयत कैसी है, बीमारी घट तो रही है ?"

भन्ते ! मेरी तवीयत अच्छी नहीं है, यही पीडा हो रही है, बीमारी बदवी ही मालूम होती है।

बक्रकि ! तुम्हें कोई मकास वा पक्रतावा हो वहीं रह गया है ? मन्ते ! मझे बहुत सकास जीर पद्मनाचा हो रहा है ।

नवा तम्हें भीक नहीं पाछन करने का ब्रह्माचाय है ?

नहीं सन्ते ! सहे यह पश्चाचाप नहीं है ।

वक्कि । वब तुम्हें श्रीक नहीं पासन करने का प्रशास्त्रप नहीं है तो तुम्हें किस बात का समाज भीर पछताबा हो रहा है ?

भन्ते ! यहत दिमों से भगवान के दर्शन करने को आने की इच्छा थी किन्तु शरीर में इतक

बक्द की नहीं भा कि था सबना।

बक्कि ! करे इस गम्पूनी से मरे अहीर के दर्शन से पण होगा ! सक्कि ! जो धर्म को देवता है वह मुछे देवता है जो मुछे देवता है वह धर्म को देवता है

वक्रकि ! तो तम क्या समझते हो क्रम जिल्म है या अभिन्य !

अविका प्राप्ते ।

वेदना । संज्ञ' : गेरकार : विज्ञान है

व्यवित्व सन्ते !

इसोकिने यह अन और देखकर प्रवर्जन्य में नहीं पदशा है।

तब अगवान् आबुप्पान् वक्कि को इस तरइ उपदेश है जासब से उठ वहाँ गुरुकुट पर्मेत है वहाँ क्ले सबे :

तम भगवाम् के चके वाले के बाद ही अलुप्पाण् वक्कि ने बपने आहम करमेवाकों की भामित किया भावत । सर्वे असे बाद पर बदा कहाँ अधिशासि शिस्ता है वहाँ से बर्के। सम बैसे का कर के भीतर सरका अच्छा नहीं क्याता है।

"शाबुस | बहुत अध्या क्या वे आयुष्मान शब्दिक की उत्तर दे वर्ष्ट्र साद पर चना वर्षी

ऋषिगिकि चिका है वहाँ छे गने ।

त्रथ मगवान उस रात को जीर दिन के अवसेप तक गुद्धपुद पर्वत पर विद्वार करते रहे।

तन रात नीतने पर दो जल्पन्त सुन्दर देवता जपनी चलक से धारे शुक्कद पर्वत को बसकाते हुने वहाँ मगदान ये वहाँ नाने जीर भगवान को जीमवादन कर एक ओर साहे हो ग्रंथ । एक और साहे की पुत्र देशता मगदान् से बोका "लन्ते ! बक्कि लिह्न विसोक्त में बिक्त क्या रहा है।" हमरा देशता मगव न से बोका 'मन्ते ! वक्क मिल्ल अवस्य विशुक्त हो निर्वाण को प्राप्त होगा । इतना क्य वे देवता भगवान को अभिवादन कार प्रदक्षिणा कर वहीं अन्सर्वान हो गर्ने ।

तव इस रात के बीत वामे वर अगवान ने निश्चकों की व्यामन्तित किया "मिश्चकों ! पूर्वी वहाँ प्रकृषि मिह्न है वहाँ काओं। और उधारे कहीं-आयुक्त वक्कि | सरावाव वे चीर वो वो देवतामा

वै कार है उसे सर्वे ।

एक बार चार्व हो एक वेषता सगवान से बीका 'सन्ते ! बक्तके सिद्ध विसीध में विश्व कमा रहा है। इसरा देवता । जानुस वककि ! और अगवान आपसे कहते हैं---वक्कि ! सत हरी मत हरी तुम्हारी सून्यु निप्पाप होगी।

"मध्ये [बहुत अच्छा" कह ने मिश्च भगवान् को उत्तर है जहाँ आयुष्मात् । वक्कि वे वहाँ गर्ने । बाकर शासुष्पात् वककि से वोके-शासुष वरककि ! शुर्ने अगवाम् में और को व्यवसारों में बता करा है।

तव कानुष्मान् वनक्रकि में जपने द्वान करने नावों को जामन्त्रत किया अदलम ! सर्वे ससे बरब कर साद में तीचे उतार हैं। सुस कैमे को इस देंचे मामन पर बैठ संग्रहाल का उपक्र समय करम वहीं।

'अञ्चय । ब्रहुत अन्त्रा' कह, उन भिक्षुओं ने अञ्चष्मान् प्रकालि को उत्तर है, उन्हें पकड़ कर

आयुम ! आज की रात की अध्यन्त सुन्दर देवना । आयुम ! आर भगवान भी आपमें कहते है—वन्दरित ! मन दरो, मन दरो, नुम्हारी मृत्यु निष्पाप होगी।

बाबुस । तम, आप लेगि मेरी और सं भगमान के चरणा पर प्रणाम करें—भनते । वक्किल भिक्ष रोगी, पीदित और महुन बीमार है, सो वह भगमान के चरणा पर शिर से प्रणाम करता है और कहता है, "भन्ते । रूप अनित्य है, में उसकी अकाक्षा नहीं करता । जो अनित्य हैं वह हु रेग हैं, इसमें मुझे सन्देत नहीं । जो अनित्य, हु रा, और परिवर्तनशील हैं उसके प्रति मुझे छन्य=राग=प्रेम नहीं, इसमें मुझे कुछ सन्देह नहीं ।

वेदना ; सज्ञः , संस्मार , विज्ञान अनित्य । ।"

"आञ्चस । यहुत अच्छा" कह, वे भिक्ष आयुष्मान् वक्त्रलि को उत्तर हे चले गये।

तय, उन भिक्षुओं के जाने के याद ही आयुक्तान वक्काल ने आत्म-हत्या कर ली।

तत्र, वे भिक्ष जहाँ भगतान् थे वहाँ आये, और भगवान को अभिवादन कर एक ओर वैंठ गये।
एक ओर वैंठ, उन भिक्षुओं ने भगवान् को कहा, "भन्ते! वक्किल भिक्षु रोगी, पीदित और बहुत बीमार
है, यो भगवान् के चरणों पर जिर से प्रणाम् करता है और कहता है—भन्ते रूप अनित्य हैं में उसकी
आकाक्षा नहीं करता। जो अनिन्य हैं वह दुग्य हैं, इसमें मुझे सन्देह नहीं। जो अनित्य, हु स और परिवर्तनशील है उसके प्रति मुझे छन्द=राग=प्रेम नहीं है, इसमें मुझे कुठ सन्देह नहीं। वेडना , सज्ञा
सरकार , विज्ञान ।

त्व, भगवान ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया, 'भिक्षुओं ! चलो, जहाँ ऋषिगिलि शिला हे वहाँ चल चले, जहाँ घरकलि कुलपुत्र ने आत्म-हत्या करली है।'

, "भन्ते । बहुत अच्छा" कहकर उन भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

त्र, कुछ भिक्षुओं के साथ भगवान जहाँ ऋषिगिलि शिला है वहाँ गये। भगवान ने आयुष्मान् वक्किल को दूर ही से खाट पर गला कटे सोये देखा। उस समय, कुछ धुँवाती हुई छाया के समान पूरव की ओर उद रही थी, पिट्यम की ओर उद रही थी, कपर की ओर उद रही थी, नांचे की ओर उद रही थी, सभी ओर उढ रही थी।

तय, भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया, "भिक्षुओं । इस कुछ धुँचाती हुई छाया के समान पूरव की ओर उद नहीं हैं इसे देखते हो न ?"

भन्ते ! हाँ।

भिक्षुओ । यह पापी मार है, जो कुलपुत्र वक्किल के विज्ञान को खोज रहा है—वक्किल कुल-पुत्र का विज्ञान कहाँ लगा है ।

भिक्षुओ । वक्फिल कुलपुत्र का विज्ञान कहीं नहीं लगा है । उसने तो परिनिर्वाण पा लिया ।

६६ अस्सजिसुत्त (२१ २.४६)

वेदनाओं के प्रति आसिक नहीं रहती

एक समय भगवान राजगृह के वेलुवन कलन्दकनिवाप में विहार करते थे।

उस समय आयुष्मान् अस्सजि कादयपकाराम में रोगी, पीड़ित और बहुत बीमार थे। तथ, आयुष्मान् अस्सजि ने अपने टहल करने वालों को आमिन्त्रित किया, 'आबुस । आप जहाँ मर्गवान् हेना वहाँ जायँ, और मेरी ओर से भगव के चरणों पर शिर से प्रणाम् करें—भन्ते। अस्सजि भिक्षु रोगी

रिश्य. ४ ६

पीड़ित और बहुत बीक्षार हैं सो भगवान् के करमें पर शिर से प्रणास करते हैं। आर कहें—अन्ते ! पदि क्रुपा कर वहाँ अस्सक्षि मिश्रु हैं वहाँ करने तो वहीं अच्छी बात होती ।

"जायुम् । यहुत अपन्तां कह में भिक्षु आमुप्तान् अस्तित्र को उत्तर ने बहीं भगवान् में वहीं जाये और भगवान् का संतिवादन कर एक और जैत गये। एक और चठ उन मिक्कुओं ने भगवान् को कहा मन्ते । सरमाजि मिक्का नागी । वहीं ककते तो वहीं अपन्ती पात हाती।

भगवान ने भूप रह कर स्वीकार कर किया ।

तक मरावान संस्था लगाव स्थान सं वट कहाँ कालुट्यान करमात्र वे वहाँ गर्थ।

स बुप्पान भस्तिक में मगवान को दूर ही में काते देखा देख कर साट ठीक करने स्त्री ।

तक मरावान् कायुष्पान् सस्तक्षि संबोक रहवेदो अस्त्रिकृक्षाट ठीकमत करो । वे भारत विदेष में इकपर वेट बार्टिंगा।

भगवान् विश्वे बासन पर बैढ गर्थ और बायुप्पान् कस्मवि सं वोस्तं 'बस्सवि ! क्यी तर्वाचन कमी वै १^{९९}

भन्ते । मेरी सरीवस नवडी नहीं है।

अस्पति । तुंस्ट्रं कोई सकारू या पंत्रत वा ती नहीं रह गंपा है ?

मनी ! इमें हो बहुत बहा महाब रह गया है ।

अस्पति ! कहीं मुखें सींक न वाकन करने का प्रशासाय सा नहीं रह गया है ?

मध्ये ! नहीं सुझ झीक न पाळन केरने का पत्राचाप नहीं रह गया है ।

भस्यकि । यदि मुख्ये सीक न पालयं करने का प्रकाशाप वहीं रह शया है सो फिस बात का मसाल वा प्रकाश है ?

भन्ते ! हान रोग के पहक में करने आवाम-त्रवाम पर प्याव सगल कर अन्य रा किया करता या सा शुरो कम महापि का काम नहीं हुआ। जना महे सन में यह यात आई—कर्दी में साधन से गिर ता नहीं बार्जना ?

अस्मिति ! जिस समय जार साहण का पूसा अत है कि समाधि ही जसल कांत्र है (≔विसके किना सुन्दि नहीं हो सकती हैं) वे मसे ∰ ऐमा समझते है कि समाधि के विना कहीं में स्तुत न हो बार्टि ।

ं भरति ! ता पदा समझते हा कप नित्य है या भनित्य !

असिंग्य अन्दे ।

चैदमा । मंत्रा । गरंशार । विज्ञान १

सनित्य अम्ते (

पूर्वाकिए बहु अल और देल पुनर्शन्य में गड़ी पहला 🖁 ।

र्चार जसे मुक्तर वेदना होती है तो जानमा है कि वह बेदना धितरब है। वह बातना है कि इसमें लगाना नहीं चाहिए। वह जानना है कि इरावड़ क्षांत्रनपून नहीं करना चाहिए। चित्र उसे हुक्तर वेदना होगों है ता जानना है कि बाद वेदना अनित्य है। वह जानता है कि इसमें लगाना नहीं चाहिए! वह जानना है कि इसका अधिनप्दन नहीं बरना चाहिए। यदि असे न सुप्त न दुक्त बासी वेदना हार्गों है।

यदि उन शुरुष वेदना होता है तो वह असामक हो जमें अनुवाद बरसा है। यदि उमें युन्दर-। वदि उम्म मुग्य म युन्धशानी वेदना ।

क्य बावपरीम्य बैर्मा का अनुसब करने जनना है कि वह कारपूर्वम्य वेदस है। श्रीवितपर्वमा

वेदना का अनुभव करते जागता है कि यह जीवितपर्यन्त वेदना है। देह छूटने, मरने के पहले, यहीं सभी वेदनायें ठढी हो जायँगी ओर उनके प्रति कोई आसिक नहीं रहेगी।

अस्सिन । जैसे तेल आर वत्ती के प्रत्यय से प्रदीप जलता है, तथा उसी तेल ओर वत्ती के न होने से प्रदीप दुझ जाता है, वैसे ही भिक्ष काप्रपर्यन्त वेदना का अनुभव करते जानता है कि कायपर्यन्त वेदना का अनुभव कर रहा हूँ, जीवितपर्यन्त , देह छटने तथा मरने के पहले यहीं सभी वेदनाये ठंढी हो जावाँगी और उनके प्रति कोई आसिक नहीं रहेगी।

§ ७. खेमक सुत्त (२१ २.४.७)

उदय-व्यय के मनन से मुक्ति

एक समय कुछ स्थविर भिक्ष कौशाम्बी के घोषिताराम में विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् खेमक वद्रिकाराम में रोगी, पीढित और वीमार थे।

तव, संध्या समय ध्यान से उठ उन स्थिवर भिक्षुओं ने आयुप्मान् दासक को आमन्त्रित किया, "आवुस दासकी सुनें, जहाँ खेमक भिक्षु हैं वहाँ जाय और उनमे कहें—आवुस । स्थिवर भिक्षुओं ने पूछा है कि आपकी तवीयत कैसी है ?"

"आवुस ! वहुत अच्छा" कह, दासक भिक्षु उन स्थिवर भिक्षुओंको उत्तर हे जहाँ खेमक भिक्षु थे वहाँ आये, और घोले—अ बुस खेमक ! स्थिवर भिक्षुओं ने पूछा है कि आपकी तबीयत कैसी है ?

आवुस ! मेरी तवीयत अच्छी नहीं हैं।

तव, आयुष्मान टासक जहाँ स्थिवर भिक्ष ये वहाँ आये और वोले—आवुस ! खेमक भिक्ष ने कहा कि मेरी तबीयत अच्छी नहीं है।

आनुस दासक ! सुनें, जहाँ खेमक भिक्षु है वहाँ जायँ। जाकर खेमक भिक्षु से कहे, "आनुस खेमक ! स्थविर भिक्षुओं ने आपको कहा है——भगवान् ने पाँच उपादान स्कन्ध बताये हैं, जैसे——रूप, वेदना, संज्ञा, सस्कार और विज्ञान-उपादान-स्कन्ध। इन पाँच में क्या आयुष्मान् खेमक किसी को आरमा या आत्मीय करके देखते हैं ?

"आवुस ! बहुत अच्छा" कह । इन पाँच में क्या आयुष्मान् खेमक किसी को आत्मा या आत्मीय करके देखते है ?

आवुस । मगवान् ने पाँच उपादान स्कन्ध वताये हैं । इन पाँच में मैं किसी को आत्मा या आत्मीय करके नहीं देखता हूँ ।

तव, आयुप्मान् दासक जहाँ स्थविर भिक्षु थे वहाँ आये और बोले, ''आवुस ! खेमक भिक्षु कहता है कि-- इन पाँच स्कन्धों में में किसी को आत्मा या आत्मीय करके नहीं देखता हूँ।

आवुस दासक ! सुनें, जहाँ खेमक भिक्षु हैं वहाँ जायँ। जाकर खेमक भिक्षु से कहें, "आवुस खेमक ! स्यिवर भिक्षुओं ने आपको कहा है— यदि आयुष्मान् खेमक इन पाँच स्कन्धों में से किसी को भी आष्मा या आत्मीय करके नहीं देखते हैं तो अवश्य क्षीणाश्रव अर्हत हैं।

"शावुस ! वहुत अच्छा" कह, आयुष्मान् दासक स्थिवर मिक्षुओं को उत्तर दे, जहाँ खेमक भिक्षु ये वहाँ गये, और वोले, "आबुस खेमक ! स्थिवर भिक्षुओं ने कहा है— यदि आयुष्मान् खेमक इन पाँच स्कन्धों में से किसी को भी आत्मा या आत्मीय करके नहीं देखते हैं तो अवस्य क्षीणाश्रव सहत हैं।

आवुस । इन पाँच उपादान स्कन्धों में मैं किसी को आत्मा या आत्मीय करके नहीं देखता, किन्तु मै क्षीणाश्रव अहंत नहीं हूँ। आवुस ! किन्तु, मुझे पाँच उपादान स्कन्धों में 'अस्मि' (=मै हूँ) की बुद्धि है ही, यद्यपि मैं नहीं जानता कि मैं 'यह' हूँ।

त्तव, भायुप्मान् दासक जहाँ स्थिवर मिक्ष थे ।

पीडित और बहुत बीसर है। सो समबान के चरमों पर किर से प्रणास करते हैं। कार कहें—सन्ते ! पदि हुपा कर वहीं कस्सकि शिक्ष हैं वहीं चकते तो वही अध्यी बात होती।

आदुम ! बहुत जर्मा कर में मिश्च आयुष्मान् अस्तिम को उत्तर वे बही मगवान् न नहीं जाने भीर मगवान् का व्यक्तिवादन कर एक बीर बैठ गने । एक ओर बैठ उन मिश्चर्या न मगवान् को कहा 'सन्ने ! जस्तिन मिश्चरोगी । वहाँ बखते तो बड़ी अच्छी वात होती ।

भगवान नै जुप रह कर स्वीकार कर किया ।

तव भगवान संप्ता समय प्यान से उठ वहाँ बायुक्तान अस्पति ये वहाँ गये ।

स पुप्पात अस्पन्नि न भगवान को दूर ही में आते इंखा हेए कर जाद ठीक करने हमें ।

त्तवं प्रस्थान आयुष्पायं भस्ति के बोकें "रहने यां अस्मवि ! स्राट श्रीक सत्त करों । से स्राप्त कि हैं में इन पर में उ वार्कमा।

भारता सक्क है सहन पर पैठ सकता। भारताल किन्ने अस्पन पर पैठ गये और कालुच्याल अस्पत्ति से वोके अस्पति ! कही ठवीवठ कैसी हैं !"

मन्ते ! मेरी द्वीयद अच्छी नहीं है ।

अस्मति ! तमें कोई महाक वा पंचताबा दी नहीं रह गेवा है !

सन्ते ! इसे तो बहुत बहा सकाक रह एवा है ।

मस्त्रि ! क्र्री तुम्हें सीक न पाकन करने का प्रधाचाप तो नहीं रह शया है ?

भन्ते ! नहीं मुझे सीक न पाकन करने का प्रभाचाप नहीं रह गया है ।

भारति ! वदि तुम्हें शीख न पाकन करने का पक्षाचाप नहीं रह गया है ता किस बाठ कर सकास का पक्षतावा है ?

सन्ते ! इस रोग के पहक में जपने जाजाध-तथास पर प्यान कराते का जनस स निवाजनता सारो मुझे देस समाविका काम नहीं हुना। अता मेरे सब में कह बात बाई—कहीं में सामन से गिर दो तरी कड़िया।

कस्मित ! विंग्र जसम जीर साझल का पूसा भत है कि समाधि ही स्पन्त पंज है (≓वाके पिना मुक्ति नहीं हो सकती है) वे भके ही पूथा समझते है कि समाधि के विचा कहीं में खुत न हो कार्य ।

भरमनि ! दो रंग समझते हो रूप वित्य ई या अतिस्य ?

अमिन्य अन्ते 🕆

धरना । मंत्रा । मंस्कार । विज्ञान ?

व्यक्तिय सम्बे ।

श्मीकिय वह बान भीर देख पुनर्जनम में नहीं पहता है।

पदि उसे मुत्तर वेदना होती है तो जानता है कि नह नेदना अधिरद है। यह बानता है कि इसमें समान नहीं चाहिए। वह जानता है कि इत्तरक अधिनन्दन नहीं करना चाहिए। यह उसे हुन्तर वेदना हाती है तो जानता है कि नह वेदना अधिरप है। यह जानता है कि इसमें बातदा नहीं चाहिए। यह जानता है कि इसका अधिनन्दन नहीं नरवा चाहिए। यदि उसे न मुख व हुनर बाड़ी वेदना होती है।

पदि उने सुराव वैदता दोता है तो वह अतासका हो असे अनुसय करता है। वेदि उसे पुन्तर । वदि उसे न सुन्न म बुल्यवार्क्स वेदता ।

वह बावपर्वेत्व बंदमा का अनुसब करने जानता है कि वह कायपर्वतन वेदशा है। प्रीवितपर्वतन

उपादान-स्कन्धों में उदय ओर व्यय देखते हुये विहार करने से उसके पाँच उपादान स्कन्धों के साथ होने बाले "में हॅं" का मान, छन्द और अनुशय छूट जाता है।

इस पर, वे स्थविर भिक्ष आयुष्मान् खेमक से वोले, "हमने आयुष्मान् खेमक को कुछ नीचा दिखलाने के लिए नहीं पूछा था, किन्तु आप आयुष्मान् यथार्थ में भगवान् के धर्म को विस्तार-पूर्वक वता सकते हैं, समझा सकते हैं, जना सकते हैं, सिद्ध कर सकते हैं, खोल सकते हैं, और विश्लेषण करके साफ साफ कर सकते हैं। सो आपने वैसा ही किया।

आयुप्मान् सेमक यह बोले। सतुष्ट हो स्थविर भिक्षुओं ने आयुप्मान् खेमक के कहे का अभि-नन्दन किया।

इस धर्मालाप के अनन्तर उन साठ स्थविर मिक्षुओं के तथा आयुप्मान् खेमक के चित्त उपा-दान-रहित हो आथवों से मुक्त हो गये।

§ ८. छन्न सुत्त (२१. २ ४ ८)

बुद्ध का मध्यम मार्ग

एक समय कुछ स्थिवर भिक्षु चाराणसी के पास ऋषिपतन मृगदाय में विहार करते थे। तव, आगुप्यान् छन्न संध्या समय ध्यान से उठ, चाभी ले एक विहार से दूसरे विहार जा स्थिवर भिक्षुओं से बोले, "आप स्थिवर लोग मुझे उपदेश दें, सिखार्चे और धर्म की बात कहं जिससे मैं धर्म को जान सकुँ।

इस पर, उन स्थिवर मिक्षुकों ने आयुष्मान् छन्न को कहा, "आयुस छन्न । रूप अनित्य है, वेदना , सज्ञा , संस्कार , विज्ञान अनित्य है। रूप अनात्म है, वेदना , सज्ञा , संस्कार , विज्ञान अनात्म है। सभी संस्कार अनित्य हैं, सभी धर्म अनात्म हैं।

तव, आयुष्मान् छन्न के मन में ऐसा हुआ, "में भी इसे ऐसा ही समझता हूँ—रूप अनित्य अनात्म हैं। सभी सस्कार अनित्य हैं, सभी धर्म अनात्म हैं। किन्तु, मेरे सभी सम्कारों के शान्त हो जाने, सभी उपाधियों के अन्त हो जाने, तृष्णा के क्षय हो जाने, विराग, निरोध, निर्वाण में चित्त शान्त, छुद्ध, स्थिर तथा परित्रास से विमुक्त नहीं हो जाता है। उपादान उत्पन्न होता है और मन को आच्छा-दित कर देता है। तब, मेरा कोन आत्मा है। इस तरह धर्म को जना नहीं जाता है। भला, मुझे कीन धर्मीपदेश करे कि मैं धर्म को ठीक-ठीक जान सकूँ।

तव आयुष्मान् छन्न के मन में यह हुआ, "यह आयुष्मान् आनन्द कीशाम्बी के घोषिता-राम में विहार करते हैं। भगवान् स्वय उनकी प्रशसा करते हैं, तथा विज्ञ भिश्चओं में भी उनका वहा सम्मान है। अत, अ युष्मान् आनन्द मुझे वैसा धर्मोपदेश कर सकते हैं जिससे में धर्म को ठीक-ठीक जान सक्ष्म । मुझे अ युष्मान् आनन्द में पूरा-पूरा विश्वास भी है। तो, में चल्हें जहाँ आयुष्मान् आनन्द हैं।

तव, अ युष्मान् छन्न अपना विद्यावन समेट, पात्र और चीवर छे, जहाँ कौशाम्त्री के घोषित राम में आयुष्मान् अ नन्द विहार कर रहे ये वहाँ पहुँचे, और कुशल-क्षेम पूछने के वाद एक ओर् चेठ गये। एक ओर चेठ, अ युष्मान् छन्न ने आयुष्मान् आनन्द को कहा, "आतुस आनन्द । एक समय में चाराणसी के पास ऋषिपतन मृगदाय में मुझे आयुष्मान् आनन्द में पूरा विश्वास भी है। तो, में चलूँ जहाँ अयुष्मान् आनन्द हैं।

"अ युष्म न् आनन्द मुझे उपदेश दें समझावें, धर्म की वात यतावें निससे में धर्म को जान हाँ। इतने भर से हम छोग आयुष्मान् छन्न से सतुष्ट हैं। उसे आयुष्मान् छन्न ने प्रकट कर दिया , खोल दिया। आयुष्म छन्न । आप स्रोतापत्ति-फल का छाम करें। आप धर्म अव्छी तरह जान सन्ते हें।

बाकुम दासक ! सुने बहाँ रोमक मिश्र हैं वहाँ काँगे और वहें, आबुस रोमक ! स्पविर भिश्चकों ने कहा है- मायुस ! का आप कहते हैं "में हैं. यह 'में हैं" दवा है ?

क्या कर को भी हैं" कहते हैं था भी हैं" कर से कही बाहर है ? नेतृता ; संशा ; संस्कार

विकास १

"बादुस | बहुत अच्छा" कह आनुष्मान् दासक स्थविर मिहाओं को उत्तर दे

भारतुस वासक ! यह वाव-पूप वस रहे । मेरी काडी कार्ये में स्वर्ध वहाँ बार्केमा जहाँ वे स्थविर सिम है।

तत आयुप्पाद जेमक काढी देउते वहाँ वे स्थविर मिश्रु ये वहाँ पहुँचे और कुमछ समाबार 🗫

कर एक बोर बैंड गरे।

एक मीर बैठ हुने मामुज्यान् कैसक को उन स्थविर मिश्चओं से कहा "आनुसः] को भाप कहते है "मैं हूँ" वह "में हूँ" क्या है ? क्या कर को "मैं हूँ" करते हैं या "मैं हूँ रूप से करी बादर है ? वैदवा : संजा : संस्कार : विधाय ?

बाबुस ! मैं क्य बेदना संखा संस्कार और विद्यान को 'मैं हूँ नहीं क्दना सार न 'मैं हूँ इससे कहीं बाहर है। किन्तु वाँच उपादान स्कन्तों में "मैं हूँ ऐसी मेरी बुद्धि है, पद्मपि यह नहीं

कावता यह भी हैं क्या है।

आहुत ! बैसे उ पत्र का या पहुन का या पुष्पतीक का राज्य है । यदि कोई कहे, "यत्ते का मन्य है जा इसके रंग का गम्ब है या इसके पराग का सम्ब हैं। को त्या यह डीक समझा कामगा ?

वर्षी अञ्चल !

बाबस ! तो भाग बतावें कि किस प्रकार कहारे से ठीक समझ बायता ।

बाइस ! 'छक का गरुव है' ऐसा कहते से वह ठीक समझा बायगा।

माहुस ! इसी वरह में क्य को भी हूँ नहीं करवा और न भी हूँ "को रूप से वाहर की चीव सताता। न नेदना को । न संज्ञा की । न संस्कार को । न निशास को । मध्यम ! महरि पाँच उपादाय एकन्यों में शुक्के "में हूँ की कुदि कती है, तथापि में नहीं जानता कि में यह हैं।

बाहुस | भ/र्यमायक के पाँच शीचे के कन्यव कर आमे पर भी उसे पाँच उपादामस्कर्णी के साम हारे बाखे "में हूँ" का मान करू (=इक्का) और अनुवाद करा ही रहता है। वह बागे वक कर पॉन अपादानस्कर्मों में उदन और व्यय (⇔असरित और विमास) देखते हुन विदार करता है :—यह कर है, यह क्रम की बत्पणि है यह क्रम का जस्त हो जाना है। यह वेहवा । संदा । संस्कार । विकास ।

इस प्रकार गाँच उपावक-स्कानों में बक्ष और आप देखते हुई। विदार करने सं बसके गाँच

बस्पादन स्कर्णों के साथ होने बाके 'में हैं" का आम धन्य और जनुसन कर वाता है।

धानुस ! वैसे कोई बहुत मैका गन्या करवा हो । उसे बसका माखिक बोबी को है है । बोबी राक्ष या बार या गोवर में बस करने की सकशक कर क्षत थीने और ताब पानी में बंबार है। क्षपण एवं साफ उजका ही बाच किंदु उसमें राख का बार का गोवर का गरूप कमा ही रहे। बसे घीवी माकिक को है है। माकिक करों सुगरियत कक से बी के। तब कपने में कमा हमा राज या खार गीवर का शान्त विश्वकुक दूर हो जान ।

बाहुम ! इसी तरह आर्वजाबक के पाँच जीचे के बल्यब कर आवे पर जी कसे पाँच बपाराम स्थल्यों के साथ होने वाके "में हूँ का आग ग्रन्य और अनुसाय समा ही रहता है। वह जाने कर कर पाँच उपाद म तकर्मी में बहुत और व्यथ इंपाते हुने विहार करता है।—यह कप है, यह कम की उत्पत्ति है बद कर का अस्त हो बाजा है। यह नेदबा । संका : संस्कार : विकास । इस प्रकार नीय

उपादान-स्कन्धों में उदय और व्यय देखते हुये विहार करने से उसके पाँच उपादान स्कन्धों के साथ होने वाले "में हूँ" का मान, छन्द और अनुशय छूट जाता है।

इस पर, वे स्थिवर भिक्ष आयुष्मान् खेमक से बोले, "हमने आयुष्मान् रोमक को कुछ नीचा दिखलाने के लिए नहीं पूछा था, किन्तु आप आयुष्मान् यथार्थ में भगवान् के धर्म को विस्तार-पूर्वक वता सकते हैं, सनझा सकते हैं, जना सकते हैं, सिद्ध कर सकते हैं, खोल सकते हैं, ओर विश्लेपण करके साफ साफ कर सकते हैं। सो आपने वैसा ही किया।

आयुष्मान् खेमक यह बोले । सतुष्ट हो स्थविर भिक्षुओं ने आयुष्मान् खेमक के कहे का अभि-नन्दन किया ।

इस धर्मालाप के अनन्तर उन साठ स्थविर भिक्षुओं के तथा आयुष्मान् खेमक के चित्त उपा-टान-रहित हो आश्रयों से मुक्त हो गये।

§ ८. छन्न सुत्त (२१. २ ४ ८)

वुद्ध का मध्यम मार्ग

एक समय कुछ स्थिवर भिक्षु वाराणसी के पास ऋषिपतन मृगदाय में विहार करते थे। तब, आयुष्मान् छन्न सध्या समय ध्यान से उठ, चाभी छे एक विहार से दूसरे विहार जा स्थिविर भिक्षुकों से बोछे, "आप स्थिवर छोग मुझे उपदेश दें, सिखावें और धर्म की वात कहे जिससे मैं धर्म को जान सकूँ।

इस पर, उन स्थविर मिक्षुमा ने भायुप्मान् छन्न को कहा, "भायुस छन्न । रूप अनित्य है, वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान अनित्य है। रूप अनात्म है, वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान अनात्म है। सभी संस्कार अनित्य हैं, सभी धर्म अनात्म हैं।

तव, आयुष्मान् छन्न के मन में ऐसा हुआ, "में भी इसे ऐसा ही समझता हूँ—रूप अनित्य अनात्म हैं। सभी सस्कार अनित्य हैं, सभी धर्म अनात्म हैं। किन्तु, मेरे सभी संस्कारों के जान्त हो जाने, सभी उपाधियों के अन्त हो जाने, तृष्णा के क्षय हो जाने, विराग, निरोध, निर्वाण में चित्त शान्त, छुद्ध, स्थिर तथा परिवास से विमुक्त नहीं हो जाता है। उपादान उत्पन्न होता है और मन को आच्छा- दित कर देता है। तब, मेरा कोन आत्मा है। इस तरह धर्म को जाना नहीं जता है। भला, मुझे कौन धर्मीपदेश करें कि मैं धर्म को ठीक-ठीक जान सकूँ!

तव आयुष्मान् छन्न के मन मे यह हुआ, "यह आयुष्मान् आनन्द कीशाम्बी के घोषिता-राम में विहार करते हैं। भगवान् स्वय उनकी प्रशसा करते हैं, तथा विश्व भिशुओं में भी उनका वहा सम्मान है। अत, अयुष्मान् आनन्द मुझे वैसा धर्मोपदेश कर सकते हैं जिससे में धर्म को ठीक-ठीक जान सकूँ। मुझे अयुष्मान् आनन्द में पूरा-पूरा विश्वास भी है। तो, मै चल्दूँ जहाँ अयुष्मान् आनन्द हैं।

तव, अ युष्मान् छन्न अपना विछावन समेट, पात्र और चीवर छे, जहाँ कौशास्त्री के घोषिताराम में आयुष्मान् अ नन्द विहार कर रहे ये वहाँ पहुँचे, और कुश्छ-क्षेम पूठने के वाद एक ओर् वंट गये। एक आर बैठ, अ युष्मान् छन्न ने आयुष्मान् अनन्द को कहा, "आयुस अनन्द। एक समय में वाराणसी के पास फिपितन स्मादाय में मुझे आयुष्मान् आनन्द में पुरा विश्वास भी है। तो, में चर्हें जहाँ आयुष्मान् आनन्द हैं।

"अ युष्म न् आनन्द मुझे टपदेश दें समझावें, धर्म की बात बतावें जिससे में धर्म को जन हैं। इतने भर से हम छोग आयुष्मान् छन्न से सतुष्ट हैं। उसे आयुष्मान् छन्न ने प्रकट कर दिया, खोल दिया। आधुस छन्न। आप स्रोतापत्ति-फल का लाम करें। आप धर्म अच्छी तरह जान सकते हैं। इसे सुन भाषुत्मान् एक के मन में वही भीति वायक कृष्टै—से बमे कच्छी तरह बान सकता है।

गाष्ट्रस एक ! मेंने स्वयं भागवान् को कात्याधानगोत्र भिक्ष को वपदेश देते सुनम्द बाना है।

भाषायन ! यह संसार हो खड़ान में पढ़ा है जिनके कारण ब्रह्मित को स्वातित्व को स्वतित्व कार विक्रम कारणायन ! संसार के प्रमुख को बावार्यंत बान के से संसार के भिंत को मानितान-तृति है वह वहाँ होती है। कारणायन ! संसार के निरोध को बावार्यंत बात के से संसार के मिल को से संसार के मिल को से संसार के मिल को से सिता को सिता को बिता है वह वहाँ कि स्वति के स्वति है कारणायन ! यह संसार क्यान क्यान्यन और विकास से वेतरह कमना है। इस वान केने से सिता के स्वति के स्वति

कारपायन ! "समी कुठ हैं" (ज्यार्च वरित) यह यक करत है। "कुठ नहीं हैं" (ज्यार्च वरित) यह दूसरा करत है। कारपायन ! इन वो करतों में न का शुद्ध वर्ध की मध्य से उपवेश करते हैं। महिया के मत्यप में अंदर्शन होते हैं। उंपकार के मत्यब से विकान होता है। इस मकार सारा दुरुद-अमृद्ध दठ दावा होता है। उसी वरिवा के विस्तृत्व विशेष हो जाने से सस्कार नहीं होते हैं।

प्रकार सारा इत्य-समूह बन्द ही जाता है।

माबुध भागन्त्र ! जिब भागुप्पार्थों के इस प्रकार कृपाक्ष, परमार्थी और उपहेंग हेने शाने गुहमार्द होते हैं उनका देसा ही होता है। आयुष्पार्य भागन्य के इस उपहेंग की सुन मुझे प्रान्ता भर्म-बान हो गया।

९९ परम राहुछ मुख (२१ २ ४ ९) पञ्चस्कम्ब के बाग से मार्कार से मक्ति

धायस्त्री जेतवन ।

सर्व आयुप्पान् राष्ट्राह्म वहाँ मनवान् वे वहाँ आवे थीर भगवान् का समिवादन कर एक भोर हैंट गये।

पुरु और पेंद्र, आयुष्मान् राहुक अगवान से बोके अन्ते ! क्या जान और देख कर सतुन्त को विज्ञानवाके दून गरीर में और बाहर के सभी निमित्ती में बहहार समहार, साव और सतुष्प नहीं शेने दें !

राहुक | मा सुध क्य-स्थाति कागात वर्तमान क्याम वाहा स्युक्त सुरम हान प्रजीत कृत या निकट-किसमी न का महा है व में हूँ और व जेरा कामा है। इसी को यदार्यता सुम्हा सार केंग्र से।

बी बुछ पर्मा । जी बुछ संशा । जी बुछ संस्कार । जी बुछ विशास ।

राष्ट्रक ! इसे जान और देल कर समुध्य को विद्यानवाधे इस वारीर में और बाहर के समी निमिन्तों से बरदार समझार मान और लगुराव वहीं होते हैं !

१० दृतिय राद्रुल सुच (२१ २ ४ १०)

किसके प्राम न मुक्ति !

अर्था | जगा काण जीर देग कर समुख्य विकानकाळे इस कारीर में तथा याहर के समी दिक्षिणों में बहुतर, समझल जीर साल सा रहित सने बावत हुग्द के वरे सामत बीर विश्वन्त होता है। राहुज | मो क्षण्य पर वा वा वा भीर देश कर |

पाँचवाँ भाग पुष्प वर्ग

§ १. नदी मुत्त (२१. २ ५. १)

अनित्यता के पान से पुनर्जनम नहीं

श्रावस्ती' जेतचन

भिश्रुओं। जैसे पर्वत से निकल कर गिराती-पराती बहनेवाली बेगवती नहीं हो। उसके दोनों तट पर कास उमे हो, जो नहीं की ओर हाके हो। वहनज़ (= भाभद) भी । दीरण (= होइ) भी । वृक्ष भी उमे हों जो नहीं की ओर हाके हों।

नदी की धारा में पहता हुआ कोई मनुष्य यदि कामों को पकड़े तो वे उसड़ जाँग। इसमें मनुष्य और भी सतरे में पढ़ जाय। यदि कुशों को पकड़े । यदि वद्यजों को पकड़े । यदि बीरण को पकड़े । यदि वृक्षों को पकड़े ।

भिद्धको । इसी तरह, अज्ञ=एथर्जन=आर्यस्यों को न जानने वाला=आर्यधर्म में अजान=अर्थ धर्म में अविनीत रूप को आत्मा करके जानता है, या रूप में आत्मा को जानता है। उसका यह रूप उसद जाता है, उससे वह ओर विपत्ति में पद जाता है। वेदना । मज़ा । सम्कार । विज्ञान ।

भिक्षओ । तो क्या समझते हो, रूप नित्य हे या अनित्य १

अनित्य भन्ते।

वेदना , सज्ञा' , सस्कार , विज्ञान ? अनित्य भन्ते ।

भिक्षुओं । इसिलये इसे जान आर देख यह पुनर्जन्म में नहीं पदता है।

३ २. प्रष्क सुत्त (२१ २ ५ २)

वुद्ध संसार से अनुपिलप्त रहते हैं

श्रावस्ती जेतवन ।

भिक्षुओ ! में ससार में विवाद नहीं करता, समार ही मुझसे विवाद करता है। भिक्षुओ ! धर्म-घाटी ससार में कुछ विवाद नहीं करता।

मिञ्जुको ! ससार मे पण्डित लोग जिसे "नहीं है" कहते हैं उसे मै भी "नहीं है" कहता हूँ। मिञ्जुको ! जिसे पण्डित लोग "है" कहते हैं उसे मै भी "है" कहता हूँ।

भिक्षुओ ! ससार में किसे पण्डित लोग "नहीं है" कहते हैं जिसे मैं भी "नहीं है" कहता हूँ। भिक्षुओ ! ससार में पण्डित लोग रूप को नित्य=ध्रुव=शाश्वत=अविपरिणामधर्मा नहीं वताते हैं, मैं भी उसे 'ऐसा नहीं है' कहता हूँ। वेदना । संज्ञा । सस्कार । विज्ञान । भिक्षुओ ! ससार में हसी को पण्डित लोग "नहीं है" कहते हैं जिसे मैं भी "नहीं है" कहता हूँ।

भिक्षुओं ! किसे पण्डित छोग "है" कहते हैं, जिसे मैं भी "है" कहता हूँ ?

इसे पुन आयुन्मान् छक के मन में वही मीति वलक बुई—मी बमें बच्छी ठाइ बान सकता है।— बाइस ठक ! मेंने स्वयं मतावान् को काश्याधनमोज मिल्ल को वपनेस देते पुनम्स बाना है।— काल्यान ! यह संसार से बहुत्व को पावा है, बिबन्ने कारण अस्तित्व कोर नास्तित्व की मानित होती है। काल्यान ! संसार से प्रमुक्त को पावार्थत काल केने सं संसार के मति को मानिताव्य कि बच नहीं होती है। काल्यान ! संसार के निरोध को मध्यार्थता बान केने से संसार के प्रति को कालित्य की हाति है वह नहीं होती है। काल्यान ! यह संसार मध्यार्थ ज्यान्त्रक और अभिनित्रेश से सेताइ बम्मा है। इस सान केने से किए में अधिहान कमित्रियेश कीर अनुस्था बहीं काले हैं अंग व उसे 'स्वामा' की प्रातित होती है। उत्पन्न हो कर कुम्ब ही उत्पन्न होता है, और निवह हो कर हुम्ब ही निवस होता है—सून्त किसी प्रकार वा सन्तेह गाई रह बाला ! प्रतीन-समुख्यह का सुसन्पुरा झान हो बाता है। सामाराज ! हारी को सम्बन्धरिक क्षति है।

झायायम ! "सभी कुछ है" (=सर्व व्यक्ति) यह युक्त भाग्य है। "कुठ नहीं है" (=सर्व वास्ति) यह तुमरा बन्त है। कायायम ! इस हो वालों में य का दुक्त वर्म को भाग्य से वयदेश करते हैं। मित्रमा के मस्यम से संस्कार होने हैं। इंस्कार के मस्यम से विद्यान होठा है इस मकार सारा दुग्य-सम्बुद्ध कर यहा होठा है। क्यों नविष्या के विस्तृत्व निरोध हो बाबे से सस्वार नहीं होते इस मकार सारा हम्बान्सव बन्त को काटा है।

षापुस कातम् ! किव बायुष्माणीं के इस प्रकार कुपाह्न, परमायीं भार वपहेस हेने वासे गुरुमाई होते हैं उनका ऐसा ही होता है। बायुष्माण् वानम्य के इस वपहेस को श्रुप मुझे दरान्द्रा धर्मन्त्रान हो गया !

\$ ९ पठम राहुल सुच (२१ २ ४ ९) पञ्चरमञ्च के द्वाम से आईकार से ग्रुकि

भावस्ती जेतवन ।

वर आयुष्पान् राहुक वहाँ समयान् वे वहाँ कार्य और अगवाद का क्रिसादन कर एक कोर वैठ गये ।

एक और बेंद्र, व्यापुष्पान् राष्ट्रक समजान से बोके अन्ते ! क्या बाद और देश कर मधुष्प की विद्यानकाचे इस सरीर में बीर बाहर के सभी निमित्तों में शहहार, समझार मान और व्याप्य वर्ष होने हैं ?

राहुक | को कुछ कथ—स्थतित अनागत वर्तमान अस्थाम बाह्य स्पृक स्तम होन मसीठ, तूर, वा विकर—है सभी न का मेरा है न में हूँ और न मेरा आभा है। इसी को बचार्यका सान्दर्श बान केने से।

को इन बेर्गा । जी इठ संझा । जी हक संस्कार । जी हठ विश्राय ।

राष्ट्रक ! इसे जान जीर देल कर समुच्या को विज्ञानताके इस खरीर में जीर बाहर के समी निमित्तों से घरद्वार समझार मात्र और बजुशय वहीं होते हैं।

§ १० दुतिय सङ्गुत्त भुच (२१ २ ४ १०)

किसको प्राप्त से मुक्ति । - भन्मे । क्या बाल की देख कर अनुष्ण किछाजवाले इस सारित में स्वया बादर के सभी विभिन्नों में काइना समझा की देख सार्व पाया हुन्यू के परे साम्य कीर विश्वक होता है । राष्ट्रण । को दुण कर । इस बाल कीर देख कर ।

म्थविर वर्ग समाम ।

भिक्षुओ ! जैसे कोई जाद्गर या जाद्गर का शागिर्द वीच सदक पर खेल दिखाये । उसे कोई चतुर मनुष्य देखे । भिक्षुओ ! भला जादू में क्या सार रहेगा ?

भिक्षुओ ! वैसे ही, जो कुछ विज्ञान ।

भिक्षुओं । इसे देख, पण्डित आर्यश्रावक रूपसे विरक्त होता है, वेदना से भी विरक्त होता है, संज्ञा , सस्कार , विज्ञान से भी विरक्त होता है। विरक्त रहने से वह राग-रहित हो जाता है, राग-रहित होने से विमुक्त हो जाता है, विमुक्त हो जाने से उसे "मैं विमुक्त हो गया" ऐसा ज्ञान उत्पन्न होता है।

भगवान् यह बोले। यह बोल कर बुद्ध ने फिर भी कहा .---

रूप फेनिपण्डोपस है,
वेदना की उपमा जलके बुलबुले से है,
सज्ञा मरीचि की तरह है,
सस्कार केले के पेड़ की तरह,
जादू के खेल के समान विज्ञान है—
सूर्य वंशोत्पन्न गोतम बुद्ध ने बताया है॥
जैसे-जैसे गौर से देखता भालता है,
और अच्छी तरह परीक्षा करता है,
उसे रिक्त और तुच्छ पाता है,
वह, जो ठीक से देखता है॥

इस निन्दित शरीर के विषय में जो महाज्ञानी ने उपदेश दिया है, उस प्रहीण धर्मों को पार किये हुये छोड़े रूप को देखो ॥ आयु, ऊप्मा (=गर्मी) और विज्ञान जब इस शरीर को छोड़ देते हैं, तब यह बेकार चेतनाहीन होकर गिर जाता है ॥ इसका सिल्सिला ऐसा ही हैं, वच्चों की माया की तरह, यह बधक कहा गया है, यहाँ कोई सार नहीं ॥ स्कन्धों को ऐसा ही समझे, उत्साही भिक्षु, सदा दिन और रात सप्रजन्य और स्मृतिमान् होकर रहे ॥ सभी सयोग को छोड़ दे, अपना शरण आप बने मानो शिर जल रहा हो ऐसा ल्याल रख कर विचरे, निर्वाण-पद की प्रार्थना करते हुये।

§ ४. गोमय सुत्त (२१. २ ५ ४) सभी संस्कार अनित्य हैं

श्रावस्ती ' जेतवन ।

तव, कोई भिक्ष जहाँ भगवान् ये वहाँ आया और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गया।
प्क ओर बैठ, उस भिक्ष ने भगवान् को कहा, "भन्ते। क्या कोई रूप है जो नित्य = घ्रुव
= शाश्वत = परिवर्तनरहित हैं ? भन्ते। क्या कोई वेदना है जो नित्य ? सज्ञा , सस्कार ,
विज्ञान .?

भिक्षु । कोई रूप, वेदना, सज्ञा, सस्कार या विज्ञान नहीं है जो नित्य = ध्रुव = शाश्यत = परिवर्तनरहित . है।

मिलुओ । रूप श्रीकृष कुरत आर परिवर्तवर्शीक है ऐसा पण्डित कोग बहुते हैं भीर में भी ऐसा में कहता हैं। बेदना । संहा । संस्कार । विज्ञान । मिलुओ ! संमार में इसी को पण्डित लोग 'है कहते हैं कार में भी ज्या की बहुता हैं।

मिहाओं ! संसार का को प्रधार्थ पर्म है करा बुद अप्ती तरह बावते और समझते हैं। बात मीर समझ कर ने बमको कट्टते हैं उपवेदा करते हैं बावते हैं सिद्ध करते हैं प्रोठ देते हैं, भीर विस्पेषण

करके साफ कर बते हैं।

सिहाना । इन्ह मंसार का पथार्थ घर्म है जिसे बुद अच्छी तरह जानते और समस्ति हैं। जाय और समग्र कर । सिहाना ! चुद के इस प्रकार साफ कर देने पर भी जो कोश नहीं जानते और स्थाने हैं उन वाय-शृक्तकर-मंत्रा-जिना जाँग्र के-अक मञ्जूष का निकार कर सकता हूँ। वेदमा । मंत्रा । मंद्रस्य विज्ञान ।

मिश्रुको ! दीने करास चा पुण्डरीक चा पछ पाची में पैदा होता है बार पानी में बड़ता है हो भी बारी छ बहु समय मेनुत्रिक्त ही बहुता है। मिश्रुको ! इसी वरह बुद संमार में दह कर भी संसार को जीन संसार म अन्यक्रिय करते हैं।

ई ३ फेण सुच (२१ २, ५ ३)

शरीर में काई सार नहीं

मरु समय मगवान् अयोध्या में गंगा नदी के वह पर विदार करते थे । वहाँ सगवान् न शिक्षकों को कामन्त्रित किया ।

भिभुत्री ! जैस पर गोमा नहीं बहुत केन को बहा कर के बाती हैं ! इसे कोई और बाका सनुष्य देग माम भार बीक म परीक्षा कर दग आक भीर बीक से परीक्षा कर बैसे दर उस बह रिफ तुष्य भार अमार प्रतिक हो जिस्हाओं ! अका फैन के पिक में नवा सार कोता !

मिशुमा! बन ही जो कुछ रूप-स्थाति करागत - दे उसे मिशु देणता है आपता है और रींच म पीक्षा करता है। कुप आम और श्रीक म बरीका कर तमे पर उस वह रिक, तुम्छ और उसार मर्गत होता है। शिक्षमा! मना कुप में पड़ा सार होता है

भिगुमी । जन शरद बान में इक कृती यह जाने पर बल में बुलवुस उटने और भीन होत रहते

हैं। उस काई ब्रॉम बाध्य समुद्ध होगे । सिहाला ! महर उस के बुख्युके में क्या मार रहगा ! सिरप्रमें ! बन ही जो बन्न बैटला—सरीत क्यालन —है उसे दिल केवता । जिस्सी !

अना चेड्ना में क्या गार श्हमा ? भित्रुमी ! क्रीने म्राज्य क विचने महीने में दोवहर के समय सरीविका हाता है । इस कोई म्राज

बामा समुख्य पूर्ण | निश्चाक्षा | अका महीबिका में क्या बाद सहता | विदर्भा ! वेटा की आ बन्ध सेना | ३

सिहानी | वर्ग को समूच देश (लगार) की गांज में वृद्ध गीरण वृद्धार को लेकर जीतन में देश सिहानी | जो को में समूच देश (लगार) की गांज में वृद्ध गीरण वृद्धार को लेकर जीतन में देश सच्च । वृद्धार्थी लग्न वृद्धार का जिलको जिलको का त्रांच हु हुन तरह वार क्यी तरही भी मही दिन्हें को जी गांच कर देश देश हैं।

का कोई वॉल वाका सकुत देल आक और बीक स वर्शका करें हु देल आव आर डीड में बाँधा वर डेन वा उल वह कि नृष्ट भी क्यार धर्मन हर ह जिल्लुकी हु अब्य देखें के तने में बता तल रहेता ?

बिश्वची (भने दी का कुछ संस्थाहरू ।

अनित्य भन्ते ।

वेदना , सजा , सस्कार , विज्ञान ?

अनित्य भन्ते ।

भिश्च । इसिलिये , ऐया जान ऑर देयकर पुनर्जन्म में नहीं पडता ।

§ ६. साम्रहक सुत्त (२१ २ ५ ६)

सभी संस्कार अनित्य हैं

श्रावस्ती जेतवन ।

एक ओर बैठ, वह भिक्षु भगवान् से बोला, "भन्ते । क्या कोई रूप है जो नित्य , बैदना , सज्ञा , सस्कार विज्ञान है जो नित्य = ध्रुव हो ?

नहीं भिक्षु ! ऐसा नहीं है।

§ ७. पठम गद्दृल सुत्त (२१ २. ५ ७)

अविद्या में पड़े प्राणियों के दु ख का अन्त नहीं

श्रावस्ती'''जेतवन ।

भिक्षुओं ! यह ससार अनन्त हैं । अविद्या के अन्धकार में पढ़ें, तृष्णा के बन्धन से बंधे तथा आवागमन में भटकते रहने वाले इस ससार के आदि का पता नहीं लगता है ।

भिक्षुओ ! एक समय आता है जन महासागर सूख सारा कर नहीं रहता है। भिक्षुओ ! तब भी, अविद्या के अन्धकार में पड़े, तृष्णा के बधन से वॅधे तथा आवागमन में भटवते रहने बाले प्राणियों के हु ख का अन्त नहीं होता।

भिक्षुओ । एक समय होता है जब पर्वतराज सुमेर जल जाता है, नध्ट हो जाता है, नहीं रहता है। भिक्षुओ । तब भी अविद्या के अधकार में पढे ।

भिक्षुओ । एक समय होता है जय यह महापृथ्वी जल जाती है, नष्ट हो ज ती है, नहीं रहती है। भिक्षुओ । तब भी अविद्या के अन्धकार में पढ़े ।

भिक्षुओ । जैसे, कोई कुत्ता किसी गढे खूँ टे में वँघा हो । वह उसी खूँ टे के चारा ओर घूमता है। भिक्षुओ । वैसे ही, अज = पृथक्जन रूप को आत्मा करके जानता है, वेदना , सज्जा , सस्कार , विज्ञान को आत्मा करके जानता है।

भारमा को विज्ञानवान, या धिज्ञान में आरमा, या आरमा में विज्ञान ।

वह रूप ही के चारों ओर घुमता है, वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान ही के चारो ओर घूमता है। इस तरह, वह रूप, वेदना, संज्ञा, सस्कार और विज्ञान से मुक्त नहीं होता है। जाति, जरा, मरण, शोक, परिदेव, दुख, दोर्मनस्य और उपायास में मुक्त नहीं होता है। वह दुख में मुक्त नहीं होता है, ऐसा मैं कहता हूँ।

भिक्षुओ । पण्डित आर्यश्रावक रूप को आत्मा करके नहीं जानता हैं । वह रूप, चेदना, संज्ञा, सस्कार और विज्ञान के चारा और नहीं घूमता है। इस तरह, वह रूप से मुक्त हो जाता है। जाति, जरा से मुक्त हो जाता है। वह दुख से मुक्त हो जाता है-एसा में कहता हूँ।

तब सगवान् द्वाय में बहुत थोड़ा गांवर केकर उस सिक्ष से घोके "सिक्ष ! इत्या भी आध्य-माव का प्रतिकास नहीं है को मिला = भूव हो । मिश्र ! वित इतना भी आत्म-माव का प्रतिकास मिल्प⊂सुव दातः तो ब्रह्मचर्व-पाकन मुल्ब-स्थय के किये नहीं कामा जाता । सिम्नु ! वर्षोकि इतया सी आत्म-मात्र का प्रतिकाम नित्य=ल्ला भहीं है इसीकिये महावर्य-पाकन तुःख-सूच के किने सार्वक साना चाता है।

"मिस् ! प्रवेशक में मैं मूर्वाभिषिक संधिव राजा वा । उस समय कुशायती राजवानी प्रमुख मेरे चारासी इकार मगर थे। कस समय चर्म प्रासाद प्रमुख चौरासी इकार प्रासाद थे। उस समय सहाम्पूर कृतमार ममुख मेरे बीरासी हवार कृतमार (=watch tower) वे। वस समय मेरे बीरासी हवार पड़ना ये-इापी के चाँच के दीरे के सोमा के चाँदी के; वाकीन को हुये उनके कारक को हुये, कुमदार कराड क्यो हुये, करकियुग के कीमती क्यों क्यों हुये चैंदवा क्यों हुये दोनों स्रोर कास शक्ति क्मो । उस समय उपोसव इस्तिराव प्रमुख गरे चीरासी इजार हाथी के सोने के अकड़ार से असंहत सोने की पाना क्यी हुये साने के पाछ से हैंके। उस समय नकाहक महनराज प्रमुख मेरे चीरासी हनार भीडे थे—सोने के अकड़ार से लकंड्रच सोने की व्यव्य क्ये इए सोने के बाठ से हैं है। उस समय बबयन्त १५ प्रमुख मेरे चौरासी इकार १४ ये - सोने के ।.. मिक्सल प्रमुख मेरे चौरासी इकार मि थे। सुमद्रा देवी ममुक्त चीरासी इक्नार कियाँ थीं। परिनायकर व ममुक्त चीरासी इक्नार अवीव राजा थे। चारासी इजार तूम देने वाकी गीवें थीं। चीरासी इजार कपने चे--रैशम के पड के कमी भीर भूती। चौरासी इज़ार थाकिनों भी जिल्हें सुपकार दीनों बेका परोस कर के आता था।

मिझू ! उस समय में उन कौरासी इज़ार नगरों में एक क्रमावती राजवांशी ही में रहता था।

चर्म मासाद ही में रहता या । [इसी तरह सभी के साथ समझ केना]

निम्नु ! वे समी सरकार असीत हो गये जिस्स हो गये विपरिकत हो गये । मिन्नु ! संस्कार पुषे अमुद = अजित्य बार बाबास सं रहित है।

मिछ्न ! तो सभी संस्थारों से विरक्त हो बाला श्रका है राग-रहित हो बासा भ्रवा है विग्रुक हो काना सका है।

[§] ५ नखसिख सच (२१ २ ५ ५)

समी संस्कार समित्य हैं

भावस्ती केतवत ।

एक जोर बैंड वह सिञ्च भगवान् से बोका "सन्ते ! यया कोई इस है जो निता = तुष = राजित = परिवर्तन-रहित हो ? कोई केवला ? कोई सीझा ? कोई संस्कार ? कोई किश न ? नहीं मिछु ! पैरार कोई कम केवला सेता संस्कार या विद्याल नहीं दे को तिरव = मुख हो !

तथ सगराम् अपने नवा के अपर एक मूध के कथ को स्वाकर बोक 'सिस् ! इताहा भी कप मही देशा विष्य » प्रुव हो । सिष्ठ ! यदि इतकामी कप किल्य = श्रुप हातासी शहामर्थ हुस्त स्थ का सावक नहीं काना जाता । मिशु ! वर्गीकि इतना मी कम नित्व = श्रव नहीं है इसी से महावर्ग हुन्यें कर के जिने सार्थक समझा कामा है।

"श्रिप्तः ! इतनीभी वेदना । इतनीभी सँद्या । इतनाभी संस्कार । इतनाभी विज्ञान निन्त o पूर्व नहीं हैं । भिष्ठ ! वर्षोंकि इतना भी विज्ञान नित्व o सूच नहीं है इसी से सद्भवर्ष हुःस्त सब के किये सार्वक समझा करता है।"

जिहा ! तो पत्रा समझते हा कप नित्य है वा अजिला ?

सज्ञः

अनित्य भन्ते । वेदना , सज्ञा , मम्कार , विज्ञान ? अनित्य भन्ते । भिक्ष । इसिल्ये , ऐसा जान और देखकर पुनर्जनम में नहीं पडता ।

§ ६. साम्रह्क सुत्त (२१ २ ५ ६)

सभी संस्कार अनित्य हैं

श्रावस्ती जेतवन । एक और वठ, वह भिक्षु भगवान् सं बोला, "भन्ते । क्या कोई रूप है जो नित्य , वेदना ", , सस्कार विज्ञान है जो नित्य = ध्रुव हो ?

नहीं भिक्षु । ऐसा नहीं है।

§ ७. पठम गद्दुल सुत्त (२१ २. ५ ७)

अविद्या में पड़े प्राणियों के दु ख का अन्त नहीं

श्रावस्ती'''जेतवन ।

भिक्षुओं ! यह ससार अनन्त है। अविद्या के अन्धकार में पढ़े, तृष्णा के बन्धन से बंधे तथा आवागमन में भटकते रहने वाले इस ससार के आदि का पता नहीं लगता है।

मिक्षुओ ! एक समय आता है जन महाखागर सूख साख कर नहीं रहता है। भिक्षुओ ! तब भी, अविद्या के अन्धकार में पड़े, तृष्णा के बधन से बंधे तथा आवागमन में भटवते रहने वाले प्राणियों के दु ख का अन्त नहीं होता।

भिक्षुओ ! एक समय होता है जब पर्वतराज सुमेर जल जता है, नष्ट हो जता है, नहीं रहता है। भिक्षुओ ! तब भी अविद्या के अधकार में पढें ।

भिक्षुओं। एक समय होता है जब यह महापृथ्वी जल जाती है, नष्ट हो ज ती है, नहीं रहती है। भिक्षुओं। तब भी अविद्या के अन्धकार में पढ़े।

भिक्षुओ । जैसे, कोई कुरा किसी गढे खूँटे में घंवा हो । वह उसी खूँटे के चारो ओर घूमता है। भिक्षुओ । वैसे ही, अज = पृथक्जन रूप को आत्मा करके जानता है, वेदना , सज्जा , सस्कार , विज्ञान को आत्मा करके जानता है।

भारमा को विज्ञानवान्, या विज्ञान में भारमा, या आस्मा मे विज्ञान ।

वह रूप ही के चारों ओर घूमता है, वेदना , संज्ञा, सस्कार , विज्ञान ही के चारों ओर घूमता है। इस तरह, वह रूप, वेदना, संज्ञा, सस्कार और विज्ञान से मुक्त नहीं होता है। जाति, जरा, मरण, शोक, परिदेव, दुख, दौर्मनस्य और उपायास से मुक्त नहीं होता है। वह दुख से मुक्त नहीं होता है, ऐसा मैं कहता हूँ।

भिक्षुओ । पण्डित आर्यथ्रावक रूप को आत्मा करके नहीं जानता है । यह रूप, वेदना, सज़ा, सस्कार ओर विज्ञान के चारों और नहीं घूमता है। इस तरह, वह रूप से मुक्त हो जाता है। जाति, जरा से मुक्त हो जाता है। यह दुख से मुक्त हो जाता है—ऐसा मैं कहता हूँ।

ई ८ दुतिय गद्दुल मुत्त (२१ २ ५ ८) किरम्बर भारतिस्थान करो

धावस्ती जेतदश ।

मिश्रुको । यह मेसार कानला इ.। कविद्याः के जन्यकार में पढ़े जुष्णा के बन्धन से बैचे तथा जाबारामय में सदक्ते रहमैदाके हुए संसार के आदि का पना गड़ी स्माता है।

मिहानी | चैसे काई कुत्ता पुरु गांचे लैंटे से वैंचा हो । यदि वह वस्ता ह का उसी ऐंटे के ६९ रिहें । यदि वह रहा होता है ता उसी लैंटे के इत्रियं । यदि वह बंटता है । यदि वह बंटता है तो

उसी और के इदिगर ।

सिह्नभी । बसे दी काल प्रवक्तन कप का सामानता है कि बह भारा है यह में हूँ वह सेरा आराबा है। बेदना की । संज्ञा की । सरकार की । विज्ञान की । वदि वह कस्ता है तो इन्हें पाँच उपाइना रहन्यों के क्रूपीन हैं। यदि वह पड़ा होता है वैद्या है केटना है से इन्हों की प्रपाइन कम्मी के क्रूपीन हैं।

सिहमी | इसकिने निक्तर कारम-विकास करते रहना वाहिया वह किल बहुत काल साराग हेप भीर मीह से गल्दा कता है। सिहुसी | किल की गल्दगी झामाजी सन्दे होते हैं और किल की स्वति से प्राणी किस्स कोते हैं।

मिश्रमी ! परप्रतियाँक के पर का देशा है ?

हाँ सन्ते !

मिश्चमी ! पद्मितियों के वे किल भी किल ही सं किलित किये जात हैं । पद्मित करने किल सं ही किला-विकार कर कर किली को किलित करते हैं ।

सिहनी ! इटकिने विरस्तर कारम चित्रमा करते रहना चाहिने । यह चित्र बहुत कारू से ।
सिहनी ! चित्र की तरह दूसरी कोई चीज चहीं है। तिरस्त्रीन मानी करने चित्र के कारण ही
पेसे हम हैं। तिरस्त्रीन मानियाँ का मी चित्र ही मानत है।

मिह्नसी ! इंग्लिको निरन्तर साम्य किन्तर करते रहना चाहिये। यह विच बहुत काक से ।
सिह्नसी ! सैसे कोई रंगरेस का विचकर रंग से वा किन्नकर चा इकरों से या गीस से वा
संबंधित से सम्यो दरह साम्य किने गर्न सकरे पर वा दोनाक पर की वा दुकर के समोहसून विक कार्य है। मिह्नसी ! देसे ही वाह पुन्तक कप में क्या रह कप ही को मात्र होता है। वेदना में क्या सा । संबंध । संस्था । विकास ।

मिश्राणी ! तो क्या समझते हो कम निका है वा वन्तिय ?

वनित्य भन्ते !

इसकिये यह जान और देश प्रश्रवीमा को भई गांस होता।

हु९ नाव भुच (२१ = ५९) भावना से बाधनों का बन

भावस्ती जैतवन ।

भिम्नजो ! बान जीर देश कर मैं भाशवें। के शव का उपदेश करता हूँ विना बाने देश नहीं ।

 बारणं नाम विका :— "[एक आति के कोत] आं कपहे पर नामा महार के मुगति तुमीर के शतुवार समाचि विभीत के थित्र मित्रका, यह कम करने से नह पाता है जह कमें करने से यह देश दिस्तिते हुनै निक को किने सिर्देत है।"
 अडकवा ! भिभुओं । जान और देग्यकर आश्रयों का क्षय गोता है ?—यह रूप है, यह रूप की उत्पत्ति है, यह रूप का अस्त हो जाना है। यह बेटना , सज्ञा , सम्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओं । इसे ही जान और देस्पकर आश्रवी का क्षय होता है।

भिक्षुओं ! भावना में छो हुये भिक्षु को ऐसी इच्छा उत्पन्न होती है—अरे ! मेरा चित्त उपादान में रहित हो आध्यों में मुक्त हो आय, किंतु ऐसा नहीं होता हैं।

सो क्यों ? कहना चाहिये कि उसका अभ्यास नहीं जमा है। किसका अभ्यास ? चार स्मृति प्रस्थानों का अभ्यास, चार सम्यक् प्रधानों का अभ्यास, चार ऋदियाटों का अभ्यास, पाँच इन्द्रियों का अभ्यास, पाँच बलों का, सात बोध्यक्षों का, जार्य अष्टाक्षिक मार्ग का।

भिक्षुओं। जंसे, मुर्गी को आठ, दम या प्रारत् अण्डे हों। मुर्गी उन अण्डो को न तो ठीक से देख भाल करें ओर न ठीक से सेवे।

्उस मुर्गी के मन में ऐसी इच्छा हो, "मेरे वर्षो अपने चगुल में या चोच में अण्डे की फोड कर कुशलता में बाहर चले आबे। तब, ऐसी बात नहीं हो।

मो दैयां ? क्यांकि मुर्गा ने उन अण्डो को न तो ठीक से देखा भाला और न ठीक से सेवा।

भिक्षुओं। वैसे ही, भापना में छगे हुपे भिक्षु को ऐसी इच्छा उत्पन्न हो - अरे। मेरा चित्त उपादान से रहित हो क्षाश्रमों से मुक्त हो जाय, किन्तु ऐसा नहीं हो।

सो क्यो १ कहना चाहिये कि उसका अन्यास नहीं जमा है। किसका अभ्यास १ चार स्मृति प्रस्थानों का ।

भिक्षुओं । भावना में लगे हुये भिक्षु को ऐसी इच्छा उत्पन्न हो , और यथार्थ में उसका चित्त उपादान से रहित हो आश्रवों में मुक्त हो जाय।

सो क्यों ? कहना चाहिये कि उसका अभ्यास सिद्ध हो गया है। किसका अभ्यास ? चार स्मृति-प्रस्थानों का ।

मिश्रुओं ! जैसे, मुर्गी को आठ, दस, या वारह अण्डे हो । मुर्गी उन अण्डो को ठीक से देखें भालें और ठीक से मेवे ।

उस मुर्गी के मनमें ऐसी इच्छा हो, "मेरे बच्चे अपने चगुल से या चांच से अण्डे को फोड़ कर कुशलता से बाहर चले आवें, और यथार्थ में ऐसी ही बात हो ।

भिक्षुओ । जैसे, बदई या बदई के शागिर्द के बसुले के हथ्धड़ (=गेंट) में देखने से अगुलियों और अँगूठे के दाग पढ़े माल्यम होते हैं। उसे ऐसा ज्ञान नहीं रहता है कि वसुले का हथ्यड़ आज इतना विसा और कल इतना विसेगा। कितु, उसके विस जाने पर माल्यम होता है कि विस गया।

भिक्षुओ । वैसे ही, भावना में लगे हुये भिक्षु को ऐसा ज्ञान नहीं होता है कि आज तो मेरे आश्रव हतना क्षीण हुये और कल हतना क्षीण होंगे। किन्तु, जब क्षीण हो जाते हैं तभी मालूम होता है कि क्षीण हो गये।

भिक्षुओं । जैसे, समुद्र में चलने वाली वैंत से वैंधी हुई नाव छ महीने पानी में चलाने के वाद हैमन्त में जमीन पर चढ़ा दी जाय । उसके वन्धन धूप हवा में सूख और वर्षा में भींग सड़ गल कर नष्ट हो जाते हैं।

भिक्षुओं । वैसे ही, भावना में छगे हुये भिक्षु के सभी वन्यन (=१० सयोजन) नष्ट हो जाते हैं।

§ १० सम्लगसुच (२१ २ ५ १०)

सतित्य-संज्ञा की भावना

धावस्ती जेतवश ।

सिहाओं | सितरप धंडा की भावना करने से छनी कामराग क्ष्यहाग सबराग और अविधा डा आती है। सभी अद्वार आंद असिमाण समक्षण हो आते हैं ।

मिश्रुयो ! जैसे सरम्बाध में कृपक अच्छे हुके से जोतते हुये सभी वह मूक को फ्रिक-मित्र करते हुये बोतता है बस ही मिश्रुयो ! बलिश्च मेंज़ा जी सावता करने से सभी कामराग कपराग भवरगा

भविचा तथा भट्टवार और समिमान क्रिन्च-विका हो जाते हैं।

सिद्धानों | बेसे समगदना सास को गढ़ कपर पकड़ इक्ट उसर कोका वर फेंक रेगा है। सिद्धाना | बेसे ही अनित्य-शंका की माधना करने से सामी कामराग फिन्म सिन्न हो बाते हैं। सिद्धानों | बेसे कियों नाम के पुष्कें की उद्यानी कर काले से उसमें को सामी नाम गिर पड़ते हैं। सिद्धानों | बाने ही अनित्य-संका की आवाना करने से सामी नामराग किन सिन्न हो बाते हैं।

सिञ्चमो ! जैस कुळगार के ममी घरन कुर की ओर ही जाते हैं कुर की ओर ही सुके होते हैं

श्रीर कृद ही उसका प्रवास होता है। थिशुओं ! वैसे ही सनित्य-मंत्रा की भावका ।

मिसुको ! बसे समी मूल गर्नों में काछानुसारी बचम समझी बाती है। मिसुनो ! बसे ही

समित्य-संज्ञाकी भावता ।

मिञ्चको ! यसे सभी सार गन्या में छाइचल्यन उत्तम समझा बसाई । निशुषो । वैस ही मन्त्रिय-संकाकी भावना ।

मिश्रुओं ! बैसे मधी पुष्प-गन्धा में सुद्धी बत्तम समझी बार्ता है ! शिश्रुओं ! बैस ही व्यक्ति-व

संज्ञाकी भावना ।

सिञ्चली | बैसे छोडे सोर्ड राजा मधी खल्कावर्ती राजा के अध्योग रहते हैं और कलवर्ती राजा यनका प्रवान नमाण करता है ! सिञ्चली ! बैसे ही असिन्य-संज्ञा की मावता ।

मिश्रुमी ! क्स मभी ठाराजी का तकास कन्द्रमा के तकास का लोकावाँ हिस्सा मी वहीं होता.
है भार कन्द्रमा ठाराओं में सवान माना अरता है। मिश्रुमी | बैसे ही जनिक्युनोहा ही मानवारः ।

मिश्रुकी ! जैसे पारत्काक में बात्का के इट ज में भा नाकाश के निर्मक हो जाने पर सूर्व उपकर भारता के मानी सम्बन्ध की हता व्यापका है तरवा है जार सीभित होता है। मिश्रुकी ! वेसे ही अधिया मंत्रा की मायका करने में सानी कामराण कपहागा अवराग और वाकिया हट जाती है; सभी कर्मका की मायका समझ नह हो जाते हैं।

सिक्षाची ! अभिन्य मंत्रा की कैसे भावना और अव्यास करने से खली कासराग सम्रक क्य

हो जाते हैं ?

"बह रूप हैं यह रूप को संस्थिति है यह रूप का शरूर ही व्यक्त है। यह देवता । यह संद्रा । वह संस्थार । यह दिवाल ।"—सिहाली है इस तरह विशय-संशासी प्राथमा कीर सरकार काले से साथी पासारा सम्बन्ध केंद्री बाते हैं।

> भुत्वको समाप्त स्रोक्तसम्बद्धानक समाप्त ।

तीसरा परिच्छेद

चूळ पण्णासक

पहला भाग

अन्त वर्ग

६ १. अन्त सुच (२१ ३ १ १)

चार अन्त

थ्रावस्ती जेतवन'''।

भिक्षुओ । चार अन्त है । कौन से चार १ (१) सस्काय-अन्त, (२) सत्कायसमुद्य-अन्त, (३) सत्कायनिरोध-अन्त, और (४) सत्कायनिरोधगामिनी-प्रतिपदा-अन्त ।

भिक्षुओ ! सत्काय-अन्त क्या है ? कहना चाहिये कि यही पाँच उपादान-स्कन्ध । कौन से पाँच ? यह जो रूप उपादान-स्कन्ध । भिक्षुओ ! इसे कहते हैं 'सत्काय-अन्त' ।

भिक्षुओं ! सत्कायसमुदय-अन्त क्या है ? जो यह तृष्णा, पुनर्जन्म करानेवाली, आनन्द और राग के साथवाली, वहाँ वहाँ स्वाद लेनेवाली। जो यह, काम-तृष्णा, भव-तृष्णा, विभव-तृष्णा। भिक्षुओ। इसी को कहते हैं 'सत्कायसमुदय-अन्त'।

भिक्षुओ ! सत्काय-निरोध-अन्त क्या है १ जो उसी तृष्णा से वैराग्य-पूर्वंक निरोध = त्याग = प्रति-नि सर्ग = मुक्ति =अनालय । भिक्षुओ ! इसी को कहते हैं 'सत्काय निरोध-अन्त' ।

सिक्षुओ ! सरकाय-निरोधगामिनी प्रतिपढ़ा-अन्त क्या - है १ यही आर्थ अध्यक्तिक मार्ग, सम्यक दृष्टि सम्यक् समाधि । भिक्षुओ ! इसी को कहते हैं सरकाय-निरोधगामिनी प्रतिपढा-अन्त ।

भिक्षओं । यही चार अन्त हैं।

§ २. दुक्ख सुच (२१ ३. १ २)

चार आर्यसत्य

आवस्ती'''जेतधन '' ।

मिक्का । में तुम्हें दु ख, दु खसमुदय, दु खनिरोध और दु खनिरोधगामिनी प्रतिपदा का उपदेश करूँगा। उसे सुनो ।

भिक्षुओ । दु ख क्या है ? यही पाँच उपादान स्कन्ध ।

भिक्षुओ । दु लसमुदय क्या है १ जो यह तृष्णा ।

भिक्षुओ । हु खनिरोध क्या है १ जो उमी तृण्णा से वैराग्य-पूर्वक निरोध ।

भिक्षुओं । दु खनिरोध्रगासिनी प्रतिपदा क्या है १ यहीं आर्थ-अप्टाङ्गिक सार्ग ।

हुरै० सम्ङासुच(२१२५**१०)**

शहित्य-संज्ञा की भावता

शासस्ती जेतवस ।

सिद्धानो ! अतित्व श्रंहा की सावणा करने में सभी कामराग रूपराग, मवराग और अविधा है? वाती हैं। सभी अक्षार आंत अभिमान समक नह हो जाते हैं ।

मिशुसो ! जैसे शास्त्रकर में कुपक अच्छे होसे से बोतते हुने सभी बह मूल को छिडनीस बसरे हुन चोतता है देसे ही सिशुसा ! अभिन्य संज्ञा की भावना करने से सभी कामराग इत्याग सपराग अविद्या त्या कांग्रस और क्रियमान क्रिय-भिक्त हो जाने हैं।

िस्तुओं | जैसे प्रमादवा बास को गड़ क्षपर पंछड़ इयर क्षर कोड़ कर फैंक देता है। सिह्यओं | वैसे ही व्यक्तियमंत्रा की प्रावण करने से सभी काराएग किस्स सिक हो कारे हैं। सिह्यओं | वैसे किसी जान के गुष्कं की दश्यों कर काले स उससे को सभी काम गिर पर्य हैं। सिद्धाओं | वैस की अलियमंत्रा की मावणा करने से सभी कामराग किस निक्र का कारों हैं।

मिश्रुको ! जैसे क्टगार के सभी चरण कुट की ओर ही कार्त हैं कूट की ओर ही हुड़े होते हैं और कर से उनका प्रचान होता हैं । सिहाको ! चैस ही अनित्य-संक्षा की श्रावना !

मिश्चनो ! मैंसे सभी सृक-शर्मों में काखानुभागी उत्तम समझी जाती है। मिश्चमो ! बसे ही

सनित्व-संक्षाची सावका । सिद्धाभी ! क्सी खनी बार गर्न्वा में छाछचन्त्व उत्तस समझा काता इ । सिद्धानो । वैसे दी अनिकार्यका से सम्बन्धा ।

मिश्चभी ! बैसे सभी पुष्प-गण्या से सुद्दी क्यम समझी बाती है ! सिश्चली ! वैस ही व्यक्तिप संका की भावता ।

मिछुको | बैसे छाटे मोर्ट राजा सभी लाइ वर्ती राजा के माधीन रहते हैं और मकवर्ती राजा

बनका प्रकार समझा काता है ! सिञ्चको ! वैसे ही अविषय-संज्ञा को प्रावका । सिञ्चको ! बसे सभी ताराजा का प्रकार करतमा के एकासंका का विकार में तहीं होता है भार करतमा ताराजों में प्रकार माना जाता है । सिञ्चको ! वैसे हो व्यक्ति-संज्ञा की सावका ।

सिहुनी ! बैसे सरक्षाक में वानुकों के हर ब में से आकास के निर्मक हो जाने पर सूर्य हमकर मानाक के समी अन्यकार को हात्र सामकार है स्वयंत है आर कामित होता है। सिहुस्ता ! देने ही अनित्य सुन्ना की भाषना करने से सजी कामराग क्याराग अवराग और वाविया हर बारों है। समी अवरार कीर क्षरियान सरक नह हो जाते हैं।

मिहुसो ! क्रोतंच-संज्ञा की कैसे भाषणा जार जन्मास करने से सभी कामराग ससूक वर्ष हो कारे हैं ?

भाइ कर है जह कर की जरूपित है वह रूप का श्रस्त हो काम है। यह देवना । यह संदा । यह पंत्रवार । यह विद्वार । —सिह्नाओं | इस सरह व्यक्तिय-संख्वा की सावना और समाना करने से सानी कामारा स्थावन कर के क्षेत्र हैं।

> उपवर्गे समास मन्द्रिमगण्यासक समाप्त ।

दोप और द्युटकारा को यथार्थत. जानता है, इसी से वह स्रोतापन्न होता है, वह मार्ग से च्युत नहीं हो सकता, वह परमज्ञान को अवश्य प्राप्त करेगा।

§ ८. अरहा सुत्त (२१. ३. १. ८)

अर्हत्

श्रावस्ती'' जेतवन ''।

भिक्षुओ । क्योंकि भिक्षु इन पाँच उपाटान-स्वन्धों के समुद्र्य, अस्त होने, आस्वाट, दोप और छुटकारा को यथार्थत जान उपादानरहित हो विमुक्त हो जाता है, इसी से वह अर्हत् = श्लीणाश्रव = बहाचर्यवास समाप्त कर लेनेवाला = कृतकृत्य = भारमुक्त = अनुप्राप्तसटर्थ = भववन्धन जिसके क्षीण हो गये हैं = परमज्ञान से विमुक्त कहा जाता है।

§ ९. पठम छन्दराग सुत्त (२१.३ १ ९)

छन्दराग का त्याग

श्रावस्ती ' जेतवन

भिक्षुओं ! रूप के प्रति जो तुम्हारा छन्द=राग=निन्द्=तृष्णा है उसे छोड़ दो । इस तरह वह रूप प्रहीण हो जायगा, उिच्छन्नमूल, शिर कटे ताढ के ऐसा, मिटाया हुआ, भविष्य में जो उग नहीं सकता । वेदना , सज्ञा , सरकार , विज्ञान के प्रति ।

§ १ . दुतिय छन्दराग सुत्त (२१ ३ १ १०)

छन्दराग का त्याग

श्रावस्ती जेतवन

भिक्षुओ ! रूप के प्रति जो तुम्हारे छन्द=राग=निद=तृष्णा, उपाय, उपादान, चित्त का अधिष्ठान अभिनिवेश, अनुशय हैं उन्हें छोड़ दो । इस तरह वह रूप प्रहीण ।

वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

थन्त वर्ग समाप्त

ह ३ सफ्काय सुच (०१ ३ १ ३)

सरकाय

थापस्त्री 'खेतवत ।

भिश्वभी ! में दुष्टें साकाय सकायमसूद्य वान्काय-विरोध और सकायनिरोधगासिनी प्रतिपद्य का उपवेक करेंग

[पुष्पम्]

६ ४ परिक्रोयस सप (२१ ३ १४)

परिजेय धम

भावस्ती जेतवनः ।

मिश्चको | में तुम्बें परिशेष पानों का उपदेश करूँना परिशा का और परिशादा का शुनो । मिश्चको | परिशेष कार्र काम के मुक्त परिशेष कर्म है केदना संख्या मौकार विद्याप परिशेष कर्म है। मिश्चको | कृष्टी को परिशेष कार्म करते हैं।

हु५ पठम समग्रसुच (२१३ १ ७)

पाँच उपादान स्कन्ध

भाषस्ती जेतदन ।

मिह्नको ! पाँच वपानाम-स्कन्त है। बीत से पाँच ? जो यह कान-रपानाम-स्कन्त ।
सिह्नको ! जो अगाय या आक्रम हम पाँच वपानाम-सकन्त्रों के शास्त्राव होन कार हास्कार को नपार्थका नहीं आगते हैं । जानते हैं वे स्वयं द्यान का साह्यास्त्रार कर साम को गात हो विदार करते हैं।

इ.६ दुतिम समण ग्रुच (२१ ३ १ ६)

पाँच बयावास स्थल्य

धावस्ती जेतवन"।

मिह्नुको] को सम्म का नाह्यण वृत्त पाँच वपावान-रहन्यों के समुद्रव, वस्त होते, आसाई, दोष और प्रस्करार को प्रवार्वतः नहीं कानते हैं । कानते हैं, वे स्वयं जान का साहास्त्रार कर ।

§ ७ सोतापभ सुच (२१ ३ १ ७)

कोतापच को परमहान की प्राति

भावली जेतवन ।

मिशुभी ! म्बाकि वार्ववाधक इत गाँव ब्यादान-स्वन्धों के समुद्रव जस्त दोने, आसार

द्रोप ओर पुरकारा को यथार्थतः जानता हे, इसी से यह स्त्रोनापत्र होता है, वह मार्ग से च्युत नहीं हो सकता, यह परमज्ञान को अवश्य प्राप्त करेगा।

§ ८. अरहा सुत्त (२१. ३. १. ८)

यहंन्

श्रावस्ती'' जेतवन '।

भिक्षुओं ! ध्योकि भिक्ष इन पाँच उपादान-स्कन्धों के समुद्रम, अस्त होने, आम्बाद, दोप और घुटकारा को यथार्थत जान उपादानरिहत हो विमुक्त हो जाता हे, इसी से वह अर्हत् = क्षीणाश्रव = बहाचर्यवास समाप्त कर छेनेवाला = कृतकृत्य = भारमुक्त = अनुप्राप्तसद्र्य = भवयन्धन जिसके क्षीण हो गये हैं = परमजान से विमुक्त कहा जाता है।

§ ९. पठम छन्दराग सुत्त (२१.३ १ ९)

इन्दराग का त्याग

श्रावस्ती ' जेतवन ।

भिक्षुओं । रूप के प्रति जो नुम्हारा छन्ड=राग=निन्ड=तृष्णा है उसे छोड़ दो । इस तरह वह रूप प्रहीण हो जायगा, उच्छित्तमूल, शिर कटे ताड़ के ऐसा, मिटाया हुआ, भविष्य में जो उग नहीं सकता । वेदना , सज़ा , सरकार'', विज्ञान के प्रति ।

§ १० दुतिय बन्दराग सुत्त (२१ ३ १ १०)

छन्दराग का त्याग

श्रावस्ती जेतवन '।

भिक्षुओ ! रूप के प्रति जो तुम्हारे छन्द=राग=निड=तृष्णा, उपाय, उपादान, चित्त का अधिष्ठान अभिनिवेश, अनुशय हैं उन्हें छोड़ हो । इस तरह वह रूप प्रहीण ।

वेदना , मज्ञः , मस्कार , विज्ञान ।

अन्त वर्ग समाप्त

दूसरा भाग

धर्मकथिक वर्ग

ु १ पठम भिनश्चुसुचा(२१३२**१)**

भविधा क्या है ?

धायस्ती जेतवन ।

तम कोई भिछु कहाँ मानवान च नहाँ आधा और भगवान का धमिनादन कर एक बोर कैंद्र गागा।

एक बार मैंद दस मिश्रु नं भगवाय से यह कहा "जनते ! कोग शविचा सविचा' कहा करते हैं। मन्ते ! सविचा नया है? सविचा केसे होतों है ?

भिक्ष ! कोई नहान्युवकनन कर की नहीं ज नता है कर के समुद्द को नहीं बानता है कर के मिरोप को नहीं जानता है, कर की निरोधग मिनी मुतिपदा (== साथ) का नहीं बाबता है ।

बेदन' को ; संद्रा को ; संस्कार को ; विज्ञान की । मिश्च ' इसी को कहते हैं अविधा' । इसी से मंदिया होती है।

§ २ दतिय मिम्स्य सत्त (२१ ३ ^२ २)

विद्यायमा है ?

भावस्ती जेतयम । एक शेर कट उम निश्चने शमकात् को कहा "शम्ते किया विद्या कहा करते हैं। प्रम्म ! विद्या व्याद है विद्या कियम कोटी हैं।"

मित्र । नीर्षे परिवतः कार्यभावक रूप को बानना है रूप के मशुरूव का । रूप के निरोध रूप की निरोधातिमधी प्रतिचया का आख्या है।

वेदना । संज्ञाः । संह्यारः । विज्ञानः । सिक्षः ! इसी को विकासकते हैं इसी से विकासीनी है।

🖇 पटम कथिक सुच (०१ ३ २ ३)

कार धमकशिक कैस होता ?

भागाली जिल्लाम ।

कारणां प्राप्त के प्राप्त के भगवाम् का कहा 'अस्त (लोग 'समेंडियक 'कार्यक्रिक क्या करते के दलन मित्रु में भगवाम् का कहा 'अस्त (लोग 'समेंडियक 'कार्यक्रिक क्या करते हैं। कर्णा कीर्द्र समेंडियमेंडियक किंगे दोना है।

मितु । विदे कोई का हो विवेदक्तिमण कान आर उसके निरोध के विकास में उपनेता नहें तहें इतन भार में यह धर्माविक बढ़ा अर महत्ता है। निष्कु । विद कोई कर के निर्धेदकीरान्य धीर निरोध के निर्धे कामान्य हो में। उतन में वह धर्मानुष्योवनिष्ठक बढ़ा आ महता है। निर्धु । विद् धर्मु कर क निवेंद=बैराग्य और निरोध से उपादानरहित हो विमुक्त हो गया हो तो कहा जायगा कि उसने अपने देसते ही देखते निर्वाण पा लिया।

वेदना ''। संज्ञाः' । संस्कारः । विज्ञानः ।

६ ४. द्तिय कथिक सुत्त (२१ ३ २ ४)

कोई धर्मकथिक कैसे दोता?

श्रावस्ती ... जेतवन

भन्ते । कोई धर्मकथिक कैसे होता है ? कोई धर्मानुधर्मप्रतिपन्न कैसे होता है ? कोई अपने देखते ही देखते निर्वाण कैसे प्राप्त कर छेता है ?

[ऊपर जैसा]

§ ५. वन्धन सुत्त (२१ ३. २. ५) -

वन्धन

श्रावस्ती जेतवनः।

मिक्षुओ । अज्ञ = पृथक्जन रूप को आत्मा समझता है, रूपवान् आत्मा है ऐसा समझता है, आत्मा रूप है, या रूप में आत्मा है ऐसा समझता है। मिक्षुओ ! कहा जाता है कि यह अज्ञ = पृथक्जन रूप के वन्धन से बँधा है, वाहर और भीतर गाँठ से जकड़ा है, तीर को नहीं देख पाता, पार को नहीं देख पाता, वद्ध ही उत्पन्न होता है, वद्ध ही मरता है और वद्ध ही इस लोक से परलोक को जाता है।

वेदना । संज्ञा । सस्कार । विज्ञान ।

भिक्षुओ। पिण्डत आर्यश्रावक रूप को आत्मा नहीं समझता है, रूपवान् आत्मा है ऐसा नहीं समझता है, आत्मा में रूप है या रूप में आत्मा है ऐसा नहीं समझता है। भिक्षुओ। कहा जाता है कि यह पण्डित आर्यश्रावक रूप के बन्धन से नहीं व्या है, वाहर और भीतर गाँउ से नहीं जकड़ा है, तीर को देखनेवाला है, पार को देखनेवाला है। वह दु ख से मुक्त हो गया है ऐसा मैं कहता हूँ।

षेदना । सज्ञा । सस्कार । विज्ञान ।

६६ पठम परिम्रचित सुत्त (२१ ३ २.६)

रूप के यथार्थ ज्ञान से पुनर्जन्म नहीं

श्रावस्ती जेतवन '।

मिक्षुओं ! क्या तुम रूप को 'यह मेरा है, यह में हूँ, यह मेरा आत्मा है' ऐसा समझते हो ? नहीं भन्ते !

ठीक है, भिक्षुओ । तुम्हे ऐसा ही यथार्थत प्रज्ञापूर्वक समझ छेना चाहिये।

षेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान । इस प्रकार देख और जान पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता है ।

§ ७. दुतिय परिम्रुचित सुत्त (२१ ३ २. ७)

क्षप के यथार्थ ज्ञान से पुनर्जनम नहीं

थावस्ती जेतवन ।

[ठीक ऊपर जैसा]

≸ ८ सम्प्रोजन सुच (२१३ २८)

संयोजन

धायस्ती 'सेतयम 1

मिशुओ ! संवोजनीय धर्म और संवोजन के विषय में उपदेश करूँगा । उसे सुनी ।

मिशुमी ! संधे बनीय धर्म कीय से हैं और संयोजन पया है ?

मिल्लुमो ! रूप संयोजनीय घमें है, जो उसके मति छन्द्=राग है यह संयोजन है।

बेर्मा । संद्राः । संस्कारः । विद्यानः ।

मिश्रुमो ! यही संवोजनीय चर्म भीर वंदोजन कहकाते हैं।

५९ उपादान सुच (२१ ३ २ ९)

उपादान

भावस्ती 'जेतवन ।

सिद्धानो ! उपादानीय वर्ग भीर उपादान के विषय में उपदेश कर्नेगा ! वसे सुनी ''। सिद्धानो ! क्य उपादानीय वर्ग है, और उसके प्रति की छन्दराग है वह उपादान है । हेरता : स्टेंगा : संस्थार '' ! किलान' ''

§ १० सीछ सुच (२१ ३ २ **१**०)

जीहवान के मनन-योग्य सर्थ

एक समय मायुष्पान् सारिपुत्र जीर मायुष्पान् महाक्षेद्वित साराजसी के रास ऋषिपतन स्थाराय से विकार करते थे ।

तत कानुष्पात् महाकोहित संस्था समय प्यान से वह वहाँ आयुष्पात् शारिपुत्र में वहाँ गने।''' वह बोक "सन्तर सारिपुत्र ! बोकवाय मिल को किय वसों का होड़ स मक्द करण वाहियें!"

आहुत कोहित ! सीक्ष्मण् मिश्च को श्रेष्ठ से अपन करना चाहित्रे !कि —ने पाँच कपादान स्कन्म सफिल्य इत्या रोग हर्गन्य बाव वाप पीवा पराया हुत्य, सुरूव और क्षतारम हैं !

धीन से रॉव र बो नव कर जगाराज स्कल्य । अनुसार देशा हो भरता है, कि सीक्याण् निश्च पॉच उपादान-स्कल्यों का ऐसा समय कर कोतापति के सक सामाजास्त्र का के।

अञ्चल सारिएक ! क्रीतापक्ष मिझ को किन वर्तों का श्रीक से सथव करवा चाहिये ?

बातुस कोड़िय [कोवायक निष्ठा को भी वहीं औक से अवन करना बाहिये कि वे पाँच बयाहान-रुप्रण्य समित्र । आयुर्व [वां सकता है कि कोवायक सिद्धा येखा अनन कर सक्वदागाओं । कनागाओं कर्मर के अब्दा सामाध्यक्त कर के।

कारच सारिएक ! कार्य को किन वर्मों का डीक से मानव काना जातिये !

स्पञ्च कोहित ! काँच को भी बही सनन करना खाहिने कि—ये पाँच बपायान रहन्य सनिक हुन्क रोम हुन्य माच पाप पीवा नकारम है। बाबुस ! काँच को कुछ और करना या किने का नास करना नहीं रहात है इस पतों की मानका का करनास पहाँ सुक्षपूर्वक विदार करने सना स्वर्धिमान कीर पोखा रहने के किये होता है।

§ ११. सुतवा सुत्त (२१ ३,२ ११)

श्रुनवान् के मनन योग्य धर्म

घाराणसी ।

['शीलवान् ' के चदले 'शुतवान् ' करके जपर जैसा ज्या का त्या]

s १२. पटम कप्प सुत्त (२१ ३ २ १२)

अहंकार का स्याग

श्रावस्ती'''जेनवन '।

तय, आयुष्मान् कष्प ' एक ओर बैठ, भगवान् से घोले, "भन्ते । क्या जान और देख इस विज्ञानवाले शरीर से तथा घाएर के सभी निमित्तों में अहंकार, ममद्वार, मान और अनुशय नहीं होते हैं ?

कष्प ! जो कुछ रूप-अतीत, अनागत -है सभी न मेरा है, न में हूँ और न मेरा धारमा है। इसे जो यथार्यंत प्रज्ञापूर्वक देखता है। वेटना । संज्ञाः । विज्ञानः ।

कष्प ! इसे ही जान ओर देखकर इस विज्ञानवाले शरीर में तथा वाहर के सभी निमित्तों में भर्डकार' नहीं होते हैं।

§ १३. दुतिय कप सुत्त (२१. ३. २ १३)

अहकार के त्याग से मुक्ति

' भन्ते ! फ्या जान और देख इस विज्ञानवाले शरीर में तथा बाहर के सभी निर्मित्तों में अहंकार, ममंकार, मान और अनुसब से रहित बन, इन्द्र से परे हो शान्त और सुविमुक्त होता है।

कपा। जो रूप-अतीत, अनःगत —है सभी न मेरा है, न में हूँ और न मेरा आत्मा है। इसी को यथार्थत प्रज्ञापूर्वक देख छेने से कोई उपादानरहित हो दिमुक हो जाता है।

वेदनः । सज्ञः । सस्कारः । विज्ञान

कप्प ! इसे ही जान ओर देख इस विज्ञानकाले कारीर में तथा वाहर के सभी निमित्ता में अहकार ममंकार, मान और अनुशय से रहित बन, मन इन्द्र से परे हो, कान्त और सुविमुक्त होता है।

धर्मकथिक वर्ग समाप्त

तीसरा भाग

स्रविचा वर्ग

६ १ पठम समृद्यधम्म सुत्त (२१ ३ ३ १)

मविद्या क्या है ?

भाषस्री खेतयम । तव कोई सिमु कहाँ मगवान् के वहाँ काया और नगवान् का धानवादन कर एक ओर बैंड गवा । पुत्र और बैठ उस मिसु ने मगवान् को बद्दा "मन्ते ! क्षोग 'व्यविचा अविचा' कहा करते हैं । भन्ते !

मविद्या प्या है ? कोई अविद्या में कैस पहला है हैं

मिछ्र | अञ्⇒र्षक्तन समुद्यक्तां (=उरन्ड होना जिसका स्वमाव है) क्षप को समुद्रवसर्ग के पेसा तत्वतः नहीं अनतः है। व्यवस्ती क्य को व्यवसर्ग के पेसा तत्वतः नहीं जानता है। समुद्रक ग्यमधर्मी क्रुप को समुद्द-अवधर्मी क्रुप के ऐसा वलकः नहीं बानका है।

समुद्दवर्मा वेदनाको । संशाको । संरक्षर को । विश्व व की । मिञ्च | इसी को 'अविद्या' कहते हैं । इसी से कोई धविचा में पहता है ।

इस पर, इस मिलु ने भगवान, को कहा "मन्ते ! कोग 'विया विया' कहा करते हैं। भन्ते ! विचा क्या है ? किसी को विचा कैसे होती है हैं

मिछ्न । परिवत भार्यमानक सञ्चर्यकर्मी कप को सञ्चर्यकर्मी के ऐसा संभक्तः बाह्या है । स्वर मर्मी कर को ध्यमकर्मी के पैसा सरवतः अ तता है । समुद्य-व्यथमर्ग कर की समुद्य-व्यथमर्ग के पैसर वध्यवः ऋनता है ।

वेदना : संजा ं धंस्कार । विज्ञान ।

मिद्ध ! यही विका है । किसी को विका ऐसे ही होती है ।

हुरै दुतिय सञ्चदयभम्म सुच (२१ ३ ३ २)

मिया प्या है ?

एक धमन भागुप्पान् सारितृत्र भीर बायुष्पान् महाकोद्वित वाराणसी के पास सापिपतन सुगद्दाय में बिहार करते थे।

त्य भेष्या समय मानुष्मान् महानोहित मानुष्मान् सारिपुत्र से बीचे "मानुष्म सारिपुत्र ! कांग 'व देशा अदिका' कहा करते हैं । अनुसा ! अदिया नवा है ! कोई अदिया में कैंगे पहता है !" थातुरा [बह्र-द्वयरवय समुद्वयमी क्ष्य को । [क्रपर विसा]

६२ ततिय सम्रदर्थभम्य सत्त (२१ ३ ३ ३)

विचा क्या है?

कपिपतन सुगदाय "। भाषुम | क्षोप 'विक्ता विक्ता' कहा करने हैं । अजुम ! विका क्या है | बोई विका कैसे काम रत्या है।

भाषुस । पण्डित धार्यक्षावक समुद्यधर्मा रूपको "।

[अपर जैसा]

§ ४. पठम अस्साद सुत्त (२१. ३. ३. ४)

अविद्या क्या है ?

ऋषिपतन मृगदाय

ं 'आदुस सारिपुत्र | लोग 'अविद्या, अविद्या' कहा करते हैं। आदुस ! अविद्या मगा है ? कोई पविद्या में कैसे पढता है ?

भावुस । अज्ञ=पृथक्जन रूप के आस्वाद, दोप और मोक्ष को यथार्थतः नहीं जानता है।

षेदना के..., संज्ञा के. ., संस्कार के . , विज्ञान के ।

भावुस । यही अविद्या है । ऐसे ही कोई अविद्या में पदता है ।

§ ५. दुतिय अस्ताद सुत्त (२१. ३. ३. ४)

विद्या क्या है ?

ऋषिपतन मृगदाय ।

आवुस सारिपुत्र ! लोग 'विद्या, विद्या' कहा करते हैं। अ बुस ! विद्या क्या है... श आवुस ! पण्डित आर्यश्रावक रूप के आस्वाद, दोप और मोक्ष को यथार्थत जानता है। चैदना के , सज्ञा के ' श सस्कार के , विज्ञान के । आवुस ! यही विद्या है।

§ ६ पठम समुद्य सुत्त (२१३ ३६)

अविद्या

ऋषिपतन सृगदाय ।

आञ्चा । अज्ञ = पृथक्जन रूप के समुद्य, अस्त होने, आस्वाद, दोप और मोक्ष को यथार्थंतः नहीं जानता है।

वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

अञ्चस । यही अविद्या है।

§ ७. दुतिय समुद्य सुत्त (२१ ३.३ ७)

विद्या

ऋषिपतन मृगदाय ।

आयुस ! पण्डित आर्यश्रावक रूप के समुद्य, अस्त होने, आस्वाद, दोप और मोक्ष को यथार्थत जानता है।

वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान । आसुस ! यही विद्या है ।

§ ८. पठम कोहित सुत्त (२१ ३. ३. ८)

सविद्या क्या है १

भिष्तिन मृगदाय ।

तव, सारिपुत्र संध्या समय ।

एक और पंठ शालुप्पान् सारिजुन कायुष्पान् महाकोट्टित से बोटे 'आयुरा सहाकोट्टित ! कोग 'किंपसा अविदार' यहा करते हैं । आदुग ! अविदा क्या है !

भाषुता । शता = पूर्वकृतन रूप के शास्त्रात् कृति शास हो के कहार्यतः नहीं कानता है। वेदवा विकास ।

भायस ! यही भविचा है ।

इस पर धार्युप्पाण् मारियुव आयुप्पाण् कोहित सं बोळ " अनुस ! विका वया दे ?" भाग्रस ! भारवार्ष कार कोत कोत को स्वाधीता कानता है । यही विका है ।

६९ द्विय कोद्रित स्त (२१ ३ ३ ९)

विद्या

ऋषियतम सृगदाय ।

भजुन काहित ? सविधा का है ? बाजुन ! मह = प्रवस्त्रव रूप के समुद्द काल दोने आस्वाद, दोच और मोझ को पर्यार्थत नहीं कालता है ।

नवाहः। जन्तुसः ! यही भविषा है।

मञ्जा । नहां मानामा इ.ज. इस दर, आयुष्पाण् सारिपुत्र आयुष्पात् महत्कोहित से बोसे आयुस क्षेत्रित ! विचा क्या है !

भारत पा का भारत है पनिषठ आर्थआनक पूर्ण के श्रमुद्दण अस्त होते, जास्त्राहः दोप और मोहर को वकार्यना सामग्री है ।

मानस । यही विद्या है।

डु १० विविय कोद्रित श्रुच (२१ ३ १ **१०**)

विद्या और शविद्या

स्तिपितन मृगदाय । अञ्चय निम्म = प्रमृज्य कप को नहीं समया है कम के स्मृत्य को नहीं कामता है, कम के निरोध को नहीं मनता है कम के निरोधन जी आरों का नहीं कामता है।

वेदय विद्यंत ।

भाउस ! पड़ी मविया है ।

स मुख ! पण्डित मानेनाएक कर की मानता है, कर के समुद्ध को सावता है, कर के वितोद को सनता है, कर के निरोजराजी जार्च को सावता है।

वेदना निवाम । जानचा वही विशासी।

मविद्या वर्षे समाप्त

चौथा भाग

कुक्कुल वर्ग

§ १. बुक्कुल सुत्त (२१. ३. ४ १)

रूप धधक रहा है

श्रावस्ती " जेतवन ।

भिक्षुओं ! रूप धघक रहा है। वेदना ''। सहा' । सम्कार । विज्ञान वधक रहा है।

भिक्षको ! पण्डित आयंश्रायक रूप को ऐसा जान, रूप से निर्वेद करता है, बेदना से , संज्ञा से , सस्कार से , विज्ञान से ।

निर्वेद करने से राग-रहित हो जाता है पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता।

§ २. पठम अनिच सुत्त (२१ ३. ४. २)

अनित्य से इच्छा इटाओ

थावस्ती जेतवन ।।

भिक्षुओ । जो अनित्य है उससे तुम्हें अपनी इच्छा हटा छेनी चाहिये । भिक्षुओ ! स्या अनित्य है १

रूप अनित्य है, उससे तुम्हे अपनी इच्छा हटा छेनी चाहिये। वेदना '। सज्ञा''। सस्कार''। विज्ञान'''।

भिक्षुओ ! जो अनित्य है उससे तुम्हे अपनी इच्छा हटा लेनी चाहिये।

§ ३-४. दुतिय-तिय-अनिच्च सुत्त (२१ ३ ४ ३-४.)

अनित्य से छन्दराग-हटाओ 🗸 🤭

थावस्ती'''जेतवन '।

भिक्षुओ । जो अनित्य है उससे तुम्हें अपना राग छन्दराग हटा छेना चाहिये।

§ ५-७. पठम-दुतिय-तिय दुक्ख सुत्त (२१ ३ ४ ५-७)

दुःख से राग हटाओ

थावस्ती ' जेतवन'''।

मिक्षुओ ! जो दु'ख है उससे तुम्हें अपना छन्द (=इच्छा) , राग•••, इच्छाराग हटा छेना चाहिये । एक ओर येड बाहुप्पान् सारिपुत्र कायुष्पान् महाकोद्वित से बोडे "बाहुस महाकैहित! क्रोप 'बहिया अदिया' कहा करते हैं ! बाहुय ! बहिया क्या है !

भावता भावता कहा करत है। आनुसा ग्रामान है। भावता । अल = प्रयुक्त क्या के भावता है।

नेदना विद्यात ।

बादुस ! यही विषया है ।

इस पर बायुप्पान् सारिपुत्र बायुप्पान् कोड्डित से बोक्रे " बाहुस ! विद्या क्या है !" नायुष्ट ! बास्ताव दोप जीर सोक्र की वदार्यता बावता है । यही विद्या है !

§ ९ दुविय फोद्वित सुच (२१ ३ ३ ९)

विद्या

ऋपिपतन सृगदाय ।

माजुस कोडिल ! अविधा प्या है ?

शानुस ! शहा = प्रवक्तन रूप के समुद्र अस्त होने आस्ताद दोप और मोझ को पर्धार्म नहीं कामता दें ।

कारुस ! यही शनिया है।

इस पर, कायुम्मण् सारिपुत्र वायुम्माण् सहाकोड्डिय से कोसे " आयुस के विकारणा है?

जानुस | पन्तित मार्यमानक रूप के समुद्दण अस्त होने, जास्ताह, दोष और सो:

बानता है।

अञ्चल ! यही विचा है।

§ १० ततिय को द्वित शुत्त (२१ १ १ १

विद्या और मविद्या

क्षरिपतन सुगदाय । सनुष्ठ | सङ = इयस्वन क्य को नहीं कावता है कर के विरोध को नहीं कावता है क्य के विरोधमानी मार्ग को नहीं =

वेदनः विश्वनः ।

धानुस | पड़ी अनिया है ।

स बुस ! परिवास आर्थशायक क्रम की जानता

विरोध को बामता है, कप के निरोधयानी सार्ग को बाम

वेदमा^न विद्यास । आयुक्त | बडी विद्या है।

मबिद्या १

पाँचवाँ भाग

म्प्रि वर्ग

९ १. अन्द्रत्तिक सुत्त (२१. ३ ५ १)

अध्यातिमक सुप-दु ख

श्रायम्ती : जेतवन

भिक्षुओ । किसके होने से, किसके उपादान से आध्यास्मिक सुख-दु ख उत्पन्न होते है ? भनते। हमारे धर्म के मूल तो भगवान् ही हैं

भिक्षुओं ! रूप के होने से, रूप के उपाटान से आध्यात्मिक सुए-दु ख उरपन्न होते हैं । वेदना के होने से ा संज्ञा । सस्कार । विज्ञान

भिक्षुओं। तो क्या समझते हो, रूप नित्य है या अनित्य १

भन्ते । अनिस्य है ।

जो अनित्य है वह दु म्ब है या सुख ?

भन्ते । द्वा है ।

जो अनित्य, दु.स और परिवर्तनशील है उसका उपादान नहीं करने में क्या आध्यात्मिक सुख-दु'ख उत्पन्न होंगे ?

नहीं भन्ते।

वेदना । संज्ञा । संस्कार । विज्ञान इसे जान और देख, पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता है।

६ २. एतं मम सुत्त (२१. ३ ५. २)

'यह मेरा है' की समझ क्यो ?

श्रावस्ती जेतवन ।

भिक्षुओ । किसके होने से, किसके उपादान से, किसके अभिनित्रेश से कोई ऐसा समझने लगता है कि—यह मेरा है, यह मैं हूँ, और यह मेरा आत्मा है ?

धर्म के मूल भगवान् ही हैं

भिक्षुओं ! रूप के होने से, रूप के उपादान से, रूप के अभिनिवेश से कोई ऐसा समझने लगता है कि—यह मेरा है, यह मैं हूँ, और यह मेरा आत्मा है। वेदना के होने से । सज्ञा । सस्कार

विज्ञान

भिक्षुओं ! तो क्या समझते हो, रूप निस्य है या अनित्य ।

इसे जान और देख , पुनर्जन्म की नहीं प्राप्त होता है।

48

[§] ८~१० पठम-बुतिम-विसिम मनच सुच (२९ ३ ४ ८~५०)

धनारम से राच प्रदाधो

भाषस्ती जेतवम ।

मिल्ली ! यो जनाध्य है उससे तुन्हें अवना सन्द शय , सन्दराय इस सेना चाहिने !

ीरी परम कलपुच सुच (२१ ३ ४ ११)

वैराग्य-वर्वेक विद्वरमा

भाषकी खेतवत ।

मिश्रुको | अञ्चासे महत्त्वेच कुक्युब का बह वर्स है कि सदा कर के प्रति वैदारप-पूर्वक विदार को | फेन्सा के प्रति | अर्थका | विद्यार | विद्यार |

इस प्रकार नेरान्य-पूर्वक विद्वार करते हुये यह कप का जाब सेशा है वेदना की काम संसा है

विशाद को बान केता है।

बहु क्य को आज कर बेदना को विश्वान को काम कर, क्य से मुख ही बाता है विश्वान के मुख ही बाता है। कामि बार अरब सोक परिदेव हुन्द, दीर्मनस्य और उपावास से मुख ही बाता है। क्षत्रमा सुरार से मुख ही बाता है—स्या में कहता है।

\$ १२ दतिय **इ**लपुत्त सच (२१ १ ४ १२)

अतिस्य-युद्धि से विद्वरता

धावस्ती जेतवन ।

सिह्नको | भदा से प्रतिविद्य हुने कुकपुत्र का यह वर्ष है कि कुप के प्रति विशिध-तुन्दि से विद्याल को । देशमा के प्रति । पेर्सन । किसाब के प्रति ।

काम से अब हो बाता है—पेसा में बदला है।

६ १३ इक्छ छच (२१ ३ ४ १३)

भगारम-वृद्धि से विद्वरमा

ध्याकार्ना क्षेत्रकत् ।

"क्य के मति अवस्था-मुद्दि से विद्वार करें। साथ के मूक हो कता है--येसा में करता हैं।

अवकृष्ण बर्गे समाप्त

पाँचवाँ भाग

एष्ट्रि वर्ग

६१. अज्यक्तिक सुन (२५. ३ ५. १)

अध्यातिमक सुग इ.स

भिद्धभी । विसक्ते होने से, हिसके द्रपादान से आध्याप्सिक नुखन्दु स उत्पत्त होने है ?

भन्ते ! हमारे धर्म के सूछ तो भगपान गाँ हैं । । मिधुओं ! रूप के होने में, रूप के उपाणन में अध्यामिक सुम्य-दुल उथाय होते हैं । येदना के

होते में ''। सज्ञां । संस्कार । विज्ञान ।

सिक्षको । तो प्रवास्त्रकाने हो, रूप निष्य है या अनित्य ?

भन्ते । अविस्य है ।

जो अनित्य में बह दुत्य हुना सुन १ भन्ते । दुन्द हैं।

आयस्त्री जेतवन

हु व उपम्न होंगे ? नहीं भन्ते ।

षेदना '। सङ्घा । सस्कार । धिङ्माम । इसे जान और देख, चुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता है ।

§ २. एतं मम सुत्त (२१. ३ ५. २)

नो अनि य, युःख और परिवर्तनगील हैं उसका उपादान नहीं करने में क्या आध्यात्मिक सुख-

'यह मेरा है' की समझ क्या ?

श्रावस्ती जतवन ।

भिधुओं। किसके होने से, किसके उपादान से, किसके अभिनिवेश से कोई ऐसा समझने लगता

है कि यह मेरा है, यह मे हैं, और यह मेरा आत्मा है ? धर्म के मूल भगवान ही है ।

भिक्षुओ । रूप के होने से, रूप के उपादान से, रूप के अभिनिवेश से कोई ऐसा समझने छगता है कि—यह मेरा है, यह में हूँ, और यह मेरा आत्मा है। बेदना के होने से । सजा । सस्कार ।

विज्ञानः ।

भिक्षुओं । तो क्या समझते हो, रूप निस्य है या अनित्य ।

इसे जान और देख , पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता है। ५१

§३ एसो अत्तासुच (०१ ३ ५ ३)

'भारमा स्रोक ६' वी मिथगाइपि क्यों है

धापासी जोतधन ।

मिश्रुको ! दिसक होन से किसक उपादाण सं किससे अभिनिषेश से वृंद्धां मिष्पान्टीट (अभिष्या चारमा) उपाय होती है—को भागमा है वह कांक है को में सर्वर गिर्म क शुंच क साव्यत = अधि विकास सभी हो बाउँगा !

पर्से के मूछ मगवान ही ।

मिह्नची ! रूप के होने से पेची सिच्या-रश्चित्रसम्बद्धांती है । वैद्या के द्वार्ग से । संज्ञा । संस्कृत । विद्याल के दोने के ।

मिलुओ | यो क्या सतसते हो एत्य नित्य इ या सनित्य है इसे काम कीर रेटा जानकान्य को मुर्जी प्रत्य होता है।

६ ४ नो भ में सियासच (०१ ३ ५ ४)

न में हाता' की विष्णादृष्टि क्वी है

भाषस्तीः 'जतयस्तः'।

सिक्षुमी | किछ के दोने से पैची सिण्या-दिंड उत्तव दोसी है—य मैं दाता न सेरा दाये। न मैं हैंगा न सेरा दोगा !

पर्म के सूछ सगवान श्री ।

_ मिसुमी ! रूप के होन से ऐसी सिव्यान्तिक त्रवक होती है । वेदवा के होने स्र । संज्ञा । मंद्रवारणा विकास के होने से ।

सिश्चाची ! 'क्य विस्त है था मिनस्य । इसे बाम कीर देखा पुगर्जन्म को नहीं गास होता है।

§ ५ मिण्डासुच (२१ ३ ५ ५)

मिक्या-इप्रि क्यों क्यम होती है है

भाषसी संतपन ।

मिश्रुको ! किसके होने से निम्दा-विद्वे वश्वक होती है ?

मन्ते ! धर्म के सुक भगवान् ही ।

सिद्धानी ! कम के दीने से सिम्बान्तति जलक दोशी है । वेदमा के 1 सेवा) संस्कार । विकास ।

भिश्वची १ कप नित्व है या अभित्य १ इसे बाव और देख अन्तर्गम को नहीं मान होता है।

> ई रैंसकीय सुर्च(२१३५६) सरकाय दक्षि फर्जी दक्षिती हैं?

धापस्ती 'खेतपन । मिश्रको । क्रियंके दीवे संग्यासम्बद्धि कोली है १ भिधुओ । रूप के होने से । संस्काय-दृष्टि होती है। वेदमा कें ...। संद्रायः। संस्कारः। विज्ञानः।

भिश्रुओ । रूप निस्य है या धनित्य १

जो अनित्य हैं • नया उसके उपादान नहीं करने से सरकाय-इष्टि उस्पन्न होगी १ नहीं भन्ते !

वेदनाः । संज्ञाः । संस्कारः । विज्ञान

§ ७. अन्तानु सुत्त (२१. ३. ५. ७)

भातम दृष्टि द्यों होती है ?

मिधुओ । किसके होने सं आत्म-इष्टि होती हैं ?

' मिक्षुओ ! रूप के होने से ''आन्म-दृष्टि होती है । चेदना' '। सङ्गा' । सस्कार' । विज्ञान'''। मिक्षुओ ! रूप नित्य है या अनित्य '?

जो अनित्य है क्या उसके उपादानं नहीं करने से आय्य-दृष्टि उत्पन्न होगी ? नहीं भन्ते !

वेदना । सज्ञाः । सस्कारः । विज्ञानः ।

§ ८. पठम अभिनिवेस सुत्त (२१ ३. ५. ८)

संयोजन क्यों होते हैं १

श्रावस्ती जेतवन

मिशुओं । किस के होने से सयोजन, अभिनिवेश, विनिधन्ध उत्पन्न होते हैं ?
रूप के होने से । वेदना के होने से । सज्ञा । सस्कार । विज्ञान के होने से ।

भिक्षुओ । रूप नित्य है या अनित्य ?

जो अनित्य है क्या उसके उपादान नहीं करने से सयोजन उत्पन्न होंगे ? नहीं भन्ते ।

§ ९. द्वतिय अभिनिवेस सुत्त (२१ ३ ५ ९)

संयोजन क्यों होते हैं?

श्रावस्ती जेतवनः।

['विनियन्ध' के बदले 'विनियन्धाध्यवसान' करके सारा सुत्र ठीक ऊपर जैसा]

§ १०. आनन्द सत्त (२१ ३ ५. १०)

सभी संस्कार अनित्य और दु ख हैं

श्रावस्ती:"जेतवन"।

सब, आयुष्मान् आतन्द् जहाँ भगवान् ये वहाँ आये और भगवान् से बोले, "भन्ते ! मुझे भगवान् सक्षेप से धर्म का उपदेश करें, जिसे सुन कर मैं अकेला एकान्त में अप्रमत्त स्थम-पूर्वक प्रक्षितातम हो विहार करूँ।"

ुँ३ एसो बचासुच (॰१३५३)

गासा छोक इ. की मिथ्याइप्रि क्यों है

भावस्ती जेतपन ।

तिहासी | फिसके होने से फिसके बपादान से फिसके विश्वित्रका से ऐसी सिक्या-पिट (क्सिक्या भारता) बराव होती है—को बात्सा है वह कोक है सो मैं सरकर नित्व ⊐ शुव ≈ साह्यठ ⊐ शर्विप रिवासयमा हो कार्द्रेगा !

वर्मे के मूक सगवान् ही ।

भिक्षुची | क्य के होने से पेसी मिन्या-पहि उत्पन्न क्सिती है । वेदना के होने से । संदार । संस्कार । विज्ञान के होने से ।

मिश्चमा ! तो क्या समझते ही क्य नित्य है वा मधित्य ? इसे बान नार देखा अनर्जन्य को नहीं गास होता है।

8 ४ नो च में सिया सूच (२१ ३ ५ ४)

न में होता' की विश्वादि क्यों ह

भ्रायस्ती' 'जनवन'"।

सिमुक्ती ! किछके होने से पुंछी मिण्या-दृष्टि उत्तव होती है—न मैं हाता न सेरा हाते; न मैं हैंग्य व सेरा हाता।

धर्म के सक सवदात ही ।

सिस्सी किए दिलाई बास्तिया ।

इसे बान और देखा "'पुनर्जन्म की नहीं मास होता है।

8 ५ मिण्डासच(२१ ३ ५ ५)

मिच्या-द्वयि पर्यो क्यच होती है १

भागसी जलबन । भिन्नची क्रिक्तके होने से मिन्यानहि बध्यक होती है ?

सन्ते । वर्म के मूळ भगवाण् श्री ।

सिक्षमी (क्य के दोने से सिन्धानकि कलक दोती है। वैद्वा के । संका । संस्कार "! विकास "

भिश्चाची िका निष्य देवा व्यक्तिया ? इसे काम चीर देवां पुनर्जन्य की नहीं मारा डोटा दें।

{६ सकाय सच (११३ **५ ६)**

सरकाय इप्रिक्यों दाती है ?

भायस्ती 'अंतयन । भिक्रिभो किमके दान में ' सन्धान-दक्षि हाती हैं है

दूसरा परिच्छेद

२२. राध संयुत्त

पहला भाग

प्रथम वर्ग

§ १. मार सुत्त (२२ १.१)

मार क्या है ?

थावस्ती' जेतवन '।

नय, आयुष्मान् राध जहाँ भगवान् ये वहाँ आये, और भगवान् का अभिवादन करके एक ओर

एक और बैठ, आयु'मान् राध भगवान् से बोले, "भन्ते ! लोग 'मार, मार' कहा करते हैं। भन्ते ! मार क्या है ?

राध ! रूप के होने से मार होता है, या मारनेवाला, या वह जो मरता है। राध ! इसलिये, तुम रूप ही को मार समझो, मारनेवाला समझो, मरता है ऐसा समझो, रोग समझो, फोड़ा समझो, घाव समझो, पीड़ा समझो। जो रूप को ऐसा समझते हैं वे ठीक समझते हैं।

वेदना । सज्ञाः । सस्कार । विज्ञान ।

भन्ते ! ठीक समझने से क्या होता है ?

राध । ठीक समझने से वैराग्य होता है।

भन्ते । वैराग्य से क्या होता है ?

राध । वैराग्य से राग-रहित होता है।

मन्ते ! राग-रहित होने में क्या होता है ?

राध । राग-रहित होने से विमुक्त होवा है।

भन्ते । विसुक्ति से क्या होता है ?

राध ! विमुक्ति से निर्वाण लाभ होता है।

भन्ते ! निर्वाण से क्या होता है ?

राध । अब, तुम पूछ नहीं सकते । ब्रहाचर्य का अन्तिम उद्देश्य निर्घाण ही है ।

इ. सत्त सुत्त (२२. १. २)

आसक कैसे होता है ?

आघरती ''जेतवन । एक भोर बैठ, आयुष्मान् राध भगवान् से बोले, ''भन्ते ! लोग 'सक, सक' कहा करते हैं। भन्ते ! कोई सक्त कैसे होता है ?

```
R+8 ]
                                    संबच-निकाय
                                                                    TRE & G to
      बाबन्द । तो क्या समझते हो क्या नित्य है वा अमित्य १
      वातिता शक्ते ।
```

को करित्य है वह राज्य है या सत्ता ?

कुम्ब मन्ते !

जो व्यक्तिया पुरक्त कार परिवर्तनशीक है उसे चया पैसा खमशवा डीक है कि-पह मैरा है पह

में हैं, यह मेरा थ.ध्या है ? नहीं सन्ते !

नेदमा । संक्षा । मेरकार । निजाय ।

महीं पन्ते ।

धानम्य ! इसकिये को कप्र कप--- नर्तात जनागत । इमें देख और जान जनर्जनम को नहीं जास हीशा है।

> रपि वग समाप्त बुक प्रकासक समाप्त स्कृष्य संयुक्त समाप्त ।

दूसरा परिच्छेद

२२. राध संयुत्त

पहला भाग

प्रथम वर्ग

§ १. मार सुत्त (२२ १. १)

मार क्या है ?

थावस्ती जेतवनः ।

तव, आयुष्मान् राध जहाँ भगवान् थे वहाँ आये, और भगवान् का अभिवादन करके एक ओर

एक ओर बैठ, आयुष्मान् राध भगवान् से वौले, "भन्ते । लोग 'मार, मार' कहा करते हैं। भन्ते । मार क्या है १

राध ! रूप के होने से मार होता हैं, या मारनेवाला, या यह जो मरता है । राध ! इसलिये, तुम रूप ही को मार समझो, मारनेवाला समझो, मरता है ऐसा समझो, रोग समझो, फोड़ा समझो, घाव समझो, पीड़ा समझो । जो रूप को ऐसा समझते हैं वे ठीक समझते हैं ।

वेदना । सज्ञाः '। सस्कार । विज्ञान ।
भन्ते । ठीक समझने से क्या होता है ।
भन्ते । वैराग्य से क्या होता है ।
भन्ते । वैराग्य से क्या होता है ।
भन्ते । वैराग्य से राग-रहित होता है ।
भन्ते । राग-रहित होने से क्या होता है ।
भन्ते । राग-रहित होने से विमुक्त होता है ।
भन्ते । विमुक्ति से क्या होता है ।
भन्ते । विमुक्ति से निर्वाण लाम होता है ।
भन्ते । निर्वाण से क्या होता है ।
भन्ते । निर्वाण से क्या होता है ।
राध । अब, तुम पूछ नहीं सकते । ब्रहाचर्य का अन्तिम उद्देश्य निर्वाण ही है ।

_६ २. सत्त सुत्त (२२. १. २)

आसक कैसे होता है ?

आवस्ती ' जेतवन । एक क्षोर बेठ, आयुष्मान् राध भगवान् से बोले, "भन्ते ! लोग 'सक, सक' कहा करते हैं। भन्ते ! कोई सक कैसे होता है ? राय क्य में भी सम्बन्धाता=मन्त्रि=मुख्या है और या वर्षी समा है, नेवरह स्था है इसी से वह 'सक कहा कारा है। देवना । संक्षा । संस्थार । विद्यान ।

राष | पैसे छड़के पा छड़िज्यों बाख़ के पर से प्रेटते हैं। "अब तक बाह्य के वर्ग में बनज राम = प्रम्य = प्रेस = पिपसा = परिकाद = पृथ्या वनी रहती है थाब तक वे तममें बसे रहते हैं। उनसे फेक्टे हैं। इन पर क्याद्ध रखते हैं। उनको नगना समागते हैं।

राय! अप बास् के परी में उनका राग नहीं रहता है तब वे हाथ-पर से उन भरी की

तीव भीव कर नष्ट कर देते हैं और विकोर देते हैं।

राव | तुस इसी तरह रूप को तोव-कोदकर नह कर दो और विश्वेर हो । शृष्णा को श्रम करने में क्या कान्ये ।

येच्या । एंड्रा । संस्कार । विकास । राम ! एप्या का अब बोबा डी निर्माण है।

८३ मधनेचिसच(२२ १३)

संसार की शोरी

धाकसी ।

पुरू कोर वेड, आयुष्पाम् राघ भगवान् सं बोड "अन्ते कोत 'प्रवर्वति ' और अववैति निरोध कहा करते हैं। अन्ते ! यह "अववैति और सववैतितिरोध" क्या है ?

राष | रूप में जो करते कर निर्माण कर सम्बद्ध कर प्रमाण कर पर विकास के सिंह का सिंहाते | स्पाप | रूप में जो करते करते हैं 'जनवैदि । उनके निरुद्ध हो बाते को करते हैं 'सनवैदिनिरोध' । वेदना में जो । प्रोह्म । पोरस्माण' |विद्यान ।

र्ड ४ परिष्लेय्य मुच (२२ १ ४) वरिवेय वरिहा शीर वस्तिका

धावसी ।

पुत्र और बेंडे आयुष्पान् राध्य से लगरात् बोके "राथ | में तुम्में वरिश्चेष बर्स परिशा और परिश्वाता प्रस्क के विषय से अपनेल कर्जेगा । उसे लगे ।

मगदान् बोक्रे "राम ! परिक्रण पर्म कीन सं हैं ? राम ! कर्म परिक्रोप पर्म है । बेदमा ।

संद्याः । संस्कारः । विद्यानः । शब्दः ! इन्द्रं कवते हैं परितेष कर्मः ।

राव ! परिता क्या है ? राग ! वो राग-सम्म हेपसम और मोस्यम दे बही परिता करी साती है। राव ! परिताता पुत्रक क्या है ? व्यर्डेंग् को जायुष्मान् इस नाम बीर गोप्न के हैं —वहीं परि गाया पुत्रक करे करे हैं !

🞙 ५ पठम समण सुच (३२ १ ५)

उपादान स्बन्धों के द्वारा दी अमण-प्राञ्चल

उपादान स्कन्धा प झावा हा अमण्डाक भाषणी ""।

पुष्ठ जीर की साधुप्तास् राध से समक्षम् योठे "राव ! यद गाँव कवादावरकाय है । सीव से गाँव ! को यह रूप कार्यावरकार । अवाय कपायावरकार ।

१ मपनेश्वि—"मरावह" बाइटकमा। = र्वतार वी क्षोधै।

राप । जा धमण या तताम इन पाँच उपामनान्यों के आग्याट, बोप ओर मोक्ष को यधार्थत. नहीं जानते हैं ये धमण न तो धमण फहराने के पान्य है, और न वे बाह्मण कहराने के । वे आयुष्मान् धमण या बाह्मण के परमार्थ को अपने देखते ही देखते जान, देख और बाह्म कर नहीं विद्वार करते हैं।

राष ! जो विधार्यतः जानते हैं व विधार प्रमण वा माराण के परमार्थ को अपने देखते ही देखते जान, देन आह बास कर विधार प्रनते हैं।

े ६ ६. दुतिय सगण मुत्त (२२ १ ६)

उपादान-स्कन्धों के दाता ही श्रमण बाहाण

श्रायस्ती ।

एक और घँठ आयुष्मान् राध्य से भगवान् बोले, 'राध ! यह पाँच उपादान स्कन्त्र हा।' राध ! जो शमण या बाहाण इन पाँच उपादान-स्वन्त्रों के समुत्य, अस्त होने, आस्त्राद, दोष, और मोक्ष को यक्कार्यन नहीं जानते हैं। जानते हैं।

§ ७. सोतापन्न सुत्त (२२ १ ७)

खोतापन्न निरमय ही बान प्राप्त करेगा

धावस्ती ।

प्क और वंडे आयुष्मान् राध सं भगाग् तोले, "राध । यह पाँच उपादान-एकन्य है । राध । फ्रांकि आयंश्रायक इन पाँच उपादानस्वन्धों के समुद्रत्र, अस्त होने, आस्वाव, दोप और मोक्ष को यथार्थत जानता है इसीसे यह सोतापनन कहा जाता है। यह मार्ग से च्युत नहीं हो सकता, निर्वाण की और जा रहा है, निश्चपपूर्वक परम ज्ञान प्राप्त वरंगा।

§ ८. अरहा सुत्त (२२. १. ८)

उपादान-स्फन्धों के यथार्थ ज्ञान से अर्हत्य की प्राप्ति

श्रावस्ती'''।

एक भोर वंडे आयुष्मान् राध से भगवान् योले, "राध ! क्योंकि भिद्ध इन पाँच उपादान स्कन्धों के समुद्र्य, अस्त होने, आस्वाद, दोप ओर मोक्ष को यथार्थत जान उपादान-रहित हो विमुक्त हो जाता है, इसी से वह अर्हत्=श्रीणाश्रव=जिसने व्याचर्यवाम पूरा कर लिया हे=कृतकृत्य=जिसने भार रस दिया है=अनुप्राप्तसदर्थ=परिर्शाण-भवसयोजन=परम ज्ञान से विमुक्त कहा जाता है।

§ ९, पठम छन्दराग सुत्त (२२ १ ९)

रूप के छन्दराग का त्याग

थावस्ती'''।

एक ओर यैठे आयुष्मान् राध्य से भगवान् बोछे, "राध! रूप में को छन्द = राग .है उसे छोइ दो। इस तरह, रूप प्रहीण हो जायगा = उच्छिन्नमूल = शिर कटे ताल के समान = मिटा हुआ = फिर कभी उत्पन्न होने में असमर्थ।

वेदना में जो । सजा । सस्कार । विज्ञान

§ १० दुतिय छन्दराग श्च (२२ १ १०)

इस के छम्बराग का स्थान

भावसी ।

दंक बोर केंद्रें आयुष्पाम् राभ्य से मगवाल बाके 'तत ! क्य में को क्ष्य व्यागान प्रत्य व्यागा = उपाय-क्षयायाय = विक का समिशाय अभिविवेश अनुसव है कसे कीए हो । इस साह वह क्य प्रतीय हो कालागा ।

वेर्ना । संज्ञा । संस्कार । विद्यान ।

मयम वर्ग समाप्त

दूसरा भाग

द्वितीय वर्ग

§ १. मार सुत्त (२२ २ १) मार क्या है ?

श्रावस्ती । एक ओर बैठ, आयुष्मान् राध्य भगवान् से वोले, "भन्ते ! लोग "मार, मार" कहा करते हैं।

भन्ते । सो वह सार क्या है ?" राध । रूप मार है, वेदना मार है, मज्ञा , सस्कार , विज्ञान मार है।

राध ! इसे जान, पण्डित आर्यश्रावक रूप में भी निर्वेट (=वैराग्य) करता है ' पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता।

§ २. मारधम्मी सुत्त (२२ २ २)

मारधर्म क्या है?

श्रावस्ती भन्ते । लोग "मार-वर्म, मार-धर्म" कहा करते है । भन्ते । सो वह मार-धर्म क्या है ?

राध ! रूप मार-वर्म है । वेदना विज्ञान

राध । इसे जान, पण्डित आर्थश्रावक § ३. पठम अनिच सुत्त (२२. २ ३)

अनित्य क्या है ?

भन्ते ! लोग "अनित्य, अनित्य" कहा करते हैं । भन्ते ! सो घह अनित्य क्या है ? राध ! रूप अनित्य है। वेदना अनित्य है। मजा । सस्कार । विज्ञान अनित्य है।

राध । इसे जान, पण्डित आर्यश्रावक

§ ४. दुतिय अनिच सुत्त (२२ २ ४)

अनित्य-धर्म क्या है ?

भन्ते । सो वह अनित्य-वर्म क्या है ? राध ! रूप अनित्य-वर्म है । वेदना । सङा । सम्कार । विज्ञान ।

राधः । इसे जान, पण्डित आर्य-श्रावक ी § ५-६, पठम-दुतिय दुक्स सुत्त (२२ २, ५-६)

ह्म दु व है गध ! रूप हुग है। बेदना ' विज्ञात ।

५२

0

```
'राघ ! कम बु:शावर्स हैं । बंदमा विद्यान' ।
राष ! इसे बाग पण्डित आर्थ-आवक्ष ।
```

§ ७-८ पठम द्वतिय अनत्त सुपा (२२ २ ७-८)

का अनारम है

राघ ! कप भनःत्म क्षे । नेतृता विज्ञान । राष ! कप भनासम भर्म क्षे । भदना विज्ञान ।

राव ! इसे काम पनिवत आर्थकानक ।

§९ समध्यम सुस (२ २ ९)

सयघर्त क्या है !

भावस्ती ।

पुरु कोर कैठ आयुष्पाल् राख भगवाल् मं बोर्क "सल्दे हैं छोग श्रवजर्म सवपमें क्यां करते हैं। मन्दे हिसे वह खबबर्स लगा है ?"

राध । क्य समामने हैं। नेतृता विकास ।

राच | इसे जन पश्चित भागेनाकः ।

§ १० वगघम्म सुरा (२२ २ १) व्यय-कर्म क्या है!

भावस्ती ।

सायरता । एक धोर देंड साञ्चामान् राध सगतान् से बोर्ड 'सन्ते | खोग 'ज्यवसं ज्यायसं कहा करते हैं। सन्ते | छो वह व्यायसं नवा है ?"

राष ! क्य व्यवसार्थ है । नेतमा विकास "।

६ **११ समुद्रमधम्म शुक्त** (२२ र १९)

समुदय-वर्म क्या है ?

सावस्ती ।

मन्ते । सो वह लमुक्यमं वया है ?
 राज । क्य समुद्रमध्यों है । वेदना विकात ।
 राज । हमे काल पण्डित आर्थमाणक ।

\$ १२ निरोधधम्य सच (२ २ १२)

निरोध धर्म क्या है ?

भावस्ती ।

***मन्ते] सो यह निरोध वर्स नया है ? राम] क्य विरोध धर्म है । वेदशा ** विज्ञान । राम] इस कान परिवत आर्यक्रायक ** ।

क्रितीय बग समाप्त

तीसरा भाग

आयाचन वर्ग

६ १. मार सुत्त (२२. ३. १)

मार के प्रति रच्छा का त्याग

थ्रावस्ती..।

एक ओर बैठ, आयुष्मान् राध भगवान् से बोले, "भन्ते । भगवान् सुझे संक्षेप से धर्म का उपदेश दें, जिसे सुन में अकेला एकान्त में प्रहितात्म होकर विहार करूँ।"

राध ! जो मार है उसके प्रति अपनी इच्छा का प्रहाण करो । राध ! मार क्या है ? राध ! रूप मार है, उसके प्रति अपनी इच्छा का प्रहाण करो । वेदना । सज्ञाः । सस्कार । विज्ञान ।

§ २. मारधम्म सुत्त (२२ ३ २)

मार-धर्म के प्रति छन्द्रराग का त्याग

राध ! जो मार-धर्म है उसके प्रति छन्ट, राग, छन्टराग का प्रहाण करो ।

§ ३-४. पठम-दुतिय अनिच सुत्त (२२, ३ ३-४)

अनित्य और अनित्य-धर्म

राध ! जो अनित्य है । राध ! जो अनित्य-धर्म है

§ ५-६. पठम-दुतिय दुक्ख सुत्त (२२ ३ ५-६)

दु.ख और दुःख धर्म

राध । जो दुख है । राध ! जो दुख-धर्म है ।

§ ७-८, पठम-दुतिय अनत्त सुत्त (२२, ३ ७-८)

अनातम और अनातम धर्म

राध ! जो अनात्म है । राध ! जो अनात्म-धर्म है ।

८ ९-१०. खयधम्म-वयधम्म सुत्त (२२ ३, ९-१०)

क्षय धर्म और व्यय धर्म

राध ! जो क्षय-धर्म है । राध ! जो व्यय-धर्म है ।

६ ११ समुद्यधम्म सुच (३११)

समुद्रय धर्म 🔻 प्रति छम्प्रगम का स्थाम

राव ! को समुद्रव धर्म है उसके प्रति सन्द् राग सन्दराग का प्रहाण करो ।

8 १२ निरोधधम्य सच (२२ ३ १२)

निरोध क्या के प्रति छन्दराग का स्याग

भावन्ती ।

ण्य कोर केंद्र कायुप्पाल् राध अगवान् में बोर्क अलो ! भगवान् मुझे संक्षेप से बर्मीपर्यस वर्षे किम मुन में अदिवास्य को कर विदार कर्के ।

राव । की निरोध कर्म है उसके प्रति सन्द्र, रम सन्दरमा का प्रदर्भ करो । राम ! निरोध कर्म क्या है ? राम ! रूप निरोध कर्म है उसके प्रति सन्द्र का प्रदास करो । वेदवा । संज्ञा । सन्कार । विभाग ।

भाषाचन धर्म समाप्त

चौथा भाग

उपनिसिन्त वर्श

§ १. मार सुत्त (२२ ४ १)

मार से इच्छा हटाओ

श्रावस्ती ।

एक ओर बैठे आयुष्मान् राध्य से भगवान् बोले, "राध । जो मार है उसके प्रति इच्छा को हटाओं। राध ! मार क्या है ? राध ! रूप मार हे, उसके प्रति इच्छा को हटाओ । वेदना संस्कार । विज्ञान ।

§ २. मारधस्म सुत्त (२२. ४ २)

मारधर्म से इच्छा हटाओ

' राध ! जो मार-वर्म है उसके प्रति इच्छा को हटाओ ।

§ ३-४ पटम-दृतिय अनिच्च सुत्त (२२.४ ३-४)

अनित्य और अनित्य-धर्म

राध ! जो अनित्य है ।

' राध ! जो अनित्य-धर्म है ।

ई ५-६. पटम-दृतिय दुक्ख सुत्त (२२ ४ ५-६) दुःख और दुःख-धर्म

राध । जो दु व है । राध ! जो दु ख-धर्म है !

§ ७-८. पठम-द्विय अनत्त सुत्त (२२ ४ ७-८)

अनात्म और अनात्म-धर्म

गध । जो अनात्म है । राधा जो अनात्म-धर्म है

§ ९-११. खयवय-समुद्य सुत्त (२२ ४. ९-११)

क्षय, व्यय और समुदय

राध ! जो क्षय-वर्म है ।

राप !को स्पष धर्म क्रिं। राष !को समुद्दन-वर्म क्रिं।

§ **१२** निरोधधम्य द्वाच (२२ ८ १२)

निरोध धर्म से इच्छा हराणी

भाषस्ति ।

ण्ड और वर्ड सायुष्माल् दाच हो सगवाल बाढ़ 'राख ! को निरोध धर्म है उसके प्रति इच्छा को इदाओं । राख ! निरोध-धर्म कवा है ! राख ! कप निरोध धर्म है उसके प्रति इच्छा को इदानों । वेदना । मंत्रा । मंत्रकार । विकास ।

> क्वनिमिम्ब को समाप्त शाम संयुक्त समाप्त

तीसरा परिच्छेद

२३. दृष्टि-संयुत्त

पहला भाग

स्रोतापत्ति वर्ग

8 १. बात सुत्त (२३ १. १)

मिथ्या दिए का मूल

श्रावस्ती'''।

भिधुओ । कियके होने से, किसके उपटान से, किसके अभिनिवेश से ऐसी मिथ्या-दृष्टि उत्पन्न होती है—हवा नहीं बहती है, निटयाँ प्रवाहित नहीं होती, गर्भीणियाँ वधा नहीं जनती, चॉद-सूरज उगते है और न हवते हैं, किन्तु बिल्हुल दृढ़ अचल है।

मन्ते ! धर्म के मुख भगवान् ही ।

भिक्षुओं। रूप के होने में, रूप के उपादान सें, रूप के अभिनिवेश से ऐसी मिथ्या-दृष्टि उत्पन्न होती है—हृषा नहीं बहुती है । बेदना के होने से । यहा । सस्कार । विज्ञान के होने से ।

भिक्षुओं । तो क्या समझते हो, रूप नित्य है या अनित्य ?

अनित्य भन्ते ।

'जो अनित्य, दु ख ओर परिवर्तनशील है उसके उपादान नहीं करने से क्या ऐसी मिथ्या-इष्टि उत्पन्न होगी—हवा नहीं बहती है ?

नहीं भनते ।

वेदना । सज्ञा । सस्कार । विज्ञान ।

जो यह देखा, सुना, सुधा, चया, छ्या, जाना गया, पाया गया, खोजा गया, या मन से विचारा गया है वह नित्य है या अनित्य १

अनित्य भन्ते [†]

जो अनित्य, दु स और परिवर्तनशील है उसके उपादान नहीं करने से क्या ऐसी सिध्या-दृष्टि उत्पन्न होगी—हवा नहीं बहती ?

नहीं भन्ते।

भिक्षुओ ! इन छ स्थानों में आर्यश्रावक की सभी शकाय मिटी होती है। दुख में भी उसकी शका मिटी होती है। दुख-समुदय में भी । दुख-निरोध में भी । दुख-निरोधगामिनी—पितपदा में भी ।

भिक्षुओ । यह आर्यश्रावक स्रोतापन्न कहा जाता है ।

§ २ एस मम सत्त (ः - १)

मिच्या इप्रिका सर्व

धायमी ।

भिम्नुओ ! किस≱ द्वान स यूनी सिच्या-दक्षि उत्पक्त होती है--- वह मरा है यह में हैं, यह मेरा भारमा है ।

सन्ते ! घस के सक भगवान की ।

मिधाओं ! रूप के होने लं हैम्पी सिध्यान्यप्ति बत्यन हाती हं । बहना के हान सं । संशा संस्थार १ विकास ।

जा अंतिरय द्वाच और परिवतनशांक है उसक उपादान नहीं करन से नया एसी मिन्नान्हींप्र उत्पन्न बीसी-मन मेरा में यह में हैं ?

नहीं सन्ते !

मिलाओं । इन छ। स्थाना स वार्धवायक को सभी संकार्थे मिली होती है । मिलामां ! यह থার্কমান্ত কারাদ্র ।

§ ३ सो अच सच (३ १ ३)

विष्याश्रपि का सब

भावसी ।

मिश्रुको ! किसके होन से पूर्ण मिण्डा-वृष्टि उत्पन्न होर्थ है--ना बारमा है छ। सोज है सो में सर कर निरम::अव::आवत::अविपरिवाशयमां हैरा। ?

भक्ते । प्रमें के सक मतावान की । सिहाओं | कर के होने से पेनी सिव्हा हड़ि व एक होती है---की बतासा । बेदना क हीने

स । संद्वर संस्कार विकास । मिल्लको ! इन छः स्थाना में कार्यभावक की सभी सँकार्ये मिटी होती हैं। निश्चभी ! वह शार्वधावड खोतापच ।

§ भ नो च म सिमा सच (े २३ १ ४)

सिम्पा-इप्रिका सस

भगवासी ।

मिश्रमी ! किमके दीने वा गानी सिच्या-दक्षि करपक दांती है-न में दोता न मेरा दोनं। न में हैंगा न सेश होगा।

भारत ! धर्म के गुरू भगवाय ही ।

बिहामा ! क्यके बीने को छेनी सिक्श-बांडि । वेंबना के बीने से । संका । संस्कार विज्ञान ।

मिश्रमा ! इम छः स्थामा में आर्थभावत की पर्शा संमार्थे मिश्री होती है। जिल्लो ! यह आर्थभाषमा जीतापन्य ।

\$ ५ नरिश्र सच (२३१५)

उपहत्रयात

भाषस्ती "।

मिशुओं ! किमके काले का केमी मिरवा करि अन्तरूप बीसी है- वाथ बास द्वाम (का बीही कार) मही है आपने आर बुरे कुमी के अपने कुछ बाल नहीं होंने यह लाह नहीं है परामीक बही है माता नहीं है, पिता नहीं है, श्रीपपानिक पत्य (=गर्भ से उरान्त होने वाल नहीं, किंतु रायजात), लोग में धमण या माताण नहीं हैं जी सम्पन्न प्रतिपन्त हो, लोग परलोक हो मात्र जान ओर साक्षात्कार कर उपरेण करते हो। पार महासनों व सिरकर पुरुष बना है। मृत्यु के उपरान्त पृथ्वी-धातु पृथ्वी में मिलकर लीन हो जाती है, आपी धानु , नेजी धानु , बागु धातु । इन्हिंगों आकाश में तीन हो जाती है। पांच मृतुष्य मिल मुद्दें को ले जागर जला हते है। क्यतर जेगी उजली हित्यों केवल बच जाती है। उपरा जिया कान बित्तुल झहा होगा । आस्तिक बाद प्रतिपादन करने वाले मूर्य आर पण्डित सभी उचित्र हो जाने हैं, लुस हो जाते हैं, मरने के बाद नहीं रहने ?

भन्ते। धर्म के मूल भगवान ॥

षेद्रमः । संद्राः । सन्द्रारः । विज्ञानः ।

भिधुनो । नो प्या समझते हो, रूप निया हे या जनिया १

"'भिधुओं । इन इ स्यानों ने आर्यश्रायक की सभी शकार्ये मिटी होती है। भिधुओं । यह अर्यक्षायक स्रोतापन्न''।

६ करोता सुत्त (२३,१६)

अक्रियचाद

थावस्त<u>ी</u>

भिनुओं । किसके होने से "एंसी मिध्या-दृष्टि उत्पन्न होती हे—"करते हुये, कराते हुये, काटते हुये, कराते हुये, मानते हुये, मानते

भनते । वर्म के मृत भगवान् ही ।

मिक्षुओ । रूप के होने से ऐसी सिथ्या-दृष्टि । वेदना के होने से । सज्ञा । सस्कार । विज्ञान ।

भिक्षुओ । इत उ स्थानों में आर्ये श्रावक की सभी शकार्ये मिटी होती है। भिक्षुओ । यह आर्यै-श्रावक स्रोतापन्न ।

६ ७. हेतु सुत्त (२३ १ ७)

दैववाद

श्रावस्ती ।

भिक्षुओं । किसके होने से ऐसी मिध्या-दृष्टि उत्पन्न होती है—"सत्वों के सक्लेश के कोई हैं। = प्रत्यय नहीं हैं। विना हेतु = प्रत्यय के सत्व सिक्छ होते हैं। सत्वों की विश्चिद्ध के कोई हैं। = प्रत्यय नहीं हैं। विना हेतु = प्रत्यय के सत्व विश्चिद्ध होते हैं। वल, वीर्य, पौरुप, पराक्रम कुछ भी नहीं है। सभी सत्व = प्राणी = भूत = जीव अवश, अवल, अवीर्य, भाग्य के आधीन, सयोग के आधीन, स्वभाव के आधीन छ अभिजातियों में सुख-दु ख का अनुमव करते हैं"?

भन्ते । धर्म के मूल भगवान् ही

५३

§ २ एस मम सुत्त (ुंद र २)

मिध्या-द्रष्टि का सर

भायस्ति ।

भिक्षुमो ! क्षिमक इतम मा गमी भिष्या-दृष्टि उत्पन्न इति ई—मह सरा ई पह में हैं, यह मेरा कारमा है !

भन्ते ! घस ६ सूक सगयान् हो ।

भिमुमा | रूप के होनं तं एसी सिन्दा-एडि उत्पन्न होती ह | बदमा के होनं स' । संग्रा | सम्बद्धाः । किलानः ।

को असिरय बुल्क आर परिवनकर्शात है उसके उपादान महीं करने स क्या एमी। मिन्ना-रिष्ट उत्पन्न होती—यह मेरा है पह में है ?

नहीं सन्ते !

नहा भारतः । मिसुसो ! इन छः स्थाना सें वार्यसायक को सन्नी होकार्षे सिदी होती हैं ! सिधुवा ! यह सर्वेश्वास्त्र वार्याण्यः ।

\$ ३ सो अच सच (३१३)

मिष्या वरि का संस

भावस्ति ।

मिसुका ! किसके होन सं थेडी तिष्यान्ति करुष होती है—जा आव्या है सां कार है सो मिसु का कार्यान्ति करून कर्मा क्षा कर करिया है सां

मन्ते ! वर्सं क मूक्ष मगवाष् ही ।

मिलुसी क्षा के होत्र से कैसी निक्या-दृष्टि उत्पन्न होती है—जो बानमा । वदना के होने स्थापिक संस्कार विद्याल ।

निश्चभी ! इन क स्वामा में जार्यभाषक की सभी शंकार्य सिमी होता हैं। सिश्चमी ! वह कार्यभाषक चातावक्ष ।

१ ४ नो चमसियासच (२३ १ ४)

मिण्या देशि का सद

भाषसी ।

मिश्रुमो ! क्षिमके दाने सः शन्मी सिच्या दृष्टि तस्त्रच द्वाती है—च से द्वोता व सेरा दोदे। म से हुँगा न सेरा द्वोता ।

मन्त । धर्म के सुक सत्त्रणानु ही ।

सिद्धका ! रूपके द्वांने से ज्या सिध्यान्दछ । श्रदना के द्वाने से । संज्ञा । संस्कार विज्ञान ।

सिक्षुमः दिल् धः स्थानः में आर्थधानः की नानी संकार्वे सिद्धौ दांति हैं। सिक्षुमी ! यह भार्यकाषक कारायन्य ।

9 ५ निरमस्य (२३ १ ५)

वच्छत्यात्

भाषन्ती'''। मिसुनी ! क्रियक हाने यं नेपी मिष्यान्तिह उपपन्न होती है---"दान वह हास (ना कोई फर) नहीं है भए और सुने कसी के मुख्ये हुए एक हहीं होते यह साथ नहीं है परसोड़ तरी है माना नहीं हैं, पिता नहीं हैं, अंद्रिपानिय सन्य (=गर्भ से उत्यन्त होने वाल नहीं, कितु रायंजात), लोक में धमण या प्राह्मण नहीं है तो सम्पत्न प्रतिपन्त हों, लोक परलोक को स्वय जान और साक्षादकार कर उपरोग रात है। पान महाभूनों से भिलकर पुरंप तनहों। सृत्यु के उपरान्त एक्ष्मी-धातु एक्ष्मी में मिलकर लोन हों तानी हैं, आपों धातु , तें तो धातु , यासु धातु । इन्द्रियों आकाश में तीन हो जाती हैं। पींच म्मुल्य मिल मुद्दे को ले जातर जात देने हैं। यस्तर तें यी उजली हिंदुयों के यल देव जाती हैं। उनका दिया तन बित्तुल हाश दीना है आमितकबाद प्रतिपादन करने वाले मूर्य और पण्डित सभी उदिश्य हैं। ताने हैं, लुस हो जाते हैं, मरने के बाद नहीं रहने हैं

भन्ते। धर्म के सुरु भगवत् हा ।

वेदना । सजाः । सरकार । विज्ञान ।

भिधुओ ! तो प्या समहाते हो, रूप निस्य ह पा अनिय १

ें भितुओं ! इन ए स्वानों में आर्यं आयर की सभी शकार्ये मिटी होती है। भिक्षुओ । यह

६ करोतो सुत्त (२३, १ ६)

अक्रियवाद

थावस्ती ।

िसुओं । किसके होने से "एंसी मि-प्रा-दृष्टि उत्पन्न होती हे—"करते हुये, कराते हुये, काटते हुये, कटनते हुये, मरते हुये, मरते हुये, मर्वाते हुये, मोचते हुये, मोचते हुये, यकते हुये, यकते हुये, यक्षाते हुये, व्यवता हुये, क्याते हुये, किसा करते हुये, चोरी करते, संघ मारते, टाका मारते, एक घर को लट्टते, राहजनी करते, पर-र्त्री का सेवन करते, झठ बोरते, वह कुउ पाप नहीं करता। यदि कोई हुठे जैसे तेज चक्र से पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों को मार कर मास का एक वड़ा टेर लगा दे तो भी उससे उसे कोई पाप नहीं लगता। यदि कोई गगा के दक्षिण तीर पर मारते, मरवाते, काटते, कटवाते, पकाते, पकवाते । तो भी उससे उसे कोई पाप नहीं लगता। गगा के उत्तर तीर पर भी । दान, इम, सयम और सत्यवादिता से कोई पुण्य नहीं होता?

भनते। धर्म के मूल भगवान् ही ।

मिक्षुओं । रूप के होने से ऐसी मिथ्या-दृष्टि । वेदना के होने से । सज्ञा । सस्कार । विज्ञान ।

भिक्षुओ । इन ए स्थानों में आर्यश्रावक की सभी शकार्ये मिटी होती है। भिक्षुओ । यह आर्य-श्रावक स्रोतापन्न ।

§ ७. हेतु सुत्त (२३ १ ७)

देववाद

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ। किसके होने से ऐसी मिथ्या-दृष्टि उत्पन्न होती है—''सत्वों के सक्लेश के कोई हैत = प्रत्यय नहीं है। यिना हेत = प्रत्यय के सत्व सिक्छ होते हैं। सन्वों की विशुद्धि के कोई हैत = प्रत्यय नहीं है। यिना हेत = प्रत्यय के सत्व विशुद्ध होते हैं। वल, वीर्य, पौरुप, पराक्षम कुठ भी नहीं है। सभी सत्व = प्राणी = भूत = जीव अवश, अवल, अवीर्य, भाग्य के आधीन, सयोग के आधीन, स्वभाव के आधीन छ अभिजातियों में सुख-दु ख का अनुभव करते हैं"?

भन्ते। धर्म के मूल भगवान् ही

सिम्रुपो | इत्प के होने सं येसी सिल्यानांडि उत्पक्त होती है । बेदना । संग्रा । संस्थार । विद्याल ।

मिशुआ ! इन छः स्थायों में जार्यकावक की सभी शंकारों मिटी रहती हैं।

§८ महादिष्ट सुच (२३ १ ८)

सफततावाद

भायस्ती ।

मिहाना ! किसके होने से पूंती मिलानाकि बरुष होती है—"ये सात काना महत्त्र है सकारित है परिमित हैं भागमंत्रित हैं काना हैं कुदस्य हैं कावक हैं। वे हिकते कोकते गर्धी न विपरितत होते हैं और न कार्यान्य प्रसायित करते हैं। एक वसरे का न सुरा है सकते हैं और न सुरूप।

"कीम सात ? एन्डी कावा काप कावा तेत्र कावा वायुक्तवा सुन्त वुन्त बीव । पही

सात काया ।

"बो तेत्र इपिकार से शिर काटता है सो कोई किसी की काम नहीं मारता । सात कार्यों के

बीच में स्थियार केवक एक लेव कर बेता है।

"धीत् इकार जारू वानियाँ हैं। याँच सी बजो हैं जार याँच कमें हैं बीर तांन कमें हैं कमें में भीर अर्थक्रमें में बानट मिन्यहायें हैं वास्त्र करना करा है का बसिवातियाँ भार प्रचम मृतियाँ करनास सा अर्थावक तनकास सी परिव्र कक करनास सी तारावर बीस सा इंग्रियाँ तीम सी मरफ प्रचांत रजोपान सात संज्ञीनामें सात वर्षत्रीनामें सात निर्मानियनामें सात विद्या सात मानुष सात पैपाच सात सर सात मनुष सात प्रचान और सात दी प्रपात सात रूपण और मात मी रूपण भारती से कम महावस्त्र सात सूत्र और परिवृत्त करम करमान्यर में पढ़ते हुये दुग्न का मन्य करेंगे।

"प्यमा बात पड़ी है कि इस बीक से या इस सत से या इस सर स या इस प्रकार के सा सरित्यक इसी को परित्यक बना मूँगा या परितक कर्म को उपसीग कर परि-वरि समास कर चूँगा संमार से न दो परे तुरु सुरु-दुग्ग हैं और य उनती नि इच्छ क्यांचि है। कसना अधिक होगा = परणा करना भी नहीं है।

"जैमें मृत की गोक्र केंक्री करने पर गुक्ती हुई काती है वैसे ही सूर्य आर पन्तित गुमते हुये

मुत्त-पुत्त का जम्म करेंगे !

भन्ते । पर्मके सृ**य भग**तात्र्ही ।

भिशुमो । क्ष्य के काले से । केइना । संज्ञा । संस्तार । विज्ञान ।

भिभुत्री ! इन छ स्थानीं में सार्वधायक की ।

९ सस्तवो सोको सुच (२३ १ ९)

शाहबतपाद

धावर्मा १

निशुमा ! किएक होन से " पर्या मिष्या-सिंह कारण होती है— 'यह लोक साहबत है'' ! सम्मे ! पार्ने के मात्र भागवान हो ।

निशुष्ता । एक क हाने से पूर्णा विकास होते हैं—"बह कोड़ साहरत है" । भेरमा के हाने से "अ गोहा अनेन्सर" विकास ।

निशुभी १ अन नित्त देश अनित्य १

भिशुओं १ इन का श्वामी में आर्थधायक की ↔ !

§ १० असरसता सुत्त (२३ १. १०)

अशाश्यतबाद

धापम्ती "।

निक्षुओं । हिमके हाने में एंसी निष्याद्य उपान होती ह—"लोह अशाइनत हैं"? भन्ते । वर्ग वे मह भगवान ही ।

भिजुओ। रप के होने से ।

मिधुओं । इन छ. स्थानों में आर्यश्रायक ।

§ ११. अन्तवा मुत्त (२३ १ ११)

अन्तवान्-वाद

श्रावस्ती ।

भिधुओं । क्यिके होने सं ऐसी मियान्दृष्टि उत्पा होती हे—"अन्तवाला लोक हे" ?
" भिधुओं । इच के होने नं ।

§ १२. अनन्तवा सत्त (२३ १. १२)

अनन्त-बाद्

भिश्चजो । किसके होने से - "लोक अनन्त है" ?

§ १३ तं जीवं तं सरीरं सुत्त (२३ १ १३)

'जो जीव है वही रागीर है' की सिथ्या दिए

भिक्षुओं । किसरे होने से : —जो जीव हे पही शरीर हे ?

\$ १४. अञ्जं जीवं अञ्जं सरीर सुत्त (२३ १ १४) 'जीव अन्य है और दारीर अन्य है' की सिथ्या-इष्टि

भिक्षुओं । किसके होने मं — "जीव अन्य है और शरीर अन्य है"?

६ १५. होति तथागतो परम्परणा सुत्त (२३ १ १५)

'मरने के याद तथागत फिर्देहोता है' की मिथ्या-हिए भिक्षुओ । किसके होने से —"मरने के याद तथागत होता है" ? •

§ १६. न होति तथागतो परम्मरणा सुत्त (२३. १ १६)

'मरने के वाद फिर तथागत नहीं होता है' की मिथ्या-हि भिक्षुओ । किसके होने से — "मरने के वाद तथागत नहीं होता है"?

§ १७. होति च न च होति तथागतो परम्मरणा सुत्त (२३ १ १७) 'तथागत होता है, और नहीं भी होता है' की मिथ्या-इष्टि

सिक्षुओ ! किसके होने से "तथागत होता है और नहीं भी होता है" ?

§ १८. नेव होति न न होति तथागतो परम्परणा सुत्त (२३ १ १८)

'तथागत न होता है, न नहीं होता है, की मिथ्या-हि

भिक्षुओ । किसके होने से - "तथागत न होता है, और न नहीं होता है" ? भिक्षुओ । इन छ स्थानो में आर्यश्रावक ।

पहला,भाग समाप्त

दसरा भाग

(पुरिमगमर्ग-स्थान्ह वेय्यावरण)

§ १ बात सुच (. ३ २ १)

मिष्या रहि का भूस

श्चावस्ती' । मिल्लुका ! बिसके होण मं प्रमी मिल्लान्ति उत्तव होती है— 'न हवा बहुदी है स सिंदची प्रवाहित होती हैं न सर्किणियाँ काली हैं न स्टब चाँद उत्तवे हवते हैं । विज्ञूड जवक स्विर हैं !

भन्ते ! वर्गके सून मगवात् इति ।

मिश्रुको रूपके होने सा । बेदना के हाने से । संज्ञा । संस्कार । विज्ञ म

मिश्रुभी । कप निश्व है या अभिन्त ?

जविन्य सन्ते 🗓

इसके उपादान नहीं करने मा क्या गूर्मी जिल्हा-वरि अलक होगी ?

नहीं भन्ते !

सिद्धमों | इस तरह तुक्त के होने स दुक्त के बपादान स बुक्त के अभिनेदेश संपेती प्रीष्ट बरुग्न होती है ।

> हु २-१८ सब्जे सुचान्ता पुरुषे आगता येव (३३ २ २ - १८) [क्यर के वाचे १४ वेष्णाकरणा को विस्तार कर क्या कादिये] हितीय गमव (हितीक बार)

> > हु १९ म्यी असा होति सुस (२३ २ १९) आरमा द्यवान् होता इ. की मिश्मा दृष्टि

भावस्ती । विकास । विकास सीचे के — "काले के क्रम सामग्र कर व

सिञ्चली ! किसके होने से — "सरवे के बाद बाध्या कर बाका नरीय होता है" ! सिञ्चली ! करके हाने से ।

मिह्नमी ! इस तरह बुत्ध के होने सं तुत्क के बपादाल से हुत्क के अमिनियेश से पैसी मिष्या-रिष्ट वरण होती हैं !

९२० अस्त्यी अचा होति छुच (०३२२)

'अक्रपनाम् आरमा है' की ग्रियमा कपि मिक्रमो ! किसके होने से --- 'मरने के बाद आरमा कपरक्षित करोग होता है' !

§ २१ इ.पी च अस्पीच अत्ताद्याति युत्त (२३ २ २१)

कपनाम् और अस्पनाम् जारमा होता है की मिन्या करि "मरने के नाव नामा क्यनाका और क्यरतित करोग होता है"।

~

§ २२. नेवस्पी नारुपी अत्ता होति सुत्त (२३ २, २२)

'न रूपवान्, न अरूपवान धारमा तोना है' की मिथ्या इष्टि '''मरने के दार क्षामा न रूपपाल आर न रूपमीत अरोग होता हैं''।

§ २३ एकन्तमृखी अत्ता होति सुत्त (२३ २ २३) 'आन्मा एकान्त सुन्ती होता है' की मिथ्या टप्टि मरने के बार आ मा एकान्त-सन्य असेन होता है।

§ २४ एकन्तदुक्खी अत्ता होति मुत्त (२३ २ २४)
'आतमा जुग्द दु'गाँ होता हैं' की मिश्या दृष्टि
मरने के बाद आक्सा एकान्त-टुग्द करोग होता है।

े २५ सुखदुक्रमी अत्ता होति सुत्त (२३ २ २५) 'थातमा सुपदुन्यी होता है' को मिथ्या-दृष्टि गरने के बाद भारमा सुपदु यो भारोग होता है।

\$ २६ अदुक्समसुसी अत्ता होति सुत्त (२३ २ २६) 'थात्मा मुग्न दुग्व से रहित होता है' की मिथ्या दृष्टि मरने वे बाद आस्ता अदुष्यमसुत्ती अरोग होता ह।

दसरा भाग

(पुरिमतमन-मनरह वेय्याकरण)

§१ बात सुच (२३ २ १)

मिथ्या रिष्ट का मुख

आवस्ती' ।

[मिसुयो ! किसके होन सं ऐसी जिल्हानाई उत्तव होती हैं—"म हवा वहती है न निहर्यों
प्रवाहित होती हैं न गर्निनियों सनती हैं न सरव वॉट उनलेनुवरी हैं। विवकुत नवल स्थिर हैं।"

सन्ते ' वर्स कं शृक भगवान् ही । सिश्च को कपके डोने सं ' वैदान के डोने सं । संज्ञा । संस्कार । विज्ञ न

मिश्रुको ! कप निश्व है या शनिश्व !

वातिस्य सभते 📍

उसके उपावान नहीं करने से बबा जंगी जिल्हा-दक्षि बत्पन्न होगी ?

वहीं सन्ते ! सिद्धाओं ! इस ठरह दुक के होने संदुक्त के अपादाय संदुक्त के सभिनेत्रेस संदेशी ग्रीट अन्यय द्वनी दं।

§ २-१८ सब्बे सुचन्ता पुब्से जागता येव (२३ २ २ --१८)

[कपर के आये १८ वेबाकरणों को विस्तार कर केंग पादिये]

विश्तीय गत्तम (विश्तीय कार)

६ रे९ रूपी अचा होति सुच (२३ २ १९) भारमा इपयान होता है की मिक्या-इष्टि

भावस्ती ।

मिश्चभी ! किमके होने से 🕳 'सरने के बाद जावना कर बाका बरोग होगा है 🧍

मिश्रुणी ! इत्यके द्वीने सं।

भिसुमी | इस तरह कुश्र के होने से कुत्व के उपादान से कुत्व के अमिनियेस से देखीं मिम्बा-एडि उत्पक्त होती हैं 1

> § २० अरूपी अचा होति सुच (२३ २ २०) सदयबान भारता है' की निष्या क्षि

भिशुओ ! किमके दोने स - "मरने क बाद आत्मा क्यरहित धरीय होता है" ?

ा १९ रूपी च् अरूपी च श्रचा होति सुच (२३ ७ २१)

रूपशाम् और अरूपगाम् भारता होता है की मिन्या-पछि माने के कात्र अपमा स्वाप्ता और स्वयतिम अरोग होता है ।

m

चौथा भाग

चतुर्थ गमन

§ १. वात सुत्त (२३ ४ १)

मिथ्या-दृष्टि का मूल

थ्रावस्ती '''।

भिक्षुओ । किसके होने में ऐसी मिथ्या-इष्टि उत्पन्न होती हैं—"हवा नहीं वहती हैं "?

भिक्षुओ। स्प के होने से । वेदना । सज्ध । सस्कार । विज्ञान

रूप नित्य है या अनित्य ?

भिक्षुओ । इसलिये, जो कुछ रूप-अतीत, अनागत हे सभी न मेरा है, न में हूँ ओर मेरा आतमा है। इसे यथार्थंत ठीक से प्रजापूर्वक जान छेना चाहिये।

यह जान ।

§ २-२६. सब्बे सुत्तन्ता पुब्बे आगता येव (२३. ४ २-२६)

[इसके आगे ऐसा ही विस्तार करके समझ छेना चाहिचे]

भिक्षओ । यह जान, पण्डित आर्यश्राधक रूप से वैराग करता है। वेदना से । सजा । सस्कार । विज्ञान । वेराग्य करने से रागरहित हो विमुक्त हो जाता है। तब, उसे मैं विमुक्त हो गया' ऐसा ज्ञान होता है। जाति क्षीण हुई, ब्रह्मचर्य पूरा हो गया, जो करना था सो कर लिया, पुनर्जन्म

नहीं होंगा—ऐसा जान छेता है।

दृष्टि-संयुत्त समाप्त ।

तीसरा भाग

तृतीय गमन

है १ पात सुच (२३ ३ १)

मिच्यार्राष्ट्र का मूछ

धावस्ती' ।

मिल्ला ! किनके होने से पंत्री सिन्धान्तिश उत्पन्न होती है— 'न हवा वहती है

मन्ते ! वर्म के सूख सगवाण्डी ।

निमुनी ! क्य के होये में । वेदना । संज्ञा /। संस्रार । विज्ञान ।

भिष्ठभी ! क्य सित्त है या मिल्य ? मिष्ठभी ! इस तत्त को मिल्य है यह तुल्य है। उसके हाने संबक्त बपादान से पैती सिन्दानीक करण कोरी है—कान मार्वी ककारी है

§ २-२५ स्टब्से सचन्ता पुरुषे आगता येव (२१ ३ २-२५)

[इसके भागे ऐसा ही विस्तार करके समझ क्षेत्रा चाहिये]

ु २६ असोगो होति परम्मरका द्वच (२३ ६ २६)

बातमा गरोग श्रीता ै की मिच्या-दर्धि

मिश्चना ! क्रियके हाने से पंसी निष्या दृष्टि बरुष होती है—"मरने के बाद बातमा बहुत्तम सुत्ती भरोग रहता है ?

```
§ ५. वेदना मुत्त (२४. ५)
```

चेदना अनित्य है

भिधुओं । पश्च-मर्पराजा चेंद्रना अनि य हैं।

§ ६ सञ्जा सुत्त (२४ ६)

सप-संदा। अतित्य है

भिधुओ । रूप-मज्ञा अनित्य • है ।

§ ७. चेतना मुत्त (२४. ७)

चेतना अनित्य हैं

भिभुओ । रूपन्मचतना अनिग्य 🕝 ।

§ ८ नण्हा सुत्त (२४.८)

तृष्णा अनित्य हे

भिधुओं। रूप-तृष्णा अनित्य है।

§ ९. धातु सुत्त (२४. ९)

पृथ्वी-धातु अनित्य है

भिक्षुओं। पृथ्वी-धातु अनित्य है।

§ १०. खन्ध सुत्त (२४ १०)

पञ्चस्कन्ध अनित्य हैं

भिक्षुओं। रूप अनित्य हैं, परिवर्तनशील हे, बदल जानेवाला है। वेदना । सज्ञाः।

सस्कार । विज्ञान ।

भिक्षुओ । जो इन धर्मों को इस प्रकार विश्वास-पूर्वक जान लेता है

भिक्षुओ ! जिन्हें ये धर्म प्रज्ञा-पूर्वक ध्यान में आते हैं ।

भिक्षुओ । जो इन धर्मों को इस प्रकार जानता देखता है, वह स्रोतापन्न कहा जाता है।

ओकन्त-संयुत्त समाप्त

चौथा परिच्छेद

२४. ओक्कन्त-संयुत्त

६१ चक्तु सुच (२४१)

चम्र अभिरय है

भायसी ।

िसंसुको । क्यु अनिरव है परिवर्तनशीक है बदक जाने बाब्य है। छोत अभित्व है । आप

बिहा । काचा । सन कमित्य है परिवर्तमहीक है अनुक वाने बाका है।

सिहुनी ! वो इन पार्थों हो इस प्रकार विद्वासप्त्यूष्क बाग देश है वह मुख्य हा बाता है। इसी को करते हैं—सद्धारी सुखारी विस्तवा मार्ग समास हो पार्था है स्वयुक्य-मूमि को जिमन पा क्रिया है इक्ट्रेंब-मूमि से बो इट गांवा है। वह उस कर्म को नहीं कर सकता विस्तवे करने से नाक में दिर श्रीन वोति में पार्शेंग में उत्पन्न होना पड़े। वह तक बोतापत्ति-कक्क की मासि न हो के तब तक वह मार नहीं करता !

सिद्धमां किन्द्रें च थर्म प्रश्न पूर्वक पत्रल से नाते हैं के ध्वार्मीनुसारी कह करें हैं विस्तर म में मसार हो राहा है, । वह वह जोताशिल-कक में अरित न हो के वब वह वह सर वहीं सकता। मित्रकों । को इस पर्देश का इस प्रकार बानता नेत्रका है वह कोताश्यक करा सारा है।

[§]२ रूप सुच (२४२)

क्रप मतिरम है

भाषस्ती 🕛

मिह्नमो | रूप मनित्व है क्ष्यरिवर्तनहोक्ष हैं क्ष्यत्वक साने वाके हैं। सन्द्रः । गण्यः । एम |। एस । धर्म मनित्व हैं परिवर्तनहोक्ष हैं वरक साने वाके हैं।

मिश्रुको । को इन धर्मों को इस प्रकार विश्वास-पूर्वक कान केता है [शेप पूर्ववय्]

🕽 ३ विष्ठाण सुच (२४ ३)

श्वभ-विद्यान मनित्य है

भिशुभी | कहा-विद्याल अलिक है परिवत्तव गांक है वक्क कावे वाला है। आत-विद्याल । भ्राम-विद्याल । क्रिय-निकाल । अप-निकाल । अमीविद्याल ।

§ ४ पस्म सुच (२४ ४)

भारू-स्पदा भागित्य 🗜

मिशुका | पशु-पर्या अवित्य है परिवतनशीस है वह्छ बावे वाका है। श्रीय-स्पर्या । प्राप-पर्या । ब्रिह्म-कर्या । वाध-स्पर्या । जना-पर्या ।

§ ६. सञ्जा सुत्त (२५. ६)

संशा

भिक्षुओ । जो रूप-संज्ञा की उत्पत्ति । भिक्षुओ । जो रूप-संज्ञा का निरोध ।

§ ७. चेतना सुत्त (२५ ७)

चेतना

भिक्षुओ । जो रूप-संचेतना की उत्पत्ति । भिक्षुओ । जो रूप-संचेतना का निरोध ।

§ ८. तण्हा सुत्त (२५, ८)

त्रन्णा

भिक्षुओ । जो रूप-तृष्णा की उत्पत्ति । भिक्षुओ । जो रूप-तृष्णा का निरोध ।

§ ९. धातु सुत्त (२५. ९)

धातु

भिक्षुओ । जो पृथ्वी-धातु की उत्पत्ति

भिक्षुओ । जो पृथ्वी-धातु का निरोध

§ १०. खन्ध सुत्त (२५ १०)

स्कन्ध

भिक्षुओ ! जो रूप की उत्पत्ति । वेदनाकी । सज्ञाकी । सस्कारकी "। विज्ञानकी "। भिक्षुओ ! जो रूप का निरोध ।

उत्पाद-संयुत्त समाप्त

पाँचवाँ परिच्छेद

२५ उत्पाद-संयुत्त

§ १ चक्त सच (२५ १)

षक्ष निरोध से कुक निरोध

भावस्ती ।

मिह्नमो ! को पहु की करपणि क्यिति और प्राहुमांव हैं यह हुन्ख की उरपणि रागों की स्थिति और करामरण का प्राहुमांव है ; को क्षोत्र की । की प्राण की । की शिक्का की । को कम्पा की । को प्राप्त की ।

मिह्नची | को चहु के किरोब व्युपसम और अस्त हो बाना है वह बुल्ब का निरोध रोगों कर व्युपसम और कारमरण का अस्त हो काना है। को जोज का निरोध । प्राण । किहा । कारा । प्रज ।

> [§] २ इत्प सुत्त (२५ २) इत्र-क्रिनेच से क≪ कियेथ

मावस्त्री

निमुक्तो | को क्यों को कराफि रिवरि और प्रकुर्मांव हैं वह बुद्ध की उत्पत्ति रोगों की रिवरि भीर बरामरण का प्राप्तुमीन है। को राव्यों की । को राम्बी की । की रखीं की । को रखों की । की क्यामी की । को क्यों की ।

मिशुको । बो क्यों के विरोध च्युक्तम कीर करन हो जाना है वह हुखों का निरोध रोगों का च्युक्तम और बरामस्य का नस्त हो जाना है। बो झब्जों का बो बमी का ।

§ ३ विस्ञाण सुत्त (२५ ३)

बश्च विद्यान

मिह्नसी | को कहा-विश्वास को उत्पत्ति । जो ब्रोज विश्वास की । को समो-विश्वास की । सिह्नुजी | को कहा-विश्वास का विशेष ।

इ. इ.स्स.स.च (२५ ४)

स्पर्धा

मिसुका ! को वशु-संस्पर्ध की उत्पत्ति । मिसको ! यो वशु-संस्पर्ध का निरोध

र्डं ५ वेडनासता (२५ ५)

चंद्रश

निधुमो ! तो चशु-र्मश्यश्चेत्रा मैत्रमा की उत्पत्ति ।

भिशुमी ! जा बधु-मेन्यर्रजा बेदवा का निरोध ।

نر په

§ ८. तण्हा सुत्त (२६. ८)

त्रणा

मिधुधो । जो रूप-तृष्णा में छन्डराग है ।

§ ९. धातु सुत्त (२६ ९)

घातु

भिक्षुओ । जो पृथ्वी धातु में छन्टराग है ।

s १०, खन्ध सुत्त (२६. १०)

स्कन्ध

भिक्षुओ । जो रूप में उन्दराग हैं । जो वेदना में ''। जो सज्ञा में । जो संस्कार में ''। जो विज्ञान में ''।

होश संयुत्त समाप्त

छठाँ परिच्छेद

२६ क्रेश-सयुत्त

ह १ चक्स सच (२६ १)

चल्ल का छन्दरांग विश्व का उपह्लेश है

धावस्ति ।

सिह्नको । को चहु में एम्ब्राम है यह विश्व का उपक्रेच है। यो बोक में बी सन सें। सिह्नको ! अब इस एक स्वार्तों में (च्यहु कोच प्रचा तिहा, करवा सने) निहु का विश्व वपक्रेच-विद्य होता है यो उसका विश्व शैक्कर को और हुक्का होता है। वैक्कर में सम्पर्त विश्व प्रमान्त्रके साहात्त्वर करने योग्य करों में स्वयत है।

१२ ह्रप सुत्त (२६ २)

स्तप

मिश्रुओ ! का क्यों में कन्युराग है वह किए का उपक्रेश है । को सम्बंधि में को बर्मी में । मिश्रुओ ! क्या हुए १३: व्यानी में मिश्रु का किए उपक्रेश रहित होता है ।

३ विष्ठाण स्त (२६ ३)

विश्वान

मिधुभी ! बी बधु विज्ञान में छन्रतन है ।

१४ सम्बन्स सुच (२६ ४)

स्पर्धा

भिञ्चभो ! जो बशुर्यस्पर्धं से छन्द्रसम् ई ।

९ ५ वेदनासुत (२६ ५)

धेशमा

भिश्वर्थः । जो अधुर्मस्पर्शजा बेदना में ग्रन्थराग है ।

§६ सम्आासच(०६६)

संवा

भिभुभी ! मो एप मंत्रा में छन्दराय इ ~ ।

🖁 ७ समोतना सुच (२६ ७)

चेतमा

मिशुओं ! की क्ष्म मैचनता में सम्ब्रहात है---।

s ३. पीति सुत्त (२७३)

तृतीय ध्यान की अवस्था मे

श्रावस्ती"।

.. आयुम ! यह में प्रांति में और विराग में उपेदा रणते हुये विहार कर रहा या-जिसे पण्डित होंग कहते हैं कि उपेद्या के साथ स्मृतिमान हो। सुरापूर्वक विहार करता हैं। उस तृतीय ध्यान को प्राप्त हो विहार कर रहा था..।

भायुष्मान् मारिपुत्र के अहङ्कार ।

९ ४. उपेक्या सुत्त (२७ ४)

चतुर्थ ध्यान की अवस्था मे

आवुस । यह में सुरा आंर दु रा के प्रहाण हो जाने में, पहले ही सीमनम्य-टोर्मनस्य के अस्त हो जाने में सुरा-दु रा में रहित उपेक्षा स्मृतिपरिशुद्ध वाले चतुर्थ भ्यान को प्राप्त हो बिहार कर रहा था .।

आयुप्तान सारिपुत्र के अहदार ।

s ५. आकास सुत्त (२७ ५)

आकाशानन्त्यायतन की अवस्था में

भिक्षुओं। यह में रूप-मज़ा का विद्कुल समतिक्रमण कर, प्रतिधमज्ञा के अस्त हो जाने से, नानात्म-सज्ञा के मन में न आने से, 'आकाश अनन्त हे' ऐसा आकाशानन्यायतन को प्राप्त हो विहार कर रहा था।

आयुप्मान् सारिपुत्र के अहङ्घार ।

§ ६ विङ्ञाण सुत्त (२७ ६)

विज्ञानानन्त्यायतन की अवस्था में

' अञ्चस । यह में आकाशानन्त्यायतन का विटक्कल समितिक्रमण कर, "विज्ञान अनन्त है" ऐसा विज्ञानानन्त्यायतन को प्राप्त हो विहार कर रहा या ।

आयुप्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

§ ७ आकिञ्चञ्ज सुत्त (२७ ७)

आकिञ्चन्यायतन की अवस्था में

आबुस ! यह में विज्ञानानन्त्यायतन का विट्कुल समितिकमण कर, "कुछ नहीं है" ऐसा आकिञ्चन्यायतन को प्राप्त हो विहार कर रहा था।

आयुप्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

§ ८, नेवसञ्ज सुत्त (२७ ८),

नैवसंज्ञानासंज्ञायतन की अवस्था मे

भावुस । यह में आकिल्चन्यायतन का बिल्कुल समितकमण कर नैवसज्ञानासज्ञायतन को भाप्त हो विहार कर रहा था ।

आयुष्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

सातवाँ परिच्छेट

२७ सारिप्रत्र-संयत्त

८१ विवेक सत्त (२७ १)

प्रथम स्वास की असम्बा में

पुरु समय आयप्पात सारिपुत्र आवस्ती में बनाचपिण्डिक के वाराम जेतवन में विहार करते थे।

तद पूर्वाङ्क में आयुष्यान् सारिपुत्र पहल और पात्रचीवर के बावस्ती में मिसादन के किने पेंडें।

मिश्चारत से कीर मोजब कर कंते पर दिन के विदार के लिये नहीं सन्धनन है वहाँ गमे। भागवाम में पैर किसी बाद के शीचे हैर गये।

तब संस्था समय मानुष्मान् सारिपुत्र व्यान से टट डहाँ अनाधरिषिडक का भाराम बेरवन है बहाँ आये।

मायुष्मान् भानन्त् ने नायुष्मान् सारिपुत्र को तूर ही संभाते वेका। वेसकर व्ययुष्मान् मारिएत से क्या "बाहुस मारिएत ! बाएकी इत्त्रियाँ बहुत प्रसन्न हैं अन्त की कान्ति वहीं सन्द हो रती है। भाज साथ कीमें किसार कर रहे थे 1

भाइस ! यह मैं कामा से विविद्ध हो पाप धर्मों से विविद्ध हो वितर्कवाके विवारवाके तथा विशेष्ठक मी दिल्ला वाके मधन ब्याव का खान कर विहार करता था। आहुस ! दश में वह नहीं समस रहा था कि मैं प्रथम ज्यान की बाह कर रहा हैं, या ब्रथम ज्यान को बाह कर किया हैं, या प्रथम म्बान से बढ़ रहा हैं।

भाकुप्तान् सारिपुत्र के बहुद्वार समद्वार। साम बीर अनुसाय बहुत पहले ही नह ही जुके थे । इसकिये अन्ते इसका भी पता नहीं था कि मैं प्रथम न्याय को ग्राप्त कर रहा हूँ, था प्रथम ज्यान की प्राप्त कर किया हैं। या प्रथम ध्यान से उठ रहा हैं।

8 २ अविसम्कसत्त (२७ २)

क्रिनीय च्यान की असम्या में

भावस्ती ।

[पूर्वनर्]

भागुम ! यह मैं जिलाई और विश्वार के शास्त्र हो बावे सं: आप्याया संग्रसाय जिल की नवामता भविनके नविचार समाधित प्रोतिमुख बाते हिलीब ब्यान प्राप्त हो बिहार कर रहा था । श्राबुस | तब मैं वह नहीं समस रहा था कि हैं। दितीन ब्वान को आह कर रहा हैं। या दितीन ब्वाव को आह कर किवा 🗗 । वा दिनीय च्याय में बढ रहा 🖥 ।

मानुष्माम् थारियम् के बहहार ...।

§ ३. पीति सुत्त (२७ ३)

तृतीय ध्यान की अवस्था में

श्रावस्ती'''।

आबुस । यह में प्रीति से ओर विराग से उपेक्षा रखते हुये विहार कर रहा या—िनसे पण्डित लोग कहते हैं कि उपेक्षा के साथ स्तृतिमान् हो सुखपूर्वक विहार करता है उस तृतीय ध्यान को प्राप्त हो विहार कर रहा था ।

आयुष्मान् सारिपुत्र के अहद्वार ।

s ४. उपेक्खा सुत्त (२७ ४)

चतुर्थं ध्यान की अवस्था मे

आवुस । यह में सुरा और दुख के प्रहाण हो जाने से, पहले ही सौमनस्य-दौर्मनस्य के अस्त हो जाने से सुरा-दुख से रहित उपेक्षा स्मृतिपरिशुद्ध वाले चतुर्थ ध्यान को प्राप्त हो विहार कर रहा था ।

आयुग्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

s ५. आकास सुत्त (२७ ५)

आवाशानन्त्यायतन की अवस्था में

मिश्रुओ । यह में रूप-सज्ञा का विल्कुल समितिक्रमण कर, प्रतिघसज्ञा के अस्त हो जाने से, नानात्म-सज्ञा के मन में न आने से, 'आकाण अनन्त है' ऐसा आकाशानन्त्यायतन की प्राप्त हो विहार कर रहा था।

आयुष्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

§ ६ विञ्जाण सुत्त (२७ ६)

विज्ञानानन्त्यायतन की अवस्था में

अञ्चल । यह मैं आकाशानन्त्र्यायतन का विल्कुल समितिक्रमण कर, "विज्ञान अनन्त है" ऐसा विज्ञानानन्त्यायतन को प्राप्त हो विहार कर रहा था ।

आयुष्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

§ ७ आकिञ्चञ्ज सुत्त (२७ ७)

आकिञ्चन्यायतन की अवस्था में

आनुस । यह मै विज्ञानानन्त्यायतन का विल्कुल समितिकमण कर, "कुठ नहीं है" ऐसा आकिञ्चन्यायतन को प्राप्त हो विहार कर रहा था।

आयुष्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

§ ८. नेवसञ्ज सुत्त (२७ ८),

नैवसञ्चानासंज्ञायतन की अवस्था मे

आबुस । यह में आकिष्चन्यायतन का बिर्कुल समितिक्रमण कर नैवसज्ञानासज्ञायतन को भाप्त हो विहार कर रहा था ।

आयुप्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

§९ निरोध सुत्त (२७ ९)

संहावेद्यितिनिरोध की मनस्या में

भावुस ! यह मैं नैवर्सशामार्भग्रायवन का विश्वक समितिकमण कर संवादेवितियोग को मास डो विदार कर रहा था ।

मासुप्मान् सारिपुत्र 🕏 भहद्वार 🔃

१ १० स्पिप्सी सुच (२७ १०)

भिक्ष भमेपयक बाहार प्रहण करते हैं

एक समय मायुष्मान् सारिपुच राजयुद्धं में बेलुवन कळावृद्ध निवाप में विदार करते थे। दव जायुष्मान् पारिपुच नुबंद्ध समय पदम और पाज वीवर के राजपुद्धं में मिझाउन के सिवें परे। राजपुद्धं में द्वार-दूर पर मिझा के उस मिझाब को एक दीवास से को वैतकर ला रहे थे। दव राश्चिमुली परिवाजिका वहाँ अलुप्यान् सारिपुच ये वहाँ जाई और बोकी "अमन ! नीचे हुँह विदार को राजप्दें।

बहन ! में मीचे हुँद किय महीं का रहा हूँ ।

भमय ! तो करर हुँद करके या रहे दा !

बहन ! में करर हुँह करके भी नहीं का रहा हूँ ।

भ्रमण ! ता चारों भार हैंइ हुमा चुमानर या रह हा ?

बहन ! में चारों और मुँह धुमा धुमारर भी महीं त्वा रहा हूँ ।

असन ! जब तुम सभी में 'नहीं कहत हा तो महा कैस सा रह हो है कहत ! का असम या सामन्य पटनकिया किरानोंग दिशा के सिरना जातीय से जीवर निर्मा

करते हैं ये बीच श्रीह करके लानेवाले कहे जाते हूं । बहन है हो अगल भा ब्राह्मण नक्षणनिया के मिण्याजीय मा जीवन निवाह करते हैं है उत्तर मैंड

करके सानवासे कई के वे हैं । बहुत ! जो अअन का अकुण युग के काम क निष्यातीय सं वीवय निर्वाह करते हैं | वे दिसाओं

में मुँद करक लाश्याले कई जाने हैं। कहन रंजा समन या माहाल भड़ विचा के सिरुपानीय ना जीवन निर्वाह करते हैं व विदिशानी

बहुन ! को असन या सक्ष्म अहानिया के निष्यानीत अर्थानन निर्माह करते हैं व विदिशानी में हुँद करके नाने बाल नह सन्ते हैं।

बहन ! हममें में किमी तरह मौचन निर्वोह नहीं बाता । में वर्ष-पूर्वक निश्चारन करक लाता हूँ तक पूर्विमुली परिमालिका सम्पूर में युक्त सकते में दूसरी सज्जी और एक चीराहे से दूसरे कारोहे पर अामक कहने नामी—आववादा मानत मानेविक महार प्रकृत करते हैं सारवपुत्र भतिन्य भागार महार वरात है। सारवपुत्र समामा की निश्चा हा।

सारिवय-संयत्त समाप्त

आठवाँ परिच्छेद

२८. नाग-संयुत्त

§ १. सुद्धिक सुत्त (२८ १)

चार नाग योनियाँ

श्रावस्ती'''।

भिक्षुओ ! नाग-योनियाँ चार हे। कान मी चार ? (१) अण्डज नाग, (२) पिण्डज नाग, (३) मन्त्रेटज नाग, (४) औषपातिक नाग। भिक्षुओ । यही चार नाग-योनियाँ है।

§ २. पणीततर सुत्त (२८,२)

चार नाग-योनियाँ

श्रावस्ती ।

भिक्षुओं । नाम-योनियाँ चार है।

भिक्षुओं। अण्डल नाग से ऊपर के तीन नाग ऊँचे हैं।

भिक्षुओं । अण्डज और पिण्डज नाग से ऊपर के टो नाग ऊँचे हैं।

भिक्षुओ । अण्डज पिण्डज आर सस्वेटज नाग से ओपपातिक नाग ऊँचा है।

§ ३ पठम उपोसय सुत्त (२८.३) कुछ नाग उपोसथ रखते हैं

श्रावस्ती

तव, कोई भिक्ष जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, ओर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठ, वह भिक्ष भगवान् से बोला, "भन्ते। क्या हेतु = प्रत्यय है कि कुछ अण्डज नाग उपोस्तय रखते हे और अच्छे शरीर वाले हो जाते हैं ?

भिक्षु ! कुछ अण्डज नागों के मन में ऐसा होता हैं, "हम पहले शरीर में, वचन से और मनसे पुण्य-पाप करने वाले थे, सो हम मरने के बाद अण्डज नाग-योनि में उत्पन्न हुये।

तो, हम अब शरीर, बचन ओर मन से सदाचार करें, जिसमें मरने के बाद हम स्वर्ग में उत्पन्न हो सुगति को प्राप्त करें।

भिक्षुओ । यही हेतु = प्रत्यय है कि कुछ अण्डज नाग उपोसय रखते हैं और अच्छे शरीर वाले हो जाते हैं।

§ ४-६. दुतिय-ततिय-चतुत्थ उपोसथ सुत्त (२८. ४-६)

कुछ नाग उपोसथ रखते है

भन्ते ! क्या हेतु = प्रत्यय है कि कुछ पिण्डज नाग , सस्वेदिक नाग ? औपपातिक नाग…?

§ ७ पठम तस्स सुत सुच (२८ ७)

नाग्र-धानि में उत्पन्न होने का कारण

भावकी ।

एक और बट बह शिक्षु अगवाज् स बोला 'अन्ता | क्या हेतु = प्रत्यव है कि कुछ क्रोग सरव के बाद बण्डम बास-कोशि में जलक होते हैं ?

सिम्ह ! कुछ कोग सरीर यक्त और समसे पुण्य-याप करने वाके द्वार हैं। वे सुमठे हैं—सण्डन बाग दांप यु सुन्दर और सुकी होते हैं। खतः उनके सनमें होता हं "धरे ! इस सरने के बाद सम्बन्ध कर्मों में उत्पक्त होतें।

वे मरने के बाद भण्डब मार्गे में उत्पन्न होते हैं।

सिद्धां यही हेत = मत्त्रय है ।

ैं द १० दतिय-त्रतिय चतत्व तस्त सत्त सत्त (२८ ८-१०)

भाग-पोभि में उरपद्म होने का कारण

मन्ते | क्या हेतुच्या पय है कि कुछ कोग सरने के बाद पिक्टस संस्थेदस जीपपातिक समान्योंकि में अपन्य कोते हैं ?

§ ११ पठम दानुषकार सच (२८ ११)

नाग-ग्रोनि में बराय होसे का कारण

इसके मन में येखा हाता है। करें | इस भी माने के बाद बरवाद नाग-मीन में कराब ही ।" बहु सब पान वस धोवारी साम्रा गम्य विकेशन सच्या पर प्रशीप का दान करता है। बहु सरवे के बाद बरवाद बाग चीने से जनक होता है।

मिश्र ! वही हैत = प्रत्यव है ।

§ १२-१∂ दतिय-तिय-चतुस्य दानुपकार सुच (२८ १२-१४)

शाम-प्रांति में उत्पन्न होत का कारण

'वह सरम के वाद पिनदृक्ष वास दोनि सें संस्थादृक्ष वास-सामि सें वंशियादिक नाग-वावि से बराव दोना है।

नाग संयुक्त समाप्त

नवाँ परिच्छेद

२९. सुपर्ण-संयुत्त

§ १. सुद्धक सुत्त (२९ १)

चार खुपर्ण-योनियाँ

थावस्ती ।

भिक्षुओ । चार सुपर्ण-योनियाँ हैं। कोन सी चार १ अण्डज, पिण्डज, सस्वेटज, और ओप-पातिक ।

§ २ हरन्ति सुत्त (२९ २)

हर ले जाते हैं

थावस्ती "।

मिक्षुओ । अण्डज सुपर्ण अण्डज नागों को हर छे जाते हैं, पिण्डज, सस्वेटज और औपपातिक को नहीं।

पिण्डज सुपर्ण अण्डज ओर पिण्डज नागा को हर ले जाते हैं, सस्वेदज और औपपातिक को नहीं। सस्वेदज सुपर्ण अण्डज, पिण्डज और सस्वेदज नागों को हर ले जाते हैं, औपपातिक को नहीं। औपपातिक सुपर्ण सभी लोगों को हर ले जाते हैं। भिश्चओ। यही चार सुपर्ण-योनियाँ हैं।

§ ३. पठम द्वयकारी सुत्त (२९ ३)

स्तपर्ण-योनि में उत्पन्न होने का कारण

थावस्ती

एक ओर बैठ, वह मिक्षु भगवान् से बोला, "भन्ते । क्या हेतु=प्रत्यय है कि कुछ लोग सरने के बाद अण्डज सुपर्ण योगि में उत्पन्न होते हैं ?

मिक्षु । कुछ लोग शरीर, वचन और मन से पुण्य-पाप करने वाले होते हैं । वे सुनते है अण्डज सुपर्ण दीर्घायु, सुन्दर और सुस्ती होते हैं । अत , उनके मन में होता है, "अरे ! हम मरने के बाद अण्डज सुपर्णों में उत्पन्न होर्घे ।

वे मरने के बाद अण्डज सुपर्णों में उत्पन्न होते हैं।

भिक्षु । यही हेतु=प्रत्यय ।

§ ४-६, दुतिय-तिय-चतुत्थ द्वयकारी सुत्त (२९ ४-६)

सुपर्ण-योनि में उत्पन्न द्वोने का कारण

श्रावस्ती

भन्ते । क्या हेतु=प्रत्यय है कि कुष्ठ लोग मरने के वाद पिण्डज , सस्वेदज , आंपपातिक सुपर्ण योनि मे उत्पन्न होते हैं ?

७ पठम दानुपकार सुच (२९ ७)

दान भावि देन से सुपर्ण योगि में

दछ के सक्सें गुंसा होता है 'करें दिश भी सरने के बाद अव्यक्त सुपर्ण-योगि में उत्पन्न हों'।

वह सब पाप वस्त्र सवारी आका शस्त्र विकेषन सम्मा वर महीप का दान करता है। वह सरने के बाद अपहर सुपर्ण कोनि में बरफस होता है।

सिशु ! यद्दी हेतु≔प्रत्वयः ।

६ ८-१० द्विय-ततिय चतुस्य दानुपकार मुत्त (२९ ८-१०)

दान सादि दने से सुपर्ण योगि में

बहु मरल के बाद पिण्डक मुचर्ण-योशि में संस्थेषक मुचर्ण वीकि में सीपपातिक मुचर नीकि में उत्तर होता।

सुपण संपुक्त

दसवां परिच्छेद

३०. गन्धर्वकाय-संयुत्त

९१. सुद्रुक सुत्त (३०१)

गन्धर्वकाय देव कौन है ?

श्रावस्तीः ।

भिधुओ । गन्धर्वकाय देवों के विषय में कहूँगा। उसे सुनो । भिधुओं । गन्धर्वकाय देव कोन से हैं ?

भिक्षुओं । मूलगन्य में वास करने वाले देव है। सारगन्य में वास करने वाले देव है। कच्ची लकडी के गन्ध में वास करने वाले देव है। छाल के गन्ध में वास करने वाले देव है। पपडी के गन्ध में। पत्तों के गन्ध में। फुल के गन्य में। फुल के गन्ध में। रख देगन्ध में। गन्ध के गन्ध में।

भिक्षुओ । यहीं गन्यर्वकायिक देव कहलाने हैं।

§ २ मुचरित सुत्त (३० २)

गन्धर्च-योनि में उत्पन्न होने का कारण

श्रावस्ती ।

एक ओर चैठ, वह भिक्षु भगवान् में बोला, "भन्ते ! क्या हेतु=प्रत्यय है कि कोई यहाँ मरकर गन्धर्वकायिक देवों के बीच उत्पन्न होता है ?

मिश्च । कोई शरीर, वचन ओर मन से सवाचार करता है। वह कहीं सुन पाता है--गन्धर्व-कायिक देव दीर्घायु, सुन्दर और सुखी होते हैं।

तव, उसके मन में ऐसा होता है, "अरे! मरने के बाद में भी गन्धर्वकायिक देवों में उत्पन्न होकें। वह ठीक में मरने के बाद गन्धर्वकायिक देवों में उत्पन्न होता है।

भिक्ष । यही हेतु=प्रत्यय है कि कोई यहाँ मरकर गन्धर्यकायिक देवों के बीच उत्पन्न होता है।

§ ३, पठम दाता सुत्त (ं३० ३)

दान से गन्धर्व-योनि में उत्पत्ति

थावस्ती ।

उसके मन में यह होता है—अरे ! मरने के बाद में मूलगन्ध में वास करनेवाले देवों के बीच उत्पन्न होकें । वह मूलगन्धों का दान करता है । वह मरने के बाद मूलगन्बों में वास करने वाले देवों के वीच उत्पन्न होता है ।

६ ४-१२ दाता सुच (३० ४-१२)

बाम से सलार्थ-योति में शत्पनि

बह सारक्षभों का बाल करता है। वह मरने के बाद सारक्षों में वास करने बाध देवों के बीच उत्तब होता है।**

बह कक्षी के गुरुवों का बाज काता है।

बद्द बाह्य के सम्बंधित का काम बनता है।

पपदीचे ।

पर्चीके ।

क्रम के ।

क्रम के 👍

रम के 🚦

गम्ब के । मिश्रको !काश्चित्र=धल्यव ।

§ १३ पठम हालपकार सच (३० १३)

वास से सम्बर्ध बोसि में उत्पत्ति

धावस्ती ।

सन्ते ! क्या डेतु=प्रत्यव है कि कोई वहाँ सर कर सूक्यास्य में वास करने वाले देवों के वीच करवा कोता है ?

उपके सन में ऐसा होता है—अरे ! सरने के बाद में सूक्तान्य में बास करने बासे हैंचों के बीच उपच होतें ! वह जब पान पका सवारी का दान करता है । वह सरने के बाद सूक्तान्य में बास करने बाके देवों के बीच उपक होता है ।

सिक्ष ! यही हेत्र=मत्यय ।

§ १४-२३ हानपद्धार सत्त (३० १४-२३)

वान से गम्बद-योगि में स्त्यक्ति

ि ग्रेप इस गम्बर्वी के साथ भी क्याका समग्र केना व्यक्ति है

गम्बर्वेकाय-संयक्त समाप्त

ग्यारहवाँ परिच्छेद

३१. वलाहक-संयुत्त

§ १. देसना सुत्त (३१. १)

वलाहक देव कौन हैं ?

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ ! वलाहककायिक देवा के विषय में कहूँगा । उसे सुनो ।

भिक्षुओ ! वलाहककायिक देव कौन से हैं ? भिक्षुओ ! शीत वलाहक देव हैं । जण वलाहक देव हैं । अभ्र वलाहक देव हैं । वात वलाहक देव हैं । वर्षा वलाहक देव हैं ।

मिश्रुओ । इन्हीं को वलाहककायिक देव कहते हैं।

§ २. सुचरित सुत्त (३१ २)

वलाहक योनि में उत्पन्न होने का कारण

भिक्षु ! कोई शरीर, वचन और मन से सदाचार करता है। वह कहीं सुन लेता है । उसके मन में ऐसा होता है । मरने के बाद वह वलाहककायिक देवों के बीच उत्पन्न होता है।

मिश्रु ! यही हेतु = प्रत्यय

§ ३. पठम दानुपकार सुत्त (३१३)

दान से वलाहक-योनि में उत्पत्ति

वह अन्न, पान, वस्त्र का दान करता है। वह मरने के वाद शीत वलाहक देवों के बीच उत्पन्न होता है।

§ ४-७. दानुपकार सुत्त (३१ ४-७)

दान से वलाहक-योनि में उत्पत्ति

कष्ण वलाहक देवां के बीच उत्पन्न होता है। अभ्र वलाहक देवां के बीच उत्पन्न होता है। वात वलाहक टेवां के बीच उत्पन्न होता है। वर्पा वलाहक देवां के बीच उत्पन्न होता है।

§ ८ सीत सुत्त (३१८)

शीत होने का कारण

श्रावस्ती । एक ओर बैठ, वह भिक्षु भगवान से बोला, "भन्ते । क्या हेतु = प्रत्यय है कि कभी शीत होता है ?" सिंधु ! शील बखाइक पास के देव हैं। बजके सन में बच वह होता है—इसकीग अपनी रिंठ से रसप करें तब दनके सब से पेसा होने में और बीला है।

६९ डण्इसुच (३१९)

गर्मी होने का कारण

मिशु ! क्रण वसाइक गा के दंग है !

§ १० अस्म मुत्त (३१ १०)

वादछ होने का कारण

सिञ्ज ! अञ्चल बढाइक न स के देव हैं। ⋯

६ ११ यात सुच (३१ ११)

वायु होने का कारण

मिसु ! बात क्लाइड नाम के देव हैं।

§ १२ वस्स सुच (३१ १२)

यर्था होने का कारण मिश्र ! वर्षा बखाइक शास के देव हैं।

वकाहरू संयत्त समाप्त

बारहवाँ परिच्छेद

३२. वत्सगोत्र-संयुत्त

६ १. अञ्जाण सुत्त (३२ १)

अज्ञान से नाना प्रकार की मिथ्या दिएयों की उत्पत्ति

श्रावस्ती ।

तव, वत्सगोत्र परिवाजक जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और कुशल क्षेम पूछ कर एक ओर

एक ओर बैठ, वत्सगोत्र परिवाजक भगवान् से बोला, "गौतम । क्या हेतु=प्रत्यय है कि ससार में इतनी अनेक प्रकार की मिथ्या-दृष्टियाँ उत्पन्न होती है— "लोक शाश्वत है, या लोक अनाश्वत है। लोक सान्त है, या लोक अनन्त है। जो जीव है वहीं शरीर है, या जीव दूसरा और शरीर दूसरा है। मरने के बाद तथागत होता है, या मरने के बाद तथागत नहीं होता है। मरने के बाद तथागत होता है भी और नहीं भी होता है। मरने के बाद तथागत न होता है और न नहीं होता है" १

वत्स ! रूप के अज्ञान से, रूप-समुदय के अज्ञान से, रूपनिरोध के अज्ञान से, रूप-निरोधगामिनी प्रतिपदा के अज्ञान से, ससार में इतनी अनेक प्रकार की मिथ्या दृष्टियाँ उत्पन्न होती है—"लोक शाइवत है ।

§ २-५. अञ्जाण सुत्त (३२ २-५)

अज्ञान से मिथ्या दृष्टियों की उत्पत्ति

वत्स । बेटना के अज्ञान से ।

वरस । सज्ञा के अज्ञान से

वत्स । सस्कार के अज्ञान से ।

यस ! विज्ञान के अज्ञान से, विज्ञान-समुदय के अज्ञान से, विज्ञान निरोध के अज्ञान से, विज्ञान निरोध के अज्ञान से, विज्ञान-निरोधगामिनी प्रतिपदा के अज्ञान से, ससार में इतनी अनेक प्रकार की मिथ्या-दृष्टियाँ उत्पन्न होती हैं—"लोक शाश्वत हैं ।"

§ ६-१०. अदस्सन सुत्त (३२ ६-१०)

अदर्शन से मिथ्या-दृष्टियों की उत्पत्ति

आवस्ती ।

एक ओर बैठ, वत्सगोत्र परिवाजक भगवान् में वोला, गौतम ! क्या हेतु=प्रत्यय हे कि ससार में इतनी अनेक प्रकार की मिध्या-दृष्टियाँ उत्पन्न होती है—''लोक शाश्वत हैं॰ '' ?

वत्स ! रूप के अदर्शन से । वेडना । मंज्ञा । संस्कार । विज्ञान ।

```
६ ११-१५ अनिससमय सच (३२ ११-४५)
                जान न होने से किच्या रूपियों की उत्पत्ति
भावसी
         बरस ! क्रम में अभिसमय नहीं होने स
          वत्सा वैद्या में ।
          परसाशिकार्स ।
          बसर विकास में
          बस्तः ! विज्ञासंसं।
          ६ १६-२० अनुनुशेष सप्त (३२ १६-२०)
           ग्रही प्रकार न जानने से मिरवा रुपियों की उत्पत्ति
भागमी
          वतर ! अय में भनवोध नहीं होने से ।
          बस्स ! बेदबा में "।
          बलगां संक्रा में ।
           क्या ! सीमदार में
           क्ला! विकास में ।
           8 २१-२५ अप्पटिवेध स्तत्त (३२ २१-२४)
                  अप्रतिवेज म होने से ग्रिया-इपियाँ
   बत्स ! क्य के समतिवेश से विकास के अमृतिवेश से ।
            ६ २६-३० अस्त्रक्ष्मच्या सुस ( ३२ २६-३० )
               मधी प्रकार विचार न करने से मिच्या श्रीप्रयाँ
   'पत्स । क्रम के असलकार से विकास के धरालकार स
          § ३१-३५ अनुपलक्तम स्च (३२ ३१-३५)
                     सनप्रक्रमण से मिच्या रूपियाँ
    बत्स | कर के शबुपछक्षण से विज्ञान के शबुपछक्षय से |
          ६ ३६-४० अपच्छपतक्त्राच स्त्र (३२ ३६-४०)
                     अप्रत्युपसदाण से मिच्चा-प्रचियाँ
     बरस ! कप के बारस्प्यकस्था से विज्ञान के बारस्प्यकक्षण से ।
            ६ ४१ ४५ असमपेक्सम स्च (३२ ४१-४५)
                      भस्माचेसरा से विश्वा-श्रवियाँ
     वस्त । कन के शसमारेश्वय से विकास के ।
           हु ४६ ५० अपच्युपेक्सण ग्रुस (३२ ४६-५०)
                    समस्याप बेशज हैं विश्वा-रहियाँ

स्वत्स् क्रिय के अग्रत्वीयमेक्षय से विशास के स्
```

६ ५१ अप=चम्यकम्म गुत्त (३२,५१)

अवत्यक्ष कर्म सं मिय्या रिष्टयाँ

धावस्ती "।

तय, सरस्रतीय परिवाजका जाँ भगतान् वे वहाँ वाया, जीर कुशल क्षेम पूछकर एक भीर वैद गया।

एक शोर चैठ, वासगोग परिवालक भगवान से बोटा, "गीतम । क्या हेतु=प्रत्यय है कि संसार में इननी अनेक प्रकार की मिण्या-एष्टियाँ उत्तय गोती है—"गोक बाइयत है "।"

यम ! रूप के अप्रत्यक्ष-यमं में, राप मसुत्य के अप्रत्यक्ष कर्म में, रूपनिरोध के अप्रत्यक्ष कर्म से, रूप निरोधगासिनी प्रतिपदा ने अप्रत्यक्ष कर्म में एननी अनेक प्रकार की मिथ्या-दृष्टियाँ उत्पन्न होती है ।।

§ ५२-५५ अपच्चुपेक्सण सुत्त (३२. ५२-५५)

शक्तवक्ष कर्म से मिथ्या-इप्टियाँ

- ' यस । बेटना के अप्रस्थक्ष दर्म से
- ' वत्स ! सज्ञा के अप्रत्यक्ष वर्ग स । वन्म ! सन्कार के अप्रत्यक्ष वर्ग स ।
- " यस्म । विज्ञान के अप्रत्यक्ष कर्म से ।

वरसगोच संयुत्त समाप्त

तेरहवाँ परिच्छेद

३३ ध्यान संयुत्त

§ १ समाधि-समापत्ति सत्त (३३ १)

च्यायी चार हैं

भावक्ती (

मिश्रमा ! प्यायी तार हैं । सीन मे बार !

ासकुत्रा [भ्याप्य नार हा राग स नार]

[सकुषी | कोई प्यापी समापि से मसापित पूछक होता है समापि से समापित-कुत्रक गहीं |

[सकुषी | कोई प्यापी समापि से समापित-कुत्रक होता है समापि से समापित-कुत्रक गहीं |

[सकुत्रा | कोई प्यापी न समापि से समापित-कुत्रक होता है न समापि से समापित-कुत्रक ।

[सकुत्रा | कोई प्यापी न समापित से समापित-कुत्रक पी होता है और समापि से समापित-कुत्रक ।

समापित-कुत्रक पी होता है और समापित समापित-कुत्रक पी होता है और समापित से समापित-कुत्रक भी ।

भिश्चमो ! बा रवाची समाधि में समाधि-मुचक सी होता है और समाधि में समापित मुचक भी बड़ी दन कर स्वाधिकों में लाम-भोद⊏ सा बक्र क्षेत्रसमाधिक है।

मिश्रुकी। जमें माय संपूर्ण तूच से बृद्धी इद्दी संज्ञपण सक्त्रण से भी और भी सं भी प्रष्ट कच्छा मस्या जाता है। मिश्रुकी ! वैस दी जो व्यावी समापि में मसापिन्द्रणक भी दोता है और समापि में समापिन-दास भी बदी हम चार व्याविषा में ना⊐ओड-सुर्व्य=टकस=स्वर है।

§ २ डिति सुच (३३)

न्धिति कुशस स्यायी थेप्र

भायम्ति ।

मिश्रमा । याची चार है। कान म चार १

भिश्वको । काई रवाको समाधि में समाधि कुशक होता है समाधि में स्थिति कुशक नहीं । मिरुको ! काई रवाको समाधि में रिकृति कुशक होता है समाधि-कुशक नहीं ।

भिक्षुओ ! काई प्याची व समाचि में समाभिक्षास होता है कार न समाचि में रिवरिङ्सन । विद्युओ ! काई प्याची समाचि में समाचित्रकार भी और समाचि में रिवरिङ्शक भी होता है ।

शिशुर्ज । जा प्यापी नमाधि में समाधिकुशाल भी आह समाधि में स्वितिहमार भी होता है वही इन बार प्याधिकों में नम=केन्द्र=सुन्य=इस्त्रक्ष्यवर हाता है।

भिधुमा । अर्थ गान ने मूच ।

🖁 २ पृहान सुच (३३ ३)

ध्युरधान कुशाम ध्यायी अनम

मियुभी 🕽 म्हाची चए हाते हैं । बाब व्ह चार 🖁

भिश्वभा रे कोई व्याची व्यमाधि में समाधिवृत्राल बीता है। समाधि में ब्युत्वासहराज नहीं ।

भिभुको ! कोई प्यापी समाधि स च्युजानगुकार होता है, समाधि में समाधित्रक नहीं। निषुओं ! कोई प्याची न समाधि से ग्यु गनकुत्रल होता है, न समाधि में समाधिकुशल । भिधुओं । कोई ध्यापी समाधि में समाधिकुगल भी होता है, और समाधि में ब्युखानकुशल भी। भिञ्जभो । तो भ्याची समाधि में समाधितुजल भी होता है, और समाधि में स्युत्यानक शत. यहाँ इन चार ध्यायियों से अप्र='त्रेष्ट=म् य=उत्तम=प्रार गाना है।

§ ४. कल्लित सुत्त (३३ ४)

कल्य कुशल ध्यायी श्रेष्ट

श्रावस्ती

भिक्षुओं। ध्यार्था चार होने है। गान से घार?

भिधुओं ! कोई ध्यायी समाधि में समाधितुशल होता है, समाधि में कल्य-हुशल नहीं। भिधुओं । कोई ध्यार्या समाधि में बल्बगुबल होता है, समाधि में समाधिकुशल नहीं। भिक्षुओं । जोई ध्यायी न समाधि में समाधि हमल होता है, ओर न समाधि में क्ल्यकुशल ।

भिक्षुओ । कोई ध्यार्थ समाधि में समाधिरुगल भी होता है और समाधि में कल्यकुशल भी। भिक्षुओं। नो ध्यायी समाधि में समाधिकुतल भी होता है, और समाधि में कल्यकुराल भी, वहीं इन चार ध्यायियों में अग्र = श्रेष्ट होता है।

भिल्ला ! जैये, गाय से दृष ।

§ ५ आरम्भण सुत्त (३३ ५)

आलम्बन कुशल ध्यायी श्रेष्ट

श्रावस्ती ।

भिक्षओ । चार ध्यायी ।

भिश्रुओं । कोई ध्यायी समाधि में समाधिक गल होता है, समावि में आलम्बनकुशल नहीं। मिश्रुओं। जो ध्यायी समाधि में समाधिकुगल भी, और समाधि में आलम्बनकुशल भी हैं, वे ही इन चार ध्यायियां में अग्र=श्रेष्ठ ।

§ ६. गोचर सुत्त (३३ ६)

गोचरकुशल ध्यायी

चार ध्यायी ।

भग्र

भिक्षुओं । कोई ध्यायी समाधि में समाधिकुशल होता है, समाधि में गोचरकुशल नहीं। भिक्षुओं । जो ध्यायी समाधि में समाधिकुशल भी, और समाधि में गोचरकुशल भी हैं, वे ही

६ ७. अभिनीहार सुत्त (३३. ७)

अभिनीहार-कुशल ध्यायी

भार प्यापा । भिक्षुओं । कोई ध्यायी समाधि में समाधिकुशल होता है, समाधि में अभिनीहार-कुशल नहीं ।।

जिल्लामा १ आ प्यार्था समापि में समापिकुसाड भी भार समापि में जिससीहार-कुशर भी हैं यो सप्तः।

> ई ८ स**म्इ**च्च सुच (३३८) गोरव करतेवाला च्यायी

'बार प्याची ।

चार प्यापा

मिशुनो ! कोड्र प्यार्था समाधि में समाधिकुमक होना वं समाधि में गीरण करनेपाका नहीं। मिशुनो ! व। प्यायी समाधि में समाधिकुमक मी, आर समाधि में गीरण करनेपाक भी हैं वे ही 'क्षम ।

> ह ९ सातम सुम (३३ ९) निरम्तर सन्तर सन्तरास्य स्वाची

बार च्याची ।

मिनुमा ! कोई त्याची समाधि में समाधिकुचल दाता है समाधि में सातत्वकारी नहीं ।

िस्हात ! को क्यापी समाधि में समाधि इस्तब भी दोवा द और समाधि में साहत्यद्वारी भी वदी अप्रकृष्टि !

> र्व १० मध्याय सुच (३३ १०) सम्मानाती प्रायी

মিগ্রুমী ় जो স্বাধী समाधि में समाधिकुशन भी शांता है। भीर समाधि में समाधि में समाधि में समाधि में समाधि में समाधि में

§ ११ मिति सुच (३३ ११)

श्याची चार 🗄

धावस्त्री ।

'मार भाषी ।

...

शिक्षुओ ! कोई प्यार्था नमाचि में नमायिक्ष्यान होता दं नमाचि ≣ रिपविक्रसस्त नहीं । सिक्षुओ ! कोई प्यार्था नमाचि में नियनिक्सम्ब होना है। नमाचि में समाचिक्यस्त नहीं ।

तिमुची । कोई श्राणी समाधि में न समायित्रगण होता है। और न रिपणित्रगण ।

जिलुओं हे कोई प्याची समाधि में समावतिकृतान भी होता है आर रिचनिकृतान भी ह

शिक्षुणी । जो रचार्थी लमाधि में शतात्रशिङ्काल भी ग्रांता है और रिपरिङ्काल भी व भग्रस्थेडल ।

६१२ पृहान गुच (३३ १०)

লিনি ৰশস

ीं अनुवार्ष का नवारी सकारिय के समारियक्षण की कार्या है और अनुवारक्षण भी का अपना !

६ १३ कल्लित सुत्त (३३ १३)

कल्य-कुश्ल

''भिक्षुओं । जो ध्यायी समाधि में समापत्तिकुराल भी होता है, और कल्यकुराल भी, वह भग्न ''।

६ १४, आरम्मण सुत्त (३३ १४)

आलम्बन कुशल

" भिक्षुओं । जो ध्यायी समाधि में समापत्ति कुशल होता है, और समाधि में आलम्बनकुशल भी, वह अग्रः ।

९ १५ गोचर सुत्त (३३ १५)

गोचर-कुशल .

ं भिक्षुओं ! जो ध्यायी समाधि में समापत्तिकुशल होता हे, और समाधि में गोचरकुशल भी, वह अग्र ।

६ १६. अभिनीहार सुत्त (३३. १६)

अभिनीहार-कुशल

' भिक्षुओ । जो ध्याची समाधि में समापत्तिकुशल होता है, और समाधि में अभिनीहारकुशल भी, वह अग्र ।

९ १७ सक्कच सुत्त (३३ १७)

गौरव करने में कुशल

भिक्षुओ । जो ध्यायी समाधि में समापत्तिकुशल होता है, और समाधि में सत्कृत्यकारी भी, वह अप्र ।

§ १८ सातच्च सुत्त (३३ १८)

निरन्तर लगा रहने वाला

भिक्षुओ । जो ध्यायी समाधि में समापत्तिकुशल होता है, और समाधि में सातत्यकारी भी, वह अग्र''।

६ १९. सप्पाय सुत्त (३३ १९)

सप्रायकारी

भिक्षुओं। जो ध्यायी समाधि में समापत्तिकुशल होता है, और समाधि में सप्रायकारी भी,

§ २० ठिति सुत्त (३३.२०)

स्थिति-कुशल

चार ध्यायी । भिक्षुओ ! कोई ध्यायी समाधि में स्थितिकुशल होता है, समाधि में ब्युत्थानकुशल नहीं । भिक्षुओ ! जो ध्यायी समाधि में स्थिति कुशल होता है, और समाधि में ब्युत्थानकुशल भी, वह अग्र । § २१-२७ प्रको आगत ससन्ता सम (३३ ४ २१-२७)

[इसी तरह 'दिवति के साथ करणकुराक आस्त्रवनकुराक गांचर-कुराक अमिनीहार सन्कृत्वकारी सात्रवकारी केसाव भी समग्र केना चाहिये]

§ २८–३४ पुद्धान सुच (३१ २/~३४)

मिश्रुओं ! कोई व्यापी समापि में पुत्तवान इसत होता है समापि में करण इसत महीं ! [इसी तरह आकरका इसके गोबस्कुशक अभिनीदार कुसले सरकृषकारी सातान कमी समापकारों के साथ भी पमास केला चाहिये !

9 ३५-४० कल्लिस सन्ध (३३ ३ --४०)

सिक्षुमा । कोई प्याची समापि में क्यान्त्रसक होता है समापि में आस्म्बनकंतिक नहीं । [इसी तरह गोचरकुसस अमिनीहार कुसस सक्तृत्वकारी सातव्यकारी समावकारी के साव

§ ४१-४५ आरम्मण सुत्त (३३ ४१-४५)

[इसी तद गोचरकुलस अमिपीहारक्रास सक्तायकारी मात्रायकारी मात्रायकारी के साव मी समझ केना बाहिये]

ु ४६-४९ गोपर सुच (३३ ४६-४९)

[इसी ठरड व्यक्तिमोहारङ्क्षण सरहस्वकारी सातत्वकारी समायकारी के साथ मी समप्त केमा चाहिते :]

§ ५०--५२ वामिनीझार सुप्त (३३ ५०-५२)

[इसी तरह सन्द्रन्तकारी सातत्त्वकारी सप्रायकारी के साथ भी समझ केना चाहिये]

§ ५३ – ५४ सक्का सुच (३३ ५३ – ५४) [इस्री तरह सालव्यकारी समावकारी के साथ भी समझ केमा चाहिये]

हु। तरह सावत्वकारा समावकारा कसाव मा सम्बद्ध करा वार्यव ह ५५ साव**व**~सप्पाय सच (३३ ५५)

ध्यायी खार

भाषस्ती ।

भी समझ सेना वाडियी

मिञ्जूको ! प्याची चार हैं। कान से चार है

मिश्रमी ! कोई कावी समावि में सन्तत्यक्रशी होता ह समावि में समावकारी नहीं ।

मिहुकी ! कोई आयी समाधि म सप्राचकारी होता है सात-वकारी वहीं ?

मिक्समी ! कोई ज्यानी समाधि में व सालवारार्थ होता है और न समायकारी ।

मिसनो ! कोर्न स्वाची समाधि में सातास्वदारी होता है सार समाचकारी सी *।*

भिष्ठको | को क्वाची समाधि में सातत्वकारी होता है कीर समावकारी मी यह इन कार व्यापिती में समाम्मेप्र-मुख्य-प्रकार-ज्यार होता है ।

मिहानी | कैसे गाम से बुन बुन से नहीं नहीं से मरतान मरचन से वी भी से सम्ब जन्म होता है। कैसे ही मिहानी | को जापी समापि में शताजनारी होता है और समयवारी मी नह इन चार स्वामियों में जम≫केड-मुक्क≃डरमञ्जादर होता है।

सराबान् वह बोके । शंतुष्ट होकर कन विक्रुओं ने अगवान् के कहे का बनुसीवृत्र किया ।

ध्याम संयुच समाप्त सम्बद्धाः समाप्त

परिशिष्ट

१. उपमा सूची

अनाथ ६२ अन्धकार में जानेवाला पुरुप ८३ अपराधी चोर २३५ अमनुष्यवाले स्थान का जल ८१ आकाश में चाँद १५७ आकाश २७७ आग की हैर २२९ आग का गड़ा २३५ आभाइवर देव ९९ आम के गुरछे ३८८ उरपछ ३८२ उत्पन्न का गन्ध ३७८ उपर जानेवाला पुरुप ८४ कपर से नीचे आने वाला पुरुष ८४ एणिमृग १८ औपधि तारका ६४ अंकुपी फेंक्नेवाला २८७ क छुआ का खोपड़ी में झँग छिपाना ८ कछुओं का परिवार २८८ कटी बास १०६ कमछ की नाल से पर्वत मधना १०७ कान्तार पाथेय २३४ कान्तार-मार्ग का कुँआ २४२ कालानुसारी ३८८ कुत्तर ३८५ कुम्हार का घड़ा ८५ कुम्हार का भाँचा से निकला बर्तन २२९ ष्टागार २३६, ३०६, ३८८ केला २९५ फोशल की घाली ९२ कौये को खींचना १६५ खद्खरी का गर्भ १२५, २९७

पह + १

गङ्गा नदी २७१, ३८२ गदगदाता हुआ मेघ ८७ गद्गदाते मेघ की विजली ९२ गाड़ी की हाल ९४ गाय का दूहन ३०७ गाय ४४८ गुड २६१ घसगढ्वा ३८८ घी २६१ चण्ड कुत्ता २९६ चक्रवर्ती का जेठा पुत्र १५२ चक्रवर्ती राजा १५६, ३८८ चट्टान से शिर टकराना १०७ चन्द्रमा ३८८ चाँद सुरज की तेनी ३०८ चाँद २७७, २८० छॉछ लगी गाय २३४ छोटी नदियों का चढ़ा पानी ९४ जम्बू द्वीप के घास-लक्डी २६९ जर श्रमाल ३१० जाक के बुलबुले ३८२ जाद्गर ३८३ जाल में पक्षी का फैसना ४६ जुही ३८८ जेतवन के तृण-ऋाष्ट ३३७ जगली हाथी १०६ स्परने वाला कौकः १०५ तरण वृक्ष २३१ तेज २६१ तेल प्रदीप २३० दसारहों का आनक मृद्ग ३०८ टारू पिया हुआ १६९

संयुक्त-निकाय

क्य २६१ **रो चंगुरू भर प्रज्ञाबाकी १ ९** वो प्रकृष ३६८ धनुर्वर ६ ७ पाई का करना १६३ पुरा द्वा हुना गादीवान् १ तक्की ऋग्द्रक ७५ सक्त १९५ नकडकाय २४ पश्ची का भूक बदाना ३५० प्रम ११५ पर्वत पर धाका श्रुवप ३१ -पर्वत १८९ मदीप का ब्रह्मका ६६४ पदाद को बच्च से खोदना ६ ७ प्रवर्गी फरमा ९८ १ व पातास का अन्त खोजना १ ० पीने का बढ़ोरा १६९ पीय २६९ प्रराना मार्ग २३० प्रतामा श्रीमा २०० पूर्णिमा की राव का चाँद १८४ पुरस की स्रोपकी १२७ १२८ केंका सुवी ६२ फैडायी बाङ ७१ बहेरी बैसा भुका ३ ३ पहें बस की बाब ६२ बाई का वसका १८० वरगढ़ की साकार्य १६५ याति । बस्रवास् प्रदय १३७ १७९ १९७ बहुद क्रिवीवाका कुक ३ ३ बाबर २३३ वाल, का कथ १५ चालाचा बंद ४ ६ विदा पद्यवार की बाच ८९ विकार ३ ९ बीबरोवबा ११६ थीय १४ १६१ बुरा ग्रामाओं १४९

WE 104 शहीदार की पटाई ९२ भाषा अभना ५६ र्जेबा १८८ प्रक्रती का शास कारता ५४ सम २६३ मरीविका ३८२ सञ्चल पर चढ़ा ११% महामेष १५६ महाबद्धा २३ सहानवियों का संगम १५1 महापूर्णी २५१ २६५ महान पर्वत २० मासा ६६३ मावा हारा प्रश्न की रक्षा ४७ मालवा क्या १६५ सुर्गी के अच्छे १८७ संब १६१ यूप का चौंक्ता १६ समराज सिंह १५४ मेब के समान पर्वत ८० रीका २६ 1 रीका काचेकाका पिक्क १८८ मेका करवा ३७८ रसंनव १ ६ रम ११३ शाही १६९ वर्षे का कादा १ ० रंगरेण १३६ स्टब्सियों की शाक १६४ सम्बद्धी २६३ **WE 241** काचार केंक्द्र १ % mill tot कारकारण १८८ सकारी १५९ की है भी वृति से चयाता ३ ७ कांद्रे का कार १३% बोडे से विश नगर २०३ विपेते शीर जुला १८९

विज्ञ का मूर्य को मुँह लगाना १७५
वेणु २९५
वेरमंग ह्वा २८९
वेटूर्यमणि का भासना ६४
शारिका की वोली १५२
शमशान की लकड़ी ३६२
समुद्र में चलने वाली नाव ३८७
सरोवर ३०९
सारवी १७३, २७
सारगवेषक ३८२
सिखाया हुआ घोडा ८
सिंह २७, ९५

सुमेह २५२
सूर्द वैचने वाला २८२
सूत की गोली ४१८
सूरज १६८
सूर्य २८८
सोने का आभूपण ६४
सो वर्ष की आयु के श्रावक २७१
स्वच्छन्द मृग १५९
स्थिरता से चळने वाला नाग ११७
हरे नरकट का कटना ५
हाथी का पैर ७९
हिमालय २५२
हुँआ हुँआ कर रोनेवाला सियार ६५
लोहार की भाषी ९२

२ नाम-अनुकमणी

भविद्य (बद्धाकोक) ३५ ६२ भसम ६४ असुरेन्द्रक मारहाश 1३३ असुरेग्द्र शह ५२ बस्सकि ३०५ मश्द (नरक्ष) १२४ महिएक मार्गात 11१ शक्तिगाधन्त्यावत् ११४ माकिचन्यायतम् ११८ माकोटक ६४ ६५ काखानीय १८ भागक (शूर्यंग) ३ ४ भागम्य ५४ ६६ ७९ १२४ १४६ १५ 318 81 489 986 88 585 35 385 204 262 257, 226 tto tut v t vt नाभाषकर देव ९९ नाराम (विद्वार) १ ६ १६, २ . १५, ४४ 40 12 14 10 1 4 114 114 माक्थन 10 नाकक इंटबक १५१ आक्रमिका (शिक्षची)। ८ माध्यमी १४४ १७५ १७ १७१ इन्द्र १९, १८१ श्रम्भ १६४ स्थापुर १६७ ईसाम १७२ उद्यक्तक (शेत) ३१ बरक्क (उद्दीसा) ३५३ बचर देवपुत्र ५० बत्तरा १६८ उत्तक (नरक) १६४ उत्पक्षमधी शिशुधी ११ कर्प आहाल १३९

उध्यानसंज्ञी देवता २४ उपक ३५ उपचाला १११ (-भिक्षुणी) उपवत्तन १२८ उपवान १४०, २१२ उपालि २६० उरुवेला ८९, ९०, ९१, १०४, ११४, ११५ ऋषिगिरि १०३, १५५ ऋषिगिलि शिला ३७४ ऋषिपत्तन सृगदाय ९०, ९१, २३९, २७६, २८५, ३५१, ३७९, ३९४ एकनाला १३८ एकशाला (- वाह्मण-प्राम) ९६ पुणिमृग ६८ पुलगला ३२३ औपधि तारका (= शुक्त तारा) ६४ ककुध देवपुत्र ५६ क्कुसन्ध (–बुद्ध) १९७, २७४ कतमोरक तिस्तक मिश्र १२२ कदलिसृग ३८४ कपिकवरसु २६, ३६१ कप्प ११९, ३९७ कप्पिन (- महा) १२० कस्मासदस्म २३२, २३८ कलन्दक निवाप (- वेलुवन) ५४, ६४, ९३, १०३, १२९, १३०, १३१, १३१, १७४, १६९, १७०, १८२ कलार क्षत्रिय २१६, २१७, २१८ कलिंग राजा ३०४ कात्यायन गोत्र २००, २०१ कात्यायन २५९ कामद-देवपुत्र ५० कालशिला (राजगृह में) १०३, १५५ कालानुसारी ३८८ काशी ७४, ७६, ७७, २७० काइयप (- युद्ध) ३६, (- देवपुत्र) ४८, (- महा) १२०, (- गोत्र) १५८, (द्युद्ध) १९७, २०२, २७५, २७६, २८१, २८२, ३०४ काश्यपकाराम ३७५ कुमुद (नरक) १२४

क़ररघर ३२४, ३२६ कुरु जनपट २३२, २३८ कुशावती ३८४ कुशीनारा १२८ क्टागारवाला २८, २९, ९८, १८२, १०८, ३१४. ३५२, ३७२ क्रशागीतमी (भिक्षणी) १०९ कृपिमारद्वाज १३८ केला ३८३ कोकनदा २८, २९, (-छोटी) २९ कोकनद ७५ कोकालिक १२२, १२३, १२४ कोणागमन (-बुद्ध) १९७, २७५ कोण्डङम १५४ कोशल ६२, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१-८७, ९६, १००, १२४, १३४-१४४, १५७ १६२ क्रोधमक्ष यक्ष १८७, १८८ कौदा।म्बी २४०, ३६३, ३७७, ३७९ क्षेमदेवपुत्र ५९ क्षेमा ३९३ खण्डदेव ३५ खुज्धुत्तरा २९२ खेमक ३७७ खोटामुँह (-भारहाज ब्राह्मण) १३०, १३१ खोमदुस्स १४६, १४७ शागरा १५५ गङ्गा ११८, १६५, १७०, २७१, ३८२ गन्धर्वकायदेव ४३७ गया १६४ गरु १२१ गिञ्जकावसथ २२५, २५९ गृद्धकूट पर्वत ९७, १२५, १८३, २६०, २७२, २७४, २९७, ३०१, ३०२, ६०४, ३७४ गोधिक १०३, १०४ गौतम २७, ३४, ४४, ४४, ४९, ५४, ६२, ६७, ९५-९९, १०५, १०७, ११८, २२९-१३०, १३८-१४७, १५० (-कुल), १५५, १५८, १५९, १८७, २०२, ३८३, ४४३ घटीकार देवपुत्र ६१, घोषिताराम २४०, ३६३, ३७७

सक्तर्वी राजा ३८८ धम्दन (-प्राप्ती का) ७४ चन्द्रम देवपुत्र ५५ चन्द्रगरिक उपासक ७५ ७६ चन्द्रमा दवपुत्र ५२ षन्त्रिमस देवपुत्र ५२ काया १५४ चारी महाराज १८४ चाका सिद्धाची १३ १११ चित्र ग्रहपति ३९२ चीरा मिल्लूची १० वेष ११४ रहम देश जद्य भारद्वात्र १३२ १३३ भोतपन १ ६ १९ २ - ४३.१५ ३ - ३३,४८ 154 114 188 14 144 148 148 102 109 141 145, 152 154 214 **२२८ २३६ ६७२ ६७७ ५५ ५६ ३ ४** 110 110 16 161 168 169 H सतपर २६ ८% १ १ १ २ ३३६ १४६ बन्द्र देवप्रश्न ६१ सम्बद्धीय २६९ मानसोधि ११६ बाडिमी १५९ १६ वहीं १८८ सतीवी (एक पर्व) १६१ द्रगानास (बाह्यमे) १४३ झातिक ११५, १५९ र्टक्तिमञ्ज १६४ आविक्ती ८६ तमागत १५ 1 118 241 815 सपोदाराम ५ ३ (≡गर्ज-कुण्ड) १३ सावव देवलुग्र ५३ ५२ Atteres a w Drur a w तिम्य २६ तिरम १०५ ११५ तर मधेर महा १२४ सुनिय १११

तृष्णा(भार-कम्पा) १५ १ ६ १ ● त्रपद्मिस (व्यक्त कोंड) ६ २२१, १५९, १०६ 188 184 161 168 168 168 166 163 जिश्वत कोक (==देव-कोक) द धुष्कानम्या २८६ श्वकतिस्या २८२ १८३ त्रक्षिणागिरि १६४ तकाबस्य २ ७ इसारह ३०४ दामकि देवपुत्र ४९ ५ बीर्बचित देवपुत ५५ देवदत्त १२५ २९५ १९६ ३६ ३६१ देवराज १८८ वेक्तिल माम्यय १४ ध्यवजानि १९ मञ्जूकपिवा ३२1 मन्दम धन ६ ६२ १५९ मन्द्रम देवपुत्र ५५ गन्द देवपुत्र ६३ ६१५ नन्दिक्सार देवपुत्र १३ चवकार्तिक मारताच १४६ १४४ नाग २० २८ नागरच 1६ मार्क्ट २४ २४३ २४२ माकम्या २४४ तिकादक ६५ निगम्द मातपुत्र ६५ ६७ निमोश्व ४९ ९ १ व ११४ ११५ निधोधकका १४८ १४९ विद्योधाराम १६५ विक्रांचरति १११ मरभरा ४९, ९ - १ ४ ११४ ११५ मेवर्यतागार्यग्रावतम ३१४ पाइच कारियान ६५ ६७ वश्वमादि ३५ पश्चवर्तीच (-- भिद्वा) ३५३ प्रधान भगा ५ ५१ प्रसाद (शासन-प्राप्त) ४ परहरियों वे ब

पद्म (- नरक) १२३, १२४ परिनायक रत्न ३८४ पलगण्ड ३५ पाचीनवश २७४ पारिलेख्यक ३६३ पावा २७४ विङ्गिय ३५ पुण्डरीक १६२ पुण्णमन्तानि-पुत्र २६० पुनर्वसु १६८, १६७ पुराणकाञ्चप ३५२ पुरिन्दद १८१ पूर्वाराम ७४, १५२, ३६७ प्रजापति १७३ मसुम्न की वेटी २८, २९ मस्येक बुद्ध 👍 १ मसेनजित् ६७, ६८, ६९, ७०-८७ शिय**ङ्कर-माता** १६७ वक ११८ वद्रिकाराम ३७७ वन्त्रत ३८१ वीरण ३८१ वळाहक देव ४३९ वहुपुत्रक चेस्य २८४ वहेलिया १५८ वाधिन १२१ वाहरिंग ३५ विकंशिक भारहाज १३१, १३२ बिस २२, २७, २७, २९, ३३, ३४, ४४, ४८, पर, पर, प४, प८, ६३, ६६, ६७, (-प्रत्येक) ८१, ८८, ९२, ९३, ९७, ९६, ९८, १०६, १०७, १११, ११२, ११९, १२०, े १२३, १२५, १२७, ९२८, १२९, ^{१३५}, १३९, १४०, १४८, १५१, १५३-१५६, १६२, १६४, १६७, १६८, १७१, १८२, १८३-१७५, २०५, २०७, २९०, ३०८, ३१४, ३८२ उद्योप (-आचार्य) १४ बद-चक्ष ११५ अंद्रनेत्र ११५

वोधिसत्व १९५, १९६, ३३४ वहादेव (-भिक्षु) ११६, ११७ वहामार्ग ११७ वहा-सभा १२७ ब्रह्मकोक ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, 978 ब्रह्मा १९५, ११७, ११८, १२० (一年年1), १२२, भङ्ग ३५३ भण्ट २७९ भहिय ३५ भर्ग ३२१ भारद्वाज १२९, १३०, १३१, १३४, १३६, १३७, १४४, २७५ भिक्षुक ब्राह्मण १४५ भिरुषो २७५ भूमिज २११, २१२ भेसकलावन ३२१ भोजपुत्र (ऋषि) ६२ 👕 मक्खिल गोसाल ६५, ६७ मगध ७६, ७७, ९८, ११४, १२५, १३८, १५९, 984 मघवा १८१, १८५, १८८ मणिभद्र १६५ मणिमालक १६५ महकुक्षि २७, ९५ मन्तानिपुत्र पूर्ण ३६७ मल्ल १२८ मल्लिकादेवी ७१, ७८ मरीचि ३८३ महावन (कपिलवस्तुमें) २६, २८, (वैशालीमें) ९८, १८२, ३१४, ३५२, ३६१, ३७२ महामौद्रल्यायन ११९, १२०, १२२, १२३, १५५, २६०, २७५, २९२, ३०१, ३०२, ३११, ६१२ महा-काक्यप १२०, २६०, २७८, २८३, २८७ महा-कप्पिन १२०, ३१६, ३१७ महा-यसा १२० महा-कात्यायन ३२४, ३२६ महा-कोहित २३९, ३०_८ महालि १८२

```
संधक्त निकाय
446+6
मद्दा-पृथ्वी १८५
                                       विज १५९ (-प्रत ) १६१
                                       पद्मा मिश्लणी ११३
सागव २७५
                                       वन (-मसर ) ४९
सागय-देवपत्र ४९
माधन्त्रिय ३३४
                                       fer nor
साम-देवपुत्र ४८
                                       बसवर्ती ( देव ) ३५ १११
माजब-गामिय ६४
                                       बस्स ३५३
आविष्ठि, १७२ १७७ १८४ १८५ १८६
                                       बस्सगीच परिवासक क्षत्र ४४३
मात्रपोक्क माद्यम १४५
                                       बाराणसी ९ ९३ २६९ २७६ २८५ ३५३
मार ३५ ९० ४६, ९३ ९३ (-सेमा) ९७ ९४
                                           108, 298
    1 1 1 1111 114 8
                                       धारिक १६२
मिकिन्द्र प्रस्त (प्रव्य) ११
                                       वास्त्र १७५ १०६ १८१ १८५, १८६
                                       विजया मिझ्यी १०९ ३१
भूगारमाता (विद्यादा) ७४ १५१ ३६५
मुसिक २३ २४३
                                       विज्ञानायन्त्रापतन ११४
मोसिक कमाम १९६ ११६
                                       विवार २०४
यस ११
                                       विपस्ती १९५ 1९६
                                       विपश्नी इस 148
पसक १६९
                                       विपुक्त (-पर्वंत) ६६
 पास १११
 र्गा (सार-क्रम्पा) १ ५ १०६ १ ७
                                        विस्वपर्द्ध बीवा १ ध
 रामराष्ट्र १ २० ५० ६४ ६५ ६२ ६२
                                        विसाध पाक्षाकपुष ६१४
     55 1 3 154 155 13 121 122
                                        विस्वतिमगा ( प्रम्य ) 18
     448 344 348 346,349 369 368
                                        बेटरवरी ६४ ६५
     बेह्य १२५
     206 26 262 268 254 2 m
                                        वेष्ट्र वेषपुत्र ( व्यक्षिया ) ५४
     1 2 200 212 212 202 200
                                        बेव १८
     201 204, 827
                                        वेदेहतुनि अनम्ब २८२ १८३
  राम ३५६ ४ ५-१४
                                        बेरबिचि अञ्चरेन्द्र ५२ ५३ १७४ १७५ १७६
  राष्ट्र ५३
                                            199 194 1 5 144
                                        नेपुरुष २०३ १०४ १ ५
  tigm ton ton 2
                                        बेरका (बाब्र) २८९
  कप-क्रोध 11
  शेविकस्स ( मनुष्य ) २०५
                                        वैसद्भवकिय मध्यमाता १९१
  शोवितस्य वैवयम ६२
                                        बेशुबन ककन्दक विवाद (राजगृह में ) ५४ ६६,
  रीरथ (=नरक) २९ ४२
                                            97 57 1 6, 175 17 121 147
  क्षक्रमा महित्र ११४
                                            35 305 105 565
  68411
                                                                  241 1 1
  काक्ष्यम्बर १४४
                                            219 232 248 202 204, 822
   Breste 148 & 4
                                        मेस्तम् (स्रः ) १९७
   कोद्यापतिक १२६
                                        वेशकिय १६
   188 391
                                        वैश्वन्य (प्रासाद ) १८४-१८५-१८६ ३८४
   arrie tot
                                        बैदाशी (पम की) ११
```

बोगीरा ३ वट १ वर १५ १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ मेंबुधै मणि १४

वेरोचन १७८ वैशाली २८, २९, ९८, १६१, १८२, ३०८, ३१४, ३५२, ३७३ शक (इन्द्र) १२८, १६४, १७२-१८९ शाक्य २६, ७९, १०१, १०२, १४६, ३२२, ३६१ शाक्य-कुल ५५२ शाक्य जनपट ७९ गाल (=साख्) ११०, १२८, १४४ शालवन उपवत्तन (कुशीनारा में) १२८ शिखी (बुद्ध) १२६, १२७ शिव ५८ शीतवन १६८, १६९ शीलवर्ता (प्रदेश) १०१, १०२ शीवक १६८ शीपींपचाला ११२ (-मिछुणी) गुक्रा भिक्षणी १६९, १७० गुद्धावास २६, १२१, १२२ शुद्धिक भारद्वाल १३३ श्चिमुखी परिवाजिका ४३२ मैला भिञ्जणी ११२, १^{१३} श्वेत (= कैलाश) ६६ श्रावस्ती (जेतवन) १, ६, १९, २०, २१५२५, ३०, ४८, ४९, ५२, ५४, ५९, ६२, ६७, ६८, ६९, ७०-८७, ९३-९९, १०८-११३, ११६-१२६, १३२, १३३, १३*९-१४६, १५०-१५*५, १६६, १६७, १७२-१८९, १९३, १९५, १९८, २००-२१८, २३६, २४२, २४७, २५०-२५८, ३०६, ३११, ३१३, ३२७, ३६५, ३६७, ३८०, ३८१, ४३० सगारव १४६ े सनय वेलिडिपुत्र ६७ ेसंजीव २७४ सतुल्लपकायिक देवता१९,२०,२१,२२,२३,२६,२७ सनस्क्रमार (यहाा) १२५ समृद्धि १०, ११, १०२ सम्बर १७९, १८० सम्बरी माया (जादू) १८६ सम्बुद्ध २, ४९, १०२ ११४, ११६, १२१, १२६, १२८, १२९, १५३, १५६, १७३, १७४, १८५, १९५, २३७, २८४, ३०४, ३५१,

५६+२

सर्विणी नदी १२५ सिवेह २४०, २४१, २४२ सहम्पति ब्रह्मा ११४, ११५, ११६, ११७, १२३, १२४, १२५, १२६, १२८, १८४, ३६१ सहली ६४, ६५ सहस्र नेत्र (इन्द्र) १७९ सहस्राक्ष (इन्द्र) १८१ साकेत ५६ सान १६६ सारिपुत्र ३३, ५८, ६३, ६४, ५२२, १२३, १५९, १५२, २१०, २११, २१२, २१५, २१७, २१८, २३९, २६०, २७५, २७६. २९२, ३११, ३१२, ३२१, ३२२, ३४९, ४३०, ४३१, ४३२ सिखी (बुद्ध) १९६ सिंह २७, २८ सुगत २९ (= बुद्ध), ६४, २८४ सुदत्त ५६, १६९ सुधर्मा सभा १७४, १८९ सुजम्पति १८२, १८५, १८६, १८८ सुजा १७८, १८२ सुजात ३१३ मुत्तर २७५ सुदर्शन माणवक ७६ सुन्दरिका नदी १३४ सुन्दरिकु भारद्वाज १३४, १३५ सुपर्ण ४३५ सुपस्स २७ ४ सुरिपय २७५ सुभदा देवी ३८४ सुमेरु ३८७ सुराध ३५६ सुवीर १७२ स्वा १३५ सुसिम देवपुत्र ६३, १७६, २४३, २४४, २४४ सुब्रह्म ७६ सुब्रह्मा १२१, १२२ संसुमार गिरि ३२१ स्चिलोम १६४, १६५ सूर्यदेव पुत्र ५२, ७३

487+50 मनानी प्राप्त ९१

मेरी दंबपुष ६ , ६३ मोग १७७

सोमा मिझुजी १. ८ १ ९

सीयन्यिक (नरक) १२४

संयुत्त-निकाय

ह्रंस १२१

विसवस्य ६१

दिमास्य १६ १

हारिक ३ ४

शाकितिकानि ३२६

३. शब्द-अनुक्रमणी

अनुप्राप्तसम्पर्ध (=निर्वाण-प्राप्त) ३९० असमिक १७४ (=विना रेरीके मफन होने वाला) अनुवोध ४४२ भराटियों १०१ (=शीस हा सफर होने पाला) ानुमोदन ४४८ ष्णुत ४१८ (=भनिमित) धनुरोध १६ अकृतज्ञता १७८ अनुशासन ४८, ७८, ९६ अतियाचादी ३७३ अनुश्रय २४१ वसर ३९ अनुष्टान १००, १७३ भगीरम (=नुद्ध) ७६ अनोत्तापी २ • ६ अग्नि ४३ अनोम (= बुढ) ३२, १८५ अरिन-इसन १३३, १३४ अन्तक (= मार) ८९, ००, ९७, १६० अन्र-पटनामी (=निवाण गामी) १०४ शन्तर कत्य ४१८ शजेय १३१, १५४ अन्तर्धान ४८, ५१, ५६, ५८ अहराया (=अर्थकथा=सात्य) ६, २, ४, " भन्तवाला ४१० अण्डन ४३३ अन्नवान ४४ अतीत (=भृत=त्रीता हुआ) २६० अन्यधास्य ३३८ भहेत २२७ अपत्रपा (= मंकोच) २८० अधर्म ६० अपराजेय १५२ अधित्रचन पथ ३७३ अपरान्त २०६ अधुर १७८ अप्रमत्त ५४, ८०, १०१, १०२, १०३, ११६⁶ अध्यवमाय २४९ १२०, १५४, १७१, १८५ अनन्त ४१९ अप्रमाद ६२, ७८, ८०, १२८, २४९ अनन्तदर्शी ११८ अपेक्षा ७३ अनागत (=भवित्यत्) ११६, २६० अप्रतिवानीय १६९ अनागामी १२२, १७४, १८३ अप्रतिवेध ४४२ अनाताप २७६ अप्रत्युपलक्षण ४४२ अनातम ५५० अप्सरा ३२ अनार्य ५० अब्बुद (= गर्म में सत्व की कलल अवस्था के ननासक्त २३, ३२, ४८, ५५, ६४ वाद की दूसरी अवस्था) १६४ अनित्य १२६, १४९, १५०, १५८, १५९ अभय १७४ अनित्यता ६२ समिजातियाँ ४१८ अनुताप ५१ अभिनिवेश ४०० अनुत्तर १०६, ११६, १४४, १४५, १७३, १७४, अभिनिर्वृति २६७ २७६ अभिनीहार ४४५

धनुपलक्षण ३४२

```
अभिगाद १६
                                          बारारेक्ट १७४ १७४ १७० १७८ १७९ १८
श्रीमात ३९
चित्रक ३३३
                                          वर्गप्रशास हर
समितेस ८०
                                          सर्वाकर 🕶
समित्रमय २०३
                                          धर्मका १५
                                          वर्तातप्र २७८ । १५५
सरायप्य १६८
WITTER 16.5
                                          majour ste
सम्बद्ध १३५ (-यह) १५४ १६९ ११९
                                          महिंसा १६६
सक्य (=रेवता ) ३ ३३३
                                          सद्वीख (≔निर्धन्य) २८
मर्हेद (बीवरस्थ=निर्वाण गास्र) १. १३, १५,
                                          महेतवारी ३५३
    १० २६ ४८ (न्यक् ) पर पर पर
                                          सर्वकार है
    (-क्रम) पर १२ १३
                             119 114
                                          ज्ञास्तर परिवित्तर्थं २०१
    4.0
           111 121 121
                                   989
                                          माजाशांतलपापतम् ३५८
     1ইছ 1ইখ, 1ইভ 18
                             181, 144
                                          भाकिकस्थानसर १५८
     144 144 101 102
                             149 248
                                          माचरच १३५
     444
                                          आबीवक (=र्यया साज्र) ११८
 <del>भागोतिक १</del>९ ७५ ९१
                                           माश्रीवय १ ४
 ब्राम्बेदड ६४ १०४
                                          मार-पुरुष १७४ (<del>=मोदापदि-मार्गस्म फोदापदि</del>
 शवलोकर १७३
                                              क्ष्मस्थः सङ्ग्रहासासी-मार्गस्य सङ्ग्रहागामी-
 अविसर्व १ क
                                              क्रकरणः जनायासी-मार्गस्य अनागामी-क्रकरणः
 श्वक्रिया १ १४ १७ ४४ ११४ १५४ १९३
                                              वर्दत-गार्थस्य भद्रंत इकस्य)
 अविक्रिया १४९
                                           भारतापी (=क्सोगी=क्सेस्रॉ को तपाने शका) 1 1
 सबीत-राय १७३
                                              1 2 1 2 114 12
  अपीत हैप १७३
                                           धारम-दक्षि २४ ११२ ११३
  अवीत्तसीत १७३
                                           वारस-साव १०४
  संशाहनत ११९
                                           भाष्या-समय ११
  संदर्भ-भावना १५
                                           व्याचा-शस्या १ वे
  सनीवर ८६ ( अधीर )
                                           Michigan & & w
  सदयय ४०
                                           भादि २६९ (≔भारम्भ)
  सम्बर्धेय ७३
                                           मातीलय २६५, ३५०
  muter 188
                                           भावीस ३५३
   सहीतिक २०२ १६९
                                           माध्याच्या १३५ हे
   नावज्ञ (=मक्क्स्म) ११८
   SERVICE 199
                                           वापीबाह २१६
   असम्बद्धाः ४४२
                                           भाषा १५४
                                           वाशियेतश्चिक १११
   व्यक्तिस्य २ ३
                                           भाषसभ (छ ) 13३ 1५६ २ ५
   सरिय-पिष्ट १६७
                                           आलुष्माक्षः ६४३२ ११ ११ <sub>११</sub>
    west 44, 100
                                               188 188, 180 18 188 18c
    क्षमा-क्षमा १४३
    untigt tor too
                                           SITTEMEN TO C
```

टवादान स्कन्ध (पाँच) ९७, ५९३ भारक्त ७३ उपाचास २३५ (=परेशानी), २५९ भाराम (विहार) १, ६५०, १५६, १५३, १५५, १६६, १६७, १७२, १८३, १८० उपासक १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १५५, १७०, १८५,२०४ आर्त-स्वर ३०१ उपोसथ ६२. १६६. ३६५ आर्थ १२३ उत्पा १०६ आर्यमार्ग ८, ३२ ऋजप्रतिपन्न १७४ आर्यधर्म २९ ऋजुभूत १८३ आर्य अष्टारिक सार्ग ७० न्हिद्धि १०३, ११०, १२०, १२१ भार्यमत्य (चार) २, १६८ ऋद्धिपाट १०० (=चार) भालम्बन ४४५ ऋद्विवल १२७ भारमी ४७ ऋदिमान् ६२, १२१ १५६ भालस्य ८६ ऋषि ३१, ५८, ६२, ६४,१०९, १५३, १७९, १८६ भावागमन ३८, १३४, १६०, ३८५ एकत्व २२७ भावुस १७० एकशाटिक ७४ (= एक वस्रधारी) आधय ३१ (= गृह), ३º पुकान्त ४८, ९२ (-वास), ९६, १००, १०२, आध्रव (= चित्त मल) १२०, (चार) १३३, १०८, ११६, १२६, १४५, १६१ २०८, १८६ पृहिपस्सिको (='भाओ देख लो' कहा जाने थोग्य) आसक्त १४५ आसक्ति १३, १६९ ऐश्वर्य ४५, ४६, ८७, १७५ आहुति ५५७ ओक्ला (= तीला) ३०७ इच्छा ४१ ओध (=याद, चार) १ इन्द्रिय-सवर ५६ इरियापथ (चार) १७ (= शारीरिक अवस्थार्ये) ओज १६९ ओपनेयिको (= परमपद तक छे जानेवाला) १० इपुलोम ३०२ ओलारिक ३१२ ईश्वर ११८ ओद्धत्य-कौकृत्य (=उद्धतपन-पश्चात्ताप, नीवरण) उऋण-ऋण ११५ उक्कवणक (- रोग) २८९ भौपपातिक (= अ-योनिज सतव) ४३३ उच्छेद-बाद २०३ औपाधिक १८३, १८४ उत्थान-सज्ञा (= उठने का विचार) ९२ भीरम्भागीय १४७ (=िनचले बन्धन, पाँच) उत्पाद २६७ कंकाल ३०१ उदक-शुद्धिक १४६ कबन्ध ३०५ उद्ग्र-चित्त १५२ कर्म ३३, ५८ उदान २८ (= प्रीति वाक्य) कर्मवादी २०९ उद्धत १६२ कर्ता ११८ उद्योगी ४७ कछछ १६४ उपिद्ध १८२ कलेवर (= शरीर) ६३ उपधि ९२, ९३ उपाधि १०५, १०६, ११२, ११४, ११७, १५५, करप २७१ कल्याणिमश्र ७९ १६९, २३८ कचि ३९ रपसम्पदा १३०

```
बद्दापम ( = कार्योपम ) ७६
                                          चीवर (व्यक्तिशर वक्ता) १ ८ १६४ १६८ १ ८
काम 1 1 • (-विश्वार) 1६1 (-तृष्णा) 11
                                             ३७६
   (-मोग) १
                                         पीरम १६५, १८६
बागच्छम् ४ ४६
                                         छन्द ६९
बादगतान्यक्ति १५०
                                         क्षमसाम १५४
कायबन्दन १०५
                                         जय ( ऋष्णा ) १४
                                         मध्य ७४
कावी ३ ७
कार्यापण वर ( व्यवदायण )
                                         सनपद ४५
कार्ड ( = सृत्यु सक् ) १
                                         अरा ४२ ४७, ११४ १६७ १९६
क्रमण्ड ३ ३ (= एक् )
                                         वात्रक्रा (≔गीना) १९१
                                         माति ११४ १९९
कुलपुत्र १ ४ १६
कृतपार १८४ ( = Watch tower )
                                         स्योति-तम पराचण ४३ ४४
केवणी १३४ १३९
                                          ज्योति जोति-परायय ८३ ४४
 कोकनद (= कमस ) ७५
                                          श्रीव १ ९
 कोक्सि १९३ (= वैर का बीम )
                                          शाबी १२६ १४९ १६४ १६९
 कोसकराम ६७ ६८ १९ ७०-८७
                                          समार १८
 श्चामाच १६
                                          शन्द्रा ४ ४५
 श्वतिम ४७ ६७ ८६,,४७ ८८ १२५ १३६
                                          तप १९
 भान्य १७१ १७५ १४४ १४१
                                          सपन्ती १४
 श्लीमाश्रव (≓ सर्देत्) १९ १६, १५ १७ ४
                                          तम-तम-पराचम ४३ ४४
                                          तम-उदोति-परायल ८३ ८४
     पप इंड १३७ १३६ १६७
  होस १५१
                                          शांद वर 1 € 1₹#
                                          विरव्यांच ( व्यक्क ) १९६ (-मोनि) ११६ ६४६
  खारी १२४
  रास्य ९७ ९८ ९९ ३३
  शस्यकोर १६६
                                          डीचेंद्रर (≔जैन-साह्र ) ५१ ६०
  शाया (≈ इक्रोक) १२३ ७ ५ ६ ७
                                          शुक्ता १ १३ १७ २३ २६ १८ ४ ४१
  र्याद ३९ ( = गाया )
                                              us es 1 u 1 u 11 15è
  ग्रह्मचर ७४
                                          तंबस्वी १ है
  सुइपति ७३ ३ १४
                                          तेमी मात्र १५६
   सोचर १४५
                                          रीविक २६६
   शोष १३ ४म ५८ ११९
                                          विविधा १२४ १५२ १५६ १५४ १५६ १८४
   गीतम १४
   पन्ति १७
                                          लाक् ९९
                                          श्चाम ( = श्रष्ट-स्तस्य ) ७२
   ग्कान-प्रत्यच ( चरोसी का परव ) १ ८
   र्शकमन ९२ २६
                                          त्म १०१ (= इम्बिय-इमन)
   चन्द्राक्ष ४३ ४४ १३३
                                           शान्त २८ ६४ ११७ १२
   चापुर्महास्तिक (≔पूर्णी कक वासु अनि से
                                          बास ४७
                                           विकास १३ १७६
       विर्मित ) ३३३
                                          दिम्ब-बस् ११९
   चार-मार्ग ५
                                           दिध्य-कीम 19
   चारिका ( ब्ल्स्स्ट ) १५४
```

```
दुःख ४२, १५०
                                           ध्यानी ४८, ५०, ५५
हुर्गति २०
                                           ध्यानी ४४८
दुर्मापित १७६
                                           ध्वजा ४३
दृष्टिनिध्यान २४३
                                           ध्वजाग्र १७३
देव-कन्या १५९
                                           नरक २१, २९, ५१, ८२, ८४, १२३, १६१,
देवत्व ११०
                                               940, 966
                                           नलकलाप (=नरकट का बोझा ) २४०
देवपुत्र ४८, ४९, १७२, १७३
देवलोक २७, २९, १६०, १८२
                                           नाग २७, ११७
देवासुर-संग्राम १०३, १७४, १७६, १७७, १७९
                                           नागवास ४१८
देवेन्द्र १२८, १७२, १७३, १७१-१८२, १८४,
                                           नाम ४०, ४५
                                          नामरूप १२, १४, १६, २७, २३, २६, ३५,
    965-969
दो-अन्त २०३
                                               १९३, २३१
हेप १२, १७, ३५, ३६, ६८, ८५, १४७, १६५,
                                          नालि ७६
                                          नास्तिकवादी ३५३
    964
                                          नास्तित्व २०१
धर्म (= बुद्ध धर्म ) १०, १९, ३२, ३३, ३४,
    ३५, ३६, ४०, ४३, ४४, ४५, ४९, ५१,
                                          निगण्ठ ७४
    ५८-६०, ६८, ७८, ८५, ८८, ९९, १०१,
                                          निद्रा ८, ४५
                                          निटिवदा २०८
    १०७, १११, ११२, ११४, ११६, १२९,
    ૧૩૪, ૧૨૫, ૧૨૧, ૧૪૮, ૧૫૪, ૧૫૬,
                                          नियास १५६
    १६२, १६८, १७१, १७४, १७५, १७७,
                                          निरगंल ( यज्ञ ) ७२
                                          निरहङ्कार ५३
    १८७, १८७, ३७४
                                          निरुक्ति-पथ ३५३
धर्मकथिक (= धर्मोपटेशक) २०१, ३९२
धर्म-टेशना ९१ ( = धर्मीपटेश )
                                          निरुद्ध १२८, १६०, २२७ (=शान्त)
                                          निरोध ६३, ७९, ११ (= निर्वाण ), ११२, ११३,
धर्मानुधर्म प्रतिपन्न २०१
                                              ११४, १९२, २३७
धर्म-धातु २५६
                                          निर्मन्ध-सर्भ ४१८
धर्मासन २८०
                                          निर्वाण १, २३, ३२, ३९, ४०, ५१, ५८, ९९,
धर्म-दर्शन १८३
                                              १०३, ११८, १३०,१३८, १४८, १४९,
धर्मपद् १६१
                                             १५१, १५३, १५८, १५९, १७१, १७३,
धर्मानुसारी ४२४
                                          १७३, २४१, २७६, २८५, २९०
धर्मराज (= बुद्ध ) ३३, ५८
                                          निर्मोक्ष २ ( =निर्वाण )
धर्म-विनय १०, १८२, १२७, १७३, १७५, १८२,
                                          निर्माता ११८
    २४३
                                         निर्वेद २०१, ४०९
धातु ११३, १५६
                                         निर्वेधिकप्रज्ञ २१९
धारा १६, १७
                                         निपाद ८३
धवाग २६०
                                         निवाप ५४, ६४, ९२, ९३, १०३, १२९, १३०,
 भुव ११८
                                              १३१, १६६, १६९, १७०, १८२
 भूम ४३
                                         निष्क २९१
धित (= धेर्य ) १७१
                                         निष्ठा ३६४
 ध्यान १०७, १२८
                                         निष्पाप १६९
 ध्यानरत ५५
```

```
ग्रफरिमी १५५ १६२, १८६ १५
निकारण २६५
                                          वर्षेकोडि ( = पत्रका सिरा आहि ) २६९
बीबरम (पाँच) ॥
                                          बर्धाल र ह
वैदर्भशासकार्यका २५४
                                          प्रयक्त-जन १९२ १६९ १६६
BORR 949
                                          देशी ३६७ ( = गर्म में सरब की शबु व के पहचाद
धानस्करम २ १
                                              तीसरी अवस्था )
प्रमाणवेष २८
वक्षीतिक साम ११
                                          वैधास ४१४
चरभवर (≒नियोग) १ ३३. ५८
                                          STREET SE
                                          प्रकाशि ३५३
धरमार्च वद १६ १ ६ ११६ १७१ १७५,
                                          प्रका (-इश्विष) ४ ९३ ३७ ४७ ५८ ८९
    166
बरकोक १४ ६ ६१ वट ९४ ११५ १७१
                                              1 2 314 144 161 162 162
                                          মস্রাবার ৭৯ ৭৭ ৩৪ 10
 वरियस्यों १६४
                                          प्रजाविसक १५३ २४३
 वरिका ३९ ४ ६
 परिकारत ३९ ४ ६
                                          प्रजासक्तमध्य ४ ६
                                          मसिसि ३५९
 विशिव व ६
 विज्ञानम्मा ३२४
                                          प्रताची १५४
                                          प्रतिष्य १२
 विक्रिक्रीय १ क ११८ १७३
 विकास क्षा २४३
                                          प्रतिपक्षा १८५
                                          प्रतिपद्ध १५
 वरिष्णाह ३५९
 पाँच-जनर-शागीम वस्त्रन १
                                          प्रक्रिकोस ३५६
                                          मधीत (चार) १६ ४६ ४७ ४९
 पाँच-इन्द्रिय ४
  वाँक-इटब्रे-आयीय कन्यन १
                                          प्रवीत्वसमुत्त्वाद १५३ २ ५ २३२
  पाँच-कामगुच १४ ७४ ७५
                                          प्रश्वास्त्र ३०३
  व्यक्तिकास ४
                                          मञ्जूष १६६
  Discuser 11
                                          प्रमंगुर ११
  पोसक्क २७८ २८७
                                           शसक ११७
  पोसक्तिक २०३, ११५
                                           प्रमच १ ४
  STORTE 3 2 2 9
                                           ममाद ४५ १५९
   gray 4 184
                                           प्राथमिक ५
                                                    1 4 1 0 146 146 192
   पारकीविक 4 191
                                               194
   विग्रहत १३३
                                           ANTHOR 13
   पिण्डपात ( m सात ) ७१ १ 4
                                           महाज ४१ ४१ ६९ १५
   पिण्डपातिक २७३, १७४ ३१%
                                           महिताला (= संचारी) १ १ १ १ १ १ ११६
   विशास ३२ (-योगि) १६७
                                               18 244 348
   पुण्डम ४३, ४४ १६३
                                           प्रश्रवित्र (= शान्ति ) १
   Ted fo t 43 48 (-412) 102
                                           माविकार्च ३६६
                                           गामीस 1 (= निर्माण)
   पुरुवासा ३ २
   प्रक १९
                                           मासाद १४४
                                           योजनिवडोपस ३४३ ( ≔पानी के साथ के समात )
   2t ( = 11ft ) 12
    प्रदर्भेष (-वश्र) ००
                                           सम्बद्ध ६३
```

यत्त्तर (-ब्रह्मा) ११८ यहुश्रुत २६३ बुद्धत्य ६७, ८०, ९०, ११४, ११४, १४४, १४६, १९६, २३६, २३४ वोधिसत्त्र २३६ योध्यग ५६ बाराचर्य ३०, ४५, ५१, ५२, ६३, ६०, ९१, ९४, ११६, १२६, १३५, १४५, १८५ ब्रह्मचर्य बास ४७, ११७, १३० वहाचारी ४३% बह्मस्य १८४ बाह्मण ८८, ६३३, १३८, १४८, १७१ वाह्मण-प्राप्त १३% मदन्त ६, ९०, ९३, १२६ भव १, १९२, २४१ भवनेत्ति (= तृष्णा) ४०६ भवसागर २५, ३७, ५७, ९७, ११८ भारवाहक २८, ३६ भावितारम ७७, ११७ भिक्ष-संघ ३६, ४४, ६८ भृत ४१७ भोग १० (पाँच कामगुण), ११, २४, ४६ श्रुभग १०१ मण्ड (= जमा हुआ घी) ४४८ सध्यम-सार्ग १, १३६ मन १४, ४४ मनुष्य-योनि ३४, ३५ ममकार ३०० सरण १९३ मल ३९ महल्लक (=बृद्ध) ३२१ महर्षि ३२, १३४, १३९ महाकटप ४१८ महाज्ञानी ४४ महाप्रज्ञ ६८, १०३ महायज् ७२ महाविष ४३ महावीर १७, ५२, ९५, १०३, १५३ महासमुद्र २४२ माणवक (=ब्राह्मण तरुण) ७६, १८१ **७६+३**

मानानुशय ३०० माया ३८८ मारिष १२०, १२१, १७४, १७८, १८२, १८७ मिध्या १, (-दृष्टि) १, (-मार्ग) १९७ मुनि ९२, (न्महा) ९२, १४०, १४९, १७५, १७६ मुनिभाव २८ मुर्धाभिपिक्त ३८४ मूल ४३, ४९, १०२, १२९, १४५ सृगदाव ७६ मृस्यु ४१, ४२ मृत्युक्षय १०३, १५५ मृदग ३०८ मेवावी १५२ मंत्री-भावना १६६ मांक्ष २ (निर्वाण) मोह १२, ३५, ३६, ६८, ८५, १४७ यक्ष ७७, १४१, १६२, १६४, १६७, १६६, १६८ यक्षिणी १६७ यथाभृत (= यथार्थ) २६७ योगक्षेम २७६ योनि १२६, २७२ रम्न ३७ रथ ४३ स्थकार (-जाति) ८३ रथयुद्ध ८७ रस ९७, ९८, ९९, १०० राग १२, १७, ३५, ३६, १०६, १८७, १६५ १८५ रागद्वेप १४ राष्ट्र ४३ रूप ९७, ९८, ११०, १११, १६४ रूपसंज्ञा १४ लघु-चित्त १६० लोक १०, ३०,३५, ४०,-४७, ६१-६३, ७८, ९३, १११, ११४, ११४, १२०, १२९, १५५, १६५, १७१, १८९, ४१९ लोक-विद् १७३ छोभ ४५, ६८, ८५ छोकिक २२६ चचन ४३ वाजपेय (यज्ञ) ७२

बाल-मोग्रा १४ घयनासन २ ४ विद्यास २५६ शक्य १५३ BRIDE SAS शास्त्रमा ३८१ विचिकित्सा (नीवरण) ६ २३० ३६९ शास्त्रस बाद ११८ १२ १ ३ विजिनमीयाम १८४ मासम 1 3 112 120 148 क्रिक्त १ १ बाएता (प्रस) २ धिवास २७ (न्यायतक) २६ १ ४ १९३ धीला ४५ विद्यानागन्त्याबद्धम् ३५४ शिक्ष्यमाचा ३०५ विदर्जं च ७९,८९,३ १२१३ शील १० ३३ ३७ ५ ५८ ७४ ८९ ११५ 114 140 148 144 100 127 124 169 148 विच ४३ शीववृत्त १७९ १८५ विदर्भवा १४ शीकवान् ५४ १ १ विद्या देहे, घष ५८ १२५ शीकस्थ्रप ८६ शीवविद्यार १६८ विनयपर २६१ विविद्यान्य ४ ह द्यम ३५८ विपाद 1३ (प्रम) संघचा 101 विद्यान्त १६३ EF 44 44, 133 विह्याच्या २४ ३५, ४४ ५२ ३ ० ३३२ ३५४ दीवर ५ १ ३ १२६ १४५ १४९ 157 155 वीस ४८ ११५, २१९ विमुक्ति १ ६ ११६ १५५ शोक 114 विमुन्धि-गान्य ८६ ६१ १ ६ श्राद्धा (इन्द्रिय) २ ४ २२ २६ ३० ३९,४४ विश्व ९४ 84. 46 48 1 8 182, 126 148 विरोध ९४ 144 168 160 10 148 148 विदेश १ (निर्याण) ७९ १५७ अप्रव (-भाष) ८ ५१, ४० ९१ ९५-९५ विवेदसील १४ 1 5 114 115 185 18 विदिमा १६१ 188 188 188 188 184 18 181 चीगडेच १०४ शासक दश दश दश १ है १२ १ १५, १५ चीनमीड १०४ 242 244, 346 349, 508 बीनराग ३ ६ ३५० ३०४ शृतवास् ३९३ बीय (इन्द्रिक) ४ पदिया १५३ बेइना । पदाबतन (# छः आवतन) १९६ ETTERE 3 -संबीत्रमा १४१ संगर (वित्ततम पॉप) पाप ४६ ४८ १३३ \$3 MR 24 51 गेवामजित् ११५ व्यापाद ५ (नीवरण) १६३ Signer 1 9 100 149 144 स्पान ६३ rfw tw 57 44 185 185, 125, 153 रपायक्षिम २६४ 1 7 144 148 ब्युजान-पुराण ४७४ र्जातारी वे वेदध रम्बसम्ब १६ लेवेनमा व्हेप

शील ९ १ व

TIT 5 54 55 11

मर्गंडा, ३९, ३२, १०३ मजावेद्रयित-तिरोध ४३२ मर्देशित ३६६ सप्रात १२, २७, २०, ०,२, ०,६, २४० सर्वहरी ह-प्रधीण ७७ मंत्रमाद ३३० मर्गाभिभ ३५६ स्याम १२६ साधार्मिक २११ मयम १९५, ६५६ मंमार ४३, ४५, ४५, ४५, ५५, ५६, ५६, ६२, ६४०, सातत्यवारी ३२६ मारशी ३२ 184 151, 150, 150 मार्थवात ५५% स्मात ९०, ११३, ११४, १२८, १४०, १४९, सिंग्गिया २७, ९२ 993 न्गति, १३, ८४, १६२, १८२ सम्बद्ध ९९ स्प्रतिपन १७४ मंम्बेटिश (३३ मारधिर (=र्यांगे के मामने फल देनेपाला) १०, मुभाषित १५६, १७६, १७० सुमेध ११५ 202, 203 तुरत ६४, (-भाव) ८६ मकुद्रातामी १०४, १८३ स्चिलाम ३०३ स्तर ४०% स्पकार ३/८ मिसिया ३०२ म्बोतापत्ति १०४, १८२ पत्काय ३३८, ३८० स्रोतापन्न १२६, २१०, ४२४ यत्काय-दृष्टि ५३ सीजन्य १७५ मरकृत्यकारी ४८६ सीमनस्य ३४९ नरपुर्प ०४ सोर्ख १३३८ स्रत्य १७१ स्कन्ध ११ (पाँच), ११३, १५६ स्यमार्ग १९१ स्त्यानसृद्ध ४ (नीवरण) सहय ५० स्थविर ३०९ सत्यग ३८ म्पर्श ९७ (-आयतन), ९८, ११०, १६५, १९३ महमं १०७, ११६ म्मृति (इन्द्रिय) ४, (= होश) १२, ३२, ४७, महमानुसारी ४२४ 49, 300, 306 मन्त १४७, १७८ स्मृतिप्रस्थान १५४ मप्रायकारी ४३६ स्मृतिसान् १२, १३, २७, २७, २९, ५४-५६, ७६ सभागृह १४६ ८९, ९२,९६, ९८, १०७,१२६, १४४, सम्य १५१ १७७, १६४, १६७, १६६, १७५ समाधि (इन्द्रिय) ४, १४, ८९, १०२, १०३, स्वर्ग १२, २४, २६, ३०, ३३, ३४, ६१,४०,४४ १८३, (-स्कन्ध) ८६, ११६ १४०, १४४, १४५, १६१ समाधिस्य १५० स्वारयात १७३, १७४ समापत्ति ३४६ स्वाध्याय १६१ समाहित ५१, ५५, १०९, १३७ स्थिति २६७ समुद्य १९६, २३७ स्थिरातम ५० समुद्र ३१ हस्ति-युद्ध ८७ सम्प्रदाय ११२ हय्यावशेष १३४, १३७ सम्बोधि २८७ सम्यक् १०, १०२, १७३,१७४,१८५,(पाद्य-) ७२, ही (= लज्जा) ३२ हेसु ११३

284+16

बामनीस १४

विद्यात २५९

```
Resum 101
                                      ध्याष्ट्रपत् ३४१
विविकित्सा (भीवरण ) ४ २९० ३६९
                                       शास्त्रत गाव ३३४ ३२ १ १
विधित्तसंग्रास १८४
                                      सासम १ ३ ११२ १२० १५६
विका १
                                       भारता (अस् ) २
सिनाम ९० (-मापश्रम) ९९ १ ४ १९१
                                       OTHER DA
विज्ञानामस्यानतम् २५८
                                       विकास सामा ३ ५
वितर्जेष्ट ७ ७५, ४५,३ १२१३
                                       शीख १२ वरे १० भ भट ७० ८९ ११५.
    154 140 189 184 100
                                           122, 124 142 142
क्ति प्रक
                                       शीकवारा १७६ १८५
विदर्भना १४
                                       शीकवाय ५५ १ १
                                       शीकरकम्प ४६
विद्या ३३, ४४ ५८ १३५
 वितयकर १६१
                                       श्रीविक-दार १६८
 विविचन्द्र प्र ३
                                       श्रम ३५८
 विपाक १६ ( ५%)
                                       श्चमचा १७१
 विधास्त १६२
                                       ER 44 44, 122
 विश्वक्ष २८ ३५, ४८ ५१ १ ० ११२ १५५
                                        बीक्स भ १ ३, १२६ १४५ २४९
     148 144
                                       श्रीक ४४ ११५, २१९
 विमक्ति १ ६ ११६ १ ५
                                        10x 114
 विमक्ति-नकत्य ४६ ६१ १ ३
                                       श्राद्वा (इतिह्रम् ) २ ४ २२ २६ ३० ३९,४४
 विशन्द २०
                                           84, 46 64 1 4 144 146 146
  विशेष ९४
                                           144 157 150 10
                                                                 148 143
  विवेठ र (निर्वाण) ७६, १५७
                                        श्चरण (--भाष) ४ ५१ ४० ९१ ९५-९९
  विवेदशील १४
                                            1 5 11% 115 185 18
  feffent 189
                                           122 142 144 144 144 14 141
  बीतदेव १०४
                                        MINER 62 69 44 9 2 15 124, 14
  शीसमाध १७४
                                           144-144 146 149 188
                                        भारतात् १९१
  चीतराग १ ६ ३५० ३०४
  चीवै (इंग्विय) ४
                                        समिता १५१
  वंदमा 🌞
                                        प्रतायत्व ( = छ। भाषतम् ) १९३
   क्षणास्य ३ ०
                                        सर्वाजना १४३
   ETT 44 44 133
                                        र्यात र (वितासन वॉव)
   स्वभाव ३९ ९३
                                        र्ममास्त्रित ११५
   ग्यापाइ ४ (जीवरूप ) १६१
                                        NULL 205 300 348 344
   12 mirs
                                        र्मय ३४ ३२ ४४ १२६ १२९ १३९, १६२
   श्यादम्भीतम् १६४
                                            204 262, 264
    क्षाचार मुशास ४४४
                                        शंबाधी ६ ६८४
    स्परतम १६
                                        शंकेतमा १३५
    STEE 49 44 4 11
                                         शीरायक १ क
```

द्रायसाम्बर्ग ३ ८

STEG 143

सर्वज्ञ, २९, ३२, ६०३ मजावेद्यतिनिन्तेष ४३२ सर्विष् ३६० संब्रज १२, २०, २०, ९२, ९६, २४९ सर्वजोत्र-प्रतीण ५५ संप्रमात २३ व मयांभिन् ३१६ सरम १२६ महाधासिक २६६ स्यम १६७, १८८ संवार ४३, ४४, ४५, ४६, ५५ ५६, ६२, १४०, मातत्यकारी ४४६ याग्यी ३२ १२९, १८६, १८७, १६८ मार्धवाह ११% सक्कार १७, ११३, ११४, १२४, १५० १५०, सिंहराच्या २७, ५२ मुगति दे , ८३, ११२, १८२ सम्पर्ध ९९ स्प्रतिपन्न १७४ मम्बेटिश ४३३ मुभाषित १७६, १७६, १७७ मार्टिय (=ऑर्यो के सामने फर देनेपारा) १०, स्मेध ११५ 202, 237 सकुदागामी १०४, १८३ मुरत १८, (-भाव) ८६ सृचिलोम ३०३ सक्त ४०% मिनिकाम ३०२ स्पकार ३८ ४ मोतापनि १७२, १८२ सरकाय ३३८, ३८० यत्काय-दृष्टि १३ स्रोतापन १२६, २९०, ४२४ मक्त्यकारी ४८६ मीजन्य १०५ मीमनस्य ३४९ सरपुरप ९८ स्वारन्य १३३८ सन्य १७१ यत्यसार्ग १०७ स्कन्ध ११ (पॉच), १९३, १५६ स्यानमृद्ध ४ (नीवरण) सन्द ५० स्थविर ३०९ सम्बद्धाः २८ सदमी १०७, ११६ स्पर्श ९७ (-आयतन), ९८, ११०, १६७, १९३ महमानुमारी ४२४ म्मृति (इन्डिय) ४, (= होश) १२, ३२, ४७, मन्त १८७, १७८ vg. 900, 905 सप्रायकारी ४८६ स्मृतिप्रस्थान १५४ म्मृतिमान् १२, १३, २५, २७, २९, ५४-५६, ७६ समागृह ३२६ सम्य १७१ ८९, ९२,९६, ९८, १०७,१२६, १४३. ममाधि (इन्डिय) ४, १४, ८९, १०२, १०३, १७७, १६४, १६५, १६६, १७५ १८३, (-स्कन्ध) ८६, ११६ स्वर्ग १२, २८, २६, ३०, ३३, ३४, ६१, ८०, ८४ समाधिस्य १५० 330, 388, 384, 389 समापत्ति ३३६ स्वारयात १७३, १७४ समाहित ७१, ७५, १०९, १३७ स्वाध्याय १६१ समुदय ३०६, २३७ स्थिति २६७ मसुद्र ३१ स्थिरातम ५० सम्प्रदाय ११२ हस्ति-युद्ध ८७ सम्योधि २८५ हच्यावशेष १३४, १३७ सम्प्रक् १०, १०२, १७३,१७४,१८५,(पादा-) ७२, ही (= लज्जा) ३० हेतु ११३

